विषय-सूची

रङ्गीन चित्रों की सूची

महारथी द्रोण ने अत्यन्त कुपित होकर......बाण-वर्षा से शत्रु-सेना को छा दिया—पृ०२२१५

इक्कीसवाँ अध्याय

द्रोणाचार्य के युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज! राजा युधिष्ठिर द्रोणाचार्य को अपने समीप आये हुए
कर उन पर लगातार तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। हाथियों के यूथपति को जब कोई महा-
ह पकड़ना चाहता है तब जैसे अन्य हाथी चिल्लाने लगते हैं, वैसे ही युधिष्ठिर के सैनिक
समय कोलाहल करने लगे। सत्यविक्रमी सत्यजित्, द्रोणाचार्य को देखकर, युधिष्ठिर की
ा के लिए आचार्य के सामने आये। सेना को क्षुब्ध करके दोनों योद्धा वैसा ही घोर युद्ध करने
ी जैसा राजा बलि और इन्द्र से हुआ था। पराक्रमी सत्यजित् ने द्रोणाचार्य को तीक्ष्ण
णों से घायल करके उनके सारथी को विषैले साँप और काल के समान पाँच बाण मारे।
से वह मूर्च्छित हो गया। फिर सत्यजित् ने आचार्य के घोड़ों को दस बाण मारे, दोनों
श्वों में स्थित दोनों सारथियों को दस-दस बाणों से घायल किया, और मण्डलगति से घूमकर
धपूर्वक शत्रुनाशन द्रोणाचार्य के रथ की ध्वजा काट डाली।

शत्रुदमन द्रोण ने रणभूमि में सत्यजित् का यह अद्भुत कार्य देखकर, उनका काल आया
ा समझकर, तत्क्षण मर्मभेदी तीक्ष्ण दस बाण उनको मारे और उनका बाण सहित धनुष काट
ला। राजन्! प्रतापी सत्यजित् ने फुर्ती के साथ अन्य धनुष लेकर द्रोणाचार्य को कङ्कपत्र- १०
भित तीस बाण मारे। सत्यजित् को इस प्रकार द्रोणाचार्य पर आक्रमण करते देखकर
ण्डवगण चिल्लाकर, कपड़े हिलाकर, हर्ष प्रकट करने लगे। तब महाबली वृक ने अत्यन्त कोप
रके द्रोणाचार्य के हृदय में साठ बाण मारे। देखनेवालों को वृक का यह कार्य अत्यन्त अद्-
त मालूम पड़ा। महारथी द्रोण ने भी अत्यन्त कुपित होकर, आँखें तरेरकर, शत्रु की ओर
खा और फिर वेग के साथ बाणवर्षा से शत्रुसेना को छा दिया। द्रोणाचार्य ने सत्यजित् और
क का धनुष काटकर छः बाणों से वृक के घोड़ों और सारथी को मारकर वृक को भी मार
ला। उधर सत्यजित् बड़े वेग के साथ अन्य धनुष लेकर तीक्ष्ण बाणों से द्रोणाचार्य को
था उनके सारथी, ध्वजा और घोड़ों को छेदने लगे। सत्यजित् का यह प्रहार-कौशल असह्य
ने के कारण, उन्हें मारने के लिए, महाबली द्रोणाचार्य ने शीघ्रता के साथ उनके घोड़े, ध्वजा,
नुष की मूठ और आसपास रहनेवाले रक्षकों तथा सारथी के ऊपर तीक्ष्ण बाण बरसाना शुरू
िया। आचार्य द्रोण ने इस तरह जब बार-बार सत्यजित् के अनेक धनुष काट डाले तब महा-
ीर सत्यजित् अत्यन्त कुपित होकर आचार्य के साथ भयानक युद्ध करने लगे। महारथी २०
ीरवर द्रोणाचार्य ने ऐसे प्रभावशाली सत्यजित् को अपने आगे देख, अत्यन्त कुपित होकर,
क अर्धचन्द्र बाण से उनका सिर काट डाला।

महारथी सत्यजित् के इस तरह मारे जाने पर धर्मराज युधिष्ठिर द्रोणाचार्य के डर से शङ्कित और विह्वल होकर, बड़े वेग से रथ हँकवाकर उनके आगे से भाग खड़े हुए। इधर पाञ्चाल, केकय, मत्स्य, चेदि, करूष और कोशलदेश के योद्धागण महाराज युधिष्ठिर की रक्षा करने के लिए आचार्य के आगे उपस्थित हुए। जिस तरह आग भूसी के ढेर को जलाती है वैसे ही महावीर द्रोणाचार्य युधिष्ठिर को पकड़ने की इच्छा से उन सामने आये हुए वीरों को भस्म करने लगे। उस समय राजा विराट के छोटे भाई शतानीक द्रोणाचार्य को बारम्बार सेना का संहार करते देखकर उनके सामने पहुँचे। दुष्कर कर्म करने के लिए उन्होंने सूर्य-किरण-सदृश तेजःपुञ्ज छः बाणों से द्रोणाचार्य को, उनके घोड़ों को और सारथी को घायल किया। फिर वारम्बार सिंहनाद करके वे द्रोण पर बाण बरसाने लगे। उस समय महारथी द्रोणाचार्य ने बड़ी फुर्ती के साथ क्षुरप्र बाण मारकर उनका कुण्डलमण्डित सिर काटकर गिरा दिया। यह देखकर मत्स्यदेश की सेना डर के मारे भाग खड़ी हुई।

इस तरह महारथी द्रोणाचार्य मत्स्यों को परास्त करके चेदि, कारूष, केकय, पाञ्चाल, सृञ्जय और पाण्डवों की सेना को वारम्बार मारने और हराने लगे। अत्यन्त कुपित द्रोणाचार्य को, वन को जलाते हुए दावानल के समान, सब शत्रुसेना को भस्म करते देखकर सृञ्जयगण ३० डर गये। शत्रुनाशन महारथी द्रोणाचार्य के धनुष का शब्द दसों दिशाओं में गूँज उठा। द्रोण के हाथ से छूटे हुए बाण असंख्य घोड़ों, हाथियों, रथों और पैदलों को नष्ट करने लगे। ग्रीष्म ऋतु में प्रबल आँधी से सञ्चालित, शिला बरसानेवाले, मेघों की तरह महाधनुर्द्धर, महाबाहु, मित्रपक्ष को अभयदान करनेवाले महावीर आचार्य लगातार तीक्ष्ण बाण बरसाते हुए युद्धभूमि में चारों ओर विचरने लगे। उस समय उनका सुवर्णभूषित धनुष मेघमण्डल में स्थित बिजली की तरह चमकता और मण्डलाकार घूमता हुआ चारों ओर दृष्टिगोचर होने लगा। उनकी ध्वजा की वेदी हिमाचल के ऊँचे शिखर के समान शोभायमान थी। सुरासुरों के वन्दनीय महाप्रतापी भगवान् विष्णु जैसे दानवदल का दलन करें वैसे ही महावीर्यशाली आचार्य

...ाण्डवसेना का संहार करने लगे। महाबली सत्यपराक्रमी द्रोण ने अस्त्रविद्या के बल से मनुष्य-...लनाशिनी, कायरों को डरानेवाली और यमपुरी को जानेवाली घोर रक्त की नदी बहा दी। ...ीदड़, कुत्ते और गिद्ध आदि मांसभोजी जीव तथा राक्षस उस नदी के आसपास भरे पड़े थे। ...टे-फूटे कवच उसमें लहरों के समान थे, ध्वजाएँ आवर्त-सदृश थीं, घोड़े और हाथी ग्राहगण थे, ...लवारें मछली थीं, वीरों की हड्डियाँ कङ्कड़-पत्थर की जगह थीं, भेरी मुरज आदि बाजे कच्छप..., ढालें और कवच छोटी-छोटी डोंगियाँ थे, केश सेवार और घास-फूस थे, बाणों की गति वेग...ा, धनुष प्रवाह थे, बाहुएँ पन्नग और मृत मनुष्यों के मस्तक ही शिलाओं की जगह पर थे। ...ाशों की जाँघें मछली सी, गदाएँ डोंगी सी, पगड़ियाँ फेनपुञ्ज सी, अँतड़ियाँ कीड़े-मकोड़े सी, ...ुजाएँ तटवृक्ष सी और घुड़सवार तथा हाथी नक्र (घड़ियाल) से प्रतीत होते थे। उस रक्त की ...दी में मांस और रुधिर की कीचड़ हो रही थी। ४५

द्रोणाचार्य को साक्षात् काल के समान सेना का संहार करते देखकर अनेक वीरों के ...ाथ पाण्डवगण उनके सामने आये और उनको रोकने की चेष्टा करने लगे। सूर्य के समान ...जस्वी द्रोणाचार्य भी उनसे घोर युद्ध करने लगे। यह देखकर कौरवपक्ष के सब राजा और ...ाजपुत्र भी एकत्र होकर द्रोणाचार्य को चारों ओर से घेरकर उनकी रक्षा करने लगे। महा-...ीर शिखण्डी ने पाँच बाण, क्षत्रवर्मा ने बीस बाण, वसुदान ने पाँच बाण, उत्तमौजा ने तीन बाण, ...त्रदेव ने सात बाण, सात्यकि ने सौ बाण, युधामन्यु ने आठ बाण, युधिष्ठिर ने बारह बाण, ५० ...ृष्टद्युम्न ने दस बाण और चेकितान ने तीन बाण द्रोणाचार्य को मारे।

महावीर द्रोणाचार्य ने इन वीरों के बाणों की चोट सहकर, क्रुद्ध हो, मस्त हाथी ...ी तरह रथसेना को लाँघकर दृढ़सेन को मार गिराया। फिर वे सहसा राजा क्षेम के सामने ...हुँचे। क्षेम निर्भय भाव से प्रहार करने लगे। आचार्य ने उन्हें नव बाण मारे। राजा ...ेम मर गये। उनका शरीर रथ से पृथ्वी पर गिर पड़ा। महावीर द्रोणाचार्य चारों तरफ़ ...फ़रकर सेना के मध्यस्थल में पहुँचे। अपने पक्ष के अन्य वीरों की रक्षा वही कर रहे थे, ...नकी रक्षा कोई क्या करता। द्रोण ने वीर शिखण्डी को बारह और उत्तमौजा को बीस बाण ...ारकर एक भल्ल बाण से वसुदान को मार गिराया। फिर क्षत्रवर्मा को अस्सी और सुदक्षिण ...ो छब्बीस बाण मारकर एक भल्ल बाण से क्षत्रदेव का सिर काट डाला और उन्हें रथ से गिरा ...दिया। इसके बाद युधामन्यु को चौंसठ और सात्यकि को तीस बाण मारकर वे बड़े वेग से ...ुधिष्ठिर की ओर चले। धर्मपुत्र युधिष्ठिर फुर्ती के साथ अपने रथ के वेगशाली घोड़ों को ...हँकवाकर द्रोणाचार्य के सामने से हट गये।

अब महावीर पाञ्चाल्य नाम का राजकुमार द्रोणाचार्य के सामने आया। आचार्य ने ...उसका धनुष काट डाला, उसके सारथी और रथ के घोड़ों को नष्ट करके उसे भी यमपुरी को

भेज दिया। द्रोण के बाणों से निहत होकर महावीर पाञ्चाल्य वैसे ही रथ से गिर पड़ा जैसे कोई उल्कापिण्ड आकाश से टूटकर पृथ्वी पर गिरता है। पाञ्चाल्य के मारे जाने पर सब लोग
६० चारों ओर से "द्रोण को मारो, द्रोण को मारो!" कहकर चिल्लाने लगे। महापराक्रमी आचार्य कुपित होकर पाञ्चाल, मत्स्य, केकय, सृञ्जय और पाण्डवों की सेना को मारने लगे। चारों ओर हलचल सी मच गई। सात्यकि, चेकितान, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, वृद्धक्षेम और चित्रसेन के पुत्र, सेनाविन्दु, सुवर्चा और अन्य बहुत से वीर द्रोणाचार्य और कौरव-सेना से परास्त हो गये। महाराज! कौरवगण इस तरह जय प्राप्त करके भागती हुई पाण्डव-सेना का संहार करने लगे। दानवगण जैसे इन्द्र से परास्त होकर कम्पायमान हों वैसे ही पाञ्चाल, मत्स्य और
६५ केकयगण आचार्य से परास्त होकर काँपने लगे।

बाईसवाँ अध्याय

दुर्योधन और कर्ण की बातचीत

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय, उस महासमर में द्रोणाचार्य ने जब पाञ्चालों और पाण्डवों की सेना को मार भगाया तब और कौन उनके सामने उनका सामना करने के लिए आया? कृतज्ञ, सत्यपरायण, दुर्योधन के हितैषी, चित्रयुद्धनिपुण, महाधनुर्द्धर, शत्रुपक्ष के लिए भयङ्कर, कुपित सिंह के समान, मस्त गजराज के तुल्य, पुरुषसिंह शूर द्रोणाचार्य जब जीवन का मोह छोड़कर क्षत्रियों के लिए यशस्कर, वीरों को प्रिय और कापुरुषों को अप्रिय युद्ध का दृढ़ विचार करके युद्धभूमि में मृत्यु की तरह विचरने लगे होंगे तब उनका सामना किसने किया होगा? हे सञ्जय! उस समय कौन-कौन वीर समर करने के लिए उद्यत हुआ? सब वृत्तान्त मुझे सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—महाराज! पाञ्चाल, पाण्डव, मत्स्य, सृञ्जय, चेदि और केकयगण को आचार्य के दारुण बाणों के प्रहार से अत्यन्त पीड़ित और विह्वल होकर सागर के वेग से बहते हुए जहाज़ों की तरह भागते देखकर कौरव लोग सिंहनाद करने लगे। कौरव-सेना में हर्षसूचक विविध बाजे बजने लगे। कौरवपक्ष के वीरगण पराक्रमपूर्वक शत्रुपक्ष के रथों, घोड़ों और हाथियों को आगे बढ़ने से रोकने लगे। सेना और स्वजनमण्डली के बीच में स्थित राजा दुर्योधन उस समय शत्रुपक्ष की सेना को इस दशा में देखकर प्रसन्नतापूर्वक ज़ोर से हँसकर कर्ण से
१० कहने लगे—मित्र कर्ण! यह देखो, पाञ्चालगण सिंह के डर से विह्वल हिरनों के झुण्ड की तरह आचार्य के बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर बहुत ही घबरा रहे हैं। हवा के झोंके से जैसे वृक्ष टूट जाते हैं वैसे ही ये लोग आचार्य के बाणों से मरकर अथवा घायल होकर पृथ्वी पर गिर

रहे हैं। जान पड़ता है, अब ये लोग युद्ध नहीं करेंगे। वह देखो, अगणित शत्रु-सेना महारथी आचार्य के सुवर्णपुङ्ख-शोभित तीक्ष्ण बाणों के प्रहार से पीड़ित होकर न तो भाग सकती है और न ठहर ही सकती है; योद्धा इधर-उधर विललाते घूम रहे हैं। वह देखो, हाथी जैसे दावानल के बीच में घिरकर इधर-उधर दौड़ते हैं वैसे ही बहुत सी सेना महारथी द्रोण और अन्यान्य कौरवपक्ष के वीरों से घिरकर इधर-उधर भागती और भागने को राह न पाकर चारों ओर घूम रही है। वह देखो, पाण्डवों की सेना द्रोणाचार्य के तीक्ष्ण बाणों से, जो भौंरों की तरह मन्ना रहे हैं, विद्ध होकर भागती है और परस्पर भिड़ जाती है। वह देखो, कुपित भीमसेन को कौरव वीरों ने घेर लिया है और पाण्डवों तथा सृञ्जयों की सेना साथ छोड़कर भाग खड़ी हुई है। इससे मुझे बड़ा आनन्द हो रहा है। यह दुरात्मा भीमसेन आज चारों ओर द्रोण को ही देख रहा है, और जीवन तथा राज्य से निराश सा हो गया है।

कर्ण ने कहा—राजन्! महावीर भीम जीते जी कभी युद्ध से हटनेवाले नहीं हैं। ये हम लोगों का उल्लास और सिंहनाद भी कदापि नहीं सहन कर सकते। यह सम्भव नहीं कि बलवीर्य-सम्पन्न, युद्धदुर्मद और अस्त्र-शस्त्र की विद्या को अच्छी तरह सीखे हुए पाण्डव एकाएक हार मान लें और युद्ध छोड़ दें। वे विष-दान, आग में जलाने की चेष्टा, जुए की विडम्बना और वनवास के कष्टों को कभी न भूलेंगे और समर से न हटेंगे। महातेजस्वी महावीर भीमसेन युद्धभूमि में लौटे हुए आ रहे हैं, वे अवश्य ही हमारे पक्ष के प्रधान-प्रधान वीरों को यमपुर पहुँचावेंगे। उनके खड्ग, धनुष, शक्ति और लोहमय गदा के एक-एक प्रहार से असंख्य रथ, हाथी, घोड़े और पैदल विनष्ट होंगे। महावीर सात्यकि आदि योद्धा और पाञ्चाल, केकय, मत्स्य और पाण्डवगण भीमसेन के साथ हैं। ये सब

२८

महावीर महापराक्रमी और महारथी हैं। खासकर महाक्रोधी वीर भीमसेन ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर इन सबको युद्ध करने के लिए भेजा है। मेघ जैसे सूर्य को घेर लेते हैं वैसे ही ये सब वीर भीमसेन को घेरकर, सुरक्षित करके, चारों ओर से द्रोणाचार्य के सामने आ रहे हैं। मरने

के लिए उद्यत पतङ्ग जैसे दीपक पर गिरते हैं वैसे ही ये सब वीर एकाग्र चित्त से, जीवन की आशा छोड़कर, अरक्षित द्रोणाचार्य के ऊपर आक्रमण करेंगे। अस्त्र-शस्त्रकला में इन्होंने खूब अभ्यास किया है, अतएव आचार्य का सामना करना और उन्हें रोकना इन लोगों के लिए कुछ दुःसाध्य नहीं। मेरी समझ में आचार्य पर बहुत भार आ पड़ा है, इसलिए इस समय उनके पास जाकर उनकी सहायता करना हम लोगों का कर्तव्य है। भेड़िये मिलकर जैसे एक बड़े गजराज को मार डालें वैसे ही पाण्डवपक्ष के सब योद्धा मिलकर अकेले द्रोणाचार्य को न मार डालें, यही सोचकर हमें आचार्य की सहायता करनी चाहिए।

सञ्जय कहते हैं—कर्ण के ये वचन सुनकर भाइयों और अन्य वीरों सहित राजा दुर्योधन महारथी द्रोणाचार्य के समीप गये। तब पाण्डवपक्ष के योद्धा, रङ्ग-रङ्ग के घोड़े जिनमें जुते हुए हैं ऐसे, रथों पर बैठकर द्रोणाचार्य को मारने के लिए आगे बढ़े और घोर सिंहनाद तथा कोलाहल करने लगे। ३०

तेईसवाँ अध्याय

वीरों के घोड़ों का वर्णन

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! भीमसेन आदि जो वीर क्रुद्ध होकर द्रोणाचार्य का सामना करने गये थे, उनके रथों और चिह्नों का वर्णन करो, मैं सुनना चाहता हूँ।

सञ्जय ने कहा—महाराज, सुनिए। महारथी भीमसेन रीछ के से रङ्ग के घोड़ोंवाले रथ पर बैठकर समरभूमि में आये। महावीर सात्यकि चाँदी के रङ्ग के सफ़ेद घोड़ोंवाले रथ पर बैठकर द्रोणाचार्य की ओर चले। महारथी युधामन्यु अत्यन्त क्रुद्ध होकर सारङ्ग-वर्ण (सफ़ेद-नीला और लाल रङ्ग मिश्रित) के घोड़ोंवाले रथ पर बैठकर और महायोद्धा धृष्टद्युम्न महावेगशाली सुवर्णभूषित कबूतर के रङ्गवाले अर्थात् सफ़ेद-नीले घोड़ों के रथ पर बैठकर युद्ध करने चले।

धृष्टद्युम्न के पुत्र महावीर क्षत्रधर्मा अपने पिता की रक्षा करने और विजय पाने की इच्छा से लाल घोड़ोंवाले रथ के ऊपर बैठकर चले। शिखण्डी के पुत्र महाबाहु क्षत्रदेव अपने हाथ से, पद्मदल के रङ्गवाले और मल्लिका-पुष्प के रङ्ग की आँखोंवाले, घोड़ों को हाँकते हुए आगे बढ़े। वीर नकुल तोते के पङ्ख के रङ्ग के काम्बोजदेशीय दर्शनीय घोड़ोंवाले रथ पर बैठकर युद्ध करने चले। सर- उत्तमौजा श्याम-मेघवर्ण घोड़ेवाले रथ पर बैठकर समरभूमि में आये। सशस्त्र महावीर वर्ण-शरीर के रथ में वायुवेगगामी तीतर के रङ्ग के कबरे घोड़े जुते हुए थे। सब योद्धा सैनिकगण दिखा रहे गहनों से भूषित हवा के समान वेग से चलनेवाले घोड़ों से युक्त रथों पर बैठकर पाञ्चालदेशीय के पीछे चले। महाराज युधिष्ठिर के रथ में ऐसे सुन्दर घोड़े जुते हुए थे, जिनका चि- हाथीदाँत का सा था और जिनकी गर्दन पर काले और लम्बे बाल थे। पाञ्चाल- राज द्रुपद सुवर्णमण्डित रथ पर बैठकर, युधिष्ठिर के पीछे चलनेवाली सेना से सुरक्षित होकर, धर्मराज के पीछे समरभूमि में चले। राजाओं के बीच में स्थित महाधनुर्द्धर द्रुपद के रथ में ऐसे घोड़े लगे हुए थे, जो निडर, किसी भी शब्द से न भड़कनेवाले, बढ़िया गहने पहने और परम सुन्दर थे। राजा द्रुपद के सिर पर स्वर्णमय छत्र तना हुआ था। मत्स्यराज बली विराट उनके पीछे चले। केकयदेश के राजकुमार, महावीर शिखण्डी और धृष्टकेतु अपनी-अपनी सेना को साथ लिये राजा विराट के पीछे चले। महाराज विराट के रथ में पाटल-पुष्प के रङ्ग के सफ़ेद दिव्य घोड़े जुते हुए थे। विराट के पुत्र के रथ में स्वर्णहारभूषित, वेग से चलनेवाले, पीले घोड़े लगे हुए थे। सुवर्णवर्ण और सुवर्ण की मालाओं से अलङ्कृत युद्धनिपुण केकयदेश के राजकुमार पाँचों भाई कवच पहने, लाल ध्वजा और बीरबहूटी के रङ्ग के लाल घोड़ों से युक्त रथ पर बैठकर वर्षाकाल के बरस रहे मेघ के समान शोभायमान हुए। महाबली शिखण्डी के रथ में कच्चे घड़े के रङ्ग के, तुम्बुरु गन्धर्व के दिये हुए, बहुमूल्य दिव्य घोड़े लगे हुए थे। युद्ध के लिए आये हुए बारह हज़ार पाञ्चालदेशीय योद्धाओं में से छः हज़ार वीर समरनिपुण महावीर तेजस्वी शिखण्डी के साथ चले। शिशुपाल के पुत्र के रथ में सारङ्ग के रङ्ग के (चितकबरे) २० घोड़े जुते थे। महाबलशाली वीर चेदिनरेश अपनी सेना को साथ लेकर काम्बोज देश के घोड़ों से युक्त रथ पर बैठकर युद्ध के लिए चले। केकयदेश के राजा बृहत्क्षत्र धुएँ के रङ्ग के सिन्धुदेशीय घोड़ों से युक्त रथ पर बैठकर संग्राम करने चले। शिखण्डी के पुत्र क्षत्रदेव के रथ में कमल के से रङ्ग के, मल्लिका-पुष्पसदृश रङ्ग की आँखोंवाले, वाह्लीकदेश के दिव्य घोड़े लगे हुए थे। शत्रुदमन सेनाबिन्दु के रथ में सुवर्णजाल से सुरक्षित और रेशम के रङ्ग के, शान्त, इच्छानुसार चलनेवाले घोड़े शोभायमान थे। काशिराज अभिभू के पुत्र महारथी नवयुवक सुकुमारवर्मा के रथ में क्रौञ्च पक्षी के रङ्ग के दिव्य घोड़े जुते हुए थे। काली गर्दन और सफ़ेद शरीरवाले, बहुत ही तेज़ और सारथी के इशारे पर इच्छानुसार चलनेवाले घोड़े युधिष्ठिर के पुत्र प्रतिविन्ध्य

के रथ की शोभा बढ़ा रहे थे। भीमसेन के पुत्र श्रेष्ठ योद्धा महाबली सुतसोम के रथ के घोड़े उड़द के फूल के रङ्ग के थे। सुतसोम सहस्रसोम (चन्द्रमा) के समान सौम्य हैं और उनका जन्म उदन्दु पुर (इन्द्रप्रस्थ) में, सोमाभिषव में, सोम के प्रसाद से हुआ था। वे सोमकसभा में प्रसिद्ध हैं। महाराज! नकुल के पुत्र प्रशंसनीय शतानीक के रथ में साखू के पुष्प के रङ्ग के और तरुण समान चमकीले श्रेष्ठ घोड़े लगे हुए थे। सहदेव के पुत्र महाबली श्रुतकर्मा के घोड़ों का रङ्ग ाम के पन्ने के रङ्ग का था और उनके मुँह में सोने की लगाम थी, साज भी सब सुनहरा ुन के पुत्र अर्जुनतुल्य पराक्रमी श्रुतनिधि श्रुतकीर्ति के रथ के घोड़ों का रङ्ग चकवे के पङ्ख समान था। युद्ध-भूमि में श्रीकृष्ण और अर्जुन से ड्योढ़ी युद्धनिपुणता दिखानेवाले पराक्रमी ौर अभिमन्यु पिङ्गलवर्ण घोड़ों से शोभित रथ पर बैठकर चले। [धर्म के ख़याल से] अपने सौ भाइयों को छोड़कर पाण्डवों के पक्ष में जानेवाले आपके पुत्र युयुत्सु के रथ में बहुत बड़े, मृणाल के रङ्ग के, घोड़े जुते हुए थे। महावीर वृद्धक्षेम के पुत्र के रथ में पयाल के रङ्ग के अलङ्कृत और फुर्तीले घोड़े लगे हुए थे। सुचित्ति के पुत्र के रथ में सुवर्णजालशोभित काले पैरोंवाले सुशिक्षित विनीत घोड़े जुते हुए थे। श्रेणिमान् राजा के रथ के घोड़े सुवर्णपीठशोभित, अलङ्कृत, सोने की मालाओं से भूषित, सधे हुए, सफ़ेद रङ्ग के थे। काशिराज के रथ में सुवर्णमाला और सुवर्णपीठ से भूषित धीरप्रकृति घोड़े लगे हुए थे। अस्त्रविद्या, धनुर्वेद और वेदशास्त्र के पारगामी पण्डित क्षत्रियश्रेष्ठ सत्यधृति लाल घोड़ों से शोभित रथ पर बैठकर द्रोणाचार्य से युद्ध करने चले। पाञ्चालसेना के सेनापति और द्रोणाचार्य का सिर काटनेवाले धृष्टद्युम्न के रथ में सफ़ेद-नीले रङ्ग के घोड़े जुते हुए थे। धृष्टद्युम्न के पीछे यम और कुबेर के तुल्य महावीर सत्यधृति, युद्धप्रिय सुचित्तिपुत्र श्रेणिमान्, वसुदान, काशिराजतनय आदि वीरगण वेगशाली, सुवर्णमालाधारी, काम्बोजदेशीय घोड़ोंवाले रथों पर बैठकर शत्रुसेना को डरवाते हुए समरभूमि में चले। धृष्टद्युम्न के साथ काम्बोजदेशीय छः हज़ार प्रभद्रक योद्धा शस्त्र उठाये हुए, प्राणों का मोह छोड़कर, धनुष चढ़ाकर शत्रुओं पर बाण बरसाते हुए चले। उनके रथों में अनेक रङ्ग के बढ़िया घोड़े लगे हुए थे और रथ तथा ध्वजाएँ सुवर्णमण्डित थीं। चेकितान के रथ के बढ़िया घोड़े सुवर्ण की मालाओं से भूषित, प्रफुल्लचित्त और न्यौले के रङ्ग के थे। अर्जुन के मामा कुन्तिभोज पुरुजित् इन्द्रधनुप के रङ्गवाले श्रेष्ठ घोड़ों से युक्त रथ में बैठकर युद्ध करने चले। महाराज रोचमान तारागण-चित्रित आकाश के समान रङ्गवाले श्रेष्ठ घोड़ों से युक्त रथ पर बैठकर द्रोणाचार्य का सामना करने चले। काले पैरोंवाले चितकबरे घोड़े जरासन्ध के पुत्र वीरश्रेष्ठ सहदेव के रथ में जुते हुए थे। उन घोड़ों के गले में रत्नमण्डित सुवर्ण की मालाएँ पड़ी हुई थीं। सुदामा नामक वीर के रथ के घोड़े पुष्करनाल के रङ्ग के और वेग में बाज़ के समान जानेवाले थे। पाञ्चालदेशीय गोपति राजा के पुत्र सिंहसेन के रथ में ख़रगोश के से लाल रङ्ग के चमकीले रोएँवाले घोड़े लगे

हुए थे। पाञ्चालदेशीय प्रसिद्ध वीर जनमेजय ऐसे रथ पर वैठकर युद्धभूमि में चले जिसमें ५० सरसों के फूल के से रङ्गवाले वढ़िया घोड़े जुते हुए थे। पाञ्चाल्य नाम के राजा के रथ में सुवर्ण-मालाधारी वेगशाली उड़द के फूल के रङ्गवाले घोड़े लगे हुए थे। उनकी पीठ दही के रङ्ग की थी और चेहरे का रङ्ग विचित्र था। राजा दण्डधार के रथ में पद्मकेसर के रङ्ग के, सुन्दर सिर-वाले, श्वेत-गौर पृष्ठ, शूर घोड़े लगे हुए थे। राजा व्याघ्रदत्त के रथ में अरुण-मलिनवर्ण-शरीर और मूसे के रङ्ग की पीठवाले घोड़े जुते हुए थे। वे घोड़े जाने के लिए वड़ी तेज़ी दिखा रहे थे। विचित्र मालाओं से भूषित, काले मस्तकवाले चितकवरे घोड़े पुरुषसिंह पाञ्चालदेशीय सुधन्वा के रथ में जुते हुए थे। अद्भुतदर्शन, विचित्रवर्ण, वीरवहूटी के रङ्ग के घोड़े चित्रा-युध राजा के रथ में जुते हुए थे। कोशलाधिपति के पुत्र सुत्त्र के रथ में विचित्रवर्ण, ऊँचे, सुवर्णमाला-भूषित, चकवे के पेट के से रङ्गवाले सुन्दर घोड़े जुते हुए थे। सत्यधृति चेमि भी सुवर्णमाल्यधारी, वड़े और ऊँचे, शुभदर्शन, सधे हुए कवरे घोड़ों से युक्त रथ में वैठकर आगे वढ़े। महावीर शुक्ल की ध्वजा, कवच, धनुष और रथ के घोड़े आदि सव सामान सफ़ेद ही था। रुद्र के समान तेजस्वी समुद्रसेन के पुत्र चन्द्रसेन के रथ के घोड़े चन्द्रमा के समान सफ़ेद थे। शिवि के पुत्र चित्ररथ के रथ के घोड़े नीलकमल के रङ्ग के, सुवर्णभूषित और ६० विचित्र मालाओं से अलङ्कृत थे। मिश्रश्याम वर्ण और लाल-सफ़ेद रोमों से शोभित श्रेष्ठ घोड़ों से युक्त रथ पर वैठकर युद्धप्रिय महायोद्धा रथसेन युद्ध करने चले। पटच्चर नामक असुरों को मारनेवाले और सव मनुष्यों से वढ़कर शूर कहानेवाले समुद्राधिप के रथ में तोते के रङ्ग के घोड़े जुते थे। विचित्र माला, कवच, आयुध और ध्वजा से अलङ्कृत चित्रायुध के रथ में ढाक के फूल के रङ्ग के घोड़े जुते हुए थे। महाराज नील की ध्वजा, कवच, धनुप, रथ के घोड़े आदि सव सामान नीले रङ्ग का था। चित्र राजा के घोड़े, ध्वजा, पताका, रथ, धनुप आदि सव सामान विचित्रवर्ण नाना रूप रत्नचिह्नों से विचित्र था। रोचमान के पुत्र हेमवर्ण के रथ के श्रेष्ठ घोड़े पद्म के रङ्ग के थे। दण्डकेतु के रथ के घोड़े युद्धसमर्थ, सुडौल, शर-दण्ड के समान उज्ज्वल-गौर पीठवाले, सफ़ेद अण्डकोशवाले और मुर्गी के अण्डे की सी आभावाले थे। श्रीकृष्ण के हाथों युद्ध में पिता की मृत्यु होने पर, पाण्ड्यदेश-नरेश के सहायक मित्रों के भाग जाने और नगर लुट जाने पर जिन्होंने भीष्म, द्रोण और परशुराम से अस्त्रशिक्षा प्राप्त करके अस्त्रविद्या में रुक्मी, कर्ण, अर्जुन और श्रीकृष्ण के समान होकर द्वारकापुरी को नष्ट-भ्रष्ट करने और पृथ्वी-मण्डल को जीतने का इरादा किया था; किन्तु फिर हितचिन्तक सुहृदों के समझाने पर श्रीकृष्ण ७१ से वैर और वदला लेने का विचार छोड़ दिया और इस समय जो उत्तमता के साथ अपने राज्य का शासन कर रहे हैं, वे पाण्ड्यनरेश सागरध्वज वैडूर्यजालमण्डित चन्द्रकिरण के रङ्ग के घोड़ों से शोभित रथ पर वैठकर, अपने वाहुवल से दिव्य दृढ़ धनुष चढ़ाकर, द्रोणाचार्य के सामने

चले। पाण्ड्यनरेश के अनुयायी १ लाख ४० हज़ार श्रेष्ठ रथियों के रथों के घोड़े वासकपुष्प के रङ्ग के थे। वीर घटोत्कच के रथ में अनेक रङ्ग, रूप और आकारवाले विचित्र घोड़े जुते हुए थे। उसकी ध्वजा में रथचक्र का चिह्न था। कौरवों के इरादे को और अपनी सब प्रिय वस्तुओं को छोड़कर, भक्तिपूर्वक युधिष्ठिर का आश्रय लेनेवाले, महाबाहु लोहितलोचन युयुत्सु के सुवर्णमय रथ में महाबली पराक्रमी महाकाय घोड़े लगे हुए थे।

सेना के मध्यभाग में स्थित धर्मज्ञ नृपश्रेष्ठ युधिष्ठिर के आगे, पीछे और आसपास बहुत से बढ़िया घोड़े चले। देवरूपी बहुत से प्रभद्रकगण कई रङ्गों के घोड़ों से शोभित रथों पर बैठकर युद्ध करने के लिए चले। सुवर्णदण्डमण्डित ध्वजाओं से अलंकृत वे सब वीर भीमसेन के ८० साथ इन्द्र सहित देवताओं के समान शोभायमान हुए। हे राजेन्द्र! पाण्डव-सेना में सब वीरों से अधिक धृष्टद्युम्न शोभायमान थे। वैसे ही इधर कौरवों की सेना में प्रतापी द्रोणाचार्य की शोभा सब वीरों से बढ़कर थी। द्रोणाचार्य के रथ में ध्वजा के ऊपर कृष्णाजिन और सुवर्णमय कमण्डलु बहुत ही शोभायमान हो रहा था। महाराज! मैंने देखा कि भीमसेन की ध्वजा पर वैदूर्य-मणिमय नेत्रों से युक्त महासिंह की अपूर्व शोभा हो रही थी। महाराज युधिष्ठिर के रथ में सुवर्णनिर्मित ग्रहों से युक्त चन्द्रमा की अपूर्व शोभा दिखाई पड़ रही थी। उनके रथ में बहुत बड़े, दिव्य, नन्द-उपनन्द नाम के दो मृदङ्ग—यन्त्र के द्वारा मधुर स्वर से बजकर—हर्ष को बढ़ा रहे थे। नकुल की ध्वजा में सोने की पीठ से शोभित अतीव उग्र शरभ शत्रुपक्ष की सेना को डरवा रहा था। सहदेव की ध्वजा में घण्टा-पताका आदि सहित चाँदी का बना हुआ हंस शत्रुओं के शोक को बढ़ा रहा था। द्रौपदी के पाँचों पुत्रों की ध्वजाओं में क्रमशः धर्म, वायु, इन्द्र और अश्विनीकुमारों की प्रतिमाएँ शोभायमान थीं। कुमार अभिमन्यु के रथ की ध्वजा में सोने का बना हुआ शार्ङ्ग पक्षी था। महाबाहु घटोत्कच की ध्वजा में विकटरूप गिद्ध अङ्कित था। घटोत्कच के रथ ९० में, राक्षसराज रावण के ऐसे इच्छानुसार चलनेवाले, बढ़िया घोड़े जुते हुए थे।

महाराज! राजा युधिष्ठिर के पास दिव्य महेन्द्र का धनुष था। भीमसेन के हाथ में दिव्य वायु का धनुष था। कभी जीर्ण न होनेवाले जिस (गाण्डीव) धनुष को ब्रह्माजी ने त्रैलोक्य की रक्षा के लिए बनाया था वह अर्जुन के हाथ में था। नकुल के हाथ में विष्णु का धनुष और सहदेव के हाथ में अश्विनीकुमारों का दिव्य धनुष था। घटोत्कच के हाथ में बहुत ही भयानक दिव्य पौलस्त्य धनुष था। द्रौपदी के पाँचों पुत्रों के पास क्रमशः रुद्र, अग्नि, कुबेर, यम और गिरीश के श्रेष्ठ धनुष थे। बलराम को जो श्रेष्ठ रौद्र धनुष प्राप्त हुआ था वही धनुष उन्होंने प्रसन्न होकर वीर अभिमन्यु को दे दिया था। कुमार अभिमन्यु के हाथ में वही धनुष था। राजन्! ये तथा अन्य अनेक शूरों की सुवर्णमण्डित और शत्रुओं के लिए शोकवर्द्धक ध्वजाएँ दिखाई पड़ रही थीं। महाराज! द्रोणाचार्य की सेना में चारों ओर ध्वजाएँ देख पड़ती थीं। वहाँ

कोई कायर नहीं था। वह सैन्यसागर पट में अङ्कित चित्र के समान दिखाई पड़ता था। हे राजेन्द्र ! स्वयंवर-सभा के समान उस समरभूमि में द्रोणाचार्य की ओर वेग से जाते हुए वीरों के नाम और गोत्र सुनाई पड़ने लगे। ६८

चौबीसवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र का अपने पुत्रों के लिए शोक करके सञ्जय से
युद्ध का वर्णन करने के लिए कहना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! युद्धभूमि में भीमसेन के साथ जानेवाले ये वीर राजा लोग देवताओं की सेना को भी व्याकुल और परास्त कर सकते हैं। इनमें कोई भी युद्ध से हटने-वाला नहीं। सञ्जय ! यह जीव भाग्य के अधीन होकर ही जन्म लेता है। मनुष्य चाहे कुछ भी सोचे, किन्तु उस भाग्य के अनुसार ही फल होता है। यही कारण है कि मनुष्य सोचता कुछ है और होता कुछ है। मृगछाला पहनकर और जटाधारी होकर युधिष्ठिर बहुत समय तक वन में रहे, एक वर्ष का अज्ञातवास भी उन्होंने पूरा किया। वही युधिष्ठिर अब इतनी भारी सेना एकत्र करके, युद्ध ठानकर, कौरवपक्ष को इस तरह परास्त कर रहे हैं। मेरे पुत्र की इस पराजय का कारण सिवा भाग्य के और क्या हो सकता है ? इसी से मैं कहता हूँ कि हर एक मनुष्य अपने भाग्य को साथ लेकर ही जन्म लेता है। मनुष्य जिसको नहीं चाहता, उसी ओर भाग्य उसे खींच ले जाता है। मतलब यह कि भाग्य जब तक साथ नहीं देता तब तक मनुष्य अपनी इच्छा के अनुसार कुछ नहीं कर पाता। देखो, युधिष्ठिर ने जुआ खेलकर, सर्वस्व हारकर, क्लेश सहे; परन्तु भाग्य के अनुकूल होने से फिर उन्हें सहायक साथी मिल गये। मन्दमति दुर्योधन पहले मुझसे कहा करता था कि केकय, काशी, कोशल, चेदि और वङ्ग देश के योद्धा मेरे ही पक्ष में हैं। उसने मुझसे यह भी कहा था कि पृथ्वीमण्डल का अधिकांश उसी के अधिकार में है; युधिष्ठिर के अधिकार में उतनी पृथ्वी नहीं है। उसी महती सेना से सुरक्षित होने पर भी महावीर द्रोणाचार्य युद्धभूमि में धृष्टद्युम्न के हाथ से मारे गये, तो यह मेरे पुत्र के दुर्भाग्य के सिवा और क्या कहा जा सकता है ? अहो ! सदा युद्धप्रिय, सब अस्त्रों के प्रयोग में सिद्धहस्त, महाबाहु अद्वितीय योद्धा द्रोणाचार्य इतने राजाओं के बीच में सुरक्षित रहकर भी कैसे मारे गये ! भीष्म और द्रोण की मृत्यु का समाचार सुनने से मैं बहुत ही घबराकर कष्ट पा रहा हूँ। अब यह दुःखमय जीवन रखने को मेरा जी नहीं चाहता। मुझे पुत्र की ममता में फँसे देखकर नीतिज्ञ विदुर ने पहले जो कुछ कहा था वह सब मेरे और दुर्योधन के आगे आया। हाय ! अगर मैं उसी समय नृशंस दुर्योधन को छोड़ देता तो इस समय मेरे सभी १०

पुत्र न मारे जाते। एक को निकाल देने से शेष सब बच जाते। सच है, जो मनुष्य धर्म को छोड़कर केवल अर्थ (धन) को ही देखता है वह इस लोक में सुखी नहीं होता; लोग उसे क्षुद्र समझते हैं। हे सञ्जय! इस राज्य के श्रेष्ठ योद्धा और रक्षक द्रोणाचार्य के मारे जाने से मुझे यह राज्य विनाश से किसी तरह बचता नहीं देख पड़ता। जिन दोनों प्रधान वीर पुरुषों के बाहुबल के सहारे हम लोग निश्चिन्त और निष्कण्टक थे, उन क्षमताशाली भीष्म और द्रोण की जब मृत्यु हो गई है तब हम लोग कैसे बच सकते हैं? कौन हमारी रक्षा कर सकता है? हे सञ्जय! अब तुम उस भयानक युद्ध का सब वृत्तान्त विस्तार के साथ मुझे सुनाओ। किस-किसने युद्ध किया? किस-किसने किस-किस पर आक्रमण किया? कौन-कौन क्षुद्रचेता कायर रणभूमि से भाग खड़े हुए? श्रेष्ठ योद्धा अर्जुन ने कौन-कौन अद्भुत कर्म किये? असल में मुझे अपने भतीजे अर्जुन और भीमसेन से ही अपने पक्ष के लिए बड़ा भय है। पाण्डव-सेना के यों आक्रमण करने पर मेरे पक्ष की शेष सेना ने किस तरह कैसा दारुण संग्राम किया? युद्ध में पाण्डवों के प्रवृत्त होने पर तुम लोगों की मानसिक अवस्था २० कैसी हुई? मेरे पक्ष के किन-किन शूर-वीरों ने पाण्डवपक्ष के वीरों का सामना किया?

पच्चीसवाँ अध्याय

द्वन्द्वयुद्ध का वर्णन

सञ्जय ने कहा—महाराज! पाण्डवों ने जब इस तरह युद्धभूमि में आकर, सूर्य को जैसे मेघ छिपा लेते हैं वैसे, द्रोणाचार्य को घेर लिया तब हम लोग बहुत ही व्याकुल हो उठे। पाण्डवों की सेना के चलने-फिरने से इतनी धूल उड़ी कि उससे कौरवों की सेना ढक गई। आचार्य को न देखकर हम लोगों ने समझा कि वे शत्रुओं के हाथों मार डाले गये। उस समय राजा दुर्योधन ने उन शूरों और महाधनुर्द्धरों को द्रोणवधरूप दुष्कर क्रूर कर्म करने के लिए उद्यत देखकर कौरव-सेना को उनका सामना करने के लिए इस प्रकार आज्ञा दी—हे वीर सैनिको! तुम सब नरेश मिलकर, यथाशक्ति उत्साह और पराक्रम के अनुसार, पाण्डवों की इस सेना को रोको और नष्ट करो।

हे राजेन्द्र! तब आपके पुत्र वीर दुर्मर्षण दूर से भीमसेन को देखकर, द्रोणाचार्य के जीवन की रक्षा करने के लिए, भीमसेन के सामने आये और उन पर फुर्ती के साथ असंख्य बाणों की वर्षा करने लगे। क्रोध से भरे हुए यमराज के समान महावीर दुर्मर्षण ने ज्योंही भीमसेन पर बाणों की वर्षा की त्योंही भीमसेन ने दुर्मर्षण के ऊपर लगातार बाण बरसाना शुरू किया। इस तरह ये दोनों वीर लोमहर्षण संग्राम करने लगे।

इधर अन्यान्य युद्धनिपुण महारथी लोग, अपने-अपने स्वामियों की आज्ञा पाकर, राज्य की ममता और मृत्यु का डर छोड़कर शत्रुओं से भिड़ गये। युद्ध के लिए उन्मत्त कृतवर्मा ने मत्त मातङ्ग के समान पराक्रमी सात्यकि को और उग्रधन्वा सिन्धुराज जयद्रथ ने क्षत्रवर्मा को तीक्ष्ण बाण मारकर द्रोणाचार्य के पास जाने से रोका। क्रोध से विह्वल क्षत्रवर्मा ने जयद्रथ की ध्वजा और धनुष काटकर उनके मर्मस्थलों में दस नाराच बाण मारे। जयद्रथ ने भी फुर्ती के साथ दूसरा दृढ़ धनुष लेकर लोहमय तीक्ष्ण बाणों से क्षत्रवर्मा को घायल किया। पाण्डवों की विजय के लिए यत्न करनेवाले महारथी शूर युयुत्सु को सुबाहु ने द्रोणाचार्य के पास जाने से रोका। तब महारथी युयुत्सु ने अत्यन्त तीक्ष्ण दो क्षुर बाणों से सुबाहु की धनुष-बाण-सहित भुजाएँ काट डालीं। जैसे तटभूमि समुद्र के वेग को रोकती है वैसे ही शल्य ने धर्मात्मा राजा युधिष्ठिर को रोका। धर्मराज ने शल्य के मर्मस्थलों में बहुत से बाण मारे। शल्य भी युधिष्ठिर को चौंसठ बाण मारकर ज़ोर से सिंहनाद करने लगे। सिंहनाद करनेवाले शल्य पर अत्यन्त कुपित होकर युधिष्ठिर ने दो क्षुर बाणों से उनकी ध्वजा और धनुष काट डाला। यह देखकर लोग ऊँचे स्वर से चिल्लाने लगे। सेना सहित बाण बरसाते आते राजा द्रुपद को राजा बाह्लीक ने और उनकी सेना ने रोका। मदोन्मत्त महायूथ के अधिपति दो गजराजों के समान ये दोनों अपार सेना के स्वामी बुड्ढे राजा घोर युद्ध करने लगे। पूर्व समय में इन्द्र और अग्नि ने जिस तरह असुराधिप राजा बलि को बाणों से घायल किया था उसी तरह अवन्ति देश के राजपुत्र दोनों भाई विन्द और अनुविन्द मत्स्यराज विराट को बाणों से बेधने लगे। मत्स्य और केकय देश के योद्धा लोग परस्पर भिड़कर देवासुर-संग्राम की तरह अत्यन्त घोर और अद्भुत युद्ध करने लगे। दोनों ओर की चतुरंगिणी सेना भिड़ गई।

नकुल के पुत्र वीर शतानीक बाणों की वर्षा करते हुए द्रोणाचार्य के सामने जा रहे थे। उनको वीर भूतकर्मा ने आगे बढ़ने से रोका। शतानीक ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर तीन तीक्ष्ण भल्ल

बाणों से भूतकर्मा के दोनों हाथ काटकर सिर काट डाला। महावीर विविंशति ने आचार्य की ओर जानेवाले बलविक्रमशाली सुतसोम को रोका। उन्होंने कुपित होकर सीधे निशाने पर पहुँचनेवाले पैने बाण बरसाकर अपने चाचा विविंशति के मर्मस्थलों को छिन्न-भिन्न करना शुरू किया। महावीर भीमरथ ने पैने लोहमय बाण बरसाकर शाल्व को पीड़ित किया और उनके सारथी तथा रथ के घोड़ों को छः बाणों से मार गिराया। मोर-सदृश घोड़े जिसमें जुते हुए थे, ऐसे रथ पर बैठकर आते हुए महावीर श्रुतकर्मा को चित्रसेन के पुत्र ने आगे बढ़ने से रोका। राजन्! आपके पराक्रमी पोते, अपने-अपने पितृकुल के नाम और मान की रक्षा के लिए, एक दूसरे के प्राण लेने का यत्न करते हुए घोर संग्राम करने लगे। सिंहपुच्छ के चिह्न से युक्त ध्वजा से शोभित रथ पर बैठे हुए महावीर अश्वत्थामा ने अपने पिता के गौरव और प्राणों की रक्षा के लिए बहुत से बाण बरसाकर राजपुत्र प्रतिविन्ध्य को रोका। महाबाहु प्रतिविन्ध्य भी अत्यन्त क्रुद्ध होकर मर्मभेदी ३० अनेक बाण मारकर उन्हें पीड़ित करने लगे। द्रौपदी के पुत्रगण, खेत में बीज बोनेवाले किसान की तरह, अश्वत्थामा के ऊपर लगातार बाण बरसाने लगे। अर्जुन के पुत्र महाबाहु श्रुतकीर्ति जब युद्ध के लिए आचार्य की ओर आगे बढ़े तब दुःशासन के पुत्र ने उनको रोका। अर्जुन के तुल्य पराक्रमी श्रुतकीर्ति ने बहुत पैने तीन भल्ल बाणों से दुःशासन के पुत्र के धनुष, ध्वजा और सारथी के सिर को काट डाला और फिर आगे को प्रस्थान किया। राजन्! दोनों पक्ष के योद्धा जिन्हें प्रधान वीर समझते हैं, उन पटच्चर असुरों का संहार करनेवाले वीर को राजकुमार लक्ष्मण ने रोका। पटच्चरविनाशन वीर ने कुपित होकर लक्ष्मण के धनुष और ध्वजा को काट डाला और उन पर बाण बरसाना शुरू किया। महाप्राज्ञ नवयुवक विकर्ण ने रणभूमि में द्रोण की ओर जाते हुए शिखण्डी को रोका। तब वे भी विकर्ण के ऊपर बाण बरसाने लगे। महाबाहु विकर्ण ने अनायास शिखण्डी के सब बाण काट डाले। महावीर उत्तमौजा आचार्य की ओर वेग से जा रहे थे, उन्हें महाबाहु अङ्गद ने बाण बरसाकर रोका। ये दोनों वीर क्रमशः अत्यन्त घोर युद्ध करने लगे। उस महायुद्ध को देखकर दोनों पक्ष के योद्धा परम प्रसन्न हुए।

महावीर दुर्मुख ने द्रोणाचार्य की ओर जाते हुए महारथी पुरुजित् को वत्सदन्त बाण ४० बरसाकर रोका। महारथी पुरुजित् ने कुपित होकर दुर्मुख की भौंहों के बीच में नाराच बाण मारा, जिससे दुर्मुख का मुखमण्डल नालयुक्त कमल के समान शोभायमान हुआ। महारथी कर्ण ने आचार्य के सामने जाते हुए लाल ध्वजावाले केकयदेशीय पाँचों भाइयों को बाण-वर्षा करके रोका। वे कर्ण के बाणप्रहार से अत्यन्त पीड़ित होकर उन पर बाणों की वर्षा करने लगे। कर्ण ने भी बारम्बार बाण बरसाकर उनको अदृश्य सा कर दिया। इस तरह कर्ण और केकयदेश के पाँचों भाई राजकुमार एक दूसरे के बाणों से घोड़े, सारथी, रथ और ध्वजा-सहित अदृश्य हो गये। महाराज! आपके तीनों पुत्रों—दुर्जय, जय और विजय—ने नील, काश्य और

जयत्सेन इन तीन वीरों को रोका। जैसे सिंह, बाघ और चीते के साथ भालू, भैंसे और साँड़ का संग्राम हो वैसे ही आपके तीन पुत्रों के साथ उक्त तीनों वीरों का घोर युद्ध देखकर दर्शक-गण परम सन्तुष्ट हुए। क्षेमधूर्ति और बृहन्त इन दोनों भाइयों ने आचार्य की ओर जाते हुए सात्वत को तीक्ष्ण बाण बरसाकर रोका। जैसे जङ्गल में सिंह के साथ दो मदोन्मत्त गजराजों का युद्ध हो वैसे ही सात्वत के साथ इन दोनों भाइयों का अद्भुत संग्राम होने लगा। कुपित चेदिराज ने असंख्य बाण बरसाकर युद्धप्रिय अम्बष्ठराज को द्रोण के सामने जाने से रोका। राजा अम्बष्ठराज ने अस्थिभेदिनी शलाका के द्वारा चेदिराज को घायल कर दिया। उस दारुण बाण के प्रहार से चेदिराज रथ से पृथ्वी पर गिर पड़े। उनके हाथ से धनुष और बाण भी गिर पड़ा। शारद्वत कृपाचार्य ने

५०

क्षुद्रक बाणों से कुपित वार्द्धक्षेमि को आगे बढ़ने से रोका। राजन्! विचित्र युद्ध में निपुण और समरप्रिय कृपाचार्य तथा वार्द्धक्षेमि के युद्ध को जो लोग देख रहे थे वे सब उसमें आसक्तचित्त होकर युद्ध को देखने लगे। वे लोग चित्रलिखित से रह गये। महारथी सौमदत्ति ने आचार्य के यश को बढ़ाते हुए महाराज मणिमान् को घेर लिया। उन्होंने फुर्ती के साथ सौमदत्ति के धनुष, ध्वजा-पताका, छत्र को काटकर और सारथी को मारकर रथ से नीचे गिरा दिया। तब शत्रुदमन यूपकेतु फुर्ती के साथ अपने रथ पर से कूद पड़े। उन्होंने तलवार के वार से मणिमान् के रथ, घोड़े, ध्वजा और सारथी को नष्ट कर दिया। इसके बाद यूपकेतु अपने रथ पर बैठकर, दूसरा धनुष लेकर, अपने हाथ से घोड़ा को भी हाँकने और तीक्ष्ण बाणों से पाण्डवों की सेना को नष्ट करने लगे। इन्द्र जैसे देवासुर-युद्ध में असुरों को मारने के लिए दौड़े थे वैसे ही वेग से जाकर वृषसेन ने बाणवर्षा से पाण्ड्यराज को रोका।

महावीर घटोत्कच गदा, परिघ, खड्ग, पट्टिश, लगुड़, शिला, मूसल, मुद्गर, चक्र, भिंदिपाल, परशु, धूल, हवा, आग, पानी, भस्म, कङ्कड़, तृण और वृक्ष आदि की वर्षा करके शत्रुसेना को विह्वल करने, भगाने, पीड़ित और नष्ट करने लगा। इस प्रकार विजयी होकर वह द्रोणाचार्य की

६० और बढ़ा। तब राक्षसश्रेष्ठ अलम्बुष भी अत्यन्त क्रोध से बहुत से अस्त्र-शस्त्र बरसाकर और तरह-तरह के मायायुद्ध करके घटोत्कच को रोकने लगा। पूर्व समय में शम्बरासुर और इन्द्र का जैसा घोर संग्राम हुआ था वैसा ही घोर संग्राम दोनों राक्षस करने लगे।

राजन्! इस प्रकार सैकड़ों-हज़ारों रथी, घुड़सवार, पैदल और हाथीसवार योद्धा लोमहर्षण संग्राम करने लगे। महाराज! उस समय द्रोणाचार्य के वध के लिए जैसा घोर संग्राम हुआ था वैसा संग्राम पहले न कभी देखा गया और न सुना गया। उस समय रणभूमि में ६५ चारों ओर अनेक घोर, विचित्र और रौद्र युद्ध होते हुए दिखाई पड़ने लगे।

छब्बीसवाँ अध्याय

भगदत्त के पराक्रम का वर्णन

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय! सब योद्धा जब इस तरह रणभूमि में जाकर, परस्पर विभाग के अनुसार, द्वन्द्वयुद्ध करने लगे तब मेरे पक्ष के और पाण्डवों के पक्ष के वीरों ने कैसा युद्ध किया? उधर महावीर अर्जुन ने संशप्तकगण पर किस तरह आक्रमण किया और संशप्तकगण ने उनका किस प्रकार सामना किया?

सञ्जय ने कहा—महाराज! सुनिए, दोनों सेनाओं के योद्धाओं ने जब इस तरह अपने-अपने प्रतिद्वन्द्वी को छाँटकर युद्ध ठान दिया तब आपके ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन ख़ुद हाथियों की सेना साथ लेकर भीमसेन का सामना करने पहुँचे। जैसे हाथी पर हाथी या साँड़ पर साँड़ हमला करता है वैसे ही राजा दुर्योधन ने भीमसेन पर आक्रमण किया। समरनिपुण असाधारण भुजबलसम्पन्न वीर भीमसेन क्रोध करके हाथियों की सेना पर झपटकर टूट पड़े और फ़ुर्ती के साथ हाथियों को मारने, गिराने तथा भगाने लगे। पर्वताकार बड़े-बड़े हाथी भीमसेन के लोहमय बाणों के प्रहार से छिन्न-भिन्न होकर, मदहीन होकर, इधर-उधर भागने लगे। मेघमण्डल जैसे आँधी के वेग से नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है वैसे ही वे हाथी भीमसेन के प्रहार से पीड़ित होकर [क़तार से निकल-निकलकर चिल्लाते हुए] भागने लगे। सूर्यदेव उदय होकर जैसे भूमण्डल पर अपनी किरणें फैलाते हैं वैसे ही भीमसेन हाथियों पर बाणों की वर्षा करने लगे। उनके बाणप्रहार से हाथियों के शरीर कट-फटकर रक्त से भीग गये। सूर्य की किरणों से लाल सन्ध्याकाल के आकाश में शोभायमान बादलों के समान वे हाथी दिखाई पड़ने लगे।

भीमसेन को इस तरह हाथियों की सेना का नाश करते देखकर दुर्योधन अत्यन्त क्रोध से १० उन पर बाण बरसाने लगे। महाबाहु भीमसेन की आँखें क्रोध से लाल हो रही थीं। वे दुर्योधन के प्राण लेने के लिए उनको तीक्ष्ण बाण मारने लगे। भीम के बाणों से दुर्योधन का शरीर कट-फट

जब हाथी पास पहुँच गया तब भीमसेन झपटकर उस हाथी के ही तले छिप गये—पृ० २२३१

गया। वे क्रोध से विह्वल होकर भीमसेन पर, सूर्य की किरणों के समान चमकीले, बाण चलाने लगे। महाबाहु भीमसेन ने क्रुद्ध होकर दो भल्ल बाणों से फुर्ती के साथ दुर्योधन की ध्वजा में स्थित चिह्न जो मणिमय रत्नखचित नाग था उसे, और दुर्योधन के हाथ के धनुष को, काट डाला।

तब दुर्योधन को भीमसेन के बल से अत्यन्त पीड़ित देखकर अङ्गराज हाथी पर बैठकर भीमसेन की तरफ़ झपटे। महावीर भीमसेन ने अङ्गाधिपति के हाथी को बादल की तरह गरजते आते देखकर उसके मस्तक पर तीक्ष्ण बाण मारे। भीमसेन का चलाया हुआ एक बाण हाथी को फाड़ता हुआ पृथ्वी में घुस गया। वह हाथी वज्रपात से फटे हुए पहाड़ की तरह पृथ्वी पर गिर पड़ा। उसके गिरते ही अङ्गाधिपति पृथ्वी पर गिरते-गिरते सँभल गये, किन्तु इसी बीच में भीमसेन ने फुर्ती के साथ एक भल्ल बाण से उनका सिर काट डाला। महावीर अङ्गराज के मरने पर उनकी सेना चारों ओर भागने लगी। हाथी, घोड़े और रथ के योद्धा इधर-उधर भाग खड़े हुए। उनके नीचे रौंदे गये हज़ारों पैदल सिपाही बेमौत मरने लगे।

महाराज! सब सेना जब इस तरह चारों ओर भागने लगी तब प्राग्ज्योतिषपुर के राजा भगदत्त अपना हाथी बढ़ाकर वेग से भीमसेन की ओर चले। वह हाथी इन्द्र के उस ऐरावत गजराज के वंश का था, जिस पर बैठकर इन्द्र ने दैत्य-दानवों को जीता था। क्रोध के मारे लाल-लाल २० आँखें फाड़कर, दोनों पैर उठाकर, सूँड़ सिकोड़कर वह गजराज भीमसेन की तरफ़ इस तरह चला मानों उनको भस्म ही कर देगा। उसने उनके रथ और घोड़ों को चूर-चूर कर डाला। महावीर भीमसेन को अञ्जलिकावेध-विद्या मालूम थी। इससे वे पैदल हो जाने पर भी जहाँ के तहाँ खड़े रहे। जब हाथी पास पहुँच गया तब भीमसेन झपटकर उस हाथी के ही तले छिप गये। मार डालने की घात में लगे हुए उस हाथी को वे हाथ के प्रहार से पीड़ित करके खिझाने लगे। वह हाथी, उन्हें पकड़ने के लिए, उनके पीछे कुम्हार के चाक की तरह चक्कर काटने लगा और भीमसेन उसी की आड़ में चारों ओर घूमने लगे। इसके बाद दस हज़ार मस्त हाथियों का बल रखनेवाले भीमसेन, उस हाथी की आड़ छोड़कर, सामने आ गये। गजराज मौक़ा पाकर, सूँड़ से भीमसेन की गर्दन लपेटकर, दोनों घुटनों से उन्हें गिराकर मार डालने को तैयार हुआ। तब उन्होंने चटपट सूँड़ की लपेट से अपने को छुड़ा लिया। अब वे फिर उसी की ओट में छिपकर उसके आक्रमण की राह देखने लगे। इसके बाद महाबली भीमसेन उस हाथी की आड़ से निकलकर वेग से अलग हट गये। इसी समय सेना के सब लोग "हाय! धिक्कार है हमें! भीमसेन को गजराज ने मार डाला!" कह-कहकर चिल्लाने लगे। इस चिल्लाहट से पाण्डवों की सेना ऐसी पीड़ित हुई कि सब लोग भागकर वहाँ पहुँचे जहाँ भीमसेन खड़े हुए थे। ३०

राजन्! इधर राजा युधिष्ठिर भीमसेन को हाथी के हमले से मरा हुआ जानकर बहुत ही शोकाकुल हुए। वे उसी समय धृष्टद्युम्न को साथ लेकर भगदत्त के सामने पहुँचे

और चारों ओर से भगदत्त को घेरकर उन पर सहस्र-सहस्र अत्यन्त तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। भगदत्त ने अंकुश के द्वारा ही उन बाणों को व्यर्थ करके, हाथी को प्रहार से उत्तेजित करके, दम भर में पाण्डवों और पाञ्चालों की बहुत सी सेना नष्ट-भ्रष्ट कर दी। राजन् ! हम लोगों ने रणभूमि में वृद्ध राजा भगदत्त और उनके हाथी का अद्भुत पराक्रम देखा; उसे देखकर हमें बड़ा ही विस्मय हुआ। इसी समय दशार्ण देश के नरेश शीघ्रगामी पार्श्वगामी मदमत्त हाथी पर बैठकर वेग के साथ राजा भगदत्त के सामने युद्ध के लिए आये। पूर्व समय में भीमरूप, परदार और वृक्षों से शोभित पर्वत जैसे परस्पर टकराते थे वैसे ही वे दोनों वीर प्राणों का मोह छोड़कर घोर युद्ध करने लगे। प्राग्ज्योतिषपति महाराज भगदत्त के गजराज ने आगे बढ़कर, फिर पीछे हटकर, घूमकर बड़े वेग से दशार्णपति के हाथी की पसलियों में टक्कर मारकर उसे हटा दिया। [दशार्णपति के हाथी ने विह्वल होकर घुटने टेक दिये।] इसी बीच में भगदत्त ने सूर्य-किरण के समान चमकीले सात पैने तोमर अपने शत्रु दशार्णपति को और उनके हाथी को उस प्रहार से दशार्णपति का आसन विचलित हो उठा।

उधर धर्मराज युधिष्ठिर ने रथसेना साथ लेकर भगदत्त को चारों ओर से घेर लिया। हाथी पर बैठे महावीर भगदत्त उन रथों से घिरकर पहाड़ के ऊपर जङ्गल में प्रज्वलित अग्नि के समान शोभायमान हुए। ४० चारों ओर से मण्डल बाँधकर सब रथी भगदत्त के ऊपर बाणों की लगातार वर्षा करने लगे। परन्तु भगदत्त उनके बीच में बेखटके डटे रहे। इसके उपरान्त युद्धदुर्मद प्राग्ज्योतिषपुर के राजा भगदत्त ने अपने हाथी को सात्यकि के रथ के पास पहुँचाया। गजराज ने सात्यकि के रथ को सूँड़ से लपेटकर दूर फेंक दिया, जिससे रथ के टुकड़े-टुकड़े हो गये। सात्यकि फुर्ती के साथ रथ से पृथ्वी पर कूदकर वहाँ से भाग खड़े हुए। उनका सारथी भी बड़े-बड़े, सिन्धु देश के, घोड़ों की रास छोड़कर उनके पीछे ही भाग गया। अब वह गजराज उस रथों के घेरे से बाहर निकलकर राजाओं को मारने, फेंकने और रथों को तोड़ने-फोड़ने लगा। उस शीघ्रगामी हाथी के हमले से राजा लोग ऐसे व्याकुल और शङ्कित हो गये कि उन्हें उस एक हाथी के सैकड़ों रूप दिखाई देने लगे।

राजा भगदत्त जब अपने हाथी की सहायता से पाण्डवों और पाञ्चालों की सेना को नष्ट-भ्रष्ट करने लगे तब सब सैनिक सिलसिला तोड़ करके इधर-उधर भागने लगे। उस समय हाथियों और घोड़ों के चिल्लाने का घोर आर्त्तनाद सुनाई पड़ने लगा। महाराज ! तब महावीर भीमसेन फिर भगदत्त के सामने आये। भगदत्त का हाथी सूँड़ से फेंके हुए मद से भीमसेन के वाहनों ५० को भयविह्वल करने लगा। भीमसेन के रथ के घोड़े रथ को लिये बेतहाशा भाग खड़े हुए।

उस समय राजा कृती के पुत्र रुचिपर्वा रथ पर बैठकर बाण बरसाते हुए साक्षात् काल की तरह भीमसेन के पीछे दौड़े। पहाड़ी देश के राजा सुपर्वा ने तत्काल तीक्ष्ण

बाण मारकर रुचिपर्वा को मार गिराया। वीर रुचिपर्वा के मारे जाने पर महावीर अभिमन्यु, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, चेकितान, धृष्टकेतु और युयुत्सु, ये सब उस हाथी को मार डालने के लिए भयानक सिंहनाद के साथ जलधारा की तरह लगातार तीक्ष्ण बाण बरसाते हुए उसे व्यथित करने लगे। तब रणनिपुण महावीर भगदत्त ने पार्ष्णि, अंकुश और अँगूठे के प्रहार से उत्तेजित करके उस हाथी को आगे बढ़ाया। भगदत्त के द्वारा सञ्चालित वह भयानक हाथी सूँड़ फैलाकर, कानों और आँखों को संकुचित करके, बड़े वेग से चला। उसने आक्रमण करके युयुत्सु के सारथी और वाहनों को नष्ट कर दिया। महावीर युयुत्सु ने फुर्ती के साथ रथ से कूदकर अपनी जान बचाई। उनके भागने पर पाण्डवपक्ष के वीरगण अत्यन्त भयङ्कर सिंहनाद करते हुए तीक्ष्ण बाणों की वर्षा से उस गजराज को घायल करने लगे। राजन्! उस समय आपके पुत्र फुर्ती के साथ बड़े वेग से अभिमन्यु के रथ की ओर चले।

राजन्! अब महावीर भगदत्त हाथी के ऊपर से शत्रुओं पर बाण बरसाते हुए वैसे ही शोभायमान हुए जैसे अपनी किरणें फैलाते हुए सूर्यदेव उदय पर्वत पर शोभा को प्राप्त होते हैं। उधर अभिमन्यु ने बारह, युयुत्सु ने दस, द्रौपदी के पाँचों पुत्रों ने और धृष्टकेतु ने तीन-तीन बाण मारकर उस गजराज को विह्वल और घायल कर दिया। इन वीरों ने बड़े यत्न और ६० कौशल से उस हाथी को जो बाण मारे, उनसे वह सूर्य की किरणों से शोभित मेघ के समान जान पड़ा। इसके बाद अंकुश से सञ्चालित वह भयङ्कर हाथी कुपित होकर अपने दाहने-बायें भाग की सेना को रौंदकर, सूँड़ से पटक-पटककर, नष्ट करने लगा। चरवाहा जैसे वन में डण्डे से पशुओं को पीटता है वैसे ही वीर भगदत्त बाणों से पाण्डवों की सेना को बारम्बार ताड़ित करने लगे। बाज़ के हमले से चिल्लाते हुए कौओं के समान पाण्डवों की सेना चिल्ला करके भाग खड़ी हुई।

महाराज़! उस समय भगदत्त का मस्त हाथी अंकुश की चोट से उत्तेजित होकर परदार पहाड़ की तरह बड़े वेग से रणभूमि में विचरने लगा। जहाज़ पर बैठे हुए सौदागर जैसे अपने आसपास समुद्र में तूफ़ान से उठनेवाली दारुण लहरें देखकर शङ्कित और व्याकुल होते हैं वैसे ही शत्रुपक्ष के योद्धा लोग उस गजराज को देखकर घबरा उठे। डरकर भागते हुए हाथी, घोड़े, रथी और पैदल आदि के कोलाहल से पृथ्वीमण्डल, आकाशमण्डल और सब दिशाओं के मण्डल गूँज उठे। जैसे पूर्व समय में दानवपति विरोचन ने सुरक्षित सुरसेना में घुसकर हलचल डाल दी थी वैसे ही हाथी सहित वीर भगदत्त ने शत्रुसेना के भीतर घुसकर हलचल मचा दी। धरती की धूल हवा के साथ आकाशमण्डल में छा गई। सब सेना उस अँधेरे से ढक गई। सैनिकों ६८ को वह एक ही हाथी, वेग से भ्रमण करने के कारण, अनेक रूप सा प्रतीत होने लगा।

सत्ताईसवाँ अध्याय

संशप्तक-वध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज! आप मुझसे अर्जुन के युद्धकौशल का वृत्तान्त पूछते हैं, सो मैं वर्णन करता हूँ, सुनिए। अर्जुन ने युद्धभूमि में भगदत्त की विविध क्रियाओं से उठनेवाली विकट धूल देखकर और सैनिकों का कोलाहल सुनकर वासुदेव से कहा—हे केशव! महावीर भगदत्त शायद अपने ख़ूनी हाथी को लेकर युद्ध के मैदान में आये हैं। उसी से पीड़ित होकर सब सैनिक चिल्ला रहे और भाग रहे हैं। महाराज भगदत्त का हाथी बड़ा विकट है और वे ख़ुद भी इन्द्र के समान पराक्रमी हैं। हाथी पर से लड़नेवाले जितने योद्धा पृथ्वी पर हैं, उन सबमें भगदत्त श्रेष्ठ हैं। उनके हाथी की जोड़ का दूसरा हाथी नहीं है। वह हाथी लोह-मय कवच से सुरक्षित, कभी न थकनेवाला, अस्त्र-शस्त्र के प्रहार और अग्नि-स्पर्श को सहनेवाला है। उसे अस्त्र से नष्ट करना असम्भव नहीं तो दुःसाध्य अवश्य है। मेरी समझ में वह अकेला हाथी ही आज हमारी सेना को नष्ट कर देगा। मेरे और आपके सिवा और कोई भगदत्त तथा उनके हाथी को रोक नहीं सकता। इसलिए अब आप शीघ्रता के साथ मेरा रथ भगदत्त के सामने ले चलिए। अपने हाथी के बल से और अपनी अवस्था तथा बाहुबल से अहङ्कारी भगदत्त को मैं आज स्वर्ग भेजकर इन्द्र का प्रिय अतिथि बनाऊँगा। राजन्! अर्जुन के ये वचन सुनकर महात्मा श्रीकृष्ण ने रथ को भगदत्त की ओर हाँक दिया।

[महावीर अर्जुन जब भगदत्त के साथ युद्ध करने के इरादे से उधर चले] तब महा-रथी त्रिगर्तदेशीय दस हज़ार और श्रीकृष्ण के अनुचर चार हज़ार, इस तरह चौदह हज़ार संशप्तकगण युद्ध के लिए ललकारते हुए अर्जुन के पीछे चले। इधर भगदत्त सब सेना का संहार कर रहे थे और उधर संशप्तकगण युद्ध के लिए ललकार रहे थे। इस दुहरे सङ्कट में पड़ने से अर्जुन का हृदय हिंडोले के समान दोनों ओर डोलने लगा। वे यह सोचकर बहुत व्याकुल हुए कि अब क्या करना चाहिए। यहाँ से लौटकर संशप्तकगण से युद्ध करूँ, अथवा युधिष्ठिर को बचाने के लिए भगदत्त से जाकर भिड़ूँ? महाराज! बहुत देर सोचकर अन्त को वीर अर्जुन ने संशप्तकों को ही मारने का निश्चय किया। वे उन्हीं की ओर लौट पड़े। अर्जुन का वध करने के लिए महावीर दुर्योधन और कर्ण ने ही सलाह करके यह उपाय निकाला था कि एक ओर संशप्तकगण युद्ध करें और दूसरी ओर भगदत्त लड़ें। किन्तु वीरश्रेष्ठ अर्जुन ने पहले चिन्ता में पड़कर अन्त को संशप्तक-वध का ही निश्चय करके उस कौशल को व्यर्थ कर दिया।

११

उस समय महावीर संशप्तकगण पराक्रमी अर्जुन के ऊपर चारों ओर से तीक्ष्ण असंख्य बाण बरसाने लगे। उनके बाण सब दिशाओं में व्याप्त हो गये। उन बाणों के बीच अर्जुन,

श्रीकृष्ण, घोड़े और रथ सब अदृश्य हो गये। संशप्तकगण के उस अद्भुत पराक्रम को देखकर कृष्णचन्द्र विमुग्ध हो उठे। उन्हें इस तरह मोहित और पसीने से तर देखकर अर्जुन ने ब्रह्मास्त्र छोड़ा। उस ब्रह्मास्त्र से प्रायः सभी संशप्तकगण नष्टप्राय हो गये। सैकड़ों-हज़ारों बाण, धनुष, डोरियाँ, हाथ-पैर, ध्वजाएँ, घोड़े, सारथी और रथी छिन्न-भिन्न होकर पृथ्वी पर गिरने लगे। जिनके शरीर वृक्ष, पर्वत और मेघ के समान देख पड़ते थे ऐसे हज़ारों सुसज्जित, सवारों और महावतों से ख़ाली पीठवाले बड़े-बड़े हाथी अर्जुन के बाणों से नष्ट होकर पृथ्वी पर गिरने लगे।

२०

अर्जुन के बाणों से हाथियों की सूँड़ें कट गईं, मस्तक फट गये और वे मरकर अपने सवारों सहित धरती पर धमाधम गिरने लगे। अर्जुन के भल्ल बाणों से कटे हुए और ऋष्टि, प्रास, खड्ग, मुद्गर, परशु आदि शस्त्रों से शोभित वीरों के हाथ पृथ्वी पर बिछ गये। बालसूर्य, कमल और चन्द्रमण्डल के समान योद्धाओं के मस्तक वीर अर्जुन के बाणों से कट-कटकर पृथ्वी पर गिरने लगे।

महावीर अर्जुन कुपित होकर जब इस तरह शत्रुसेना का संहार करने लगे तब शत्रुपक्ष के योद्धा लोग उनके प्राणनाशक बाणों से अत्यन्त पीड़ित हुए। कमलवन को दलित करनेवाले गजराज की तरह महावीर अर्जुन को सेना का संहार करते देखकर शत्रु-मित्र सब उनकी प्रशंसा करने लगे। महामति श्रीकृष्ण अर्जुन को इन्द्र के सदृश अद्भुत कर्म करते देखकर विस्मयपूर्वक हाथ जोड़कर उनसे कहने लगे—हे धनञ्जय! आज समरभूमि में तुमने जैसा अद्भुत कार्य किया है वह, मेरी समझ में, इन्द्र, यम, वरुण, कुबेर आदि लोकपालों के लिए भी दुष्कर है। तुमने एक-साथ सैकड़ों-हज़ारों वीर संशप्तकों का संहार कर डाला, यह कम आश्चर्य की बात नहीं है।

इस तरह बहुसंख्यक संशप्तकगण को विनष्ट करके महावीर अर्जुन ने श्रीकृष्ण से राजा भगदत्त की ओर रथ ले चलने के लिए कहा।

३१

अट्ठाईसवाँ अध्याय

भगदत्त और अर्जुन के युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज ! महामति श्रीकृष्ण ने अर्जुन की इच्छा के अनुसार सुवर्ण-भूषित तेज़ घोड़ों को द्रोणाचार्य की सेना के सामने चलाया। द्रोणाचार्य के बाणों से पीड़ित अपने भाइयों की सहायता और रक्षा के लिए महारथी अर्जुन चले। इसी समय महावीर सुशर्मा अपने भाइयों के साथ अर्जुन से लड़ने के लिए उनके पीछे दौड़े। तब अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—हे शत्रुदमन ! वह देखिए, अपने भाइयों सहित सुशर्मा युद्ध के लिए मुझे ललकार रहा है। उधर उत्तर ओर आचार्य अपने तीक्ष्ण बाणों से हमारी सेना को मारकर भगा रहे हैं। संशप्तकगण ने इस तरह मेरे मन को दुहरे सङ्कट में डाल रक्खा है। अब आप ही विचार करके मुझसे कहिए कि इस समय मेरा क्या कर्तव्य है? [पहले संशप्तकगण का संहार करूँ, या द्रोण गुरु के बाणों से पीड़ित अपनी सेना की रक्षा करूँ ?]

श्रीकृष्ण ने अर्जुन के वचन सुनकर त्रिगर्तनरेश सुशर्मा की ओर रथ हाँक दिया। उस समय रणप्रिय अर्जुन ने सात बाणों से सुशर्मा को घायल करके उनकी ध्वजा और धनुष को काट डाला और फिर छः बाणों से उनके घोड़े, सारथी और भाई को मार डाला। यह देखकर महावीर सुशर्मा ने क्रोध से विह्वल होकर अर्जुन के ऊपर भयानक सर्पाकार लोहमय शक्ति और श्रीकृष्ण के ऊपर तीक्ष्ण तोमर का प्रहार किया। अर्जुन ने तीन बाणों से उस शक्ति और तोमर को काट डाला और बाण-वर्षा से सुशर्मा को मूर्च्छित करके वे लगातार बाण १० छोड़ते हुए आगे बढ़े। कौरव-सेना के वीरों में से कोई भी उन्हें रोक नहीं सका।

महाराज ! महारथी अर्जुन अपने बाणों से बड़े-बड़े वीरों को मारकर सूखे वन को जलानेवाली आग के समान रणभूमि में आगे बढ़े। सैनिक लोग अर्जुन के अग्निस्पर्श-सदृश दारुण बाणों के वेग को सहने में अशक्त हो उठे। महावीर अर्जुन अपने बाणों से सैनिकों का इस तरह संहार करके गरुड़ की तरह बड़े वेग से भगदत्त के सामने चले। उस समय युद्धविजयी अर्जुन कपट-द्यूत रचनेवाले दुरात्मा दुर्योधन के दोष से होनेवाले क्षत्रिय-संहार के लिए, पाण्डवों के लिए कल्याणप्रद और शत्रुओं की आँखों से शोक के आँसू बहानेवाले, गाण्डीव धनुष को हाथ में लिये हुए थे। कौरव-सेना के योद्धा लोग अर्जुन के बाणों से विह्वल होकर और भागकर, पहाड़ से टकराई हुई नाव की तरह, विपत्तिग्रस्त होने लगे।

उस समय क्रूरमति दस हज़ार कौरव-सेना के योद्धा, जय-पराजय के लिए दृढ़ निश्चय करके, अर्जुन को युद्ध के लिए बेधड़क ललकारने लगे। सब तरह की विपत्तियों को झेलनेवाले अर्जुन, जैसे कोई गजराज कमलवन में घुस करके उसे दलमल डाले वैसे ही, शत्रु-सेना के भीतर

घुसकर उसे नष्ट-भ्रष्ट करने लगे। कौरवपक्ष के सैनिक लोग इस तरह जब अर्जुन के बाणों से मारे जाने लगे तब महारथी भगदत्त क्रुद्ध होकर, उसी गजराज पर बैठकर, अर्जुन की ओर वेग से चले। पुरुषसिंह अर्जुन ने रथ पर बैठकर उन पर आक्रमण किया। रथ और हाथी पर से उन दोनों वीरों का घोर संग्राम होने लगा। महावीर भगदत्त सुशिक्षित हाथी पर और महारथी अर्जुन सुसज्जित रथ पर बैठकर अपना-अपना कौशल दिखाते हुए रणभूमि में विचरने लगे। महारथी भगदत्त मेघसदृश मत्त-मातङ्ग के ऊपर से इन्द्र की तरह अर्जुन के ऊपर लगातार बाणों की वर्षा करने लगे। युद्धविद्या-विशारद अर्जुन भी अपने बाणों से बीच राह में भगदत्त के बाणों को काट करके उन पर बाण बरसाने लगे। प्राग्ज्योतिषपुर के राजा भगदत्त अनायास ही अर्जुन के बाणों को काटकर सिंहनाद करते हुए बहुत तरह के बाणों से अर्जुन और श्रीकृष्ण को पीड़ित करके उन्हें मार डालने की इच्छा से हाथी को आगे बढ़ाने लगे। महामति श्रीकृष्ण, यम के समान भयङ्कर भगदत्त के हाथी को आते देखकर, चटपट रथ को लिये उसके दक्षिण पार्श्व में हट गये। महावीर अर्जुन चाहते तो इस सुयोग में उस हाथी और उसके सवार भगदत्त को पीछे से मार डालते, किन्तु उन्होंने युद्ध के धर्म का ख़याल करके ऐसा नहीं किया। उस समय भगदत्त का भयानक हाथी कुपित होकर राह में पड़नेवाले असंख्य पैदलों, हाथियों, घोड़ों और रथों को रौंदने और तोड़ने-फोड़ने लगा। यह देखकर अर्जुन को क्रोध चढ़ आया। उन्होंने उसे मार डाला। २० ३०

उनतीसवाँ अध्याय

हाथी सहित भगदत्त का मारा जाना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! अर्जुन ने इस तरह कुपित होकर भगदत्त का क्या किया? और भगदत्त ने ही उनका क्या किया? इस वृत्तान्त का वर्णन विस्तार के साथ करो।

सञ्जय ने कहा—महाराज! महारथी अर्जुन और श्रीकृष्ण जब भगदत्त के पास पहुँचे तब सबने समझ लिया कि ये दोनों अब मौत के मुँह में जाने से नहीं बच सकते। महावीर भगदत्त हाथी पर बैठे-बैठे श्रीकृष्ण और अर्जुन के ऊपर लगातार बाण बरसाने लगे। वे अपना धनुष चढ़ाकर, कानों तक खींचकर, सुवर्णपुङ्ख-भूषित, शिला पर घिसकर तीक्ष्ण बनाये गये बाणों से श्रीकृष्ण के मर्मस्थलों में पीड़ा पहुँचाने लगे। भगदत्त के चलाये हुए अग्नि-स्पर्श बाण श्रीकृष्ण के शरीर को भेदकर पृथ्वी में घुसने लगे। उस समय महारथी अर्जुन ने भगदत्त का धनुष काटकर उनकी रक्षा करनेवालों को मार डाला। अब वे उनके साथ खेल खेलने की तरह युद्ध करने लगे। रण-निपुण भगदत्त ने अर्जुन के ऊपर अत्यन्त तीक्ष्ण

चौदह तोमर चलाये। उनके चलाये हुए हर एक तोमर के अर्जुन ने तीन-तीन टुकड़े कर डाले। इसके बाद भगदत्त के हाथी का कवच भी देखते ही देखते अपने बाणों से काट

गिराया। अर्जुन के बाणों से कवच कट जाने पर उनके प्रहारों से वह महागजराज अत्यन्त व्यथित हो उठा और जलधाराओं से नहाये हुए मेघ-हीन पर्वतराज की तरह शोभायमान हुआ। तब प्राग्ज्योतिषपति भगदत्त ने श्रीकृष्ण को लोहमय सुवर्णदण्डभूषित शक्ति मारी। रणनिपुण अर्जुन ने उसी १० दम फुर्ती के साथ उस शक्ति को बाणों से दो जगह से काट डाला। इसके बाद भगदत्त के छत्र और ध्वजा को काटकर उनके अङ्गों में दस बाण मारे। अर्जुन के कङ्कपत्रशोभित तीक्ष्ण बाणों से बुरी तरह घायल होने के कारण भगदत्त को बड़ा क्रोध चढ़ आया। वे अर्जुन के मस्तक पर असंख्य तोमर फेंककर बड़े ज़ोर से सिंहनाद करने लगे। भगदत्त के बाणों से अर्जुन के सिर पर का किरीट-मुकुट पलट गया। महावीर अर्जुन ने उस उलटे हुए किरीट को ठीक तौर से रखकर भगदत्त से कहा—हे प्राग्ज्योतिषेश्वर! तुम अब इस समय सब लोगों को एक बार सदा के लिए अच्छी तरह देख लो [; क्योंकि अब तुम्हारी मृत्यु का समय आ गया है]।

अर्जुन के इन वचनों को सुनकर महारथी भगदत्त अत्यन्त क्रोध से व्याकुल हो, चमकीला धनुष हाथ में लेकर, अर्जुन और श्रीकृष्ण के ऊपर लगातार तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। उस समय रणविशारद अर्जुन ने बड़ी फुर्ती से भगदत्त का धनुष और तरकस काटकर बहत्तर बाणों से उनके मर्मस्थलों को छेद डाला। अर्जुन के तीक्ष्ण बाणों से मर्मस्थलों में अत्यन्त पीड़ित होने के कारण भगदत्त को बड़ा क्रोध हो आया। तब उन्होंने अर्जुन की छाती ताककर वैष्णव अस्त्र छोड़ा। महात्मा श्रीकृष्ण ने, अर्जुन की रक्षा के लिए, वह सर्वघाती अमोघ वैष्णवास्त्र अपनी छाती पर रोक लिया। [श्रीकृष्ण की आड़ में आ जाने से अर्जुन बच गये।] वह वैष्णवास्त्र श्रीकृष्ण के वक्षःस्थल में वैजयन्ती माला के रूप में स्थित हुआ। २१ उस समय महावीर अर्जुन ने अत्यन्त क्लेश पाकर श्रीकृष्ण से कहा—हे मधुसूदन! आपने प्रतिज्ञा की

थी कि 'मैं युद्ध नहीं करूँगा, केवल अर्जुन का रथ हाँकूँगा।' फिर इस समय आपने अपनी उस प्रतिज्ञा को क्यों तोड़ दिया? मैं यदि विपत्ति या प्राण-सङ्कट में पड़ा हुआ होता अथवा शत्रु का सामना करने में असमर्थ होता तो आप युद्ध कर सकते थे। किन्तु मेरे जीवित रहते युद्ध करना कदापि आपका कर्तव्य नहीं है। आपसे यह छिपा नहीं है कि गाण्डीव धनुष लेकर मैं देवता, दैत्य, मनुष्य आदि सहित सब लोकों को परास्त कर सकता हूँ।

तब श्रीकृष्ण ने कहा—हे अर्जुन! मैं तुमसे एक बहुत ही गुप्त प्राचीन वृत्तान्त कहता हूँ, सुनो। मैंने लोकों का हित और रक्षा करने के लिए अपनी मूर्ति को चार अंशों में विभक्त किया है। उन चार मूर्तियों में एक मूर्ति पृथ्वी पर तपस्या करती है, दूसरी मूर्ति जगत् के भले और बुरे कर्मों का निरीक्षण करती है, तीसरी मूर्ति मनुष्यलोक में उत्पन्न होकर मनुष्यों के कार्य का साधन करती है और चौथी मूर्ति हज़ार वर्ष की निद्रा के सुख का अनुभव करती है। हज़ार वर्ष के बाद वह चौथी मूर्ति जागकर वरदान के योग्य व्यक्तियों को श्रेष्ठ वर देती है। उस समय पृथ्वी ने, मेरे वर-दान के समय को जानकर, अपने पुत्र नरकासुर के लिए मुझसे जो वर माँगा था, सो सुनो। पृथ्वी ने मुझसे कहा—हे नारायण! आपके वर से मेरा पुत्र नरकासुर वैष्णव अस्त्र को प्राप्त करके देवता और दैत्य दोनों के हाथ से न मारा जा सके। मैंने कहा—हे पृथ्वी! यह वैष्णव अस्त्र नरकासुर की रक्षा के लिए अमोघ हो। इसके प्रभाव से नरकासुर को कोई नहीं मार सकेगा। तुम्हारा पुत्र इस अमोघ दिव्य अस्त्र से सुरक्षित रहने के कारण सब लोकों के लिए दुराधर्ष और शत्रुसेना का संहार करने में समर्थ होगा। हे अर्जुन! पृथ्वी मुझसे यह वर पाकर चली गई। तभी से नरकासुर बड़ा ही दुर्द्धर्ष हो उठा। महावीर प्राग्ज्योतिषपति भगदत्त ने उसी नरकासुर से यह अमोघ वैष्णवास्त्र पाया था। त्रिलोक में इन्द्र, चन्द्र, रुद्र, वरुण आदि कोई ऐसा नहीं है, जिसका वध यह अस्त्र न कर सकता हो। इसी कारण मैंने अपनी प्रतिज्ञा की परवा न करके ख़ुद इस अस्त्र के वेग को रोक लिया। देवद्वेषी महासुर भगदत्त इस समय उस वैष्णव अस्त्र से हीन हो गये हैं। अतएव जिस तरह मैंने नरकासुर को मारा था उसी तरह अब तुम इस दारुण शत्रु को नष्ट करो। ३०

महावीर अर्जुन ने यह सुनकर भगदत्त को मारने का निश्चय कर लिया। वे भगदत्त के ऊपर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। अर्जुन ने धैर्य के साथ भगदत्त के हाथी को यमदण्ड-सदृश नाराच बाण मारा। साँप जैसे बाँबी के भीतर घुसता है वैसे ही अर्जुन का चलाया हुआ वह वज्रसदृश नाराच उस हाथी के मस्तक में घुस गया। भगदत्त उस हाथी को बारम्बार अर्जुन की ओर चलाने लगे, किन्तु जैसे दरिद्र की स्त्री अपने पति की बातों पर ध्यान नहीं देती वैसे ही उस हाथी ने भी भगदत्त की चेष्टा पर ध्यान नहीं दिया। कुछ ही समय के बाद उस हाथी का शरीर निश्चेष्ट हो गया और वह दाँतों के बल पृथ्वी पर गिरकर, चिल्ला-चिल्लाकर, मर गया। ४०

अर्जुन से श्रीकृष्ण ने कहा कि इस राजा को बुढ़ापे ने घेर रक्खा है। यह शूर है तो बड़ा बलवान् किन्तु इसकी पलकें इतनी लटक गई हैं कि आँखें खुली रखने के लिए इसने पलकों को पट्टी से बाँध रक्खा है। यह सुनकर अर्जुन ने बाण से उस पट्टी को काट दिया; इससे भगदत्त की आँखों पर पलकें गिर जाने के कारण वे कुछ भी देख न सके। अब अर्जुन ने अर्धचन्द्र बाण से भगदत्त का वक्षःस्थल फाड़ डाला। तब भगदत्त के हाथ से धनुष और बाण छूटकर गिर गये और उनका शरीर प्राणहीन होकर गिर पड़ा। सन्ताड़ित पद्म-नाल से जैसे पत्ते झड़ जाते हैं वैसे ही भगदत्त के मस्तक पर से बहुमूल्य पगड़ी गिर पड़ी। अच्छी तरह फूला हुआ कनेर का पेड़ जैसे उखड़कर पहाड़ के ऊपर से गिर पड़े वैसे ही सुवर्णमाल्य-भूषित भगदत्त का शरीर सुवर्णभूषण-भूषित हाथी पर से पृथ्वी पर गिर पड़ा। उस समय महावीर अर्जुन इन्द्र-तुल्य महाबली इन्द्र के सखा वीर भगदत्त को मारकर वैसे ही कौरव-सेना के वीरों का संहार करने लगे जैसे आँधी बड़े-बड़े पेड़ों को तोड़ती और उखाड़ती है। ५१

तीसवाँ अध्याय

शकुनि का युद्धभूमि से भागना

सञ्जय कहते हैं—राजन्! अर्जुन इस तरह इन्द्र के प्रिय सखा भगदत्त को मारकर रणभूमि में घूमने लगे। उस समय वृषक और अचल नामवाले दो गान्धारराज-नन्दन अर्जुन को, सामने आकर, बाणवर्षा से पीड़ित करने लगे। कभी सामने से और कभी पीछे से वे अर्जुन के ऊपर वेगगामी तीक्ष्ण बाण चलाने लगे, जिनसे उनका शरीर घायल हो गया। अर्जुन ने क्रुद्ध होकर दम भर में तीक्ष्ण बाणों से गान्धार देश के राजकुमार वृषक के रथ के सारथी और घोड़ों को मार डाला और उनके धनुष, ध्वजा, छत्र और रथ को तिल-तिल करके काट डाला। महारथी अर्जुन अनेक प्रकार के अस्त्रों और शस्त्रों से शकुनि आदि गान्धार देश के योद्धाओं को बारम्बार व्याकुल करने लगे। फिर अर्जुन ने कुपित होकर शस्त्र ताने हुए पाँच सौ गान्धार-वीरों को दम भर में मार गिराया। वृषक बड़ी फुर्ती के साथ अपने बिना घोड़ों के रथ से कूदकर, भाई के रथ पर जाकर, दूसरा धनुष लेकर युद्ध करने लगे।

वीर अर्जुन, एक ही रथ पर बैठे हुए, वृषक और अचल नाम के दोनों भाइयों को बारम्बार तीक्ष्ण बाण मारने लगे। पूर्व समय में जैसे वृत्रासुर और बलासुर ने इन्द्र पर प्रहार किये थे वैसे ही वे दोनों भाई अर्जुन को तीक्ष्ण बाणों से बेधने लगे। जैसे गर्मी और वर्षा ऋतु के दो-दो महीने ताप और जल के द्वारा मनुष्यों को अत्यन्त व्याकुल करते हैं वैसे ही वे दोनों वीर राजकुमार स्वयं प्रहारों से बचकर अर्जुन पर प्रहार करने लगे। इसके बाद अर्जुन ने एक रथ पर सटे बैठे १०

हुए दोनों भाइयों को एक ही वाण से मार डाला। उसी समय वे सिंहतुल्य लाल-लाल आँखों-वाले, एक ही रूप और आकार के, दोनों भाई मरकर रथ पर से गिर पड़े। अत्यन्त पवित्र वीर-यश को पृथ्वी पर सब ओर फैलाकर वे दोनों वीर स्वर्ग को सिधारे।

महाराज! इसके बाद आपके पुत्रगण संग्राम से न हटनेवाले, वन्धुजनप्रिय, दोनों मातुलों को मरकर गिरते देखकर आँसू बहाने लगे। मायानिपुण शकुनि ने जब देखा कि उनके दोनों भाई मारे गये तब वे श्रीकृष्ण और अर्जुन को मोहित करने के लिए माया-युद्ध करने लगे। उस समय शकुनि की माया के प्रभाव से सब दिशाओं और विदिशाओं से अर्जुन के ऊपर लाठी, अयोगुड़, पत्थर, शतघ्नी, गदा, वेलन, खड्ग, शूल, मुद्गर, पट्टिश, कम्पन, ऋष्टि, नखर, मुशल, परशु, क्षुर, क्षुरप्र, नालीक, वत्सदन्त, अस्थिसन्धि, चक्र, विशिख, प्रास और अन्यान्य बहुत से शस्त्रों की वर्षा होने लगी। गधे, ऊँट, भैंसे, बाघ, सिंह, सृमर (एक प्रकार के मृग), चीते, रीछ, कुत्ते, गिद्ध, वानर, साँप आदि बहुत से जीव भूख से व्याकुल और क्रोध से अन्धे होकर अर्जुन की ओर दौड़ते दिखाई पड़ने लगे। तब दिव्य अस्त्रों के जाननेवाले अर्जुन [अस्त्रों से २० अभिमन्त्रित] बाण चलाकर उन जीवों को नष्ट करने लगे। अर्जुन के बाणों से पीड़ित होकर भयानक चीत्कार करते हुए वे मर-मरकर यमपुर जाने लगे।

अब बहुत ही घना अँधेरा फैल गया, जिसने अर्जुन के रथ को छिपा लिया। उस अँधेरे के भीतर से कठोर वाक्य कहकर अदृश्य जीव अर्जुन की भर्त्सना करने लगे। अर्जुन ने ज्योतिर्मय अस्त्र का प्रयोग करके तुरन्त उस भयङ्कर अँधेरे को दूर कर दिया। इसके बाद भयानक जल के प्रवाह प्रकट हुए। अर्जुन ने वह जल सुखाने के लिए आदित्यास्त्र का प्रयोग किया। उस अस्त्र के प्रभाव से प्रायः सब जल सूख गया। इसी तरह महावीर अर्जुन ने हँसते-हँसते अस्त्रविद्या के बल से शकुनि की प्रकट की हुई सब मायाओं को नष्ट कर दिया। तब शकुनि अर्जुन के बाणप्रहार से पीड़ित होकर, बड़े फुर्तीले घोड़ोंवाले रथ पर बैठकर, कायरों की तरह रण छोड़कर भाग खड़े हुए। अब महाबाहु अर्जुन अपने हाथों की फुर्ती दिखाते हुए कौरव-सेना पर बाण बरसाने लगे। जैसे गङ्गा का प्रवाह पहाड़ से टकराकर दो धाराओं में बँट जाता है वैसे ही कौरव-सेना अर्जुन के बाणों से पीड़ित होकर दो भागों में बँट गई। कुछ सेना आचार्य के समीप और कुछ सेना दुर्योधन के पास चली गई। उस समय ऐसी धूल उड़ी कि अर्जुन को हम लोग देख नहीं पाते थे। केवल दक्षिण ओर लगातार गाण्डीव धनुष का ३१ घोर शब्द सुनाई पड़ रहा था। वह गाण्डीव का शब्द शङ्ख, दुन्दुभि और अन्य युद्ध के बाजों की ध्वनि से मिलकर आकाश में गूँज उठा।

महाराज! उस समय दक्षिण ओर घोर संग्राम होने लगा। मैं द्रोणाचार्य के साथ था। धर्मराज युधिष्ठिर के वीर योद्धा कौरवपक्ष की सेना का संहार करने लगे। वर्षाकाल

में हवा जैसे मेघों को तितर-बितर कर देती है वैसे ही वीर अर्जुन अपने बाणों के प्रहार से शत्रुसेना को छिन्न-भिन्न करने और भगाने लगे। जल बरसाते हुए इन्द्र के समान बाणवर्षा करनेवाले अर्जुन को आते देखकर कोई वीर उन्हें नहीं रोक सका। अर्जुन के बाणों की चोट से अत्यन्त व्यथित होकर कौरवपक्ष के वीर ऐसे भागे कि भागते समय अपने ही पक्ष के लोगों को रौंदते-कुचलते और मारते चले जाते थे। अर्जुन के चलाये हुए कङ्कपत्रशोभित और शरीरों को काटनेवाले बाण टोड़ियों की तरह चारों ओर फैलने और गिरने लगे। साँप जैसे बाँबियों में घुसते हैं वैसे ही वे रक्त पीनेवाले बाण घोड़ों, हाथियों, पैदलों और रथी लोगों के शरीरों को फोड़कर पृथ्वी में घुसते दिखाई देते थे। अर्जुन अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों को दूसरा बाण नहीं मारते थे; एक ही बाण लगने से वे जीव अत्यन्त व्यथित और प्राण-
४० हीन होकर पृथ्वी पर लोटने लगते थे। मरे हुए मनुष्यों, हाथियों और घोड़ों की लाशों से समरभूमि परिपूर्ण हो उठी। चारों ओर गीदड़ और कुत्ते कोलाहल कर रहे थे। इस तरह वह युद्धभूमि अत्यन्त भयानक और अद्भुत दिखाई पड़ने लगी। पिता पुत्र को, पुत्र पिता को, मित्र मित्र को और स्वजन स्वजन को छोड़कर आत्मरक्षा के लिए यत्न कर रहा था। अधिक क्या, लोग
४२ अपने-अपने वाहनों को भी छोड़कर भागे जा रहे थे।

इकतीसवाँ अध्याय

अश्वत्थामा का राजा नील को मारना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! जिस समय कौरव-सेना छिन्न-भिन्न हो गई और तुम लोग रणभूमि छोड़कर भागने लगे उस समय तुम लोगों की क्या दशा हुई? छिन्न-भिन्न होकर भागती और शरणस्थान को न देखती हुई सेना को सँभालना और एकत्र करना बहुत ही दुष्कर होता है। मेरे पक्ष के सेनापति ने यह काम कैसे किया? तुम सब हाल मुझसे कहो।

सञ्जय ने कहा—महाराज! साधारण सैनिक लोग जब बे-सिलसिले भाग खड़े हुए तब भी महाराज दुर्योधन का प्रिय और अपने यश की रक्षा करने के लिए श्रेष्ठ वीरगण द्रोणाचार्य के पीछे चले। शस्त्र-अस्त्र तन गये, युधिष्ठिर अपने योद्धाओं के साथ युद्धभूमि में उपस्थित हुए और भयानक युद्ध होने लगा। उस समय आपके पक्ष के वीर योद्धा लोग बे-खटके आर्यजनोचित अद्भुत कर्म करके अपना पराक्रम प्रकट करने लगे। कौरवपक्ष के महापराक्रमी वीर मौक़ा पाकर भीमसेन, सात्यकि और धृष्टद्युम्न आदि पर आक्रमण करने लगे। क्रूरमति पाञ्चालगण "द्रोण को मारो, द्रोण को मारो" कहकर अपने पक्ष के लोगों को उत्तेजित करने लगे। वैसे ही आपके पुत्रगण "द्रोणाचार्य की रक्षा करो, द्रोणाचार्य की रक्षा करो" कहकर

अपने पक्ष के वीरों को आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करते हुए प्रेरणा करने लगे। द्रोणाचार्य के जीवन को लेकर कौरवों और पाण्डवों में बाज़ी सी लग गई। पाण्डव कहते थे कि द्रोणाचार्य को मारो और कौरव कहते थे कि द्रोणाचार्य को न मारने पावें। आचार्य द्रोण पाञ्चाल देश की रथ-सेना के जिस-जिस अंश को अपने बाणों से छिन्न-भिन्न करने लगते थे उस-उस अंश की रक्षा करने के लिए वीर धृष्टद्युम्न वहीं पहुँच जाते थे। इस तरह सब सेना में उथल-पथल मच गई और युद्ध ने भयानक रूप धारण कर लिया। वीर योद्धा लोग भयानक सिंहनाद करते हुए अपने शत्रुओं पर आक्रमण करने लगे।

पाण्डवों पर आक्रमण करना कौरवपक्ष के वीरों के लिए असम्भव सा हो उठा। कौरवों के दिये हुए कष्टों को स्मरण करके पाण्डव भयानक आक्रमण से शत्रुपक्ष की सेना को व्याकुल करने लगे। पाण्डव लोग कुपित होकर द्रोणाचार्य को मारने के लिए प्राणपण करके घोरतर संग्राम करने लगे। वह संग्राम पत्थर और लोहे की वर्षा के समान अत्यन्त भयङ्कर हो उठा। बड़े-बूढ़े लोगों को भी, जिन्होंने पहले देवताओं और दानवों के घोर संग्राम देखे-सुने हैं, याद नहीं आता कि कभी ऐसा भयङ्कर युद्ध हुआ था। उस वीर-संहारकारी समर में सेना के बोझ से पृथ्वी अत्यन्त व्यथित होकर काँपने लगी। चारों ओर घूमते-फिरते कौरवपक्ष के सैनिकों का कोलाहल आकाशमण्डल में गूँजता हुआ पाण्डव-सेना में छा गया। पाण्डवपक्ष के सैनिकों को सामने देखकर द्रोणाचार्य सुतीक्ष्ण बाणों से उन्हें छिन्न-भिन्न करने लगे। तब पाण्डवपक्ष के सेनापति धृष्टद्युम्न क्रोध से विह्वल होकर उनके सामने आये और उन्हें रोकने की चेष्टा करने लगे। द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न के उस अद्भुत समर को देखकर हम लोगों ने निश्चय कर लिया कि यह युद्ध अतुलनीय है।

(१०)
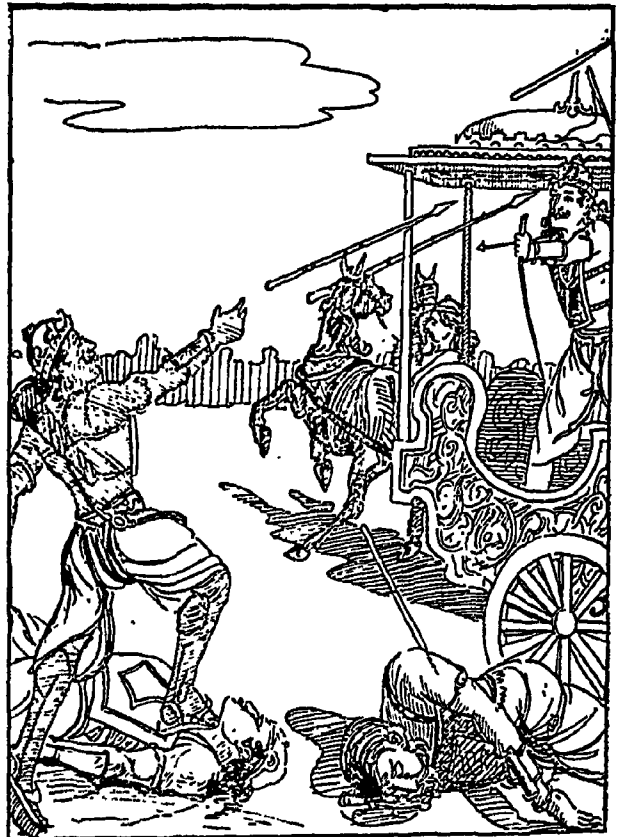
इसके बाद अग्निसदृश तेजस्वी महाराज नील कौरव-सेना को उसी तरह अपने बाणों से भस्म करने लगे जिस तरह प्रज्वलित आग सूखी घास के ढेर को जलाती है। उनका धनुष ही ज्वाला था और बाण ही चिनगारियों के समान देख पड़ते थे। तब महा-

२० प्रतापी वीर अश्वत्थामा हँसते हुए नील के सामने आकर कहने लगे—हे नील ! इन बहुत से योद्धाओं को अपने बाणों की आग में तुम व्यर्थ भस्म कर रहे हो। इन्हें मारने से क्या फल होगा ? आओ, मुझ अकेले से ही युद्ध करो, शीघ्र ही क्रुद्ध होकर मुझ पर वार करो।

महाराज ! यह सुनकर महापराक्रमी और खिले हुए कमल के समान मुखवाले नील नरेश ने कमल-वर्ण कमल-लोचन अश्वत्थामा को कई तीक्ष्ण बाण मारे। महाबली अश्वत्थामा ने तुरन्त तीन भल्ल बाणों से नील के धनुष, ध्वजा और छत्र के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। तब नील रथ से कूदकर ढाल-तलवार लेकर अश्वत्थामा का सिर काटने के लिए पक्षी की तरह उनकी ओर झपटे। अश्वत्थामा ने भी हँसकर फुर्ती के साथ एक भल्ल बाण से नील का, सुन्दर नासिका से शोभित और मणिमय कुण्डलों से अलङ्कृत, मस्तक काट डाला। लम्बे, कमलवर्ण, पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखवाले, कमल-लोचन नील जब पृथ्वी पर मरकर गिर पड़े तब पाण्डवों की सेना बहुत ही व्यथित हो उठी। पाण्डव-पक्ष के योद्धा और महारथी लोग उस समय इस चिन्ता से अधीर हो उठे कि इस समय हमारी रक्षा कौन करेगा। क्योंकि महावीर अर्जुन तो दक्षिण-रणभूमि में दूर पर, बचे हुए संशप्तकों और नारायणी सेना के वीरों से, संग्राम कर रहे
२९ हैं। फिर वे कैसे हमारी रक्षा कर सकते हैं ?

बत्तीसवाँ अध्याय

घमासान युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—राजन् ! इसके उपरान्त महावीर भीमसेन इस तरह अपनी सेना का संहार होना न देख सकने के कारण आगे बढ़े। उन्होंने क्रुद्ध होकर बाह्लीक को साठ और कर्ण को दस बाण कस-कसकर मारे। द्रोणाचार्य ने भीमसेन के प्राण लेने के लिए उनके मर्मस्थलों में लगातार तीक्ष्ण धारवाले छब्बीस बाण मारे। कर्ण ने बारह, अश्वत्थामा ने सात और दुर्योधन ने छः तीक्ष्ण बाण भीमसेन को मारे। तब भीम ने भी कुपित होकर फुर्ती दिखाते हुए द्रोणाचार्य को पचास, कर्ण को दस, दुर्योधन को बारह और अश्वत्थामा को आठ बाण मारकर सिंहनाद किया। इस तरह वे अकेले ही उनके साथ संग्राम करने लगे। वह युद्धभूमि उस समय महाभयानक हो उठी। उस समय वहाँ मृत्यु बहुत ही सुलभ हो रही थी। धर्मराज युधिष्ठिर ने भीमसेन की रक्षा करने के लिए कई योद्धाओं को भेजा। नकुल, सहदेव और सात्यकि आदि योद्धा सहायता करने के लिए भीमसेन के पास पहुँचे। भीमसेन आदि सब वीर मिलकर क्रोध के साथ आगे बढ़े और द्रोणाचार्य की सेना को मारने का उद्योग करने लगे।
१० महारथी द्रोणाचार्य ने भी उन महाबली वीरों का अकेले ही सामना किया। उस समय कौरव

लोग, राज्य की आशा और मृत्यु का डर छोड़कर, पाण्डवों के सामने आये। हाथी का सवार हाथी के सवार को, रथी रथी को और घुड़सवार घुड़सवार को मारकर गिराने लगा। वीर लोग शक्ति, खड्ग और परशु आदि शस्त्रों के द्वारा परस्पर घोर प्रहार करने लगे। किसी-किसी का सिर नीचे हो गया और वह हाथी या घोड़े की पीठ से पृथ्वी पर गिर पड़ा। कोई बाण लगने से मरकर रथ से धरती पर आ रहा। किसी शूर का शरीर छिन्न-भिन्न हो गया और वह चेष्टारहित होकर ज़मीन पर गिर पड़ा, इसी बीच में एक हाथी उसकी छाती पर होकर चला गया, जिससे उसकी छाती और मस्तक चूर-चूर हो गया। इसी तरह अनेक हाथी इधर-उधर भागकर बहुत से जीवित, घायल, अधमरे और मरे हुए लोगों को रौंदने लगे। कुछ हाथी बाणों के प्रहार से चुटियल होकर धरती पर गिर पड़े और अपने बड़े-बड़े दाँतों से बहुत से गिरे हुए रथी लोगों के शरीरों को फाड़ने लगे। कुछ हाथी दाँतों में लगे हुए नाराच बाणों से सैकड़ों मनुष्यों को घायल करते हुए इधर-उधर विचरने लगे। हाथियों के दल इधर-उधर भागकर गिरे हुए घोड़ों, रथों, हाथियों और कवचधारी पैदलों को—मोटे नरकुल के वन की तरह—पैरों से कुचलते और रौंदते चले जाते थे। अपनी बात के पक्के शानदार राजा लोग काल के वश होकर गिद्धों के पङ्खों की बिछी हुई अत्यन्त क्लेशकर मृत्यु-शय्या पर पड़े हुए थे। उस समय मर्यादा तोड़कर भयानक युद्ध हो रहा था। मोहवश पिता पुत्र को और पुत्र पिता को मार रहा था। चारों ओर रथों के टूटे हुए धुरे, कटे धनुष, ध्वजा और छत्र आदि का गिर-गिरकर ढेर होने लगा। २० कोई घोड़ा, जुएँ का आधा अंश कट जाने पर, बड़े वेग से भाग खड़ा हुआ। तलवार की मूठ पकड़े हुए हाथ और कुण्डल-मण्डित मुण्ड कट-कटकर गिरने लगे। महापराक्रमी हाथी बिगड़ खड़े हुए और रथों को खींच-खींचकर तोड़ने-फोड़ने लगे। किसी जगह पर हाथी के हमले से घोड़े घायल हो-होकर अपने सवारों सहित धरती पर गिर रहे थे।

इस तरह मर्यादा-हीन अत्यन्त भीषण संग्राम हो रहा था। "हाय तात! हाय पुत्र! हाय मित्र! तुम कहाँ हो! कहाँ भागे जा रहे हो! इसे मारो! उसे इस जगह ले आओ! इस व्यक्ति को मार डालो!"—इस तरह की और अन्यान्य प्रकार की अनेक बातें चारों ओर सुनाई पड़ रही थीं। हास्य, सिंहनाद, शङ्खनाद, आर्तनाद और गर्जनशब्द चारों ओर उठकर उस रणभूमि को भयानक बना रहे थे। मनुष्यों, हाथियों और घोड़ों के शरीरों से रक्त का प्रवाह बह चला, जिससे ज़मीन की उठी हुई धूल बैठ गई। डरपोक मनुष्य उस दृश्य को देख-कर डर गये। किसी वीर के रथ का पहिया शत्रु के रथ के पहिये में फँस गया जिससे, अन्य शस्त्र मारने का मौक़ा न रहने के कारण, उसने गदाप्रहार करके शत्रु का सिर चूर्ण कर डाला। उस निराश्रय संग्राम में आश्रयप्रार्थी वीर परस्पर केशाकर्षण, घूँसेबाज़ी और नख-दन्त-प्रहार आदि करके युद्ध करने लगे। किसी वीर ने तलवार तानने के लिए हाथ उठाया, इसी समय

शत्रु ने उस खड्ग-सहित हाथ के टुकड़े-टुकड़े करके गिरा दिये। किसी-किसी के धनुष-बाण-अंकुश आदि शस्त्रों से शोभित हाथ छिन्न-भिन्न होने लगे। कोई किसी के प्रति अपने हार्दिक विद्वेष को प्रकट करने लगा। किसी योद्धा ने समर से भागकर जान बचाई और किसी ने अपने समकक्ष योद्धा का सिर काट डाला। कोई आर्तनाद करता हुआ बड़े वेग से भाग खड़ा ३० हुआ। कोई अत्यन्त भयविह्वल होकर चिल्लाने लगा। कोई तीक्ष्ण बाणों से शत्रु को और कोई अपने ही पक्ष के योद्धा को मार रहा था। पर्वतशिखरतुल्य कोई गजराज बाण की चोट खाकर वर्षाकाल के नदी के फटे हुए कगारे के समान गिर पड़ा। झरने से युक्त पर्वत के समान मदमत्त अन्य एक हाथी रथी, घोड़े और सारथी को पीड़ित करता हुआ खड़ा था। डरपोक दुर्बल हृदयवाले लोग ख़ून से तर महावीरों को मार-काट करते देखकर मोह को प्राप्त और मूर्च्छित होने लगे। सभी लोग उद्विग्न हो रहे थे। ऐसा अँधेरा और हुल्लड़ था कि कुछ भी नहीं मालूम पड़ता था। कोई किसी को नहीं पहचानता था। सैनिकों की दौड़-धूप से उठी हुई बेशुमार धूल आकाशमण्डल में छा गई। समर में कोई नियम नहीं रहा।

उधर पाण्डवपक्ष के सेनापति धृष्टद्युम्न सदा युद्ध का उत्साह रखनेवाले पाण्डवों और अन्य वीरों को "यही ठीक मौक़ा है" कहकर उत्तेजित करने लगे। बाहुबलसम्पन्न पाण्डवगण सेनापति की आज्ञा के अनुसार शत्रुसेना का संहार करते हुए, राजहंस जैसे सरोवर में विचरते हैं वैसे ही, रणभूमि में द्रोणाचार्य की तरफ़ जा रहे थे। आचार्य द्रोण के रथ के सामने "उसे पकड़ो; भागो नहीं; शङ्का न करो; उसे मार डालो" इत्यादि भयङ्कर शब्द सुन पड़ते थे। उधर से द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण, अश्वत्थामा, जयद्रथ, शल्य, अवन्तिदेशीय विन्द और अनुविन्द आदि वीर योद्धा लोग शत्रुपक्ष के वीरों को रोकने लगे। इधर अत्यन्त कुपित, दुर्द्धर्ष और दुर्निवार्य पाञ्चालगण और पाण्डवगण शत्रुओं के बाणप्रहार से अत्यन्त पीड़ित होकर वीर आर्यों के धर्म का ख़याल करके द्रोणाचार्य के सामने समर में डटे रहे। इसके उपरान्त क्रोध से विह्वल होकर वीरश्रेष्ठ आचार्य हज़ारों बाण बरसाकर चेदि, पाञ्चाल और पाण्डवगण को अत्यन्त पीड़ित करने लगे। उनकी प्रत्यञ्चा की, वज्रपात के शब्द के समान मनुष्यों को भय-४१ विह्वल बना देनेवाली, ध्वनि और तलध्वनि चारों ओर सुनाई पड़ने लगी। महाराज! द्रोणाचार्य इस तरह पाञ्चालों और पाण्डवों के दल का विनाश कर ही रहे थे इसी समय महावीर अर्जुन संशप्तकगण को हराकर, रुधिर रूप जल और बाण-समूह रूप आवर्त से युक्त भयानक रणकुण्ड से उत्तीर्ण होकर, वहाँ पर आ गये। हम लोगों ने महायशस्वी सूर्यतुल्य अर्जुन की वानरचिह्न-युक्त ध्वजा देखी। पाण्डवदल के मध्यवर्ती, युगान्तकाल के सूर्य के समान प्रचण्ड, महावीर अर्जुन अस्त्ररूप किरणों से संशप्तकसैन्यसागर को सुखाकर कौरव-सेना को तपाने और पीड़ित करने लगे। जैसे प्रलयकाल में धूमकेतु उदय होकर सब प्राणियों को भयाकुल और भस्म

अर्जुन, ने......कर्ण के छोटे भाई को मार डाला—पृ० २२४७
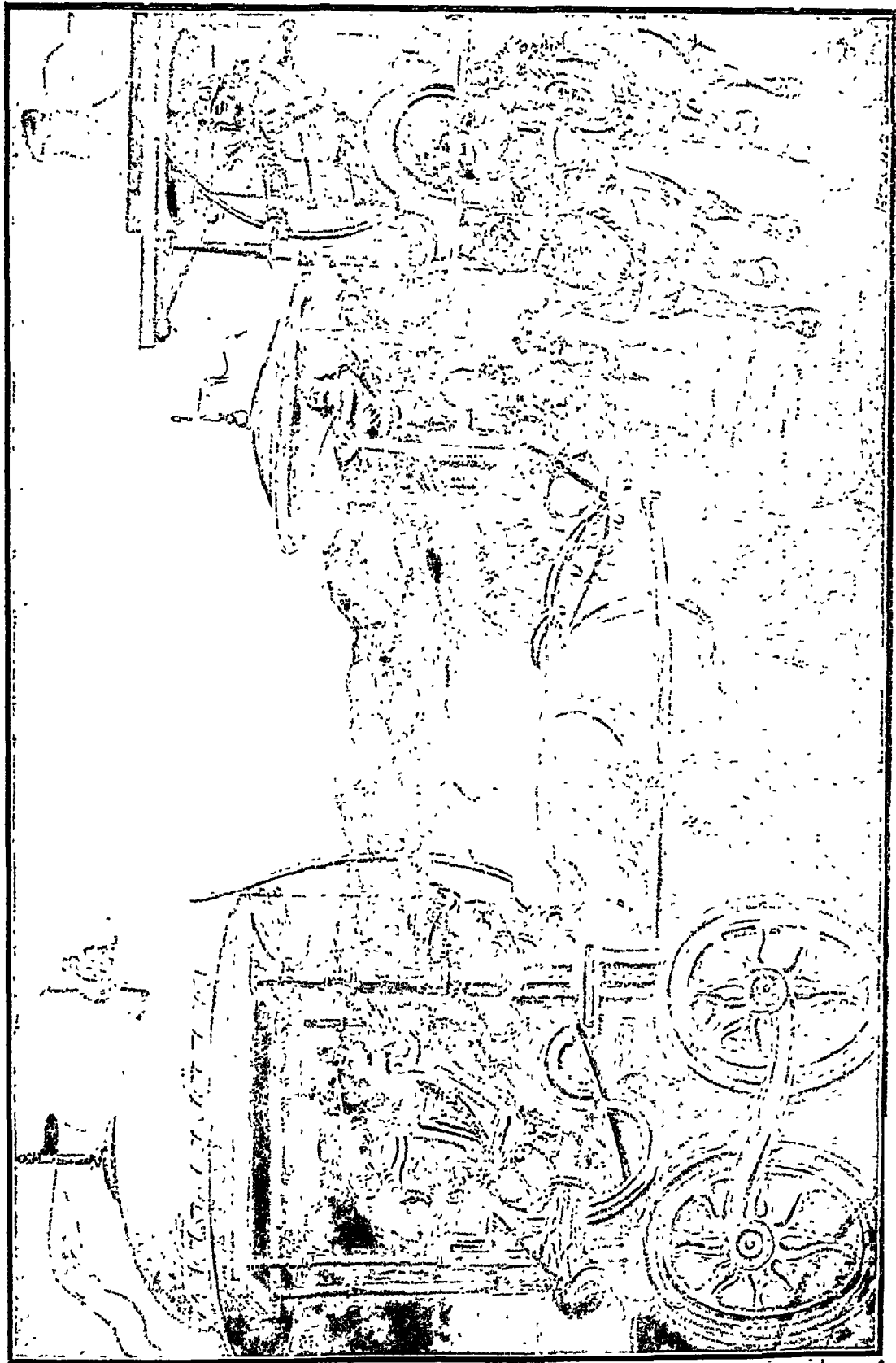
इस दुर्भेद्य चक्रव्यूह को किस तरह तोड़ सकेंगे—पृ० २२९२

करता है वैसे ही अर्जुन भी अस्त्रतेज से कौरवों को जलाने लगे। हाथी, घोड़े, रथ आदि पर बैठे हुए वीरगण अर्जुन के बाणों से मरकर गिरने लगे। उनके अङ्ग छिन्न-भिन्न और केश बिखरे हुए थे। कोई आर्तनाद और कोई चीत्कार करने लगा। कुछ लोग अर्जुन के बाणों से तत्काल मरकर पृथ्वी पर गिर पड़े। महावीर अर्जुन योद्धाओं के वीर-धर्म का ख़याल करके गिरे-पड़े और भागे हुए शत्रुओं को नहीं मारते थे। कौरवपक्ष के प्राय: सभी लोग विस्मित और समर से विमुख होकर हाहाकार करने और "कर्ण! कर्ण!" चिल्लाने लगे। शरणार्थी कौरवों का रोना-चिल्लाना सुनकर "डरो नहीं" कहकर कर्ण ने अर्जुन का सामना किया। उन्होंने आते ही अर्जुन के ऊपर आग्नेय अस्त्र छोड़ा। चमकीले धनुप को घुमाकर तीक्ष्ण बाण बरसानेवाले कर्ण के बाणों को अर्जुन ने अपने बाणों से विफल करना शुरू किया। कर्ण भी अपने बाणों से अर्जुन के बाणों को रोकते और बाण-वर्षा करते हुए सिंहनाद करने लगे। इसी बीच में धृष्टद्युम्न, भीमसेन और सात्यकि ने एक साथ कर्ण को तीन-तीन बाण मारे। कर्ण ने अर्जुन के ऊपर बाण बरसाकर, उनके बाणों को व्यर्थ करके, तीन बाणों से धृष्टद्युम्न, भीम और सात्यकि के धनुप काट डाले। तब उक्त तीनों वीर, धनुप कट जाने से, विपहीन साँप के समान हो गये। वे अपने-अपने रथ पर से कर्ण के ऊपर शक्ति चला करके सिंहनाद करने लगे। वे विपैले नाग के समान प्रज्वलित अग्निशिखा सी शक्तियाँ बड़े वेग से कर्ण की ओर चलीं। महावीर फुर्तीले कर्ण ने तीन-तीन बाणों से राह में ही हर एक शक्ति के तीन-तीन टुकड़े कर डाले। फिर वे अर्जुन के ऊपर बाण बरसाकर सिंहनाद करने लगे। महावीर अर्जुन ने भी कर्ण को सात बाण मारकर अत्यन्त तीक्ष्ण भयानक बाणों से कर्ण के छोटे भाई को मार डाला। उसके बाद छ: बाणों से शत्रुञ्जय को मारकर एक भल्ल बाण से विपाट का सिर काट गिराया। इस तरह कर्ण के तीनों भाइयों को, कर्ण और दुर्योधन आदि के सामने ही, अकेले अर्जुन ने मार डाला।

५०

६०

अब महावेगशाली भीमसेन ने रथ से उतरकर, पक्षिराज गरुड़ की तरह झपटकर, खड्ग के प्रहार से कर्ण के पक्ष के पन्द्रह वीरों को देखते ही देखते मार डाला। फिर रथ पर बैठकर

दूसरा धनुष हाथ में लेकर दस बाण कर्ण को, पाँच बाण कर्ण के सारथी को और घोड़ों को भी उन्होंने मारे। महाबली धृष्टद्युम्न ने भी पहले ढाल-तलवार लेकर चन्द्रवर्मा और निषध देश के राजा बृहत्क्षत्र का सिर काट डाला और फिर रथ पर बैठकर, दूसरा धनुष लेकर, सिंहनादपूर्वक वीर कर्ण को इक्कीस बाण मारे। सात्यकि ने भी दूसरा धनुष लेकर सिंहनाद करके चौंसठ बाणों से कर्ण को घायल किया। फिर दो भल्ल बाणों से उनका धनुष काट डाला। इसके बाद उनके दोनों हाथों में और छाती में तीन बाण मारे। तब राजा दुर्योधन, द्रोणाचार्य और जयद्रथ ने आकर सात्यकि-रूप महासागर में डूबते हुए कर्ण का उद्धार किया। कर्ण के साथ के सैकड़ों पैदल, घोड़े, हाथी और रथी योद्धा अत्यन्त
७१ भयविह्वल होकर उन्हीं के पीछे भाग खड़े हुए। इधर धृष्टद्युम्न, भीमसेन, अभिमन्यु, अर्जुन, नकुल और सहदेव सात्यकि की सहायता करने लगे।

महाराज! इस प्रकार आपके और पाण्डवपक्ष के वीरगण परस्पर विनाश के लिए घोरतर संग्राम करने लगे। सब लोग प्राणपण से युद्ध कर रहे थे। पैदल, रथी, हाथियों और घोड़ों के सवार परस्पर भिड़ रहे थे। कहीं पर हाथी के सवार रथियों और पैदलों के साथ, कहीं पर घुड़सवार के साथ घुड़सवार, कहीं हाथी के सवार से हाथी के सवार, कहीं रथी के साथ रथी और कहीं पैदल के साथ पैदल घोर युद्ध कर रहे थे। वह संग्राम मांसाहारी पशु-पक्षियों के आनन्द को बढ़ानेवाला और यमपुरी को बसानेवाला था। मनुष्यों, रथों, हाथियों और घोड़ों के द्वारा असंख्य मनुष्य, हाथी, रथ और घोड़े नष्ट-भ्रष्ट हो रहे थे। कहीं पर हाथी ने हाथी को, कहीं रथी ने रथी को, कहीं घोड़े ने घोड़े को, कहीं पैदल ने पैदल को, कहीं रथी ने हाथी को, कहीं हाथी ने घोड़े को और कहीं घोड़े ने मनुष्य को मार डाला। किसी की जीभ कट गई, किसी के दाँत टूट गये, किसी की आँखें निकल पड़ीं, किसी का कवच टूट गया और किसी के आभूषण गिर पड़े। इस तरह चारों ओर मृत्यु का साम्राज्य देख पड़ता था। भयानक स्वरूपवाले बड़े-बड़े हाथी अनेक शस्त्रधारी शत्रुओं के प्रहार से मारे गये। हाथियों के पैरों से, घोड़ों की टापों से और रथों के पहियों से रौंदी गई, क्षत-विक्षत और नष्ट होती हुई सब सेना अत्यन्त व्याकुल हो उठी। इस तरह मांसाहारी पशु-पक्षी और राक्षस आदि के लिए आह्लादजनक, अत्यन्त भयानक, लोकक्षयकारी संग्राम उपस्थित होने पर महाबली वीरगण क्रोधविह्वल होकर बलपूर्वक एक दूसरे को मारते और मरते हुए रणभूमि में विचरने लगे। महाराज! दोनों ओर की सेना इस तरह खून से तर और छिन्न-भिन्न हो गई। थके हुए वीरगण एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। इसी बीच में सूर्यनारायण अस्ताचल पर पहुँच गये। तब दोनों पक्ष की सेनाएँ
८० युद्ध बन्द करके धीरे-धीरे अपने-अपने शिविर में विश्राम के लिए चली गईं।

अभिमन्युवधपर्व

तेंतीसवाँ अध्याय

द्रोणाचार्य की प्रतिज्ञा। अभिमन्यु के मारे जाने का संक्षिप्त वर्णन

सञ्जय ने कहा—महाराज! महातेजस्वी अर्जुन के पराक्रम से जब हमारी सेना भाग खड़ी हुई, द्रोणाचार्य का इरादा पूरा नहीं हुआ और राजा युधिष्ठिर सुरक्षित ही रहे तब समर में जीते गये, कवच-हीन, धूलिधूसरित कौरव-वीर समरविजयी शत्रुओं के अचूक बाणों से घायल और उद्विग्न होकर इधर-उधर ताकने लगे। शत्रुपक्ष के वीर उनकी हँसी उड़ाने लगे। इसके बाद आचार्य की अनुमति से कौरवों ने युद्ध बन्द कर दिया। लोग अर्जुन के पराक्रम और गुणों की बड़ाई करने लगे। कुछ लोग अर्जुन और श्रीकृष्ण की मित्रता की प्रशंसा कर रहे थे। उस समय कौरवगण सन्नाटे में आकर चुप हो गये।

सवेरा होने पर राजा दुर्योधन शत्रुपक्ष की उन्नति और विजय देखकर अत्यन्त कुपित और उदास हो सब योद्धाओं के सामने प्रणयकोप, अभिमान और पाण्डवों के प्रति शत्रुभाव के साथ द्रोणाचार्य से यों कहने लगे—हे द्विजश्रेष्ठ! हम लोग अवश्य ही आपके शत्रुपक्ष में हैं; क्योंकि आपने युधिष्ठिर को सामने पाकर भी नहीं पकड़ा। आप जिसे पकड़ना चाहें, वह अगर आपके समीप आ जाय तो चाहे देवगण के साथ मिलकर भी पाण्डव उसकी रक्षा करें किन्तु उसे बचा नहीं सकते, आपके हाथ से उसका छुटकारा नहीं हो सकता। आपने पहले प्रसन्न होकर मुझे वर दिया है, तो फिर अब क्यों नहीं उसे पूरा करते? आर्य पुरुष अपने भक्त को कभी निराश नहीं करते।

दुर्योधन के ये वचन सुनकर द्रोणाचार्यजी क्रुद्ध होकर कहने लगे—हे दुर्योधन! मैं सदैव तुम्हारा भला करने की चेष्टा करता हूँ, फिर भी तुम ऐसी बातें कह रहे हो! मेरे बारे में तुम्हारा ऐसा ख़याल करना ठीक नहीं। देखो, अर्जुन के द्वारा रक्षित रहने पर महाराज युधिष्ठिर को पकड़ना सर्वथा असम्भव है। अर्जुन के पास रहने पर देव, दैत्य, गन्धर्व, १०

यक्ष, राक्षस, नाग आदि सब मिलकर भी युधिष्ठिर को नहीं पकड़ सकते। जहाँ विश्वविधाता स्वयं वासुदेव सहायक रूप से विराजमान हैं और महापराक्रमी अर्जुन सेनापति हैं, वहाँ सिवा महाप्रभु शङ्कर के और किसी का बल कुछ काम नहीं कर सकता। ख़ैर, मैं तुमसे यह सत्य कहता हूँ कि आज पाण्डवपक्ष के किसी एक श्रेष्ठ महारथी योद्धा को मारूँगा; मेरी यह बात मिथ्या नहीं हो सकती। हे नरेश! आज मैं चक्रव्यूह की रचना करूँगा। इस व्यूह (मोर्चे) को देवता भी नहीं तोड़ सकते। तुम आज फिर किसी उपाय से अर्जुन को युधिष्ठिर के पास से दूर हटाने का उपाय करो। युद्ध की ऐसी कोई बात नहीं जिसे अर्जुन जानते न हों, या कर सकते न हों। अर्जुन ने इधर-उधर घूमकर, अनेक स्थानों से, युद्ध के सम्बन्ध की सब तरह की जानकारी प्राप्त कर ली है।

महावीर द्रोणाचार्य के यों कहने पर शेष संशप्तकगण फिर महारथी अर्जुन को युद्ध के लिए, युद्धभूमि के दक्षिण भाग में, ललकारने लगे। इसके बाद संशप्तकगण के साथ अर्जुन का भयानक संग्राम होने लगा। वैसा युद्ध शायद कभी किसी ने देखा-सुना न होगा। इधर द्रोणाचार्य ने बड़े यत्न के साथ चक्रव्यूह बनाया। दोपहर में तपनेवाले सूर्य के समान वह व्यूह आँखों में चकाचौंध पैदा कर देनेवाला था। उधर वीर कुमार अभिमन्यु, धर्मराज युधिष्ठिर की अनुमति के अनुसार, घूम-फिरकर उस दुर्भेद्य चक्रव्यूह को बारम्बार तोड़ने लगे। उसके बाद उन्होंने अत्यन्त दुष्कर कार्य करते हुए हज़ारों वीरों का संहार किया। फिर एक साथ छः महारथी वीरों से अकेले २० लड़कर अन्त को, शस्त्र-हीन असहाय अवस्था में, दुःशासन के पुत्र के हाथों वे मारे गये। इस घटना से हमारे पक्ष के लोगों को बड़ा ही सन्तोष और आनन्द हुआ। पाण्डव लोग और उनके पक्ष के सब लोग अभिमन्यु की मृत्यु के शोक से बहुत ही अधीर हो उठे। इसके उपरान्त हम लोगों ने विश्राम के लिए युद्ध बन्द कर दिया।

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! अर्जुन का पुत्र महावीर अभिमन्यु तो अभी पूरी तरह जवान भी नहीं हुआ था। उस होनहार लड़के के मारे जाने का समाचार सुनकर मेरा हृदय शोक से फटा सा जाता है! राज्य की इच्छा रखनेवाले वीरों ने जिस क्षत्रिय-धर्म के अनुसार उस बालक के ऊपर अस्त्र-शस्त्र चलाये, वह क्षत्रिय-धर्म बड़ा ही दारुण है! पूर्व पुरुषों ने क्षत्रिय-धर्म को कैसा घोर बनाया है! मेरे पक्ष के वीरों ने अत्यन्त सुखी और निःशङ्क होकर रण में विचरनेवाले वीर अभिमन्यु को किस तरह मारा? पुरुषसिंह अभिमन्यु ने महारथियों की सेना को नष्ट करने के लिए जिस तरह रणभूमि में विचरण किया और जिस तरह युद्ध में अपना प्रशंसनीय पराक्रम प्रकट किया, सो सब मेरे आगे वर्णन करो।

सञ्जय ने कहा—राजन्! आप मुझसे जो वृत्तान्त पूछ रहे हैं, सो मैं विस्तार के साथ वर्णन करता हूँ, सुनिए। शत्रुसेना का संहार करने के लिए अभिमन्यु जिस तरह संग्रामभूमि में

विचरते रहे, जिस तरह हमारे पक्ष के विजयाभिलाषी दुर्निवार दुर्द्धर्ष वीरगण उनके प्रहार से क्षत-विक्षत हुए, सो सब सुनिए। जिस तरह आपके पक्ष के योद्धा लोग वीर अभिमन्यु के पराक्रम और प्रहार से तृण-गुल्म-वृक्ष-पूर्ण वन में दावानल से घिरे हुए वनवासी जीव-जन्तुओं के समान भय से विह्वल और उद्विग्न हो उठे, सो सब मैं आपके आगे कहता हूँ, मन लगाकर सुनिए। २८

चौंतीसवाँ अध्याय

चक्रव्यूह-निर्माण का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज! श्रीकृष्ण सहित पाँचों पाण्डव ऐसे हैं कि देवता भी उनको नहीं हरा सकते। वे सदा समर में उद्योग के साथ अद्भुत कर्म करनेवाले, कर्मों से अपनी श्रमशीलता और कष्टसहिष्णुता प्रकट करनेवाले हैं। महाराज! उत्तम कर्म, कुल, बुद्धि, कीर्ति, यश, श्री आदि की विशेषताओं में इस त्रिभुवन में महात्मा कृष्ण के समान कोई पुरुष न हुआ है और न होगा। राजा युधिष्ठिर भी सत्य, धर्म, तप, दान, ब्राह्मणभक्ति आदि सद्गुणों के कारण देव-भाव प्राप्त कर चुके हैं। लोग कहते हैं कि प्रलय के समय का अन्तकारी यमराज, यशस्वी परशु-राम और रणभूमि में उपस्थित भीमसेन, ये तीनों एक से भयङ्कर हैं। प्रतिज्ञा के अनुसार काम करने में निपुण गाण्डीवधन्वा अर्जुन के समकक्ष वीर अजेय योद्धा मुझको पृथ्वी भर में नहीं देख पड़ता। नकुल में गुरुभक्ति, सलाह को गुप्त रखना, विनय, इन्द्रियदमन, अनुकरण-निपुणता या सौन्दर्य और शूरता, ये छः श्रेष्ठ गुण सदा अखण्ड रूप से वर्तमान हैं। सहदेव भी शास्त्रज्ञान, गाम्भीर्य, मधुर भाषण, सत्त्व, रूप और पराक्रम में देवश्रेष्ठ अश्विनीकुमारों के तुल्य हैं। राजन्! वासुदेव में और पाँचों पाण्डवों में जो पूर्वोक्त गुण अलग-अलग मौजूद हैं, उन सभी श्रेष्ठ गुणों का समावेश अकेले अभिमन्यु में देखा जाता था। राजा युधिष्ठिर का धैर्य, श्रीकृष्ण का स्वभाव (चरित), भीमसेन का पराक्रम, अर्जुन का रूप और विक्रम, नकुल की नम्रता और सहदेव का शास्त्रज्ञान, ये सब बातें वीर अभिमन्यु में देख पड़ती थीं। १०

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! वही रणदुर्जय अभिमन्यु किस प्रकार युद्ध के मैदान में मारा गया? मैं सब हाल विस्तार के साथ सुनना चाहता हूँ।

सञ्जय ने कहा—हे नर-नाथ! आप दुस्सह शोक को रोककर सँभलकर बैठिए। मैं आपके सुहृदों की मृत्यु का वृत्तान्त कहता हूँ, सुनिए। आचार्य द्रोण ने चक्रव्यूह बना करके उसके बीच में इन्द्रसदृश नरेशों को स्थापित किया। उस व्यूह के द्वार पर सूर्य के समान तेजस्वी राजपुत्रगण खड़े किये गये। सब राजा और राजपुत्र मिलकर उस व्यूह की रक्षा करने लगे। सब की ध्वजाएँ लाल रङ्ग की थीं और ध्वजाओं के दण्ड सुवर्णशोभित थे। वे

लोग सुवर्ण-मणि-मण्डित मालाएँ पहने, शरीरों में चन्दन-अगुरु लगाये, लाल आभूषण और महीन रेशमी लाल कपड़े पहने, पुष्पमालाओं से अलङ्कृत और मरने-मारने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञा किये हुए थे। ऐसे दस हज़ार राजपुत्र एकत्र होकर संग्राम करने के विचार से अभिमन्यु पर आक्रमण करने को आगे बढ़े। वे सब परस्पर समान रूप से सुख-दुःख का अनुभव करनेवाले, समान साहस से परिपूर्ण, एक दूसरे के हित में निरत और संग्राम में एक दूसरे से बढ़कर काम करने की स्पर्धा रखनेवाले वीर आपके पौत्र प्रियदर्शन लक्ष्मण को आगे करके स्थित हुए। सफ़ेद छत्र और चामरों की शोभा से उदय हो रहे सूर्य के सदृश जान पड़नेवाले इन्द्रतुल्य श्रीमान् राजा दुर्योधन महावीर कर्ण, कृपाचार्य और दुःशासन आदि महारथियों के साथ उस सेना के बीच में विराजमान हुए। उस सेना के अग्रभाग में सेनापति द्रोणाचार्य थे। सिन्धु देश के स्वामी वीर जयद्रथ उस सेना के बीच में स्थिर सुमेरु पर्वत के समान देख पड़ते थे।

२०

आपके देवतुल्य तीस कुमार, अश्वत्थामा के साथ, जयद्रथ के पास स्थित थे। द्यूतक्रीड़ा में निपुण गान्धारराज शकुनि, शल्य और भूरिश्रवा आदि महारथी भी जयद्रथ के पास अपने-अपने रथों पर विराजमान थे। इस प्रकार व्यूहरचना के उपरान्त दोनों पक्ष के वीर योद्धा जीवन का मोह छोड़कर बड़ा भयानक युद्ध करने लगे। २५

पैंतीसवाँ अध्याय

युधिष्ठिर का अभिमन्यु से पद्मव्यूह (चक्रव्यूह) को तोड़ने के लिए कहना

सञ्जय कहते हैं—हे नर-नाथ! द्रोणाचार्य के द्वारा सुरक्षित और दुर्द्धर्ष उस कौरव-सेना से लड़ने के लिए भीमसेन आदि पाण्डवपक्ष के योद्धा आगे बढ़े। भीमसेन, नकुल-सहदेव आदि पाण्डव, सात्यकि, चेकितान, धृष्टद्युम्न, कुन्तिभोज, राजा द्रुपद, वीर अभिमन्यु, शिखण्डी, उत्तमौजा, राजा विराट, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, चेदिपति शिशुपाल-नन्दन, क्षत्रधर्मा, बृहत्क्षत्र, धृष्टकेतु, घटोत्कच, युधामन्यु, महाबलशाली केकय देश के पाँचों राजकुमार, सैकड़ों हज़ारों

सृञ्जयगण और अन्यान्य युद्धप्रिय अस्त्रनिपुण वीरगण, युद्ध की इच्छा से, एकाएक द्रोणाचार्य की ओर चले। महाबलशाली द्रोणाचार्य भी स्थिर भाव से निकट आते हुए वीरों को बाणों की वर्षा करके रोकने लगे। प्रबल जलप्रवाह जैसे दुर्भेद्य पर्वत को लाँघकर आगे नहीं जा सकता, अथवा समुद्र जैसे अपनी तटभूमि को लाँघ नहीं सकता वैसे ही पाण्डवपक्ष के वीरगण द्रोणाचार्य को लाँघकर आगे नहीं जा सकते थे। वे और सृञ्जयगण द्रोणाचार्य के चलाये हुए बाणों से अत्यन्त व्यथित होकर उनके सामने नहीं ठहर सके। उस समय हम लोगों ने आश्चर्य के साथ द्रोणाचार्य का अद्भुत बाहुबल देखा। १०

उस समय राजा युधिष्ठिर कुपित द्रोण को, काल के समान आते देखकर, रोकने के लिए अनेक प्रकार के उपाय सोचने लगे। युधिष्ठिर ने यह सोचकर कि द्रोण को रोकने की शक्ति और किसी में नहीं है, अर्जुन और वासुदेव के समान बलवीर्यसम्पन्न अभिमन्यु को वह कठिन काम सौंपने के इरादे से उनसे कहा—बेटा! मेरी समझ में नहीं आता कि हम लोग इस दुर्भेद्य चक्रव्यूह को किस तरह तोड़ सकेंगे। अब तुम्हीं ऐसा उपाय करो कि अर्जुन आकर हम लोगों की निन्दा न करें। तुम, अर्जुन, श्रीकृष्ण और प्रद्युम्न इन चार आदमियों के सिवा इस चक्रव्यूह को तोड़नेवाला और कोई नहीं देख पड़ता। इस समय तुम्हारे पितृपक्ष और मातुलपक्ष के सब लोग तथा सैनिकगण तुमसे वर माँगते हैं। तुम इन्हें वरदान दो। तुम अस्त्र-शस्त्र लेकर शीघ्र द्रोणाचार्य की सेना का संहार करो, नहीं तो संग्राम से लौटकर अर्जुन हम लोगों की अवश्य निन्दा करेंगे।

अभिमन्यु ने कहा—महात्मन्! मैं अपने पितृकुल के विजयी होने की इच्छा से शीघ्र ही द्रोणाचार्य के इस सुरक्षित सुदृढ़ भयानक सैन्यसागर में प्रवेश करूँगा। हे आर्य! मुझे पिता ने इस व्यूह में घुसकर शत्रुसेना नष्ट करने का उपाय तो बता दिया है, किन्तु अगर कोई आपत्ति आ पड़ी तो मैं इस व्यूह के भीतर से बाहर नहीं निकल सकता। राजा युधिष्ठिर ने कहा—बेटा! तुम इस व्यूह को तोड़कर हमारे लिए भीतर जाने का द्वार बना दो। तुम जब भीतर घुसोगे तो हम लोग भी तुम्हारे पीछे चलेंगे। तुम युद्ध में अर्जुन के सदृश हो। हम लोग सब ओर से २० तुम्हारी रक्षा करते हुए तुम्हारे पीछे ही रहेंगे। भीमसेन ने कहा—वत्स! मैं, धृष्टद्युम्न, सात्यकि, पाञ्चालगण, केकयगण, मत्स्यगण और सब प्रभद्रकगण तुम्हारे पीछे चलेंगे। तुम एक बार व्यूह को तोड़ दोगे तो फिर हम लोग उसमें प्रवेश करके शत्रुपक्ष के वीरों को चुन-चुनकर मारेंगे।

अभिमन्यु ने कहा—जैसे पतङ्ग जलती हुई आग में घुसता है वैसे ही मैं कुपित होकर दुर्द्धर्ष द्रोणाचार्य की सेना के भीतर अवश्य प्रवेश करूँगा। आज मैं पितृपक्ष और मातृपक्ष के लिए हितकर और यशस्कर कार्य करूँगा; अपने मामा और पिता का प्रिय अवश्य ही करूँगा। इस समय सब प्राणी एक बालक के हाथ से शत्रुओं को नष्ट होते देखेंगे। यदि आज समर

में मेरे सामने आकर कोई पुरुष जीवित बच जाय तो मैं माता सुभद्रा के गर्भ से उत्पन्न नहीं हुआ और अर्जुन का पुत्र नहीं। अगर मैं आज समरक्षेत्र में एक ही रथ पर बैठकर सम्पूर्ण क्षत्रियमण्डल के आठ-आठ टुकड़े न कर सका तो अर्जुन का पुत्र नहीं। यदि मैं अकेला ही सब क्षत्रियों के धुर्रे न उड़ा दूँ तो मैं अर्जुन का बेटा नहीं।

युधिष्ठिर ने कहा—हे अभिमन्यु! तुम आज साध्य, रुद्र, मरुद्गण, वसुगण और आदित्यगण के समान पराक्रमी महावीरों के द्वारा सुरक्षित और दुर्द्धर्ष द्रोणाचार्य के सेनाव्यूह को तोड़ने का उत्साह प्रकट कर रहे हो, तुम धन्य हो। तुम्हारा बल बढ़े। सञ्जय कहते हैं कि महाराज! राजा युधिष्ठिर के ये वचन सुनकर अभिमन्यु बारम्बार अपने सारथी से कहने लगे ३२ कि हे सुमित्र! शीघ्र मेरे रथ को द्रोणाचार्य की सेना के सामने ले चलो।

छत्तीसवाँ अध्याय

अभिमन्यु के युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं कि राजन्! युधिष्ठिर के ये वचन सुनकर अभिमन्यु जब सारथी से बारम्बार "चलो, चलो" कहने लगे तब सारथी ने कहा—हे आयुष्मन्! इसमें सन्देह नहीं कि पाण्डवों ने आपको यह बहुत भारी काम सौंपा है। पर मेरी प्रार्थना यह है कि आप पहले क्षण भर इस बारे में विचार कर लीजिए कि यह काम आपके योग्य है या नहीं, फिर युद्ध में प्रवृत्त हूजिए। आचार्य द्रोण कार्यनिपुण और अस्त्र-विद्या में मँजे हुए हैं। आप अभी बालक और सुख में पले हुए हैं और वे बलवान् तथा युद्धनिपुण हैं। यह सुनकर अभिमन्यु ने हँसते-हँसते कहा—हे सारथि! क्षत्रियों की और द्रोणाचार्य की बात तो जाने दो, मैं देवगण सहित ऐरावत पर बैठे हुए इन्द्र और सब प्राणियों के वन्दनीय साक्षात् शङ्कर से भी रणभूमि में लोहा ले सकता हूँ। फिर इन क्षत्रियों के साथ युद्ध करने में मुझे क्या शङ्का हो सकती है? आज यह सारी शत्रुसेना मेरे सोलहवें अंश के बराबर भी नहीं है। औरों की बात जाने दो, मैं अपने मामा साक्षात् विश्वविजयी कृष्णचन्द्र और पिता अर्जुन से भी लड़ने को तैयार हूँ। मुझे रत्ती भर भी डर नहीं है। राजन्! इस तरह सारथी के वचनों की उपेक्षा करके अभिमन्यु बारम्बार यही कहने लगे कि हे सूत! देर मत करो, शीघ्र मुझे द्रोणाचार्य की सेना के निकट ले चलो।

सारथी ने उदास मन से तीन-तीन साल की अवस्था के, सुवर्णभूषित, अभिमन्यु के १० रथ के घोड़ों को द्रोणाचार्य की सेना की तरफ़ हाँका। वे हवा के समान वेग से चलनेवाले घोड़े, सारथी के द्वारा हाँके जाने पर, तेज़ी के साथ द्रोणाचार्य की सेना की ओर चले। कौरवगण अभिमन्यु को अपनी ओर आते देखकर, द्रोणाचार्य को आगे करके, उन्हें रोकने के

अभिमन्यु ने...... व्यूह को तोड़कर उसके भीतर प्रवेश किया—पृ० २२५९
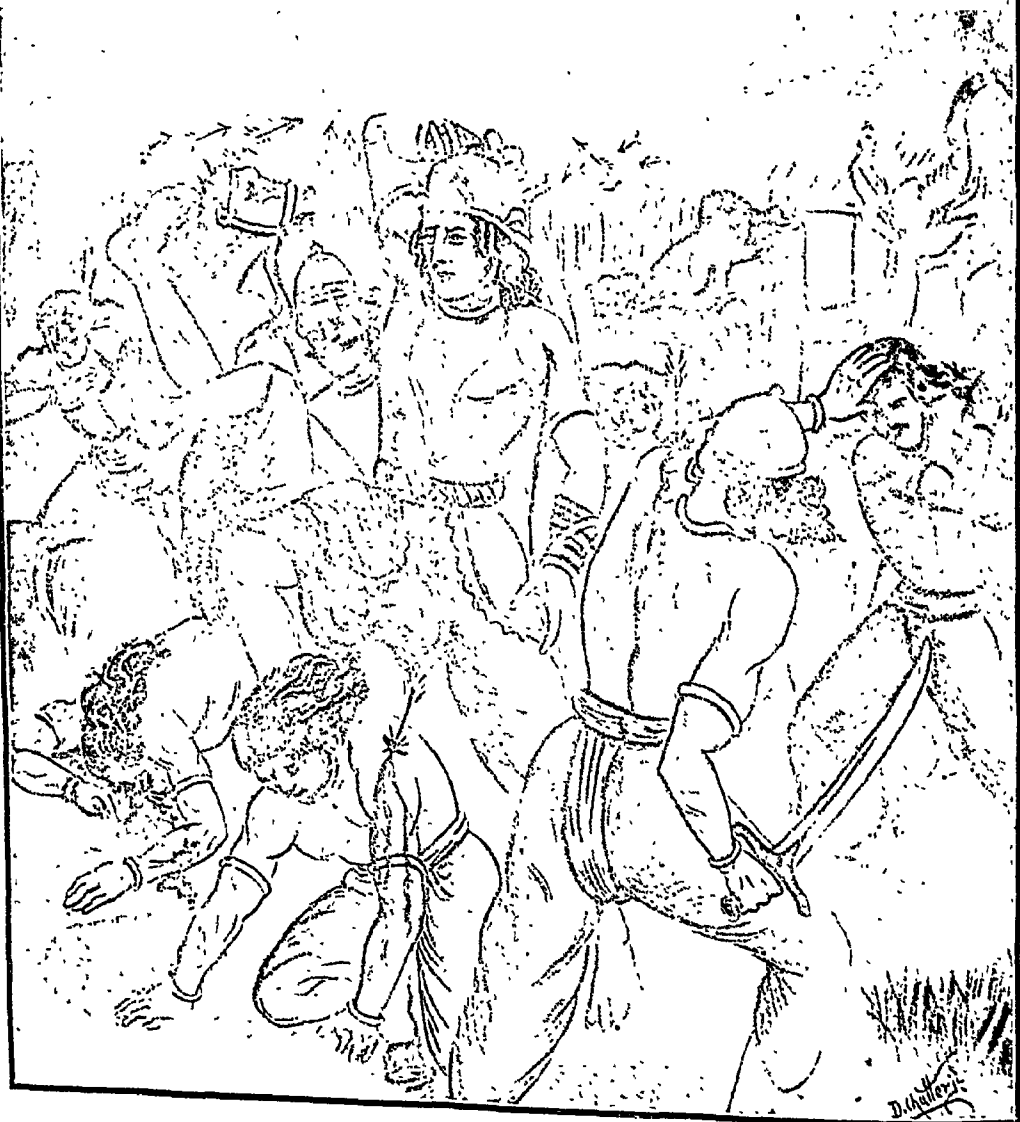
अभिमन्यु......ऊँचे स्वर से कहने लगे—पृ० २२७९

लिए आगे बढ़े। इधर पाण्डवपक्ष के योद्धा भी अभिमन्यु के पीछे-पीछे चले। जैसे सिंह का बच्चा झपटकर हाथियों के झुण्ड पर पहुँचता है वैसे ही कर्णिकारचिह्नयुक्त ध्वजा के सुवर्णमय दण्ड से शोभित रथ पर बैठे हुए, सुवर्णरत्नमय कवच से अलङ्कृत, अर्जुन से भी श्रेष्ठ वीर अभिमन्यु युद्ध के लिए द्रोणाचार्य आदि वीर महारथियों के सामने पहुँचे। व्यूह की रक्षा के लिए यत्नशील कौरवगण उत्साहित होकर अभिमन्यु के ऊपर प्रहार करने लगे। नदियों में श्रेष्ठ गङ्गा का भँवर जैसे समुद्र के जल में प्रवेश करके दम भर तुमुल भाव धारण करता है वैसे ही परस्पर प्रहार करते हुए वीरगण घमासान युद्ध करने लगे। इसी अवसर में महाबलशाली अभिमन्यु ने द्रोणाचार्य के सामने ही उस व्यूह को तोड़कर उसके भीतर प्रवेश किया। चतुरङ्गिणी सेना ने महावीर अभिमन्यु को शत्रुसेना के भीतर घुसकर वीरों का संहार करते देख प्रसन्नतापूर्वक उत्साह के साथ उनको चारों ओर से घेर लिया। वीरगण अनेक प्रकार के बाजे बजाने और सिंहनाद करने लगे। कोई ख़म ठोकता था, कोई गम्भीर स्वर से गरज रहा था और कोई हुंकार कर रहा था। कहीं पर कोई वीर शत्रु से कह रहा था कि ठहर तो जा, ठहर तो जा। कहीं पर भीषण कोलाहल सुनाई पड़ रहा था। कहीं कोई कह रहा था कि भागना नहीं, कोई कहता था कि मेरे सामने आओ। कोई कहता था कि ठहर जाओ। कोई कहता था कि यह मैं खड़ा हूँ, आ, युद्ध कर। वीरगण बारम्बार इसी तरह के वाक्य कह रहे थे। हाथी चिंघार रहे थे, घोड़े हिनहिना रहे थे। गहनों की खनखनाहट और झनझनाहट हो रही थी। हँसने का, धनुष का, हाथों का और रथों के पहियों का शब्द ऐसा हो रहा था कि उससे पृथ्वीमण्डल गूँज उठा। महाराज! इस तरह सब लोग अभिमन्यु की ओर चले। महाबली वीर फुरतीले और मर्मज्ञ अभिमन्यु ने मर्मभेदी बाणों से उन शत्रुपक्ष के योद्धाओं को मारना शुरू कर दिया। पतङ्ग जैसे आग में जल मरते हैं वैसे ही वे कौरवपक्ष के वीर सैनिक २० अनेक चिह्नों से युक्त तीक्ष्ण बाणों के प्रहार से पीड़ित और विवश होकर मरने और गिरने लगे। उस समय वह रणभूमि कुशों से बिछी हुई यज्ञवेदी के समान शत्रुओं के कटे हुए अङ्गों से व्याप्त हो गई। अभिमन्यु ने उन लोगों के—गोह के चमड़े के बने अँगुलित्रों से शोभित, धनुष, बाण, ढाल, तलवार, अंकुश, अभीषु, तोमर, परश्वध, गदा, लगुड़, प्रास, ऋष्टि, पट्टिश, भिन्दिपाल, परिघ, शक्ति, कम्पन, प्रतोद, शङ्ख, कुन्त, कचग्रह, मुद्गर, क्षेपणी, पाश, उपल आदि विविध शस्त्रों से युक्त, केयूर, अङ्गद आदि आभूषणों से अलङ्कृत और मनोहर चन्दन अङ्गराग आदि से चर्चित—हाथों को हज़ारों की संख्या में काट-काटकर ढेर लगा दिया। वे रुधिर-सिक्त विशाल भुजाएँ गरुड़ के काटे हुए पाँच सिर के नागों के समान फड़कती हुई शोभित हो रही थीं। महावीर अभिमन्यु ने शत्रुओं के मस्तकों से पृथ्वीमण्डल को पाट दिया। वे मस्तक मनोहर नासिका, मुख और केशों से शोभित थे; वे रमणीय कुण्डल माला मुकुट पगड़ी और मणि-रत्न आदि से विभूषित

थे; वे कमल-कुसुम से सुहावने और चन्द्र तथा सूर्य के सदृश प्रभापूर्ण थे; वे व्रणविहीन और पवित्र सुगन्ध से युक्त थे। वे शत्रुओं के मस्तक क्रोध के मारे दाँतों से ओठ चवाते हुए ही काट डाले
३० गये थे और वे जीवित अवस्था में हित के प्रिय वचन कहनेवाले थे। गन्धर्वनगर-तुल्य जो विशाल रथ सुसज्जित थे उन्हें अभिमन्यु ने अपने बाणों से छिन्न-भिन्न कर डाला। उनके धुरे कट गये, त्रिवेणु दण्ड और जुआँ आदि सब अङ्ग अलग-अलग हो गये। उनके जङ्घा, कूवर, पहिये, आरे, आसन और अन्य सब सामान अस्तव्यस्त और नष्ट-भ्रष्ट हो गये। इस तरह के बहुमूल्य रथों को अभिमन्यु ने खण्ड-खण्ड कर डाला। उन्होंने अपने तीक्ष्ण बाणों से पताका, अंकुश, ध्वजा आदि से शोभित हाथियों को, कवच और तर्कस आदि से अलङ्कृत उनके सवारों को और उनके चरणरक्षकों को मार-मारकर गिराना शुरू कर दिया। उनकी गर्दनों, बन्धनरज्जु, कम्बल, घण्टा, छत्र, माला, सूँड़ और दाँत आदि को काट डाला। वनायु देश के, काम्बोज देश के, वाह्लीक देश के और पहाड़ी घोड़े बड़े वेग से चलनेवाले थे; उनके नेत्र, कान, पूँछ आदि अङ्ग चञ्चल नहीं थे; उन पर शक्ति, ऋष्टि और प्रास आदि शस्त्रों से युद्ध करनेवाले सुशिक्षित योद्धा सवार थे। वे घोड़े अभिमन्यु के बाणों से मर-मरकर पृथ्वी पर गिरने लगे। उनके चामर और कलँगी आदि सामान कट गये, आँखें और जीभें निकल आईं, पेट फट गये, आँतें निकल आईं, प्लीहा निकल पड़ी, गले की घण्टियाँ टूटकर गिर पड़ीं और उनके सवार मर गये। घोड़ों के कवच कट गये थे और वे मल-मूत्र और रक्त से सने हुए थे। इस तरह घोड़े मर-मरकर मांसाहारी जीवों के आनन्द को बढ़ाने लगे। जैसे भगवान् शङ्कर ने दुर्द्धर्ष असुर-सेना का संहार किया था वैसे ही विष्णुसदृश प्रभावशाली अभिमन्यु ऐसा दुष्कर कर्म करके कौरवपक्ष की
४१ चतुरङ्गिणी सेना का संहार करने लगे। वीर अभिमन्यु शत्रुओं के लिए असह्य पराक्रम प्रकट करके चारों ओर आपकी सेना के पैदल योद्धाओं को मारने लगे।

हे नरनाथ! आपके पुत्रों और उनके पक्ष के वीरों ने जब देखा कि अकेले अभिमन्यु तीक्ष्ण बाणों से उसी तरह शत्रुसेना का संहार कर रहे हैं जिस तरह स्कन्द ने असुरों की भारी सेना का नाश किया था, तब वे व्याकुल होकर घबराकर चञ्चल दृष्टि से इधर-उधर ताकने लगे। उनके मुँह सूख गये, पसीना बहने लगा और रोंगटे खड़े हो गये। जय का उत्साह जाता रहा और वे भागने के लिए उत्साहित होकर प्राण बचाने की इच्छा से परस्पर नाम-गोत्र का उच्चारण करके एक दूसरे को भागने के लिए पुकारने लगे। महाराज! अधिकांश लोग मारे गये अपने पुत्र, पिता, भाई, बन्धु, सम्बन्धी आदि को वहीं छोड़कर, घोड़े-हाथी आदि अपनी सवारियों को
४६ तेज़ी से हाँककर, वीर अभिमन्यु के आगे से भाग खड़े हुए।

सैंतीसवाँ अध्याय

दुर्योधन आदि से हुए अभिमन्यु के युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज! राजा दुर्योधन ने जब महापराक्रमी अभिमन्यु के बाणों से अपनी सेना को छिन्न-भिन्न होते और भागते देखा तब अत्यन्त कुपित होकर वे खुद अभिमन्यु से युद्ध करने के लिए चले। महारथी द्रोणाचार्य ने दुर्योधन को अभिमन्यु के पास जाते देखकर कहा—हे वीरो! तुम लोग शीघ्र राजा दुर्योधन के साथ जाओ। वीर अभिमन्यु हमारे सामने ही कौरव-सेना के वीरों का संहार कर रहे हैं। तुम लोग इसी दम अभिमन्यु को रोकने के लिए जाओ; डरो नहीं, दुर्योधन की रक्षा करो। राजन्! तब महाबलशाली रणविजयी अस्त्रज्ञानसम्पन्न वीर लोग दुर्योधन की सहायता के लिए आगे बढ़े। आचार्य द्रोण, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कर्ण, कृतवर्मा, शकुनि, बृहद्बल, शल्य, भूरि, भूरिश्रवा, शल, पौरव, वृषसेन आदि वीर योद्धा लोग लगातार बाणों की वर्षा करने लगे। इन

वीरों ने बाणों की वर्षा से वीर अभिमन्यु को रोककर और मोहित सा करके दुर्योधन को बचा लिया। अपने मुँह से छीने हुए कौर की तरह दुर्योधन का हाथ से निकल जाना अभिमन्यु से नहीं सहा गया। वे बाणवर्षा से घोड़ों और सारथी सहित उन महारथियों को विमुख करके घोर सिंहनाद करने लगे। द्रोण आदि महारथी, मांस के लिए गरजते हुए सिंह के समान, अभिमन्यु के उस पराक्रम और सिंहनाद को नहीं सह सके। तब उन महारथियों ने चारों ओर से रथों के बीच में अभिमन्यु को घेरकर उन पर अनेक चिह्नयुक्त तीक्ष्ण बाण बरसाना शुरू कर दिया। महापराक्रमी अभिमन्यु ने आकाशमार्ग में ही उन बाणों को अपने बाणों से काट १० डाला और फिर अपने तीक्ष्ण बाणों से उन वीरों को घायल किया। अभिमन्यु का यह कार्य देखकर दर्शकों को बड़ा आश्चर्य हुआ। तब द्रोण आदि महारथियों ने क्रोध के वश होकर, समर से विमुख न होनेवाले, अभिमन्यु को मारने के लिए विषधर सदृश बाणों से छिपा सा दिया। वीर अभिमन्यु ने अकेले ही तटभूमि के समान स्थिर रहकर, समुद्र के सदृश क्षोभ को प्राप्त, उस विशाल सेना को रोका। इस प्रकार परस्पर संहार करने में प्रवृत्त दोनों पक्ष के वीरों

में से कोई भी समरभूमि से पीछे नहीं हटता था। उस समय दुःसह ने नव, दुःशासन ने बारह, कृपाचार्य ने तीन, द्रोणाचार्य ने सत्रह, विविंशति ने सत्तर, कृतवर्मा ने सात, बृहद्बल ने आठ, अश्वत्थामा ने सात, भूरिश्रवा ने तीन, शल्य ने छः, शकुनि ने दो बाण और दुर्योधन ने तीन बाण अभिमन्यु को एक साथ मारे। महाप्रतापी अभिमन्यु ने उन बाणों को सह लिया और फिर मानों नृत्य करते-करते तीन-तीन बाण इन सब वीरों को मारे।

राजा दुर्योधन आदि वीरों ने अभिमन्यु को इस तरह भय दिखाया तथापि वे न तो भयभीत हुए और न विचलित ही हुए। अभिमन्यु ने अत्यन्त कुपित होकर बाणविद्या की करामात दिखा दी। गरुड़ और हवा के समान वेग से चलनेवाले और सारथी के इच्छानुसार २१ जानेवाले घोड़ों से युक्त रथ पर बैठकर आते हुए अश्मकेश्वर को उन्होंने रोका। अश्मकेश्वर ने अभिमन्यु के सामने आकर "ठहर-ठहर" कहकर उनको दस बाण मारे। महावीर अभिमन्यु ने हँसते-हँसते दस बाणों से उनके सारथी, रथ के घोड़ों, ध्वजा, दोनों बाहुओं, धनुष और मस्तक को काटकर गिरा दिया। यह देखकर अश्मकेश्वर की सारी सेना भाग खड़ी हुई। तब कर्ण, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, शकुनि, शल, शल्य, भूरिश्रवा, क्राथ, सोमदत्त, विविंशति, वृषसेन, सुषेण, कुण्डभेदी, प्रतर्दन, वृन्दारक, ललित्थ, प्रबाहु, दीर्घलोचन और दुर्योधन आदि योद्धा कुपित होकर अकेले अभिमन्यु के ऊपर बाण बरसाने लगे। पराक्रमी अभिमन्यु ने इन लोगों के बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर कर्ण के ऊपर, कवच और देह को भेदनेवाला, एक महाभयानक बाण छोड़ा। वह बाण कर्ण के कवच को तोड़कर पृथ्वी में वैसे ही घुस गया जैसे बाँबी में साँप घुसता है। महावीर कर्ण उस दारुण प्रहार से अत्यन्त व्यथित और विह्वल होकर, भूकम्प के समय पर्वत के समान, कम्पित हो उठे। अब अभिमन्यु ने अत्यन्त कुपित होकर अन्य तीन तीक्ष्ण बाणों से ३० दीर्घलोचन, सुषेण और कुण्डभेदी को घायल कर दिया। तब महावीर कर्ण ने अभिमन्यु को पचीस नाराच बाण मारे। साथ ही अश्वत्थामा ने बीस और कृतवर्मा ने सात बाण मारे। सब सैनिकों ने देखा कि अभिमन्यु के शरीर भर में बाण लगे हैं और वे पाश हाथ में लिये यमराज के समान युद्धभूमि में विचर रहे हैं। निकटवर्ती शल्य को बाणों से अदृश्य करके सम्पूर्ण कौरव-सेना को विभीषिका दिखाते हुए महाप्रतापी अभिमन्यु सिंहनाद करने लगे। उनके मर्मभेदी बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर शल्य रथ पर बैठ गये और अचेत हो गये। राजन्! आपके पक्ष के सैनिकगण शल्य को बाणप्रहार से पीड़ित देख, सिंह-पीड़ित मृगों के समान, द्रोणाचार्य के सामने ही भाग खड़े हुए। उस समय देवता, चारण, सिद्ध, पितृगण और पृथ्वीतल के सब प्राणी अभिमन्यु के युद्धकौशल और अस्त्र-शिक्षा की प्रशंसा करने लगे। हवनकुण्ड में स्थित ३७ और आहुति से प्रज्वलित अग्नि के समान वीर अभिमन्यु परम शोभा को प्राप्त हुए।

अड़तीसवाँ अध्याय

अभिमन्यु के पराक्रम का वर्णन

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय ! वीर अभिमन्यु जब इस तरह शत्रुपक्ष के महाधनुर्द्धर वीरों को विमर्दित करने लगे तब मेरे पक्ष के किन-किन वीरों ने उनको रोका ?

सञ्जय ने कहा—महाराज ! वीर अभिमन्यु ने द्रोणाचार्य के बाहु-बल से सुरक्षित रथ-सेना को पार करने की इच्छा से जिस तरह युद्धक्रीड़ा की, सो सुनिए। शल्य के छोटे भाई ने जब अपने बड़े भाई को अभिमन्यु के बाणों से अत्यन्त व्यथित देखा तब वे क्रोध के मारे बाण बरसाते हुए अभिमन्यु की ओर दौड़े। उन्होंने अभिमन्यु को और उनके सारथी तथा घोड़ों को दस बाण मारकर सिंहनाद करते हुए ललकारा। फुर्तीले महावीर अभिमन्यु ने तीक्ष्ण बाण चलाकर एक साथ उनके मस्तक, हाथों, पैरों, रथके चारों घोड़ों, छत्र, ध्वजा, पताका और त्रिवेणु, तल्प, चक्र, युग, तूणीर, अनुकर्ष और रथ की अन्यान्य सामग्री को तथा दो चक्ररक्षकों और सारथी का मस्तक काट डाला। उस समय अभिमन्यु को कोई भी आँख उठाकर नहीं देख सकता था। महावीर शल्य के भाई के कपड़े और गहने अस्त-व्यस्त हो गये। आँधी से नष्ट किये गये पहाड़ की तरह जब उन्हें अभिमन्यु ने मार डाला तब सब सेना चारों ओर भागने लगी। दर्शक लोग अभिमन्यु के इस अलौकिक कार्य को देखकर वाह-वाह कहकर उनकी प्रशंसा करने लगे।

शल्य के छोटे भाई के मारे जाने पर उनके साथ की सेना के वीर योद्धा लोग कुपित होकर अभिमन्यु को अपने कुल, नाम और निवासस्थान का परिचय देते हुए बहुत से अस्त्र-शस्त्र तानकर उन पर आक्रमण करने के लिए दौड़े। उन वीरों में से कुछ लोग रथों पर, कुछ लोग घोड़ों पर और कुछ लोग हाथियों पर सवार थे। कुछ लोग पैदल ही थे। बाणों के चलने का शब्द, रथों के पहियों की घरघराहट, हुङ्कार, सिंहनाद, प्रत्यञ्चा का शब्द, तलध्वनि और घोर गर्जन चारों ओर छा गया। "आज तुम जीते जी हमारे हाथ से छुटकारा नहीं

पा सकते !" यह कहते हुए शत्रुसेना के वीर अभिमन्यु के आगे गरजने लगे। उन लोगों के ये वचन सुनकर अभिमन्यु ने हँसते-हँसते उन सब पर प्रहार किये। जिसने उन पर पहले प्रहार किया उसको पहले और जिसने पीछे प्रहार किया उसको पीछे, उसी क्रम से, वीर अभिमन्यु ने घायल किया। इस तरह विचित्र कौशल और फुर्ती दिखाते हुए वीर अभिमन्यु कोमल भाव से युद्ध करने लगे। उन्होंने अपने पिता अर्जुन से और कृष्णचन्द्र से जो विचित्र अस्त्र प्राप्त किये थे उनका प्रयोग, उन्हीं की तरह, करना शुरू किया। युद्ध के समय किसी को यह नहीं देख पड़ता था कि अभिमन्यु किस समय बाण निकालते हैं, किस समय धनुष पर चढ़ाते हैं और किस समय छोड़ते हैं। अभिमन्यु का मण्डलाकार घूमता हुआ धनुष चारों ओर शरद ऋतु के सूर्य के मण्डल के समान देख पड़ रहा था। उनकी प्रत्यञ्चा का शब्द और तलध्वनि, वर्षाकाल के मेघमण्डल से निकले हुए, वज्र के शब्द के समान सुनाई पड़ रही थी। ह्रीमान्, असहनशील, मानी, प्रियदर्शन अभिमन्यु वीरों का सम्मान करने के लिए बाणों और
२० अस्त्रों के द्वारा उनसे युद्ध करने लगे। इसके बाद वर्षाकाल बीत जाने पर जैसे सूर्यदेव प्रचण्ड रूप धारण करते हैं वैसे ही महावीर अभिमन्यु पहले कोमल युद्ध करके क्रमशः प्रचण्ड युद्ध करने लगे। वे सूर्यकिरण के समान तीक्ष्ण, सुवर्णपुङ्खयुक्त, विचित्र बाण बरसाने लगे। हज़ारों क्षुरप्र, वत्सदन्त, विपाठ, अर्धचन्द्र, नाराच, भल्ल और अञ्जलिक आदि अनेक प्रकार के बाणों से द्रोणाचार्य के सामने ही उनकी रथ-सेना को छिन्न-भिन्न करने लगे। कौरव-सेना इस तरह
२४ अभिमन्यु के बाणों से अत्यन्त व्यथित होकर युद्ध से भागने लगी।

उनतालीसवाँ अध्याय

दुःशासन और अभिमन्यु का युद्ध

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! महारथी अभिमन्यु के पराक्रम से अपने पुत्र की सेना के नष्ट और विमुख होने का समाचार सुनकर मुझे शोक भी हो रहा है और सन्तोष भी हो रहा है। अब तुम, असुरों के साथ स्कन्द भगवान् के युद्ध के समान, कौरव-सेना के साथ अभिमन्यु के युद्ध का वृत्तान्त विस्तारपूर्वक कहो।

सञ्जय ने कहा—राजन्! महावीर अभिमन्यु ने अकेले ही जिस तरह बहुत से योद्धाओं के साथ घोर युद्ध किया, सो सब मैं विस्तार के साथ आपके आगे वर्णन करता हूँ, मन लगाकर सुनिए। महापराक्रमी अभिमन्यु उत्साह के साथ रथ पर बैठकर युद्ध का उत्साह रखनेवाले शत्रुनाशन कौरवपक्ष के वीरों पर बाणों की वर्षा करने लगे। युद्धभूमि में महाबली अभिमन्यु

घुमाई जानेवाली जलती हुई लकड़ी की तरह घूमकर द्रोण, कर्ण, कृपाचार्य, शल्य, अश्वत्थामा, भोजराज, बृहद्बल, दुर्योधन, भूरिश्रवा, शकुनि और अन्यान्य बहुत से राजाओं, राजपुत्रों और सैनिकों को बड़ी फुर्ती के साथ अपने बाणों से पीड़ित करने लगे। उस समय वे इतनी तेज़ी से विचर रहे थे कि शत्रुपक्ष के लोगों को जान पड़ता था कि अनेक मूर्तियाँ धारण किये वे चारों ओर मौजूद हैं। राजन्! महातेजस्वी अभिमन्यु को इस तरह असाधारण रणकौशल दिखाते देखकर कौरव-सेना के लोग काँप उठे।

इसी समय महारथी प्रतापी द्रोणाचार्य अभिमन्यु के असाधारण रणकौशल को देखकर, प्रसन्न होकर दुर्योधन के मर्मस्थल को चोट पहुँचाते हुए, कृपाचार्य से कहने लगे—हे आचार्य! वह देखो, पाण्डवों के प्रसिद्ध पुत्र महावीर अभिमन्यु धर्मराज युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव, भीमसेन तथा अन्यान्य बन्धु-बान्धव, सम्बन्धी और मध्यस्थ लोगों को सन्तुष्ट करके जा रहे हैं। मेरी राय में इस समय इस बालक के समान समरनिपुण धनुर्द्धर योद्धा यहाँ पर दूसरा नहीं है। यह महावीर चाहे तो सहज ही सम्पूर्ण कौरव-सेना का नाश कर सकता है; किन्तु न-जाने वह ऐसा क्यों नहीं करता! ९

आचार्य के प्रेम-पगे वचन सुनकर दुर्योधन ने अभिमन्यु पर क्रुद्ध हो द्रोणाचार्य की ओर देखकर कर्ण, बाह्लीक, दुःशासन, शल्य और अन्य अपने अनुयायियों से कहा—हे सुहृदो! देखो, सब क्षत्रियों के गुरु और ब्रह्मवेत्ताओं के शिरोमणि आचार्य ममता-मोह के वश होकर ही अर्जुन के पुत्र को मारना नहीं चाहते। मैं सच कहता हूँ, आचार्य अगर शत्रु को मारने के लिए उद्यत होकर तत्परता के साथ युद्ध करें तो मनुष्य की कौन कहे, यमराज भी नहीं बच सकते। किन्तु अर्जुन इनके प्रिय शिष्य हैं। शिष्य, पुत्र और उनकी सन्तान को धर्मात्मा लोग स्नेह की दृष्टि से देखते हैं, इसी लिए आचार्यजी अभिमन्यु की रक्षा कर रहे हैं। इस प्रकार आचार्य के द्वारा रक्षित होने के कारण ही अभिमन्यु अपने को वीर्यशाली समझ रहा है। अतएव अब तुम लोग मिलकर इस पौरुषाभिमानी बालक को चटपट मार डालो।

दुर्योधन के ये वचन सुनकर सब वीर योद्धा लोग क्रोधपूर्वक अभिमन्यु को मारने के विचार से शीघ्रता के साथ द्रोणाचार्य के सामने ही अभिमन्यु की ओर दौड़े। उस समय दुःशासन ने दुर्योधन से गर्व के साथ कहा—राजन्! राहु जैसे सूर्य को ग्रस लेता है वैसे ही मैं इस समय सम्पूर्ण पाञ्चालों और पाण्डवों के सामने ही अभिमन्यु को मार डालूँगा। इसके बाद अभिमानी अर्जुन और कृष्ण दोनों मेरे हाथ से अभिमन्यु के मारे जाने का समाचार पाकर अवश्य ही अपने प्राण दे देंगे। फिर कृष्ण और अर्जुन की मृत्यु की ख़बर सुनकर पाण्डु के अन्य क्षेत्रज पुत्र और उनके बन्धु-बान्धव, कायरों की तरह, शक्तिहीन और शोकाकुल होकर निःसन्देह एक ही दिन में मर जायँगे। महाराज! इस तरह एक अभिमन्यु के नष्ट होने से ही २०

आपके सब शत्रुओं का नाश हो जायगा। अतएव आप मेरे मङ्गल और विजय की कामना कीजिए। मैं अकेला ही आपके शत्रुओं का संहार किये डालता हूँ।

महाराज! आपके पुत्र दुःशासन ने यों कहकर ऊँचे स्वर से सिंहनाद किया। वे अत्यन्त कुपित होकर अभिमन्यु के सामने पहुँचकर उन पर बाणवर्षा करने लगे। महारथी अभिमन्यु ने भी उनको छब्बीस बाण मारे। महापराक्रमी दुःशासन क्रुद्ध होकर मदमत्त गजराज की तरह अभिमन्यु के साथ घोर संग्राम करने लगे। इसके उपरान्त रथ-शिक्षा में निपुण दोनों वीर दाहने-बायें विचित्र मण्डलाकार गतियों से रथ घुमाते हुए एक दूसरे पर प्रहार करने लगे। उस समय सैनिक लोग चारों ओर पणव, मृदङ्ग, दुन्दुभि, क्रकच, महानक, भेरी, झर्झर और शङ्ख ३१ बजाते हुए घोर सिंहनाद करने लगे।

चालीसवाँ अध्याय

अभिमन्यु के द्वारा कर्ण और दुःशासन की पराजय

सञ्जय कहते हैं कि राजन्! यद्यपि वीर अभिमन्यु के सब अङ्ग कट-फट गये थे तथापि वे धैर्य के साथ अपने शत्रु दुःशासन से कहने लगे—हे निष्फल क्रोध करनेवाले अधर्मी वीराभिमानी पुरुष! बड़ी बात जो आज समर-भूमि में तुम मेरी आँखों के आगे आ गये। तुमने जो भरी सभा में महाराज धृतराष्ट्र के सामने कटुवचन कहकर धर्मराज को कुपित किया था और शकुनि-कल्पित कपट-द्यूत में अपने बाहुबल के मद से मत्त होकर महावीर भीमसेन को जो कुवाक्य कहे थे, उसका फल आज तुमको मिलेगा। रे दुर्बुद्धि कौरव! आज अभी बहुत शीघ्र तुमको पराई सम्पत्ति हड़प कर जाने का, क्रोध, अशान्ति, लोभ, अज्ञान, द्रोह, अति साहस का और मेरे उग्र-धनुर्धर पिता और चाचा के राज्यहरण का उग्र प्रतिफल प्राप्त होगा। मैं समर में सब सेना के सामने ही तुमको अपने बाणों से मारकर अमर्षणशील द्रौपदी और भीमसेन के ऋण से मुक्त हो जाऊँगा; अपने पिता की इच्छा पूरी करूँगा और तुम्हें वीर पाण्डवों को कुपित करने का और सम्पूर्ण अधर्म का फल भोगना पड़ेगा। अगर तुम युद्ध छोड़कर मेरे सामने से भाग न गये तो आज किसी तरह जीते नहीं बच सकते।

महाराज! अभिमन्यु ने इस तरह भर्त्सना करके दुःशासन को अग्नि के समान तेजःपुञ्ज ११ और वायु के सदृश शीघ्रगामी एक दारुण बाण मारा। अभिमन्यु के धनुष से छूटा हुआ वह बाण दुःशासन के जत्रुस्थान को भेदकर पुङ्ख सहित पृथ्वी के भीतर वैसे ही घुस गया जैसे साँप बाँबी में घुस जाता है। फिर वीर अभिमन्यु ने धनुष को कान तक खींचकर अत्यन्त तीक्ष्ण पचीस बाण दुःशासन को मारे। वीर दुःशासन अभिमन्यु के बाणों से घायल और

व्यथित होकर मूर्च्छित हो रथ पर गिर पड़े। उस समय सारथी उन्हें अचेत देखकर उनका रथ समरभूमि से शीघ्र ही हटा ले गया। यह देखकर पाण्डवगण, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, पाञ्चालगण, केकयगण और राजा विराट सभी अभिमन्यु की प्रशंसा और घोर सिंहनाद करने लगे। पाण्डवपक्ष के सैनिक सन्तुष्ट होकर युद्धभूमि में तरह-तरह के बाजे बजाने लगे और प्रधान शत्रु दुःशासन को हरानेवाले कुमार अभिमन्यु का पराक्रम देखकर चकित हुए। धर्म, वायु, इन्द्र और अश्विनीकुमारों की मूर्तियों के चिह्न से अलङ्कृत ध्वजाओंवाले रथों पर बैठे हुए द्रौपदी के पाँचों पुत्र, पराक्रमी सात्यकि, चेकितान, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, केकयराजकुमार, धृष्टकेतु, मत्स्य देश के योद्धा, पाञ्चाल देश के सैनिक और सृञ्जयगण युधिष्ठिर आदि पाण्डवों के साथ द्रोणाचार्य की सेना को छिन्न-भिन्न करने के लिए बड़े वेग के साथ समरभूमि में

आगे बढ़े। इस समय संग्राम से कभी न हटनेवाले और विजय की इच्छा रखनेवाले दोनों पक्षों के वीर तुमुल युद्ध करने लगे। इस तरह भयानक समर उपस्थित होने पर राजा दुर्योधन ने वीरवर कर्ण से कहा—हे अङ्गराज, देखो, वह सूर्य के समान तेजस्वी प्रतापी वीर दुःशासन रणभूमि में शत्रु-सेना का संहार करके अन्त को अभिमन्यु के वश हो रहे हैं और पाण्डवगण महाबली सिंह की तरह क्रुद्ध होकर अभिमन्यु की रक्षा करने के लिए वेग से युद्धभूमि में चले आ रहे हैं। २०

राजन्! तब दुर्योधन के परमहितैषी वीर कर्ण ने कुपित होकर अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों से अभिमन्यु को घायल किया और उनके अनुगामी पूर्वोक्त वीरों को भी वे तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित करने लगे। आचार्य के सामने जाने की इच्छा रखनेवाले महावीर अभिमन्यु ने फुर्ती के साथ कर्ण को तिहत्तर तीक्ष्ण बाण मारे और फिर कौरवपक्ष के श्रेष्ठ रथियों को भी वे शस्त्रप्रहार से व्यथित करने लगे। किन्तु कौरव-सेना का कोई भी योद्धा उस समय महावीर अभिमन्यु को द्रोणाचार्य के सामने जाने से रोक नहीं सका। उस समय सब योद्धाओं की अपेक्षा अभिमानी, विजयाभिलाषी, परशुराम के शिष्य, महावीर कर्ण सैकड़ों श्रेष्ठ बाणों और शस्त्रों से अभिमन्यु को पीड़ित करने लगे; किन्तु महापराक्रमी देवतुल्य अभिमन्यु उससे तनिक भी व्यथित नहीं हुए। ३१ वे शिला पर पैने किये गये आनतपर्व बहुत से भल्ल बाणों से वीरों के धनुष काटकर बलपूर्वक कर्ण

के ऊपर लगातार सैकड़ों बाण छोड़ने लगे। अभिमन्यु के धनुष से छूटे हुए उन साँप-सदृश बाणों ने कर्ण के छत्र, ध्वजा, सारथी और घोड़ों को नष्ट कर दिया। तब महावीर कर्ण ने अभिमन्यु को बाण मारे। उन्होंने अनायास ही उन बाणों के प्रहार को सह लिया और दम भर में देखते ही देखते एक ही बाण से कर्ण की ध्वजा और धनुष काटकर पृथ्वी पर गिरा दिया। उस समय कर्ण के भाई, अपने भाई की ऐसी दशा देखकर, सुदृढ़ धनुष लेकर अभिमन्यु पर आक्रमण करने को दौड़े। कर्ण की दुर्दशा देखकर अनुचरों सहित पाण्डवगण ज़ोर से सिंहनाद करने, बाजे बजाने और अभिमन्यु की बड़ाई करने लगे। ३७

इकतालीसवाँ अध्याय

अभिमन्यु के पराक्रम का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—राजन्! कर्ण के भाई ने बार-बार गरजकर और धनुष की डोरी खींचकर फुर्ती के साथ अभिमन्यु और कर्ण के रथों के बीच में आकर दस बाण छोड़े, जिनसे अभिमन्यु का सारथी और घोड़े घायल हो गये और छत्र तथा ध्वजा जर्जर हो गई। महावीर अभिमन्यु को, अपने पिता और पितामह के समान अलौकिक कार्य करके, अन्त में कर्ण के भाई के बाणों से पीड़ित होते देखकर कौरवगण अत्यन्त सन्तुष्ट हुए। अब महावीर अभिमन्यु ने दर्प के साथ एक बाण मारकर कर्ण के भाई का सिर काटकर गिरा दिया। अभिमन्यु के बाण से निहत भाई को, वायुवेग के द्वारा जड़ से उखड़कर पर्वत से गिरनेवाले कर्णिकार वृक्ष की तरह, रथ से पृथ्वी पर गिरते देखकर वीर कर्ण बहुत ही व्यथित हुए।

कर्ण को इस तरह रण से विमुख करके वीर अभिमन्यु कङ्कपत्रशोभित असंख्य बाणों की वर्षा करते हुए अन्य वीरों की ओर चले और क्रोध के साथ उस विस्तृत चतुरङ्गिणी कौरव-सेना को छिन्न-भिन्न करने लगे। अभिमन्यु के बाणों से विद्ध और व्यथित होकर वीर कर्ण बड़े वेग से रणभूमि से हट गये। यह देखकर सब सेना विशृङ्खल होकर प्राण लेकर इधर-उधर

भागने लगी। अभिमन्यु के, जलधारा और टीड़ीदल के समान, असंख्य बाणों से आकाश-मण्डल व्याप्त हो गया। बाणों के सिवा और कुछ भी न देख पड़ता था। कौरवपक्ष की सेना अभिमन्यु के तीक्ष्ण बाणों से जर्जर होकर भाग खड़ी हुई। केवल पराक्रमी योद्धा सिन्धुराज जयद्रथ अपने स्थान से नहीं हटे। १०

तब महावीर अभिमन्यु शङ्ख बजाते हुए कौरव-सेना में घुसकर सूखी घास को जलानेवाली प्रचण्ड आग के समान बाणों की आग से शत्रुसेना को भस्म करने लगे। उन्होंने दम भर में असंख्य रथियों, हाथियों, घोड़ों, हाथी-घोड़ों के सवारों और पैदल योद्धाओं को छिन्न-भिन्न करके पृथ्वी को कवन्धों और लाशों से व्याप्त कर दिया। कौरवपक्ष के सैनिक अभिमन्यु के बाण-प्रहार से अत्यन्त व्याकुल और पीड़ित होकर प्राणरक्षा के लिए बड़े वेग से चारों ओर भागे और ऐसे घबराये कि अपने ही दल के लोगों को मारने लगे। अभिमन्यु के चलाये हुए विपम विपाठ नाम के बाण रथों, हाथियों और घोड़ों को नष्ट करके पृथ्वीतल में गिरने लगे। शस्त्र, अंगुलित्राण, गदा और अङ्गद आदि सोने के अलङ्कारों से अलङ्कृत हज़ारों कटी हुई भुजाएँ, असंख्य बाण, धनुप, खड्ग, मनुष्यों के शरीर और माला तथा कुण्डल आदि से शोभित सिर पृथ्वी पर बिछ गये। ढेर के ढेर रथों के टूटकर गिरे हुए दिव्याभरणभूपित आसन, ईशादण्ड, अक्ष, चक्र, युग, शक्ति, धनुप, ध्वजा, ढाल, तलवार, बाण, असंख्य मृत क्षत्रियों की लाशें, मरे हुए हाथी और घोड़े गिरने के कारण वह रणभूमि क्षण भर में अगम्य और बड़ी भयङ्कर हो उठी। मारे जाते हुए और घायल राजपुत्रों तथा क्षत्रियों के २० आर्तनाद की ऐसी घोर प्रतिध्वनि उठी कि उसे सुनकर कायरों के कलेजे काँप उठे। उस समय महावीर अभिमन्यु असंख्य शत्रुसेना, रथ, घोड़े और हाथी आदि का संहार करके कौरव-सेना के भीतर घुसकर आग जैसे सूखे हुए जङ्गल को जलाती है वैसे ही शत्रुओं को नष्ट करते हुए इधर-उधर घूमने लगे। सेना के इधर-उधर भागने से ऐसी धूल उड़ी कि उसके मारे हम लोग असंख्य हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों के बीच में उन प्राणनाशक पराक्रमी अभिमन्यु को देख नहीं पाते थे। किन्तु दम भर के बाद ही महावीर अभिमन्यु मध्याह्नकाल के सूर्य के समान, अपने प्रताप से, शत्रुओं को तपाते हुए उस असंख्य सेना के बीच प्रकट होकर बहुत ही शोभायमान हुए। २६
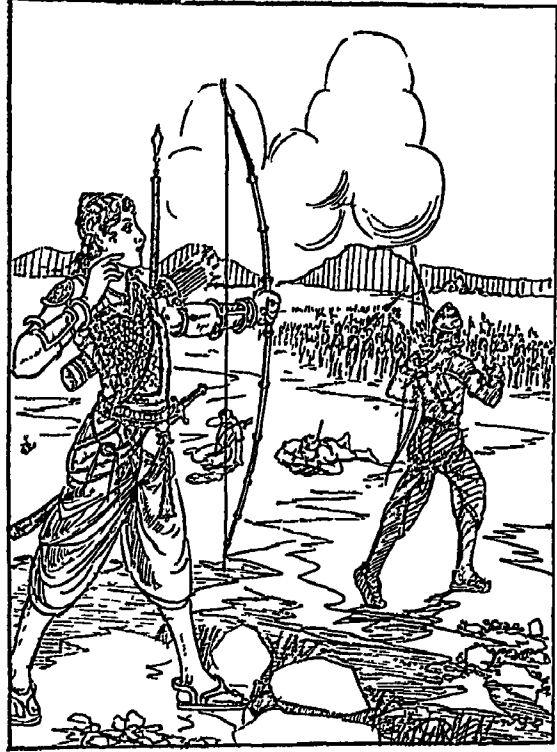
बयालीसवाँ अध्याय

जयद्रथ की तपस्या और शङ्कर से वरदान पाने का वृत्तान्त

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय! अत्यन्त सुखी, बाहुबल का दर्प रखनेवाले, रणनिपुण अभिमन्यु ने तीन-तीन साल के बढ़िया घोड़ों से शोभित रथ पर बैठकर प्राणपण से युद्ध करने के लिए जब समरसागर में प्रवेश किया तब पाण्डवसेना का कौन-कौन वीर उनके साथ गया?

सञ्जय ने कहा—महाराज! युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल, सहदेव, शिखण्डी, मत्स्यदेश के वीर, सात्यकि, धृष्टद्युम्न, विराट, द्रुपद, कैकेय और धृष्टकेतु आदि अभिमन्यु के आत्मीय-स्वजन लोग उनकी रक्षा करने के लिए उनके साथ-साथ युद्ध के मैदान में चले। कौरव-सेना के योद्धा लोग पाण्डवपक्ष के वीरों को युद्धभूमि में आते देखकर वहाँ से भाग गये। तब उग्र धनुष धारण करनेवाले महातेजस्वी आपके दामाद जयद्रथ, कौरव-सेना को स्थिर और युद्ध के लिए उत्साहित करने की इच्छा से, दिव्य अस्त्र का प्रयोग करते हुए पुत्रवत्सल पाण्डवों को रोक-कर मत्त गजराज की तरह युद्धभूमि में घूमने लगे। जयद्रथ को जीतकर व्यूह के भीतर घुसना पाण्डवों और उनके पक्ष के वीरों के लिए अशक्य हो गया।

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! महाबाहु जयद्रथ ने अकेले ही, मेरे पुत्रों के हित की इच्छा से, क्रोधी बली पाण्डवों को व्यूह के बाहर ही रोककर बड़ा भारी काम किया। वास्तव में यह उनके लिए बड़ा भारी भार था। मुझे जयद्रथ का बल-वीर्य बहुत ही अद्भुत जान १० पड़ता है। तुम उनके युद्ध के वृत्तान्त का वर्णन विस्तार के साथ करो। सिन्धुराज जयद्रथ ने कौन सा दान, हवन, यज्ञ या तप किया था, जिसके प्रभाव से वे अकेले ही क्रोधान्ध पाण्डवों को युद्ध में परास्त कर सके?

सञ्जय ने कहा—राजन्! जयद्रथ ने जब द्रौपदी को हर ले जाने की कुचेष्टा की थी तब भीमसेन ने उन्हें परास्त किया था। उस अपमान से कुपित होकर जयद्रथ ने इन्द्रियों को विषयों से रोक करके, भूख-प्यास धूप-वर्षा आदि के कष्ट सहकर, घोर तपस्या और वेदपाठ-पूर्वक वर-लाभ के लिए महादेव की आराधना की। भक्तवत्सल भवानीपति ने जयद्रथ पर दया करके उनसे स्वप्न में कहा—हे जयद्रथ! मैं तुम पर प्रसन्न हूँ, तुम इच्छा के अनुसार वरदान माँग लो। तब जयद्रथ ने प्रणाम करके हाथ जोड़कर कहा—हे महादेव! मैं आपके वरदान के प्रभाव से अकेला रथ पर बैठकर महाबलशाली पाँचों पाण्डवों को परास्त कर सकूँ। शङ्कर ने कहा—हे सिन्धुराज! मैं वर देता हूँ कि तुम अर्जुन के सिवा सब पाण्डवों को [एक दिन] युद्ध में परास्त कर सकोगे। राजन्! महादेव के ये वचन सुनकर "बहुत अच्छा" कहकर जयद्रथ जाग पड़े। वीर जयद्रथ ने शङ्कर के उसी वरदान के प्रभाव से और दिव्य अस्त्रों के बल २० से उस दिन अकेले ही पाण्डवों को परास्त किया [और व्यूह के भीतर नहीं जाने दिया]।

हे जयद्रथ ! मैं तुम पर प्रसन्न हूँ, तुम इच्छा के अनुसार वरदान मांग लो—पृ०२२६६

महाराज! उस समय जयद्रथ के ज्या-निर्घोष और तलध्वनि को सुनकर शत्रुपक्ष के क्षत्रिय भयविह्वल और कौरवपक्ष के वीर प्रसन्न तथा उत्साहित हो उठे। कौरवपक्ष के वीरगण व्यूह की रक्षा का भार जयद्रथ को सौंपकर, साहस के साथ धनुष चढ़ाकर, राजा युधिष्ठिर की सेना के सामने चले। २२

तेंतालीसवाँ अध्याय

जयद्रथ के युद्ध का वर्णन

सञ्जय ने कहा—राजन्! आप मुझसे सिन्धुराज जयद्रथ के पराक्रम के बारे में पूछ रहे हैं, इसलिए जिस तरह जयद्रथ ने पाण्डवों से युद्ध किया और उन्हें आगे बढ़ने से रोका वह सब वृत्तान्त मैं कहता हूँ; सुनिए। गन्धर्वनगर के सदृश, विविध अलङ्कारों से अलंकृत, फुर्तीले और सारथी के आज्ञाधीन सिन्धु देश के बड़े डील-डौलवाले घोड़ों से युक्त, रथ पर चढ़कर वीर जयद्रथ मोर्चे के मोहरे पर पहुँचे। उनके रथ के ऊपरी भाग में चाँदी का बना हुआ वराहचिह्न ध्वजा के ऊपर शोभायमान था। वे सफ़ेद छत्र, पताका और चामर आदि राजकीय चिह्नों से आकाशमण्डल में स्थित चन्द्रमा के समान शोभा को प्राप्त हुए। हीरा, मोती, मणि, स्वर्ण आदि से भूषित लोहमय उनके रथ का वरूथ (रथवेष्टन) ज्योतिष्क-मण्डली से आवृत आकाश के समान जान पड़ता था।

इसके बाद वीर जयद्रथ ने धनुष चढ़ाकर बहुत से बाण बरसाये और अभिमन्यु ने व्यूह के जिस स्थान को अपने शस्त्रों की वर्षा से ख़ाली करके राह कर ली थी उस स्थान को फिर सेना के द्वारा पूरा कर दिया। जयद्रथ ने सात्यकि को तीन, भीमसेन को आठ, धृष्टद्युम्न को साठ, विराट राजा को दस, राजा द्रुपद को पाँच, शिखण्डी को दस, युधिष्ठिर को सत्तर, कैकेयगण को पचीस बाण और द्रौपदी के पाँचों बेटों को तीन-तीन बाण मारकर अन्यान्य वीरों को असंख्य बाणों से पीड़ित करना शुरू किया। जयद्रथ की यह अद्भुत फुर्ती देखकर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। महाप्रतापी युधिष्ठिर ने हँसते-हँसते तीक्ष्ण भल्ल बाण से जयद्रथ का धनुष काट डाला। उन्होंने दम भर में दूसरा धनुष लेकर धर्मराज को दस बाण और अन्य वीरों को तीन-तीन बाण मारे। तब महावीर भीमसेन ने जयद्रथ की फुर्ती देखकर शीघ्रता के साथ तीन-तीन भल्ल बाणों से उनका धनुष, ध्वजा और छत्र काट डाला। पराक्रमी सिन्धुराज ने उसी दम अन्य धनुष पर डोरी चढ़ाकर भीमसेन की ध्वजा, धनुष और घोड़ों को नष्ट कर दिया। महाबाहु भीमसेन उस बिना घोड़ों के रथ से उतरकर सात्यकि के रथ पर चले गये। उस समय ऐसा जान पड़ा कि सिंह पर्वत के ऊपर चढ़ रहा है। १०

राजन् ! आपके सैनिकगण जयद्रथ के इस कार्य को देखकर अत्यन्त आह्लाद के साथ ऊँचे स्वर से उनको शाबाशी देने लगे। वीर सिन्धुराज ने अकेले ही क्रोधविह्वल पाण्डवों को अपने बाहुबल और अस्त्र-शस्त्र के प्रभाव से रोक लिया, यह देखकर सब लोग उनकी प्रशंसा करने लगे। पहले महावीर अभिमन्यु ने अपने पक्ष के योद्धाओं को साथ ले, कौरव पक्ष के असंख्य हाथियों को मारकर, पाण्डवों को व्यूह के भीतर जाने की जो राह दिखलाई थी वह राह जयद्रथ ने इस समय अपने कौशल और शिव के वरदान के प्रभाव से बन्द कर दी। मत्स्य, पाञ्चाल, कैकेय और पाण्डवगण बड़े यत्न से लड़ते-भिड़ते जयद्रथ के पास पहुँचे; किन्तु जयद्रथ के प्रभाव और पराक्रम को किसी तरह न सह सकने के कारण कुछ नहीं कर सके। उस समय पाण्डवपक्ष के वीरों ने द्रोणाचार्य की सेना के व्यूह को तोड़ने की जितनी चेष्टाएँ १६ कीं, उन्हें जयद्रथ ने अनायास ही विफल कर दिया।

चवालीसवाँ अध्याय

अभिमन्यु के पराक्रम का वर्णन

सञ्जय ने कहा—हे नरेन्द्र ! जयद्रथ ने जय पाने की इच्छा रखनेवाले पाण्डवों को जब इस तरह बाहर ही रोक दिया तब दोनों पक्ष के वीर भयानक संग्राम करने लगे। महातेजस्वी अभिमन्यु शत्रुसेना के भीतर घुसकर वैसे ही शत्रुसेना को मथने लगे जैसे कोई बड़ा भारी मच्छ समुद्र के जल को मथता है। उस समय कौरवपक्ष के वीरगण प्रधानता के अनुसार अभिमन्यु पर आक्रमण करने के लिए उनकी ओर चले। अभिमन्यु के साथ कौरवों का भयानक युद्ध होने लगा। कौरव लगातार बाणवर्षा करने लगे। उन्होंने रथों के बीच में अभिमन्यु को घेर लिया। अभिमन्यु ने कुपित होकर कई बाण कर्णनन्दन वृषसेन को मारे, उनके सारथी को मार डाला, धनुष काट डाला और उनके रथ के घोड़ों को भी घायल कर डाला। हवा के समान वेग से चलनेवाले घोड़े सहसा अचेत वृषसेन को युद्धस्थल से लेकर भाग खड़े हुए। इसी बीच में अभिमन्यु के रथ को लेकर उनका सारथी भी अन्यत्र चला गया। महारथी वीर लोग अभिमन्यु का पराक्रम देखकर प्रसन्नतापूर्वक "साधु-साधु" कहकर कोलाहल करने लगे।

कुपित सिंह के समान झपटकर बाणों से शत्रुसेना का विनाश करते हुए अभिमन्यु को आगे बढ़ते देख शीघ्रता के साथ वीर वसातीय उनके सामने पहुँचे। वसातीय ने फुर्ती के साथ सुवर्णपुंखयुक्त तीक्ष्ण साठ बाण अभिमन्यु को मारकर कहा—हे वीर कुमार ! मेरे मौजूद रहते तुम कभी समर में जीते-जी छुटकारा नहीं पा सकते। तब अभिमन्यु ने अपने अत्यन्त तीक्ष्ण बाण से लोह-कवचधारी वीर वसातीय का वक्षःस्थल चीर डाला। वसातीय मरकर रथ से

पृथ्वी पर गिर पड़े। उनकी मृत्यु देखकर कौरवपक्ष के वीरगण अपने-अपने अनेकानेक प्रकार के धनुष चढ़ा-चढ़ाकर दौड़े। उन्होंने अभिमन्यु को, मार डालने के लिए, चारों ओर से घेर लिया। उस समय युद्ध बहुत ही भयानक हो उठा। महावीर अभिमन्यु ने क्रोध से विह्वल होकर उनके धनुष, बाण आदि अस्त्र-शस्त्र, कलेवर और माल्यमण्डित तथा कुण्डलों से अलंकृत मस्तक काटना शुरू कर दिया। इधर-उधर चारों ओर खड्ग, अंगुलित्राण, पट्टिश और परश्वध आदि से युक्त और सुवर्ण के अलङ्कारों से अलङ्कृत कटे हुए हाथ पड़े हुए थे। उस समय रणभूमि माला, आभूषण, कपड़े, ध्वजदण्ड, ढाल, तलवार, हार, मुकुट, छत्र, चामर, आसन, ईषादण्ड, रथों के जुए, टूटे हुए पहिये, युग, अनुकर्ष, पताका, घोड़े, सारथि, टूटे हुए रथ तथा मरे हुए हाथियों-घोड़ों से परिपूर्ण हो उठा। समरभूमि उस समय विजयाभिलाषी महाबली पराक्रमी अनेक देशों के राजाओं की लाशों से परिपूर्ण और इसी से भयङ्कर दिखाई पड़ने लगी। अभिमन्यु क्रुद्ध होकर शत्रुसेना को विदीर्ण करते हुए इधर-उधर घूमने लगे। उस समय अभिमन्यु को कोई अच्छी तरह देख नहीं पाता था; क्योंकि वे फुर्ती के साथ एक जगह से दूसरी जगह जा रहे थे। महाराज! हम लोग केवल अभिमन्यु का सुवर्णमण्डित कवच, आभूषण, मण्डलाकार धनुष और बाण ही देख पाते थे। सूर्य जैसे किरणों से सब लोकों को ढक लेते हैं वैसे ही तेजस्वी अभिमन्यु अपने बाणों से वीरों को व्याप्त करते हुए देख पड़ते थे। सेना के बीच में स्थित, सूर्य के समान तप रहे, अभिमन्यु को उस समय कोई स्थिर दृष्टि से देख भी नहीं सकता था। २१

पैंतालीसवाँ अध्याय

अभिमन्यु के पराक्रम से राजा दुर्योधन की पराजय

सञ्जय ने कहा—महाराज! जैसे प्रलयकाल आ जाने पर काल सब प्राणियों के जीवन का संहार करता है वैसे ही इन्द्र-सदृश पराक्रमी अभिमन्यु बड़े-बड़े योद्धाओं को मारने लगे। उस समय शत्रुसेना को विदलित करते हुए अभिमन्यु की अपूर्व शोभा हुई। व्याघ्र जैसे झपटकर मृग को दबोच ले वैसे ही अभिमन्यु ने शत्रुसेना के व्यूह में घुसकर सत्यश्रवा को पकड़ लिया और पृथ्वी पर उनको खींचना शुरू किया। तब कौरवपक्ष के सब योद्धा अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र लेकर बड़े वेग से अभिमन्यु के पास पहुँचे और "मैं पहले मारूँगा, मैं पहले वार करूँगा" कहकर होड़ सी लगा करके वे अभिमन्यु को मारने के लिए उद्यत हुए। समुद्र के भीतर तिमि नाम का मत्स्य जैसे छोटी मछलियों को लील लेता है वैसे ही कुमार अभिमन्यु उन क्षत्रियों और सुभटों को मार-मारकर गिराने लगे। जैसे सब नदियाँ सागर में जाकर समा जाती हैं वैसे ही युद्ध से मुँह न मोड़नेवाले अपराजित अभिमन्यु के पास पहुँचकर कोई भी

जीवित नहीं लौटता था। उस समय कौरवपक्ष के सैनिक लोग उसी तरह अत्यन्त भयविह्वल होकर काँपने लगे जिस तरह महाग्राह से पकड़ा गया मनुष्य काँपता है और तूफ़ान के भयङ्कर वेग से क्षोभ को प्राप्त सागर के बीच तबाह होती हुई नाव डगमगाती है।

अब पराक्रमी निडर मद्रराज शल्य के पुत्र वीर रुक्मरथ ने भागती हुई सेना को धीरज देकर उत्तेजित करते हुए कहा—हे वीर क्षत्रियो! सैनिको! डरो नहीं। क्यों भागते हो? मेरे जीते-जी अभिमन्यु तुम्हारा कुछ नहीं कर सकते। मैं निःसन्देह इन्हें जीते ही पकड़ १० लूँगा। सुसज्जित सुवर्णमण्डित रथ पर बैठे हुए रुक्मरथ बड़े वेग से अभिमन्यु के सामने पहुँचे। उन्होंने अभिमन्यु के हृदय में और दाहनी तथा बाईं भुजा में तीन-तीन बाण मार-

कर घोर सिंहनाद किया। अभिमन्यु ने उसी दम उनका धनुष, दोनों हाथ और सुन्दर नयन-नाक तथा भृकुटि से शोभित सिर बाणों से काटकर पृथ्वी पर गिरा दिया। रण-दुर्मद शल्य-पुत्र के प्रिय हम-जोली के राजकुमारगण सुवर्णखचित ध्वजा से शोभित रथों पर बैठे हुए थे। उन्होंने जब रुक्मरथ की मृत्यु देखी तब कुपित होकर, ताल-प्रमाण सुदृढ़ धनुष तान-तान-कर, चारों ओर से अकेले अभिमन्यु को घेर लिया। शस्त्रविद्या में सुशिक्षित, तरुण, अत्यन्त असहनशील वीरों ने घेरकर अपने बाणों से अभिमन्यु को छा लिया। यह देखकर राजा दुर्योधन बहुत ही प्रसन्न हुए और उन्होंने समझ लिया कि अब अभिमन्यु जीते नहीं बच सकते। राजपुत्रों ने अनेक प्रकार के चिह्नों से युक्त, सुवर्णपुंख-शोभित बाणों से दम भर में अभिमन्यु को छिपा सा दिया। हमें उनका रथ, ध्वजदण्ड और सारथी, सब टीड़ीदल से घिरे हुए खेत की तरह देख पड़ते थे। उस समय अंकुश की चोट खाये हुए हाथी की तरह अत्यन्त घायल और इसी से २१ क्रुद्ध होकर अभिमन्यु ने गान्धर्व अस्त्र का प्रयोग करके माया प्रकट की। महावीर अर्जुन ने घोर तप करके तुम्बुरु आदि गन्धर्वों से वह अद्भुत दिव्य अस्त्र प्राप्त किया था। उस अस्त्र का प्रयोग करते ही शत्रुसेना मोहित हो गई। अभिमन्यु ने फुर्ती के साथ गान्धर्व अस्त्र छोड़कर ऐसा अद्भुत कौशल दिखलाया कि बड़े-बड़े योद्धा दङ्ग हो गये। वे अलातचक्र की तरह कभी एक,

कभी सौ और कभी हज़ार रूप धारण किये हुए से देख पड़ते थे। फिर उन्होंने रथसञ्चालनकला और अस्त्र-माया के द्वारा राजाओं को मोहाभिभूत करके उनके शरीरों के टुकड़े-टुकड़े करना शुरू किया। सान पर रक्खे गये पैने बाणों के प्रहार से वीरों के प्राण निकलकर परलोक सिधारते और मृत शरीर पृथ्वी पर गिरते जाते थे। इसके बाद अभिमन्यु ने धारदार बाणों से कुछ राजकुमारों के धनुष, रथ के घोड़े, सारथी, ध्वजा, अङ्गदादि आभूषणों से शोभित बाहु और सिर काटना शुरू कर दिया। जैसे पाँच साल के पुराने फलयुक्त आम के पेड़ टूट-टूटकर गिरते हैं वैसे ही एक सौ राजकुमारों को अभिमन्यु ने बाणों से मार गिराया। उस समय एक-मात्र अभिमन्यु के पराक्रम से क्रुद्ध सर्प-सदृश, सुखभोग के योग्य, एक सौ जवान और शूर राजकुमारों की मृत्यु होते देखकर राजा दुर्योधन बहुत ही डर गये। अभिमन्यु को रथियों, हाथियों, घोड़ों और पैदल सेना का संहार करते देखकर, क्रोधान्ध होकर, स्वयं दुर्योधन शीघ्रता के साथ उनके सामने पहुँचे। उन दोनों वीरों का असम्पूर्ण अद्भुत युद्ध थोड़ी देर तक बहुत ही भयङ्कर होता रहा। इतने में ही वीर अभिमन्यु के बाणों से अत्यन्त पीड़ित और व्यथित होकर राजा दुर्योधन वहाँ से हट गये। ३०

छियालीसवाँ अध्याय

राजकुमार लक्ष्मण की मृत्यु

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! तुम बहुतों के साथ एक के संग्राम करने और बराबर विजयी होने की बात बारम्बार कह रहे हो। मुझे तो इस समय अभिमन्यु का ऐसा पराक्रम और बाहुबल विश्वास के अयोग्य और अत्यन्त अद्भुत प्रतीत हो रहा है। किन्तु असल बात यह है कि जिनका एकमात्र अवलम्बन धर्म ही है, उनका ऐसा अद्भुत पराक्रम होना कुछ असम्भव नहीं है। चाहे जो हो, अब यह बताओ कि उन एक सौ राजकुमारों की मृत्यु और दुर्योधन के विमुख होने पर मेरी सेना का क्या हाल हुआ? उसने किस तरह अभिमन्यु का सामना किया?

सञ्जय ने कहा—राजन्! आपके पक्ष के महारथियों के मुँह सूख गये, दृष्टि चञ्चल हो उठी, रोंगटे खड़े हो गये और बराबर पसीना बह चला। उस समय उनके मन में विजयी होने का उत्साह ज़रा भी नहीं रहा। सब लोग भागने का निश्चय करके मरे हुए भाई, पिता, पुत्र, मित्र, सुहृद्, सम्बन्धी, भाई-बन्धु आदि को छोड़-छोड़कर अपने हाथी घोड़े आदि को तेज़ी से हाँककर इधर-उधर भागने लगे।

उधर द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, बृहद्बल, कृपाचार्य, दुर्योधन, कर्ण, कृतवर्मा और शकुनि अपनी सेना को छिन्न-भिन्न देखकर, अत्यन्त क्रुद्ध होकर, अभिमन्यु पर आक्रमण करने के लिए

आगे बढ़े। किन्तु वीर अभिमन्यु ने इन सभी वीरों को एक-एक करके युद्ध से विमुख सा कर दिया। तब तेजस्वी, लाड़-प्यार से पले हुए, राजकुमार लक्ष्मण लड़कपन और दर्प के मारे बेखटके अकेले ही वेग से अभिमन्यु के सामने पहुँचे। पुत्रस्नेह के कारण उनकी सहायता और रक्षा के लिए राजा दुर्योधन भी उनके पीछे पहुँचे। अन्यान्य महारथी वीर योद्धा भी राजा दुर्योधन के साथ चले। मेघमण्डल जैसे पहाड़ पर पानी बरसाता है वैसे ही वे सब वीर अभिमन्यु के ऊपर बाण बरसाने लगे। हवा जैसे मेघों को तितर-बितर कर देती है वैसे ही अभिमन्यु १० भी उस विशाल सेना को और उन वीरों को उन्मथित करने लगे। इसके उपरान्त जैसे मतवाला हाथी अन्य हाथियों से जाकर भिड़ता है वैसे ही वीर अभिमन्यु भी—अपने पिता के साथ उपस्थित, धनुष ताने हुए, अत्यन्त दुर्द्धर्ष, कुबेर के पुत्र के समान सुन्दर और प्रियदर्शन—लक्ष्मण के पास पहुँचे। लक्ष्मण ने अभिमन्यु के वक्षःस्थल और दोनों भुजाओं में अनेक तीक्ष्ण बाण मारे। डण्डे की चोट खाकर कुपित विषैले नाग के समान अत्यन्त क्रुद्ध वीर अभिमन्यु ने आपके पोते लक्ष्मण से कहा—हे लक्ष्मण! मैं तुमको अभी यमपुरी भेजता हूँ। इसलिए तुम अच्छी तरह इस लोक को एक बार देख लो। मैं तुमको तुम्हारे भाई-बन्धुओं के सामने ही काल के गाल में पहुँचाता हूँ। महाराज! इतना कहकर वीर अभिमन्यु ने उसी समय केंचुल छोड़े हुए नाग के समान चमकीला और भयानक भल्ल बाण निकालकर उससे लक्ष्मण का, सुन्दर नासिका भ्रुकुटी केश और कुण्डलों से शोभित, सिर काट डाला।

लक्ष्मण की मृत्यु देखकर सब वीरगण हाहाकार करने लगे। शोक और क्रोध से अधीर होकर राजा दुर्योधन ऊँचे स्वर से पुकारकर सब राजाओं से कहने लगे—हे वीर क्षत्रियो! तुम लोग मिलकर चटपट इस दुष्ट बालक अभिमन्यु को मार डालो। तब कुपित होकर द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण, अश्वत्थामा, बृहद्बल और कृतवर्मा इन छः महारथियों ने अभिमन्यु को चारों ओर से घेर लिया। अभिमन्यु ने तीक्ष्ण बाणों से २० इन छहों वीरों को घायल करके हटा दिया। फिर वे बड़े वेग से सिन्धुराज जयद्रथ की सेना के भीतर घुसे। कलिङ्गदेश के योद्धा, निषादगण और पराक्रमी क्राथनन्दन ने हाथियों का दल

आगे करके अभिमन्यु की राह रोक दी। तब दोनों ओर से अत्यन्त भीषण संग्राम होने लगा। महाबाहु अभिमन्यु ने बहुत ही दुर्भेद्य दुर्द्धर्ष हाथियों की सेना को छिन्न-भिन्न करना शुरू कर दिया। उस समय ऐसा जान पड़ने लगा मानों प्रचण्ड आँधी आकाशमण्डल में बड़े वेग से मेघों को तितर-बितर कर रही है। क्राथनन्दन ने बाणवर्षा से अभिमन्यु को रोकने का बड़ा यत्न किया। इसी समय द्रोणाचार्य आदि छहों महारथी फिर जाकर दिव्य अस्त्रों का प्रयोग करते हुए अभिमन्यु से युद्ध करने लगे। अभिमन्यु ने अपने बाणों के असह्य प्रहारों से उक्त छहों वीरों को विमुख सा करके क्राथनन्दन को बहुत ही पीड़ित किया और फिर अनेक प्रकार के बाणों से उनका छत्र और ध्वजा काट डाली, सारथी और घोड़ों को मार डाला तथा धनुष, बाण और बजुल्ले समेत उनकी भुजाएँ काट डालीं। इसके उपरान्त श्रेष्ठ कुल, शील, ज्ञान, वीर्य और कीर्ति से युक्त, अस्त्रबलसम्पन्न क्राथनन्दन को मार गिराया। यह देखकर प्रायः अन्य सब वीरगण भयविह्वल होकर समर से हट गये। २७

सैंतालीसवाँ अध्याय

कोशलेश्वर बृहद्बल का मारा जाना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! अपने कुल के अनुरूप अद्भुत कार्य करनेवाले, व्यूह के भीतर घुसे हुए, नवयुवक, अपराजित, संग्राम से विमुख न होनेवाले अभिमन्यु को तीन साल के, बलशाली, अच्छी नस्ल और देश के घोड़ों से युक्त रथ पर बैठकर जैसे आकाशमण्डल में सूर्य भ्रमण करते हैं वैसे ही रणभूमि में भ्रमण करते देखकर किन-किन रथियों ने उनका सामना किया?

सञ्जय ने कहा—महाराज! अभिमन्यु ने व्यूह के भीतर जा करके आपके पक्ष के राजाओं और सैनिकों को जब तीक्ष्ण बाण मारकर रण से हटा दिया तब कुपित होकर द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण, अश्वत्थामा, बृहद्बल और कृतवर्मा इन छः महारथियों ने अभिमन्यु को चारों ओर से घेर लिया। सिन्धुराज जयद्रथ को द्वार-रक्षा का भार सौंपा गया था, इसी लिए अवशिष्ट सैनिक लोग धर्मराज युधिष्ठिर की सेना को रोकने के लिए उधर चले। अन्यान्य वीर भी ताल प्रमाण बड़े-बड़े धनुष चढ़ाकर अभिमन्यु के ऊपर लगातार पैने बाण छोड़ने लगे। अभिमन्यु ने उन रणविद्या-विशारद और सब विद्याओं में निपुण वीरों को अपने रणकौशल से आश्चर्य में डाल दिया और बाणवर्षा करके विह्वल कर दिया। उन्होंने द्रोणाचार्य को पचास, बृहद्बल को बीस, कृतवर्मा को अस्सी, कृपाचार्य को साठ और अश्वत्थामा को कानों तक खींचकर सुवर्णपुङ्खयुक्त वेगशाली दस बाण मारे। फिर शत्रुदल के बीच में फुर्ती के साथ पीले रङ्ग के, पैने, कर्णी नाम के कई एक विकट बाण वीर कर्ण के कान में मारे। इसके उपरान्त कृपा-

चार्य के पार्श्वरक्षक दोनों सारथियों को और घोड़ों को मारकर, उनकी छाती में दारुण दस बाण मारकर, उन्हें विह्वल कर दिया। फिर आपके पुत्र और अन्य वीरों के सामने ही अभिमन्यु ने कौरवकुल की कीर्ति को बढ़ानेवाले वृन्दारक नाम के महावीर को मार डाला। अभिमन्यु को इस तरह निर्भय भाव से कौरवपक्ष के प्रधान-प्रधान वीरों का संहार करते देखकर अश्वत्थामा ने उनको पचीस क्षुद्रक नाम के तीक्ष्ण बाण मारे। अभिमन्यु ने भी आपके पुत्रों के सामने ही शीघ्रता के साथ तीक्ष्ण बाणों से अश्वत्थामा को पीड़ित किया। उन्होंने सुतीक्ष्ण साठ बाणों से अभिमन्यु को घायल किया, पर वे मैनाक पर्वत के समान तनिक भी विचलित न हुए। अश्वत्थामा ने फिर सुवर्णपुङ्खयुक्त तिहत्तर बाण अभिमन्यु को मारे। पुत्रवत्सल आचार्य द्रोण ने एक सौ, पिता के हितैषी अश्वत्थामा ने साठ, कर्ण ने बाईस भल्ल बाण, कृतवर्मा ने चौदह भल्ल बाण, बृहद्बल ने पचास भल्ल बाण और कृपाचार्य ने दस भल्ल बाण एक साथ अभिमन्यु को मारे। अभिमन्यु ने भी उन सबको दस-दस बाण मारे। कोशलेश्वर बृहद्बल ने कर्णी बाण से अभिमन्यु को वक्षःस्थल में घायल किया। उन्होंने क्रुद्ध होकर फुर्ती के साथ उनकी ध्वजा, धनुष, सारथी और घोड़ों को नष्ट करके पृथ्वी पर गिरा दिया। रथ न रहने पर ढाल-तलवार लेकर बृहद्बल ने अभिमन्यु का कुण्डल-मण्डित सिर काटने का इरादा किया। तब अभिमन्यु ने तीक्ष्ण बाण मारकर उनका हृदय फाड़ डाला। इससे वे प्राणहीन होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। उस समय कटु वचन कहते हुए, खड्ग-धनुष धारण किये, दस हज़ार राजा युद्ध में पीठ दिखाकर भाग खड़े हुए। महावीर अभिमन्यु बृहद्बल को मारकर अपने पैने बाणों से शत्रुसेना को स्तम्भित करते हुए युद्ध के मैदान में भ्रमण करने लगे।

११ २० २४

अड़तालीसवाँ अध्याय

अभिमन्यु के अद्भुत पराक्रम का वर्णन

सञ्जय ने कहा—राजन्! महावीर अभिमन्यु ने कर्ण के कान में दुबारा तीक्ष्ण कर्णिक बाण मारकर पचास बाणों से उनको जर्जर कर दिया। महारथी कर्ण ने अभिमन्यु के प्रहार

से विह्वल और क्रोधान्ध होकर उनको उतने ही बाण मारे। उन बाणों से घायल होकर अभिमन्यु अपूर्व शोभा को प्राप्त हुए। उन्होंने भी क्रोध करके कर्ण को असंख्य उग्र बाण मारे। अभिमन्यु के दारुण बाणों के प्रहार से कर्ण के अङ्ग कट-फट गये और उनसे रक्त की धारा बह चली, जिससे कर्ण की भी अपूर्व शोभा हुई। एक दूसरे के बाणों से घायल होकर, रक्त से भीगे हुए, दोनों वीर फूले हुए ढाक के पेड़ के समान जान पड़ने लगे।

महाबाहु अभिमन्यु ने कर्ण के छः महाबली अमात्यों को, सारथी को और घोड़ों को मार डाला तथा धनुष, ध्वजा और रथ काट डाले। उन्होंने अन्य महावीरों को भी दस-दस बाणों से घायल किया। अभिमन्यु ने वास्तव में यह बहुत ही अद्भुत काम किया। फिर उन्होंने छः बाणों से मगधराज के पुत्र को मार डाला। इसके बाद तरुण अवस्थावाले अश्वकेतु को, सारथी और घोड़ों सहित, यमपुर भेज दिया। हाथी पर सवार मार्तिकावतक भोज का सिर एक क्षुरप्र बाण से काटकर वीर अभिमन्यु घोर सिंहनाद करने लगे। उस समय वीर दुःशासन का पुत्र अभिमन्यु के सामने आया। उसने तीक्ष्ण चार बाण अभिमन्यु के घोड़ों को, एक बाण सारथी को और दस बाण अभिमन्यु को मारे। महापराक्रमी अभिमन्यु ने दुःशासन के पुत्र के बाणप्रहार से कुपित होकर उसको दस बाण मारे; फिर क्रोध से लाल आँखें करके वे ऊँचे स्वर से कहने लगे—हे दुःशासन के प्रिय पुत्र! तुम्हारे पिता बड़े डरपोक हैं जो संग्राम से भाग खड़े हुए। बड़ी बात है जो तुम क्षत्रिय-धर्म को जानते हो और युद्ध करने के लिए तैयार हो। किन्तु याद रक्खो, मेरे हाथ से जीते नहीं बच सकते! १०

महावीर अभिमन्यु ने दुःशासन के पुत्र से यों कहकर बहुत ही तीक्ष्ण, चमकीला, साफ़ किया हुआ एक नाराच बाण धनुष पर चढ़ाकर शत्रु पर छोड़ा। किन्तु महापराक्रमी अश्वत्थामा ने फुर्ती के साथ तीन तीक्ष्ण बाणों से उस नाराच को राह में ही काट डाला। अभिमन्यु ने अश्वत्थामा के रथ की ध्वजा काटकर वीर शल्य को तीन बाण मारे। शल्य ने धैर्य के साथ उस प्रहार को सहकर गृद्धपत्रयुक्त नव बाण अभिमन्यु के हृदय में मारे। शल्य का यह कर्म बहुत ही अद्भुत जान पड़ा। तब युद्धनिपुण अभिमन्यु ने फुर्ती के साथ शल्य का धनुष काटकर उनके पार्श्वरक्षक सारथियों को मार डाला और फिर लोहमय छः बाण मारकर शल्य को पीड़ित किया। अभिमन्यु के बाणों से पीड़ित शल्य वह रथ छोड़कर दूसरे रथ पर सवार हो गये। समरनिपुण अभिमन्यु ने झटपट शत्रुञ्जय, चन्द्रकेतु, मेघवेग, सुवर्चा और सूर्यभास, इन पाँच वीरों का वध करके शकुनि को कई बाण मारकर विह्वल कर दिया। शकुनि ने अभिमन्यु को तीन तीक्ष्ण बाण मारकर राजा दुर्योधन से कहा—राजन्! अब हमें चाहिए कि सब लोग मिलकर अभिमन्यु का वध करें; क्योंकि यह हममें से एक-एक को मार डालता है। हे नर-नाथ! इसी समय कर्ण ने द्रोणाचार्य से कहा—ब्रह्मन्! यह वीर बालक हम लोगों में

से हर एक को युद्ध से हटा करके सम्पूर्ण सेना का संहार कर रहा है। इसलिए आप तुरन्त इसके प्राण लेने का कोई उपाय बताइए।

महावीर द्रोणाचार्य ने यह सुनकर कौरवपक्ष के सब वीरों को सुनाकर कहा—हे वीरो! देखो, इस कुमार का कैसा युद्धकौशल है; कहीं प्रहार करने का तनिक भी अवकाश नहीं देख पड़ता। इस वीर बालक की फुर्ती तो देखो। यह बालक चारों ओर विचर रहा है, पर कहीं ज़रा भी प्रहार करने का मौक़ा नहीं देता। यह बालक सब बातों में अपने पराक्रमी पिता अर्जुन के ही समान है। यह ऐसी फुर्ती के साथ तरकस से बाण निकालता, धनुष पर चढ़ाता और २० चलाता है कि रथ के मार्गों में केवल मण्डलाकार धनुष ही देख पड़ता है। शत्रुदमन महावीर अभिमन्यु बाणप्रहार से मुझे जर्जर, पीड़ित और मोहित सा कर रहा है तथापि इसका ऐसा अद्भुत पराक्रम देखकर मुझे बड़ा आनन्द हो रहा है। कौरवपक्ष के बड़े-बड़े वीर योद्धा कुपित होकर, लाख-लाख यत्न करने पर भी, प्रहार करने का मौक़ा नहीं देख पाते; यह देखकर मुझे बड़ा आह्लाद हो रहा है। ऐसे अपूर्व युद्धकौशल के कारण यह वीर बालक वीरों में सबसे अधिक मान पाने के योग्य है। महावीर अभिमन्यु ऐसी फुर्ती के साथ अपने बाणों की वर्षा से सब दिशाओं को व्याप्त कर रहा है कि इसमें और अर्जुन में कुछ भी भेद नहीं देख पड़ता।

महावीर कर्ण ने अभिमन्यु की मार से अत्यन्त पीड़ित होकर फिर द्रोणाचार्य से कहा—हे आचार्य! युद्ध छोड़कर भाग जाना वीर क्षत्रियों का धर्म नहीं है, इसी कारण अभिमन्यु के बाणों से व्यथित होकर भी मैं रणभूमि में मौजूद हूँ। इस तेजस्वी कुमार के अग्निसदृश प्रज्वलित परम दारुण बाण मेरे हृदय को चीरे डालते हैं।

कर्ण के ये वचन सुनकर महारथी द्रोणाचार्य हँसकर कहने लगे—हे कर्ण! अभिमन्यु का कवच सुदृढ़ और अभेद्य है। फिर यह अभी जवान और फुर्तीला है, जल्द थक नहीं सकता। मैंने इसके पिता पराक्रमी अर्जुन को कवच पहनने की सब गुप्त बातें और तरीक़े बतला दिये हैं। उन सब उपायों को यह बालक भी अच्छी तरह जानता है। एक उपाय यह है कि यत्न के साथ बाण मारकर इसका धनुष और धनुष की डोरी काटी जा सकती है; और अभीषु, रथ के घोड़े तथा पार्श्वरक्षक सारथी मारे जा सकते हैं। कर्ण! अगर तुमसे हो सके तो यह काम कर डालो; इस तरह अभिमन्यु को पहले शस्त्र-हीन करके फिर प्रहार करो। तुम अच्छी तरह समझ लो कि जब तक इसके हाथ में धनुष है तब तक सब देवता और दैत्य ३० मिलकर भी इसे परास्त नहीं कर सकते। अतएव अगर तुम अभिमन्यु को परास्त करना चाहते हो तो उसे रथ-हीन करके उसका धनुष काट डालो।

महाराज! द्रोणाचार्य की सलाह मानकर कर्ण ने फुर्ती के साथ बाणवर्षा करते हुए अभिमन्यु के धनुष को शीघ्रता के साथ काट डाला। भोज ने अभिमन्यु के रथ के घोड़ों

अब वे क्रुद्ध सिंह की तरह द्रोणाचार्य्य की ओर झपटे—पृ० २२७७

को मार डाला। कृपाचार्य ने उनके पार्श्वरक्षक सारथियों को मार गिराया। इस प्रकार अभिमन्यु का धनुप कट जाने पर शेप वीरगण उन पर वाण वरसाने लगे। राजन्! उस समय वे निर्दय छहों महारथी फुर्ती से एक साथ अकेले वालक अभिमन्यु पर प्रहार करने लगे। धनुप और रथ न रहने पर भी वीर अभिमन्यु ने वीर क्षत्रिय का धर्म नहीं छोड़ा। वीर महारथियों ने तो धर्म को छोड़ दिया; परन्तु वालक अभिमन्यु ने नहीं छोड़ा। असहाय अभिमन्यु ढाल-तलवार लेकर, आकाशमार्ग में उछलकर, गरुड़ की तरह फुर्ती के साथ वलपूर्वक कौशिक (सर्वतोभद्र) आदि पैंतरों से घूमते हुए शत्रुसेना का संहार करने लगे। छिद्रदर्शी महाधनुर्द्धर लोग वीर अभिमन्यु को देखकर और यह समझकर कि यह खड्गधारी वालक मुझ पर ही प्रहार करने आ रहा है, उनको ताक-ताककर तीक्ष्ण वाण मारने लगे। इसी समय शत्रुदमन द्रोणाचार्य ने फुर्ती के साथ नाराच वाण से अभिमन्यु के खड्ग की मणिमय मूठ काट डाली। [अभिमन्यु का शरीर वाणों से छिद चुका था। द्रोणाचार्य ने तलवार की मूठ काट डाली।] इसी समय कर्ण ने तीक्ष्ण वाणों से ढाल भी काट डाली। इस तरह धनुप-वाण या ढाल-तलवार कुछ न रहने पर वीर अभिमन्यु ने पृथ्वी पर आकर हाथ में चक्र ले लिया। अव वे क्रुद्ध सिंह की तरह द्रोणाचार्य की ओर झपटे। तव चक्र की उज्ज्वल रेणु से शोभित अङ्गवाले चक्रपाणि अभिमन्यु की वड़ी शोभा हुई। वे उस समय चक्र हाथ में लिये हुए अपने मामा वासुदेव के समान जान पड़ने लगे। क्षण भर तक वीर अभिमन्यु का रूप वहुत ही भयावना हो उठा। महातेजस्वी सिंहनाद करते हुए वीरों के वीच में खड़े हुए अभिमन्यु के शरीर से रक्त वह रहा था, जिससे उनके कपड़े लाल हो रहे थे। भौंहें टेढ़ी करके शत्रुसेना की ओर देखते हुए अभिमन्यु की वड़ी शोभा हुई।

उनचासवाँ अध्याय

अभिमन्यु के मारे जाने का वर्णन

सञ्जय ने कहा—महाराज ! महावीर अभिमन्यु उस समय चक्र हाथ में लेकर संग्राम में दूसरे विष्णु के समान शोभा को प्राप्त हुए। उनके बिखरे हुए बाल हवा में उड़ रहे थे। उनके हाथ में ऊपर उठा हुआ चक्र बहुत ही शोभायमान हो रहा था। उस समय कोई भी अभिमन्यु की आँख उठाकर नहीं देख सकता था। घबराये हुए राजाओं ने अभिमन्यु के उस चक्र को खण्ड-खण्ड कर डाला। तब अभिमन्यु गदा लेकर अश्वत्थामा की ओर दौड़े। उन्होंने, प्रज्वलित अग्नि के समान, उस गदा को देखकर रथ पर से कूदकर अपनी जान बचाई। तब महावीर अभिमन्यु ने गदा के प्रहार से अश्वत्थामा के घोड़ों, पार्श्वरक्षक सारथियों और रथ को चूर-चूर कर डाला। बाणों से सब शरीर छिदा हुआ होने के कारण उस समय अभिमन्यु शल्लकी (साही नाम के पशु) के समान देख पड़ने लगे। इसके उपरान्त अभिमन्यु ने सुबल के पुत्र कालिकेय को मार करके उनके अनुचर गान्धार देश के सतहत्तर योद्धाओं को उसी गदा से मार गिराया। फिर बसातीय दस रथी, केकय देश के सात रथी और दस हाथी मारकर अभिमन्यु ने गदा की चोट से दुःशासन के पुत्र के रथ और घोड़ों को नष्ट कर दिया।

महावीर दुःशासन का पुत्र भीषण गदा तानकर "ठहर ठहर" कहता हुआ अभिमन्यु की ओर दौड़ा। पहले समय में महादेव और अन्धकासुर ने जैसे भयानक गदायुद्ध किया था वैसे ही अभिमन्यु और दुःशासन का पुत्र दोनों, एक दूसरे के प्राण लेने के लिए, गदाप्रहार करने लगे। वे दोनों वीर परस्पर गदा का वार करके इन्द्रध्वज की तरह अचेत हो पृथ्वी पर गिर पड़े। इसी बीच में कौरवों की कीर्ति को बढ़ानेवाले दुःशासन के पुत्र ने उठते हुए अभिमन्यु के मस्तक में वेग से गदा मारी। इतनी देर तक अकेले युद्ध करते-करते अभिमन्यु थक गये थे, उस पर दुःशासन के पुत्र ने ज़ोर से मस्तक में गदा मारी। उस प्रहार से अभिमन्यु के प्राण निकल गये और उनका चेतनाहीन शरीर पृथ्वी पर गिर पड़ा।

महाराज ! कमल-वन को जैसे गजराज नष्ट-भ्रष्ट कर डाले वैसे ही सारी शत्रु-सेना को मथकर अन्त को अकेले वीर अभिमन्यु कई वीरों के द्वारा अधर्मपूर्वक मारे गये। व्याधों के हाथ से मारे गये जङ्गली गजराज की तरह मृत अभिमन्यु बहुत ही शोभायमान हुए। उस समय आपके पक्ष के सब महारथियों ने समर-भूमि में मरे पड़े हुए महावीर अभिमन्यु को घेर लिया। ग्रीष्म ऋतु में जङ्गल को जलाकर बुझे हुए दावानल के समान, कौरव-सेना को तपाकर अस्त हुए सूर्य के समान, राहु-ग्रस्त चन्द्रमा के समान, सूखे हुए समुद्र के समान और वृक्षों की डालें तोड़कर रुकी हुई आँधी के समान पड़े हुए पूर्णचन्द्र के सदृश मुखवाले, सुन्दर अलकों से शोभित अभिमन्यु को इस तरह निर्जीव देखकर आपके पक्ष के सब महारथी बहुत प्रसन्न होकर बारम्बार सिंहनाद करने लगे। महाराज! कौरवों को बड़ा ही हर्ष हुआ; किन्तु अन्य वीरों की आँखों से आँसुओं की धारा बह चली। उस समय आकाश से गिरे हुए चन्द्रमा के समान, पृथ्वी पर पड़े हुए अभिमन्यु को देखकर आकाशचारी सिद्ध आदि प्राणी चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे—महावीर द्रोणाचार्य और कर्ण आदि कौरवपक्ष के छः महारथियों ने मिलकर इस अकेले वीर बालक को मारा है। हमारी राय में यह घोर अधर्म हुआ है। महाराज! मरे हुए अभिमन्यु रणशय्या पर पड़े हुए थे और उनके चारों ओर सुवर्णपुङ्खयुक्त बाण, वीरों के कुण्डल-शोभित कटे हुए मस्तक, विचित्र पगड़ियाँ, पताका, चामर, विचित्र कम्बलासन, उत्तम आयुध, रथ, घोड़े, हाथी, हाथियों और घोड़ों के अलङ्कार, केंचुल छोड़े विषैले नागों के समान म्यान से निकली हुई तलवारें, धनुष, कटी हुई शक्तियाँ, ऋष्टि, कम्पन, प्रास और पट्टिश आदि शस्त्र-अस्त्र बिखरे हुए पड़े थे। इनसे वह पृथ्वीमण्डल पूर्णचन्द्र और ग्रह-नक्षत्र-तारागण से युक्त आकाश-मण्डल के समान शोभायमान हो रहा था। अभिमन्यु के बाणों से सवार समेत मरकर गिरे हुए, रक्त में सने हुए, केवल अन्तिम साँस ले रहे घोड़ों की लाशों से वह रणभूमि अत्यन्त अगम्य थी। महावत, अंकुश, घण्टा, चर्म, आयुध और झण्डों से शोभित तथा अभिमन्यु के बाणों से निहत पर्वताकार हाथी मरे पड़े थे। सारथी और रथी की लाशों से पूर्ण, विक्षुब्ध कुण्ड के समान, बिना घोड़ों के रथ जहाँ-तहाँ टूटे पड़े थे। हाथों में शस्त्र पकड़े प्राणहीन पैदलों के शरीर सब ओर ढेरों देख पड़ते थे। इन सबसे वह रणभूमि उस समय डरपोकों के लिए भयावनी हो रही थी। १०, ११

राजन्! चन्द्र-सूर्य के सदृश तेजस्वी बालक अभिमन्यु जब मरकर युद्धक्षेत्र में गिर पड़े तब कौरवपक्ष के वीर अत्यन्त आह्लादित और पाण्डवपक्ष के लोग अत्यन्त शोकविह्वल हो उठे। पाण्डवों की सेना युधिष्ठिर के सामने ही प्राण लेकर भागने लगी। अभिमन्यु की मृत्यु होने के कारण योद्धाओं को भागते देखकर महाराज युधिष्ठिर ने कहा—हे वीर क्षत्रियो! समरनिपुण महाबाहु अभिमन्यु युद्ध से पीछे नहीं हटे, बल्कि शत्रुओं के हाथ से मरकर स्वर्ग को चले गये। फिर तुम क्यों भागे जा रहे हो? भागो नहीं, डरो मत, हम लोग शीघ्र ही शत्रुओं को परास्त

करेंगे। श्रीकृष्ण और अर्जुन के समान प्रभावशाली प्रतापी महावीर अभिमन्यु संग्राम में विषैले नाग के समान शत्रुपक्ष के अनेक राजकुमारों को मारकर स्वर्ग को गये हैं। दस हज़ार सेना सहित महारथी कोशलेश्वर बृहद्बल को मारकर वीर अभिमन्यु इन्द्रलोक को गये हैं। हज़ारों रथों, रथियों, हाथियों, घोड़ों और पैदल सेना का संहार करके वे पुण्यकर्मा कुमार अपने पुण्य से जीते हुए उन सनातन लोकों में पहुँचे हैं, जिन्हें पुण्यात्मा लोग पाते हैं। इसलिए वीर अभिमन्यु कदापि शोचनीय नहीं हैं। महातेजस्वी अभिमन्यु ऐसा विकट युद्ध और मार-काट करके भी तृप्त नहीं हुए थे; इस कारण उनकी मृत्यु शोचनीय नहीं है। [हे नरनाथ! धर्मराज युधिष्ठिर ने ऐसे ३६ वचन कहकर अपने पक्ष के दुःखित वीरों का दुःख दूर किया और उन्हें दिलासा दिया।]

पचासवाँ अध्याय

युद्धभूमि का पुनर्वर्णन

सञ्जय ने कहा—राजन्! इस तरह शत्रुपक्ष के श्रेष्ठ वीर अभिमन्यु को मारकर, शत्रुओं के बाणों से पीडित और रक्त से नहाये हुए, ग्लानिग्रस्त हम लोग सायङ्काल को विश्राम करने के लिए अपने डेरों को लौटे। लाल कमल के समान सूर्य का बिम्ब अस्ताचल के शिखर पर पहुँच गया। दिन और रात की सन्धि का समय आ पहुँचा। चारों ओर गीदड़ों का अमङ्गल-सूचक शब्द सुनाई पड़ने लगा। क्रमशः सूर्यदेव ने चमकीले खड्ग, शक्ति, ऋष्टि, वरूथ, ढाल और अलङ्कारों की आभा को हरकर—अन्तरिक्ष और पृथ्वी को एकाकार सा करते हुए—अपने प्रिय शरीर अग्नि में प्रवेश किया। उस समय हम लोग और हमारे शत्रुपक्ष के लोग दोनों ही, संग्राम में विमोहित से होकर, रणभूमि को देखते हुए धीरे-धीरे अपने-अपने शिविर को चले। हम लोगों ने देखा कि समरभूमि ऐसे हाथियों की लाशों से परिपूर्ण और दुर्गम हो रही है, जो आकाश को छूनेवाले पर्वतशिखर के समान हैं और पताका, अङ्कुश, घण्टा, कवच और सवारों सहित मरे पड़े हैं। रथी, सारथी, विभूषण, घोड़े, पार्श्वसारथी, पताका, केतु आदि से शून्य और टूटे-फूटे बड़े-बड़े रथ इधर-उधर पड़े हुए थे। शत्रुपक्ष के वीरों के बाणों ने उन रथों को तोड़-फोड़ डाला था और वे उजड़े लुटे हुए नगर से प्रतीत होते थे। वीरों के बाणों से सवारों सहित ऐसे घोड़े मरे पड़े थे, जो विविध बहुमूल्य आभूषणों से अलङ्कृत थे, जिनकी जीभें, दाँत, आँखें और आँतें बाहर निकली हुई थीं और जिन्होंने समरभूमि को बहुत ही भयानक बना रक्खा था। बहुमूल्य ढाल, आसन, कपड़े, अस्त्र-शस्त्र आदि से विभूषित और अमूल्य शय्या पर लेटने के योग्य वीरगण हाथी, घोड़े, रथ आदि वाहनों और अनुचरों सहित अनाथ की तरह पृथ्वी पर पड़े हुए थे। भीषण आकार के गीदड़, कुत्ते, कौवे, बगले, गिद्ध, गरुड़, भेड़िये, चीते, रक्त पीनेवाले पक्षी, राक्षस, पिशाच आदि आनन्द के साथ युद्ध में निहत प्राणियों

की खाल फाड़कर मांस, मज्जा और चर्बी खा रहे थे। अनेकों मांसभोजी राक्षस आदि एक दूसरे से लाशें छीनते, हँसते, गाते और तालियाँ बजाते थे। १०

राजन्! वीरों के शस्त्रप्रहार से उत्पन्न, दुस्तर वैतरणी के समान भयानक, रक्त की नदी रणभूमि में बह रही थी। रथ उसमें नाव-डोंगी आदि के समान जान पड़ते थे, हाथी पर्वत से प्रतीत होते थे और मनुष्यों के कटे हुए सिर कमल से देख पड़ते थे। मांस की कीचड़ हो रही थी। विविध अस्त्र-शस्त्र मालाओं के समान उसमें बह रहे थे। अधमरे और मरे लोगों के शरीरों से परिपूर्ण वह भयानक नदी रणक्षेत्र के बीच में बह रही थी। भीषण आकारवाले गीदड़, कुत्ते और अन्य अनेक मांसाहारी पशु-पक्षी बड़े आनन्द के साथ उस नदी में मांस खाते और रक्त पीते हुए भयङ्कर स्वर से चिल्ला रहे थे। सैनिकों ने सन्ध्या के समय इन्द्रसदृश, भूषणों से विहीन, मृत महावीर अभिमन्यु को देखा कि हव्य-विहीन यज्ञ के अग्नि के समान बुझे हुए पड़े हैं। उस यमपुरी को बढ़ानेवाली, नाचते हुए कबन्धों से परिपूर्ण, भयावनी रणभूमि को क्रमशः छोड़ करके सब योद्धा अपने-अपने शिविर में गये। १५

इक्यावनवाँ अध्याय

अभिमन्यु के लिए युधिष्ठिर का शोक और विलाप

सञ्जय कहते हैं—महाराज! इस तरह महारथी अभिमन्यु के मारे जाने पर पाण्डव-पक्ष के सब वीर योद्धा रथ, कवच और धनुष आदि रखकर महाराज युधिष्ठिर के चारों ओर बैठकर उसी भयानक युद्ध का ध्यान करते हुए अभिमन्यु की याद करने लगे। धर्मपुत्र युधिष्ठिर अपने वीर भतीजे की मृत्यु से अत्यन्त कातर और दुःखित होकर विलाप करके कहने लगे—हाय! महावीर अभिमन्यु मेरा प्रिय और हित करने की इच्छा से देवताओं के लिए भी दुर्भेद्य द्रोणाचार्य की सेना के व्यूह में ऐसे घुस गया था जैसे गायों के झुण्ड में सिंह प्रवेश करे। जिसके पराक्रम से महाधनुर्द्धर रणदुर्मद अस्त्र-शस्त्र-विशारद शत्रुपक्ष के महारथी योद्धा समर से भाग खड़े हुए, जिसने हमारे प्रधान शत्रु दुःशासन को समर के बीच थोड़ी ही देर में मूर्च्छित और विमुख कर दिया था और जो अनायास ही द्रोणाचार्य के सेना-रूप महासागर के पार पहुँच गया था, वह रणपण्डित वीर अभिमन्यु दुःशासन के पुत्र से युद्ध करके उसके हाथों मारा गया! अब आज मैं किस तरह पुत्रवत्सल अर्जुन और, पुत्र को न देखकर अत्यन्त कातर, सुभद्रा को अपना मुँह दिखाऊँगा? श्रीकृष्ण और अर्जुन यहाँ आकर मुझसे अभिमन्यु के बारे में पूछेंगे तो मैं उनको क्या उत्तर दूँगा? मैंने ही जयलाभ और अपने प्रिय की इच्छा से यह श्रीकृष्ण, अर्जुन और सुभद्रा के लिए दुःखदायक अप्रिय कार्य किया है! लोभ के वश हुआ पुरुष कभी दोष को नहीं जान सकता; वह लोभ और मोह के वश होकर दोषपूर्ण कार्य करने लगता १०

है। मैं राज्य-लोभ के वश होकर ही ऐसे अनिष्ट का ख़याल नहीं कर सका। हा! जो सुकुमार बालक अभी सुन्दर भोग, भोजन, शयन, सवारी, कपड़े, गहने आदि पाने के योग्य था उसी को मैंने इतने बड़े युद्ध का भार सौंपकर सबके आगे भेज दिया! सुशिक्षित सीधा घोड़ा जैसे विषम सङ्कट में पड़कर उससे नहीं उबरता वैसे ही संग्राम के विषय में अनभिज्ञ बालक अभिमन्यु भी रण में जाकर मृत्यु के मुख से नहीं बच सका। आज हम लोग यदि स्वयं प्राण दे करके अभिमन्यु के साथ पृथ्वी पर नहीं लेटेंगे तो अवश्य ही क्रुद्ध अर्जुन की कोपदृष्टि की आग में भस्म हो जायँगे। जो अर्जुन अत्यन्त सन्तोषी, लोभहीन, बुद्धिमान्, लज्जाशील, क्षमाशाली, सुरूप, मानी, औरों का सम्मान करनेवाले, सत्यपरायण, धीर, महाबली और पराक्रमी हैं; जिनके श्रेष्ठ और अद्भुत कार्यों की प्रशंसा पण्डितगण करते हैं; जिन महावीर ने हिरण्यपुर-निवासी इन्द्र के वैरी निवातकवच और कालकेय असुरों का संहार किया; जिन्होंने क्षण भर में अनुचरों सहित पुलोम-नन्दन को मारा और जो शरणागत शत्रु को भी अभयदान करते हैं उनके पुत्र बली अभिमन्यु की रक्षा हम लोग नहीं कर सके! हमको धिक्कार है! महाबली धृतराष्ट्रपुत्रों के लिए अवश्य ही महाभय का समय आ गया है। बेटे के मारे जाने के कारण क्रोधान्ध होकर महावीर अर्जुन अवश्य ही सब कौरवों का नाश कर डालेंगे। क्षुद्र लोग जिसके सहायक हैं वह स्वयं क्षुद्र और अपने कुल का संहार करानेवाला दुरात्मा दुर्योधन अवश्य शोक करता हुआ बुरी तरह से मारा जायगा। हाय! इस असाधारण पौरुषसम्पन्न अभिमन्यु को इस तरह रणभूमि में पड़े देखकर मुझे जय, २१ राज्य, देवशरीर या इन्द्रपद की प्राप्ति भी प्रीतिदायक नहीं।

बावनवाँ अध्याय

वेदव्यास का आगमन

सञ्जय कहते हैं—महाराज! युधिष्ठिर इस तरह विलाप कर ही रहे थे कि वहाँ पर महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास आ गये। राजा युधिष्ठिर ने महात्मा व्यास को देखते ही उठकर

विधिपूर्वक उनका सत्कार और पूजन किया। व्यासजी जब आसन पर बैठ गये तब, भतीजे की मृत्यु से शोकविह्वल, युधिष्ठिर बैठकर दीनभाव से वेदव्यास से कहने लगे—भगवन्! बालक अभिमन्यु को युद्ध में कई महाधनुर्द्धर महारथियों ने मिलकर अधर्मयुद्ध करके मार डाला। वह बालक और बालबुद्धि होने पर भी वीर था और शत्रुपक्ष के वीरों को मारनेवाला था। युद्ध करते समय उस असहाय बालक को शत्रुओं ने अनीति से मारा। मैंने अभिमन्यु से कहा था कि तुम इस व्यूह के भीतर हमारे घुसने की राह बना दो। मेरी आज्ञा के अनुसार व्यूह को तोड़कर अभिमन्यु भीतर घुस गया। हम लोग उसके पीछे शत्रुसेना के भीतर घुसने लगे, तो दुष्ट जयद्रथ ने राह रोक दी; हमें भीतर नहीं जाने दिया। क्षत्रियों का यह नियम है कि वे समान युद्ध [एक के साथ एक या अनेक के साथ अनेक] करते हैं; किन्तु शत्रुओं ने असमान युद्ध करके अभिमन्यु को मार डाला। यही मुझे बड़ा सन्ताप है। मेरी आँखों से शोक के आँसू बह रहे हैं। मैं बारम्बार अभिमन्यु के मरण को सोच रहा हूँ। मुझे किसी तरह शान्ति नहीं प्राप्त होती।

सञ्जय कहते हैं कि भगवान् महर्षि वेदव्यास ने शोकाकुल राजा युधिष्ठिर को इस तरह विलाप और सन्ताप करते देखकर कहा—हे सब शास्त्रों में निपुण धर्मपुत्र! तुम सरीखे महात्मा और ज्ञानी पुरुष विपत्ति में कभी घबराते नहीं हैं। यह महावीर कुमार रण में बहुत से शत्रुओं को मारकर, जिसको कोई बालक नहीं कर सकता उस अद्भुत कार्य को करके, स्वर्गलोक को गया है। हे युधिष्ठिर! विधाता का यह मृत्युरूप विधान अलंघ्य है। हे भारत! देवता, दानव, गन्धर्व आदि सबको एक दिन अवश्य मृत्यु के वश होना पड़ता है। १०

युधिष्ठिर ने कहा—हे महात्माजी! ये महाबली नरपतिगण मरकर सेना के बीच पृथ्वी-तल पर पड़े हुए हैं। इनमें कोई दस हज़ार हाथियों का बल रखनेवाले थे और कोई हवा के समान वेग और बल से सम्पन्न थे। ये सब परस्पर लड़कर मरे हैं। इन्हें युद्ध में मारनेवाला कोई भी योद्धा जगत् में नहीं देख पड़ता। ये सब पराक्रमी थे और तपोबल से भी सम्पन्न थे। इनके हृदय में सदैव शत्रुओं को जीतने का ख़याल बना रहता था। ये युद्ध से भागना या हारना जानते ही न थे; किन्तु वे ही ये इस समय, आयु समाप्त हो जाने से, मरे पड़े हैं। इनके मरण से आज मृत्यु का नाम सार्थक हुआ। ये शूर, क्रोधी और मानी राजपुत्र शत्रु के वशीभूत होकर काल के शिकार बन गये हैं और निश्चेष्ट निरभिमान होकर पृथ्वी पर पड़े हैं। हे ऋषि-वर! इन मारे गये राजाओं को देखकर मेरे हृदय में यह संशय उत्पन्न हुआ है कि यह मृत्यु कौन है; क्या है? इसकी उत्पत्ति कहाँ से हुई है और यह किसलिए प्रजा का संहार करती है? आप कृपा करके यह सब वृत्तान्त वर्णन करके मेरे संशय को दूर कीजिए।

सञ्जय कहते हैं कि धर्मराज ने महर्षि से जब यह प्रश्न किया तब उन्हें आश्वासन देने के लिए महर्षि कहने लगे—हे नरश्रेष्ठ! पूर्व समय में महर्षि नारद ने राजा अकम्पन से जो

२० वर्णन किया था वह प्राचीन इतिहास मैं तुमको सुनाता हूँ। राजा अकम्पन को भी इसी तरह अत्यन्त असह्य पुत्रशोक हुआ था। अब मैं मृत्यु की उत्पत्ति का वर्णन करता हूँ। इस उपाख्यान को सुनने से स्नेहबन्धन-जनित दुःख-शोक से तुम्हारा छुटकारा हो जायगा। हे पुत्र! यह उपाख्यान बहुत ही पवित्र, शत्रुनाशक, महामङ्गलमय, आयु बढ़ानेवाला, शोक मिटानेवाला, पुष्टि-वर्द्धक, वेदपाठ के समान फल देनेवाला और श्रेष्ठ है। तुम इसे मन लगाकर सुनो। राजन्! आयुष्मान् पुत्र, राज्य और सम्पत्ति की इच्छा रखनेवाले ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों को नित्य प्रातःकाल यह उपाख्यान सुनना चाहिए।

पूर्व समय में, सत्ययुग में, अकम्पन नाम के एक प्रतापी नरेश थे। वे युद्धभूमि में शत्रुओं के वशीभूत हो गये। उनके पुत्र का नाम हरि था। वह नारायण के समान बल-शाली, श्रीमान्, अस्त्र-शस्त्र चलाने में निपुण, बुद्धिमान् और इन्द्र के तुल्य था। वह भी युद्ध-क्षेत्र में जाकर शत्रुओं के बीच घिर गया। वह हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों के ऊपर असंख्य बाणों की वर्षा करके, अत्यन्त दुष्कर कार्य करने के उपरान्त, शत्रुओं के हाथ से मारा गया। शत्रुओं के हाथों अपने प्रिय पुत्र की मृत्यु हुई देखकर क्रोध और शोक से व्याकुल राजा अकम्पन रणभूमि से अपनी राजधानी में आये। वहाँ पुत्र का क्रिया-कर्म करके राजा अकम्पन दिन-रात चिन्ता करते हुए शोक से अत्यन्त विह्वल रहने लगे। उन्हें किसी तरह शान्ति नहीं मिलती थी। इसी बीच में एक दिन देवर्षि नारद उनके पुत्रशोक का हाल जानकर, उन्हें

३१ धीरज देने के लिए, उनके पास आये। राजा ने देवर्षि नारद को आते देखकर यथोचित उपचारों से भक्ति के साथ उनकी पूजा की। फिर शत्रुओं के विजयी होने का और अपने पुत्र के मारे जाने का वृत्तान्त विस्तार के साथ कहकर अकम्पन ने कहा—भगवन्! शत्रुओं ने पराक्रम प्रकट करके मेरे महाबली पुत्र को मार डाला है। अब आप कृपा कर मुझसे कहिए कि यह मृत्यु कौन और क्या है? इसका पराक्रम और पौरुष कितना और कैसा है? मैं इसका हाल जानने के लिए अत्यन्त उत्सुक हूँ। हे धर्मराज! वरदानी देवर्षि नारद अकम्पन राजा का प्रश्न सुनकर पुत्रवियोग से उत्पन्न शोक को मिटानेवाले इस उपाख्यान का वर्णन करने लगे।

नारद ने कहा—हे नर-नाथ! मैंने इस विस्तृत उपाख्यान को जिस तरह सुना है, उसी तरह तुम्हारे आगे वर्णन करता हूँ, मन लगाकर सुनो। लोकपितामह ब्रह्माजी ने पहले प्रजा की सृष्टि की। उसके बाद इस जगत् को जैसे का तैसा बना हुआ देखकर, विनष्ट न होते देख, उन्हें बड़ी चिन्ता हुई। बहुत सोचने पर भी वे सृष्टिसंहार के उपाय के बारे में कुछ निश्चय नहीं कर सके। तब उनके मन में क्रोध उत्पन्न हुआ। उस कोप के प्रभाव से, अन्त-रिक्ष से, एक दारुण अग्नि उत्पन्न हुआ जो संसार के सब देशों को जलाने के लिए

४० चारों ओर फैलने लगा। इस तरह कमलासन ब्रह्मा ने क्रोध के आवेश से सब जगत्

को भयविह्वल बनाकर ज्वालामाला से व्याप्त चराचर जगत् और आकाशमण्डल को भस्म कर देना चाहा। उस अग्नि में चराचर प्राणी जलने लगे।

तब जटाजूटधारी निशाचरपति महादेवजी ब्रह्माजी के शरणागत हुए। महादेवजी को प्रजा के हित की इच्छा से आया हुआ देखकर, तेज के प्रभाव से प्रज्वलित होकर, ब्रह्माजी कहने लगे—हे वत्स! तुमने मेरी इच्छा से जन्म लिया है। तुम वरदान के योग्य हो। इसलिए बतलाओ, तुम्हारा मनोरथ क्या है? मैं तुम्हारा प्रिय करने को तैयार हूँ। ४५

तिरपनवाँ अध्याय

ब्रह्मा और रुद्र का संवाद और मृत्यु देवी की उत्पत्ति

महादेव ने ब्रह्मा से कहा—हे विभो! इस प्रजा की सृष्टि करने के लिए आपने ही पहले यत्न किया और तरह-तरह के जीवों की उत्पत्ति तथा पालन आपके ही द्वारा हुआ है। हे प्रभो! वही प्रजा इस समय आपके क्रोध की आग से भस्म हुई जा रही है। भगवन्! यह देखकर मेरे मन में करुणा हो आई है। इसलिए प्रसन्न होकर अपने इस क्रोध को शान्त कीजिए।

ब्रह्मा ने कहा—हे महादेव! मैं जगत् भर का संहार नहीं करना चाहता। मेरी इच्छा नहीं कि यह कार्य इस तरह हो; किन्तु पृथ्वी के हित की इच्छा से ही मुझे मन्यु (क्रोध) हो आया है। इस पृथ्वी ने भारी भार से पीड़ित होकर प्राणियों का विनाश करने के लिए मुझसे अनुरोध किया था। किन्तु मैं सम्पूर्ण जगत् के संहार का कुछ उपाय नहीं सोच सका। इसी कारण मेरे अन्तःकरण में क्रोध का उदय हो आया।

महादेव ने कहा—हे विश्वनाथ! विश्व-संहार के लिए उत्पन्न हुए क्रोध को आप प्रसन्न होकर शान्त कीजिए; सब चराचर जगत् का संहार न कीजिए। आपकी कृपा से यह भूत, भविष्य और वर्तमान त्रिविध जगत् बना रहे। आपने क्रोध के वश होकर जो यह आग उत्पन्न की है वह नदी, पत्थर, वृक्ष, पल्लव, घास-फूस आदि सब स्थावर और जङ्गम जगत् को

भस्म किये डालती है। आप मुझ पर प्रसन्न होकर यही वरदान दीजिए कि आपका क्रोध शान्त हो। भगवन्! आपने जो सृष्टि की थी वह भस्म हुई जा रही है, इसलिए आप अपने इस तेज को अपने में ही लीन कर लीजिए। प्रजा के हित की इच्छा करके इसका कोई और
१२ उपाय सोचिए। आप ऐसा कीजिए जिसमें ये प्राणी बने रहें, सृष्टि की जड़ नष्ट न हो और प्रजा का अत्यन्त अभाव न हो जाय। हे देवताओं के ईश्वर! आपने मुझे प्रजापालन के कार्य में नियुक्त किया है। [फिर आपको इस प्रजा पर दया नहीं आती।] आप मुझ पर प्रसन्न हैं, इसी से मैं आपसे यह वर माँगता हूँ कि आप इस सृष्टि को नष्ट न होने दें"।

नारद ऋषि कहते हैं—राजन्! इसके बाद सब लोकों के पितामह ब्रह्मा ने, प्रजा के हित के लिए कहे गये, शिव के वचन सुनकर उस क्रोधरूप तेज को फिर अपने में लीन कर लिया। इस तरह अग्नि का उपसंहार करके ब्रह्मा ने सृष्टि के लिए प्रवृत्ति-धर्म की और मोक्ष के लिए निवृत्ति-धर्म की कल्पना की। तब क्रोध से उत्पन्न अग्नि का उपसंहार करते समय ब्रह्मा के इन्द्रिय-छिद्रों से एक अद्भुत नारी उत्पन्न हुई। उसके अङ्गों का रङ्ग काला, लाल और पिङ्गल था। उसका मुख, जिह्वा और नेत्र लाल थे। उसके कानों में तपे हुए सोने के कुण्डल थे और

अङ्गों में सुवर्ण के गहने थे। उस स्त्री ने प्रकट होकर दक्षिण दिशा में आश्रय लिया। वह ब्रह्मा और शङ्कर को देखकर जब मुसकाती हुई दक्षिण दिशा में खड़ी हुई तब विधाता ने "मृत्यु" नाम से उसको सम्बोधन करके
२० कहा—तुम इस प्रजा का संहार करो। मेरी संहार-बुद्धि के द्वारा, मेरे क्रोध से, तुम्हारा जन्म हुआ है इसलिए तुम मेरी आज्ञा से जड़-चेतन सब प्रजा का नाश करो। ऐसा करने से तुम्हारा कल्याण होगा।

नारदजी कहते हैं—कमलयोनि ब्रह्मा के ये वचन सुनकर, दम भर सोचकर, वह कमलनयनी मृत्यु देवी खेद के मारे रोने लगी। उसके नेत्रों से आँसुओं की बूँदें गिरीं। पितामह ब्रह्मा ने सब प्राणियों के हित के लिए उन आँसुओं को अपने हाथों में ही रोक
२३ लिया। अनुनय करके वे मृत्यु को सन्तुष्ट करने लगे।

ब्रह्मा के इन्द्रिय-छिद्रों से एक अद्भुत नारी उत्पन्न हुई—पृ० २२८६

चौवनवाँ अध्याय

अकम्पनोपाख्यान की समाप्ति

नारदजी कहते हैं कि राजन् ! उस नारी ने दुःख छोड़कर, हाथ जोड़कर, लता की तरह नम्र होकर ब्रह्मा से कहा—महात्माजी ! आपने मुझ पापीयसी नारी की सृष्टि क्यों की ? मैं जान-बूझकर मूढ़ की तरह ऐसा अहित और क्रूर कर्म कैसे करूँगी ? मैं अधर्म से डरती हूँ, इसलिए आप कृपा करके मुझे यह आज्ञा न दीजिए। जिनके परम प्रिय पुत्र, मित्र, भाई, पिता और पति आदि को मैं नष्ट करूँगी वे अवश्य ही मेरा अनिष्ट चाहेंगे। भगवन् ! बन्धु-वियोग से दुःखित प्राणियों की आँखों से जो आँसू गिरेंगे उन्हीं से डरकर मैं शरण में आई हूँ। मैं हाथ जोड़कर आपसे निवेदन करती हूँ कि आप मुझ पर प्रसन्न हों; मैं कदापि यमराज के भवन में नहीं जा सकूँगी। हे पितामह, आप कृपा करके मेरा यह मनोरथ पूरा कीजिए। मैं धेनुकाश्रम में जाकर अत्यन्त कठोर तप के द्वारा आपकी आराधना करना चाहती हूँ। आप कृपा करके मुझे इसकी आज्ञा दीजिए। मैं आपसे यही वर चाहती हूँ कि आप मुझे यह काम न सौंपें। विलाप करते हुए प्राणियों के प्रिय प्राणों को मैं नहीं हर सकूँगी। इस अधर्म से आप मेरी रक्षा कीजिए।

ब्रह्मा ने कहा—हे मृत्यु ! तुम्हारी उत्पत्ति ही प्रजा के नाश के लिए हुई है। इससे तुम, मेरी आज्ञा के अनुसार, जाकर सब प्रजा का संहार करो; इस बारे में अधिक सोच-विचार मत करो। सब लोगों का नाश अवश्य ही होगा; यह टल नहीं सकता। तुम मेरी आज्ञा का पालन करो। इसके लिए कोई तुम्हारी निन्दा नहीं करेगा। १०

नारदजी कहते हैं—ब्रह्मा के ये वचन सुनकर, अत्यन्त भयविह्वल हो, हाथ जोड़कर मृत्युदेवी ब्रह्मा की ओर ताकती हुई चुपचाप खड़ी रही। संसार के भले के लिए लोकसंहार करना वह किसी तरह स्वीकार नहीं कर सकी। पितामह ब्रह्मा क्षणभर चुप रहे, फिर शीघ्र ही हँसते हुए लोकरक्षा के लिए सुप्रसन्न हुए। इस तरह लोकपितामह ब्रह्मा ने जब क्रोध त्याग दिया तब सब प्राणी अपमृत्यु से बचकर पहले की ही तरह प्रसन्न हो गये। वह कन्या मृत्युदेवी प्रजासंहार करना अङ्गीकार न करके, ब्रह्मा से विदा होकर, वहाँ से चली और शीघ्र ही धेनुकाश्रम में पहुँचकर कठोर तपस्या करने लगी। सब इन्द्रियों को भोग्य विषयों से हटाकर वह घोर तप करने लगी। प्रजा के हित की इच्छा से वह इक्कीस पद्म वर्ष तक एक पैर से खड़ी रही। फिर इक्कीस पद्म वर्ष तक दूसरे पैर से खड़ी रही। फिर अयुत पद्म वर्ष तक मृगों के साथ विचरती रही। इसके बाद स्वच्छ जलवाली पवित्र नन्दा नदी में जाकर नियम-पूर्वक एक हज़ार आठ वर्ष तक जल के भीतर रहकर उसने समय विताया। इस प्रकार

२१ नन्दा तीर्थ में निष्पाप होकर वह पहले पवित्र कौशिकी तीर्थ में पहुँची। वहाँ केवल वायुभक्षण और जल पी करके फिर नियम ग्रहण-पूर्वक उसने घोर तप किया। फिर पञ्चगङ्गा तीर्थ और वेतस तीर्थ में जाकर, विशेष तप करके, शरीर सुखाया। उसके बाद भागीरथी और प्रधान तीर्थ महामेरु में जाकर, प्राणायामपरायण होकर, शिला की तरह निश्चेष्ट भाव से वह तप करती रही। इसके उपरान्त हिमाचल के शिखर पर पहुँचकर, उँगली पर सारे शरीर का भार देकर, निखर्व वर्षों तक वह तप करती रही। फिर वह कन्या पुष्कर, गोकर्णतीर्थ, नैमिषतीर्थ, मलयतीर्थ आदि में यथेष्ट नियम ग्रहण करके अपने शरीर को सुखाती रही। इस प्रकार वह अनन्य भक्ति के साथ एकाग्रचित्त से ब्रह्मा की आराधना करती रही।

तब भगवान् ब्रह्मा वहाँ आये और शान्त तथा प्रसन्न मन से पूछने लगे—हे मृत्यु! तुम किसलिए ऐसा कठोर तप कर रही हो? मृत्यु ने कहा—भगवन्! सब प्रजा स्थिर और एकाग्रचित्त से सुस्थ रहकर अपना समय बिता रही है। वह वाक्य द्वारा भी परस्पर किसी का अपकार नहीं करती। मैं किसी तरह उसका विनाश नहीं कर सकूँगी। मैं आपसे यही
३० वर माँगती हूँ। मैं अधर्म से डरकर ही यह घोर तप कर रही हूँ। अतएव आप मुझे अभय प्रदान कीजिए। मेरा कोई अपराध नहीं है। मैं इसी डर से अत्यन्त व्याकुल हो रही हूँ। प्रार्थना करती हूँ कि आप कृपा करके मुझे आश्रय दें। राजन्! तब त्रिकालज्ञ ब्रह्मा ने कहा—हे कन्या! इस चराचर प्रजा का संहार करने से तुमको रत्ती भर भी अधर्म या पाप नहीं होगा। मेरा वचन कभी मिथ्या नहीं होने का। अतएव तुम निडर होकर चारों प्रकार की प्रजा का संहार करो। तुम्हें सनातन धर्म पवित्र करेगा। लोकपाल यमराज, व्याधियाँ, देवगण और मैं, ये सब तुम्हारी सहायता करेंगे। मैं तुमको यह भी वर देता हूँ कि तुम यह कर्म करने से निष्पाप और रजोगुण-हीन होकर परम प्रसिद्धि प्राप्त करोगी।

तब उस कन्या ने प्रणामपूर्वक ब्रह्मा को प्रसन्न किया और हाथ जोड़कर कहा—ब्रह्मन्! अगर मेरे बिना यह कार्य नहीं हो सकता हो तो, लाचार होकर, मैं आपकी इस आज्ञा को शिरोधार्य करती हूँ। अगर धर्म से यह कर्तव्य है तो फिर मुझे भय नहीं है; किन्तु आप मेरा एक निवेदन सुनिए। लोभ, क्रोध, असूया, ईर्ष्या, द्रोह, मोह, निर्लज्जता और परस्पर कही गई कठोर वाणी ये भिन्न-भिन्न इन्द्रियवृत्तियाँ लोगों के शरीर को क्षीण करती रहा करें।

ब्रह्मा ने कहा—हे मृत्यु! तुम जो कहती हो वही होगा। अब तुम प्रजा के संहार में लग जाओ। इससे तुम न तो अधर्म में लिप्त होगी और न मेरे ही द्वारा तुम्हारा अनिष्ट होगा। तुम्हारे आँसुओं की जो बूँदें मेरे हाथों में गिरी हैं वे जीवों के शरीरों में व्याधि रूप से प्रकट होकर उनके प्राणों को नष्ट करने में तुम्हारी सहायता करेंगी। इसमें तुम्हें रत्ती भर भी अधर्म
४० नहीं होगा। अब तुम डरो मत। तुम प्राणियों का धर्म हो, धर्म की स्वामिनी हो। तुम धर्म-

परायण और धर्म का कारण होकर धैर्यधारणपूर्वक सब प्राणियों के जीवन-संहार में लग जाओ। काम और क्रोध से वची रहकर सब प्राणियों के जीवन को हरो। इससे तुम्हें अक्षय धर्म होगा। [जो लोग धर्मात्मा हैं वे मरकर भी अमर रहेंगे और] जो दुराचारी हैं उन्हें उनका अधर्म ही नष्ट करेगा। तुम मेरी आज्ञा का पालन करके अपने आत्मा को पवित्र करो। तुम अपने अन्तःकरण में आये हुए काम और क्रोध को त्याग करके, समदर्शी होकर, जीवों का संहार करो। पुण्य बुद्धि से इस कार्य को करोगी तो पवित्र रहोगी और असत्यमार्ग का ग्रहण करोगी तो अपने को पाप में मग्न करोगी। यह समझकर, मेरी आज्ञा के अनुसार, निर्भय होकर अपने कर्तव्य का पालन करो।

नारदजी कहते हैं—हे नर-नाथ! इसके वाद उस कन्या ने अपना नाम 'मृत्यु' होने से उद्विग्न होकर और 'कहा न मानने से ब्रह्माजी शाप न दे दें' इस डर से तत्काल ब्रह्मा की आज्ञा स्वीकार कर ली। राजन्! वही मृत्यु काम-क्रोध-हीन होकर, निर्लिप्त भाव से, अन्तकाल में सब प्राणियों के जीवन को नष्ट करती है। सभी प्राणियों की मृत्यु होती है। रोग कहलानेवाली व्याधियाँ प्राणियों के ही शरीर से उत्पन्न होती हैं और उनके द्वारा प्राणियों को अत्यन्त व्यथा होती है। अतएव अन्तकाल में प्राणियों का प्राण-वियोग होते देखकर तुम उन प्राणियों के लिए वृथा शोक न करो। प्राण-नाश होने पर सब इन्द्रियाँ प्राणियों के साथ परलोक में जाती हैं और अपने-अपने कार्य को सम्पन्न करके फिर लौट आती हैं। मनुष्यों की ही तरह देवगण भी परलोक में जाकर अपना-अपना कार्य करते हैं; अर्थात् इन्द्र आदि देवता भी मनुष्यों की तरह मनुष्यलोक में आते और अनेक कर्म करके स्वर्गलोक को लौट जाते हैं। घोररूप, भीम-नाद, सर्वचारी, उग्र, अनन्ततेज से सम्पन्न प्राणवायु सब प्राणियों के शरीर को ही प्राणों से अलग कर देता है। उसका गमन-आगमन नहीं है। राजन्! देवताओं की भी मर्त्यसंज्ञा है; उन्हें भी मृत्यु नहीं छोड़ती। इससे अब तुम अपने पुत्र की मृत्यु के लिए निष्फल शोक मत करो। वह सुरलोक में वीरों के मनोहर लोक पाकर, दुःखहीन होकर, पुण्य करनेवाले पुण्यात्माओं के साथ आनन्द कर रहा है। महाराज! प्रजा की यह मृत्यु दैव-निर्दिष्ट है। समय आने पर मृत्यु ही प्राणियों का संहार करती है। अन्य के द्वारा किसी की मृत्यु होने की कल्पना उन्हीं मूढ़ पुरुषों की है, जो मृत्यु के इस रहस्य को नहीं जानते। असल में अपनी मृत्यु का कारण प्राणी आप ही है; मृत्यु डण्डा हाथ में लेकर किसी को नहीं मारने आती। जो लोग समझदार हैं वे, यह जानकर कि ब्रह्माजी ने ही सब प्राणियों की मृत्यु उत्पन्न की है और कभी-न-कभी अवश्य ही मृत्यु होगी, मृत पुरुषों के लिए कभी शोक नहीं करते। राजन्! तुमको अब मालूम हो गया है कि प्राणियों की मृत्यु दैव-विहित है। अब तुम पुत्र की मृत्यु के लिए शोक करना छोड़ दो।

महाराज अकम्पन ने प्रिय सखा नारद के ऐसे यथार्थ वचन सुनकर कहा—भगवन्! इस इतिहास के सुनने से मेरा शोक जाता रहा। मैं प्रसन्न होकर अपने को कृतार्थ समझ रहा हूँ। मैं आपको प्रणाम करता हूँ। व्यासजी कहते हैं कि महाराज अकम्पन का पुत्रशोक दूर करके देवर्षि नारदजी वहाँ से नन्दन वन को चले गये। हे धर्मराज! इस इतिहास को खुद सुनने अथवा अन्य किसी को सुनाने से धन की प्राप्ति होती है। इसके पढ़ने, सुनने या सुनाने से पुण्य होता है, यश मिलता है, आयु बढ़ती है और अन्त समय स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है। राजन्! तुमने इस परमार्थ-पूर्ण तत्त्वज्ञानसहायक इतिहास को सुन लिया। अब क्षत्रियधर्म, वीरों की परमगति और मृत्यु का रहस्य सोचकर धैर्य धारण करो। चन्द्रमा के अंश से उत्पन्न निष्पाप महारथी अभिमन्यु युद्ध-भूमि में असंख्य वीर क्षत्रियों के आगे सम्मुख युद्ध करके, शत्रु-सेना का संहार करते-करते, शत्रुओं के खड्ग, गदा, शक्ति और धनुष-बाण के प्रहार से मरकर फिर चन्द्रलोक को चला गया। अतएव हे पाण्डव! अपने भाइयों के साथ धैर्य धारण करके शोक-हीन होकर, सावधान और सुसज्जित होकर, फिर शत्रुओं से युद्ध करो। ५८

पचपनवाँ अध्याय

षोड़शराजकीय उपाख्यान का प्रारम्भ। सुवर्णष्ठीवी की कथा और राजा मरुत्त के चरित्र का वर्णन

सञ्जय धृतराष्ट्र से कहते हैं कि महाराज! मृत्यु की उत्पत्ति और उसके अद्भुत कार्य का वर्णन सुनकर राजा युधिष्ठिर सन्तुष्ट हुए। व्यासदेव को प्रसन्न करके उनसे धर्मराज ने कहा—भगवन्! पूर्व समय में इन्द्र के समान पराक्रमी, पुण्यात्मा, माननीय, सत्यवादी और निष्पाप अनेक राजर्षि हो गये हैं। ऐसे कितने राजर्षियों को मृत्यु ने नष्ट किया है? आप फिर अपने यथार्थ और शोक दूर करनेवाले वचन सुनाकर मेरा सन्ताप दूर कीजिए। प्राचीन राजर्षियों के कर्मों का वर्णन करके मुझे ढाढ़स बँधाइए। पुण्यात्मा राजर्षियों ने ब्राह्मणों को कौन-कौन और कितनी दक्षिणाएँ दी हैं? यह सब मुझसे कहिए।

व्यासजी ने कहा—हे धर्मराज! राजा शैव्य के एक पुत्र था, जिसका नाम सृञ्जय था। महर्षि पर्वत और नारद सृञ्जय के सखा थे। एक दिन दोनों ऋषि सृञ्जय से मिलने के लिए उनके भवन में गये। सृञ्जय ने आदर के साथ दोनों ऋषियों की विधिपूर्वक पूजा की। दोनों ऋषि अत्यन्त सन्तुष्ट होकर बड़े सुख से कुछ दिन तक राजा के भवन में रहे। एक दिन राजा सृञ्जय उनके साथ सुख से बैठे हुए थे, इसी समय राजा की एक परम सुन्दरी अविवाहिता कन्या ने वहाँ आकर राजा को प्रणाम किया। राजा ने भी अभिनन्दनपूर्वक उसे आशीर्वाद दिया। महर्षि पर्वत ने उस सुन्दरी को देखकर हँसकर कहा—राजन्! यह श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त चञ्चल-

मैं तुमको शाप देता हूँ कि तुम इच्छानुसार स्वर्ग को न जा सकोगे—पृ० २२९१

नथनी कन्या किसकी है ? यह सूर्य की प्रभा है, या अग्नि की शिखा है, अथवा चन्द्रमा की कान्ति है ? इनमें से कोई नहीं है तो अवश्य ही श्री, ह्री, कीर्ति, धृति, पुष्टि या सिद्धि में से कोई न कोई होगी। महाराज सृञ्जय ने देवर्षि पर्वत के वचन सुनकर कहा—हे मित्र! यह कन्या मेरी ही है। यह श्रेष्ठ कन्या अब योग्य वर चाहती है। इसी समय देवर्षि नारद राजा से कह उठे—राजन्! यदि तुम कन्यादान करके कल्याण प्राप्त करना चाहते हो तो मुझे यह कन्या, भार्या बनाने के लिए, दे दो। राजा सृञ्जय ने प्रसन्न होकर तुरन्त उन्हें अपनी कन्या देना स्वीकार कर लिया। १०

तब देवर्षि पर्वत ने क्रोधान्ध होकर देवर्षि नारद से कहा—देखो, पहले मैं ही मन ही मन इस कन्या को भार्यारूप से प्राप्त कर चुका हूँ। पीछे से तुमने इसे माँग लिया। इससे मैं तुमको शाप देता हूँ कि तुम इच्छानुसार स्वर्ग को न जा सकोगे। यह सुनकर नारद ने भी कहा—यह मेरी पत्नी है, ऐसा मन से सोचना, मुँह से कहना और बुद्धि से निश्चय करना, सत्य (प्रतिज्ञा), जल छोड़कर कन्यादान होना (अग्नि का साक्षी होना) और पाणिग्रहण के मन्त्रों का पढ़ा जाना, ये ही विवाह के लक्षण प्रसिद्ध हैं। किन्तु इनका होना ही किसी कन्या के किसी पुरुष की स्त्री होने के लिए यथेष्ट नहीं है। असल में सप्तपदी-गमन (सात भाँवरें फिरना) ही विवाह की पूर्णता है। तुमने इस कन्या का वरण मन से ही किया था, असल में तुम्हारे साथ इसका ब्याह नहीं हुआ था। फिर भी तुमने अन्यायपूर्वक मुझे शाप दिया, इससे मैं भी तुमको शाप देता हूँ कि तुम मेरे बिना स्वर्गलोक न जा सकोगे। हे धर्मराज! इस तरह दोनों महर्षि परस्पर शाप देकर उन्हीं राजा के भवन में रहने लगे।

इधर पुत्र की इच्छा से नरपति सृञ्जय विशुद्ध-हृदय होकर बड़े यत्न से, खाने-पीने की सामग्री और कपड़े आदि देकर, ब्राह्मणों की आराधना करने लगे। एक दिन वेद-वेदाङ्ग के पारदर्शी स्वाध्यायनिरत ब्राह्मणों ने राजा सृञ्जय पर प्रसन्न होकर, उन्हें पुत्र देने की इच्छा से, देवर्षि नारद के पास आकर कहा—ब्रह्मन्! आप राजा सृञ्जय को उनकी इच्छा के अनुरूप एक पुत्र-रत्न दीजिए। ब्राह्मणों की प्रार्थना स्वीकार करके नारद ने महाराज सृञ्जय से कहा—राजन्! ब्राह्मण लोग सन्तुष्ट होकर तुम्हारे एक पुत्र उत्पन्न होने की इच्छा करते हैं। अब तुम बतलाओ, कैसा पुत्र चाहते हो ? तुम्हारा कल्याण होगा। २०

राजा सृञ्जय ने हाथ जोड़कर कहा—भगवन्! आप ऐसी कृपा करें कि मैं आपके वर से सब गुणों से अलंकृत, कीर्तिशाली, यशस्वी, महापराक्रमी एक पुत्र प्राप्त करूँ। विशेषता यह हो कि उस बालक का मल-मूत्र, थूक-कफ, पसीना आदि सब सुवर्णमय हो। नारद ने सृञ्जय राजा की प्रार्थना स्वीकार कर ली और उन्हें उनकी इच्छा के अनुसार वरदान दिया। राजा सृञ्जय के यहाँ थोड़े ही दिनों में, उनकी इच्छा के अनुरूप, पुत्र उत्पन्न हुआ। वह पुत्र पृथ्वी-

मण्डल में सुवर्णष्ठीवी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। महर्षि नारद के वरदान से वह पुत्र क्रमशः अपरिमित धन का अधिकारी हो गया। उस पुत्र के द्वारा राजा सृञ्जय ने अपने यहाँ की सब वस्तुओं को सुवर्णमय बना लिया। समयानुसार उन राजा के यहाँ घर, दीवार, क़िला, ब्राह्मणशाला, अतिथि-शाला, शय्या, आसन, स्थान, थाली आदि सब पात्र सुवर्णमय हो गये और दिन-दिन लक्ष्मी बढ़ने लगी। कुछ दिन के उपरान्त दस्युओं को राजकुमार के द्वारा सुवर्ण उत्पन्न होने का हाल मालूम हुआ। उन्होंने राजकुमार को देखकर, दल बाँधकर, राजा का अनिष्ट करना विचारा। उन दस्युओं में से किसी-किसी ने कहा—हम ख़ुद जाकर राजपुत्र को पकड़ लावेंगे। वह राजपुत्र ही सुवर्ण की खान है। अतएव उसे पकड़ लेने का यत्न करना ही हमारा कर्तव्य है।

इसके उपरान्त लोभ के वशवर्ती दस्युगण एक दिन राजभवन में घुस गये और राजकुमार सुवर्णष्ठीवी को पकड़कर वन की ओर भाग गये। राजकुमार को वे डाकू पकड़ तो ले गये लेकिन ३० आगे क्या करना चाहिए, इसका निश्चय बहुत सोचकर भी वे न कर सके। अन्त को किं-कर्तव्यविमूढ़ होकर उन्होंने राजकुमार के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर डाले; परन्तु उससे उन्हें रत्ती भर भी सोना नहीं मिला। राजकुमार की मृत्यु होते ही वरदान से मिलनेवाले धन की भी सम्भावना न रही। तब वे मूर्ख डाकू मोहवश, एक दूसरे को उस धन का अपहरण करने-वाला समझकर, एक दूसरे को मारने लगे। इस प्रकार उन डाकुओं ने उस अद्भुत राजकुमार को मारकर आप ही अपनी हत्या कर ली और अन्त को सब नरकगामी हुए।

इधर राजा सृञ्जय, वरदान से प्राप्त, अपने पुत्र को नष्ट देखकर अत्यन्त दुःखित हुए और करुण स्वर से विलाप करने लगे। पुत्रशोक से दुःखित राजा के पास जाकर महर्षि नारद कहने लगे—हे सृञ्जय! हम लोग ब्रह्मवादी महर्षि हैं। यद्यपि हम सदा तुम्हारे भवन में रहते हैं; किन्तु तुम भी एक दिन मर जाओगे और विषयभोग और मनोरथों से तुम्हारी तृप्ति न होगी। हे सृञ्जय! हमने सुना है कि अविक्षित् के पुत्र महाप्रतापी राजा मरुत्त को भी मृत्यु के मुख में जाना पड़ा है! बृहस्पति की स्पर्धा करके महर्षि संवर्त ने उनको यज्ञ कराया था। भगवान् शङ्कर ने राजा मरुत्त को विविध यज्ञ करने के लिए हिमवान् पर्वत का एक सुवर्णमय भाग दे दिया था। यज्ञ के अन्त में बृहस्पति और इन्द्र आदि सब देवता उन ४० राजा के साथ बैठते थे। उनके यज्ञमण्डप का सब सामान सुवर्णमय था। राजा मरुत्त के यज्ञ के समय भोजन की इच्छा से आये हुए ब्राह्मण और द्विज (क्षत्रिय और वैश्य भी) इच्छानुरूप बढ़िया दूध, दही, घी, मिठाई, भक्ष्य, भोज्य पदार्थ खा-पीकर तृप्त होते थे। वेदपाठी प्रसन्न-चित्त ब्राह्मणगण मनमाने कपड़े और गहने पाते थे। राजर्षि मरुत्त के यज्ञ में मरुद्गण अथवा सब देवगण भोजन के समय सब चीज़ें परोसते थे। विश्वेदेवा उनके सभासद थे। पराक्रमी राजा मरुत्त के यज्ञों में विधिपूर्वक दी हुई घी की आहुतियों से प्रसन्न देवगण उनके राज्य भर

में खूब जल बरसाते थे, जिससे बहुत अन्न उपजता था। वे राजर्षिश्रेष्ठ ब्रह्मचर्य-पालन, वेदपाठ और श्राद्ध आदि करके सदैव ऋषियों, देवताओं और पितरों को सन्तुष्ट रखते थे। राजा मरुत्त ब्राह्मणों को उनकी इच्छा के अनुसार अमित शय्या, आसन, सवारियाँ और दुस्त्यज सुवर्णराशि देकर सन्तुष्ट करते थे। देवराज इन्द्र सदैव उनके शुभचिन्तक थे। राजा मरुत्त अपनी प्रजा को पुत्र के समान सुख से रखकर श्रद्धापूर्वक यज्ञ करने से प्राप्त अक्षय लोकों में पहुँचे और वहाँ अपने पुण्यों का फल भोगने लगे। उन्होंने हज़ार वर्ष तक युवा रहकर अपनी प्रजा, पुत्र, स्त्री, बन्धु-बान्धव आदि के साथ राज्य किया। हे सृञ्जय! धर्म, ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्य अथवा धर्म, अर्थ, काम और बल में तुमसे अधिक और तुम्हारे पुत्र से बढ़कर पुण्यात्मा राजा मरुत्त भी मृत्यु से नहीं बच सके। अतएव तुम अपने उस पुत्र का शोक मत करो, जिसने न तो यज्ञ ही किये और न ब्राह्मणों को दक्षिणा ही दी। ५०

छप्पनवाँ अध्याय

सुहोत्र का उपाख्यान

नारद ने कहा—हे सृञ्जय! बहुत ही दुर्द्धर्ष और अद्वितीय वीर राजा सुहोत्र को भी मरना पड़ा है। वे ऐसे प्रतापी थे कि देवता लोग भी उनकी तरफ़ आँख उठाकर नहीं देख सकते थे। उन्होंने धर्मानुसार राज्याधिकार प्राप्त करके यह नियम कर रक्खा था कि वे ऋत्विक् ब्राह्मण और पुरोहित आदि का सम्मान करते, उनसे अपने हित के उपदेश पूछते और उन्हीं के मत पर चलते थे। सुहोत्र को यह मालूम हुआ कि प्रजापालन, दान, यज्ञ और शत्रुओं को जीतना ही क्षत्रिय का धर्म है। इस धर्म के पालन में धन की आवश्यकता देखकर राजा ने धर्मानुसार धन प्राप्त करने की इच्छा की। विधिपूर्वक देवगण की आराधना करके और बाहुबल से शत्रुओं को हराकर वे म्लेच्छों और डाकुओं से ख़ाली पृथ्वीमण्डल का राज्य करते थे। उन्होंने अपने गुणों से सब प्राणियों को सन्तुष्ट कर रक्खा था। उनके राज्य में हर साल मेघों से सुवर्ण की वर्षा होती थी। उनके राज्य में जो नदियाँ थीं उनमें ग्राह आदि जलजीव भी सुवर्णमय थे। उन नदियों का सुवर्ण सर्वसाधारण की सम्पत्ति था। मेघों से सुवर्णमय ग्राह और केकड़े, तरह-तरह की मछलियाँ आदि अद्भुत बहुमूल्य पदार्थ बरसते थे। उनके राज्य में कोसों लम्बी-चौड़ी बावलियाँ थीं। राजन्! अपने राज्य में हज़ारों सुवर्णमय ग्राह, मगर, मच्छ, कच्छ आदि देखकर स्वयं राजा सुहोत्र को बड़ा विस्मय हुआ। उन्होंने कुरुजाङ्गल क्षेत्र में जाकर यज्ञ करना आरम्भ कर दिया और उन यज्ञों में ब्राह्मणों को अपने राज्य का वह अपरिमित सुवर्ण

दे डाला। महाराज सुहोत्र ने इसी तरह हज़ार अश्वमेध यज्ञ, एक सौ राजसूय यज्ञ, क्षत्रियों के करने के अन्य अनेक पुण्यदायक यज्ञ तथा निरन्तर अन्यान्य काम्य (किसी कामना से किये जानेवाले) और नैमित्तिक (किसी कारण से किये जानेवाले) कर्म किये। हे सृञ्जय ! वे राजा सुहोत्र भी नहीं बचे। सत्य, तप, दान और दया में तुमसे श्रेष्ठ और तुम्हारे पुत्र से अधिक पुण्यात्मा राजा सुहोत्र को भी एक दिन मरना ही पड़ा। अतएव तुम अपने उस पुत्र का शोक
१२ मत करो, जिसने न यज्ञ किये, न दक्षिणा दी और न वेद ही पढ़ा।

सत्तावनवाँ अध्याय

महाराज अङ्ग का उपाख्यान

नारद ने कहा—हे सृञ्जय ! सुना है कि महातेजस्वी पुरुवंशी राजा अङ्ग को भी मृत्यु ने नहीं छोड़ा। उन राजर्षि ने दस लाख एक रङ्ग सफ़ेद घोड़े ब्राह्मणों को दान किये थे। उनके अश्वमेध यज्ञ में अनेक देशों से वेदपाठी, शास्त्रज्ञ, विधि के जाननेवाले और ब्रह्मज्ञ असंख्य ब्राह्मण पण्डितों का समागम हुआ था। वे सभी वेदज्ञ, विद्वान्, ब्रह्मचारी, उदार, प्रियदर्शन ब्राह्मण राजा अङ्ग के यहाँ उत्तम भोजन, कपड़े, गृह, शय्या, आसन, सवारी और दक्षिणा पाकर बहुत ही प्रसन्न हुए। नट, नाचनेवाले, गन्धर्व, स्वर्णचूड़ाधारी सेवक, आरती करनेवाले लोग नित्य सेवा और क्रीड़ा आदि के द्वारा उन ब्राह्मणों को सन्तुष्ट किया करते थे। राजा ने हर एक यज्ञ में यथासमय ब्राह्मणों को अपार दक्षिणा दी। राजा ने दक्षिणा में सुवर्णमण्डित मतवाले दस हज़ार हाथी दिये, ध्वजा-पताका सहित सुवर्णमय दस हज़ार रथ दिये और सुवर्णमय अलङ्कारों से भूषित हज़ारों कन्याएँ दीं। उन्होंने रथ, हाथी, घोड़े, घर, खेत, सुवर्णमालाओं से भूषित लाखों गाय-बैल और हज़ारों दास-दासियाँ दक्षिणा में दीं। पुरातत्त्व के जाननेवाले विद्वानों का कथन है कि राजा ने सोने से जिनके सींग मढ़े थे, चाँदी से खुर मढ़े थे, काँसे की दोहनी और बछड़े जिनके साथ थे, ऐसी बढ़िया दुधार हज़ारों गायें और दासियाँ, दास, गदहा, ऊँट, बकरी, भेड़ आदि असंख्य पशु, बहुविध रत्न और अन्नों के पर्वत—यज्ञों की दक्षिणा में—सुपात्र ब्राह्मणों को दिये थे। उन याज्ञिक राजा अङ्ग ने अपने धर्म के अनुसार सब इच्छाओं को पूर्ण करनेवाले और निर्दोष यज्ञ किये थे। तुमसे अधिक धर्मात्मा, दानी, दयालु और सत्यनिष्ठ और तुम्हारे पुत्र की अपेक्षा पुण्यात्मा राजा अङ्ग को भी एक दिन मरना ही पड़ा। अतएव तुम अपने उस पुत्र
१२ का शोक मत करो, जिसने न यज्ञ किये, न दक्षिणा दी और न वेद ही पढ़ा।

अट्ठावनवाँ अध्याय

महाराज शिवि का उपाख्यान

नारद ने कहा—हे सृञ्जय ! हमने सुना है कि उशीनर के पुत्र महाप्रतापी राजा शिवि को भी एक दिन मरना पड़ा। सब शत्रुओं को जीतकर उन्होंने पर्वत-द्वीप-समुद्र-वन-सहित इस पृथ्वीमण्डल पर अपना अधिकार कर लिया था। वे अपने रथ के शब्द से पृथ्वीमण्डल को कँपाते हुए दिग्विजय कर चुके थे। राजा शिवि ने दिग्विजय में बहुत सा धन प्राप्त करने के बाद अनेक प्रकार के यज्ञ किये, जिनमें ब्राह्मणों को बहुत-बहुत दक्षिणा दी गई। उन्होंने युद्ध में अन्य मनुष्यों की हिंसा किये बिना ही बहुत सा धन प्राप्त किया था। सब क्षत्रियश्रेष्ठ मूर्धाभिषिक्त राजा लोग शिवि को युद्ध में अपने समान और माननीय समझते थे। महात्मा शिवि ने अपने बाहुबल से पृथ्वीमण्डल के राजाओं को जीत लिया और फिर निर्विघ्न रूप से बहु-फलदायक अश्वमेध यज्ञ किया। उन्होंने उस यज्ञ में हाथी, घोड़े, मृग, गाय, बकरे, भेड़ आदि पशु और सहस्र कोटि निष्क सुवर्ण तथा जीविका के लिए सम्पूर्ण भूमि भी ब्राह्मणों को दे दी थी। वर्षा में जितनी बूँदें पृथ्वी पर गिरती हैं, आकाशमण्डल में जितने तारे हैं, गङ्गा में जितने बालू के कण हैं, सुमेरु पर्वत पर जितने शिलाखण्ड हैं और समुद्र में जितने रत्न और जीव-जन्तु हैं उतनी ही अलंकृत गायें उन्होंने यज्ञ में दान की थीं। भगवान् ब्रह्मा ने भूत, भविष्य और वर्त्तमान में ऐसा प्रतापी कोई राजा अपनी सृष्टि में नहीं देख पाया, जो महाराज शिवि के कार्य-भार को सँभाल सके। नरपति शिवि ने अनेक प्रकार के यज्ञ किये, जिनमें सब प्रार्थियों की इच्छाएँ पूरी की गईं। उन यज्ञों में खम्भे (यूप), आसन, घर, दीवार, फाटक आदि सब सुवर्ण के थे। खाने-पीने की सब सामग्री पवित्र और स्वादिष्ट बनी थी। हज़ारों-लाखों की संख्या में प्रियवादी विद्वान् ब्राह्मण उपस्थित हुए थे। यज्ञस्थल में दूध-दही के तालाब भरे हुए थे, अन्न के पर्वत के समान ढेर लगे थे। तरह-तरह की खाने-पीने की चीज़ें भरी पड़ी थीं। चारों ओर यही सुन पड़ता था कि "नहाओ, खाओ, पियो"। उन दानी राजा के धर्मकार्यों से सन्तुष्ट होकर रुद्रदेव ने यह कहकर उनको वरदान दिया था कि राजन्! तुम्हारी सम्पत्ति, श्रद्धा, कीर्त्ति, धर्म-कर्म, प्राणियों का तुम पर स्नेह का भाव और स्वर्ग अक्षय हो। १०

इस प्रकार इच्छा के अनुरूप वरदान पाकर नरपति शिवि भी, समय आने पर, स्वर्गलोक को गये। हे सृञ्जय ! सत्य, तप, दया और दान में तुमसे अधिक और तुम्हारे पुत्र से बढ़कर पुण्यात्मा राजा शिवि को भी मृत्यु ने नहीं छोड़ा। अतएव तुम उस पुत्र के लिए वृथा शोक मत करो, जिसने न यज्ञ किये, न दक्षिणा दी और न वेदपाठ ही किया। १५

उनसठवाँ अध्याय

रामचन्द्रजी का उपाख्यान

नारद ने कहा—महाराज ! सुना है, राजा दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र को भी एक दिन मृत्यु के वश होना पड़ा। सब प्रजा महात्मा रामचन्द्र को अपने सगे बेटे से भी बढ़कर प्यार करती थी। सब गुणों से अलंकृत महातेजस्वी रामचन्द्र ने पिता की आज्ञा के अनुसार स्त्री के साथ चौदह वर्ष तक वनवास किया। वहाँ जनस्थान में रहते समय वहाँ के निवासी तपस्वियों की रक्षा के लिए उन्होंने चौदह हज़ार राक्षसों को मारा। वहीं रहने के समय लक्ष्मण और राम दोनों भाइयों को माया से मोहित करके राक्षसराज रावण, राम की प्यारी पत्नी, सीता को हर ले गया। महाबलशाली श्रीरामचन्द्र ने रावण के उस अपराध से अत्यन्त कुपित होकर उस पर चढ़ाई कर दी और अन्त को उस शत्रुओं से न हारनेवाले, देवता-दैत्यों के लिए अवध्य, देव-ब्राह्मण-वैरी दुरात्मा रावण को और उसके वंश भर को युद्धभूमि में मार डाला।

प्रजा के हितैषी, देवर्षिगण-सेवित, देवता आदि के द्वारा सम्मानित रामचन्द्र की पवित्र उज्ज्वल कीर्ति अब तक पृथ्वीमण्डल भर में व्याप्त हो रही है। सब प्राणियों के हितैषी महात्मा रामचन्द्र ने बहुविध राज्य पाकर धर्म के अनुसार प्रजा का पालन किया। उन्होंने महायज्ञ अश्वमेध किया। घृतधारा आदि से इन्द्र तृप्त कर दिये गये थे। रामचन्द्र ने और भी कई १० प्रकार के यज्ञ किये। यज्ञकाल में भूख-प्यास को जीतकर वे सब प्रकार की व्याधियों से मुक्त अर्थात् नीरोग थे। असाधारण गुणवान् और अपने तेज से प्रकाशमान रामचन्द्र उस समय सब प्राणियों से बढ़कर शोभायमान हुए। महात्मा राम का राज्य ऐसा था कि पृथ्वी पर ऋषि, देवता और मनुष्य एकत्र रहा करते थे। प्राणियों के शरीर में तेज, प्राण, अपान, उदान और समान वायु की कमी न थी। सब तेजस्वी पदार्थ प्रकाशमान थे, कोई निस्तेज नहीं दिखाई पड़ता था। कभी कोई अनर्थ या अनिष्ट नहीं होता था। सब प्रजा पूरी आयु का उपभोग करती थी। कोई जवानी में नहीं मरता था। वेदोक्त विधि के अनुसार दिये गये विविध हव्य, कव्य, निष्पूर्त और आहुत सामग्री को देवगण प्रसन्नता के साथ ग्रहण करते थे। रामचन्द्र के राज्य में डाँस, मच्छड़ और ख़ूनी जानवर आदि का उत्पात नहीं था। न तो कोई पानी में डूबता था और न कोई आग में जलकर मरता था। राज्य भर में कोई धर्महीन, लोभी या मूर्ख देखने को नहीं था। सब वर्णों की प्रजा सदा सज्जनयोग्य अपने-अपने इष्ट कार्य में लगी रहती और अपने-अपने कर्तव्य का पालन करती थी।

जिस समय जनस्थान में राक्षसों ने स्वाहा-स्वधा और पूजा का लोप करना शुरू कर दिया था उस समय महात्मा रामचन्द्र ने ही उन्हें मारकर पितरों और देवताओं को स्वाहा-

स्वधा और पूजा फिर दिलाई थी। रामचन्द्र के राज्यकाल में मनुष्यों के सहस्र (अर्थात् बहुत) पुत्र होते थे और सब हज़ार वर्ष तक जीवित रहते थे। बड़े को छोटे का श्राद्ध नहीं करना पड़ता था। श्यामवर्ण, लाल नयनोंवाले, मस्त हाथी के समान पराक्रमी, सिंह-स्कन्ध, आजानु-बाहु, बली, सबके हितैषी राम ने युवा रहकर ग्यारह हज़ार वर्ष तक राज्य किया। उनके राज्यकाल में सब प्रजा राम का ही नाम जपा करती थी और सम्पूर्ण जगत् अत्यन्त सुन्दर हो रहा था। महात्मा रामचन्द्र ने अन्त को अपने दो पुत्रों और छः भतीजों को राज्य बाँट दिया। उसके बाद अवध भर के स्वेदज, अण्डज, उद्भिद् और जरायुज जाति के चतुर्विध प्राणियों को साथ लेकर वे स्वर्ग पधार गये। हे सृञ्जय! तप, सत्य, दया और दान में तुमसे श्रेष्ठ और तुम्हारे पुत्र से कहीं अधिक पुण्यात्मा महात्मा रामचन्द्र को भी मृत्यु की मर्यादा माननी पड़ी है। अतएव अब तुम उस पुत्र के लिए वृथा शोक मत करो, जिसने न यज्ञ किया, न दक्षिणा दी और न वेदाध्ययन ही किया। २० २५

साठवाँ अध्याय

राजा भगीरथ का उपाख्यान

नारद ने कहा—महाराज भगीरथ बड़े प्रतापी थे; पर उन्हें भी मृत्यु के मुख में जाना पड़ा। भगीरथ ने इतने यज्ञ किये थे कि उनके यज्ञों के सुवर्ण के खम्भे तमाम गङ्गा के तट पर दूर-दूर तक थे। उन्होंने वीर राजाओं और राजपुत्रों को परास्त करके सुवर्ण के गहनों से अल-ङ्कृत दस लाख सुन्दरी कन्याएँ ब्राह्मणों को दान की थीं। वे कन्याएँ एक-एक रथ पर बैठी थीं और हर एक रथ में चार-चार उत्तम अलङ्कृत घोड़े जुते हुए थे। प्रत्येक रथ के पीछे सुवर्णमाला-भूषित सौ हाथी थे। हर हाथी के साथ हज़ार घोड़े और हर घोड़े के साथ सुवर्णालङ्कृत सौ गउएँ थीं। गउओं के साथ बहुत सी बहुमूल्य बकरियाँ अथवा भेड़ें थीं। राजा भगीरथ के भारी दक्षिणा देने के समय इतनी भीड़ हुई कि उस भीड़ के आक्रमण से व्यथित और व्याकुल होकर भगवती गङ्गा उन राजा की गोद में बैठ गईं। तभी से वे, भगीरथ की कन्या के अर्थ में, भागी-रथी नाम से प्रसिद्ध हुई हैं। पुत्र के समान ही गङ्गा ने भगीरथ के पुरखों को नरक से उबारा है। भगवती भागीरथी जिस जगह पर राजा भगीरथ की जाँघ पर बैठ गई थीं, वह स्थान उर्वशीतीर्थ के नाम से अब तक प्रसिद्ध है। हे सृञ्जय! देवता, मनुष्य और पितृगण के आगे सूर्यसदृश तेजस्वी मधुरभाषी गन्धर्वगण इस गाथा को गाते हैं।

राजन्! इस तरह भगवती गङ्गा ने इक्ष्वाकुकुल-चूड़ामणि, बहुत बड़ी दक्षिणावाले यज्ञों के करनेवाले, महात्मा भगीरथ को अपना पिता बनाया है। भगीरथ की यज्ञशाला को इन्द्र

और वरुण आदि लोकपाल सुशोभित करते थे और सब प्रकार के यज्ञ के विघ्नों को मिटाते थे। ब्राह्मण लोग जहाँ पर जब जिस वस्तु को माँगते थे वहीं पर उसी समय वह वस्तु उन्हें भगीरथ
१० राजा देते थे। कोई ऐसी वस्तु नहीं थी, जिसे राजा ब्राह्मणों को अदेय समझते हों। वे महात्मा अन्त को ब्राह्मणों के प्रसाद से ब्रह्मलोक को गये। मरीचिप महर्षिगण, मोक्ष और स्वर्ग की प्राप्ति के लिए, सूर्य के समान ब्रह्मविद्या और कर्मकाण्ड में निपुण महात्मा भगीरथ के पास आते और उनकी उपासना करते थे। हे सृञ्जय! सत्य, दया, दान और तप में तुमसे श्रेष्ठ और तुम्हारे पुत्र से बढ़कर पुण्यात्मा भगीरथ भी मृत्यु से नहीं बचे। इस कारण तुम उस पुत्र के
१४ लिए वृथा शोक मत करो जिसने न यज्ञ किया, न दक्षिणा दी और न वेदपाठ ही किया।

इकसठवाँ अध्याय

राजा दिलीप का उपाख्यान

नारद ने कहा—हे सृञ्जय! हमने सुना है कि परम प्रतापी और बड़े धर्मात्मा राजा दिलीप को भी मृत्यु के मुख में जाना ही पड़ा। दिलीप ने सैकड़ों बड़े-बड़े यज्ञ किये थे। उनके यज्ञों में तत्त्वज्ञानी, शास्त्र का अर्थ जाननेवाले, याज्ञिक, पुत्र-पौत्र-सम्पन्न हज़ारों-लाखों वेदपाठी ब्राह्मण आये और सम्मानित हुए थे। महाराज दिलीप ने यज्ञ के समय ब्राह्मणों को दक्षिणा में धन-रत्न-पूर्ण सम्पूर्ण पृथ्वीमण्डल दान कर दिया था। उनके यज्ञ में स्रुक् आदि सब सामग्री सुवर्ण की थी और यज्ञमण्डप का मार्ग सुवर्णमय बनाया गया था। धर्म के समान उन राजा की सभा में इन्द्र आदि सब देवता उपस्थित रहते थे। उनके यज्ञ में बड़े-बड़े हज़ारों हाथी चलते थे और परम प्रकाशमान सम्पूर्ण सभामण्डप सुवर्णमय बना हुआ था। रस आदि पीने के पदार्थों की नहरें भरी हुई थीं और भोज्य पदार्थों के पर्वत से ढेर लगे हुए थे। उनके यज्ञ में सहस्र-व्याम-विस्तृत सुवर्णमय यूप थे। उन यूपों में सुवर्णमय 'चषाल' 'प्रचषाल' बने हुए थे। तेरह हज़ार अप्सराओं ने नृत्य किया था और प्रसन्न होकर गन्धर्वराज विश्वावसु ने ख़ुद वीणा बजाई थी। यज्ञ में आये हुए लोग समझते थे कि विश्वावसु मुझे ही वीणा बजाकर सुना रहा है। उस यज्ञ में आये हुए लोग गुड़-भात खाकर तृप्त और मत्त होकर राहों में लेटे हुए थे; चल नहीं सकते थे। महात्मा दिलीप ने रथ पर चढ़कर जल के ऊपर युद्ध किया था; उनके रथ के पहिये
१० पानी में नहीं डूबे थे। यह एक अद्भुत कार्य था, जिसे अन्य राजा लोग नहीं कर सकते थे। दिलीप के सिवा यह अद्भुत क्षमता और किसी में नहीं थी। दृढ़धनुर्द्धर, सत्यवादी, बहुत दक्षिणा देकर यज्ञ करनेवाले राजा दिलीप के दर्शन भर जिन मनुष्यों ने किये थे उन्हें भी स्वर्ग-लोक प्राप्त हुआ था। राजा दिलीप के महल में सदैव धनुष की डोरी का शब्द, वेदपाठ की

ध्वनि और भोजन करो, खाओ, पियो इत्यादि का शब्द सुनाई पड़ता था। हे सृञ्जय! वे तुम्हारी अपेक्षा श्रेष्ठ सत्यवादी, तपस्वी, दयालु और दानी तथा तुम्हारे पुत्र से अधिक पुण्यात्मा राजा दिलीप भी मृत्यु के मुख में जाने से नहीं बचे। इस कारण अब तुम अपने उस पुत्र की मृत्यु का वृथा शोक मत करो जिसने न यज्ञ किया, न दक्षिणा दी और न वेदपाठ किया। १३

बासठवाँ अध्याय

महाराज मान्धाता का उपाख्यान

नारद ने कहा—हे सृञ्जय! सुनने में आता है कि युवनाश्व के पुत्र और सब देवताओं, दानवों और मनुष्यों को जीतनेवाले प्रतापी राजा मान्धाता को भी एक दिन मृत्यु के मुख में जाना पड़ा था। वे अपने पिता की कोख से पैदा हुए थे और स्वयं अश्विनीकुमारों ने उन्हें पिता के पेट से निकाला था। उसका वृत्तान्त यों है कि मान्धाता के पिता युवनाश्व एक समय शिकार खेलने के लिए वन में गये थे। वहाँ उनके वाहन थक गये और उन्हें खुद भी प्यास लगी। दूर से यज्ञ का धुआँ देखकर वे एक यज्ञशाला में पहुँचे। वहाँ उन्हें एक कलश में रक्खा हुआ मन्त्रों से पवित्र "पृषदाज्य" प्राप्त हुआ। वे उसी को पी गये। उसके प्रभाव से युवनाश्व के सूर्य-सदृश तेजस्वी गर्भ देख पड़ा। देवताओं के वैद्य अश्विनीकुमारों ने राजा की यह दशा देखकर, उनके प्राणों की रक्षा के लिए उनकी कोख को फाड़कर एक परम सुन्दर कुमार बाहर निकाला, और उसे राजा की गोद में बिठा दिया। देवतुल्य बलशाली नये कुमार को पिता की गोद में लेटे देखकर देवता परस्पर कहने लगे कि यह अभी का पैदा हुआ बालक क्या पीकर जियेगा? तब इन्द्र ने कहा—यह बालक मुझको पियेगा। इतना कहते ही इन्द्र की उँगलियों में अमृतमय दूध उत्पन्न हो गया। इन्द्र ने करुणा करके कहा था कि यह बालक मेरी उँगलियाँ पियेगा; सो उनके "मान्धाता" इस कथन के अनुसार देवताओं ने युवनाश्व के पुत्र का नाम मान्धाता ही रख दिया। अद्भुत नामवाले 'मान्धाता' बालक के मुख में इन्द्र के हाथ से दूध और घी की धाराएँ गिरने लगीं। इन्द्र का हाथ पीने के कारण मान्धाता में दिव्य शक्ति का सञ्चार हुआ और वे नित्य प्रति शीघ्रता के साथ बढ़ने लगे। वे बारह दिन में बारह वर्ष के बालक के समान हो गये। महापराक्रमी मान्धाता ने एक ही दिन में सम्पूर्ण पृथ्वीमण्डल को जीत लिया। धर्मात्मा, धीर, सत्यवादी, जितेन्द्रिय और महापराक्रमी मान्धाता ने जनमेजय, सुधन्वा, गय, पूरु, बृहद्रथ, असित और नृग आदि बड़े-बड़े पराक्रमी नरपतियों को बाहुबल और धनुष १० की सहायता से जीत लिया। जहाँ से सूर्य का उदय होता है और जहाँ पर उनका अस्त होता है वहाँ से वहाँ तक युवनाश्व के पुत्र महाराज मान्धाता का क्षेत्र कहलाता है। मान्धाता ने सौ

अश्वमेध और इतने ही राजसूय यज्ञ किये थे। उन्होंने यज्ञ की दक्षिणा में ब्राह्मणों को सुवर्ण-पूर्ण रोहित और मत्स्य देश दान किये थे, जो बहुत ऊँचे और श्रेष्ठ समझे जाते थे। उनके भीतर पद्मराग मणियों की खानें थीं। उनके यज्ञ में नाना प्रकार के भक्ष्य-भोज्य अन्नों के, पहाड़ ऐसे ऊँचे, ढेर लगे हुए थे। ब्राह्मणों के अलावा जो और लोग आये थे वे भी उन स्वादिष्ठ आहारों से तृप्त होकर परम आनन्द को प्राप्त हुए थे। उस यज्ञशाला में अनेक प्रकार की खाने-पीने की सामग्रियों के पर्वताकार ढेर लगे थे। घी के कुण्ड, दही का फेन, विविध भोज्य पदार्थों की कीचड़ और गुड़ का जल जिनमें था ऐसी मधु-क्षीर-वाहिनी नदियाँ अन्न के पहाड़ों को घेरे हुए थीं। उनके यज्ञ में असंख्य देवता, असुर, मनुष्य, नाग, यक्ष, गन्धर्व, पक्षी आदि प्राणी आये थे। वेद और वेदाङ्ग के पण्डित ब्राह्मणों और ऋषियों का बड़ा भारी जमघट था। वहाँ कोई ऐसा न था, जो शास्त्रों का ज्ञाता न हो। महातेजस्वी मान्धाता समुद्रों समेत धन-रत्न-पूर्ण समग्र पृथ्वीमण्डल ब्राह्मणों को देकर और सब दिशाओं में अपनी पवित्र उज्ज्वल कीर्ति फैला-कर अन्त को स्वर्गवासी हुए। वे यह शरीर त्यागकर अपने पुण्य से जीते हुए लोकों में गये। हे सृञ्जय! तप, सत्य, दया, दान में तुमसे श्रेष्ठ और तुम्हारे पुत्र से बढ़कर पुण्यात्मा महाराज मान्धाता भी जब मृत्यु के मुख में जाने से नहीं बचे तब तुमको अपने उस पुत्र की मृत्यु का वृथा शोक न करना चाहिए, जिसने न यज्ञ किया, न दक्षिणा दी और न वेदपाठ ही किया। २०

तिरसठवाँ अध्याय

ययाति राजा का उपाख्यान

नारद ने कहा—हे सृञ्जय, सुना जाता है कि महाराज नहुष के पुत्र ययाति भी मृत्यु के मुँह में जाने से नहीं बचे। उन महात्मा ने सौ अश्वमेध, सौ राजसूय, सौ वाजपेय, हज़ार पुण्ड-रीक याग, इतने ही अतिरात्र, असंख्य चातुर्मास्य, विविध अग्निष्टोम यज्ञ और बहुत दक्षिणावाले अन्य अनेक यज्ञ करके ब्राह्मणद्वेषी म्लेच्छों की सम्पत्ति और पृथ्वी जो कुछ थी सो सब उनसे छीन-कर ब्राह्मणों को दे दी थी। राजा ययाति जिस समय पुण्य यज्ञ कर रहे थे उस समय पवित्र नदी सरस्वती, समुद्र, नदी, पहाड़ आदि सब जल की जगह दूध-दही देकर उनकी सहायता करते थे। ययाति ने देवासुर-संग्राम के समय देवताओं की सहायता की थी और यज्ञ के समय सम्पूर्ण पृथ्वी-मण्डल के चार भाग करके चारों ऋत्विजों को दे दिये थे। उन्होंने बहुत से यज्ञ किये। उनके शर्मिष्ठा और (शुक्र की कन्या) देवयानी नाम की दो पत्नियाँ थीं, जिनके गर्भ से धर्मानुसार उन्होंने कई पुत्र उत्पन्न किये। देवसदृश राजा ययाति, दूसरे इन्द्र की तरह, अपनी इच्छा के अनुसार सब लोकपालों के बाग़ों में सैर किया करते थे। बहुत समय तक विषयभोग करने पर भी जब

उनकी विषयवासना शान्त नहीं हुई तब वेद-शास्त्र के ज्ञाता राजा ययाति एक गाथा गाते हुए स्त्रियों सहित वन को चले गये। वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करते समय ययाति ने जो गाथा गाई थी वह यह है कि "पृथ्वीमण्डल भर पर धान्य, यव, सुवर्ण, पशु, स्त्री आदि जितनी भोग की सामग्री है वह सब अगर एक ही आदमी को भोग करने के लिए मिल जाय तो भी उसे तृप्ति नहीं होगी। यह जानकर मनुष्य को वैराग्यपूर्वक शान्ति का मार्ग ग्रहण करना चाहिए।" महाराज ययाति इस तरह विरक्त होकर, सब विषयों की वासना छोड़कर, धैर्यधारणपूर्वक वन को चले गये। वन जाते समय उन्होंने छोटे लड़के पूरु को राज्य सौंप दिया था। हे सृञ्जय! वन में जाकर हरि को भजते हुए अन्त समय वे भी मृत्यु के वशवर्ती हुए। तुमसे तप, दया, दान और सत्य में अधिक और तुम्हारे पुत्र से बढ़कर पुण्यात्मा महाराज ययाति को भी एक दिन मरना ही पड़ा। इसलिए तुम अपने उस पुत्र की मृत्यु का शोक न करो, जिसने न यज्ञ किया, न दक्षिणा दी और न वेद ही पढ़ा। ११

चौंसठवाँ अध्याय

महाराज अम्बरीष का उपाख्यान

नारद ने कहा—हे सृञ्जय! सुनते हैं कि प्रतापी महाराज अम्बरीष को भी मृत्यु ने नहीं छोड़ा। राजा अम्बरीष ने अकेले ही दस लाख वीर राजाओं से युद्ध किया था। अस्त्र-शस्त्र के युद्ध में निपुण, घोरदर्शन वैरी राजाओं ने जय पाने की इच्छा से युद्धभूमि में चारों ओर से कटु वचन कहते-कहते अम्बरीष को घेर लिया था। किन्तु अम्बरीष ने अपने बाहुबल, फुर्ती और अस्त्रबल से उन सबको परास्त कर दिया। उन शत्रुओं के छत्र, शस्त्र, ध्वजा, रथ, वाहन आदि को नष्ट कर दिया, बहुतों को मार भी डाला। इस तरह वे सब शत्रु अम्बरीष के अधीन हो गये। मरने से जो शत्रु बच रहे थे वे अपने प्राण बचाने के लिए, कवच फेंककर "हम आपके शरणागत हैं" कहते हुए, अम्बरीष के आश्रय में आ गये।

महाबलशाली इन्द्र-सदृश राजा अम्बरीष ने इस तरह सब राजाओं को अपने अधीन करके सारी पृथ्वी को अपने अधिकार में कर लिया और फिर शास्त्रविधि के अनुसार सैकड़ों यज्ञ किये। उन यज्ञों में जो लोग आये थे उनको अत्यन्त स्वादिष्ठ भोजन कराये गये थे। सब लोग ख़ूब छक गये थे। विधिपूर्वक ब्राह्मणों की पूजा की गई थी और वे लोग ख़ूब स्वादिष्ट, तरह-तरह के, लड्डू, पूरी, पुए, कचौड़ी, करम्भ (दही-चिउरा), पृथुमृद्वीक, अच्छी तरह बनाये गये विविध अन्न, कच्ची रसोई, मैरेयक (मदिरा), रागखाण्डव, शरबत, मुलायम और ख़ुशबू-दार मिठाइयाँ, घी, मधु, दूध, दही, जल, रसीले फल, कन्द-मूल आदि विविध पदार्थ खा-पीकर

परम प्रसन्न होते थे। मद्य-पान को पापजनक जानकर भी सुखप्राप्ति के लिए बहुत से लोग इच्छानुसार मदिरा पीते थे और प्रसन्नतापूर्वक गाते-बजाते थे। मदिरा और अन्य नशों को खा-पीकर नशे में मस्त हज़ारों आदमी, अम्बरीष की प्रशंसा से पूर्ण, कविता और गाथा गाते और हर्ष के मारे नाचने लगते थे।

राजन्! प्रतापी अम्बरीष ने अपने यज्ञों में बहुत दक्षिणा दी थी। उन्होंने विद्वान् ब्राह्मणों को दस अयुत यज्ञ करानेवाले एक लाख ऐसे राजा दान किये थे, जो सुवर्ण के कवच, सफ़ेद छत्र और कलँगी से शोभित थे, सुवर्णमय रथों पर सवार थे और जिनके साथ उनके सब अनुचर आदि भी थे।* अम्बरीष ने यह अद्भुत ही काम किया जो दण्ड-कोष-सामग्रीसहित मूर्धाभिषिक्त सैकड़ों राजा और राजपुत्र दक्षिणा में दे डाले। महर्षियों ने प्रसन्न होकर कहा था कि राजा अम्बरीष ने जैसी अपरिमित दक्षिणा दी और अद्भुत यज्ञ किये, वैसी दक्षिणा न किसी ने दी होगी और न कोई आगे दे सकेगा। हे सृञ्जय! वे राजा अम्बरीष भी अन्त को मृत्यु के अधीन हुए। तप, सत्य, दया, दान में तुमसे बढ़े हुए और तुम्हारे पुत्र से अधिक पुण्यात्मा राजा अम्बरीष भी जब मरने से नहीं बचे तब तुमको उस पुत्र की मृत्यु का वृथा शोक नहीं करना चाहिए जिसने न यज्ञ किया, न दक्षिणा दी और न वेदाध्ययन ही किया। ७

पैंसठवाँ अध्याय

राजा शशबिन्दु का उपाख्यान

नारदजी कहते हैं—हे सृञ्जय! सुना जाता है कि महाप्रतापी राजा शशबिन्दु भी मरने से नहीं बचे। सत्यविक्रमी श्रीमान् शशबिन्दु ने अनेक प्रकार के बड़े-बड़े यज्ञ करके देवताओं और ब्राह्मणों को सन्तुष्ट किया था। शशबिन्दु के एक लाख रानियाँ थीं। एक-एक रानी के गर्भ से राजा के एक-एक हज़ार पुत्र उत्पन्न हुए थे। वे राजकुमार अत्यन्त पराक्रमी, वेदशास्त्रविशारद, हिरण्मय कवचों से भूषित और श्रेष्ठ धनुर्द्धर योद्धा थे। उन राजकुमारों ने भी अलग-अलग विधिपूर्वक बहुत से अश्वमेध यज्ञ और अन्य प्रकार के दस-दस लाख यज्ञ किये थे। राजा शशबिन्दु ने स्वयं अश्वमेध करके उसकी दक्षिणा में वे सब अपने पुत्र ब्राह्मणों को दे डाले। हर एक राजकुमार के साथ और भी बहुत कुछ सामान था। एक-एक राजपुत्र के साथ सौ-सौ रथ, हाथी, घोड़े और मणि-सुवर्ण आदि से अलङ्कृत कन्याएँ भी थीं। हर कन्या के साथ सौ हाथी थे। प्रत्येक हाथी के साथ सौ रथ थे। हर रथ के साथ सुवर्णमाल्यभूषित महाबली श्रेष्ठ सौ घोड़े थे। प्रत्येक घोड़े के साथ हज़ार गायें थीं। हर गाय के साथ पचास भेड़ें थीं।

---

* शायद इन राजाओं का पौरोहित्य ब्राह्मणों को दिलाया गया था।

हे सृञ्जय ! राजा शशविन्दु ने अश्वमेध यज्ञ करके इस तरह ब्राह्मणों को अपार धन दिया था। साधारणतः लोगों के अश्वमेध यज्ञ में जितने लकड़ी के खम्भे होते हैं उतने लकड़ी के खम्भे तो शशविन्दु के यज्ञ में थे ही, किन्तु उनके अलावा उतने ही सुवर्ण के खम्भे (यूप) भी थे। शशविन्दु के महायज्ञ में इतनी अधिक सामग्री तैयार की गई थी कि कोस भर के ऊँचे, पर्वताकार, खाने-पीने की सामग्री के, तेरह ढेर खिला-पिला चुकने पर अन्त को बच रहे थे। उनके राज्यकाल में यह पृथ्वीमण्डल शान्ति से परिपूर्ण था; कहीं कोई विघ्न, अनर्थ या व्याधि नहीं देख पड़ती थी। सर्वत्र हृष्ट-पुष्ट मनुष्य दिखाई पड़ते थे। राजा शशविन्दु बहुत समय तक इस तरह राज्य करके अन्त में स्वर्ग को चले गये। हे महाराज ! तप, सत्य, दया, दान में तुमसे श्रेष्ठ और तुम्हारे पुत्र से बढ़कर पुण्यात्मा प्रतापी महाराज शशविन्दु भी जब मृत्यु से नहीं बच सके तब फिर तुम उस पुत्र की मृत्यु का वृथा शोक क्यों करते हो, जिसने न यज्ञ किये, न दक्षिणा दी और न वेदपाठ ही किया। १२

छासठवाँ अध्याय

महाराज गय का उपाख्यान

नारदजी ने कहा—हे सृञ्जय ! सुना जाता है कि अमूर्तरया के पुत्र महाराज गय को भी मृत्यु ने नहीं छोड़ा। उन महात्मा ने सौ वर्ष तक हवन से बचा हुआ अन्न ही खाकर जीवन धारण किया था। महाराज गय के इस उत्कृष्ट नियम को देखकर अग्निदेव अत्यन्त सन्तुष्ट हुए और वरदान देने के लिए उनके पास आकर कहने लगे—"मैं प्रसन्न हूँ, मुझसे वरदान माँगो"। राजा गय ने अग्निदेव से कहा—"हे अग्निदेव ! मेरी इच्छा है कि मैं तप, ब्रह्मचर्य, व्रत, नियम और गुरुजन के प्रसाद से सब वेदशास्त्रों का मर्म जान जाऊँ। औरों की हिंसा न करके मैं अपने धर्म से अक्षय धन का अधिकारी हो जाना चाहता हूँ। मैं नित्य श्रद्धापूर्वक ब्राह्मणों को धन दे सकूँ और अपने वर्ण की सुन्दरी धर्मपत्नियों के गर्भ से मेरे उत्तम सन्तान उत्पन्न हो। सदा धर्म में ही मेरा मन लगा रहे और धर्मपालन में कभी कोई विघ्न न हो"। राजा गय के ये वचन सुनकर अग्निदेव बहुत सन्तुष्ट हुए और इच्छानुरूप वरदान देकर अन्तर्द्धान हो गये।

राजा गय ने अग्निदेव की कृपा और वरदान के प्रभाव से अभिलषित विषय पाकर अपने शत्रुओं को परास्त किया। इसके उपरान्त उन्होंने सौ वर्ष की दीक्षा लेकर धर्मानुसार दर्श-पौर्णमास, आग्रयण, चातुर्मास्य आदि अनेक श्रेष्ठ यज्ञ किये और ब्राह्मणों को बहुत अधिक दक्षिणा देकर सन्तुष्ट किया। सौ वर्ष तक नित्य प्रातःकाल उठकर वे ब्राह्मणों को एक लाख सत्तर हज़ार गौएँ, दस हज़ार घोड़े और एक लाख निष्क सुवर्ण दान करते थे। प्रति नक्षत्र में नक्षत्र-दक्षिणा

१० देते और सोम तथा अङ्गिरा के समान बहुत से विविध यज्ञ करते थे। गय राजा ने अश्वमेध यज्ञ के अन्त में ब्राह्मणों को सुवर्ण की वेदियाँ (चबूतरे) बनवाकर दान की थीं। उन वेदियों में असंख्य मणि-रत्न भी थे। उस यज्ञ में बहुत से रत्नों से शोभित, सब प्राणियों के मन को मोहनेवाले, बहुमूल्य, सुवर्ण के खम्भे (यूप) थे। महाराज गय ने यज्ञ के समय में प्रसन्न-चित्त ब्राह्मणों और अन्यान्य प्रार्थियों को उत्तम भोजन कराये थे। समुद्र, वन, द्वीप, नदी, नद, नगर, देश, स्वर्ग और आकाशमण्डल में रहनेवाले तरह-तरह के सब जीव महाराज गय के यज्ञ में सब प्रकार से तृप्त और सन्तुष्ट होकर कहने लगे थे कि महाराज गय के यज्ञ के समान और किसी का यज्ञ कभी नहीं हुआ। महात्मा गय के यज्ञ की वेदी तीस योजन चौड़ी, छत्तीस योजन लम्बी, चौबीस योजन आगे और पीछे विस्तृत थी। उसमें असंख्य मणि, मोती, हीरे जगह-जगह जगमगा रहे थे। महाराज गय ने ब्राह्मणों को कपड़े, गहने और पहले कहे अनुसार दक्षिणाएँ दी थीं। उनका यज्ञ समाप्त होने पर सबको, दे-लेकर, खिला-पिलाकर भोजन-सामग्री के पचीस पहाड़ बराबर ढेर, दूध और रस की कई नदियाँ और कपड़ों तथा गहनों की कई ढेरियाँ बच रही थीं। ऐसा अद्भुत यज्ञ करने के ही प्रभाव से महाराज गय की कीर्त्ति तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। जहाँ गय ने यज्ञ किया था उस स्थान पर अक्षयवट और पवित्र ब्रह्मसरोवर अब तक मौजूद है। इन्हीं के कारण गय का नाम जगत्प्रसिद्ध हो रहा है। हे सृञ्जय! तप, सत्य, दया, दान में तुमसे अधिक और तुम्हारे पुत्र से बढ़कर पुण्यात्मा धर्मात्मा महाराज गय को भी अन्त को मृत्यु के वश होना पड़ा। इसलिए अब तुम अपने उस पुत्र की मृत्यु का शोक मत २१ करो, जिसने न यज्ञ किया, न दक्षिणा दी और न वेद ही पढ़ा।

सड़सठवाँ अध्याय

महाराज रन्तिदेव का उपाख्यान

नारदजी कहते हैं—हे सृञ्जय! सुना जाता है कि महामति रन्तिदेव की भी मृत्यु हुई। दानी रन्तिदेव राजा के यहाँ रसोई बनाने और परोसनेवाले दो लाख नौकर थे। ये लोग राजा के यहाँ आनेवाले अतिथि-अभ्यागतों और भूखे-प्यासों के लिए नित्य बढ़िया रसोई बनाते और उनके आगे परोसते थे। रन्तिदेव ने न्याय से उपार्जित बहुत सा धन ब्राह्मणों को दे डाला था। उन्होंने वेद पढ़े थे और क्षत्रिय-धर्म के अनुसार युद्ध करके शत्रुओं को वश में कर लिया था। रन्तिदेव के यज्ञदीक्षा लेने पर, स्वर्ग पाने की इच्छा से, बहुत से यज्ञपशु स्वयं उनके पास आ जाते थे। उनके अग्निहोत्र यज्ञ में इतने पशु मारे गये थे कि उनके रसोईघर से, मारे गये पशुओं के चमड़ों से, जो खून निकला उससे अत्यन्त पवित्र श्रेष्ठ चर्मण्वती नदी प्रकट हुई।

महाराज रन्तिदेव वारम्वार यह कहते हुए कि "तुमको निष्क देता हूँ, तुमको निष्क देता हूँ" ब्राह्मणों को हज़ारों निष्क दान करते थे और इतने पर भी जो लोग बच रहते थे उन्हें दिलासा देकर सुवर्ण-निष्क ही देते थे। वे ऐसे दानी थे कि एक-एक दिन में हज़ारों-लाखों-करोड़ों निष्क देकर भी यह खेद किया करते थे कि मैंने आज थोड़ा ही दान किया, अब और ब्राह्मण कहाँ मिलें जिनको दान दूँ। दान लेनेवाले ब्राह्मणों को दान न देने से मुझे चिरस्थायी महादुःख होगा,—यही सोचकर राजा बहुत सा द्रव्य दान किया करते थे। हे सृञ्जय! सहस्र सुवर्ण के बैल, सौ गायें और एक सौ आठ सुवर्णमुद्रा, इतने को एक निष्क कहते हैं। राजा रन्तिदेव सौ वर्ष १० तक हर पक्ष में ऐसे करोड़ों निष्क ब्राह्मणों को देते थे। उनके यहाँ सब सामान सुवर्ण का था। वे ऋषियों, ब्राह्मणों को सुवर्ण की बनी अग्निहोत्र की सामग्री, यज्ञ की सामग्री, करवे (करक), घड़े, थाली, पीढ़े, शय्या, आसन, सवारियाँ, महल, मकान, विविध फल-फूलों के वृक्ष और अन्न आदि सामग्री दान किया करते थे। रन्तिदेव की उस अलौकिक समृद्धि और सम्पत्ति को देखकर पुराण-इतिहास के ज्ञाताओं ने यह गाथा गाई है कि "महाराज रन्तिदेव का ऐसा विभव और धन-सम्पत्ति कुबेर के भवन में भी नहीं देख पड़ती, मनुष्यों के यहाँ की कौन कहे! महाराज रन्तिदेव के भवन तो सुवर्ण-रत्न की खान हैं।" रन्तिदेव के भवन में इतने अधिक अतिथि-अभ्यागत आते थे कि उनके भोजन के लिए इक्कीस हज़ार गायें मारी जाती थीं। सुन्दर चमकीले मणिकुण्डल पहने हुए रसोइये उत्तम-उत्तम भोजन तैयार करके अतिथियों से पुकार-पुकारकर कहते थे कि "अच्छी तरह छककर मांस आदि भक्षण कीजिए। आज का मांस पहले का सा नहीं बना है, बहुत बढ़िया बना है।" महाराज रन्तिदेव के यहाँ जितना सुवर्ण था वह सब उन्होंने यज्ञ करते समय ब्राह्मणों को बाँट दिया था। उनके यज्ञों में देवता प्रत्यक्ष आकर हव्य ग्रहण करते थे, पितृगण कव्य ग्रहण करते थे और ब्राह्मण याचक आदि सब यथेष्ट पदार्थ पाकर प्रसन्न होते थे। हे सृञ्जय! महाराज रन्तिदेव तप, दया, दान और सत्य में तुमसे बढ़े हुए और तुम्हारे पुत्र से अधिक पुण्यात्मा थे; तथापि उन्हें भी मरना पड़ा। इसलिए अब तुम अपने उस पुत्र की मृत्यु के लिए वृथा शोक मत करो, जिसने न यज्ञ किये, न दक्षिणा दी और न वेद ही पढ़ा। २१

अड़सठवाँ अध्याय

महाराज भरत का उपाख्यान

नारद ने कहा—हे सृञ्जय! महाप्रतापी दुष्यन्त के पुत्र भरत को भी मरना पड़ा। वे महाप्रतापी बाल्यावस्था में ही वन में ऐसे अद्भुत कार्य करते थे जो और मनुष्यों के लिए सर्वथा दुष्कर थे। वे बर्फ़ के समान सफ़ेद और नख तथा दाढ़ें ही जिनके शस्त्र हैं ऐसे महाबली सिंहों

को अपने बाहुबल से पछाड़कर खींचते हुए ले आते और बाँधते थे। क्रूरप्रकृति अत्यन्त उग्र व्याघ्रों को हराकर वश में कर लेना उनके बायें हाथ का खेल था। मैनसिल और लाख के रङ्ग की लाल बूँदों से युक्त जिनकी खाल होती है ऐसे चीतों को पकड़कर वे वश में कर लेते थे। बहुत से विषैले साँपों और बली गजराजों को पकड़कर उनके दाँत उखाड़ डालते थे और उन सूखे मुँहवाले वशवर्ती जीवों को अधमरा करके छोड़ देते थे। बड़े-बड़े बली भैंसों को पकड़-कर खींचते थे और सैकड़ों बल-दृप्त सिंहों को पकड़कर खींचते थे। सृमर, गैंड़े आदि अनेक बली वनजन्तुओं को पकड़ कर लाते, बाँधते और वश में करके छोड़ देते थे। उन जीवों की जान भर बच जाती थी। तपोवनवासी ऋषियों ने बालक भरत के ऐसे अद्भुत कर्म देखकर उनका नाम 'सर्वदमन' रख दिया था। भरत की माता शकुन्तला उन्हें सदा मना किया करती थीं कि बेटा, इस तरह वन के जीवों को क्लेश मत दो।

महाराज भरत जब बड़े हुए तब उन्होंने यमुना-तट पर सौ अश्वमेध, सरस्वती-तट पर तीन सौ अश्वमेध और गङ्गा-तट पर चार सौ अश्वमेध यज्ञ किये। इसके बाद उन्होंने फिर हज़ार अश्वमेध और सौ राजसूय यज्ञ किये और उनमें ब्राह्मणों को बहुत बड़ी-बड़ी दक्षिणाएँ दीं। भरतजी ने अग्निष्टोम, अतिरात्र, विश्वजित् और हज़ारों वाजपेय यज्ञ करके देवताओं को सन्तुष्ट कर दिया। राजा भरत ने इस तरह असंख्य यज्ञ किये और ब्राह्मणों को अपरिमित धन देकर प्रसन्न कर दिया। उन्होंने यज्ञ की दक्षिणा में आचार्य कण्व को एक हज़ार विशुद्ध सुवर्ण के बने हुए कमल दिये थे। उनके यज्ञ में सुवर्ण के बने यूप इतने बड़े थे कि उनका घेरा सौ व्याम (व्याम = चार हाथ) का था। इन्द्र आदि देवताओं ने आकर ब्राह्मणों के साथ उनके यूप की स्थापना की थी। राजा भरत ने अलङ्कारों से अलङ्कृत रत्नमण्डित सुवर्णशोभित असंख्य हाथी, घोड़े, रथ, ऊँट, बकरे, भेड़ें, दासी-दास, धन, धान्य, बछड़ों सहित दुधार गायें, गाँव, घर, खेत, विविध वस्त्र और सैकड़ों करोड़ अयुत सुवर्णमुद्राएँ ब्राह्मणों को दान की थीं। वे चक्रवर्ती, शत्रुओं को जीतनेवाले, स्वयं अपराजित और उत्साही महात्मा भरत भी एक दिन मृत्यु के मुँह में चले गये। हे सृञ्जय! तुमसे बढ़कर तपस्वी, दानी, दयालु, सत्यवादी और तुम्हारे पुत्र से बढ़कर पुण्यात्मा भरत को भी जब मरना पड़ा तब तुम्हें अपने उस पुत्र की मृत्यु का वृथा शोक कभी न करना चाहिए, जिसने न यज्ञ किया, न दक्षिणा दी, न वेद ही पढ़ा।

उनहत्तरवाँ अध्याय

महाराज पृथु का उपाख्यान

नारद ने कहा—हे सृञ्जय! सुना जाता है कि राजा वेन के पुत्र महाराज पृथु को भी एक दिन मृत्यु के अधीन हो जाना पड़ा था। महर्षियों ने उनसे राजसूय यज्ञ कराया था और

आपस में सलाह करके, उसी अवसर पर, भारत-सम्राट् के पद पर उनका अभिषेक किया था। महाप्रतापी पृथु ने अपने बाहुबल से पृथ्वीमण्डल के सब वीर राजाओं को परास्त कर दिया था। महर्षियों ने यह कहकर उनका सार्थक नामकरण किया था कि ये महाराज हम सबको प्रथित (प्रसिद्ध) करेंगे इसलिए इनका नाम पृथु होगा। ये हम प्राणियों की क्षत (शत्रुओं या डाकुओं-चोरों के आक्रमण से होनेवाले शस्त्रकृत घाव) से रक्षा करेंगे इसलिए ये क्षत्रिय हैं और इनका क्षत्रिय पद सार्थक है। हे सृञ्जय! महाराज पृथु को देखकर सब प्रजा ने कहा था कि हम सब इनके अनुरागी हैं, इसी से प्रजा-रञ्जन गुण होने के कारण ये राजा हुए।

महाराज पृथु के राज्यकाल में यह पृथ्वी बिना जोते ही सब अन्न उत्पन्न करती थी और कामधेनु के समान प्रजा को मनचाही चीज़ें देती थी। सब गायें कामधेनु थीं। कमल मधुपूर्ण रहते थे। कुश सुवर्णमय थे और उनका स्पर्श सुखदायक था। लोग उन्हीं के बने कपड़े पहनते और उन्हीं की शय्या पर लेटते थे। कोई प्राणी भूखा नहीं रहता था, लोग वृक्षों के अमृततुल्य स्वादिष्ट मधुर फल खाते थे। उस समय के मनुष्य नीरोग और निडर थे; उनकी सब इच्छाएँ पूरी होती थीं। मनुष्य इच्छानुसार वृक्षों के तले या पहाड़ों की कन्दराओं में रहते थे। उस समय पृथ्वी पर राष्ट्र और पुर आदि का विभाग नहीं हुआ था। सब प्रजा इच्छानुसार प्रसन्नतापूर्वक जहाँ चाहे वहाँ रहती थी। महाराज पृथु जब समुद्र-यात्रा करते तब जल-स्तम्भन हो जाता था। इसी तरह पर्वत आदि भी उन्हें यथेष्ट मार्ग दे दिया करते थे। फाटक आदि के भीतर रथ जाते समय उनके रथ की ऊँची ध्वजा कभी नहीं टूटी।

महात्मा प्रतापी पृथु एक समय अपनी सभा में सुखपूर्वक विराजमान थे, इसी समय वनस्पति, पर्वत, देवता, असुर, मनुष्य, नाग, सप्तऋषि, पुण्यजन (यक्ष), गन्धर्व, अप्सरा, पितर आदि सब उनके पास जाकर कहने लगे—महाराज! आप सम्राट् हैं, क्षत्रिय हैं, हमारे रक्षक, पिता और राजा हैं। आप प्रभु हैं, इसलिए हम सब अनुगत प्रजा को हमारी इच्छा के अनुसार वर दीजिए, जिनसे तृप्त होकर हम लोग सदा सुख से रहें। १०

तब महात्मा पृथु ने उन्हें यथेष्ट वर देना स्वीकार कर लिया। इसके उपरान्त अपना दिव्य आजगव धनुष और उग्र बाण लेकर, क्षण भर सोचकर, उन्होंने पृथ्वी से कहा—हे धरित्री! इधर आ, तेरा कल्याण हो। तू शीघ्र इस प्रजा को, इच्छा के अनुरूप, दूध दे। तब मैं प्रजा को, इसकी प्रार्थना के अनुसार, अन्न देकर सन्तुष्ट करूँगा। और जो तू मेरी आज्ञा नहीं मानेगी तो मैं अभी इन बाणों से तेरे टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा। पृथ्वी ने डरकर कहा—हे भद्र! मुझे आज से आप अपनी कन्या समझिए। हे वीर! आप वत्स, पात्र, दुहनेवाले और दूध आदि की कल्पना कर दीजिए, तो मैं सबको उनकी अभीष्ट वस्तुएँ दे दूँगी। नारदजी कहते हैं—हे सृञ्जय! तब पृथु राजा ने गोरूपिणी पृथ्वी को दुहने का सब प्रबन्ध कर दिया।

संसार के सब प्राणी निम्नलिखित प्रकार से पृथ्वी को दुहने लगे। सबसे पहले दुहने की इच्छा से वृक्ष आदि (वनस्पति) पृथ्वी के पास आये। वत्सवत्सला गाय का रूप रक्खे हुए पृथ्वी, दुहनेवाले और दुहने के पात्र को चाहती हुई, खड़ी ही थी। वनस्पतियों में पुष्पित शाल वृक्ष बछड़ा बना, पाकर का पेड़ दुहनेवाला बना, कटे हुए वृक्ष का फिर पनप आना ही दूध और उदुम्बर (गूलर) पात्र हुआ। पर्वत जब पृथ्वी को दुहने लगे तब उदयाचल बछड़ा बना और महापर्वत सुमेरु दुहनेवाला हुआ। उन्होंने रत्न और ओषधिरूप दूध को प्रस्तरमय पात्र में दुह लिया। उसके बाद सब देवताओं ने इन्द्र को बछड़ा और सूर्य को दुहनेवाला बनाकर प्रिय तेजोमय वस्तुओं को लकड़ी के पात्र में दुह लिया। असुरों ने विरोचन को बछड़ा और शुक्राचार्य को दुहनेवाला बनाकर आममय पात्र में मायारूप दूध दुह लिया। मनुष्यों ने स्वायम्भुव मनु को बछड़ा और स्वयं महाराज पृथु को दुहनेवाला बनाकर पृथ्वीतलरूप पात्र में खेती और अन्नरूप दूध दुह लिया। २१ नागवंश ने महानाग तक्षक को बछड़ा और नागराज धृतराष्ट्र को दुहनेवाला बनाकर अलाबु-पात्र में विषरूप दूध दुह लिया। अक्लिष्टकर्मा सप्तर्षियों ने राजा सोम को बछड़ा और बृहस्पति को दुहनेवाला बनाकर छन्दोमय पात्र में ब्रह्मस्वरूप वेदमय दूध दुह लिया। यक्षों ने वृषध्वज शंकर को बछड़ा और कुबेर को दुहनेवाला बनाकर आमपात्र में अन्तर्द्धान-विद्यारूप दूध दुह लिया। गन्धर्वों और अप्सराओं ने चित्ररथ को बछड़ा और विश्वरुचि को दुहनेवाला बनाकर पद्म-पात्र में पवित्र सुगन्धरूप दूध दुह लिया। पितरों ने वैवस्वत को बछड़ा और यम को दुहनेवाला बनाकर रजतपात्र में स्वधा-स्वरूप दूध दुह लिया। हे सृञ्जय! इस प्रकार सभी प्राणियों ने अपने-अपने बछड़े की सहायता से अपने-अपने पात्र में अपनी-अपनी अभीष्ट वस्तु दुह ली, जिससे कि अब तक उनका गुज़र हो रहा है।

महाप्रतापी पृथु ने बहुत से यज्ञ करके, सब प्राणियों को उनके अभीष्ट पदार्थ देकर, सन्तुष्ट कर दिया। उन्होंने अश्वमेध यज्ञ में पृथ्वी पर के सब पदार्थों की सुवर्णमयी प्रतिमूर्तियाँ बनवाकर ब्राह्मणों को दान कर दी थीं। उन्होंने सुवर्ण के छासठ हज़ार हाथी बनवाकर ब्राह्मणों को दान किये थे। इसी तरह मणि-रत्न-पूर्ण और सुवर्णमयी पृथ्वी बनवाकर ब्राह्मणों को दान कर दी थी। हे सृञ्जय! महाराज पृथु तुमसे अधिक सत्यनिष्ठ, दयालु, दानी और तपस्वी थे और तुम्हारे पुत्र से बढ़कर धर्मात्मा थे; किन्तु उन्हें भी एक दिन मृत्यु के मुख में जाना ही पड़ा। इसलिए अब तुम अपने उस पुत्र की मृत्यु का वृथा शोक मत करो, जिसने न ३२ यज्ञ किया, न दक्षिणा दी और न वेद ही पढ़ा।

सत्तरवाँ अध्याय

भगवान् परशुराम का उपाख्यान

नारद ने कहा—हे सृञ्जय ! महायशस्वी, शूर और वीर, लोक-नमस्कृत परशुराम को तो तुम जानते ही होगे। वे भी एक दिन अवश्य मरेंगे और अन्त समय तक जीवन-सुख आदि से अतृप्त ही रहेंगे। श्रेष्ठ राजलक्ष्मी और बढ़िया सुख पाकर भी उनके चित्त में किसी तरह का विकार नहीं उत्पन्न हुआ। उन्होंने पृथ्वी का पापरूप भार उतारने के लिए अस्त्र-शस्त्र धारण कर रक्खे थे। उनके श्रेष्ठ चरित्र में कभी कोई परिवर्तन नहीं हुआ। एक समय कृतवीर्य के पुत्र सहस्रबाहु अर्जुन ने, क्षत्रिय-सेना के साथ, उनके पिता के आश्रम में पहुँचकर बलपूर्वक अग्निहोत्र की गाय ले जाने का प्रयत्न किया और मुनिवर जमदग्नि पर भी आक्रमण किया। उस समय परशुरामजी घटनास्थल पर उपस्थित नहीं थे। लौटने पर उन्हें यह वृत्तान्त विदित हुआ। तब उन्होंने क्रोधान्ध होकर उस सहस्रबाहु अर्जुन को मार डाला, जिसे कभी कोई शत्रु युद्ध में नहीं जीत सका था। परशुरामजी ने उसी सिलसिले में मृत्युग्रस्त चौंसठ हज़ार अयुत क्षत्रियों को एक धनुष की सहायता से नष्ट कर दिया। उसके बाद और भी ब्राह्मण-द्वेषी दुष्ट चौदह हज़ार क्षत्रियों को मारा। महावीर परशुराम ने निग्रहपूर्वक हज़ार क्षत्रियों को मूसल से और इतने ही क्षत्रियों को खड्ग से मारा। उन्होंने हज़ार क्षत्रियों को वृक्षों की डालों में फाँसी देकर और हज़ार क्षत्रियों को पानी में डुबाकर मार डाला। हज़ार क्षत्रियों के दाँत तोड़ डाले और हज़ार क्षत्रियों के कान काट लिये। उन्होंने बचे हुए हैहयवंशी क्षत्रियों को बाँधकर मार डाला और उनके सिर तोड़ दिये। सात हज़ार क्षत्रियों को दण्ड-स्वरूप उन्होंने कड़वा धुआँ पिलाया। पिता के मारे जाने से कुपित महामति परशुराम ने गुणावती के उत्तर और खाण्डव वन के दक्षिण जो स्थान है वहाँ शतसहस्र वीर हैहयों को रथ, हाथी, घोड़े आदि सहित समर में मार डाला। उस समय परशुराम ने क्षत्रियों के कहे हुए कटु वचन और "हे परशुराम, दौड़ो, बचाओ" यह ब्राह्मणों-सहित पिता की पुकार स्मरण करके परशु से दस हज़ार क्षत्रियों का संहार कर डाला। परम प्रतापी परशुरामजी ने इसके उपरान्त क्षत्रिय-कुल पर क्रोध करके काश्मीर, दरद, कुन्ति, क्षुद्रक, मालव, अङ्ग, वङ्ग, कलिङ्ग, विदेह, ताम्रलिप्त, रक्षोवाह, वीतहोत्र, त्रिगर्त, मार्तिकावत, शिवि तथा अन्यान्य देशों के शत-सहस्र-कोटि क्षत्रियों को तीक्ष्ण बाणों से यमपुरी भेज दिया। वीरबहूटी और दुपहरी-फूल के रङ्ग के शत्रुओं के रक्त का प्रवाह बहाकर उन्होंने उससे कई सरोवर भर दिये और अट्ठारहों द्वीपों को अपने वश में कर लिया। उसके बाद सैकड़ों महायज्ञ किये, जिनके समाप्त होने पर ब्राह्मणों को बड़ी-बड़ी दक्षिणाएँ दीं। उनके यज्ञ में जो वेदी सुवर्ण की बनी थी वह बत्तीस हाथ ऊँची थी और विधि-पूर्वक बनाई गई थी। ११

उस वेदी में सैकड़ों रत्न थे और सैकड़ों पताकाएँ लगी हुई थीं। गाँव के और वन के असंख्य पशुओं से पूर्ण यह समग्र पृथ्वी परशुराम ने आचार्य कश्यप को दक्षिणा में दे दी थी। पृथ्वी को दस्यु रूप क्षत्रियों से शून्य और शिष्ट जनों से परिपूर्ण करके अश्वमेध महायज्ञ में परशुराम ने कश्यप को दक्षिणा में सुवर्णभूषणमण्डित एक लाख गजराज दान किये थे।

हे श्वित्यनन्दन! परशुराम ने इस प्रकार इक्कीस वार इस पृथ्वी को क्षत्रिय-हीन करके २० सैकड़ों यज्ञ किये और सारी पृथ्वी ब्राह्मणों को दान कर दी। महर्षि कश्यप ने सातों द्वीप पृथ्वी परशुराम से लेकर उनसे कहा—हे राम! तुम यह पृथ्वी मुझको दे चुके हो इसलिए, मेरी आज्ञा के अनुसार, इस पृथ्वी से निकलकर अन्यत्र जाकर रहो। महाराज! ब्राह्मण की आज्ञा मानकर श्रेष्ठ योद्धा परशुराम ने बाणप्रहार से समुद्र को उसकी सीमा से हटा दिया और वे महेन्द्राचल पर जाकर रहने लगे। इस प्रकार सैकड़ों गुणों से अलङ्कृत, तेजस्वी, यशस्वी और भृगुवंश की कीर्ति को बढ़ानेवाले परशुराम भी एक दिन अवश्य मरेंगे। राजन्! सत्य, तप, दया, दान में तुमसे श्रेष्ठ और तुम्हारे पुत्र से अधिक पुण्यात्मा परशुराम को भी एक दिन मरना पड़ेगा। अतएव अब तुम अपने उस पुत्र की मृत्यु के लिए वृथा शोक मत करो, जिसने न यज्ञ किया, न दक्षिणा दी और न वेद ही पढ़ा। देखो, तुमसे सब बातों में श्रेष्ठ, सब गुणों से अलङ्कृत, प्रतापी राजर्षि २५ लोग मृत्यु के वश हुए हैं और ऐसे ही सैकड़ों राजा और प्रतापी लोग आगे चलकर मरेंगे।

विषय-सूची

—:०:—

रङ्गीन चित्रों की सूची

इकहत्तरवाँ अध्याय

युधिष्ठिर को समझाकर व्यासजी का अपने आश्रम को जाना

व्यासदेव ने कहा—हे धर्मराज ! नारद के मुँह से यह अत्यन्त पवित्र और आयु को बढ़ानेवाला सोलह राजाओं का उपाख्यान सुनकर राजा सृञ्जय चुप हो गये। उन्हें इस तरह दीन भाव से चुप देखकर नारदजी बोले—राजन् ! जो मैंने तुमसे कहा, उसे सुनकर तुम हृदय में धारण कर सके हो न ? मेरी बात तुम्हारे मन में बैठ गई है न ? अथवा शूद्री-पति ब्राह्मण जिसमें खिलाया जाय उस श्राद्ध की तरह मेरा सब समझाना निष्फल ही हो गया ?

नारद के ये वचन सुनकर राजा सृञ्जय ने हाथ जोड़कर कहा—भगवन् ! आपने पुत्र-शोक को मिटानेवाला धन्य उत्तम यह उपाख्यान सुनाया। इसमें यज्ञ करनेवाले, दक्षिणा देने-वाले, प्राचीन राजर्षियों का वृत्तान्त वर्णन किया गया है। सूर्य जैसे अँधेरे को मिटा देते हैं वैसे ही इन उपाख्यानों के सुनने से उत्पन्न ज्ञान और विस्मय ने मेरे शोक को दूर कर दिया। मैं निष्पाप हो गया हूँ, मेरी सब व्यथा जाती रही। बताइए, मैं क्या करूँ ? यह सुनकर नारद ने कहा—राजन् ! बड़ी बात जो तुम्हारे हृदय से पुत्रशोक जाता रहा। अब तुम्हारी जो इच्छा हो वह वर माँगो। जो तुम चाहोगे वही पाओगे। हम ऋषि लोग मिथ्यावादी नहीं हैं। सृञ्जय ने कहा—भगवन् ! आप मुझ पर प्रसन्न हैं, इसी से मैं कृतकृत्य हो गया। आप जिस पर प्रसन्न हों उसके लिए दुर्लभ ही क्या है। तब नारद ने कहा—राजन् ! डाकुओं ने वृथा तुम्हारे पुत्र की हत्या की है। मैं उसे, यज्ञबलि में निहत पशु की तरह, कष्ट-दायक नरक से उबारकर फिर तुमको देता हूँ। व्यासजी कहते हैं—प्रसन्न ऋषि नारद के तपोबल के प्रभाव से सृञ्जय का वह पुत्र, कुबेर के लड़के की तरह अद्भुत प्रभा से सम्पन्न होकर, सृञ्जय के सामने प्रकट हो गया। अपने पुत्र को पाकर राजा सृञ्जय बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने इसके उपरान्त बहुत से श्रेष्ठ यज्ञ किये और उनमें ब्राह्मणों को खूब दक्षिणाएँ दीं। हे १० युधिष्ठिर ! सृञ्जय का पुत्र सुवर्णष्ठीवी अकृतार्थ और प्राणभय से डरा हुआ था। वह न तो युद्धविद्या में निपुण था और न युद्ध में मारा ही गया था। उसने न तो यज्ञ ही किया था और न उसके कोई सन्तान ही उत्पन्न हुई थी। इन्हीं कारणों से देवर्षि नारद ने फिर उसे जिला दिया था; किन्तु आपका भतीजा अभिमन्यु तो शूर, वीर और कृतार्थ था। उसने सामने युद्ध में हज़ारों शत्रुओं को मारा और फिर आप भी सम्मुख संग्राम में मारा जाकर स्वर्गलोक को गया। लोग ब्रह्मचर्य, प्रज्ञा, शास्त्र के अध्ययन और महायज्ञ द्वारा जिन अक्षय लोकों को पाते हैं उन्हीं लोकों में तुम्हारा भतीजा अभिमन्यु गया है। विद्वान् पण्डित लोग नित्य पुण्य कर्म करके स्वर्गलोग प्राप्त करना चाहते हैं, किन्तु स्वर्गवासी पुण्यात्मा जीव स्वर्गलोक से इस लोक

में आना नहीं चाहते। इसलिए युद्ध में मरकर स्वर्ग को गये हुए वीर अभिमन्यु को पार्थिव सुख-भोग के लिए यहाँ नहीं लाया जा सकता और वैसा करना उचित भी नहीं होगा। योगी लोग एकान्त में समाधि लगाकर ईश्वर का ध्यान करके जिस गति को पाते हैं, और श्रेष्ठ यज्ञ तथा तपस्या करने से जो उत्तम गति मिलती है, वही गति तुम्हारे वीर पुत्र अभिमन्यु को प्राप्त हुई है। मरण के उपरान्त दैवी सम्पत्ति को पाकर राजा की तरह वीर अभिमन्यु अमृतमय किरणों से शोभायमान होकर चन्द्रलोक में विराजमान है। द्विजों के योग्य अपनी चन्द्रमयी देह पाकर अभिमन्यु उत्तम लोकों में सुख भोग रहा है। उसके लिए शोक करना ठीक नहीं।

हे धर्मराज! यह वृत्तान्त मैंने तुमको बता दिया है। अब स्थिर होकर धैर्य धारण करो; शोक मत करो। मेरी समझ में इस लोक में स्थित जीवित पुरुष ही शोचनीय हैं, स्वर्गगत पुरुष नहीं। महाराज! शोक करने से पाप की वृद्धि ही होती है। इसलिए समझदार पुरुष को चाहिए कि शोक त्यागकर श्रेय के लाभ का यत्न करता रहे। प्रहर्ष, प्रीति, आनन्द, प्रिय कार्य और उत्साह, इनको विद्वान् लोग शौच (पवित्रता) कहते हैं। शोक अपवित्रता का २० रूप है। यह जानकर उठो, अपने को पवित्र और एकाग्र बनाओ, शोक मत करो। तुम मृत्यु की उत्पत्ति, अनुपम तप, सब प्राणियों में समभाव और सृञ्जय के मरे हुए पुत्र का फिर जी उठना इत्यादि वृत्तान्त सुन चुके। महाराज! यह सब जानकर तुम शोक मत करो। अब मैं जाता हूँ। मेरा कहा मानो।

अब भगवान् वेदव्यास वहीं अन्तर्द्धान हो गये। मेघ-विहीन आकाश के समान प्रभा से युक्त, वागीश्वर बुद्धिमानों में श्रेष्ठ, वेदव्यासजी युधिष्ठिर को समझाकर चले गये। महेन्द्रतुल्य पराक्रमी, न्याय से धनोपार्जन करनेवाले, पहले के राजाओं के यज्ञों का वृत्तान्त सुनकर और मन ही मन उनकी प्रशंसा करके युधिष्ठिर शोक-हीन हो गये। किन्तु फिर वे दीन भाव से यह २६ चिन्ता करने लगे कि अर्जुन के आने पर उनसे क्या कहूँगा।

प्रतिज्ञापर्व

बहत्तरवाँ अध्याय

अभिमन्यु के लिए अर्जुन का विलाप

सञ्जय धृतराष्ट्र से कहते हैं—महाराज! प्राणियों का संहार करनेवाला वह भयङ्कर दिन बीत गया और भगवान् भास्कर अस्ताचल पर पहुँच गये। सन्ध्या हो गई। हे भरतश्रेष्ठ, दोनों ओर की सेनाएँ युद्ध बन्द करके अपने-अपने शिविर को चली गईं। उधर अर्जुन भी दिव्य अस्त्रों के द्वारा संशप्तक-सेना का संहार करके, विजय दिलानेवाले रथ पर बैठे

हुए, अपने शिविर को चले। रास्ते में जाते-जाते अर्जुन गद्गद स्वर से कृष्णचन्द्र से कहने लगे—हे गोविन्द! मेरा हृदय इस समय क्यों अकारण भयविह्वल हो रहा है? मेरे मुँह से अच्छी तरह बात नहीं निकलती, अङ्ग काँप रहे हैं, शरीर सुस्त हो रहा है, रथ पर बैठे रहा नहीं जाता! मेरे हृदय में एक अस्पष्ट अनिष्ट-चिन्ता घुसी हुई है, वह किसी तरह दूर नहीं होती। पृथ्वी पर और सब दिशाओं में अत्यन्त उग्र अनिष्टसूचक उत्पात देख पड़ते हैं, वे मुझे भयविह्वल कर रहे हैं। भाई-बन्धुओं सहित महाराज युधिष्ठिर तो कुशलपूर्वक होंगे न?

कृष्णचन्द्र ने कहा—हे अर्जुन! भाइयों सहित धर्मराज सकुशल ही होंगे। इस विषय में सन्देह और शोक मत करो। वहाँ और ही कुछ अनिष्ट हो सकता है।

सञ्जय कहते हैं—इसके बाद श्रीकृष्ण और अर्जुन ने रणभूमि के निकट सन्ध्यावन्दन किया। फिर दोनों मित्र रथ पर बैठकर युद्ध की बातें करते हुए अपने शिविर के पास पहुँचे। अपने शत्रुओं का नाश करके दुष्कर कर्म करनेवाले अर्जुन और श्रीकृष्ण ने अपने शिविर को देखा तो वह नष्ट-भ्रष्ट और निरानन्द देख पड़ा। इससे अर्जुन का हृदय धड़कने लगा। उन्होंने बेचैन होकर कहा—हे जनार्दन! आज मङ्गलमय तुरही, नगाड़े, शङ्ख आदि बाजे नहीं बज रहे १० हैं। करताल और वीणा बजाकर गवैये लोग मङ्गलगीत नहीं गाते। मेरे शिविर में वन्दीजन मेरी स्तुति के मनोरम पद नहीं पढ़ते। योद्धा लोग मुझे देखते ही सिर झुकाकर दूसरी तरफ़ चले जाते हैं। वे पहले की तरह मेरा अभिनन्दन करके मेरे आगे, रण में किये गये, अपने कर्मों का वर्णन नहीं करते। हे माधव! आज यह क्या बात है? मेरे सब भाई तो सकुशल हैं न? स्वजनों को व्याकुल देखकर मेरे मन का भाव शुद्ध नहीं होता, अनिष्ट की आशङ्का और भी ज़ोर पकड़ती जाती है। पाञ्चालराज द्रुपद, राजा विराट और मेरे पक्ष के अन्य योद्धा सबके सब सकुशल हैं न? आज मुझे रण से आते देखकर वीर अभिमन्यु हँसता हुआ, अपने भाइयों के साथ, पहले की तरह मुझे लेने क्यों नहीं आता?

सञ्जय कहते हैं—अर्जुन और श्रीकृष्ण इस तरह बातचीत करते हुए शिविर के भीतर गये। भीतर जाकर दोनों ने देखा कि चारों भाई पाण्डव बहुत ही व्याकुल और उदास हो रहे हैं। उदास अर्जुन ने भीतर पहुँचकर सब भाइयों और पुत्रों को देखा, किन्तु अभिमन्यु नहीं देख पड़े। तब घबराकर अर्जुन ने कहा—हे वीरो! तुम सबके चेहरों का रङ्ग उड़ा हुआ है और उदासी झलक रही है। वीर अभिमन्यु मुझे यहाँ नहीं देख पड़ता। तुम लोग कोई मेरा अभिनन्दन नहीं करते। मैंने सुना है कि आज द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह की रचना की थी। बालक अभिमन्यु के सिवा तुम लोगों में ऐसा कोई नहीं था जो उस व्यूह को तोड़कर भीतर जा सकता। मैंने अभिमन्यु को उस व्यूह के भीतर जाने का उपाय बता दिया २० था, लेकिन उससे बाहर निकलने का उपाय नहीं बताया था। तुम लोगों ने कहीं उस

बालक को शत्रु-सेना के भीतर तो नहीं भेज दिया ? शत्रुनाशन अभिमन्यु शत्रुओं के व्यूह को तोड़कर, भीतर घुसकर, कहीं शत्रुओं के हाथ से युद्ध में मारा तो नहीं गया ? जल्दी

बतलाओ, लोहित-लोचन, महाबाहु, जङ्गली सिंह-शिशु के तुल्य और उपेन्द्र के समान पराक्रमी वीर बालक अभिमन्यु युद्ध में मारा तो नहीं गया ? बतलाओ, सुकुमार, महा-योद्धा, इन्द्र का पौत्र और मेरा प्रिय अभिमन्यु युद्ध में मारा तो नहीं गया ? सुभद्रा और द्रौपदी के प्रिय पुत्र और श्रीकृष्ण तथा कुन्ती के दुलारे अभिमन्यु को किसी ने मार तो नहीं डाला ? किसे काल ने मोहित कर दिया है ? पराक्रम, ज्ञान और माहात्म्य में वृष्णिवीर श्रीकृष्ण के समकक्ष महावीर अभिमन्यु क्या मारा गया ? सुभद्रा का प्यारा पुत्र, मेरा दुलारा, शूरश्रेष्ठ अभिमन्यु अगर मुझे देखने को न मिला तो मैं अपने प्राण दे दूँगा। कोमल घुँघराले वालों से शोभित, बालक, मृग-नयन, मस्त हाथी के समान पराक्रमी, सिंहशावक के समान वीर, मन्द मुसकान के साथ मधुर भाषण करनेवाले, शान्त, बड़े-बूढ़ों की आज्ञा का पालन करनेवाले, विनीत, लड़कपन में भी अद्भुत कर्म करनेवाले, प्रिय-वादी, मत्सर-रहित, महाउत्साही, महाबाहु, कमलदल के तुल्य विशाल नयनोंवाले, भक्तों पर दया ३० करनेवाले सुन्दर अभिमन्यु को मैं न देख पाऊँगा तो अपनी जान दे दूँगा। नीच प्रवृत्तियों से दूर रहनेवाले, कृतज्ञ, ज्ञानी, अस्त्रविद्या में निपुण, युद्ध में पीठ न दिखानेवाले, युद्धप्रिय, शत्रुओं को डरवानेवाले, स्वजनों का प्रिय और हित करने में तत्पर, अपने पितृकुल की जय के लिए यत्न-शील, शत्रु पर पहले प्रहार न करनेवाले, युद्ध में कभी न घबरानेवाले अपने प्रिय पुत्र अभिमन्यु को यदि मैं न देख पाऊँगा तो अपनी जान दे दूँगा। रथी योद्धाओं की गणना के समय मैंने उस महारथी की गणना करते हुए कहा था कि उसमें अन्य महारथियों से आधा गुण अधिक है। उसी नवयुवक, बाहुबल में अद्वितीय और प्रद्युम्न तथा श्रीकृष्ण के परम प्रिय अभिमन्यु को अगर मैं न देख पाऊँगा तो अवश्य अपनी जान दे दूँगा। बालक अभिमन्यु के सुन्दर ललाट, नासिका, नयन, भृकुटी और ओठों से शोभित मुखचन्द्र को बिना देखे मेरे हृदय को शान्ति न मिलेगी। वीणा की ध्वनि और कोयल के शब्द के समान मधुर अभिमन्यु की बोली सुने बिना मेरे हृदय

को कभी शान्ति नहीं मिल सकती। उस वीर का देव-दुर्लभ असाधारण रूप विना देखे मेरे हृदय को शान्ति नहीं मिलेगी। प्रणाम करने में निपुण और पितृगण के आज्ञाकारी अभिमन्यु को आज अगर मैं नहीं देख पाऊँगा तो मुझे कभी शान्ति न मिलेगी। हाय! वह सुकुमार वीर महामूल्य शय्या पर लेटने के योग्य सनाथ अभिमन्यु युद्धभूमि में अनाथों की तरह पड़ा हुआ होगा। पहले कोमल विस्तरे पर सोते समय जिसके पास सुन्दर स्त्रियाँ रहती थीं, वही इस समय धूल में पड़ा होगा और चारों ओर गिदड़ियाँ उसे घेरे हुए होंगी। जिसको पहले सूत-मागध-वन्दीजन स्तुति-गीतों से जगाते थे उसी के आसपास आज खूनी मांसाहारी जीव बुरे स्वर से चिल्ला रहे होंगे। जिसका सुन्दर मुख छत्रछाया के योग्य था, उसी के मुख को आज रणभूमि की रज मलिन करेगी! हाय पुत्र! मैं तुम्हारा मुख देखकर तृप्त नहीं हुआ था; किन्तु मैं ऐसा अभागा हूँ कि काल तुमको बलपूर्वक मेरे पास से लिये जा रहा है। पुण्यात्मा लोग जहाँ जाते हैं वह अपनी कान्ति से रमणीय यमराज की संयमनी पुरी आज तुम्हें पाकर अत्यन्त शोभायमान हो रही होगी। निर्भय होकर युद्ध करनेवाले तुम प्रिय अतिथि को पाकर यमराज, वरुण, कुवेर और इन्द्र आदि लोकपाल तुम्हारी पूजा करेंगे। ४०

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! जहाज़ टूटने पर उस पर सवार डूबता हुआ सौदागर जैसे विलाप करे वैसे ही अत्यन्त दुःख के साथ विलाप करके अर्जुन ने युधिष्ठिर से पूछा—हे कुरुनन्दन! वीर अभिमन्यु श्रेष्ठ वीरों से युद्ध करते-करते शत्रुसेना का विनाश करके सम्मुख-युद्ध में मारा तो नहीं गया? बहुत से महारथी योद्धा मिलकर यत्नपूर्वक उससे लड़ रहे होंगे और उस समय उस अकेले वालक ने सहायता के लिए मेरा स्मरण किया होगा। जान पड़ता है कि कर्ण, द्रोण, कृपाचार्य प्रमुख विपक्षियों के तीक्ष्ण वाणों से पीड़ित वह वालक अवश्य ही "हे पिता, दौड़ो, मेरी रक्षा करो!" कहकर बहुत विलाप कर रहा होगा और उसी समय नीच-हृदय शत्रुओं ने मिलकर उसे मार डाला होगा। अथवा वह मेरा पुत्र और श्रीकृष्ण का भानजा है, इसलिए उसने कभी ऐसे दीन वचन न कहे होंगे। मेरा हृदय अवश्य ही पत्थर का है, जो महाबाहु रक्तनयन वीर वालक अभिमन्यु को न देखकर टुकड़े-टुकड़े नहीं हो जाता! हाय! नृशंस नीच धनुर्द्धर शत्रुओं ने श्रीकृष्ण के भानजे और मेरे पुत्र वालक अभिमन्यु को मर्मभेदी तीक्ष्ण वाण कैसे मारे? जब मैं शत्रुओं को मारकर आता था तब वह उत्साही वीर वालक सदैव आगे बढ़कर मेरे पास आता और मेरा अभिनन्दन करता था; किन्तु आज वह क्या मुझे नहीं देखता? आज वह मेरे पास आकर अभिनन्दन क्यों नहीं करता? अवश्य ही वह इस समय खून से तर होकर पृथ्वी पर मरा पड़ा होगा। आकाश से गिरे हुए सूर्य की तरह कान्तिपूर्ण अपने अङ्गों की आभा से वह रणभूमि की शोभा बढ़ा रहा होगा। मुझे सुभद्रा के लिए बड़ा शोक हो रहा है; क्योंकि वह युद्ध से न भागनेवाले अपने वीर पुत्र की ५०

मृत्यु का समाचार पाकर अवश्य ही शोकपीड़ित होकर प्राण दे देगी। हाय! आज अभिमन्यु को न देखकर सुभद्रा और द्रौपदी मुझसे क्या कहेंगी और मैं ही उन दुःख से पीड़ित देवियों से क्या कहूँगा? मेरा हृदय वज्र का बना हुआ है, जो अपनी बहू उत्तरा को शोक से पीड़ित होकर विलाप करते देख टुकड़े-टुकड़े न हो जायगा!

मैंने लौटते समय हर्ष और गर्व से भरे हुए धृतराष्ट्र के पुत्रों का सिंहनाद सुना है और श्रीकृष्ण ने भी सुना है कि वैश्या-पुत्र युयुत्सु इस प्रकार कौरवों से तिरस्कार-पूर्ण भर्त्सनावाक्य कह रहे थे कि "हे अधर्मी महारथियो! तुम लोग अर्जुन को हराने में असमर्थ होकर अकेले महाबली बालक को मारकर लज्जित नहीं होते? देखो, कुछ ही देर के बाद तुम्हें पाण्डवों का पराक्रम देखने को मिल जायगा। तुम लोगों ने युद्धभूमि में श्रीकृष्ण और अर्जुन का अपराध किया है इसलिए तुमको शोक करना चाहिए; क्योंकि तुम्हारे सिर पर मौत सवार है। तुम शोक करने के बदले वृथा प्रसन्न हो रहे हो और सिंहनाद कर रहे हो। तुम लोगों को शीघ्र ही अपने पापकर्म का फल मिलेगा। तुमने भारी अधर्म किया है, इसका फल तुम्हें क्यों न मिलेगा।" महामति युयुत्सु कोप और दुःख से परिपूर्ण होकर, शस्त्र रखकर, वहाँ से चले गये। हे श्रीकृष्ण! तुमने युयुत्सु के मुँह से ये बातें सुनकर युद्धभूमि में ही मुझसे क्यों नहीं कहा? मैं उन नीच-प्रकृति महारथियों को उसी समय, वहीं, अपने बाणों की आग से भस्म कर देता!

सञ्जय कहते हैं कि आँखों में आँसू भरे हुए, पुत्रशोक से पीड़ित, चिन्तित अर्जुन को पकड़कर, उनके तीव्र शोक को शान्त करते हुए, कृष्णचन्द्र इस प्रकार समझाने लगे—हे पार्थ! इस तरह शोक से कातर मत होओ। युद्ध से न भागनेवाले शूरों की, ख़ासकर हम जैसे शस्त्र-जीविकावाले क्षत्रियों की, एक दिन यही गति होती है। हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ अर्जुन! जो लोग शूर हैं, डटकर युद्ध करते हैं, उनके लिए धर्मशास्त्रविशारद विद्वानों ने यही गति निश्चित की है। जो शूर क्षत्रिय रण में पीठ नहीं दिखाते उनका युद्ध में मरना निश्चित और स्वाभाविक है। वीर कुमार अभिमन्यु उन्हीं श्रेष्ठ लोकों को गया है जहाँ पुण्यात्मा लोग जाया करते हैं। हे भरतकुल-तिलक!

सभी वीर यह चाहते हैं कि सम्मुख-संग्राम में लड़ते-लड़ते उनकी मृत्यु हो। वीर अभिमन्यु रण में महाबली राजपुत्रों को मारकर लड़ते-लड़ते उस मृत्यु से मरा है, जिसकी वीर लोग इच्छा रखते हैं। हे पुरुषसिंह! तुम शोक मत करो। धर्मसंस्थापक महापुरुषों ने युद्ध में मरना क्षत्रियों का धर्म निश्चित किया है। देखो, ये सब तुम्हारे भाई और सुहृद तुम्हें शोकविह्वल देखकर उदास हो रहे हैं। इन्हें समझाओ, ढाढ़स बँधाओ। जानने योग्य सब बातें तुम जानते हो। तुम्हें इस तरह शोक नहीं करना चाहिए। ७०

अद्भुत कर्म करनेवाले कृष्णचन्द्र ने जब इस तरह समझाया तब महावीर अर्जुन गद्गद स्वर से अपने भाइयों से कहने लगे—महाबाहु, ऊँचे कन्धोंवाले, कमलनयन वीर अभिमन्यु की मृत्यु का वृत्तान्त मैं सुनना चाहता हूँ। जिन्होंने मेरे पुत्र को मारा है वे जल्द ही संग्राम में देखेंगे कि उनके दल के हाथी, घोड़े, रथ और योद्धा मेरे बाणों से नष्ट होंगे। तुम लोग अस्त्र-शस्त्र चलाने में निपुण हो। तुम लोग शस्त्र लिये मौजूद थे। तुम्हारे आगे तो इन्द्र भी अभिमन्यु की हत्या नहीं कर सकते थे। अगर मैं जानता कि तुम सब पाण्डव और पाञ्चालगण मेरे पुत्र अभिमन्यु की रक्षा न कर सकोगे तो मैं स्वयं कहीं न जाकर उसकी रक्षा करता। तुम लोग रथ पर बैठकर बाण-वर्षा कर रहे थे, तब भी कैसे शत्रुपक्ष के योद्धा तुम्हें हटा करके अभिमन्यु को मार सके? बड़े आश्चर्य की बात है! आज मुझे मालूम हो गया कि तुम लोगों में पौरुष और पराक्रम ज़रा भी नहीं है। ऐसा न होता तो तुम्हारी आँखों के आगे ही शत्रु लोग अभिमन्यु की हत्या कैसे कर पाते! अथवा मुझे अपनी ही निन्दा करनी चाहिए। तुम दुर्बल, भीरु, कच्चे निश्चयवाले पर भरोसा करके मैं क्यों संशप्तकगण से लड़ने गया था! तुम लोग मेरे पुत्र की रक्षा नहीं कर सके तो क्या ये कवच, शस्त्र, धनुष-बाण आदि केवल दिखाने के लिए ही तुमने धारण कर रक्खे हैं? तुम लोग क्या जनता में बढ़-बढ़कर वीरता की बातों की डींग हाँकना ही जानते हो? ८०

बढ़िया खड्ग धारण किये हुए वीर अर्जुन इतना कहकर चुप हो गये। काल के समान क्रुद्ध और पुत्रशोक से पीड़ित विह्वल अर्जुन बारम्बार साँसें ले रहे थे। उनकी आँखों में शोक और क्रोध के मारे आँसू भरे हुए थे। केवल बड़े भाई युधिष्ठिर और महात्मा श्रीकृष्ण के सिवा अर्जुन के और सब सुहृद्गण उनसे बात करने की कौन कहे, उनकी ओर देख भी नहीं सकते थे! वे दोनों महानुभाव सब समय सब अवस्थाओं में अर्जुन के हितचिन्तक, प्रिय, उनके हृदय के भाव को पहचाननेवाले और अनुगत थे। अर्जुन भी उन्हें बहुत मानते और प्यार करते थे। वे ही उस समय अर्जुन से कुछ कह सकते थे। अब पुत्रशोक से अत्यन्त पीड़ित और क्रुद्ध कमलनयन अर्जुन से महाराज युधिष्ठिर यों कहने लगे। ८८

तिहत्तरवाँ अध्याय

युधिष्ठिर का विस्तार से अभिमन्यु के मारे जाने का वृत्तान्त कहना और
अर्जुन का शपथ खाकर जयद्रथ के वध की प्रतिज्ञा करना

युधिष्ठिर ने कहा—हे महाबाहु अर्जुन! तुम जब संशप्तक-सेना को मारने गये तब द्रोणाचार्य ने मुझे पकड़ने के लिए बड़ी चेष्टा की। [व्यूह बना करके] आचार्य जब मुझे पकड़ने का यत्न करने लगे तब हम लोग भी अपनी सेना को व्यूहरचना-पूर्वक शत्रुओं के सामने खड़ा करके उनके आक्रमण को रोकने की चेष्टा करने लगे। मेरे पक्ष के बहुत से रथियों ने द्रोणाचार्य को बढ़ने से रोका और मैं भी सुरक्षित हो गया, तब द्रोणाचार्य अपने तीक्ष्ण बाणों से हमारी सेना को पीड़ित करते हुए हम लोगों की ओर बढ़े। उस समय हम लोगों को आचार्य ने इतना सताया कि हम लोग उनकी सेना के व्यूह को क्या तोड़ते, उनकी ओर आँख उठाकर देखने में भी असमर्थ हो गये। तब मैंने घबराकर अद्वितीय योद्धा कुमार अभिमन्यु से कहा कि पुत्र, तुम द्रोणाचार्य की सेना के इस व्यूह को तोड़कर हमारे लिए भीतर घुसने का रास्ता कर दो। हम लोगों की प्रेरणा से, उत्तम प्रकृति के बढ़िया घोड़े की तरह, पराक्रमी अभिमन्यु ने असह्य भार होने पर भी उसे अपने ऊपर ले लिया। गरुड़ जैसे समुद्र में घुसें वैसे ही वह बालक तुम्हारी सिखाई हुई अस्त्रविद्या के बल से, अपने बाहुबल के सहारे, शत्रुसेना के भीतर घुस गया। हम लोग अभिमन्यु के पीछे जा रहे थे। जिस राह से अभिमन्यु व्यूह के भीतर गया था उसी राह से हम लोग भी भीतर जाने का प्रयत्न करने लगे। उस समय क्षुद्र-पराक्रमी सिन्धुदेश के राजा जयद्रथ ने, रुद्र के दिये हुए वरदान के प्रभाव से, हम सबको बाहर ही रोक दिया। बहुत यत्न करने पर भी हम उसे नहीं हटा सके। उधर महारथी द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण, अश्वत्थामा, कोशलराज बृहद्बल और कृतवर्मा, इन छः महारथियों ने
१० अकेले बालक अभिमन्यु को चारों तरफ़ से घेर लिया। महावीर अभिमन्यु उन लोगों से यथाशक्ति युद्ध करता रहा किन्तु अन्त को कई महारथियों ने मिलकर उसका रथ नष्ट कर दिया। दुःशासन का पुत्र गदा लेकर बड़ी फुर्ती से रथ-हीन अभिमन्यु के पास पहुँचा। सङ्कट में पड़े हुए अभिमन्यु को, पैदल देखकर, दुःशासन के बेटे ने मार डाला। धार्मिकश्रेष्ठ अभिमन्यु ने पहले हज़ारों हाथियों, घोड़ों, रथियों और पैदल सिपाहियों को मारा। उसके बाद आठ हज़ार रथी, नव सौ हाथी, दो हज़ार श्रेष्ठ योद्धा राजपुत्र उसके हाथ से मारे गये। अभिमन्यु के बाणों से बहुत से अलक्षित वीर राजाओं, राजपुत्रों और क्षत्रिय योद्धाओं की मृत्यु हुई। उसने महापराक्रमी कोशलेश बृहद्बल को भी बलपूर्वक सम्मुख समर में मारा। इस तरह घमासान युद्ध करके और अद्भुत पराक्रम दिखाकर वह स्वर्ग को सिधार गया। भैया! हमारे शोक को बढ़ानेवाली यह घटना इस तरह हुई है।

अर्जुन......लम्बी साँस लेकर गिर पड़े।—पृ० २३१६

युधिष्ठिर के ये वचन सुनकर पुत्रवत्सल अर्जुन शोक से व्याकुल हो उठे और "हाय बेटा !" कहकर, लम्बी साँस लेकर, गिर पड़े। तब सब वीर लोग चारों ओर से उनको घेरकर उदास दृष्टि से एक दूसरे की ओर निहारने लगे। कुछ देर बाद अर्जुन को होश आया। वे उस समय क्रोध के मारे ज्वरग्रस्त मनुष्य की तरह काँप रहे थे और बारम्बार लम्बी साँसें ले रहे थे। हाथ से हाथ मलकर, दाँत कटकटाकर, उन्मत्त की तरह देखते हुए अर्जुन कहने लगे—हे धर्मराज ! हे वीरो ! मैं तुम लोगों के आगे यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि कल सवेरे अवश्य जयद्रथ को मार डालूँगा। अगर जयद्रथ प्राणों की रक्षा के लिए, डरकर, दुर्योधन आदि को छोड़कर हम लोगों की, पुरुषोत्तम कृष्ण की अथवा हे महाराज, आपकी शरण में न आ गया तो अवश्य ही मैं कल सवेरे उसको मार डालूँगा।

२१

दुष्ट जयद्रथ मेरे साथ पहले की मित्रता (अथवा नातेदारी का ख़याल) भुलाकर दुर्योधन का प्रिय करना चाहता है। वही नीच पापी मेरे लड़के के वध का कारण है। इसलिए कल मैं अवश्य उसे मारूँगा। युद्धभूमि में जो कोई उसकी रक्षा करने के लिए मुझसे लड़ेगा उसे—चाहे द्रोणाचार्य हों और चाहे कृपाचार्य—मैं अवश्य अपने तीक्ष्ण बाणों का लक्ष्य बनाऊँगा। हे श्रेष्ठ पुरुषो ! अगर मैं कल संग्राम में यह काम न करूँ तो मुझे वे लोक न प्राप्त हों जिनमें पुण्यात्मा और शूरवीर क्षत्रिय जाते हैं। अगर मैं कल जयद्रथ को न मारूँ तो उन्हीं लोकों में जाऊँ जिनमें माता-पिता की हत्या करनेवाले, गुरु-स्त्री-गामी, चुग़लख़ोर, सज्जनों से डाह रखनेवाले और उन्हें वृथा कलङ्क लगाकर उनकी निन्दा करनेवाले पापी जाते हैं। अगर मैं कल जयद्रथ को न मारूँ तो उन्हीं लोकों में जाऊँ जिनमें किसी की धरोहर मार लेनेवाले, विश्वासघाती, पर-स्त्री-गामी, दूसरे को बदनाम करनेवाले, ब्रह्महत्या और गोहत्या करनेवाले तथा देवता पितर अतिथि अग्नि आदि को दिये बिना अकेले ही पायस यवान्न साग कृसर (खिचड़ी या तिल-चावल) संयाव (हलुवा) पुये मांस आदि खानेवाले पातकी जाते हैं। अगर कल मैं जयद्रथ का वध न करूँ तो उन्हीं लोकों में जाऊँ जिनमें वेदपाठी ब्रह्मचारी ब्राह्मण का और वृद्धजन गुरु-जन साधुजन आदि का अनादर करनेवाले जाते हैं। अगर कल मैं जयद्रथ के प्राण न ले लूँ

३० तो वही कष्टदायक नरक-गति मुझे भी प्राप्त हो जो ब्राह्मण, गाय और अग्नि को पैर से छूनेवालों और जल में थूकने या मल-मूत्र त्याग करनेवालों की होती है। नङ्गा होकर नहानेवाला, अतिथि-अभ्यागत को विमुख करनेवाला, रिश्वत लेनेवाला, झूठ बोलनेवाला, धोखा देनेवाला, वञ्चक, अपनी असली औक़ात या कार्यों को छिपाकर अन्यथा प्रकट करनेवाला, झूठी ख़बर देनेवाला, भृत्य पुत्र स्त्री आश्रितजन आदि के सामने उन्हें दिये बिना अकेले मिठाई आदि खानेवाला जिस बुरी गति को प्राप्त होता है वही गति मेरी हो, अगर मैं कल जयद्रथ का वध न करूँ। जो नीच प्रकृति का पुरुष अपने आश्रित अच्छे स्वभाववाले और आज्ञा-पालन करनेवाले का त्याग कर देता है, उसका पालन-पोषण नहीं करता अथवा अपने साथ उपकार करनेवाले की निन्दा करता है, उसी की सी बुरी गति मेरी भी हो, अगर मैं जयद्रथ-वध की प्रतिज्ञा पूरी न करूँ। पूजनीय सुपात्र परोसी को श्राद्ध की आहार-सामग्री आदि न देनेवाला और अयोग्य तथा शूद्रा या रजस्वला कन्या से व्याह करनेवाले ब्राह्मणों को श्राद्ध में भोजन करानेवाला मदिरा पीनेवाला, लोक और शास्त्र की मर्यादा को तोड़नेवाला, कृतघ्न तथा अपने मालिक की निन्दा करनेवाला जिस बुरी गति को प्राप्त होता है वही गति मेरी भी हो, अगर मैं कल जयद्रथ-वध की प्रतिज्ञा पूरी न करूँ। अगर मैं कल जयद्रथ को न मारूँ तो मेरी भी वही गति हो जो सव्य होकर (बायें हाथ से) भोजन करनेवाले या गोद में रखकर खानेवाले, पलाश के आसन पर बैठनेवाले, तिन्दुक से दतून करनेवाले, सबेरे तक सोनेवाले, ठण्ड से डरकर न नहानेवाले ब्राह्मण, कायर क्षत्रिय, जिस गाँव में एक ही कूप हो

४० और कोई वेदपाठी न रहता हो उस गाँव में छः महीने तक रहनेवाले, शास्त्र की निन्दा करनेवाले, दिन को मैथुन करने और सोनेवाले, किसी के घर में आग लगा देनेवाले, किसी को विष खिला देनेवाले और अग्निहोत्र न करनेवाले की होती है। पानी पीती हुई गाय को हँका देनेवाले, रजस्वला-गमन करनेवाले, कन्या बेचनेवाले, पुरोहिती और सेवावृत्ति करनेवाले ब्राह्मण, मुख-मैथुन करनेवाले और ब्राह्मण को कुछ देने का वादा करके पीछे लोभ के मारे न देनेवाले मनुष्य की जो बुरी गति होती है वही गति मेरी भी हो, अगर मैं कल जयद्रथ को न मारूँ। जिन अधर्मियों का उल्लेख कर चुका हूँ और जिन पापियों का उल्लेख नहीं किया, उन सबकी सी बुरी गति मेरी हो, अगर मैं कल जयद्रथ को न मारूँ। मैं यह दूसरी प्रतिज्ञा करता हूँ कि अगर कल दिन डूबने से पहले पापी जयद्रथ जीता-जागता रहा तो मैं यहीं आग में जल मरूँगा। मैं सच कहता हूँ कि असुर, देवता, मनुष्य, पक्षी, नाग, पितर, निशाचर, ब्रह्मर्षि, देवर्षि और चराचर जगत्, कोई भी कल मेरे शत्रु जयद्रथ की रक्षा नहीं कर सकता। अभि-मन्यु की मृत्यु का मूलकारण जयद्रथ चाहे भागकर रसातल में घुस रहे, चाहे आकाश में चला जाय, चाहे देवलोक अथवा दैत्यलोक में भाग जाय, तथापि कल सबेरे मैं अवश्य अपने पैने सैकड़ों बाणों से उसका सिर काट डालूँगा।

यह कहकर वीर अर्जुन ने दाहने-बायें बड़े ज़ोर से गाण्डीव धनुष की डोरी बजाई। वह गाण्डीव का शब्द सब शब्दों को दबाकर आकाशमण्डल तक पहुँच गया। अर्जुन जब इस प्रकार प्रतिज्ञा कर चुके तब श्रीकृष्ण ने अपना पाञ्चजन्य शङ्ख बजाया। अत्यन्त कुपित अर्जुन ने भी उनके साथ ही अपना दिव्य देवदत्त शङ्ख बजाया। श्रीकृष्ण के मुँह की हवा से परिपूर्ण पाञ्चजन्य के छिद्र से जो शब्द निकला उसने पाताल, स्वर्ग, दिशाओं के मण्डल और दिक्पालों को प्रलयकाल की तरह कँपा दिया। उस समय पाण्डवों के शिविर में अर्जुन की प्रतिज्ञा सुनकर हज़ारों बाजे और शङ्ख बजने लगे; सब वीर योद्धा हर्ष और उत्साह से सिंहनाद करने लगे। ५० ५३

चौहत्तरवाँ अध्याय

अर्जुन की प्रतिज्ञा सुनकर जयद्रथ का घबराना और
द्रोणाचार्य का उसे ढाढ़स बँधाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! पुत्र की मृत्यु का बदला लेने के लिए उद्यत पाण्डवों का वह महाशब्द सुनकर जासूसों ने जाकर जयद्रथ को सब हाल कह सुनाया। सुनते ही घबराकर जयद्रथ उठ बैठे। वे शोक के मारे हक्का-बक्का होकर अत्यन्त दुःखित हुए। वे उस समय मानों अथाह अपार शोक के समुद्र में डूबने लगे। जयद्रथ बहुत सोच-विचारकर उसी समय अपने डेरे से वहाँ पर गये जहाँ दुर्योधन और सब राजा बैठे हुए थे। अर्जुन से डरे हुए जयद्रथ सब वीर राजाओं के सामने विलाप करते हुए, लज्जित भाव से, कहने लगे—हे राजाओ! पाण्डु की स्त्री कुन्ती के गर्भ से कामी इन्द्र के द्वारा उत्पन्न दुर्मति अर्जुन ने अकेले मुझको मार डालने की प्रतिज्ञा की है। आप लोगों का भला हो, मैं अपने प्राण बचाने के लिए अभी अपने देश को जाता हूँ। अथवा हे श्रेष्ठ क्षत्रियो, आप सब लोग मिलकर अपने अस्त्रबल के प्रभाव से मेरी रक्षा कीजिए। अर्जुन मेरे प्राण लेना चाहता है, आप लोग मेरी रक्षा करने का वचन मुझे दें। द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण, दुर्योधन, शल्य, वाह्लीक और दुःशासन आदि योद्धा चाहें तो साक्षात् काल के हाथ से भी मुझे छुड़ा सकते हैं। तो फिर क्या मार डालने के लिए उद्यत अकेले अर्जुन से आप सब राजा लोग मुझे नहीं बचा सकते? पाण्डवों की प्रतिज्ञा और हर्षध्वनि सुनकर मैं बहुत ही डर गया हूँ। मरनेवाले मनुष्य की तरह मेरे अङ्ग शिथिल हो रहे हैं। अवश्य ही गाण्डीवधन्वा अर्जुन ने मेरे वध की प्रतिज्ञा की है इसी कारण, शोक करने के समय भी, पाण्डव हर्ष प्रकट करते हुए सिंह की तरह गरज रहे हैं। मेरी समझ में तो मनुष्यों की कौन कहे, सब देवता, गन्धर्व, असुर, नाग, राक्षस आदि भी मिलकर अर्जुन की प्रतिज्ञा १०

हे सृञ्जय ! राजा शशविन्दु ने अश्वमेध यज्ञ करके इस तरह ब्राह्मणों को अ
दिया था। साधारणतः लोगों के अश्वमेध यज्ञ में जितने लकड़ी के खम्भे होते हैं उतने
के खम्भे तो शशविन्दु के यज्ञ में थे ही, किन्तु उनके अलावा उतने ही सुवर्ण के खम्भे (
भी थे। शशविन्दु के महायज्ञ में इतनी अधिक सामग्री तैयार की गई थी कि कोस
ऊँचे, पर्वताकार, खाने-पीने की सामग्री के, तेरह ढेर खिला-पिला चुकने पर अन्त को
थे। उनके राज्यकाल में यह पृथ्वीमण्डल शान्ति से परिपूर्ण था; कहीं कोई विघ्न, अन
व्याधि नहीं देख पड़ती थी। सर्वत्र हृष्ट-पुष्ट मनुष्य दिखाई पड़ते थे। राजा शशविन्दु
समय तक इस तरह राज्य करके अन्त में स्वर्ग को चले गये। हे महाराज ! तप, सत्य,
दान में तुमसे श्रेष्ठ और तुम्हारे पुत्र से बढ़कर पुण्यात्मा प्रतापी महाराज शशबिन्दु
जब मृत्यु से नहीं बच सके तब फिर तुम उस पुत्र की मृत्यु का वृथा शोक क्यों करते
जिसने न यज्ञ किये, न दक्षिणा दी और न वेदपाठ ही किया।

छासठवाँ अध्याय

महाराज गय का उपाख्यान

नारदजी ने कहा—हे सृञ्जय ! सुना जाता है कि अमूर्तरया के पुत्र महाराज गय
भी मृत्यु ने नहीं छोड़ा। उन महात्मा ने सौ वर्ष तक हवन से बचा हुआ अन्न ही खाकर
धारण किया था। महाराज गय के इस उत्कृष्ट नियम को देखकर अग्निदेव अत्यन्त सन्तुष्ट
और वरदान देने के लिए उनके पास आकर कहने लगे—"मैं प्रसन्न हूँ, मुझसे वरदान माँगो"
राजा गय ने अग्निदेव से कहा—"हे अग्निदेव ! मेरी इच्छा है कि मैं तप, ब्रह्मचर्य, व्रत,
और गुरुजन के प्रसाद से सब वेदशास्त्रों का मर्म जान जाऊँ। औरों की हिंसा न करके मैं अप
धर्म से अक्षय धन का अधिकारी हो जाना चाहता हूँ। मैं नित्य श्रद्धापूर्वक ब्राह्मणों को धन
सकूँ और अपने वर्ण की सुन्दरी धर्मपत्नियों के गर्भ से मेरे उत्तम सन्तान उत्पन्न हो। सदा
में ही मेरा मन लगा रहे और धर्मपालन में कभी कोई विघ्न न हो"। राजा गय के ये
सुनकर अग्निदेव बहुत सन्तुष्ट हुए और इच्छानुरूप वरदान देकर अन्तर्द्धान हो गये।

राजा गय ने अग्निदेव की कृपा और वरदान के प्रभाव से अभिलषित विषय पाकर अ
शत्रुओं को परास्त किया। इसके उपरान्त उन्होंने सौ वर्ष की दीक्षा लेकर धर्मानुसार दर्श-
पौर्णमास, आग्रयण, चातुर्मास्य आदि अनेक श्रेष्ठ यज्ञ किये और ब्राह्मणों को बहुत अधिक दक्षिणा
देकर सन्तुष्ट किया। सौ वर्ष तक नित्य प्रातःकाल उठकर वे ब्राह्मणों को एक लाख सत्तर हज़ार
गौएँ, दस हज़ार घोड़े और एक लाख निष्क सुवर्ण दान करते थे। प्रति नक्षत्र में नक्षत्र-दक्षिणा

किसी को नहीं छोड़ेगा। हम सब बारी-बारी से मरेंगे और अपने-अपने कर्मों को साथ ले जायँगे। तपस्वी लोग कठोर तप करके जिन लोकों को जाते हैं उन्हीं लोकों को क्षत्रिय-धर्म का पालन करनेवाले वीर पुरुष भी पाते हैं।

आचार्य के ये वचन सुनने से सिन्धुराज जयद्रथ को सहारा मिला। उन्होंने अर्जुन का डर छोड़कर युद्ध करने का निश्चय कर लिया। महाराज! उस समय कौरव-सेना के लोग भी प्रसन्न होकर कोलाहल और सिंहनाद करने लगे। चारों ओर बाजे बजने लगे। ३५

पचहत्तरवाँ अध्याय

अर्जुन और श्रीकृष्ण की बातचीत

सञ्जय कहते हैं कि राजन्! इधर महात्मा श्रीकृष्ण, अर्जुन के प्रतिज्ञा करने पर, उनसे बोले—हे अर्जुन! तुमने न मुझसे ही सलाह ली और न भाइयों की ही राय पूछी और जयद्रथ के मारने की दुष्कर प्रतिज्ञा कर बैठे। यह तुमने बड़े ही साहस का काम किया। यह बहुत बड़ा बोझ तुमने अपने सिर पर उठा लिया है। मुझे यही चिन्ता है कि कहीं प्रतिज्ञा पूरी न कर सकने पर हम लोग लोगों के उपहास के पात्र न हों! मैंने जिन गुप्तचरों को दुर्योधन के शिविर में भेजा था, वे वहाँ से चटपट आकर मुझसे वहाँ का सब हाल कह गये हैं। उनका कहना है कि तुमने जब जयद्रथ के मारने की प्रतिज्ञा की तब यहाँ होनेवाले सिंहनाद और बाजों के शब्द सुनकर धृतराष्ट्र के सब पुत्र बहुत डरे और जयद्रथ भी घबरा गया। वे लोग सोचने लगे कि शत्रु-शिविर में अकस्मात् यह सिंहनाद क्यों हो रहा है। इसका कोई कारण अवश्य है। इसके उपरान्त कौरव लोग युद्ध के लिए सुसज्जित होने लगे। उनके शिविर में युद्ध के लिए तैयार होनेवाले हाथी, घोड़े, रथ और पैदल आदि का शब्द सुनाई पड़ने लगा। वे लोग यह सोचकर युद्ध की तैयारी करने लगे कि अभिमन्यु के मारे जाने की ख़बर से शोकाकुल अर्जुन क्रोधान्ध होकर रात को ही आक्रमण कर देंगे। हे अर्जुन! कौरवों ने भी अपने जासूसों से तुम्हारी जयद्रथ-वध की प्रतिज्ञा और उसे पूरा करने के लिए क़समें खाना सुन लिया है। तब क्षुद्र मृगों की तरह दुर्योधन के अनुचर और राजा जयद्रथ उदास हो गये। १०
इसके बाद सिन्धु-सौवीर देश का राजा जयद्रथ अपने अनुचरों के साथ दीनभाव से दुर्योधन की राजसभा में गया। वहाँ मन्त्रणा के समय अपने बचाव की सब सलाहें सोचकर राजसभा में वह दुर्योधन से कहने लगा कि हे राजन्! मुझे ही अपने बेटे की मृत्यु का कारण जानकर कल सवेरे अर्जुन मुझे मारने के लिए युद्ध करेंगे। उन्होंने अपनी सब सेना के बीच में मेरे मारने की प्रतिज्ञा की है। मुझे विश्वास है कि देवता, गन्धर्व, असुर, राक्षस आदि कोई

भी अर्जुन की प्रतिज्ञा को टाल नहीं सकता। इसलिए अब आप लोग मेरी रक्षा का उपाय कीजिए। ऐसा न हो कि मौक़ा पाकर अर्जुन अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर लें। आप लोग जो उपाय उचित समझें सो करें। यदि आप लोग अच्छी तरह मेरी रक्षा न कर सकें तो हे कुरुनन्दन! मुझे आज्ञा दीजिए, मैं अपने घर चला जाऊँ।

घबराये हुए जयद्रथ के यों कहने पर दुर्योधन ने उदास होकर सिर झुका लिया और वह सोच में पड़ गया। दुर्योधन को अत्यन्त चिन्तित देखकर राजा जयद्रथ कोमल, अपने हित के, आक्षेपपूर्ण वचन इस प्रकार कहने लगा—महाराज! आपके दल में मुझे कोई ऐसा पराक्रमी योद्धा नहीं देख पड़ता जो महायुद्ध में अपने अस्त्र से अर्जुन के अस्त्र को रोक सके। वासुदेव जिनके सहायक हैं वे अर्जुन जब गाण्डीव धनुष को मण्डलाकार घुमावेंगे तब उनके २० आगे कौन ठहर सकेगा? साक्षात् इन्द्र भी तो नहीं ठहर सकते। सुना जाता है कि पराक्रमी अर्जुन ने किसी समय पैदल ही महेश्वर से हिमालय पर्वत पर युद्ध किया था। उन्होंने इन्द्र के कहने से अकेले ही हिरण्यपुर-निवासी हज़ारों दानवों को मार डाला था। मेरी समझ में तो बुद्धिमान् वासुदेव के साथ वीर अर्जुन देवगण सहित त्रिभुवन को भी नष्ट कर सकते हैं। इसी कारण मैं प्रार्थना करता हूँ कि या तो आप यह वादा कीजिए कि अपने वीर पुत्र अश्वत्थामा सहित महात्मा द्रोणाचार्य मेरी रक्षा करेंगे और या मुझे यहाँ से अपने घर जाने की आज्ञा दीजिए।

हे अर्जुन! राजा दुर्योधन ने ख़ुद द्रोणाचार्य से जयद्रथ की रक्षा करने के लिए विशेष रूप से प्रार्थना की है। देखो, द्रोणाचार्य ने तुम्हारी प्रतिज्ञा व्यर्थ करके जयद्रथ के प्राण बचाने की तैयारी शुरू कर दी है। सब योद्धा और उनके रथ, युद्ध के लिए, अभी से तैयार हो रहे हैं। द्रोणाचार्य ने विचित्र व्यूह की रचना की है; उसका पिछला आधा हिस्सा पद्मव्यूह है और आगे का आधा हिस्सा शकटव्यूह। पद्मव्यूह का जो अंश है उसके मध्य में एक और सूचीमुख व्यूह बनाया गया है। उसी सूचीव्यूह के पिछले हिस्से में जयद्रथ रहेगा। कर्ण, भूरिश्रवा, अश्वत्थामा, दुर्जय वृषसेन, कृपाचार्य और शल्य ये छः महारथी उस व्यूह के अग्रभाग की रक्षा करेंगे। हे पार्थ! ये छहों महारथी धनुर्विद्या, अस्त्रकौशल, वीर्य, दम और कस में अद्वितीय और दुर्द्धर्ष हैं। हे अर्जुन! तुम इन छहों में से हर एक के बल-वीर्य के बारे में अलग-अलग विचार करके देखो। फिर जब ये छहों मिलकर युद्ध करेंगे तब इन्हें सहज में जीत लेना सर्वथा असम्भव होगा। अतएव मैं मन्त्रणा-निपुण, दूरदर्शी, बुद्धिमान्, हितैषी मन्त्रियों के २१ साथ फिर कार्यसिद्धि और अपने हित का उपाय सोचूँगा।

छियत्तरवाँ अध्याय

अर्जुन का श्रीकृष्ण से अपनी शक्ति का वर्णन करना

अर्जुन ने कहा—हे वासुदेव ! दुर्योधन के जिन छः महारथियों को आप बहुत बलवान् मानते हैं वे, मेरी समझ में, सब मिलकर भी मेरे समान नहीं हैं। मैं तो समझता हूँ कि उनका बल-वीर्य मेरे आधे बल-वीर्य के बराबर भी नहीं है। हे मधुसूदन ! आप देखेंगे कि मैं जयद्रथ को मारने की इच्छा से इन सबके अस्त्र-शस्त्रों को अपने अस्त्र-शस्त्रों से निष्फल कर दूँगा। अपने अनुचरों सहित द्रोणाचार्य खड़े देखते रहेंगे और मैं अपने बाणों से जयद्रथ का सिर काटकर गिरा दूँगा। यदि साध्यगण, ग्यारहों रुद्र, आठों वसु, अश्विनीकुमार, मरुद्गण, इन्द्र, विश्वेदेवा, अन्य लोकपालगण, पितर, गन्धर्व, गरुड़, समुद्र, स्वर्ग, आकाश, यह पृथ्वी, सब दिशाएँ, दिक्पाल देवता, गाँव के और वन के सब जीव, स्थावर और जङ्गम प्राणी मिल करके सिन्धुराज जयद्रथ की रक्षा करेंगे तो भी कल सवेरे आप मेरे बाणों से रण में उसको मरा हुआ ही देखेंगे। हे श्रीकृष्ण ! मैं यह बात सत्य की क़सम खाकर और शस्त्र छूकर कहता हूँ। हे केशव ! उस पापी जयद्रथ की रक्षा करनेवाले महारथी द्रोणाचार्य के ऊपर ही मैं

सबसे पहले आक्रमण करूँगा। दुष्ट दुर्योधन का विश्वास है कि द्रोणाचार्य के ऊपर ही उसकी हार-जीत निर्भर है। इसलिए उन्हीं द्रोणाचार्य की सेना के अगले भाग को चीर करके मैं जयद्रथ के पास पहुँचूँगा। कल आप देखेंगे कि वज्रपात से जैसे पहाड़ों के शिखर फटते हैं वैसे ही बड़े-बड़े वीर योद्धा मेरे तीक्ष्ण बाणों से विदीर्ण हो-होकर युद्धभूमि में गिर रहे हैं। गिरते हुए और गिरे हुए मेरे तीक्ष्ण बाणों से विदीर्ण-देह नर, हाथी, घोड़े आदि के शरीरों से रक्त की नदी बह चलेगी। मेरे गाण्डीव धनुष से छूटे हुए, मन और हवा के समान वेग से ११ जानेवाले, तीक्ष्ण बाण हज़ारों मनुष्यों, हाथियों और घोड़ों के जीवन को नष्ट करेंगे। इस महायुद्ध में योद्धा लोग मेरे उन महाघोर अस्त्रों को देखेंगे जिन्हें मैंने इन्द्र, यम, कुबेर, रुद्र और वरुण आदि देवताओं से प्राप्त किया है। हे श्रीकृष्ण ! कल आप देखेंगे कि जयद्रथ की रक्षा

करनेवालों के अस्त्रों को मैं ब्रह्मास्त्र के प्रयोग से नष्ट करूँगा। कल युद्ध में आप देखेंगे कि मैं अपने बाणों के वेग से राजाओं के सिर काटकर उनसे रणभूमि को पाट दूँगा। मैं मांसा-हारी जीवों को तृप्त करूँगा, शत्रुपक्ष की सेना को मार भगाऊँगा, मित्रों को प्रसन्न करूँगा और जयद्रथ को मारूँगा। बहुत से अपराध करनेवाला, निन्दित नातेदार, पापदेश में उत्पन्न राजा जयद्रथ मेरे हाथ से मरकर अपने आत्मीयों को शोक में डालेगा। सिन्धुदेश के सब दूध-भात के खानेवाले, पापाचारी क्षत्रिय अपने राजा जयद्रथ के साथ मेरे बाणों से मर-मरकर यमपुर को जायँगे। हे श्रीकृष्ण! कल सबेरे मैं ऐसा अद्भुत कर्म करूँगा जिससे दुर्योधन को मानना पड़ेगा कि त्रिभुवन में मेरे समान दूसरा योद्धा नहीं है। मेरा गाण्डीव दिव्य धनुष है, मैं स्वयं युद्ध २० करनेवाला हूँ और आप मेरे सारथी हैं। फिर मैं किसे परास्त नहीं कर सकता? भगवन्! आपकी कृपा से मैंने समर में कहाँ विजय नहीं पाई? मुझे अजेय दुर्द्धर्ष जानकर भी, मेरे असह्य पराक्रम को जानकर भी, आप क्यों मेरा तिरस्कार कर रहे हैं? चन्द्रमा में चिह्न और समुद्र में जल जैसे स्थिर है वैसे ही मेरी प्रतिज्ञा भी अटल है। हे वासुदेव! आप मेरी, मेरे अस्त्रों की, दृढ़ दिव्य धनुष की और मेरे बाहुबल की अवमानना न कीजिए। मैं संग्राम में इस तरह जाऊँगा कि किसी से नहीं हारूँगा और सबको जीत लूँगा। मेरी सत्य प्रतिज्ञा है। आप जयद्रथ को मरा हुआ ही समझिए। ब्राह्मण में सत्य, सज्जनों में नम्रता, यज्ञ में श्री और नारायण में जय नित्य निरन्तर विराजमान है।

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! श्रीकृष्ण से यों कहकर, आप अपने पराक्रम का वर्णन करने के उपरान्त, अपनी शक्ति पर भरोसा करके अर्जुन ने कहा—हे श्रीकृष्ण! आप ऐसा २७ उद्योग कीजिए जिसमें सबेरा होते ही मुझे रथ तैयार मिले और मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो।

सतहत्तरवाँ अध्याय

श्रीकृष्ण का अपनी बहन सुभद्रा को समझाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! दुःख और शोक से पीड़ित अर्जुन और श्रीकृष्ण ने वह रात जागकर ही बिता दी। वे क्रुद्ध साँप की तरह साँसें लेते रहे। इस तरह नर और नारायण को अत्यन्त कुपित जानकर इन्द्र आदि सब देवता बहुत ही घबराये और व्यथित होकर सोचने लगे कि इसका फल क्या होगा। कौन सी दुर्घटना, कौन सा महा अनर्थ होने-वाला है? उस समय अत्यन्त दारुण आँधी धूल उड़ाती हुई वेग से चलकर घोर अमङ्गल की सूचना देने लगी। आदित्यमण्डल में कबन्ध और मण्डल (परिध) देख पड़ने लगा। बिना मेघों के दारुण वज्राघात शब्द होने लगे, कड़क-कड़ककर बिजलियाँ गिरने लगीं। पर्वत-

वन-सहित पृथ्वी वारम्वार काँपने लगी। वड़े-वड़े जल-जन्तुओं के निवासस्थान समुद्र क्षोभ को प्राप्त होने लगे। नदियों की धाराएँ उलटी वहने लगीं। मांसाहारी जीवों को आनन्दित और यमपुरी को परिपूर्ण करने के लिए रथियों, हाथियों, घोड़ों और पैदलों के दोनों ओठ फड़कने लगे। सब वाहन एक साथ मल-मूत्र त्याग करते हुए रोने लगे। इन दारुण उत्पातों को देखकर और महावली अर्जुन की उग्र प्रतिज्ञा का हाल सुनकर आपके पक्ष के सब योद्धा और सैनिक अत्यन्त व्यथित और खिन्न हो गये।

इधर महावीर अर्जुन ने कृष्णचन्द्र से कहा—हे केशव! आप जाकर अपनी वहन सुभद्रा, वहू उत्तरा और उसकी सखियों को समझाइए; उनका शोक दूर कीजिए। सामवाक्य, सत्योपदेश आदि के द्वारा किसी तरह उनको ढाढ़स वँधाइए। अर्जुन के यों कहने पर अत्यन्त १० उदास कृष्णचन्द्र अर्जुन के घर में गये और वहाँ पुत्र-शोक से पीड़ित, व्याकुल, अपनी वहन सुभद्रा को इस तरह समझाने लगे—सुनो वहन! तुम और तुम्हारी वहू उत्तरा दोनों ही वीर कुमार अभिमन्यु की मृत्यु के लिए शोक मत करो। हे सुभद्रा! काल के द्वारा सभी प्राणियों की एक दिन यही गति होती है। उत्तम कुल में उत्पन्न वीर क्षत्रियश्रेष्ठ अभिमन्यु की मृत्यु उसके योग्य ही हुई है; सम्मुखयुद्ध में लड़ते-लड़ते मरना क्षत्रियोचित मृत्यु है। इसलिए तुम पुत्र की मृत्यु का शोक मत करो। मैं तो इसे उसके लिए वड़े भाग्य की वात मानता हूँ, जो पिता के तुल्य पराक्रमी धीर महारथी अभिमन्यु क्षत्रियधर्म के अनुसार उस गति को प्राप्त हुआ, जिसकी सब क्षत्रिय इच्छा करते हैं। वहुत से शत्रुओं को जीतकर और मारकर वीर अभि-

मन्यु उन अक्षय लोकों को गया है जहाँ पुण्यात्मा लोग जाते हैं और सब तरह की इच्छाएँ पूरी होती हैं। सज्जन लोग तप, ब्रह्मचर्य, वेद-शास्त्र के अध्ययन और प्रज्ञा आदि सत्कर्मों के द्वारा जो गति प्राप्त करने का उद्योग करते हैं, वही गति तुम्हारे पुत्र को प्राप्त हुई है। हे सुभद्रा! तुम वीर वालक की माता, वीर पति की पत्नी, वीर पिता की वेटी और वीर भाई की वहन हो। इसलिए तुम्हें अपने पुत्र का शोक न करना चाहिए। उसको परमगति प्राप्त

हुई है। बहन! तुम धीरज धरो, पापमति बाल-घातक जयद्रथ बहुत जल्द अपने इष्ट-मित्र-अनुचर आदि सहित अपने किये का फल भोगेगा। यह रात बीतते ही पापी जयद्रथ इन्द्र की अमरावती पुरी में भी जाकर क्यों न अपनी जान बचाना चाहे, लेकिन अर्जुन के हाथ से जीता नहीं बचेगा। यह निश्चित समझो कि कल के दिन जयद्रथ का सिर धड़ पर न रहेगा। इस-
२० लिए शोक करना छोड़ो, रोना बन्द करो। फिर यह भी विचार करो कि वह वीर बालक जिस तरह क्षत्रियधर्म का पालन करते-करते श्रेष्ठ गति को प्राप्त हुआ है, उसी तरह हम लोग और अन्य सब शस्त्रधारी लोग एक दिन उसी गति को पहुँचेंगे। चौड़ी छाती और बड़ी बाहुओंवाला महारथी अभिमन्यु असंख्य शत्रुओं के आगे से नहीं हटा और लड़ते-लड़ते हज़ारों शत्रुओं को मारकर स्वर्ग को गया है। इसलिए तुम सब शोक-सन्ताप करना छोड़ो। बहन, अपनी बालिका बहू को ढाढ़स बँधाओ और ख़ुद शोक करना छोड़ो। सवेरे शत्रु के मारे जाने की ख़बर सुनने से तुम्हारा शोक दूर हो जायगा। अर्जुन ने जो प्रतिज्ञा की है वह अवश्य पूरी होगी, वह मिथ्या नहीं हो सकती। तुम्हारे पति जो करना चाहते हैं वह कदापि निष्फल नहीं होता। मैं फिर कहता हूँ कि अगर मनुष्य, नाग, पिशाच, राक्षस, पक्षी, देवता, दैत्य आदि सब मिलकर युद्धभूमि में जयद्रथ की रक्षा करेंगे, तो भी कल सवेरे उन सबके
२६ साथ जयद्रथ जीवित नहीं रह सकता।

अठहत्तरवाँ अध्याय

सुभद्रा का विलाप और श्रीकृष्ण का उन्हें फिर समझाना-बुझाना

सञ्जय कहते हैं कि राजन्! पुत्रशोक से विह्वल और अत्यन्त दुःखित सुभद्रा, श्रीकृष्ण के ये वाक्य सुनकर, इस तरह विलाप करने लगीं—हा पुत्र! तुम तो पिता के तुल्य पराक्रमी थे, फिर कैसे संग्राम में शत्रुओं के हाथ से मारे गये! नीलकमल के समान साँवला, सुन्दर दाँतों और विशाल नेत्रों से शोभित तुम्हारा मनोहर मुख आज युद्धभूमि की धूल से भरा हुआ कैसा दिखाई पड़ रहा है! अवश्य ही सब लोग देख रहे होंगे कि सुन्दर सिर, ग्रीवा, बाहु, कन्धे, चौड़ी छाती, गम्भीर नाभि और मनोहर लोचनों से शोभायमान, सारे शरीर में लगे हुए शस्त्रों के घावों से अलङ्कृत, शूर, संग्राम से पीछे न हटनेवाले तुम पृथ्वी पर उदय हुए चन्द्रमा के समान पड़े हुए हो। हाय, अभी तो तुम्हारी शुरू जवानी थी, तुम्हारे सुन्दर अङ्ग अभी परिपुष्ट हुए थे। पहले जो बहुमूल्य कोमल प्रार्थनीय बिछौनोंवाली सुख-शय्या पर लेटते थे, वही सुख-भोग के योग्य तुम आज कैसे बाणों से बिंधे हुए युद्धभूमि में पड़े हुए हो और गिदड़ियाँ तुमको घेरे हुए हैं। पहले जिस महाबाहु को सुन्दरी स्त्रियाँ घेरे रहती थीं और प्रसन्नचित्त सूत-मागध-

वन्दीजन स्तुतिपूर्वक जिसकी उपासना करते थे, वही तुम आज युद्धभूमि में पड़े हुए हो और मांसाहारी जीव तुम्हारे चारों ओर घोर शब्द से चिल्ला रहे हैं। हाय पुत्र! वीर पाञ्चाल, पाण्डव और यादव तुम्हारे सहायक थे, फिर किसने किस तरह अनाथ की भाँति तुमको मार डाला? हाय निष्पाप पुत्र! मुझ अभागिन के नेत्र तुमको देखकर तृप्त नहीं होते थे। इसलिए तुम्हें देखने को अवश्य आज मैं यमराज की पुरी को जाऊँगी। हे पुत्र! तुम्हारे विशाल नेत्र, मनोहर केश, सुगन्धित मुख और मधुर वचनों से युक्त व्रणशून्य मुखमण्डल को अब मैं फिर कब देखूँगी? भीमसेन के बल, अर्जुन की धनुर्विद्या, यादवों और पाञ्चालों के बाहुबल तथा केकय-मत्स्य-सृञ्जय आदि देशों के वीरों को धिक्कार है, जो वे युद्धभूमि में तुम्हारी रक्षा नहीं कर सके। मेरे नेत्र शोक के आँसुओं से व्याकुल हैं। अभिमन्यु को न देखने के कारण आज मुझे सारी पृथ्वी अन्धकारमयी और सूनी देख पड़ रही है। तुम वासुदेव के भानजे, अर्जुन के वीर पुत्र और अतिरथी थे। संग्रामभूमि में तुम्हारी लाश को मैं कैसे देख सकूँगी! हे पुत्र! आओ आओ, तुम्हें भूख लगी होगी, मेरे स्तनों में दूध भरा हुआ है। मुझ मन्दभागिनी की गोद में बैठकर दूध पी लो। मैं तुम्हें देखकर तृप्त नहीं हुई हूँ। हाय वीर! तुम स्वप्न के मिले धन की तरह दिखाई पड़कर अचानक नष्ट हो गये। अहो, मनुष्य-शरीर अनित्य और जल में उठनेवाले बुल्ले की तरह चञ्चल है। बेटा अभिमन्यु! तुम्हारी यह तरुणी भार्या उत्तरा, तुम्हारे शोक से, व्याकुल हो रही है। वृषभ-हीन गाय की तरह बिलखती हुई इस बहू को मैं किस तरह समझाऊँगी और रक्खूँगी? अहो, पुत्र! सङ्कट-समय में मुझे छोड़कर तुम चले गये। जब पुत्र के होने का फल मिलने का समय आया तब तुम मुझे दर्शनों को तरसती छोड़ चल बसे! काल की गति को बड़े-बड़े समझदार भी नहीं जान सकते! कौन जानता था कि केशव ऐसे सहायक रक्षक के रहते तुम यों अनाथ की तरह संग्राम में मारे जाओगे! अच्छा, जाओ पुत्र! यज्ञ करनेवाले, दानी, जितेन्द्रिय, आत्मज्ञानी ब्राह्मण, ब्रह्मचारी, पुण्य तीर्थों में नहानेवाले, कृतज्ञ, उदार, गुरुसेवा-परायण और सहस्र दक्षिणा दान करनेवाले धर्मात्माओं की जो गति होती है वही श्रेष्ठ गति तुमको मिले। संग्राम में पीठ न दिखानेवाले योद्धा लोग युद्ध में शत्रुओं को मारकर मरने पर जो गति पाते हैं वही गति तुम्हें मिले। सहस्र गोदान करनेवालों, यज्ञ के लिए दान करनेवालों, सब सामग्री सहित गृह-दान करनेवालों की जो शुभ गति होती है; आश्रय देने योग्य ग़रीब ब्राह्मणों को धन-रत्न दान करनेवालों, निरभिमान और संन्यासियों की जो गति होती है; अथवा दण्डनीय पापियों को उचित दण्ड देनेवालों की जो गति होती है, वही गति तुम्हें प्राप्त हो। व्रतधारी मुनियों को ब्रह्मचर्य-पालन करने से और पतिव्रताओं को पति-सेवा से जो गति मिलती है, वही गति तुम्हें प्राप्त हो। सदाचार का पालन करके राजा लोग जिस श्रेष्ठ गति को पाते हैं, चारों आश्रमों के लोग अपने-अपने धर्म का पालन करके

और पुण्यात्मा लोग पुण्य की रक्षा करके जो सनातनी गति पाते हैं, वही गति तुम्हें प्राप्त हो। दीन जनों पर दया करनेवाले, सदा सबको बाँटकर खानेवाले और छल-प्रपञ्च या चुग़ली न करनेवाले जिस गति को पाते हैं वही गति तुम्हें प्राप्त हो। जो लोग व्रत-नियम आदि का पालन करते हैं, धर्मात्मा हैं, गुरुजन की सेवा करते हैं और अतिथि को विमुख नहीं जाने देते उन्हें जो गति प्राप्त होती है वही शुभ गति तुम्हें प्राप्त हो। कष्ट और सङ्कट के समय जो अपने को ३० सँभाले रहते हैं, शोक की आग में जलकर भी जो धैर्य को नहीं छोड़ते, सदा माता-पिता की सेवा करते रहते हैं और अपनी स्त्री के सिवा अन्य स्त्री की ओर आँख उठाकर नहीं देखते, उन्हें जो गति प्राप्त होती है, वही गति तुम्हें प्राप्त हो। ऋतुकाल में अपनी स्त्री का सहवास करनेवालों और परस्त्री-गमन से विमुख मनीषी पुरुषों को जो गति प्राप्त होती है वही गति तुम्हें प्राप्त हो। जो ईर्ष्याशून्य पुरुष सबको समदृष्टि से देखते हैं, किसी को मर्मपीड़ा नहीं पहुँचाते और जो क्षमाशील हैं उनको जो गति प्राप्त होती है वही गति तुम्हें प्राप्त हो। जो लोग मदिरा नहीं पीते; मांस नहीं खाते; मद, दम्भ, झूठ, पर-सन्ताप और अन्याय से बचे रहते हैं, उन्हें जो गति प्राप्त होती है वही गति तुम्हें प्राप्त हो। लोक-लज्जा का ख़याल रखनेवाले, सब शास्त्रों के ज्ञाता, ज्ञान से ही तृप्त, जितेन्द्रिय सज्जनों को जो गति प्राप्त होती है वही गति तुम्हें प्राप्त हो।

शोक से पीड़ित होकर सुभद्रा दीन भाव से इस तरह विलाप कर रही थीं, इसी समय उत्तरा को साथ लिये द्रौपदी भी वहाँ आ गईं। वे सब बहुत विलाप करके रोने लगीं। वे अत्यन्त दुःख से उन्मत्त सी और अचेत होकर पृथ्वी पर गिर पड़ीं। अत्यन्त दुःखित श्रीकृष्ण ने दुःख से विह्वल सुभद्रा को अनेक उपचारों से सचेत किया। पानी छिड़ककर वे उनको होश में लाये। इसके बाद कृष्णचन्द्र ने अचेत सी, रोती-काँपती हुई, पृथ्वी पर लोट रही सुभद्रा से कहा—बहन, तुम पुत्र के लिए शोक मत करो। और हे पाञ्चाली द्रौपदी, ४० तुम उत्तरा को समझाओ। क्षत्रियश्रेष्ठ वीर अभिमन्यु उस प्रशंसनीय गति को प्राप्त हुआ है जिसके लिए क्षत्रिय लोग सदा लालायित रहते हैं। हे वरानने! मैं तो यही चाहता हूँ कि हम लोगों के कुल में और जितने पुरुष हैं वे यशस्वी अभिमन्यु की सी गति पावें। हम लोग और हमारे पक्ष के सब लोग मिलकर जो कर सकते हैं वह तुम्हारे अकेले महारथी पुत्र ने कर दिखाया है। इसलिए उसकी मृत्यु कदापि शोचनीय नहीं है।

कृष्णचन्द्र इस तरह अपनी बहन, द्रौपदी और उत्तरा को समझा-बुझाकर अर्जुन के पास गये। वहाँ राजाओं, मित्रों और अर्जुन को विश्राम के लिए आज्ञा देकर वे ख़ुद विश्राम करने ४४ के लिए अन्तःपुर में गये। और सब लोग भी अपने-अपने डेरे में विश्राम करने के लिए गये।

उन्नासीवाँ अध्याय

श्रीकृष्ण और दारुक का संवाद

सञ्जय कहते हैं—इसके उपरान्त महात्मा श्रीकृष्ण अर्जुन के भवन में गये। वहाँ हाथ-पैर धोकर उन्होंने अच्छे स्थान में वैडूर्यमणि के रङ्गवाले हरे कुशों की शुभ-शय्या बिछाई। फिर विधिपूर्वक मङ्गल माल्य, अक्षत, गन्धद्रव्य आदि से उसे अलङ्कृत करके उसके चारों ओर श्रेष्ठ शस्त्र रक्खे। इसके बाद अर्जुन जब जल-स्पर्श आचमन आदि कर चुके तब विनीत परिचारक नित्य रात्रि को दी जानेवाली रुद्र की बलि ले आये। अब अर्जुन ने महादेव की पूजा की और बलि दी। इसके उपरान्त प्रसन्न चित्त से उन्होंने गन्ध-माला आदि से श्रीकृष्ण की पूजा की और उन्हें भी रात्रि के योग्य उपहार अर्पण किये। तब अर्जुन को साधुवाद देकर कृष्णचन्द्र ने कहा—अर्जुन! तुम्हारा कल्याण हो, अब तुम जाकर आराम करो। मैं भी तुम्हारे भले के लिए जाता हूँ।

अर्जुन के हितचिन्तक भगवान् वासुदेव द्वार पर सशस्त्र सावधान द्वारपालों को तैनात करके, दारुक सारथी को साथ लिये, अपने शिविर में गये। वहाँ सफ़ेद शय्या पर लेट करके महायशस्वी विष्णुस्वरूप भगवान् कृष्णचन्द्र बहुत से कर्त्तव्यों के बारे में सोचने लगे। उन्होंने अर्जुन के शोक-दु:ख को मिटानेवाली और तेज तथा द्युति को बढ़ानेवाली व्यवस्था योगबल के द्वारा कर दी। राजन्! उस रात को पाण्डवों के शिविर में किसी को नींद नहीं आई। सब लोग इस प्रकार सोचते रहे कि पुत्रशोक से पीड़ित वीर अर्जुन ने कल सबेरे जयद्रथ को मारने की प्रतिज्ञा की है। महाबाहु शत्रुदमन अर्जुन उस अपनी प्रतिज्ञा को किस तरह पूर्ण करेंगे! पुत्रशोक से विह्वल होकर अर्जुन यह बड़ी दुष्कर प्रतिज्ञा कर बैठे हैं। [एक तो जयद्रथ स्वयं साधारण योद्धा नहीं है, उस पर] दुर्योधन ने अपने पराक्रमी भाइयों, महारथी योद्धाओं और असंख्य सेना को जयद्रथ की रक्षा के लिए नियुक्त कर रक्खा है। हम लोग यही चाहते हैं कि महाबली अर्जुन युद्ध में जयद्रथ और अन्य शत्रुओं को मारकर, प्रतिज्ञारूप महाव्रत से उत्तीर्ण होकर, विजयी और सुखी हों। जो कल वे जयद्रथ का वध नहीं कर पावेंगे तो अवश्य ही जलती हुई चिता में अपने प्राण दे देंगे; क्योंकि अर्जुन कभी अपनी प्रतिज्ञा को टाल नहीं सकते। धर्मराज युधिष्ठिर की सम्पूर्ण विजय अर्जुन के ऊपर ही निर्भर है। यदि अर्जुन अपने प्राण दे देंगे तो फिर धर्मपुत्र युधिष्ठिर भी जीवित नहीं रह सकेंगे। इसलिए यदि हमने कुछ दान, हवन या पुण्य किया है तो उसके फल से अर्जुन अपने शत्रुओं पर विजय पावें। राजन्! इस तरह आपस में कहकर, अर्जुन की जय मनाते हुए, वीरों ने वह रात बड़े कष्ट से बिताई।

इधर उसी रात को श्रीकृष्ण ने जागकर और अर्जुन की प्रतिज्ञा का स्मरण करके सारथी से कहा—हे दारुक! पुत्र-वध से शोकाकुल अर्जुन ने कल जयद्रथ को मारने

१०

की है। उसकी ख़बर पाकर दुर्योधन, अपने मन्त्रियों से सलाह करके, ऐसा उपाय करेगा जिसमें अर्जुन युद्ध में जयद्रथ का वध न कर सकें। दुर्योधन की कई अक्षौहिणी सेना और

पुत्र सहित सब अस्त्रों के ज्ञाता द्रोणाचार्य अवश्य जयद्रथ की रक्षा करेंगे। आचार्य जिसकी रक्षा करें उसे, दैत्यों और दानवों के दर्प को मिटानेवाले, अद्वितीय वीर इन्द्र भी नहीं मार सकते। परन्तु मैं कल वह उपाय करूँगा जिससे सूर्य के अस्त होने से पहले ही अर्जुन जयद्रथ को मार लेंगे। स्त्री-मित्र-सजातीय बन्धु-बान्धव आदि कोई भी मुझे अर्जुन से बढ़कर प्रिय नहीं है। मैं क्षण भर भी इस पृथ्वी को अर्जुन-रहित नहीं देख सकता। अतएव चाहे जिस तरह हो, कल अवश्य ही अर्जुन की प्रतिज्ञा पूरी होगी। मैं ख़ुद, अर्जुन के लिए, सहसा चतुरङ्गिणी सेना सहित कर्ण और दुर्योधन आदि सबको जीतकर मार डालूँगा। हे दारुक! कल अर्जुन के लिए मैं ख़ुद युद्ध करूँगा और तीनों लोकों के निवासी मेरे पराक्रम को देखेंगे। मैं कल हज़ारों राजाओं, सैकड़ों राजपुत्रों और चतुरङ्गिणी सेना को मार भगाऊँगा। मैं क्रुद्ध होकर तुम्हारे आगे ही अर्जुन के लिए अपने सुदर्शन चक्र

३१ से उन राजाओं की सेना को मार गिराऊँगा। कल देवता, गन्धर्व, पिशाच, नाग, राक्षस और त्रिभुवन के सब प्राणी जान लेंगे कि मैं अर्जुन का मित्र हूँ। जो अर्जुन का शत्रु है वह मेरा शत्रु है और जो अर्जुन का मित्र है वह मेरा मित्र है। तुम निश्चित समझो कि अर्जुन मेरा आधा शरीर है; हम दोनों मित्र "एक प्राण दो देह" हैं। हे दारुक! तुम प्रातःकाल होते ही मेरे श्रेष्ठ सुसज्जित रथ को लेकर मेरे साथ युद्धभूमि में चलना। रथ पर गदा, दिव्य शक्ति, चक्र, धनुष-बाण आदि शस्त्र और युद्ध की सब सामग्री रख लेना। उसमें रथ की शोभा बढ़ानेवाले गरुड़ से अलङ्कृत ध्वजा और छत्र लगा देना। सूर्य और अग्नि के समान चमकीले, विश्वकर्मा के द्वारा निर्मित सुवर्णजाल से शोभित बलाहक, मेघपुष्प, शैव्य और सुग्रीव नाम के चारों घोड़े जोतकर, कवच पहन करके, तुम रथ पर तैयार रहना। ज्योंही तुम्हें मेघगर्जन-सदृश मेरे पाञ्चजन्य शङ्ख का गम्भीर शब्द सुन पड़े त्योंही तुम वेग से मेरे पास आ जाना। हे

४० दारुक! मैं अपने फुफेरे भाई अर्जुन के सब दुःख और क्रोध को एक ही दिन में, शत्रुवध

करके, शान्त कर दूँगा। मैं सब प्रकार से ऐसा यत्न करूँगा कि दुर्योधन आदि के सामने ही अर्जुन दुष्ट जयद्रथ को मार लेंगे। मुझे पूरी आशा है कि युद्धभूमि में कल अर्जुन जिसे-जिसे मारने का यत्न करेंगे उसे-उसे मार डालेंगे।

दारुक ने कहा—हे पुरुषोत्तम! स्वयं आप जिसका रथ हाँकते हैं उस भाग्यशाली की जय होना सर्वथा निश्चित है। उसकी हार कहाँ से हो सकती है। आपने मुझे जो आज्ञा दी है उसी के अनुसार मैं सब काम करूँगा। कल सुप्रभात होगा और अर्जुन अवश्य विजय प्राप्त करेंगे। ४४

अस्सी अध्याय

अर्जुन का स्वप्नावस्था में श्रीकृष्ण के साथ कैलास पर जाना

सञ्जय कहते हैं—राजन्! उधर अचिन्त्य-पराक्रमी अर्जुन अपनी की हुई प्रतिज्ञा को और जयद्रथ की रक्षा के लिए की हुई दुर्योधन की सलाह को सोचते-सोचते कुछ निद्रित हो गये। अब शोकपीड़ित अर्जुन के निकट स्वप्नावस्था में गरुड़ध्वज श्रीकृष्ण आये। भक्ति और प्रेम से परिपूर्ण अर्जुन सदा, सभी अवस्थाओं में, उठकर श्रीकृष्ण का आदर करते थे। उस समय भी श्रीकृष्ण को देखकर उन्होंने उठकर उनका आदर-सत्कार किया और बैठने के लिए उन्हें आसन दिया। किन्तु आप आसन पर नहीं बैठे, खड़े ही रहे। महातेजस्वी कृष्णचन्द्र ने अर्जुन के मन की बात को भाँपकर बैठकर कहा—हे पार्थ! तुम खेद न करो। यह बली काल बहुत ही दुर्जय है। काल ही सब प्राणियों को भवितव्यता के लिए विवश करता है। हे नरश्रेष्ठ! बतलाओ तो, तुम क्यों खेद कर रहे हो? तुम श्रेष्ठ ज्ञानी हो। जो समझदार हैं वे शोक नहीं करते। तुमको भी शोक नहीं करना चाहिए। शोक से सब काम बिगड़ जाते हैं। अपने कर्तव्य का पालन करो। जो मनुष्य हाथ पर हाथ रक्खे केवल शोक किया करता है उसका वह शोक ही शत्रु है। हे मित्र! शोक करनेवाला मनुष्य अपने शत्रुओं को प्रसन्न और बान्धवों को दुखी करता है। वह स्वयं भी मर मिटता है। इसलिए तुम शोक मत करो।

यह सुनकर अर्जुन ने कहा—हे श्रीकृष्ण! मैं प्रतिज्ञा कर चुका हूँ कि अपने पुत्र की १० हत्या के मूल-कारण दुर्मति जयद्रथ को कल अवश्य मारूँगा। यह निश्चित है कि मेरी प्रतिज्ञा पूरी न होने देने के लिए दुर्योधन आदि कौरव कुछ उठा न रक्खेंगे। वे जयद्रथ को सारी सेना के पीछे रक्खेंगे और उनके पक्ष के सब महारथी मिलकर उसकी रक्षा करेंगे। हे श्रीकृष्ण! दुर्योधन की अत्यन्त दुर्जेय ग्यारह अक्षौहिणी सेना, जो मरने से बची है, जयद्रथ की रक्षा करेगी और सब महारथी भी उसे बचाने का उद्योग करेंगे। ऐसी दशा में दुरात्मा जयद्रथ के पास

तक मैं कैसे पहुँचूँगा और उसे देखूँगा ? ख़ासकर इन दिनों सूर्य के दक्षिणायन होने के कारण दिन छोटा होता है। इससे, इतने थोड़े समय में, इतनी सेना को नष्ट करके जयद्रथ तक पहुँचना असम्भव जान पड़ता है। जब वह दुष्ट मुझे नहीं मिलेगा और इसी कारण मैं उसको नहीं मार सकूँगा, तब मेरी प्रतिज्ञा कैसे पूरी होगी ? प्रतिज्ञा पूरी न होने पर मुझ सा मानी पुरुष कैसे जीता रह सकता है ? हे वीर ! इस समय दुःख-विनाश की मेरी आशा नष्ट सी हो रही है। प्रातःकाल होने में अब देर नहीं है, इसी से मैं आपसे यह कह रहा हूँ।

महाराज ! अर्जुन के शोक का कारण सुनकर श्रीकृष्ण आचमन करके, पूर्वमुख होकर, आसन पर बैठ गये। इसके बाद वे अर्जुन के हित और जयद्रथ के वध के लिए इस प्रकार कहने लगे—हे अर्जुन ! देवादिदेव महादेव ने जिसके द्वारा सब दैत्यों का नाश किया था वह दिव्य सनातन पाशुपत अस्त्र अगर तुम्हें स्मरण है तो उसकी सहायता से कल तुम अवश्य जयद्रथ को मार सकोगे। वह अस्त्र तुम एक बार शङ्कर से प्राप्त कर चुके हो; किन्तु यदि उसे भूल गये हो तो इस समय एकाग्र मन से उस अस्त्र की प्राप्ति के लिए भगवान् शङ्कर का ध्यान २० करो। तुम उनके भक्त हो, इस कारण उनके प्रसाद से वह महान् दिव्य अस्त्र अवश्य तुम्हें प्राप्त होगा।

यह सुनकर अर्जुन ने आचमन किया और पृथ्वी पर बैठकर वे एकाग्र चित्त से शङ्कर का ध्यान करने लगे। थोड़ी देर में शुभ ब्राह्म मुहूर्त्त (चार घड़ी रात रहे) उपस्थित होने पर अर्जुन ने अपने को कृष्णचन्द्र के साथ आकाशमार्ग में जाते हुए देखा। श्रीकृष्ण उनका दाहना हाथ पकड़े हुए थे और वे हवा के समान वेग से ज्योतिष्कमण्डली-पूर्ण, सिद्ध-चारण-सेवित आकाशमार्ग द्वारा जाकर पवित्र हिमालय पर्वत के शिखर और मणिमान् पर्वत पर पहुँचे। अनेक अद्भुत दृश्य देखते हुए धर्मात्मा अर्जुन उत्तर दिशा में चले। उन्होंने श्वेत पर्वत देखा; कुबेर की विहार-वाटिका में पद्मों से शोभित सुन्दर सरोवर देखा। फिर सदा फूलने-फलनेवाले वृक्षों से शोभित और स्फटिक शिलाओं

से अलङ्कृत अगाध जलवाली, श्रेष्ठ नदी गङ्गा को देखा। गङ्गा-तट पर अनेक सिंह, व्याघ्र और अनेक प्रकार के मृग विचर रहे थे; पवित्र आश्रम शोभायमान थे और मनोहर पक्षी उड़ रहे थे। उसके आगे जाकर उन्होंने मन्दराचल के विविध स्थानों को देखा। उनमें किन्नरों के

अर्जुन को, तपस्या में निरत, देवदेव महात्मा शंकर देख पड़े।—पृ० २३३९

गाने का शब्द गूँज रहा था। अनेक ओषधियों के प्रकाश से परिपूर्ण सोने-चाँदी के शिखर और फूले हुए कल्पवृक्ष उसकी शोभा बढ़ा रहे थे। फिर अञ्जन-राशि के तुल्य काल पर्वत देखा। ३० आगे ब्रह्मतुङ्ग पर्वत, अनेक नदियाँ, अनेक देश, अनेक नगर, बहुत ऊँचे शतशृङ्ग पर्वत, शर्याति-वन, पवित्र अश्वशिरा ऋषि का स्थान, आथर्वण ऋषि का स्थान, वृषदंश शैल और महामन्दर पर्वत देखा। उस पर्वत पर अप्सराएँ और किन्नर विहार कर रहे थे। उस पर्वत पर जाते-जाते अर्जुन सहित श्रीकृष्ण ने देखा कि यह पृथ्वीमण्डल पवित्र झरनों और सुवर्ण आदि धातुओं की खानों से युक्त तथा चन्द्रमा की किरणों से प्रकाशित हो रहा है; अनेक नगर माला की तरह इसे घेरे हुए हैं। उन्होंने अनेक रत्नों के आकर और अद्भुत आकारवाले समुद्रों को भी देखा। धनुष से छूटे हुए बाण की तरह श्रीकृष्ण सहित अर्जुन आकाश, अन्तरिक्ष, स्वर्ग और पृथ्वी पर विचरते हुए आश्चर्य के साथ सब दृश्य देखते जा रहे थे। इसके उपरान्त अर्जुन ने एक बहुत बड़ा विशाल पर्वत देखा, जिसकी दीप्ति ग्रह-नक्षत्र-चन्द्रमा-सूर्य और अग्नि के समान थी। उसी प्रज्वलित अग्नि के समान पर्वत पर अर्जुन को, सदा तपस्या में निरत, देवदेव महात्मा शङ्कर देख पड़े। अर्जुन को उनका तेज एकत्र प्रकाशमान सहस्र सूर्यों के प्रकाश सा जान पड़ा। वे सिर पर जटाजूट और हाथ में त्रिशूल धारण किये हुए थे। वे वल्कल और मृगछाला पहने हुए थे। उनके हज़ार नेत्र थे और अङ्ग विचित्र थे। महापराक्रमी महादेव के पास पार्वती देवी और तेजस्वी भूतगण उपस्थित थे। उन गणों में से कोई गा रहा था; कोई बजा रहा था, कोई ४० ज़ोर से बोल रहा था, कोई हँस रहा था, कोई नाच रहा था, कोई इधर-उधर टहल रहा था, कोई ताल ठोक रहा था और कोई ऊँचे स्वर से चिल्ला रहा था। आसपास पवित्र सुगन्ध भरी हुई थी। ब्रह्मवादी ऋषि लोग दिव्य स्तोत्रों से उनकी स्तुति कर रहे थे। सब प्राणियों की रक्षा करनेवाले, ईशान, वरदानी, शिव को देखते ही कृष्णचन्द्र ने अर्जुन के साथ सनातन ब्रह्म का उच्चा-रण करते-करते पृथ्वी पर सिर रखकर उन्हें प्रणाम किया। लोकों के आदि, विश्वकर्मा, जन्म-रहित, ईशान (जिनकी इच्छा अप्रतिहत है), अव्यय (विकाररहित), प्रवृत्ति और निवृत्ति के कारणस्वरूप, उत्पत्तिस्थान, आकाशरूप, वायुरूप, सब प्रकार के वेगों के आश्रयस्थल, जलधाराओं को उत्पन्न करनेवाले, पृथ्वी की परमप्रकृति, देव दानव यक्ष और मनुष्यों का शासन करनेवाले, योग और योगियों के परम आश्रय, प्रत्यक्ष परब्रह्म, ब्रह्मज्ञानियों के इष्टदेव, जगत् की सृष्टि और संहार करनेवाले, काल के समान दारुण कोपवाले, महात्मा, इन्द्र के ऐश्वर्य आदि और सूर्य के प्रताप आदि गुणों के उत्पत्तिस्थान महादेव को श्रीकृष्ण और अर्जुन ने मन-वाणी-काया से प्रणाम किया और वे उन जन्मरहित कारण-स्वरूप शङ्कर की शरण में गये जिनकी शरण में सूक्ष्म अध्यात्म पद के ज्ञान की खोजनेवाले विद्वान् लोग जाते हैं। अर्जुन भी उन्हें सब प्राणियों के आदि और भूत भविष्य वर्तमान का उत्पत्तिस्थान जानकर भक्तिपूर्वक बारम्बार प्रणाम करने लगे।

नर और नारायण दोनों को आये देखकर, प्रसन्न होकर, हँसते हुए देवादिदेव शङ्कर
५० कहने लगे—हे नर-श्रेष्ठ वीरो, मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ। उठो, तुम्हारी सब थकन जाती रहे। बोलो, क्या चाहते हो? यहाँ तुम जिस कार्य की सिद्धि के लिए आये हो, उसे मैं अवश्य सिद्ध करूँगा। तुम अपने कल्याण का वर माँगो, मैं वह तुम्हें देने को तैयार हूँ।

महादेव के वचन सुनकर महात्मा श्रीकृष्ण और अर्जुन उठे और हाथ जोड़कर, भक्तिपूर्वक, उनकी स्तुति करने लगे। श्रीकृष्ण और अर्जुन ने कहा—भव (सबके प्रभु), शर्व (संहार करनेवाले), रुद्र, वरदानी, पशुपति, उग्र, कपर्दी, महादेव, भीम, त्र्यम्बक, शान्तरूप, ईशान, दक्ष के यज्ञ का विध्वंस करनेवाले, अन्धकासुर को मारनेवाले, कुमार कार्त्तिकेय के पिता, नीलग्रीव, वेधा, पिनाकी, हविष्य (यज्ञ में भाग पानेवाले), सत्यस्वरूप, विभु (व्यापक), विलोहित, धूम्र, व्याध, अपराजित, सब प्राणियों में श्रेष्ठ, सर्वजयी, नीलशिखण्ड, शूली, दिव्यचक्षु, होता, पाता (रक्षक), त्रिनेत्र, वसुरेता, अचिन्त्यस्वरूप, अम्बिकापति, सर्वदेववन्दित, वृषध्वज, मुण्ड, जटा-
६० जूटधारी, ब्रह्मचारी, जल में तप करनेवाले, ब्रह्मण्य, अजित, विश्वात्मा, विश्वस्रष्टा और विश्व में व्याप्त मृत्युञ्जय को प्रणाम है। आप सेवनीय हैं, सब प्राणियों के अथवा प्रमथ भूतगण आदि के प्रभु और वेद-मुख हैं, आपको हम प्रणाम करते हैं। सर्वस्वरूप, शङ्कर, शिव (मोक्ष देनेवाले), वाचस्पति, प्रजापति, विश्वपति और महत् जनों के पति रुद्र को हमारा प्रणाम है। आपके हज़ारों सिर, हज़ारों हाथ, हज़ारों नेत्र और हज़ारों चरण हैं। आपके कर्म असंख्य हैं। आप मृत्युरूप हैं। आपको हम प्रणाम करते हैं। हिरण्यवर्ण, हिरण्यकवचधारी, भक्तों पर दया करनेवाले जगदीश्वर को हम प्रणाम करते हैं। प्रभो! ऐसी कृपा कीजिए जिससे हमारी कामना पूरी हो।

सञ्जय कहते हैं—राजन्! इस प्रकार स्तुति करके अर्जुन सहित श्रीकृष्ण, अस्त्र की
६५ प्राप्ति के लिए, शङ्कर को प्रसन्न करने लगे।

इक्यासी अध्याय

स्वप्नावस्था में ही रुद्र से पाशुपत अस्त्र पाकर अर्जुन का
श्रीकृष्ण के साथ अपने शिविर को लौट आना

सञ्जय ने कहा—महाराज! हाथ जोड़े हुए महानुभाव अर्जुन ने प्रसन्नचित्त होकर, सम्पूर्ण तेजों के आधार, शङ्करजी की ओर सादर भक्तिपूर्ण दृष्टि से देखा। उन्होंने आश्चर्य के साथ देखा कि वासुदेव ने उनकी ओर से रात्रि को जो विधिपूर्वक पूजोपहार रुद्र को अर्पण किया था वह वहाँ, शङ्कर के पास, मौजूद है। तब मन ही मन शङ्कर और नारायणावतार कृष्णचन्द्र की पूजा करके अर्जुन ने महादेव से कहा कि हे जगदीश्वर! मैं आपसे दिव्य पाशुपत

हँसते हुए देवादिदेव शङ्कर कहने लगे ।—पृ० २३३६

अस्त्र प्राप्त करना चाहता हूँ। अर्जुन के मन की बात जानकर मुसकुराते हुए श्रीशङ्कर ने कृष्णचन्द्र और अर्जुन से कहा—हे पुरुषश्रेष्ठो! मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ। तुम्हारा मनोरथ मैंने जान लिया। जिस काम से तुम यहाँ आये हो, उसके पूर्ण होने का वरदान मैं तुमको देता हूँ। पहले मैंने जिनसे समर में देवताओं के वैरी दानवों का संहार किया था वे दिव्य धनुप और बाण यहाँ, निकट ही, अमृतमय दिव्य सरोवर में रक्खे हुए हैं। तुम जाकर उस उत्तम धनुप और बाण को ले आओ।

तब वे दोनों वीर "बहुत अच्छा" कहकर, शिव के गणों के साथ, उस दिव्य सरोवर पर गये। शिवजी का बताया हुआ वह सरोवर सैकड़ों आश्चर्यजनक दिव्य ऐश्वर्यों से युक्त, सर्वार्थसाधक और पवित्र था। सूर्यमण्डलसदृश उस सरोवर के पास असम्भ्रान्त भाव से जाकर नर-नारायण ऋषियों के अवतार कृष्णचन्द्र और अर्जुन ने देखा कि जल के भीतर दो भयङ्कर नाग बैठे हैं। एक नाग अत्यन्त भयङ्कर और एक ही सिर का है; किन्तु दूसरा नाग अग्नि के समान प्रज्वलित है और उसके हज़ार सिर हैं। तब वेदज्ञ कृष्णचन्द्र और अर्जुन ने आचमन करके हाथ जोड़कर शङ्कर को प्रणाम और स्मरण किया और शतरुद्री के मन्त्र पढ़ना आरम्भ किया। वे दोनों महात्मा, शङ्कर की अपरम्पार महिमा जानकर, प्रणामपूर्वक उन दोनों नागों की आराधना करने लगे। तब वे दोनों महानाग शङ्कर के प्रभाव से देखते ही देखते शत्रुओं का नाश करनेवाले दिव्य धनुप और बाण बन गये। तुरन्त ही प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण और अर्जुन ने श्रेष्ठ प्रभा से युक्त धनुप-बाण उठा लिया और लाकर शङ्कर के आगे रख दिया। इसके उपरान्त शिव के पार्श्वभाग से पिङ्गललोचन तपोमूर्ति बलवान् नील-लोहित एक ब्रह्मचारी प्रकट हुआ, जो कि शिव का ही दूसरा रूप था। उस ब्रह्मचारी ने वह श्रेष्ठ धनुप हाथ में लेकर, एकाग्रता के साथ ठीक पैंतरे से खड़े होकर, विधिपूर्वक बाण चढ़ाकर धनुप को खींचा। अचिन्त्यपराक्रमी अर्जुन ने ध्यान के साथ उसका धनुप पकड़ना, डोरी खींचना और पैंतरे से खड़े होना देखा और शिवजी के उच्चारण किये हुए अस्त्र-मन्त्र को याद कर लिया। महाबली प्रभु शङ्कर ने उस बाण को उसी सरोवर में छोड़ा और उसके बाद वह धनुप भी उसी सरोवर में डाल दिया। स्मृतिशक्तिसम्पन्न अर्जुन ने शङ्कर को प्रसन्न देखकर अपने मन में, पहले वन में जो शङ्कर का दर्शन हुआ था और उन्होंने सन्तुष्ट होकर पाशुपत अस्त्र के साथ जो वर दिया था, उसे स्मरण किया और मन ही मन कहा कि हे शङ्कर, वह आपका दिया हुआ वर और अस्त्र मुझे प्राप्त हो। अर्जुन के मन के भाव को जानकर अन्तर्यामी महादेव ने प्रसन्नतापूर्वक पाशुपत अस्त्र के साथ ही यह वर दिया कि तुम्हारी प्रतिज्ञा पूरी हो। दुर्द्धर्ष अर्जुन ने इस प्रकार शङ्कर से फिर दिव्य पाशुपत अस्त्र पाकर निश्चय कर लिया कि हम कृतकार्य हो गये। अर्जुन के शरीर में उस समय आनन्द के मारे रोमाञ्च हो आया।

इसके उपरान्त अर्जुन और कृष्णचन्द्र दोनों ने परम प्रसन्न होकर देवादिदेव महादेव को भक्तिपूर्वक प्रणाम किया। फिर दोनों ही, शङ्कर की अनुमति लेकर, प्रसन्नतापूर्वक वैसे ही अपने शिविर को लौटे जैसे जम्भासुर के वध के लिए महासुरनाशक शङ्कर की अनुमति लेकर २५ प्रसन्नचित्त इन्द्र और विष्णु अपने लोक को गये थे।

बयासी अध्याय

कृष्णचन्द्र का युधिष्ठिर के पास आना

सञ्जय कहते हैं—हे भरतकुल-तिलक! पूर्वोक्त प्रकार से श्रीकृष्ण और दारुक सारथी की बातें हो ही रही थीं कि रात बीत गई। प्रातःकाल होते ही सूत-मागध-वन्दीजन आकर स्तुति- १ पाठ करके युधिष्ठिर को जगाने लगे। वैतालिक सूत आदि ताल दे-देकर प्रभाती मङ्गल गाते हुए पुरुषश्रेष्ठ धर्मराज की स्तुति करने लगे। नाचनेवाले नाचने लगे और गवैये लोग मधुर कण्ठ से ऐसे गीत गाने लगे, जिनमें कुरुवंश की प्रशंसा और गुणों का वर्णन था। मृदङ्ग, झाँझ, भेरी, पणव, डङ्के, गोमुख, पटह, नगाड़े और शङ्ख आदि बाजे बजने लगे। चतुर और बाजे बजाने में निपुण पुरुष प्रसन्नचित्त होकर इन तथा अन्य बाजों को अच्छे ढँग से बजाने लगे। इन बाजों का मेघगर्जन-तुल्य भारी शब्द आकाशमण्डल में गूँज उठा। उससे सोये हुए राजेन्द्र युधिष्ठिर जाग पड़े। महामूल्य उत्तम शय्या पर सुखपूर्वक सोये हुए राजा युधिष्ठिर उठकर प्रातःकाल के आवश्यक कामों से निपटने के लिए स्नानगृह में गये। तब सफ़ेद कपड़े पहने, जवान, नहाये हुए एक सौ आठ नहलानेवाले कर्मचारी भरे हुए सोने के घड़े लेकर धर्मराज की सेवा में उपस्थित हुए। हलका कपड़ा पहने हुए राजा युधिष्ठिर सुन्दर आसन पर बैठ गये। नहलानेवालों ने चन्दन से सुगन्धित और मन्त्रों से अभिमन्त्रित स्वच्छ जल से उन्हें अच्छी तरह नहलाया। बलवान् सुशिक्षित नहलानेवालों ने कषाय ओषधियों से औटाये हुए जल से खूब मल-मलकर राजा को नहलाया। फिर केवड़े आदि के बसाये हुए सुगन्धित जल से उनका शरीर १० साफ़ किया गया। इसके बाद, जल सुखाने के लिए, महाराज युधिष्ठिर ने सिर पर राजहंस के समान सफ़ेद पगड़ी ढीली-ढाली लपेट ली। सब अङ्गों में हरिचन्दन और अङ्गराग लगाकर, माला पहनकर, नये वस्त्र धारण कर महाबाहु युधिष्ठिर सदाचार के अनुसार पूर्वमुख हो हाथ जोड़कर गायत्री का जप करने लगे। अब वे अग्निहोत्रशाला में, जहाँ अग्निदेव प्रज्वलित हो रहे थे, विनीत भाव से गये। वहाँ मन्त्र पढ़कर लकड़ियों और घी की आहुतियों से अग्नि की आराधना करके वे बाहर निकले। फिर दूसरी ड्योढ़ी में जाकर पुरुषसिंह युधिष्ठिर ने वेद-पाठी, वृद्ध, जितेन्द्रिय, वेदव्रतस्नात, यज्ञान्त में अनेक बार अवभृथ स्नान किये हुए श्रेष्ठ ब्राह्मणों

के दर्शन किये। वहाँ युधिष्ठिर के साथ सदा रहनेवाले सूर्योपासक एक हज़ार और अन्य आठ हज़ार ब्राह्मण उपस्थित थे। शहद, घी, मङ्गल-कार्यों में काम आनेवाले श्रेष्ठ फल, अक्षत, फूल, दूब आदि माङ्गलिक पदार्थों से ब्राह्मणों के द्वारा स्वस्तिपाठ कराकर हर एक ब्राह्मण को उन्होंने एक-एक निष्क सुवर्ण दक्षिणा दी और उनकी प्रदक्षिणा की। इसके सिवा उन्हें आभूषणों से अलङ्कृत सौ घोड़े, उत्तम कपड़े, भरपूर दक्षिणा, बछड़ों सहित ऐसी दुधार कपिला गउएँ दीं, जिनके सींग सोने से और खुर चाँदी से मढ़े थे। इसके बाद स्वस्तिक-चिह्नयुक्त पात्र, सकोरे, सोने के सम्पुटित अर्घ्यपात्र, माला, जल के भरे घड़े, प्रज्वलित अग्नि, अक्षतपूर्ण पात्र, रुचक (एक प्रकार का नींबू), रोचना, अच्छी तरह अलङ्कृत शुभरूपिणी कन्या, दही, घी, शहद, जल, मङ्गलरूप पक्षी तथा अन्य पूजनीय पदार्थों को देखकर और छूकर राजा युधिष्ठिर बाहर की ड्योढ़ी में आये। वहाँ उनके परिचारकों ने सोने का सर्वतोभद्र सिंहासन लाकर रख दिया। उस दिव्य सिंहासन को विश्वकर्मा ने बनाया था। उस पर कोमल बहुमूल्य बिछौना बिछा था, जिस पर सफ़ेद चादर पड़ी थी। मोती, मणि, वैदूर्य आदि बहुमूल्य रत्न उसमें जड़े हुए थे। उस सिंहासन पर जब युधिष्ठिर बैठे तब अनुचरगण सफ़ेद बहुमूल्य कपड़े और आभूषण ले आये। पोशाक और गहने पहन लेने पर युधिष्ठिर का रूप शत्रुओं के शोक को बढ़ानेवाला देख पड़ा। भृत्यगण चन्द्रकिरण-सदृश, सुवर्णदण्डयुक्त, बहुमूल्य सुन्दर चामर डुलाकर उनकी सेवा करने लगे। उस समय वे चमकती हुई बिजलियों से शोभित मेघ के समान जान पड़ने लगे। सूतगण स्तुति करने लगे, वन्दीजन वन्दनागान गाने लगे और गवैये गन्धर्व मधुर गीत गाकर उन्हें प्रसन्न करने लगे। दम भर तक वन्दीजनों का शब्द गूँजता रहा। इसके बाद रथों की घरघराहट, घोड़ों की टापों की आवाज़, हाथियों के घण्टों का शब्द, शङ्खनाद और मनुष्यों के पैरों का शब्द ऐसा हुआ कि उससे वहाँ की पृथ्वी मानों काँप उठी। २० ३०

थोड़ी देर के बाद कुण्डल-मण्डित, कमर में तलवार लटकाये हुए, कवचधारी, नवयुवक द्वारपाल ने वहाँ आ करके घुटने टेककर वन्दनीय युधिष्ठिर को प्रणाम करके निवेदन किया कि महाराज, महात्मा वासुदेव पधारे हैं। पुरुषसिंह युधिष्ठिर ने कहा—उनका स्वागत करो और उनको श्रेष्ठ आसन लाकर दो। जब श्रीकृष्ण को भीतर लाकर श्रेष्ठ आसन पर बिठाया गया तब युधिष्ठिर ने उनका सत्कार किया। श्रीकृष्ण ने भी धर्मराज का सत्कार किया। ३५

तिरासी अध्याय

युधिष्ठिर की प्रार्थना और श्रीकृष्णचन्द्र का आश्वासन देना

सञ्जय कहते हैं कि युधिष्ठिर ने अभिनन्दन करके कहा—हे श्रीकृष्ण ! रात को कुछ कष्ट तो नहीं हुआ ? आपकी ज्ञानेन्द्रियाँ तो ठीक हैं ? श्रीकृष्ण ने भी युधिष्ठिर से कुशल-

प्रश्न करके कहा—हे सौम्य ! आपके दर्शन से मैं प्रसन्न हो गया। महाराज ! इसी समय द्वारपाल ने आकर निवेदन किया कि महाराज के दर्शनों के लिए सब सुहृद आये हुए हैं। युधिष्ठिर की आज्ञा पाकर वह द्वारपाल उन लोगों को ले आया। राजा विराट, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, सात्यकि, चेदिराज धृष्टकेतु, महारथी राजा द्रुपद, शिखण्डी, नकुल, सहदेव, चेकितान, केकय देश के राजा, कौरव युयुत्सु, पाञ्चालतनय उत्तमौजा, सुवाहु, युधामन्यु और द्रौपदी के पाँचों पुत्र तथा अन्य अनेक सुहृद युधिष्ठिर के पास आये। उन्होंने सबको बैठने की आज्ञा दी। वे लोग युधिष्ठिर को यथायोग्य प्रणाम करके यथोचित बहुमूल्य आसनों पर बैठ गये। महाबली श्रीकृष्ण और सात्यकि दोनों वीर एक ही आसन पर बैठे।

अब उन सबको सुनाकर राजा युधिष्ठिर ने, श्रीकृष्ण को सम्बोधित करके, मधुर स्वर में कहा—हे कृष्णचन्द्र ! सब देवता जैसे एक इन्द्र के आश्रित हैं, वैसे ही हम लोग एक आपका ही १० आश्रय लेकर युद्ध में विजय और सुख चाहते हैं। आप अच्छी तरह जानते हैं कि शत्रुओं ने किस तरह हमारा राज्य छीन लिया, अपमान किया, हमें वन को भेज दिया और हमने कैसे-कैसे क्लेश पाये हैं। हे सबके ईश्वर, भक्तवत्सल, मधुसूदन ! हमारे सब सुख और हमारी स्थिति आपके ही भरोसे है। सो अब आप ऐसा उपाय कीजिए, जिसमें अर्जुन की जयद्रथ-वध की प्रतिज्ञा पूरी हो और मेरे हृदय में आपकी भक्ति अटल बनी रहे। हे श्रीकृष्ण ! आप नौकास्वरूप होकर इस दुःख और क्रोध के महासागर से हमें पार लगाइए। युद्ध में तत्पर रथी भी वह काम नहीं कर सकता जो आप, सारथी बनकर, कर रहे हैं। हे जनार्दन ! जैसे आप सब आपत्तियों से यादवों की रक्षा करते हैं वैसे ही इस सङ्कट से हमारी रक्षा कीजिए। हे महाबाहु ! हे शङ्ख-चक्र-गदाधर ! हम लोग नौका-हीन अथाह कौरव-सागर में डूब रहे हैं, आप नौकास्वरूप होकर उससे हमें उबारिए। हे देवदेव, हे ईश, हे सनातन, हे संहार करनेवाले, हे विष्णु, हे जिष्णु, हे हरे, हे कृष्ण, हे वैकुण्ठ, हे पुरुषोत्तम ! आपको प्रणाम है। देवर्षि नारद से मैं सुन चुका हूँ कि आप पुरातन नारायण ऋषि हैं, वर देनेवाले हैं, शार्ङ्ग धनुष धारण करनेवाले विष्णु हैं और श्रेष्ठ हैं। सो आप नारद के कथन को सत्य कीजिए।

सभा के बीच युधिष्ठिर के यों कहने पर मेघगर्जन-सदृश गम्भीर स्वर से श्रीकृष्ण कहने २० लगे—राजन् ! देवताओं सहित तीनों लोकों में अर्जुन के समान धनुर्द्धर योद्धा दूसरा नहीं है। वे वीर्यवान्, अस्त्रज्ञ, पराक्रमी, महाबली, युद्धनिपुण, क्रोधी और तेजस्वी हैं। वृषभस्कन्ध, महाबाहु, महाबली, सिंह और साँड़ के समान चलनेवाले अर्जुन अवश्य आपके शत्रुओं को मारेंगे। मैं वही उपाय करूँगा जिससे वीरश्रेष्ठ अर्जुन दुर्योधन की सेना को उसी प्रकार नष्ट करेंगे जिस प्रकार आग ईंधन के ढेर को भस्म करती है। अर्जुन आज अपने बाणों से उस क्षुद्र, पापी, अभिमन्यु की मृत्यु के मूल-कारण, जयद्रथ को उसी मार्ग में भेजेंगे जिससे कोई लौटकर नहीं

आता। आज उसके मांस को गिद्ध, बाज़, गीदड़ और नरमांस-भोजी अन्य पिशाच-राक्षस आदि अवश्य खायँगे। अगर आज इन्द्र आदि सब देवता भी मिलकर जयद्रथ की रक्षा करें तो भी वह दुर्मति अवश्य मारा जायगा। आज दुष्ट जयद्रथ को मारकर अर्जुन आप से मिलेंगे। आप शोक और सन्ताप त्यागकर शान्त हों। २८

चौरासी अध्याय

अर्जुन का युधिष्ठिर के पास आना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! इस तरह युधिष्ठिर से श्रीकृष्ण की बातचीत हो रही थी कि इसी समय सुहृदों सहित राजा युधिष्ठिर के दर्शन करने के लिए अर्जुन वहाँ पर आये। उस ड्योढ़ी में प्रवेश कर, प्रणाम करके, सामने खड़े हुए अर्जुन को युधिष्ठिर ने आसन से उठकर प्रेमपूर्वक छाती से लगा लिया। फिर आशीर्वाद देकर, उनका मस्तक सूँघकर, हँसते हुए धर्मराज कहने लगे—भाई अर्जुन! आज संग्राम में अवश्य तुम्हें भारी विजय प्राप्त होगी; क्योंकि तुम्हारे मुख की कान्ति ऐसी ही उज्ज्वल है और श्रीकृष्ण भी तुम पर अत्यन्त प्रसन्न हैं। तब अर्जुन ने बहुत ही आश्चर्यजनक वृत्तान्त का वर्णन करते हुए कहा—राजन्! आपका भला हो; कल रात को मैंने स्वप्न में श्रीकृष्ण की प्रसन्नता से एक बहुत ही अद्भुत दृश्य देखा है। [सञ्जय कहते हैं कि महाराज,] अब अपने सुहृदों के आश्वासन के लिए रात का वह सब वृत्तान्त अर्जुन ने कह सुनाया, जिस तरह वे शिव से जाकर मिले थे और उनसे पाशुपत अस्त्र प्राप्त किया था। वह वृत्तान्त सुनकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। सबने सिर झुकाकर शङ्कर को प्रणाम किया और अर्जुन को साधुवाद देकर हर्ष प्रकट किया।

इसके बाद राजा युधिष्ठिर ने सब भाई-बन्धुओं को युद्ध-यात्रा करने की आज्ञा दी। वे लोग शीघ्रतापूर्वक सुसज्जित होकर प्रसन्नता के साथ युद्ध करने के लिए चल दिये। महावीर सात्यकि, श्रीकृष्ण और अर्जुन—युधिष्ठिर को प्रणाम करके—हर्ष और उत्साह के साथ उस भवन से बाहर निकले। वीर सात्यकि और कृष्णचन्द्र एक ही रथ पर बैठकर अर्जुन के डेरे पर पहुँचे। वहाँ पहुँचकर शास्त्र के जाननेवाले श्रीकृष्ण ने अर्जुन के, वानरचिह्नयुक्त ध्वजा से अलंकृत, श्रेष्ठ रथ को तैयार किया। मेघ के समान गम्भीर शब्द करनेवाला, तपे हुए सोने की १० सी कान्ति से युक्त, सुसज्जित वह श्रेष्ठ रथ बालसूर्य के समान शोभा देने लगा। अर्जुन जब सब नित्य-कृत्य कर चुके तब श्रीकृष्ण ने उनके पास जाकर कहा—हे अर्जुन! ध्वजा-पताका-युक्त तुम्हारा रथ तैयार है। अब महाबली अर्जुन ने सुवर्ण-कवच और किरीट पहना, धनुष-बाण

लिया, रथ की प्रदक्षिणा की और तब वे उस पर सवार हुए। उस समय तप विद्या और अवस्था में वृद्ध, कर्मकाण्डी, सदाचारी, जितेन्द्रिय ब्राह्मण लोग स्तुतिपूर्वक जयसूचक आशीर्वाद देकर उनका अभिनन्दन करने लगे। श्रेष्ठ रथी अर्जुन उस विजयदायक और युद्धमन्त्रों से अभिमन्त्रित सुवर्णमय रथ पर बैठकर सुमेरु पर्वत के शिखर पर स्थित सूर्यनारायण के समान अपूर्व शोभा को प्राप्त हुए। शर्याति के यज्ञ में आते हुए इन्द्र के साथ जैसे अश्विनीकुमार गये थे वैसे ही अर्जुन के साथ श्रीकृष्ण और सात्यकि रथ पर सवार हुए। वृत्रासुर के वध के लिए जाते समय मातलि ने जैसे इन्द्र के घोड़ों की रास पकड़ी थी वैसे ही सारथी के काम में निपुण महात्मा १८ श्रीकृष्ण ने अर्जुन के घोड़ों की रास हाथ में ली। चन्द्रमा जैसे अँधेरे का नाश करने के लिए बुध और शुक्र के साथ जाते हैं, अथवा इन्द्र जैसे तारक असुर के संग्राम में वरुण और सूर्य के साथ गये थे, वैसे ही शत्रुनाशन वीर अर्जुन, जयद्रथ-वध के लिए, सात्यकि और श्रीकृष्ण के साथ रथ पर बैठकर रणक्षेत्र को चले। बाजे बजने लगे, मङ्गलगीतों और स्तुतियों का पाठ किया जाने लगा। मागधों और सूतों के स्तुतिपाठ का शब्द, जयशब्द, आशीर्वाद, पुण्याहपाठ आदि का शब्द, एकत्र होकर उन वीरों की प्रसन्नता और उत्साह को बढ़ाने लगा। उस समय पवित्र सुगन्धित अनुकूल वायु पाण्डवों को प्रसन्न और उनके शत्रुओं को शोकाकुल शुष्क करने लगा। राजन्! उस समय पाण्डवों की विजय के सूचक, और कौरवों के लिए इसके विपरीत, विविध सगुन दिखाई पड़ने लगे।

अपने दक्षिण ओर विजयसूचक सगुन देखकर अर्जुन ने महाधनुर्द्धर सात्यकि से कहा—हे युयुधान! मुझे इस समय जो शकुन देख पड़ते हैं, उनसे साफ़ मालूम पड़ता है कि आज के युद्ध में मेरी विजय अवश्य होगी। अब मैं वहाँ जाता हूँ जहाँ सिन्धुराज यमलोक को जाने के लिए मेरे पराक्रम की प्रतीक्षा कर रहा है। किन्तु जयद्रथ का वध करना जैसे मेरा आवश्यक कर्तव्य है, वैसे ही धर्मराज की रक्षा करना भी है। इसलिए आज तुम धर्मराज की रक्षा करो; यह काम मैं तुमको सौंपता हूँ। इसमें सन्देह नहीं कि मेरे ही समान तुम भी उनकी ३० रक्षा कर सकोगे। तुम श्रीकृष्ण के समान पराक्रमी हो, साक्षात् इन्द्र भी तुमको युद्ध में परास्त नहीं कर सकते। महारथी प्रद्युम्न या तुम यदि महाराज युधिष्ठिर की रक्षा का काम अपने ऊपर ले लो तो फिर मैं निश्चिन्त होकर जयद्रथ को मार लूँगा। मेरे लिए तुम कुछ चिन्ता न करना। मेरे रक्षक श्रीकृष्ण हैं। तुम सब तरह से धर्मराज की ही रक्षा करना। जहाँ मेरे साथ महाबाहु श्रीकृष्ण हैं वहाँ किसी तरह की विपत्ति नहीं आ सकती। अर्जुन के यों कहने ३५ पर शत्रुदमन यादवश्रेष्ठ सात्यकि युधिष्ठिर के पास चले गये।

जयद्रथ-वधपर्व

पचासी अध्याय

धृतराष्ट्र का पुत्रों के लिए शोक करके सञ्जय से युद्ध का वर्णन करने के लिए कहना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! प्रातःकाल होने पर अभिमन्यु-वध के दुःख और शोक से पीड़ित पाण्डवों ने क्या किया ? उन्होंने किन वीरों से युद्ध किया ? अर्जुन के अद्भुत पराक्रम और कर्मों को जाननेवाले कौरव, अभिमन्यु-वधरूप अपराध करके भी, कैसे निर्भय बने रहे ? पुत्र-शोक से पीड़ित कुपित अर्जुन को मृत्यु की तरह आते उन्होंने कैसे देखा ? युद्ध में पुत्र के मारे जाने से दुःखित अर्जुन को गाण्डीव धनुष कँपाते देखकर मेरे पुत्रों ने क्या किया ? हे सञ्जय ! संग्राम में दुर्योधन पर कैसी बीती ? आज घोर विलाप सुनाई पड़ रहा है। हे सूत-पुत्र ! आज जयद्रथ के भवन में पहले की तरह अन्य महाशब्दों को दबाकर आकाश तक उठनेवाला वह तुरही, शङ्ख, दुन्दुभि, सूत, मागध, वन्दीजन और नाचनेवालों का शब्द नहीं सुन पड़ता। मेरे बेटों के डेरे में आज सूत-मागधों की की हुई स्तुति का शब्द और नाचनेवालों की छमाछम नहीं सुन पड़ती। बहुत से दीन-दुखी याचकों का, अनेक प्रकार का, श्रुति-मधुर शब्द आज मुझे नहीं सुनाई पड़ता। पहले सत्यधृति सोमदत्त के भवन में बैठकर जिस सुमधुर शब्द को सुनता था, वह आज मुझको नहीं सुनाई पड़ता। मैं अभागा आज देख रहा हूँ कि मेरे पुत्रों और बान्धवों के घरों में घोर आर्तनाद सुनाई पड़ रहा है और वे घर उत्साह-हीन जान पड़ते हैं। विविंशति, १० दुर्मुख, चित्रसेन, विकर्ण तथा मेरे अन्य पुत्रों का वह हर्ष और उत्साह से पूर्ण शब्द आज नहीं सुन पड़ता। महाधनुर्द्धर और मेरे पुत्रों के परम सहायक अश्वत्थामा के घर में सदा ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य शिष्य बने रहते थे। वितण्डा (अपना पक्ष स्थापित न करके दूसरे के पक्ष पर आक्षेप करना), आलाप (भाषण), संलाप (दो आदमियों की परस्पर बात-चीत), द्रुत-गति से बाजे बजाकर और मनोहर गीत गाकर लोग दिन-रात उनकी सेवा किया करते थे। बहुत से कौरव, पाण्डव और यादव उनकी उपासना किया करते थे। उन अश्वत्थामा के भवन में भी आज पहले का सा मनोहर मधुर शब्द नहीं सुन पड़ता। वीर अश्वत्थामा के यहाँ जो नाचने-गानेवाले सदा रहते थे उनका भी शब्द आज नहीं सुन पड़ता। विन्द और अनुविन्द के शिविर में तथा केकयराजकुमारों के भवन में सायङ्काल को नित्य जो महाध्वनि सुन पड़ती थी वह आज नहीं सुन पड़ती। उनके यहाँ नित्य आनन्दित मनुष्यों का कोलाहल और नाचने-गानेवालों के ताल और गीत की ध्वनि जो सुन पड़ती थी, उसका आज कहीं पता नहीं। सोमदत्त के पुत्र श्रुतनिधि के घर में पहले यज्ञ करनेवाले याज्ञिक सदा उपस्थित रहते थे; किन्तु आज वहाँ उनका शब्द नहीं सुनाई पड़ता। महात्मा द्रोणाचार्य के भवन में नित्य जो वेद-पाठ का शब्द, प्रत्यञ्चा की

ध्वनि, तोमर-खड्ग आदि अस्त्रों की झनकार और रथों की घरघराहट सुन पड़ती थी, वह आज नहीं सुन पड़ती। वहाँ अनेक देशों से आये हुए लोग नाना प्रकार के गीत गाते और बाजे २० बजाते थे। आज वह शब्द भी नहीं सुन पड़ता।

हे सञ्जय! महात्मा श्रीकृष्ण जिस समय उपप्लव्य नगर से, शान्ति की इच्छा से, सब प्राणियों की भलाई के लिए सन्धि का प्रस्ताव लेकर आये थे उस समय मैंने मन्दमति दुर्योधन से कहा था कि "अरे दुर्योधन! इस समय श्रीकृष्ण के द्वारा पाण्डवों से मेल कर ले। मेरी समझ में सुलह करने का यही ठीक समय है, इस अवसर को हाथ से न जाने दे। मेरी बात को न टाल। शान्ति के लिए प्रार्थना करनेवाले श्रीकृष्ण का कहा अगर न मानेगा, हित के लिए वे जो उपदेश कर रहे हैं उसे टाल देगा, तो युद्ध में किसी तरह तुझे जय नहीं मिल सकती।" हे सञ्जय! सन्धि करने के लिए मैंने इस तरह बारम्बार दुर्योधन से अनुरोध किया किन्तु उस दुर्मति ने कालवश होकर मेरी बात टालकर, कर्ण और दुःशासन के कहे पर चलकर, श्रीकृष्ण को कोरा जवाब दे दिया। मैं, बुद्धिमान् विदुर, द्रोण, वाह्लीक, जयद्रथ, सोमदत्त, पितामह भीष्म, अश्वत्थामा, शल्य, भूरिश्रवा, पुरुमित्र, जय, धर्मात्मा कृपाचार्य तथा अन्य हमारे समझदार भाई-बन्धु सभी ने जुए का विरोध किया था। अगर इन सब हितैषियों की और मेरी सलाह को मेरा पुत्र दुर्योधन मान लेता तो [कभी यह कुल-क्षय न होता;] वह बहुत समय तक जीवित रहकर राज्य भोगता। उसके इष्ट-मित्र भी मौज करते। मैंने बारम्बार समझाकर दुर्योधन से कहा था कि बेटा! पाण्डव लोग सरलहृदय, मधुरभाषी, अपने जातिवालों और भाइयों से ३० प्रिय वचन बोलनेवाले, कुलीन, मिलकर चलनेवाले और प्राज्ञ हैं; उन्हें सुख मिलेगा। जो पुरुष धर्म पर दृष्टि रखता है वह इस लोक में सर्वत्र सुख भोगता है और मरने पर परलोक में भी उसको शान्ति और कल्याण प्राप्त होता है। हे पुत्र! धर्मात्मा पाण्डव जो बात स्वीकार कर लेंगे उसे कदापि मिथ्या न करेंगे। उन्हें भी यह राज्य मिलना चाहिए। यह समुद्र-पर्यन्त पृथ्वी, तुम्हारे ही समान, उनके भी बाप-दादे की है। इस पर तुम्हारा और उनका एक सा अधिकार है। [अगर तुम्हें यह शङ्का हो कि राज्य मिलने पर शक्तिशाली होकर पाण्डव तुम्हारा राज्य छीन लेंगे, तो तुम्हारी यह शङ्का निर्मूल है।] पाण्डव लोग धर्म को नहीं छोड़ सकते। [तुम्हारा हिस्सा छीनने की चेष्टा वे कभी न करेंगे।] मेरे सजातीय वृद्धजन ऐसे हैं जिनका कहा पाण्डव सुनेंगे और मानेंगे। शल्य, सोमदत्त, महात्मा भीष्म, द्रोण, विकर्ण, वाह्लीक, कृपाचार्य तथा भरतवंश के अन्य सब श्रेष्ठ पुरुष तुम्हारे हित के लिए पाण्डवों से जो कुछ कहेंगे उसे पाण्डव मान लेंगे। पूर्वोक्त पुरुषों में से तुम ऐसा किसे समझते हो, कि वह तुम्हारे हित के विरुद्ध कार्य करने के लिए पाण्डवों से अनुरोध करेगा? फिर श्रीकृष्ण तो कभी धर्म को छोड़ने के नहीं। पाण्डवगण उन्हीं के अनुगामी हैं। [तुम धर्मपूर्वक, श्रीकृष्ण के

कहने से, पाण्डवों को उनका राज्य दे दो और यह शङ्का छोड़ दो कि राज्य पाकर बली पाण्डव अधिक शक्तिशाली हो जायँगे और मेरा भी राज्य छीन लेंगे।] पाण्डव धर्मात्मा हैं, वे मेरी बात मान लेंगे—जो स्वीकार कर लेंगे उसके ख़िलाफ़ कुछ नहीं करेंगे। हे सञ्जय! मैंने विलाप करते-करते इस तरह दुर्योधन से बारम्बार कहा था; किन्तु वह मूढ़ तो काल के वश हो रहा था, इसी से उसने मेरी बात नहीं सुनी। अतएव मुझे स्पष्ट मालूम पड़ रहा है कि इस घोर संग्राम में हमारे पक्ष का कोई भी जीवित नहीं बच सकता।

जिस पक्ष में भीमसेन, अर्जुन, यादव-श्रेष्ठ वीर सात्यकि, दुर्द्धर्ष धृष्टद्युम्न, अपराजित शिखण्डी, पाञ्चालकुमार उत्तमौजा, दुर्जय युधामन्यु, अश्मक, केकय, सोमक के पुत्र क्षत्रधर्मा, ४० चेदिराज, चेकितान, काश्य के पुत्र अभिभू, द्रौपदी के पाँचों बेटे, राजा विराट, महारथी द्रुपद, पुरुषसिंह नकुल और सहदेव आदि योद्धा हैं और सलाह देनेवाले सहायक साक्षात् कृष्णचन्द्र हैं, उस पक्ष के विरुद्ध—युद्ध में जीने की इच्छा रखनेवाला—कौन पुरुष खड़ा हो सकता है? दिव्य अस्त्रों का प्रयोग करनेवाले रणनिपुण पाण्डवपक्ष के वीरों के पराक्रम और प्रहार को सिवा दुर्योधन, कर्ण, दुःशासन और शकुनि के और कौन सह सकता है? मुझे तो इस समय इन चार पुरुषों के सिवा पाँचवाँ ऐसा कोई अपने दल में नहीं देख पड़ता, जो कुपित पाण्डवों के बाणप्रहार को सह सके, या उनका सामना कर सके। हे सञ्जय! सच तो यह है कि साक्षात् कृष्णचन्द्र जिस पक्ष के सारथी और कहना माननेवाले सहायक हैं और सुसज्जित कवच-धारी वीर अर्जुन योद्धा हैं, वह पक्ष कभी युद्ध में हार नहीं सकता। तुम कहते हो कि पुरुष-सिंह भीष्म और द्रोण दोनों मारे जा चुके हैं। इस समय शायद दुर्योधन मेरे पहले के विलाप और समझाने को याद करके पछता रहा होगा। भविष्यदर्शी नीतिज्ञ विदुर ने पहले ही इस युद्ध के कुफल का अनुमान करके जो वचन कहे थे उन्हें इस समय सत्य होते देखकर शायद मेरे पुत्र सोचते और पछताते होंगे। मुझे जान पड़ता है कि इस समय सात्यकि और अर्जुन के बाणों से अपनी सेना को पीड़ित, परास्त और रथों के आसनों को वीरों से ख़ाली देखकर मेरे पुत्र शोकाकुल हो रहे होंगे। जैसे ग्रीष्म ऋतु में हवा की सहायता से प्रचण्ड महा दावानल सूखी घास के ढेर को भस्म करता है वैसे ही वीर अर्जुन अवश्य अपने अस्त्रों से मेरी सेना को भस्म कर रहे होंगे।

हे सञ्जय! जब सायङ्काल को अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु का वध करके, अर्जुन का अप-राध करके, मेरे पक्ष के लोग अपने शिविर में लौट आये थे तब तुम लोगों के मन की क्या दशा थी? तुम वर्णन करने में निपुण हो, इसलिए सब वृत्तान्त कहो। हे तात! यह निश्चित ५० बात है कि मेरे पुत्र और योद्धा लोग अद्भुतकर्मा अर्जुन का अपकार करके उनके पराक्रम और प्रहार को किसी तरह नहीं सह सकते। अभिमन्यु के मारे जाने से अर्जुन के कुपित होने पर

दुर्योधन, कर्ण, दुःशासन और शकुनि ने क्या कहा और अपना क्या कर्तव्य सोचा ? हे तात ! लोभी, दुर्मति, क्रोध से विकृत-मस्तिष्क, राज्य की इच्छा करनेवाले, मूढ़, मन्द, मत्सर-पूर्ण दुर्योधन के अन्याय से युद्ध में जो कुछ फल हुआ, सो मुझसे कहो। दुर्योधन आदि ने उस समय

५४ अच्छी नीति को ग्रहण किया या दुर्नीति को ?

छियासी अध्याय

सञ्जय का धृतराष्ट्र को उलहना देकर युद्ध-वर्णन का आरम्भ करना

सञ्जय ने कहा—महाराज ! मैंने युद्ध की सब घटनाएँ प्रत्यक्ष देखी हैं। आप सावधान होकर सुनिए, मैं सब हाल कहता हूँ। असल में आपका ही इसमें सारा दोष है। हे भरतश्रेष्ठ ! पानी की बाढ़ निकल जाने पर पुल बाँधने की चेष्टा के समान आपका यह विलाप इस समय निष्फल है। इसलिए अब आप शोक न कीजिए। राजन् ! काल का अद्भुत विधान किसी तरह टल नहीं सकता। इस होनी को दैव ने पहले ही निश्चित कर दिया था। इसलिए अब आप व्यर्थ शोक न कीजिए। हे कुरुकुल-श्रेष्ठ ! पहले ही यदि आप युधिष्ठिर को और अपने पुत्रों को द्यूतक्रीड़ा न करने देते तो कभी यह सङ्कट न उपस्थित होता; आपको यह दुःखदायक दृश्य न देखना पड़ता। फिर, युद्ध होने के पहले ही अगर आप कुपित कौरवों और पाण्डवों को समझा-बुझाकर शान्त कर देते तो यह आपत्ति न आती। अगर आप पहले ही कहा न माननेवाले दुर्योधन को पकड़कर कारागार में डाल देते और कौरवों को विनाश के मुँह में जाने से बचा लेते तो यह अनर्थ न होता। सब पाण्डव, पाञ्चाल, यादव और अन्य राजा लोग जानते हैं कि यह महा अनर्थ आपकी विषम बुद्धि के दोष से हुआ है। यदि आप पिता के योग्य काम करके दुर्योधन को [समझाकर या दण्ड देकर] सुमार्ग पर लगाते और धर्म के अनुसार कार्य करते अर्थात् पाण्डवों को उनके हिस्से का राज्य दे देते तो आपको कभी इस सङ्कट का सामना न करना पड़ता। आप बहुत ही चतुर कहलाते हैं; किन्तु आप सनातन धर्म का त्याग करके दुर्योधन, कर्ण और शकुनि के मत पर चले। राजन् ! मैं आपका यह सब विलाप सुन चुका। आप बड़े राज्यलोभी हैं, आपका यह विलाप विष मिले हुए शहद के

१० समान है। आप जैसा समझ रहे हैं कि इस अनर्थ में आपके पुत्र का ही सारा दोष है, आपका नहीं है सो मैंने सुन लिया। श्रीकृष्ण पहले राजा युधिष्ठिर, भीष्म या द्रोण को उतना नहीं मानते थे जितना कि आपको। किन्तु जब से उनको यह मालूम हो गया कि आप ऊपर से तो धर्म की बातें कहते हैं, किन्तु हृदय से राज्य के लोभी [और अधर्मी पुत्र के पक्षपाती] हैं, तब से श्रीकृष्ण की नज़र से आप गिर गये हैं। महाराज ! भरी सभा में आपके पुत्र आदि ने पाण्डवों को भले-बुरे

वचन कहे और आप उसकी उपेक्षा ही करते रहे, उसी का यह बदला अब आपको मिल रहा है। हे भरतश्रेष्ठ! आपने अगर बाप-दादा के राज्य को इस तरह हथियाने की चेष्टा न की होती, तो वीर पाण्डव सम्पूर्ण पृथ्वी जीतकर आपको अर्पण कर देते। कौरवों के राज्य और यश को पहले शत्रुओं ने छीन लिया था। पाण्डु ने ही शत्रुओं को जीतकर उस यश और राज्य को प्राप्त किया था। धर्मात्मा पाण्डवों ने उस यश और राज्य को और भी अधिक बढ़ाया था। किन्तु आपने राज्य के लोभ में पड़कर पाण्डवों को उनके पैतृक राज्य से भ्रष्ट क्या किया, पाण्डु और पाण्डवों के उस कार्य को निष्फल कर डाला।

चाहे जो हो, इस समय युद्ध-काल में जो आप अपने पुत्रों की निन्दा करते हैं और अनेक प्रकार से उनके दोषों का वर्णन कर रहे हैं, सो वह व्यर्थ है। राजा लोग युद्ध ठानकर फिर रण में जीवन की ममता नहीं रखते। इस समय आपके पक्ष के पराक्रमी वीर क्षत्रियश्रेष्ठ जीवन का मोह छोड़कर, पाण्डवों की सेना में घुसकर, युद्ध कर रहे हैं। श्रीकृष्ण, अर्जुन, सात्यकि और भीमसेन जैसे वीरश्रेष्ठ अद्वितीय वीर जिस सेना के संरक्षक हैं, उससे सिवा वीर कौरवों के और कौन लोहा ले सकता है? जिस दल के योद्धा अर्जुन, सात्यकि और भीमसेन हैं तथा जिस पक्ष के मन्त्री कृष्णचन्द्र हैं, उस पक्ष के पराक्रम को वीरश्रेष्ठ कौरवों और उनके साथी क्षत्रियों के सिवा और कौन मनुष्य सह सकता है? महाराज! प्रहार और आक्रमण के अवसर को जाननेवाले और क्षत्रिय-धर्म में निरत शूर मनुष्य जितना कर सकते हैं उतना वीर कौरव कर रहे हैं। पुरुषसिंह पाण्डवों के साथ कौरवों का जैसा घोर युद्ध हुआ उसका वर्णन मैं करता हूँ, आप ध्यान देकर सुनिए। २१ २३

सत्तासी अध्याय

द्रोणाचार्य का शकटव्यूह बनाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! रात बीतने पर शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य अपनी सेनाओं को लेकर शकटव्यूह की रचना करने लगे। उस समय वहाँ गरजते हुए, क्रोधी, असहनशील, शूर और परस्पर वध करने के लिए उद्यत योद्धाओं की विचित्र बोलियाँ सुन पड़ने लगीं। कोई धनुष चढ़ाकर, कोई धनुष की डोरी साफ़ करते और साँसें लेते हुए चिल्लाने लगे कि इस समय अर्जुन कहाँ हैं। कुछ लोग म्यान से खिंची हुई, धारदार, पानी के मारे आकाश की तरह चमकीली, सुन्दर मूठवाली तलवारें के हाथ फेंकने लगे। हज़ारों शिक्षित वीर लोग, संग्राम के लिए उद्यत होकर, चारों ओर तलवारों और धनुषों के पैंतरे दिखाते दिखाई पड़ने लगे। कुछ वीर चन्दन लगी हुई, घण्टा-भूषित और सुवर्ण हीरे आदि से अलङ्कृत गदाएँ उठाकर अर्जुन

को पूछने लगे। कुछ बाहुबल-सम्पन्न योद्धा, उठे हुए इन्द्रध्वज-सदृश, परिघ उठाकर आकाश को अवकाश-हीन बनाने लगे। विचित्र मालाएँ पहने हुए अन्य योद्धा लोग संग्राम के लिए तैयार होकर, अनेक प्रकार के शस्त्र हाथ में लेकर, अपने-अपने स्थान पर खड़े हो रणभूमि में पुकारने लगे कि अर्जुन कहाँ हैं? मानी भीमसेन कहाँ हैं? गोविन्द कृष्ण कहाँ हैं? और उनके सुहृद पाञ्चाल आदि कहाँ हैं?

उस समय अपना दिव्य शङ्ख बजाकर स्वयं रथ के घोड़ों को शीघ्रता से चलाते हुए १० आचार्य द्रोण इधर-उधर व्यूह में सेना स्थापित करते हुए वेग से जाते दिखाई पड़ रहे थे। युद्ध-प्रिय सब सेना जब ठीक स्थान पर तैनात हो चुकी तब द्रोणाचार्य ने कहा—हे जयद्रथ! तुम, सोमदत्त के पुत्र, महारथी कर्ण, अश्वत्थामा, शल्य, वृषसेन और कृपाचार्य, ये लोग एक लाख घोड़े, साठ हज़ार रथ, चौदह हज़ार मदमत्त गजराज और इक्कीस हज़ार कवचधारी पैदल सेना लेकर मुझसे छः कोस के अन्तर पर ठहरो। वहाँ पर इस तरह चतुरङ्गिणी सेना और छः महारथियों के बीच में तुम रहोगे; तब इन्द्र सहित देवता भी तुम पर आक्रमण न कर सकेंगे; पाण्डवों की तो कोई बात ही नहीं। अब तुम बेखटके होकर अपनी जगह पर जाओ।

सञ्जय कहते हैं—महाराज! आचार्य के इस कथन से धैर्य धर करके सिन्धुपति जयद्रथ, उन महारथियों के साथ, निर्दिष्ट स्थान को गये। उनके साथ गान्धार देश के योद्धा, उनके शरीररक्षक होकर, चले। वे लोग कवच पहने, सावधान, घोड़ों पर सवार और हाथों में प्रास (एक शस्त्र) लिये हुए थे। हे राजेन्द्र! जयद्रथ के रथ के सुशिक्षित घोड़े कलँगी और सोने के गहनों से सजे हुए थे। जयद्रथ के साथ अच्छी तरह अलङ्कृत, सिन्धु देश के तीन हज़ार और अन्य सात हज़ार घोड़े थे, जिन पर सशस्त्र योद्धा सवार थे।

राजन्! आपके पुत्र दुर्मर्षण, डेढ़ हज़ार मस्त हाथियों की सेना लेकर, सब सैनिकों के आगे युद्ध करने के लिए खड़े हुए। उनके उन हाथियों का आकार भयानक और कर्म बड़े २० ही रौद्र थे। उन पर युद्ध-निपुण योद्धा सवार थे। आपके पुत्र दुःशासन और विकर्ण दोनों ही, जयद्रथ की रक्षा के लिए, आगे की सेना में स्थित हुए। महारथी द्रोणाचार्य ने स्वयं महा-बली असंख्य वीर राजाओं को तथा रथ, घोड़े, हाथी और पैदल सेना को ठीक स्थान पर तैनात करके एक दुर्भेद्य व्यूह बनाया। उस व्यूह का अगला हिस्सा छकड़े के आकार का चौड़ा था और पिछला हिस्सा चक्र अथवा कमल के आकार का था। वह व्यूह आगे चौबीस कोस लम्बा और पीछे दस कोस चौड़ा था। महावीर द्रोणाचार्य ने पीछे के पद्मव्यूह के भीतर एक और व्यूह बनाया। वह सूचीमुख व्यूह था। वह व्यूह बहुत ही गुप्त और दुर्भेद्य था। सूचीमुख के द्वार पर महाधनुर्द्धर कृतवर्मा उसकी रक्षा के लिए नियुक्त थे। उसके बाद क्रमशः काम्बोजराज, जलसन्ध और उनके बाद महाराज दुर्योधन और कर्ण थे। युद्ध से न हटनेवाले

एक लाख वीर योद्धा शकटव्यूह के अगले भाग की रक्षा करने लगे। असंख्य सेना साथ में लिये हुए राजा दुर्योधन इन योद्धाओं के पीछे थे। राजा जयद्रथ सबके पीछे गूढ़ सूचीव्यूह के पार्श्व-भाग में थे। द्रोणाचार्य स्वयं शकटव्यूह के अगले हिस्से में रहकर उसकी रक्षा करने लगे। सफ़ेद कवच, कपड़े, पगड़ी आदि पहने, चौड़ी छातीवाले, महाबाहु द्रोणाचार्य क्रुद्ध काल की तरह अपने रथ पर बैठे हुए बारम्बार धनुष की डोरी बजा रहे थे। वही उस सेना के रक्षक और सञ्चालक थे। वेदी तथा मृगछाला के चिह्नों से युक्त ध्वजा और लाल रङ्ग के घोड़ों से शोभित द्रोणाचार्य का रथ देखकर सब कौरवों को अपार हर्ष हुआ। क्षोभ को प्राप्त समुद्र के समान, द्रोणाचार्य के बनाये, उस व्यूह को देखकर सिद्धों और चारणों को बड़ा ही विस्मय हुआ। सब प्राणी अपने मन में कहने लगे कि यह सैनिकों का विशाल व्यूह पर्वत-समुद्र-वन-सहित सम्पूर्ण पृथ्वी को भी नष्ट कर सकता है। बहुत रथ, रथी, हाथी, घोड़े और पैदल सेना से परिपूर्ण, महा कोलाहल से भयङ्कर, अद्भुत, आप ही अपनी उपमा और शत्रुओं के हृदय को दहलानेवाला वह शकटव्यूह देखकर राजा दुर्योधन को बड़ी प्रसन्नता हुई। ३४

(३० at margin)

अट्ठासी अध्याय

रणभूमि में अर्जुन का पहुँचना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! आपके पक्ष की सेना जब व्यूह में ठीक स्थान पर स्थापित हो चुकी; चारों ओर भेरी मृदङ्ग डङ्के आदि बजने लगे; सेना का कोलाहल और बाजों का शब्द आकाशमण्डल तक गूँज उठा; लोमहर्षण शङ्ख-नाद रणभूमि में व्याप्त हो गया और हाथों में शस्त्र लेकर कौरवगण युद्ध के लिए प्रस्तुत हुए, तब उस रौद्रमुहूर्त में सबके सामने अर्जुन आये। उनकी सेना के आगे-आगे झुण्ड के झुण्ड हज़ारों कौए चक्कर लगा रहे थे; मांसाहारी रक्त पीनेवाले पशु-पक्षी क्रीड़ा सी कर रहे थे। अशुभ रूपवाली गिदड़ियाँ हमारी सेना के चलते समय मार्ग में, उसके दक्षिण भाग में, घोर शब्द करने लगीं और मृगों के झुण्ड भी विकट शब्द करके अशुभ की सूचना देने लगे। उस भयानक जनसंहार के उपस्थित होने पर वज्रध्वनि के साथ आकाश से जलती हुई हज़ारों उल्काएँ गिरने लगीं। सम्पूर्ण पृथ्वी बारम्बार काँपने लगी। अर्जुन जिस समय संग्रामभूमि में आये उस समय कङ्कड़ियाँ उड़ाती हुई रूखी आँधी चलने लगी।

इधर व्यूह-रचना में निपुण नकुल के पुत्र शतानीक और धृष्टद्युम्न दोनों वीर पाण्डवों की सेना के व्यूह की रचना करने लगे। राजन्! उधर आपके पुत्र दुर्मर्षण ने हज़ार रथ, सौ हाथी, तीन हज़ार घोड़े और दस हज़ार पैदल साथ लेकर सब सेना से तीन हज़ार गज़ आगे खड़े होकर कहा—हे वीरो! तटभूमि जैसे समुद्र के वेग को रोकती है वैसे ही आज मैं युद्ध में दुर्द्धर्ष अर्जुन को आगे नहीं बढ़ने दूँगा। आज सब लोग अर्जुन को उसी तरह मुझसे टकरा- १०

कर रुकते देखेंगे जिस तरह चट्टान में पत्थर अटक जाता है। हे संग्राम की इच्छा रखनेवाले वीरो! तुम सब खड़े-खड़े तमाशा देखो। मैं अकेला ही इन सब एकत्र होकर आनेवाले पाण्डव-पक्ष के वीरों से लड़ूँगा और अपने यश और मान को बढ़ाऊँगा। महाराज! महारथी वीरों के साथ इस तरह कहते हुए महाधनुर्द्धर वीर दुर्मर्षण अपने स्थान पर डटकर खड़े हुए। उधर वज्रधारी इन्द्र के तुल्य, दण्डपाणि यमराज के समान असह्य, काल-प्रेरित मृत्यु के समान अनिवार्य, शङ्कर के समान अक्षोभ्य, पाशधारी वरुण के समान वीर अर्जुन प्रलयकाल के ज्वाला-मालायुक्त अग्नि के समान क्रोध और तेज से प्रज्वलित देख पड़ने लगे। जान पड़ता था, वे सब जगत् को भस्म कर डालेंगे। क्रोध, अमर्ष और बल से प्रचण्ड, युद्धविजयी, निवातकवच दानवों का नाश करनेवाले अर्जुन उस समय अपनी सत्य प्रतिज्ञा को पूर्ण करने के लिए उद्यत देख पड़े। नारायण के अवतार श्रीकृष्ण के साथ नर के अवतार अर्जुन अपने रथ पर, उदय हुए सूर्य के समान, शोभायमान हो रहे थे। वे कवच, मणिमय कुण्डल, सुवर्णमय किरीट-मुकुट, सफ़ेद माला और कपड़े पहने हुए थे। उनके अङ्गों में अङ्गद आदि गहने जगमगा रहे थे। गाण्डीव धनुष को कम्पायमान करते हुए वीर अर्जुन ने सेना के अग्र भाग में आकर इतने फ़ासले पर अपना रथ खड़ा कराया, जहाँ से शत्रुसेना के मध्यभाग में बाण मारा जा सकता था।

२० अब महाप्रतापी अर्जुन ने ज़ोर से अपना शङ्ख बजाया। साथ ही महात्मा वासुदेव ने भी अपना श्रेष्ठ पाञ्चजन्य शङ्ख बड़े ज़ोर से बजाया। उन दोनों वीरों के शङ्ख-नाद को सुनते ही आपकी सेना में हलचल सी मच गई। सैनिकों के रोंगटे खड़े हो गये, लोग काँप उठे और अचेत से हो गये। बिजली की कड़क सुनकर लोग जैसे डर जाते हैं वैसे ही कौरव-सेना के लोग उन शङ्खों का महानाद सुनकर डर गये। हाथी-घोड़े आदि वाहन घबराहट और डर के मारे मल-मूत्र-त्याग करने लगे। महाराज! इस तरह वाहनों सहित आपकी सब सेना व्याकुल हो उठी। उन शङ्खों का दारुण शब्द सुनकर कुछ लोग विह्वल हो उठे, कुछ डर के मारे अचेत हो गये और कुछ भाग खड़े हुए। हे भरतश्रेष्ठ! उस समय अर्जुन के रथ की ध्वजा पर स्थित वानर भी, ध्वजा पर स्थित अन्य भयानक प्राणियों के साथ, मुँह फैलाकर घोर महानाद करता हुआ आपके सैनिकों को डरवाने लगा।

अब आपकी सेना में सैनिकों का उत्साह और हर्ष बढ़ाने के लिए शङ्ख, भेरी, मृदङ्ग, नगाड़े आदि बाजे बजाये जाने लगे। अनेक प्रकार के बाजों के शब्द, ख़म ठोंकने के शब्द, गर्जन और सिंहनाद, चिल्लाने और पुकारने के शब्द और महारथी वीरों के रथ-सञ्चालन के शब्द से रणभूमि परिपूर्ण हो उठी। राजन्! कायरों के हृदय में भय का सञ्चार करनेवाले

२६ उस तुमुल शब्द से अत्यन्त हर्षित होकर अर्जुन श्रीकृष्ण से यों कहने लगे।

———

नवासी अध्याय

अर्जुन के युद्ध का वर्णन

अर्जुन ने कहा—हे श्रीकृष्ण ! जिस जगह पर यह दुर्मर्षण खड़ा हुआ है उसी जगह पर मेरा रथ ले चलो। मैं इस गज-सेना को छिन्न-भिन्न करता हुआ शत्रुओं की सेना के भीतर घुसूँगा। सञ्जय कहते हैं—अर्जुन के यों कहने पर कृष्णचन्द्र ने रथ को दुर्मर्षण के पास ले जाने के लिए घोड़ों को हाँक दिया। इसके बाद अर्जुन कौरवों की सेना से अत्यन्त भयानक युद्ध करने लगे। उस संग्राम में असंख्य रथी, पैदल, हाथी और घोड़े मारे गये। पर्वत पर मेघ जैसे जलधारा बरसाते हैं वैसे ही अर्जुन भी शत्रु-सेना के ऊपर लगातार बाणों की वर्षा करने लगे। कौरवपक्ष के रथी और महारथी भी वासुदेव और अर्जुन के ऊपर तीक्ष्ण बाणों की वर्षा सी करने लगे। तब अर्जुन ने क्रोध करके अपने को रोकनेवाले शत्रु-पक्ष के रथी योद्धाओं के सिरों को बाण मारकर धड़ों से अलग करना शुरू कर दिया। ओठ चबा रहे, लाल-लाल आँखें निकाले, कुण्डलों और शिरस्त्राणों से शोभित शूरों के कटे हुए सिर युद्धभूमि में बिछ गये। चारों ओर बिखरे हुए योद्धाओं के सिर दलित कमलों के वन की तरह शोभायमान हुए। [रक्त से भीगे हुए सुनहरे कवच बिजली से शोभित मेघों के समान जान पड़ते थे।] पके हुए ताड़ के फल गिरने से जैसा शब्द होता है वैसा ही शब्द वीरों के सिर कट-कटकर गिरने से सुनाई पड़ रहा था। वीरों के कबन्ध उठ खड़े हुए और कोई धनुष हाथ में लिये और कोई म्यान से तलवार निकाले प्रहार के लिए उद्यत देख पड़ने लगे। जय की इच्छा से युद्ध करनेवाले वीरगण अर्जुन को परास्त करने के उद्योग में इतने तन्मय थे कि उन पुरुषश्रेष्ठों के सिर कट-कटकर गिर पड़ते थे और उन्हें उसकी ख़बर भी न होती थी। घोड़ों के सिर, हाथियों की सूँड़ें, वीर पुरुषों के सिर और हाथ कट-कटकर पृथ्वी पर इतने गिरे कि उनसे रणभूमि बिछ गई। १०

महाराज ! उस समय आपके सैनिकों को सारी रणभूमि अर्जुनमयी सी दिखाई पड़ने लगी। वे "यह अर्जुन है", "कहाँ अर्जुन है ?", "यही अर्जुन है" इस तरह के वचन कहते हुए आपस में ही एक दूसरे को, अर्जुन जानकर, मारने लगे। किसी-किसी ने घबराकर आप ही अपने को शस्त्र मार लिया। इस प्रकार काल से मोहित कौरवपक्ष के योद्धा सर्वत्र अर्जुन को ही देखने लगे। रक्त से भीगे हुए, बेहोश वीरगण समरशय्या में पड़े हुए थे। वे दारुण वेदना से अत्यन्त पीड़ित होकर अपने-अपने बान्धवों को पुकारने और कराहने लगे। भिन्दि-पाल, प्रास, शक्ति, ऋष्टि, परशु, निर्व्यूह, खड्ग, धनुष, तोमर, बाण और गदा आदि शस्त्रों से शोभित, कवचयुक्त और अङ्गद आदि आभूषणों से अलङ्कृत वीरों के हाथ अर्जुन के बाणों से कट-कटकर पृथ्वी पर गिर रहे थे। वे महानाग और बेलन के समान हाथ उठते, गिरते और तड़पते दिखाई पड़ रहे थे। जो-जो वीर पुरुष अर्जुन के सामने जाकर उनसे भिड़ता था, उस-२० उसके शरीर में अर्जुन के काल-सदृश बाण घुसते थे। रथ-मार्ग में नृत्य सा करनेवाले शीघ्रगामी और फुरतीले अर्जुन इस तरह धनुष घुमा रहे थे कि उन पर प्रहार करने का तनिक भी अवकाश नहीं देख पड़ता था। अर्जुन अपने हाथों की फुरती दिखाते हुए इतनी जल्दी बाण निकालते, धनुष पर चढ़ाते, निशाना ताकते और बाण छोड़ते थे कि सब देखनेवालों के आश्चर्य की हद नहीं थी। वीर-वर अर्जुन अपने बाणों से एक साथ ही हाथी, महावत और योद्धा को, घोड़े और सवार को तथा रथी और सारथी को मार गिराते थे। पराक्रमी अर्जुन उस समय आते हुए, आये हुए, युद्ध कर रहे और सामने खड़े हुए, किसी भी शत्रु को नहीं छोड़ते थे; सभी को मार-मारकर गिरा रहे थे। उदय हो रहे सूर्यदेव जैसे अपनी किरणों से गहरे अँधेरे को नष्ट करते हैं वैसे ही प्रतापी अर्जुन ने कङ्कपत्रशोभित तीक्ष्ण बाणों से शत्रुपक्ष के हाथियों के दल को मारकर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। अर्जुन के बाणों से छिन्न-भिन्न हाथियों के झुण्ड के झुण्ड आपकी सेना के बीच पड़े हुए थे। उनसे वह रणभूमि प्रलयकाल में पर्वतों से परिपूर्ण भूमि सी दिखाई पड़ने लगी।

राजन् ! उस समय क्रोध से विह्वल महावीर अर्जुन शत्रुओं के लिए दोपहर के सूर्य के समान अत्यन्त दुर्निरीक्ष्य हो उठे। कौरव-सेना के योद्धा लोग उनके बाणों से अत्यन्त पीड़ित और शङ्कित होकर, घबराकर, रणभूमि को छोड़कर भागने लगे। आँधी जैसे मेघमण्डल को छिन्न-भिन्न कर देती है वैसे ही महावीर अर्जुन भी कौरव-सेना को मारकर भगाने लगे। उनके बाणों की मार से भगाई जा रही आपके पुत्र की सेना अर्जुन की ओर देख भी नहीं सकती २९ थी। रथी और घुड़सवार योद्धा लोग अर्जुन के बाणों से पीड़ित होकर कोड़े, धनुष-कोटि, हुङ्कार, कशा और पार्ष्णि के प्रहार आदि से, डाँटकर, पुचकारकर अपने घोड़ों को भगाते हुए भागने लगे। जो हाथियों पर सवार थे वे पार्ष्णि, पैर के अँगूठे और अङ्कुश के प्रहार से

हाथियों को चलाते हुए प्रवल वेग से भागने लगे। बहुत से लोग अर्जुन के बाणों की मार से ऐसे घबरा उठे कि वे मोहित होकर अर्जुन की ही ओर जाने लगे। राजन्! इस प्रकार आपके पक्ष के वीर लोग उत्साह-हीन होकर घबरा उठे। ३३

नव्वे अध्याय

अर्जुन से दुःशासन की हार

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय! महावीर अर्जुन जब इस तरह हमारी सेना का संहार करने लगे तब कौन-कौन वीर उनके सामने युद्ध करने को आये? अथवा सब वीर हारकर, विफलमनोरथ होकर, शकटव्यूह के भीतर ही घुस गये और दीवार के समान अटल द्रोणाचार्य की आड़ लेकर सबने अपने प्राण बचाये?

सञ्जय ने कहा—राजन्! महावीर अर्जुन इस प्रकार आपके वीरों को हराकर अपना पराक्रम प्रकट करने लगे। आपकी सेना के अनेक वीर मारे गये, सब सैनिक निरुत्साह होकर भागने पर ही उतारू हो गये। उन्हें अर्जुन अपने तीक्ष्ण बाणों से मारने लगे। उस समय कोई भी अर्जुन की ओर देख नहीं सकता था। तब आपके पुत्र महावीर दुःशासन अपने सैनिकों की ऐसी दुर्दशा देखकर, क्रोध से विह्वल हो, युद्ध के लिए अर्जुन की ओर वेग से चले। सोने का कवच और सोने का ही शिरस्त्राण धारण किये हुए पराक्रमी महावीर दुःशासन ने बहुत सी गज-सेना के द्वारा अर्जुन को घेर लिया। जान पड़ता था, वे अपनी गज-सेना से पृथ्वीमण्डल को ग्रस लेंगे। हाथियों के गलों में पड़े हुए घण्टों के शब्द, शङ्खनाद, प्रत्यञ्चा के शब्द, वीरों के सिंहनाद और हाथियों के शब्द से पृथ्वीमण्डल, आकाशमण्डल और सब दिशाएँ गूँज उठीं। महाराज! कुछ देर तक युवराज दुःशासन बहुत ही भयङ्कर देख पड़े। अङ्कुश के प्रहार से प्रेरित होकर सूँड़ उठाये हुए क्रुद्ध हाथियों को, पक्षयुक्त पर्वतों के समान, चारों ओर से आते देखकर वीर अर्जुन ने बड़े ज़ोर से सिंहनाद किया। फिर वे बाणों की वर्षा करके शत्रुपक्ष की गज-सेना का संहार करने लगे। वायु-सञ्चालित तरङ्गपूर्ण उमड़े हुए समुद्र के समान उस गज-सेना ११ के बीच, महामगर के समान, अर्जुन ने प्रवेश किया। प्रलयकाल में आकाश में तप रहे सूर्य-नारायण के समान शत्रुदमन अर्जुन उस समय सब दिशाओं में बाण-वर्षा करते दिखाई पड़ने लगे। उस समय घोड़ों की टापों के शब्द, रथों के पहियों के शब्द, लोगों के चिल्लाने के शब्द, धनुषों की डोरियों के शब्द, अनेक प्रकार के बाजों के शब्द, पाञ्चजन्य और देवदत्त नामक शङ्खों के शब्द और गाण्डीव धनुष के शब्द से मनुष्य और हाथी अचेत से हो गये; उनका वेग धीमा पड़ गया। साँप के डसने के समान जिनका स्पर्श है ऐसे बाण मारकर अर्जुन उन हाथियों को छिन्न-भिन्न करने लगे और वे हाथी चिल्ला-चिल्लाकर परकटे पहाड़ों की तरह

नष्ट होने लगे। अर्जुन के असंख्य वाण एक साथ आकर उनके शरीरों में घुसते थे। अन्य अनेक हाथी दाँतों की जड़, मस्तक, सूँड़, कपोल आदि स्थानों में अर्जुन के असंख्य वाण लगने पर क्रौञ्च पक्षियों की तरह वारम्वार चिल्लाने लगे।

हाथियों पर बैठे हुए योद्धाओं के सिरों को भी वीर अर्जुन अपने अत्यन्त तीक्ष्ण भल्ल २० वाणों से काट-काटकर पृथ्वी पर गिराने लगे। हाथियों पर सवार वीरों के कुण्डल-मण्डित सिर जव कट-कटकर पृथ्वी पर गिरने लगे तब ऐसा जान पड़ा मानों अर्जुन कमल के फूलों से रणचण्डी की पूजा कर रहे हैं। हाथी जब घबराकर पीड़ित होकर इधर-उधर भागने लगे तब नाना प्रकार के शस्त्रों की चोट खाये हुए, कवच-हीन, घायल और रक्त से नहाये हुए अनेकों सैनिक शक्तिहीन होने के कारण हाथियों के हौदों पर से नीचे लटकने लगे। अर्जुन के एक ही वाण से दो-दो तीन-तीन शत्रु घायल होकर पृथ्वी पर गिर पड़ते थे। अर्जुन के नाराच वाण हाथियों के शरीरों में गहरे घुस जाते थे। वे हाथी मुँह से रक्त-वमन करते हुए मय अपने सवार के पृथ्वी पर गिर पड़ते थे, जिन्हें देखकर जान पड़ता था कि वृक्षयुक्त पहाड़ के शिखर फट-फटकर गिर रहे हैं। महावीर अर्जुन अपने सन्नत-पर्व-शोभित भल्ल वाणों के द्वारा रथी योद्धाओं के धनुष की डोरी, धनुष, ध्वजा, उनके रथ का युग और ईषा आदि को काट रहे थे। नहीं जान पड़ता था कि अर्जुन कब तरकस से वाण निकालते हैं, कब धनुष पर चढ़ाते हैं, कब उसे खींचते और कब छोड़ते हैं। केवल यही देख पड़ता था कि वे धनुष को मण्डलाकार घुमाते हुए रणभूमि में चारों ओर नृत्य सा कर रहे हैं। अर्जुन के नाराच वाण बहुत ही गहरे घुस जाने के कारण मुँह से रक्त उगलते हुए हज़ारों हाथियों का दम भर में पृथ्वी पर ढेर हो गया।

राजन्! उस समय समरक्षेत्र में असंख्य कवन्ध उठ खड़े हुए। वे कवन्ध वहाँ चारों ओर भयङ्कर युद्ध करते दिखाई पड़ने लगे। धनुष, अङ्गुलित्राण, खड्ग आदि शस्त्रों और अङ्गद आदि सुवर्णमय आभूषणों से युक्त हाथ चारों ओर कटे २६ हुए पड़े थे। समरभूमि में सर्वत्र सुन्दर सामग्री से युक्त छिन्न-भिन्न आसन, ईषादण्ड, रथवन्धन, टूटे हुए पहिये, जुए, टुकड़े-टुकड़े हो गये रथ, महाध्वजा, असंख्य माला, गहने, कपड़े, मारे गये हाथी-घोड़े और धनुप-वाण-ढाल-तलवार आदि धारण किये मृत वीर क्षत्रिय पड़े हुए थे; इससे वह रणभूमि

बहुत ही भयङ्कर दिखाई पड़ रही थी। महाराज! इस तरह अर्जुन के बाणों से नष्ट हो रही दुःशासन की सेना अपने नायक सहित व्यथित होकर भाग खड़ी हुई। दुःशासन भी अर्जुन के बाणों से पीड़ित और भयविह्वल होकर, मय अपनी सेना के, शकटव्यूह के भीतर घुस गये और रक्षा के लिए महात्मा द्रोणाचार्य की शरण में पहुँचे। ३४

इक्यानबे अध्याय

अर्जुन और द्रोण का युद्ध। द्रोणाचार्य को छोड़कर अर्जुन का आगे बढ़ना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! महावीर अर्जुन इस तरह दुःशासन की सेना का संहार करके जयद्रथ पर आक्रमण करने के लिए आचार्य की सेना के सामने वेग से चले। द्रोणाचार्य व्यूह के द्वार पर खड़े थे। उनके पास पहुँचकर अर्जुन ने, कृष्णचन्द्र की अनुमति के अनुसार, हाथ जोड़कर कहा—ब्रह्मन्! आप मेरे भले की इच्छा करें और अपने मुँह से 'स्वस्ति' कहकर मुझे आशीर्वाद दें। मैं आपके प्रसाद से ही इस दुर्भेद्य व्यूह के भीतर जाना चाहता हूँ। भगवन्! आप मेरे पिता के समान हैं, धर्मराज के समान हैं, [पुरोहित धौम्य] और महात्मा श्रीकृष्ण के समान हैं। हे तात! आपके लिए जैसे अश्वत्थामा हैं वैसे ही मैं हूँ। आप जैसे उनकी रक्षा करते हैं वैसे ही मेरी भी रक्षा कीजिए। मैं आपकी कृपा से युद्धभूमि में सिन्धुराज जयद्रथ को मारना चाहता हूँ। प्रभो! मेरी प्रतिज्ञा की रक्षा कीजिए।

सञ्जय कहते हैं कि महावीर द्रोणाचार्य ने अर्जुन के ये वचन सुनकर मुसकाकर कहा—हे अर्जुन! तुम मुझे पहले जीते बिना जयद्रथ को नहीं मार सकते। अब हँसते-हँसते द्रोणाचार्य ने तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन को और उनके रथ, घोड़े, ध्वजा और सारथी को ढक दिया। तब अर्जुन ने अपने बाणों से आचार्य के बाणों को व्यर्थ करके अपने भयङ्कर बाणों से उन्हें पीड़ित किया। इसके बाद गुरु के चरणों में, सम्मान के लिए, क्षत्रियधर्म के अनुसार उन्होंने नव बाण मारे। द्रोणाचार्य भी अपने बाणों से अर्जुन के बाण काटकर प्रज्वलित अग्नि और विष के १०

सदृश भयानक बाणों से श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों को घायल करने लगे। उस समय अर्जुन ने अपने बाणों से गुरु का धनुष काट डालना चाहा। वे यह विचार कर ही रहे थे कि न घबराने-

वाले द्रोणाचार्य ने इसी बीच में अपने बाणों से अर्जुन के धनुप की डोरी काट डाली और फिर उनके घोड़ों और सारथी को घायल करके उनकी ध्वजा में भी कई बाण मारे। अर्जुन के ऊपर द्रोणाचार्य बाण बरसा ही रहे थे कि अर्जुन ने अपने धनुष पर दूसरी डोरी चढ़ा ली। सब अस्त्रों के जाननेवालों में श्रेष्ठ अर्जुन ने आचार्य को अपनी फुर्ती दिखाने के लिए, और उनसे बढ़कर काम करने के लिए, एक साथ एक ही बाण की तरह छः सौ बाण लेकर छोड़े। फिर न लौटनेवाले अन्य सात सौ बाण, फिर हज़ार बाण और फिर दस हज़ार बाण छोड़े। वे बाण द्रोणाचार्य की सेना का संहार करने लगे। अर्जुन के बाणों से घायल और प्राणहीन होकर असंख्य मनुष्य, हाथी और घोड़े रणभूमि में गिरने लगे। अर्जुन के बाणप्रहार से रथी योद्धा एकाएक अस्त्र, ध्वजा, सारथी और घोड़े आदि से रहित होकर, अत्यन्त पीड़ित होकर, मर-मरकर रथों पर से गिरने लगे। उनके बाण लगने से बड़े-बड़े हाथी, वज्राघात से फटे हुए पर्वतशिखर की तरह, आँधी से छिन्न-भिन्न मेघमण्डल की तरह और आग से जले हुए मकान की तरह एकाएक पृथ्वी पर गिरने लगे। हिमालय के ऊपर से जल-धारा के वेग से पीड़ित हंसों के झुण्ड की तरह हज़ारों घोड़े अर्जुन के बाणों से मरकर गिरने २० लगे। प्रलयकाल के सूर्य की किरणों के समान अर्जुन के अस्त्र और बाणों से मरे हुए असंख्य योद्धा, हाथी और घोड़े जलराशि के समान गिरने लगे।
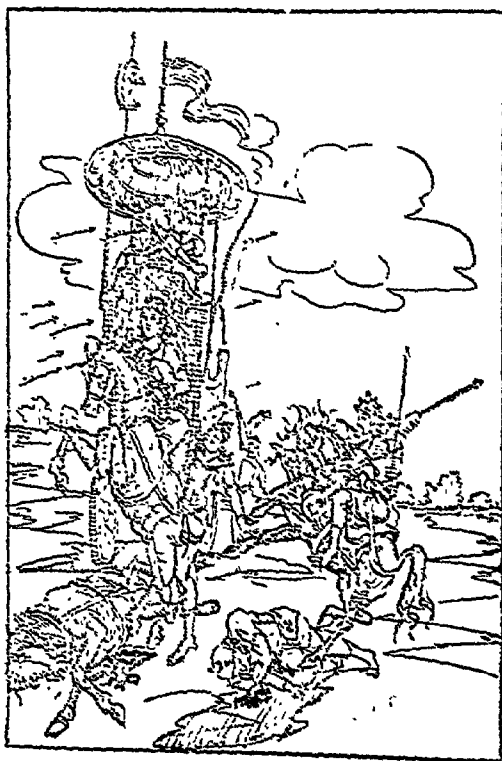
तब बाणरूप किरणों के द्वारा युद्धभूमि में कौरवपक्ष की सेना को भस्म करते हुए सूर्य-सदृश अर्जुन को मेघतुल्य द्रोणाचार्य ने बाणवर्षा-रूप जलधारा से ढक लिया। मेघ जैसे सूर्य की किरणों को छिपा ले, वैसे ही द्रोणाचार्य ने अपने बाणों के बीच में अर्जुन के रथ को छिपा दिया। अब द्रोणाचार्य ने शत्रुओं के प्राण को हरनेवाला एक नाराच बाण अर्जुन की छाती ताककर बड़े वेग से चलाया। भूकम्प के समय पहाड़ जैसे काँप उठते हैं वैसे ही उस बाण के प्रहार से अर्जुन घबरा गये। उन्होंने धैर्य धरकर अपने को सँभाला और फिर द्रोणाचार्य

को अनेक तीक्ष्ण बाणों से घायल किया। तब महाबली द्रोणाचार्य ने पाँच बाणों से श्रीकृष्ण को और तिहत्तर बाणों से अर्जुन को घायल करके तीन बाणों से उनके रथ की ध्वजा काट डाली। हाथ की फुरती दिखाते हुए द्रोणाचार्य ने पल भर में अपने असंख्य तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन को छिपा दिया। [सञ्जय कह रहे हैं कि] उस समय हम लोगों ने देखा कि द्रोणाचार्य के बाण चारों ओर लगातार गिर रहे हैं और उनका अद्भुत धनुष मण्डलाकार घूम रहा है। द्रोणाचार्य के चलाये हुए कङ्कपत्रशोभित वे बाण श्रीकृष्ण और अर्जुन के ऊपर बड़े वेग से जा रहे थे। [महाराज! उस समय हमने यह अद्भुत बात देखी कि नवयुवक होने पर भी वीर अर्जुन वृद्ध द्रोणाचार्य को किसी तरह परास्त नहीं कर सके, पराक्रम के द्वारा उन्हें हटाकर व्यूह के भीतर नहीं जा सके।]

द्रोणाचार्य के अतुल पराक्रम को देखकर श्रीकृष्ण ने कार्य-सिद्धि के लिए अर्जुन से कहा—पार्थ, पार्थ, हे महाबाहो! आचार्य से ही युद्ध में अटककर हमें अपना बहुत सा समय न नष्ट कर देना चाहिए। आओ, हम इन्हें छोड़कर आगे चलें। अर्जुन ने उनसे कहा—जैसी आपकी इच्छा। अब आचार्य को दाहनी ओर छोड़कर अर्जुन बाण-वर्षा करते हुए आगे बढ़ गये। उनको अन्यत्र जाते देखकर द्रोणाचार्य ने कहा—अर्जुन! इस समय तुम मुझसे लड़ना छोड़कर कहाँ जा रहे हो? तुम तो संग्राम में शत्रु को जीते बिना कभी हटते नहीं। इस समय यह क्या बात है? अर्जुन ने कहा—ब्रह्मन्! आप मेरे गुरुदेव हैं, शत्रु नहीं। मैं आपका पुत्रतुल्य शिष्य हूँ। ख़ासकर इस लोक में ऐसा कोई वीर पुरुष नहीं जो युद्ध में पराक्रम के द्वारा आपको परास्त कर सके। ३०

सञ्जय कहते हैं—जयद्रथ-वध के लिए उत्सुक अर्जुन यों कहते हुए फुरती के साथ आगे बढ़े और आपकी सेना को नष्ट करने लगे। पाञ्चालराजकुमार युधामन्यु और उत्तमौजा दोनों वीर भी, अर्जुन के रथ के पहियों की रक्षा करते हुए, उनके पीछे-पीछे आपकी सेना के व्यूह में घुसे। ३६

महाराज! पुत्रशोक से संतप्त, क्रुद्ध, मृत्यु के समान भयङ्कर, विचित्र युद्ध में निपुण, प्राणों का मोह छोड़कर युद्ध करते हुए, यूथपति गजराज के तुल्य पराक्रमी, महाधनुर्धर अर्जुन

जब इस तरह वेग से कौरव-सेना के भीतर घुसकर उसका संहार करने लगे, तब कौरवपक्ष के वीर जय, यादवश्रेष्ठ कृतवर्मा, काम्बोज और श्रुतायु ने उनका सामना किया। उस समय इन वीरों के अनुगामी दस हज़ार श्रेष्ठ रथी अर्जुन को रोकने चले। उनके साथ ही अभीषाह, शूरसेन, शिवि, वसाति, मावेल्लक, ललित्थ, केकय, मद्रक आदि देशों के वीर योद्धा, नारायणी सेना, गोपालगण और पहले कर्ण ने जिन्हें परास्त किया था वे, शूरश्रेष्ठ काम्बोज देश के वीर उत्साह के साथ प्रसन्नतापूर्वक द्रोणाचार्य को आगे करके अर्जुन को रोकने लगे। उस समय परस्पर युद्ध करने के लिए उद्यत कौरवपक्ष के उक्त योद्धा और अर्जुन घोर संग्राम करने लगे। रोग को जैसे औषध आदि उपचार रोकते हैं वैसे ही जयद्रथ को मारने के लिए आते हुए वीर
४४ अर्जुन को वे सब योद्धा मिलकर रोकने लगे।

बानबे अध्याय

श्रुतायुध और सुदक्षिण का मारा जाना

सञ्जय कहते हैं—राजन्! इस तरह जब कौरवपक्ष के वीरों ने पराक्रमी अर्जुन को घेर लिया और द्रोणाचार्य भी उनका पीछा करते हुए तेज़ी के साथ आगे बढ़े, तब अर्जुन उसी तरह सूर्य-किरण-तुल्य तीक्ष्ण बाणों से शत्रुओं को अत्यन्त सन्तप्त करने लगे जिस तरह व्याधियाँ देह को पीड़ा पहुँचाती हैं। अर्जुन के दारुण बाणप्रहार से कौरवपक्ष के घोड़े घायल होने लगे, रथ छिन्न-भिन्न होने लगे, सवारों सहित बड़े-बड़े हाथी पृथ्वी पर गिरने लगे, वीरों के सिर पर के छत्र कट-कटकर गिरने लगे और रथों के पहियों के टुकड़े-टुकड़े होने लगे। अर्जुन के बाणों से पीड़ित होकर सब सैनिक इधर-उधर प्राण लेकर भागने लगे। हे नरनाथ! महावीर अर्जुन जब घनघोर संग्राम करने लगे तब उनके बाणों के सिवा युद्धभूमि में और कुछ नहीं सूझ पड़ता था। उस समय वे अपनी प्रतिज्ञा को सत्य करने की इच्छा से सीधे जानेवाले तीक्ष्ण बाणों के द्वारा कौरव-सेना को कँपाते हुए प्रतापी द्रोणाचार्य की ओर चले। महावीर द्रोण ने अपने शिष्य अर्जुन के ऊपर मर्मभेदी और सीधे निशाने पर जानेवाले पचीस बाण छोड़े। अस्त्र-विद्या के जाननेवालों में मुख्य वीर अर्जुन ने बाणों के द्वारा आचार्य के बाणों का वेग रोक दिया। फिर वे तेज़ी से आगे बढ़े। उन्होंने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करते हुए सन्नतपर्व-युक्त भल्ल बाणों से द्रोणाचार्य के भल्ल बाणों को काट डाला। राजन्! उस समय हमने आचार्य की ऐसी अद्भुत शिक्षा
१० और कुशलता देखी कि युवा अर्जुन यत्न करके भी उनके शरीर में एक बाण तक नहीं छुआ सके। महामेघ जैसे असंख्य जलधाराएँ बरसाता है वैसे ही द्रोणरूप मेघ अर्जुनरूप पहाड़ पर बाणों की वर्षा करते ही दिखाई पड़ता था। पराक्रमी अर्जुन इससे तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने

अपने बाणों से द्रोण के बाणों की वर्षा को रोक दिया। द्रोणाचार्य ने अर्जुन को पचीस और श्रीकृष्ण को, छाती तथा भुजाओं में, सत्तर बाण मारे। अर्जुन ने भी हँसते-हँसते बाणवर्षा करनेवाले आचार्य के प्रहारों को निष्फल कर दिया। प्रलयकाल के अग्नि के समान प्रज्वलित होकर दुर्द्धर्ष हो रहे द्रोणाचार्य के बाणों की चोट बचाकर अर्जुन भोज की सेना को नष्ट करने लगे। द्रोणाचार्य के धनुष से निकले हुए बाण असह्य थे, इसी कारण अर्जुन उन्हें बचा गये। मैनाक पर्वत के समान अटल द्रोणाचार्य से बचते हुए वे कृतवर्मा और काम्बोज-नरेश सुदक्षिण के सामने पहुँचे। वे इन दोनों के बीच में हो गये। तब कृतवर्मा ने निर्भय भाव से कङ्कपत्रयुक्त दस बाण अर्जुन को मारे। अर्जुन ने कृतवर्मा को पहले पैना एक बाण मारकर फिर तीन बाण मारे। अब मुसकुराते हुए कृतवर्मा ने श्रीकृष्ण और अर्जुन को पचीस पचीस बाण मारे। अर्जुन ने उसी दम कृतवर्मा का धनुष काट डाला और क्रोधित सांप के समान, अग्निशिखा के आकारवाले, इक्कीस बाण मारे। महारथी कृतवर्मा ने तुरन्त दूसरा धनुष लेकर, अर्जुन की छाती ताककर, पाँच बाण पहले और पांच बाण उसके बाद मारे। महावीर अर्जुन ने भी कृतवर्मा की छाती में नव बाण मारे। २०

श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कृतवर्मा के साथ बहुत देर तक युद्ध करते देखकर सोचा कि हम लोगों को अब अधिक देर न करनी चाहिए। तब वे अर्जुन से बोले—हे पार्थ! कृतवर्मा के साथ दया का व्यवहार करने की आवश्यकता नहीं। सम्बन्ध का विचार छोड़कर शीघ्र इनको मारो। महाबाहु अर्जुन ने श्रीकृष्ण का कहा मानकर फुर्ती से बाण मारकर कृतवर्मा को मूर्च्छित कर दिया। अब वे काम्बोज-सेना के भीतर घुसे। [कृतवर्मा तुरन्त ही होश में आ गये और] अर्जुन को काम्बोज-सेना के भीतर गये देखकर उन्होंने अर्जुन के चक्ररक्षक पाञ्चालदेशीय युधामन्यु और उत्तमौजा को आगे नहीं जाने दिया। उन्होंने युधामन्यु को तीन और उत्तमौजा को चार तीक्ष्ण बाण मारे। तब उन दोनों वीरों ने कृतवर्मा को दस-दस बाण मारे तथा वैसे ही तीन-तीन बाण और मारकर कृतवर्मा के रथ की ध्वजा और धनुष काट डाला। यह देखकर कृतवर्मा बहुत ही कुपित हुए और उन्होंने तुरन्त दूसरा धनुष लेकर उन दोनों वीरों के धनुष काट डाले और उन पर असंख्य बाणों की वर्षा की। वे दोनों वीर भी अन्य धनुष लेकर, उन पर डोरी चढ़ाकर, कृतवर्मा को तीक्ष्ण बाणों से मारने लगे। ३१

इसी बीच में महावीर अर्जुन शत्रु-सेना के भीतर घुस गये। युधामन्यु और उत्तमौजा ने कौरव-सेना के भीतर घुसने की बहुत-बहुत चेष्टा की, पर कृतवर्मा के बाणों की चोट से वे कृतकार्य नहीं हो सके। अर्जुन कौरव-सेना में प्रवेश करके फुरती के साथ उसे मारने लगे। कृतवर्मा को सामने पाकर भी उन्होंने जान से नहीं मारा। राजा श्रुतायुध ने जब अर्जुन को कौरव-सेना के भीतर जाते देखा तब वे क्रुद्ध होकर धनुष कँपाते हुए उसी दम उनके सामने पहुँचे। उन्होंने अर्जुन को तीन और श्रीकृष्ण को सत्तर बाण मारकर एक क्षुरप्र बाण से अर्जुन की ध्वजा

काट डाली। यह देखकर अर्जुन बहुत ही कुपित हुए और गजराज के ऊपर अंकुश-प्रहार की तरह श्रुतायुध के ऊपर उन्होंने झुकी हुई पोरवाले नव्वे बाण चलाये। अर्जुन का पराक्रम देखकर कुपित श्रुतायुध ने अर्जुन को सतहत्तर नाराच बाण मारे। अर्जुन ने क्रोध से विह्वल होकर श्रुतायुध का धनुष काट डाला और तरकसों के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। फिर सात बाण
४० श्रुतायुध की छाती में मारे। अर्जुन का पराक्रम देखकर महावीर श्रुतायुध क्रोध के मारे अधीर हो उठे। उन्होंने उसी दम दूसरा धनुष लेकर नव बाण अर्जुन के हाथों में और छाती में मारे। इसी समय महाबली शत्रुदमन अर्जुन ने एक साथ हज़ारों बाणों की वर्षा करते-करते शत्रु के सारथी और रथ के घोड़ों को मार गिराया। अब अर्जुन ने श्रुतायुध को सतहत्तर बाण और मारे। सारथी और घोड़े न रहने पर राजा श्रुतायुध बहुत ही कुपित हुए। वे रथ से उतरकर, गदा हाथ में लेकर, अर्जुन के रथ के सामने दौड़े।

राजन्! श्रुतायुध लोकपाल वरुण के पुत्र थे। ठण्डे जलवाली महानदी पर्णाशा उनकी माता थीं। पर्णाशा ने वरुण से यह वर माँगा कि मेरा पुत्र किसी शत्रु के मारे न मरे। वरुण ने प्रसन्नतापूर्वक कहा—हे श्रेष्ठ नदी! मैं यह दिव्य अस्त्र देता हूँ। इसके प्रभाव से तुम्हारा पुत्र समर में अवध्य होगा। भद्रे! मनुष्य कदापि अवध्य या अमर नहीं हो सकता। पृथ्वी पर जन्म लेनेवाले को अवश्य ही काल के गाल में जाना पड़ता है। ख़ैर, मैं तुमको यह वर देता हूँ कि तुम्हारा पुत्र रणभूमि में अजेय होगा। तुम अपने मन से चिन्ता दूर करो। यह कहकर वरुण ने मन्त्र के साथ एक दिव्य गदा श्रुतायुध को दी। उसी गदा के प्रभाव से श्रुतायुध पृथ्वी पर
५० दुर्जेय हो उठे। जिस समय वरुण ने श्रुतायुध को गदा दी थी उसी समय यह भी कह दिया था कि देखो, जो कोई युद्ध न करता हो उस पर इस गदा का वार न करना। अगर वार करोगे तो यह गदा उलटकर तुम्हारे ही ऊपर गिरेगी। समय पड़ते ही काल-मोहित होकर श्रुतायुध ने वरुण के वचनों की परवा नहीं की—वे उस वीर-घातिनी गदा को कृष्णचन्द्र के ऊपर चला बैठे। पराक्रमी भगवान् कृष्ण ने उस गदा का प्रहार अपने सुदृढ़ कन्धे पर रोका। विन्ध्याचल पर्वत जैसे प्रचण्ड आँधी से नहीं काँपता वैसे ही उस गदा के प्रहार से श्रीकृष्ण भी विचलित नहीं हुए। वह गदा दुष्प्रयोग-दूषित 'कृत्या' के समान बड़े वेग से पलट पड़ी; उसने महावीर श्रुतायुध को आकर चूर-चूर कर दिया। इस तरह वीर श्रुतायुध को मारकर वह गदा पृथ्वी में गिर पड़ी। गदा को विफल होकर लौटते और श्रुतायुध को मरते देखकर कौरव-सेना में हाहाकार मच गया। राजन्! महावीर श्रुतायुध ने युद्ध न करनेवाले श्रीकृष्ण के ऊपर वह गदा चलाई थी इसी कारण, वरुण के कथनानुसार, उस गदा ने लौटकर उन्हीं के प्राण ले लिये। श्रुतायुध सब योद्धाओं के सामने ही आँधी से टूटे हुए कई शाखाओंवाले पुराने बड़े पेड़ की तरह पृथ्वी पर गिर पड़े। शत्रु-
६० दमन श्रुतायुध की मृत्यु देखकर सब सैनिक और प्रधान योद्धा भी भाग खड़े हुए।
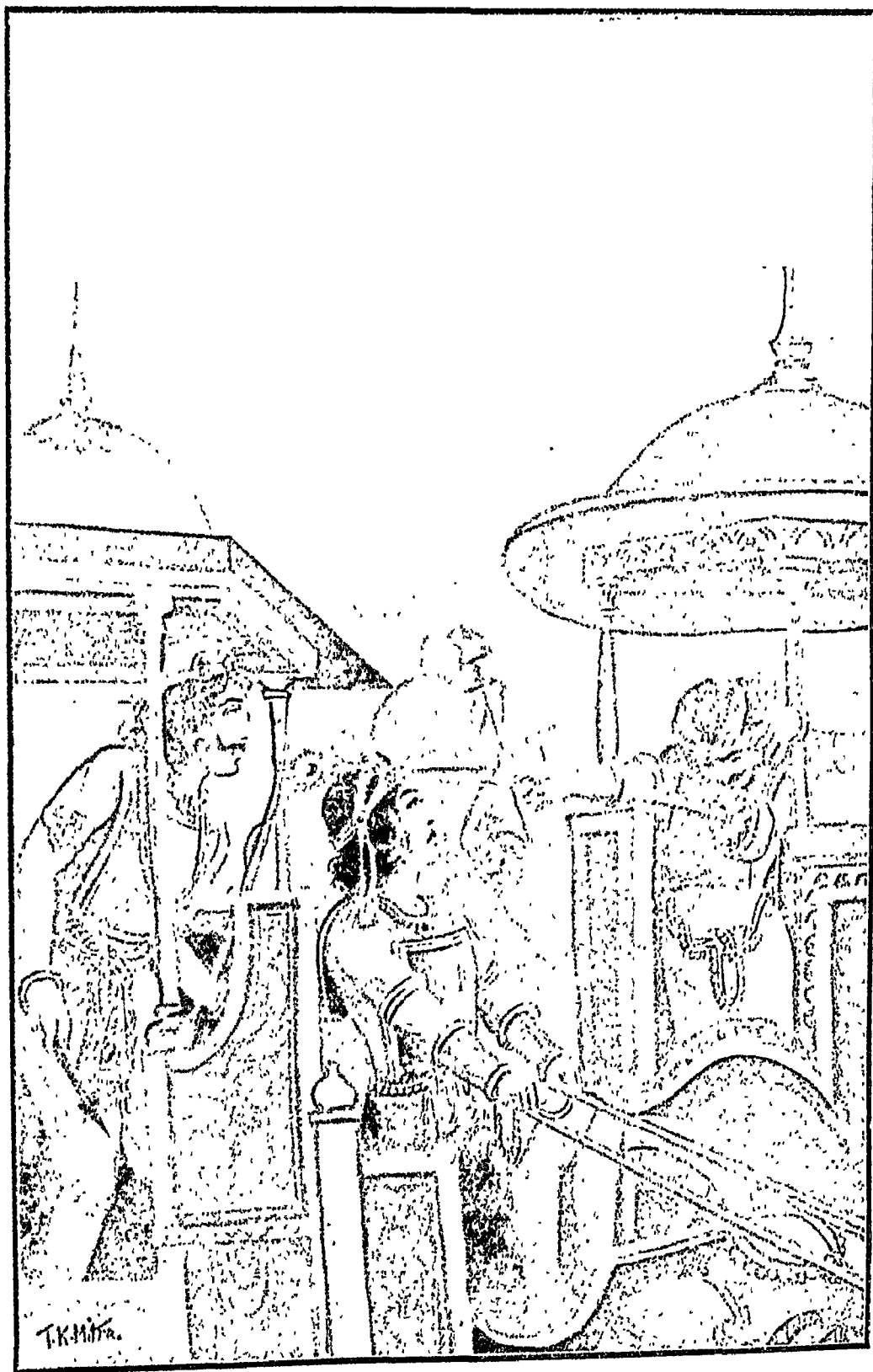
उसने महावीर श्रुतायुध को आकर चूर चूर कर दिया।—पृ० २३६०

अब काम्बोजराज के पुत्र शूरवीर सुदक्षिण, तेज़ घोड़ों से युक्त रथ पर बैठकर, शत्रुओं का नाश करनेवाले अर्जुन की ओर दौड़े। अर्जुन ने उनको सात बाण मारे। वे बाण वीर सुदक्षिण के शरीर को भेदकर पृथ्वी में घुस गये। गाण्डीव धनुष से छूटे हुए तीक्ष्ण बाणों की गहरी चोट खाकर सुदक्षिण ने कङ्कपत्रयुक्त दस बाण अर्जुन को मारे। इसके बाद ही फिर श्रीकृष्ण को तीन और अर्जुन को पाँच बाण मारे। अर्जुन ने उनका धनुष काट डाला, ध्वजा काट गिराई और अत्यन्त तीक्ष्ण दो भल्ल बाण सुदक्षिण को मारे। वे भी अर्जुन को तीन बाण मारकर सिंहनाद करने लगे। शूर सुदक्षिण ने क्रुद्ध होकर लोहे की बनी हुई, कई घण्टों से शोभित, भयङ्कर शक्ति अर्जुन के ऊपर चलाई। उल्का के समान जलती हुई उस शक्ति से चिनगारियाँ निकल रही थीं। वह शक्ति आकर अर्जुन की छाती में लगी और घाव करके पृथ्वी पर गिर पड़ी। शक्ति की गहरी चोट खाकर अर्जुन मूर्च्छित हो गये; किन्तु वे तुरन्त ही सँभल गये और क्रोध के मारे ओठ चबाने लगे। उन्होंने कङ्कपत्रयुक्त चौदह नाराच बाण मारे जिनसे सुदक्षिण घायल हुए, उनका सारथी मरा, रथ के घोड़े नष्ट हुए तथा ध्वजा और धनुष कट गया। इसके बाद बहुत से बाण मारकर उन्होंने सुदक्षिण के रथ के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। विचार और विक्रम जिनका निष्फल हो गया है, उन सुदक्षिण के हृदय में अर्जुन ने तीक्ष्ण धारवाला एक बाण बड़े ज़ोर से मारा। उस बाण के लगने से सुदक्षिण का हृदय ७० फट गया, दृढ़ कवच कटकर गिर पड़ा, प्राण निकल गये, सब अङ्ग ढीले पड़ गये, मुकुट और अङ्गद आदि गिर पड़े और वे यन्त्रयुक्त इन्द्रध्वज की तरह मुँह के बल रथ से पृथ्वी पर गिर पड़े। बड़ी-बड़ी शाखाओंवाला कर्णिकार का सुदृढ़ वृक्ष जैसे गर्मियों में आँधी से टूटकर पर्वत के शिखर पर से नीचे गिर पड़े, वैसे ही वीर सुदक्षिण गिर पड़े। काम्बोज देश के बने बहुमूल्य बिछौनों पर लेटने योग्य और बहुमूल्य गहने पहने हुए राजा सुदक्षिण मरकर रणशय्या पर शिखरयुक्त पर्वत के समान जान पड़ने लगे। सुन्दर रूप और आरक्त नेत्रोंवाले काम्बोजराज के पुत्र सुदक्षिण अर्जुन के कर्णी बाण से मरकर पृथ्वी पर गिर पड़े। सिर पर अग्नि के समान दमकती हुई सोने की माला पहने, पृथ्वी पर पड़े हुए, मृत महाबाहु सुदक्षिण बहुत ही शोभायमान हुए। राजन्! तब श्रुतायुध और काम्बोज-राजकुमार सुदक्षिण की मृत्यु देखकर आपके पुत्र की सेना भाग खड़ी हुई। ७६

तिरानबे अध्याय

श्रुतायु आदि का मारा जाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! महावीर श्रुतायुध और सुदक्षिण को मारे गये देखकर कौरव-पक्ष के सब सैनिक क्रोध से विह्वल हो उठे। उन्होंने क्रोधपूर्वक अर्जुन का सामना किया। अभी-

षाह, शूरसेन, शिवि, वसाति देशों के वीरों के अनेक दल अर्जुन पर फुरती से असंख्य बाणों की वर्षा करने लगे। तब महावीर अर्जुन ने अपने तीक्ष्ण बाणों से उनमें के साठ सौ पुरुषों को मथ डाला। जैसे मृग बाघ से डरकर भागते हैं वैसे ही वे अर्जुन के बाणों की चोट से विह्वल होकर भागने लगे। वे फिर धैर्य धारण-पूर्वक पलट पड़े; उन्होंने चारों ओर से अर्जुन को घेर लिया। रण में शत्रुओं को मारकर जय प्राप्त करने की इच्छा रखनेवाले अर्जुन, गाण्डीव धनुष से छूटे हुए बाणों के द्वारा, शीघ्रता के साथ अपनी ओर आक्रमण करने को आते हुए उन लोगों के सिर और हाथ काट-काटकर गिराने लगे। उनके इतने सिर कटकर गिरे कि रणभूमि में लगातार सिर ही सिर दिखाई पड़ने लगे। हज़ारों कौओं और गिद्धों के दल उड़ने से ऐसा जान पड़ने लगा कि रण-भूमि पर बादल छाये हुए हैं। इस प्रकार जब वीर अर्जुन उन लोगों का संहार करने लगे तब महावीर श्रुतायु और अच्युतायु दोनों भाई अर्जुन से लड़ने आये। वे बली, स्पर्धाशील, वीर, कुलीन, महाबाहु और श्रेष्ठ योद्धा थे। दोनों वीर दाहनी और बाईं ओर से अर्जुन पर बाण बरसाने लगे। महान् यश पाने की इच्छा से आपके पुत्र के लिए अर्जुन को मारने के लिए उद्योगी
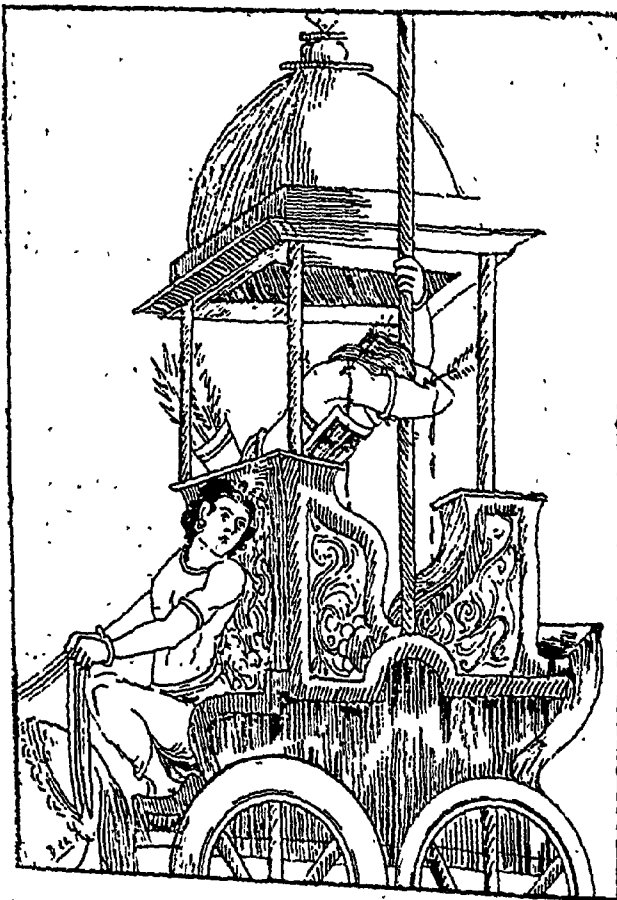
वे दोनों धनुर्द्धर फुरती के साथ अर्जुन पर प्रहार करने लगे। जैसे किसी बड़े सरोवर को दो मेघ जलधाराओं से भर दें, वैसे ही उन्होंने तीक्ष्ण हज़ारों बाणों से अर्जुन को ढक दिया। १० इसी अवसर में कुपित होकर श्रुतायु ने अर्जुन को धारदार बहुत ही तीक्ष्ण तोमर मारा। बलवान् शत्रु ने बड़े वेग से प्रहार किया। उस प्रहार से अर्जुन को गहरी चोट आई। वे थोड़ी देर के लिए अचेत-से हो गये। यह देखकर कृष्णचन्द्र को बड़ी चिन्ता हुई। इसी अवसर में मौका पाकर महारथी अच्युतायु ने भी अर्जुन को तीक्ष्ण शूल मारा। जैसे कोई कटे पर नमक छिड़के वैसे ही अच्युतायु ने एक प्रहार पर दूसरा प्रहार किया। बहुत गहरी चोट लगने से अर्जुन को बड़ा कष्ट हुआ। वे कुछ समय तक ध्वज-दण्ड के सहारे बैठे रहे। महाराज! उस समय आपके सब सैनिक

अर्जुन को मरा हुआ जानकर ज़ोर से सिंहनाद करने लगे। उनको अचेत देखकर कृष्णचन्द्र को बड़ा खेद हुआ। वे मधुर वचनों से अर्जुन को ढाढ़स बँधाने लगे। मौक़ा पाकर वे दोनों श्रेष्ठ रथी अर्जुन और वासुदेव के ऊपर बाणों की वर्षा करने लगे। उस समय यह अद्भुत दृश्य देखने में आया कि उनके बाणों से अर्जुन का रथ पहिये-कूबर-घोड़े-ध्वजा-पताका-सहित अदृश्य हो गया।

महाराज! थोड़ी देर के बाद धीरे-धीरे अर्जुन को होश आया। वे मानों यमराज के घर से लौटकर आये। श्रीकृष्ण सहित अपने रथ को बाणों में छिप गया देखकर अर्जुन को बड़ा क्रोध हो आया। उन्होंने देखा कि दोनों शत्रु उनके सामने अग्नि के समान प्रज्वलित हो रहे हैं। तब महारथी अर्जुन इन्द्रास्त्र का प्रयोग करके बाण बरसाने लगे। उस समय अस्त्र के प्रभाव से अर्जुन के धनुष से हज़ारों बाण प्रकट होने लगे। गाण्डीव धनुष से छूटे हुए वे बाण आकाश में विचरने लगे। उन बाणों ने श्रुतायु और अच्युतायु के बाणों को व्यर्थ कर दिया। अर्जुन अपने बाणों के वेग से शत्रुओं के बाणों को विफल करके जहाँ-जहाँ महारथी योद्धा थे, वहाँ-वहाँ उनसे युद्ध करते हुए विचरने लगे। अर्जुन के असंख्य बाणों से उन दोनों के हाथ और सिर कट गये; वे आँधी से उखड़े हुए बड़े पेड़ों की तरह पृथ्वी पर गिर पड़े। समुद्र को सोख लेने के समान श्रुतायु और अच्युतायु की मृत्यु देखकर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। अर्जुन ने उन दोनों शत्रुओं के साथी पाँच सौ रथी योद्धाओं को भी मार डाला। इसके बाद शत्रुपक्ष के श्रेष्ठ वीरों को मारते हुए अर्जुन कौरव-सेना के भीतर घुस पड़े।

श्रुतायु और अच्युतायु की मृत्यु देखकर उनके पुत्र नियतायु और दीर्घायु, पितृशोक से व्यथित और कुपित होकर, विविध बाण बरसाते हुए अर्जुन के सामने आये। कुपित अर्जुन ने दम भर में तीक्ष्ण बाण मारकर उन दोनों को भी मार डाला। कमलवन को जैसे कोई गजराज रौंदे वैसे ही शत्रु-सेना को मथते हुए वीर अर्जुन को कौरवपक्ष के वीर आगे बढ़ने से नहीं रोक सके। उस समय हज़ारों सुशि-

क्षित कुपित गजारोही अङ्ग देश के योद्धाओं ने अर्जुन को चारों ओर से घेर लिया। दुर्योधन की आज्ञा से प्राच्य, दाक्षिणात्य, कलिङ्ग आदि देशों के राजा लोग पर्वताकार हाथियों के द्वारा अर्जुन पर आक्रमण करने लगे। अर्जुन अपने गाण्डीव धनुष से छूटे हुए बाणों से उनके भूषणयुक्त बाहु और सिर काटने लगे। उन वीरों के कटे हुए अङ्गद-युक्त हाथों और सिरों से परिपूर्ण रणभूमि साँपों से घिरी हुई सुवर्णशिला के समान जान पड़ने लगी। बाणों से कटे हुए हाथ और सिर गिरते समय पेड़ों पर से गिरते हुए पक्षियों के समान दिखाई पड़ रहे थे। बाण लगने से हाथियों के शरीरों से रक्त बहने लगा और वे उन पहाड़ों के समान जान पड़ने लगे जिनसे वर्षाकाल में गेरू के झरने बह रहे हों। हाथियों पर बैठे हुए, विकृताकार, विविध विचित्र वेशधारी शस्त्रयुक्त म्लेच्छगण अर्जुन के विचित्र तीक्ष्ण बाणों से मरकर पृथ्वी पर गिरने लगे। वे सिर से पैर तक रक्त से नहाये हुए थे। जिनकी पीठ पर सवार और महावत बैठे हुए थे तथा आसपास चरण-रक्षक खड़े हुए थे, ऐसे हज़ारों हाथी अर्जुन के बाणों की चोट खाकर मुँह से रक्त उगलने लगे। बहुत से हाथियों के अङ्ग कट-फट गये। कुछ चिल्लाने, कुछ गिरने और कुछ इधर-उधर भागने-फिरने लगे। बहुत से हाथी घबराकर अपने ही पक्ष के ४० सैनिकों को कुचलने लगे। विषैले नागों के समान और विविध अस्त्र-शस्त्रों से सम्पन्न हज़ारों हाथियों की ऐसी ही दशा अर्जुन के बाणों ने कर डाली।

वे आसुरी मायाओं को जाननेवाले, घोररूप, घोर नेत्रोंवाले, कौए के से काले-कलूटे, दुराचारी, लम्पट, कलहप्रिय यवन, पारद, शक, बाह्लीक, मत्त हाथी के पराक्रमवाले द्रविड़, नन्दिनी गऊ की योनि से उत्पन्न कालतुल्य अमोघ प्रहार करनेवाले म्लेच्छ, दार्वातिसार, दरद और हज़ारों पुण्ड्रदेशीय व्रात्य (पतित) क्षत्रिय मिलकर अर्जुन पर आक्रमण करने लगे। उन म्लेच्छों की संख्या बताना सम्भव नहीं। अनेक प्रकार के युद्धों में निपुण वे म्लेच्छ, अर्जुन के ऊपर, तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करने लगे। तब उनका संहार करने के लिए अर्जुन ने शीघ्रता के साथ बाण-वर्षा करना शुरू कर दिया। अर्जुन के धनुष से टीड़ीदल के समान बाण निकलने लगे। उन्होंने अस्त्र के प्रभाव से इतने बाण बरसाये कि रणभूमि में उनसे बादलों की सी छाया दिखाई पड़ने लगी। पूरा सिर मुड़ाये, आधा सिर मुड़ाये, जटाधारी, अपवित्र, दाढ़ी-मूछों से भयानक मुखमण्डलवाले उन म्लेच्छों को अर्जुन ने अपने अस्त्र के प्रभाव से देखते ही देखते नष्ट कर दिया। पहाड़ी और पहाड़ों की कन्दराओं में रहनेवाले म्लेच्छगण अर्जुन के असंख्य बाणों से पीड़ित, नष्ट और भयविह्वल होकर इधर-उधर भागने लगे। अर्जुन के तीक्ष्ण बाणों से घायल होकर और मरकर पृथ्वी पर गिरे हुए हाथियों, घोड़ों और उनके सवारों के रक्त को बगले, ४९ कङ्क, वृक आदि पशु-पक्षी प्रसन्नतापूर्वक पीने लगे। अर्जुन ने उस समय रणभूमि में रक्त के प्रवाह और तरङ्ग से युक्त भयङ्कर नदी बहा दी, जो कि प्रलय-समय की काल-तुल्य नदी जान

पड़ती थी। वह नदी पैदल, घोड़े, रथ, हाथी आदि की सीढ़ियों से युक्त थी; असंख्य राज-पुत्रों, हाथियों, घोड़ों, रथियों और पैदलों के शरीरों से निकले हुए रक्त से उत्पन्न हुई थी। बाण-वर्षा ही उसमें डोंगी-नाव आदि के समान थी। केश ही उसमें सेवार और घास की जगह देख पड़ते थे। कटी हुई उँगलियाँ उसमें छोटी मछलियों के समान जान पड़ती थीं। बड़े बड़े हाथियों के शरीर उसकी तटभूमि प्रतीत होते थे। जब मूसलाधार पानी बरसता है तब जैसे ऊँची-नीची सब भूमि एकाकार हो जाती है वैसे ही वह रणभूमि कौरव-सेना के रक्त से एकाकार दिखाई पड़ने लगी। अर्जुन ने उस समय युद्धभूमि में छः हज़ार घोड़ों और एक हज़ार वीर क्षत्रियों को मार डाला। सुसज्जित हाथी अर्जुन के बाणों से छिन्न-भिन्न होकर, वज्र के प्रहार से फटे हुए पर्वतों के समान, पृथ्वी पर गिरने लगे। मस्त गजराज जैसे नरकट के वन को रौंदता हुआ इधर-उधर विचरता है वैसे ही अर्जुन भी असंख्य हाथी, घोड़े, रथी आदि का संहार करते हुए रणभूमि में विचरने लगे। प्रचण्ड आग जैसे हवा की सहायता से असंख्य वृक्ष, लता, गुल्म, सूखी लकड़ी और घास-फूस से परिपूर्ण जङ्गल को जलाती है वैसे ही महावीर अर्जुन, श्रीकृष्ण की सहायता से, ज्वाला-तुल्य तीक्ष्ण बाणों के द्वारा असंख्य कौरव-सेना को मृत्यु के मुख में भेजने लगे। उन्होंने सब रथों को योद्धाओं से ख़ाली और पृथ्वी को मनुष्य आदि की लाशों से परिपूर्ण कर दिया। महावीर अर्जुन हाथ में गाण्डीव धनुष लिये हुए समरभूमि में इस फुरती से घूम रहे थे मानों नृत्य कर रहे हों।

इस तरह वज्रतुल्य बाणों की मार से युद्धभूमि को रक्त में मग्न करके कुपित अर्जुन आगे बढ़कर कौरव-सेना के भीतर घुसे। अम्बष्ठाधिपति श्रुतायु ने शत्रु-सेना में आते हुए अर्जुन को अपने पराक्रम से रोका। उस समय महाबली अर्जुन ने कङ्कपत्रयुक्त तीक्ष्ण बाणों से श्रुतायु के घोड़ों को मार गिराया और साथ ही धनुष भी काट डाला। अर्जुन के इस कार्य से अम्बष्ठराज श्रुतायु के क्रोध की सीमा न रही। वे एक भारी गदा लेकर श्रीकृष्ण और अर्जुन के पास पहुँचे। उन्होंने अर्जुन के रथ की गति रोककर श्रीकृष्ण पर गदा चलाई। श्रीकृष्ण को गदा लगते देख-कर अर्जुन अत्यन्त कुपित हो उठे। मेघ जैसे उदय हो रहे सूर्य को छिपा लेते हैं, वैसे ही अर्जुन ने सुवर्णपुङ्खयुक्त बाणों की वर्षा से गदापाणि श्रुतायु को छिपा दिया और अन्य बाणों से उस गदा के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। अर्जुन ने यह अद्भुत काम किया। महावीर अम्बष्ठ-राज ने अपनी गदा के टुकड़े हुए देखकर तुरन्त दूसरी गदा हाथ में ली। वे अत्यन्त कुपित होकर उस गदा से बारम्बार अर्जुन और श्रीकृष्ण को पीड़ित करने लगे। तब रणनिपुण अर्जुन ने दो क्षुरप्र बाणों से श्रुतायु के गदायुक्त इन्द्रध्वज-सदृश दोनों हाथ काट गिराये और वैसे ही अन्य एक बाण से उनका सिर भी काट डाला। महावीर अम्बष्ठराज इस तरह अर्जुन के बाण से मरकर पृथ्वी को शब्दपूर्ण करते हुए, यन्त्र से छूटकर गिरे हुए इन्द्रध्वज के समान, गिर

९०

पड़े। उस समय शत्रुनाशन वीर अर्जुन असंख्य रथ, हाथी, घोड़े आदि के बीच में घिर होने
७० के कारण घनघटाओं से घिरे हुए सूर्य के समान दिखाई पड़ने लगे।

चैरानवे अध्याय

दुर्योधन का द्रोणाचार्य को उलहना देना और आचार्य का दुर्योधन को
अभेद्य कवच पहना देना

सञ्जय कहते हैं—राजन् ! जयद्रथ को मारने की इच्छा से महावीर अर्जुन इस तरह दुर्भेद्य द्रोणाचार्य की सेना और भोजराज की सेना को छिन्न-भिन्न करते हुए व्यूह के भीतर घुस गये। काम्बोज-राजकुमार सुदक्षिण और पराक्रमी श्रुतायु मारे गये। यह देखकर आपके सब सैनिक प्राण लेकर चारों ओर भागने लगे। रथ पर सवार आपके पुत्र दुर्योधन यह देख शीघ्र ही आचार्य के पास जाकर कहने लगे—ब्रह्मन्! वीर अर्जुन इस सेना को नष्ट-भ्रष्ट करते हुए निकल गये। इस दारुण जनसंहार के अवसर पर आपको अर्जुन के मारने का उपाय करना चाहिए। भगवन् ! आप अपनी बुद्धि से आगे का कर्तव्य सोचिए। ऐसा कीजिए कि पुरुषसिंह जयद्रथ को आज अर्जुन किसी तरह न मार सकें। आप ही हम लोगों के एकमात्र आश्रयस्थल हैं। देखिए, यह अर्जुन-रूप अग्नि क्रोध-रूप हवा की प्रेरणा से प्रचण्ड होकर हमारी सेना रूप सूखी घास के ढेर को वैसे ही भस्म कर रहा है, जैसे दावानल सूखे वन को जलाता है। सेना को चीरते हुए अर्जुन निकल गये, इस कारण जयद्रथ की रक्षा करनेवाले वीर लोग बड़े सङ्कट में पड़े हैं; क्योंकि उन्हें निश्चय था कि अर्जुन जीते जी द्रोणाचार्य को लाँघकर आगे नहीं बढ़ सकते। ब्रह्मन् ! सो आप देखते रहे और आपके आगे से अर्जुन निकल गये! महात्मन् ! मैं समझ रहा हूँ कि आज यह मेरी सब सेना किसी तरह जीती नहीं रह
१० सकती। हे महाभाग ! मैं जानता हूँ कि आप पाण्डवों के हितचिन्तक हैं। इसी कारण मैं इस समय घबरा रहा हूँ कि मेरा काम कैसे सिद्ध होगा। ब्रह्मन् ! मैं आपकी सेवा करता आया हूँ और यथाशक्ति आपको प्रसन्न करता रहा हूँ; किन्तु आपको मेरा ध्यान नहीं है। हे अमितविक्रमी ! हम लोग सदा आपके भक्त रहे हैं, फिर भी आप हमारा ख़याल नहीं करते, हमारे हित और अनुरोध पर ध्यान नहीं देते ! बल्कि मैं देखता हूँ कि हमारे अप्रिय और अनिष्ट में तत्पर पाण्डवों पर ही आपका अधिक स्नेह है और आप सब तरह उन्हीं का हित सोचते और करते हैं। भगवन् ! आप हमारे ही आश्रय में रहकर, हमारी दी हुई वृत्ति से निर्वाह करके, हमारी ही जड़ काटते हैं। मैं न जानता था कि आप उस छुरे के समान हैं जिसमें ऊपर से

शहद चुपड़ा हुआ हो। यदि पहले ही आप अर्जुन को रोकने का वादा न करते, तो मैं अपने घर जाने के लिए उद्यत सिन्धुराज जयद्रथ को कभी न रोक रखता। मैंने मूर्खतावश आपके द्वारा जयद्रथ की रक्षा की आशा की, जयद्रथ को दिलासा दिया और इस प्रकार उन्हें मृत्यु के मुँह में डाल दिया! यह निश्चित है कि यमराज की दाढ़ों के बीच में जाकर चाहे कोई मनुष्य छुटकारा पा भी जाय, किन्तु युद्ध में अर्जुन के हाथ में पड़ जाने पर जयद्रथ के प्राण नहीं बच सकते। हे गुरुवर! कृपा करके अब ऐसा कीजिए कि जयद्रथ अर्जुन के हाथों से जीते बच जायँ। मैं इस समय आर्त और मूढ़ सा हो रहा हूँ। मेरे इस प्रलाप पर आप ध्यान न दीजिए। यदि मेरे मुँह से कुछ कटु वचन निकल गये हों तो उनके लिए बुरा न मानिए।

राजा दुर्योधन के वचन सुनकर आचार्य ने कहा—राजन्! मैं तुम्हारी बातों का बुरा नहीं मानता; क्योंकि तुमको अपने पुत्र अश्वत्थामा के समान समझता हूँ। मैं तुमसे सच बात कहता हूँ, सुनो। फुरतीले घोड़ों और श्रीकृष्ण जैसे सारथी को पाकर अर्जुन बात की बात में आगे बढ़ जाते हैं। तुमने नहीं देखा कि अर्जुन जब मेरे आगे से जा रहे थे तब उनके घोड़े इतनी तेज़ी से दौड़ रहे थे कि मैंने जो बाण छोड़े थे वे अर्जुन के रथ से कोस भर पीछे रह गये थे। राजन्! अब मैं वृद्ध हो गया हूँ, इस कारण मुझमें वह फुर्ती नहीं है और मैं तेज़ी से चलने में असमर्थ हूँ। विशेष कर इस समय पाण्डवपक्ष की सेना और अन्य योद्धा हमारी सेना के सामने प्रवेश-द्वार पर पहुँच गये हैं। फिर मैं सब क्षत्रियों के बीच में यह प्रतिज्ञा कर चुका हूँ कि सब योद्धाओं के सामने ही युधिष्ठिर को जीवित पकड़ लूँगा। इस समय अर्जुन-रहित युधिष्ठिर भी मेरे सामने ही हैं। इन कारणों से मैं यह व्यूहमुख छोड़कर इस समय अर्जुन के पीछे न जाऊँगा। देखो, तुम इस पृथ्वी के राजा हो; तुम्हारे बहुत से सहायक हैं और तुम्हारा शत्रु इस समय तुम्हारे ही दल में अकेला है। तुम जाओ, और जन्म-कर्म-पद में अपने तुल्य अकेले शत्रु से युद्ध करो, डरो नहीं। हे दुर्योधन! तुम राजा, शूर, सुशिक्षित, निपुण और वीर हो। [तुमने स्वयं पाण्डवों से वैर किया है।] इसलिए तुम ख़ुद वहाँ जाओ जहाँ अर्जुन हैं।

दुर्योधन ने कहा—हे आचार्य! जब सब शस्त्रधारी योद्धाओं में अग्रगण्य आपको भी लाँघकर अर्जुन आगे बढ़ गये तब भला मैं किस तरह उन्हें रोक सकूँगा? युद्ध में वज्रपाणि इन्द्र को चाहे कोई जीत भी ले; किन्तु शत्रुदमन अर्जुन को जीतना सर्वथा असम्भव है। जिन महावीर ने अस्त्रविद्या के बल से भोजराज कृतवर्मा और देवतुल्य आपको जीत लिया और सुदक्षिण, श्रुतायुध, श्रुतायु, अच्युतायु, अम्बष्ठराज तथा लाखों म्लेच्छों को देखते ही देखते मार गिराया, उन जगत् को जला रहे अग्नि के समान प्रचण्ड पाण्डव के साथ मैं कैसे युद्ध कर सकूँगा? अथवा यदि आप मुझे अर्जुन से भिड़ने में समर्थ समझते हैं, तो मैं तैयार हूँ। मैं तो सेवक के समान आपके अधीन हूँ। इसलिए आप कृपा करके मेरी लाज बचाइए।

द्रोणाचार्य ने कहा—हे कुरुकुलश्रेष्ठ ! तुम्हारा कहना सच है। अर्जुन अत्यन्त दुर्द्धर्ष और दुर्जय हैं; किन्तु मैं ऐसा उपाय किये देता हूँ कि तुम उनका सामना कर सकोगे, उनके प्रहारों को सह सकोगे। आज सब धनुर्द्धर योद्धा यह अद्भुत दृश्य देखेंगे कि श्रीकृष्ण के सामने ही अर्जुन तुम्हें लाँघकर आगे न जा सकेंगे। राजन् ! मैं तुम्हें इस तरह से यह अद्भुत सुनहरा कवच पहनाये देता हूँ कि कोई भी बाण या अस्त्र तुम्हारे शरीर में न लग सकेगा। यदि देवता, दैत्य, यक्ष, नाग, राक्षस और मनुष्य आदि त्रिलोकी के जीव मिलकर तुमसे युद्ध करेंगे तो भी तुम्हें कुछ डर नहीं है। श्रीकृष्ण, अर्जुन अथवा अन्य कोई शस्त्रधारी योद्धा, तुम्हारे इस कवच को तोड़ नहीं सकता। अब तुम शीघ्र यह कवच पहन करके इस समय कुपित अर्जुन के सामने जाओ और निडर होकर उनसे युद्ध करो। अर्जुन कभी तुम्हें रण से नहीं हटा सकेंगे।

सञ्जय कहते हैं—राजन् ! ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य ने अब अपनी अद्भुत विद्या के प्रभाव से उस भयावह समरभूमि में स्थित वीरों को विस्मित करने और दुर्योधन को विजयी बनाने के लिए शीघ्र जल का स्पर्श करके, यथाविधि मन्त्र पढ़कर, ४० दुर्योधन को एक अत्यन्त विचित्र तेजोमय कवच पहनाकर कहा—राजन् ! ब्रह्म, ब्रह्मा और सब ब्राह्मण तुम्हारा कल्याण करें। सब श्रेष्ठ सरीसृप, एकचरण, बहुचरण और चरण-हीन जीवों से तुम नित्य महायुद्ध में कल्याण प्राप्त करो। स्वाहा, स्वधा, शची, लक्ष्मी, अरुन्धती, असित, देवल, विश्वामित्र, अङ्गिरा, वशिष्ठ, कश्यप, लोकपाल, धाता, विधाता, सब दिशाएँ, दिक्पाल, कार्त्तिकेय, भगवान् भास्कर, चारों दिग्गज, पृथ्वी, आकाश, ग्रहगण, आदि तथा देवी, देवता, ऋषि, राजर्षि आदि सदा तुम्हारा कल्याण करें। जो पाताल में स्थित रहकर सदा धरा को धारण किये हुए हैं, वे नागराज अनन्त सदा तुम्हारा कल्याण करें।

महाराज ! पहले इन्द्र आदि देवता वृत्रासुर से युद्ध में हार गये थे, उनके अङ्ग क्षत-५० विक्षत हो गये थे। तब वे सब बलवीर्य-विहीन और भयातुर होकर ब्रह्माजी की शरण में गये।

द्रोणाचार्य ने दुर्योधन को कवच पहना कर कहा—"कोई भी बाण या अस्त्र तुम्हारे शरीर में न लग सकेगा। —पृ० २३६८

उन्होंने हाथ जोड़कर ब्रह्माजी से कहा—हे लोकनाथ! वृत्रासुर के द्वारा पीड़ित हमारी गति आप ही हैं। इस महान् भय से आप हमारी रक्षा कीजिए। भगवान् ब्रह्मा ने अपने निकट-स्थित विष्णु और इन्द्र आदि देवताओं को उदास देखकर कहा—हे देवताओ! तुम लोगों सहित इन्द्र और ब्राह्मणों की रक्षा करना अवश्य मेरा कर्तव्य है; किन्तु मैं इस समय वृत्रासुर का नाश करने में असमर्थ हूँ। त्वष्टा के अत्यन्त दुर्द्धर्ष दुर्जय तेज से वृत्रासुर की उत्पत्ति हुई है। पूर्व समय में त्वष्टा ने दस लाख वर्ष तक तप करके, महादेव को प्रसन्न करके, उनकी आज्ञा के अनुसार वृत्रासुर को उत्पन्न किया है। शङ्कर के प्रसाद से देव-शत्रु वली वृत्रासुर तुम सवको नष्ट कर सकता है। शङ्कर के पास गये विना वृत्रासुर के वध का कोई उपाय नहीं हो सकता। मन्दराचल पर तपोयोनि, दक्षयज्ञ-विनाशन, पिनाकधारी, भग देवता के नेत्रों को निकालनेवाले, सब प्राणियों के ईश्वर रहते हैं। वहीं उनसे भेंट होगी। तुम लोग वहीं जाओ। राजन्! तब सब देवता, इन्द्र और ब्रह्मा के साथ, मन्दर पर्वत पर गये। वहाँ उन्होंने देखा कि कोटि सूर्य के समान तेजोराशि महादेव विराजमान हैं। देवताओं को देखकर शङ्कर ने स्वागतपूर्वक कहा—देवगण, आओ। वताओ, मैं तुम्हारी किस इच्छा को पूर्ण करूँ? मेरा दर्शन निष्फल नहीं होता, इसलिए तुम्हें अवश्य मुझसे अपना अभीष्ट वर प्राप्त होगा। यह सुनकर देवताओं ने कहा—हे देव-देव! वृत्रासुर ने सब देवताओं का तेज हर लिया है। आप हम सबकी रक्षा का कोई उपाय कीजिए। हे देव! हम लोगों के शरीर देखिए, उस दानव के दारुण प्रहारों से जर्जर हो रहे हैं। हे महेश्वर! हम आपकी शरण में आये हैं। आप हमारी रक्षा कीजिए। यह सुनकर महादेव ने कहा—हे देवगण! तुम लोग अच्छी तरह ६० जानते हो कि त्वष्टा ने अभिचार के अनुष्ठान से अपने तेज के द्वारा इस महावली भयङ्कर असुर को उत्पन्न किया है। अजितेन्द्रिय साधारण प्राणी उसको नहीं जीत सकते; किन्तु मुझे देवताओं की सहायता अवश्य ही करनी है। हे इन्द्र! लो, यह मेरे शरीर का तेजोमय कवच ग्रहण करो। असुर-श्रेष्ठ सुर-वैरी वृत्रासुर को मारने के लिए तुम मेरे वतलाये हुए मानस मन्त्र का पाठ करते हुए यह कवच अपने शरीर में बाँध लो।

द्रोणाचार्य कहते हैं—वरदानी महादेव ने इतना कहकर इन्द्र को, यह कवच और कवच के बाँधने का मन्त्र देकर, अजेय कर दिया। इस कवच के द्वारा रक्षित होकर इन्द्र वृत्रासुर की सेना से युद्ध करने चले। वृत्रासुर और उसकी सेना ने महारण में अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र इन्द्र के ऊपर चलाये; किन्तु किसी तरह उस कवच के वन्धन की सन्धि नहीं काटी जा सकी। उस कवच से रक्षित रहने के कारण इन्द्र निर्भय होकर देवशत्रु वृत्र से लड़े और उन्होंने मौक़ा पाकर उसे मार भी डाला। वह मन्त्रमय वन्धन से युक्त कवच इन्द्र ने अङ्गिरा को दिया। अङ्गिरा ने अपने पुत्र मन्त्रज्ञ वृहस्पति को वह कवच और मन्त्र

दिया। बृहस्पति ने अपने बुद्धिमान् शिष्य अग्निवेश्य को वह कवच दिया। उन्हीं महात्मा अग्निवेश्य ने वह कवच मुझे दिया था। इस समय तुम्हारे शरीर की रक्षा के लिए मैं वही श्रेष्ठ कवच मन्त्र के द्वारा तुम्हें पहनाता हूँ।

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! दुर्योधन से यों कहकर आचार्य ने फिर धीरे से कहा—राजन्! मैं ब्रह्माजी के बतलाये हुए मन्त्र को पढ़कर ब्रह्मसूत्र के द्वारा यह दिव्य कवच तुम्हारे शरीर में बाँधता हूँ। पूर्वसमय में युद्ध छिड़ने पर हिरण्यगर्भ ब्रह्मा ने जैसे विष्णु को और फिर तारकामय-संग्राम में इन्द्र को दिव्य कवच बाँधा था, वैसे ही मैं इस समय यह दिव्य कवच ६९ तुम्हें पहनाता हूँ। राजन्! महात्मा द्रोणाचार्य ने यह कहकर विधि से मन्त्रपाठपूर्वक दुर्योधन के शरीर में कवच बाँधकर उन्हें उस भयानक संग्राम के लिए भेज दिया। इस तरह आचार्य के कवच बाँध देने पर महाबाहु दुर्योधन त्रिगर्त देश के हज़ार रथ, महाबली हज़ार हाथी, दस लाख घोड़े और अन्य अनेक महारथी साथ लेकर महाराज बलि के समान बड़े आडम्बर से अर्जुन के रथ की ओर चले। उनके साथ अनेक प्रकार के बाजे बज रहे थे। अगाध समुद्र ७६ के समान दुर्योधन के चलने पर आपकी सेना में बड़ा कोलाहल उठ खड़ा हुआ।

पञ्चानबे अध्याय

राजा लोगों के द्वन्द्व-युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज! श्रीकृष्ण सहित अर्जुन जब रणभूमि के बीच शत्रु-सेना के भीतर घुस गये और उनके पीछे पुरुषश्रेष्ठ दुर्योधन वेग से गये तब घोर सिंहनाद और कोलाहल करते हुए सोमकों सहित पाण्डवगण द्रोणाचार्य पर आक्रमण करने को दौड़े। उस समय दारुण युद्ध होने लगा। व्यूह के द्वारदेश पर कौरवों और पाण्डवों का अद्भुत लोमहर्षण युद्ध होने लगा। राजन्! उस समय जैसा घोर युद्ध हुआ वैसा युद्ध हमने कभी देखा और सुना नहीं। उस समय ठीक दोपहरी थी। असंख्य सेना साथ लिये हुए पाण्डवगण धृष्टद्युम्न को आगे करके द्रोणाचार्य पर बाणों की वर्षा करने लगे। हम लोग भी सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य को आगे करके धृष्टद्युम्न सहित पाण्डवों पर बाणों की वर्षा करने लगे। शिशिर ऋतु में वायु-प्रेरित महामेघों के समान उमड़ी हुई दोनों ओर की प्रधान सेनाएँ बहुत ही शोभा को प्राप्त हुईं। दोनों ओर सुन्दर बड़े-बड़े रथों पर योद्धा लोग विराजमान थे। वे दोनों सेनाएँ परस्पर भिड़कर वर्षाऋतु में बढ़ी हुई महानदी गङ्गा और यमुना के समान बड़े वेग से आगे बढ़ने लगीं। पाण्डवों की सेना प्रचण्ड दावानल के समान आगे बढ़ रही थी और वह हाथी-घोड़े-रथ आदि से परिपूर्ण संग्रामरूप महामेघ बाणवर्षारूप जलधारा से उसे बुझा रहा

था। अनेक अस्त्र-शस्त्र ही उस मेघ के आगे चलनेवाली तेज़ हवा थे। गदारूप बिजलियाँ चमक-चमककर उसे महारौद्र बना रही थीं। द्रोणाचार्यरूप पवन उसका सञ्चालन कर रहा था। ग्रीष्म के अन्त में घोर तूफ़ान की हवा जैसे समुद्र में प्रवेश करके उसे क्षोभित करती है, वैसे ही महावीर घोररूप द्रोणाचार्य पाण्डवों की सेना में घुसकर हलचल मचाने लगे। ११ जैसे प्रबल जलराशि महासेतु को तोड़ने के लिए बारम्बार लहरों की थपेड़ें मारे, वैसे ही पाण्डवपक्ष के योद्धा भी व्यूह को तोड़ने के लिए सब ओर से सब तरह से द्रोणाचार्य के ऊपर ही आक्रमण करने लगे। किन्तु जैसे महापर्वत जलराशि को रोकता है वैसे द्रोणाचार्य भी युद्ध-भूमि में कुपित पाण्डव, पाञ्चाल और केकय-सेना को रोकने लगे। अन्य महाबली राजा लोग भी चारों ओर से पाञ्चालसेना को घेरने और आक्रमण करने लगे। उस समय नरश्रेष्ठ धृष्ट-द्युम्न शत्रुसेना का व्यूह तोड़ने की इच्छा से, पाण्डवों की सहायता से, महावीर आचार्य पर प्रहार करने लगे। जैसे द्रोणाचार्यजी धृष्टद्युम्न के ऊपर बाणों की वर्षा करते थे वैसे ही धृष्ट-द्युम्न भी आचार्य के ऊपर बाण बरसा रहे थे। महाराज! धृष्टद्युम्न उस समय युद्धभूमि में महामेघ के समान जान पड़ते थे। वे शक्ति, ऋष्टि, प्रास आदि अनेक शस्त्रों की वर्षा कर रहे थे। उनका खड्ग मेघघटा के आगे चलनेवाली हवा के समान, धनुष की डोरी बिजली के समान और धनुष का शब्द गर्जन के समान जान पड़ता था। उन महावीर ने चारों ओर शिला-खण्ड-सदृश बाण बरसाना शुरू कर दिया। उनके बाणों से असंख्य रथी और हाथी-घोड़े मरने लगे। धृष्टद्युम्नरूप मेघ ने अपने पराक्रम के प्रवाह में बहुत सी शत्रुसेना को बहा दिया। द्रोणाचार्य जिस-जिस ओर जाकर पाण्डवों के रथियों पर बाणवर्षा करते थे, उसी-उसी ओर धृष्ट-द्युम्न भी पहुँचते और उन्हें उधर से हटने के लिए लाचार करते थे।

हे भारत! द्रोणाचार्य यद्यपि इस तरह अपनी सेना को एकत्र रखने का महायत्न कर रहे थे तथापि वीर धृष्टद्युम्न ने बाणवर्षा के द्वारा उनकी सेना के तीन भाग कर दिये। कौरव-सेना २० का एक अंश भोजश्रेष्ठ कृतवर्मा का अनुगामी हुआ, एक अंश वीर जलसन्ध की शरण में गया और एक अंश [धृष्टद्युम्न के प्रहारों को न सह सकने के कारण] द्रोणाचार्य की शरण में आ गया। श्रेष्ठ महारथी द्रोणाचार्य जब-जब अपनी सेना को एकत्र करते थे तब-तब वीर-श्रेष्ठ धृष्टद्युम्न उसे छिन्न-भिन्न कर देते थे। वन में रक्षकहीन पशुओं का झुण्ड जैसे क्रूर मांसाहारी जीवों का शिकार बनता है, वैसे ही पाण्डव-सृञ्जयगण के हाथों से कौरवपक्ष के योद्धा मरने लगे। उस समय सभी लोगों को यह जान पड़ने लगा कि इस भयानक संग्राम में साक्षात् काल ही धृष्टद्युम्न के रूप से सबको मोहित और नष्ट कर रहा है। बुरे राजा के देश को दुर्भिक्ष, रोग, डाकू-चोर आदि जैसे उजाड़ देते हैं वैसे ही पाण्डवगण बाण-वर्षा करके आपकी सेना को मारने और भगाने लगे। शस्त्रों और कवचों के ऊपर सूर्य की किरणें पड़ने से जो चमक

पैदा होती थी, उससे आँखों में चकाचौंध पैदा हो जाती थी। धूल भी इतनी उड़ी कि किसी ओर कुछ भी अच्छी तरह नहीं सूझता था।

जब कौरव-सेना तीन भागों में बँट गई और पाण्डव लोग उसका संहार करने लगे तब अत्यन्त कुपित होकर द्रोणाचार्य भी तीक्ष्ण बाणों से पाञ्चालसेना का संहार करने लगे। पाञ्चालसेना को रौंदते और बाणों से नष्ट करते समय द्रोणाचार्य का रूप बहुत ही भयङ्कर देख पड़ने लगा। वे प्रचण्ड प्रज्वलित कालाग्नि के समान जान पड़ने लगे। महारथी द्रोणाचार्य एक-एक बाण से रथ, हाथी, घोड़े और पैदल आदि को छिन्न-भिन्न कर रहे थे। उस समय पाण्डवों की सेना में ऐसा कोई योद्धा नहीं देख पड़ता था, जो द्रोण के धनुष से छूटे हुए बाणों ३० के वेग को सह सकता। पाण्डवों की सेना एक साथ ही सूर्य की किरणों और आचार्य के बाणों से पीड़ित होकर इधर-उधर भागने लगी। इसी तरह कौरवों की सेना भी धृष्टद्युम्न के बाणों से पीड़ित होकर भागने लगी। सूखा वन जैसे आग लगने से जल उठता है वैसे ही कौरवों की सेना धृष्टद्युम्न के बाणों से भस्म होने लगी। इस तरह द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न के बाणों से पीड़ित होकर भी दोनों पक्ष के वीर योद्धा, स्वर्ग पाने की इच्छा से प्राणों की ममता छोड़कर, घोर युद्ध करने लगे। उस समय दोनों पक्ष की सेना में ऐसा कोई वीर योद्धा न था जो प्राणों के भय से संग्राम छोड़कर भाग खड़ा हुआ हो।

राजन्! उस समय आपके पुत्र विविंशति, चित्रसेन और महारथी विकर्ण, ये तीनों भीमसेन को घेरकर उनसे युद्ध करने लगे। उन तीनों की सहायता करने के लिए अवन्ति-देशीय विन्द, अनुविन्द और पराक्रमी क्षेमधूर्ति, ये तीन वीर आगे बढ़े। श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न महारथी तेजस्वी बाह्लीकराज ने अपनी सेना और मन्त्रियों के साथ द्रौपदी के पाँचों पुत्रों को रोका। शिवि के पुत्र राजा गोवासन, श्रेष्ठ हज़ार योद्धाओं के साथ, काशिराज अभिभू के पराक्रमी पुत्र से युद्ध करने लगे। प्रज्वलित अग्नि के समान तेजस्वी महाराज युधिष्ठिर से मद्र-राज शल्य युद्ध करने लगे। असहनशील क्रोधी शूर दुःशासन अपनी सेना को यथास्थान ४० स्थापित करके श्रेष्ठ रथी सात्यकि से युद्ध करने के लिए आगे बढ़े। मैं ख़ुद कवच पहनकर, सुसज्जित होकर, अपनी सेना और चार सौ महाधनुर्द्धर योद्धाओं को साथ लेकर चेकितान से युद्ध करने लगा। धनुष, शक्ति, खड्ग, प्रास आदि शस्त्र हाथ में लिये सात सौ गान्धारदेश के योद्धाओं को साथ लिये सेना सहित गान्धारराज शकुनि नकुल और सहदेव से युद्ध करने लगे। अवन्तिदेशीय विन्द और अनुविन्द नाम के दोनों भाई, प्राणों की ममता छोड़कर, मित्र के लिए शस्त्र उठाकर, मत्स्यराज विराट से युद्ध करने लगे। अपराजित वीर शिखण्डी पराक्रमपूर्वक आगे बढ़ रहे थे, उन्हें रोकने के लिए महाराज बाह्लीक आगे बढ़े और उनसे घोर युद्ध करने लगे। अवन्ति देश के राजा, क्रूर प्रभद्रकगण और सौवीर देश की सेना साथ लेकर, धृष्टद्युम्न से युद्ध

करने लगे। महावीर अलायुध, आगे बढ़नेवाले क्रुद्ध क्रूरकर्मा राक्षस घटोत्कच के सामने आये और उससे युद्ध करने लगे। महारथी कुन्तिभोज ने बड़ी सेना लेकर क्रोधी अलम्बुष को रोका। महाराज! जयद्रथ उस समय कृपाचार्य आदि महाधनुर्द्धरों के द्वारा सुरक्षित होकर सब सेना के पीछे थे। जयद्रथ के रथ के दाहने पहिये की रक्षा अश्वत्थामा और बाँयें पहिये की रक्षा वीर कर्ण कर रहे थे। सोमदत्त के पुत्र भूरिश्रवा आदि वीरगण जयद्रथ के पृष्ठभाग की रक्षा कर रहे थे। महाराज! समरनिपुण नीतिज्ञ महाधनुर्द्धर कृपाचार्य, वृषसेन, शल और शल्य आदि वीरगण इस तरह जयद्रथ की रक्षा का उपाय करके घोर युद्ध करने लगे। ५१

छियानवे अध्याय

द्वन्द्व-युद्ध का वर्णन

सञ्जय ने कहा—महाराज! कौरवों और पाण्डवों का घोरतर युद्ध जिस तरह हुआ, उसका वर्णन मैं करता हूँ, सुनिए। महावीर पाण्डवगण व्यूह के मुख में द्रोणाचार्य पर आक्रमण करके उनके सेनाव्यूह को छिन्न-भिन्न करने के लिए भयानक संग्राम करने लगे। आचार्य द्रोण भी महान् यश प्राप्त करने की इच्छा से, अपने व्यूह की रक्षा करते हुए, सैनिकों के साथ पाण्डवों से घोर युद्ध करने लगे। राजन्! इसी समय आपके पुत्र के हितचिन्तक विन्द और अनुविन्द ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर विराट को दस बाण मारे। महाराज विराट भी पराक्रमपूर्वक अनुचरों सहित पराक्रमी उन दोनों भाइयों से घोर संग्राम करने लगे। जैसे वन में एक सिंह दो मत्त गजों से लड़े वैसे ही उन दोनों भाइयों से राजा विराट का घोर युद्ध होने लगा, जिसमें पानी की तरह रक्त बह चला। महापराक्रमी राजकुमार शिखण्डी मर्मभेदी तीक्ष्ण बाण छोड़कर महाराज बाह्लीक को पीड़ित करने लगे। उन्होंने भी क्रोधविह्वल होकर सुवर्ण-पुङ्खयुक्त, शिलाओं पर सान धरे हुए, सन्नतपर्व-शोभित नव बाण शिखण्डी को मारे। उनका वह युद्ध डरपोक पुरुषों के लिए भयावह और वीरों के लिए हर्षवर्धक हुआ। उनके बाणों से सब दिशाएँ और आकाशमण्डल व्याप्त हो गया। बाणों से ऐसा अँधेरा छा गया कि कुछ भी नहीं सूझता था। गजराज जैसे प्रतिद्वन्द्वी गजराज से युद्ध करे वैसे ही महाराज शैव्य गोवासन १० अपने प्रतिपक्षी काश्य के महारथी पुत्र से युद्ध करने लगे। मन जैसे पाँचों इन्द्रियों को वश में लाने का यत्न करे वैसे ही कुपित महाराज बाह्लीक द्रौपदी के पाँचों पुत्रों से युद्ध करने लगे। हे नरश्रेष्ठ! इन्द्रियाँ जैसे देह को दम नहीं लेने देतीं वैसे ही वे पाँचों वीर तीक्ष्ण बाण बरसाकर महाराज बाह्लीक के साथ घोर संग्राम करने लगे।

राजन् ! आपके पराक्रमी पुत्र दुःशासन ने यदुश्रेष्ठ सात्यकि को बहुत ही तीक्ष्ण नव बाण मारे। अत्यन्त बली दुःशासन के प्रबल प्रहार से सत्यपराक्रमी सात्यकि कुछ विह्वल और मूच्छित-से हो गये। कुछ सँभलने पर वीर सात्यकि ने आपके पुत्र महारथी दुःशासन को फुरती के साथ कङ्कपत्रयुक्त दस बाण मारे। इस तरह एक दूसरे के प्रहार से घायल होने पर दोनों वीर फूले हुए ढाक के पेड़ से शोभायमान हुए। राक्षस अलम्बुष ने महापराक्रमी कुन्तिभोज के बाणों से पीड़ित और कुपित होकर उन्हें अनेक प्रकार के तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित किया।
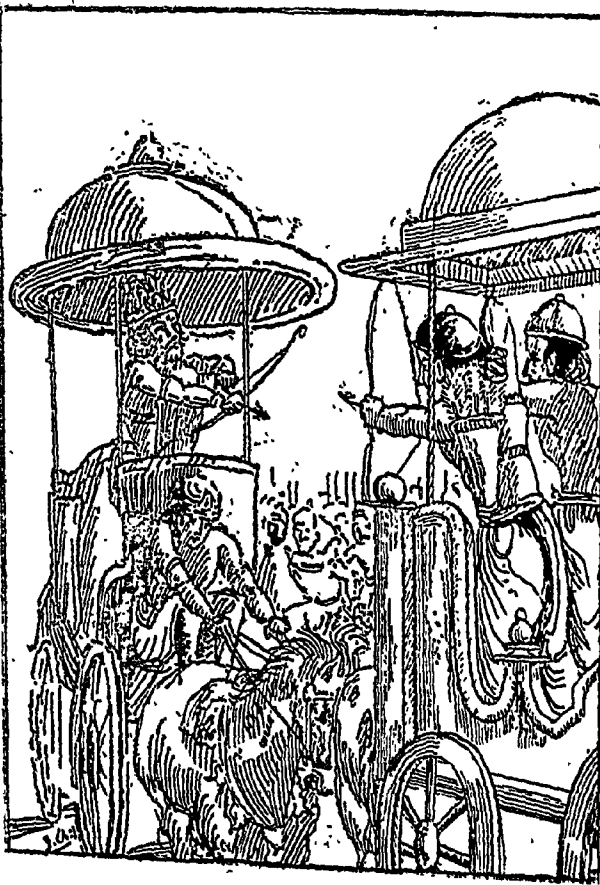
फूले हुए ढाक के पेड़ के समान शोभायमान वह राक्षस सेना के अग्रभाग में भयानक शब्द करने लगा। पहले जम्भासुर और इन्द्र से जैसा घोर युद्ध हुआ था वैसा ही संग्राम अलम्बुष और कुन्तिभोज का हुआ। सब सैनिक वह घोर युद्ध देखने लगे। माद्री के पुत्र नकुल और सहदेव अत्यन्त कुपित होकर पहले से ही वैर बढ़ानेवाले बली शकुनि के ऊपर बाण बरसाने लगे।

२०

महाराज ! इस तरह युद्धभूमि में घोर जनसंहार होने लगा। पाण्डवों के क्रोध की आग आपकी दुर्नीति के प्रभाव से उत्पन्न हुई थी। कर्ण की बदौलत वह बढ़ी और आपके पुत्रों ने अपने व्यवहार से उसे अब तक बना रक्खा था। वह आग अब इस समग्र पृथ्वीमण्डल को भस्म करने के लिए तैयार है। [ख़ैर, जो होना था, सो हो गया। अब युद्ध का वृत्तान्त सुनिए।] नकुल और सहदेव के बाणों की मार से महावीर शकुनि रण-विमुख हो गये। वे पराक्रम प्रकट करने में असमर्थ और किङ्कर्तव्य-विमूढ़ हो गये। महारथी नकुल और सहदेव शकुनि को युद्ध से विमुख देखकर बड़े वेग से, पर्वत पर जलधारा के समान, उन पर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। उन दोनों वीरों के विकट बाणों से विह्वल होकर वीर शकुनि वेग से घोड़े हँकाकर द्रोणाचार्य की सेना के भीतर घुस गये। महावीर घटोत्कच बड़े वेग से आते हुए अलायुध राक्षस की ओर दौड़ा। पहले राम और रावण ने जैसा भयानक संग्राम किया था वैसा ही घोर युद्ध वे दोनों राक्षस करने लगे। राजा युधिष्ठिर

घोर युद्ध वे दोनों राक्षस करने लगे।—पृ० २३७४

ने मद्रराज शल्य को पहले पचास बाण और फिर तीक्ष्ण सात बाण मारे। शम्बरासुर और इन्द्र के समान शल्य और राजा युधिष्ठिर का अद्भुत युद्ध होने लगा। राजन्! आपके पुत्र विविंशति, चित्रसेन और विकर्ण भी बहुत सी सेना साथ लेकर घोरतर संग्राम करने लगे। ३१.

सत्तानवे अध्याय

द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्न का युद्ध

सञ्जय कहते हैं—राजन्! इस प्रकार महाघोर संग्राम के ज़ोर पकड़ने पर पाण्डवगण तीन भागों में बँटी हुई उस कौरव-सेना पर प्राणपण से आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ने लगे। महावीर भीमसेन ने महाबाहु राजा जलसन्ध पर, असंख्य सेना सहित महाराज युधिष्ठिर ने प्रतापी कृतवर्मा पर और सूर्यसदृश तेजस्वी वीर धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया। ये लोग एक दूसरे के दल पर असंख्य बाणों की वर्षा करने लगे। संग्रामतत्पर, परम कुपित, धनुर्द्धर कौरव और पाण्डव लोग एक दूसरे से भिड़कर तुमुल युद्ध करने लगे। राजन्! उस समय असंख्य प्राणियों का संहार होने लगा। दोनों ओर के योद्धा निर्भय होकर, प्राणों की ममता छोड़कर, मरने-मारने लगे। बलवीर्यशाली द्रोणाचार्य भी पराक्रमी पाञ्चाल-राजकुमार धृष्टद्युम्न से युद्ध करते हुए बाण बरसाने लगे। उनका पराक्रम और फुर्ती देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। द्रोणाचार्य और पराक्रमी धृष्टद्युम्न, दोनों पक्ष के, असंख्य सैनिकों के मस्तक काट-काटकर चारों ओर गिराने लगे। ऐसा जान पड़ने लगा मानों चारों ओर रणभूमि में खिले हुए कमलों का वन लगा हुआ है। उस समय रणस्थल में चारों ओर ढेर के ढेर वीरों के कपड़े, गहने, शस्त्र, ध्वजा, कवच और हथियार आदि गिरे हुए थे। वीरों के ख़ून से भीगे हुए सोने के कवच बिजली से शोभित मेघों के समान जान पड़ने लगे। उस समय अन्यान्य वीर योद्धा भी ताल-प्रमाण बड़े-बड़े धनुष चढ़ाकर विकट बाणों की मार से हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों को मार-मारकर गिराने लगे। असंख्य वीरों के सिर, हाथ, १० ढाल, तलवार, धनुष और कवच आदि छिन्न-भिन्न होकर इधर-उधर बिखरने लगे।

राजन्! उस समय रणभूमि में वीरों के कबन्ध उठ खड़े हुए। गिद्ध, कङ्क, बगले, बाज़, कौए और गीदड़ आदि मांसाहारी जीव मरे और घायल हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों का मांस और मज्जा खाने, रक्त पीने, उनके केश नोचने तथा शरीर और मस्तक खींचने लगे। उस समय रणनिपुण, अस्त्रविद्या में सुशिक्षित, समर की दीक्षा लिये हुए योद्धा लोग विजय की इच्छा से अत्यन्त घोर युद्ध करने लगे। सैनिक पुरुष निर्भय होकर तलवारों के पैंतरे दिखाते हुए क्रोधपूर्वक ऋष्टि, शक्ति, प्रास, शूल, तोमर, गदा, पट्टिश और परिघ आदि अस्त्र-शस्त्रों से

तथा मल्लयुद्ध के द्वारा एक दूसरे को मारने और पटकने लगे। रथी लोग रथी योद्धाओं के साथ, घुड़सवार घुड़सवारों के साथ, हाथियों के सवार हाथियों के सवारों के साथ और पैदल सिपाही पैदलों के साथ भिड़ गये। मदमत्त हाथी उन्मत्त की तरह
२० चिल्लाते हुए एक दूसरे पर चोट करने लगे।

महाराज! महावीर धृष्टद्युम्न ने ऐसे भयानक युद्ध के अवसर पर अपना रथ द्रोणाचार्य के रथ से भिड़ा दिया। फुरतीले, लाल रङ्ग के और कबूतर के रङ्ग के दोनों वीरों के बढ़िया घोड़े एक जगह मिलकर बिजली सहित मेघमण्डल के समान शोभा को प्राप्त हुए। उस समय शत्रुदलदलन महावीर धृष्टद्युम्न आचार्य को अपने पास पाकर दुष्कर कर्म करने के लिए तैयार हुए। वे धनुष-बाण रखकर, ढाल-तलवार लेकर, अपने रथदण्ड के सहारे आचार्य के रथ पर पहुँच गये। वे कभी घोड़ों के ऊपर, कभी घोड़ों के पीछे और कभी रथ के 'युग' पर दिखाई पड़ने लगे। तलवार हाथ में लिये महासाहसी धृष्टद्युम्न, आचार्य के लाल घोड़ों पर, इस प्रकार भ्रमण करते हुए युद्ध करने लगे; किन्तु रणनिपुण आचार्य को तनिक भी ऐसा अवकाश नहीं मिला, जिसमें वे धृष्टद्युम्न पर वार करते। धृष्टद्युम्न का यह अद्भुत साहस और दुष्कर कर्म देखकर सब लोग उनकी प्रशंसा करने लगे। मांस की इच्छा से बाज़ जैसे शिकार पर झपटता है वैसे ही महावीर धृष्टद्युम्न आचार्य को मार डालने का मौक़ा ढूँढ़ते हुए उनके और अपने रथ पर विचरने लगे। दम भर के बाद आचार्य ने कुपित होकर सौ बाणों से धृष्टद्युम्न की ढाल और दस बाणों से तलवार काट डाली। इसके बाद ही चौंसठ बाणों से उनके घोड़ों को मार डाला, दो भल्ल बाणों से रथ की ध्वजा काट डाली, छत्र काट गिराया और पृष्ठरक्षक
३० सहित सारथी का सिर काट डाला। फिर आचार्य ने कान तक धनुष की डोरी खींचकर एक वज्रसदृश, प्राण हर लेनेवाला, भयानक बाण धृष्टद्युम्न के ऊपर छोड़ा। यह देखकर महावीर सात्यकि ने उसी घड़ी फुर्ती के साथ चौदह बाणों से आचार्य के उस दारुण बाण को काट डाला और इस तरह, सिंह के मुँह में पहुँचे हुए मृग के समान, धृष्टद्युम्न को आचार्य के प्रहार से बचा लिया। उस भयानक समर में सात्यकि को धृष्टद्युम्न की रक्षा करते देखकर पराक्रमी द्रोणाचार्य ने शीघ्रता के साथ उनको छब्बीस तीक्ष्ण बाण मारे। फिर वे सृञ्जयगण का संहार करने लगे। यह देखकर महावीर सात्यकि को भी क्रोध चढ़ आया। उन्होंने ताककर आचार्य की छाती में छब्बीस बाण मारे। तब विजयाभिलाषी पाञ्चालदेश के योद्धा लोग, सात्यकि
३६ को आचार्य के सामने देखकर, धृष्टद्युम्न को फुर्ती के साथ रणभूमि से हटा ले गये।

अट्ठानवें अध्याय

द्रोणाचार्य्य और सात्यकि का युद्ध

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय! महारथी सात्यकि ने जब आचार्य के छोड़े हुए बाण को काटकर धृष्टद्युम्न की रक्षा की तब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य ने, सात्यकि के ऊपर कुपित होकर, कैसा संग्राम किया?

सञ्जय कहने लगे—राजन्! उस समय महारथी आचार्य कुपित होकर, धनुष लेकर, सुवर्णपुङ्खशोभित बाण और नाराच बाण बरसाने लगे। वे महानाग के समान लम्बी साँसें लेते हुए वेग के साथ सात्यकि की ओर झपटे। उनमें क्रोधरूपी विष था, धनुषरूपी फैलाया हुआ मुँह था, पैने बाण ही दाँत थे और नाराच बाण डाढ़ें थीं। द्रोणाचार्य के लाल घोड़े ऐसे वेग से जाने लगे कि जान पड़ता था मानों वे आकाशमार्ग में उड़े जा रहे हैं, या पर्वत के ऊपर चढ़ते जा रहे हैं। उस समय महावीर सात्यकि ने द्रोणरूप मेघ को देखा जो बाणरूपी वर्षा कर रहा था और रथ की ध्वनि-रूप गर्जना कर रहा था। धनुष का खींचना ही मूसलाधार वर्षा थी जिसमें नाराच बिजली की तरह चमक रहे थे। इस मेघ में शक्ति और खड्ग ही वज्र थे। यह मेघ क्रोध के वेग से उत्पन्न और घोड़े रूप आँधी के ज़ोर से चल रहा था। तब सात्यकि ने हँसकर अपने सारथी से कहा—हे सूत! तुम शीघ्र इन स्वकर्म-च्युत, दुर्योधन के लिए आश्रयभूत, राजपुत्रों के गुरु, वीराभिमानी ब्राह्मण द्रोण के पास मेरा रथ ले चलो। सारथी ने उसी दम सात्यकि की आज्ञा के अनुसार, सफ़ेद और हवा के समान वेग से चलनेवाले, घोड़ों को आचार्य के सामने पहुँचा दिया। १०

महाराज! अब शत्रुदलन आचार्य द्रोण और शिनि के वंश में उत्पन्न सात्यकि दोनों ही अत्यन्त घोर युद्ध में प्रवृत्त होकर परस्पर जलधारा के समान असंख्य बाण बरसाने लगे। उन

दोनों वीरों के बाण आकाशमण्डल भर में और सब दिशाओं में व्याप्त हो गये। उन्होंने सूर्य के प्रकाश को छिपा लिया और पवन की गति भी रोक ली। इस तरह दोनों की बाणवर्षा से समरभूमि आच्छन्न होने पर अन्यान्य वीरगण, कुछ न सूझ पड़ने के कारण, युद्ध न कर सके। शीघ्र अस्त्र चलाने में निपुण द्रोणाचार्य और सात्यकि ने इतने बाण बरसाये कि तिल भर भी खाली जगह नहीं देख पड़ती थी। उन दोनों वीरों के बाणों के लगातार गिरने का शब्द इन्द्र के छोड़े वज्रों के गिरने की भयानक कड़क के समान सुनाई पड़ने लगा। नाराच बाणों से कटे और बिंधे हुए बाण विषैले नाग के डँसे हुए साँपों के समान दिखाई पड़ते थे। उन युद्धनिपुण वीरों की प्रत्यञ्चा और हथेली का शब्द ऐसा जान पड़ता था जैसे पर्वत के शिखरों पर लगातार वज्र गिर रहा हो। दोनों वीरों के रथ, घोड़े और सारथी—सुवर्णपुङ्खयुक्त बाणों से आच्छन्न होने के २० कारण—विचित्र प्रतीत होने लगे। साफ़ और सीधे नाराच बाण केंचुल छोड़े हुए नाग के समान चारों ओर गिर रहे थे। दोनों के छत्र कट गये और ध्वजाएँ कटकर गिर पड़ीं। दोनों ही विजय की इच्छा से युद्ध कर रहे थे। दोनों के शरीरों से रक्त बह रहा था, जिससे वे मतवाले गजराजों के समान जान पड़ते थे। प्राणनाशक बाणों से दोनों एक दूसरे को घायल कर रहे थे।

उस समय युद्धभूमि में गर्जन, सिंहनाद, चिल्लाहट और शङ्ख-दुन्दुभि आदि के शब्द बन्द हो गये; कोई चूँ तक नहीं करता था। सैनिक लोग युद्ध करना छोड़कर चुपचाप कौतूहल के साथ उन दोनों का अद्भुत युद्ध देखने लगे। उन दोनों वीरों के आसपास खड़े हुए रथी, हाथियों के सवार, घुड़सवार और पैदल योद्धा एकटक उस युद्ध को देखने लगे। हाथियों, घोड़ों और रथों की सेनाएँ व्यूहरचनापूर्वक यथास्थान खड़ी थीं। मोती-मूँगे आदि से चित्र-विचित्र, सुवर्ण-मणिभूषित ध्वजाएँ, विचित्र गहने, रङ्गीन कम्बल, सूक्ष्म कम्बल, सुनहरे कवच, ३० साफ़ तीक्ष्ण शस्त्र, घोड़ों के सिर की कलँगी, हाथियों के मस्तकों पर पड़ी हुई सोने-चाँदी की माला, कुम्भ-माला, दन्तवेष्टन आदि की शोभा से वे सेनाएँ ऐसी जान पड़ती थीं जैसे वर्षाकाल आने पर बगलों की क़तार, जुगनू, इन्द्रधनुष और बिजली से युक्त भारी घन-घटाएँ उमड़ी हुई हों।

महाराज! हमारे और युधिष्ठिर के सभी सैनिक महात्मा द्रोणाचार्य और सात्यकि का दारुण युद्ध देखने लगे। विमानों पर बैठे हुए ब्रह्मा चन्द्रमा इन्द्र आदि देवता, सिद्ध, चारण, विद्याधर, नाग आदि के झुण्ड के झुण्ड आकाशमार्ग से वह युद्ध देख रहे थे। उन दोनों वीरों के आगे बढ़ने, पीछे हटने और विचित्र अस्त्रों के द्वारा दिव्य अस्त्रों को निष्फल करने का कौशल और फुर्ती देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। अस्त्रप्रयोग में हाथों की फुर्ती दिखाते हुए महाबली द्रोण और सात्यकि एक दूसरे पर प्रहार कर रहे थे। इसी बीच में सात्यकि ने सुदृढ़ बाणों से द्रोणाचार्य के बाण निष्फल करके धनुष काट डाला। शत्रुदमन द्रोण ने दम भर में दूसरा धनुष लेकर उस पर डोरी चढ़ाई; किन्तु सात्यकि ने फुर्ती के साथ वह धनुष भी काट

द्रोणाचार्य ने और धनुष लेकर उस पर डोरी चढ़ाई। सात्यकि ने...धनुष भी काट डाला।—पृ० २३७१

डाला। फिर द्रोणाचार्य ने और धनुष लेकर उस पर डोरी चढ़ाई। सात्यकि ने फुर्ती दिखाते हुए वह धनुष भी काट डाला। इस तरह जब-जब आचार्य धनुष लेते थे तब-तब उसे सात्यकि काट डालते थे। महाराज! दृढ़धनुर्द्धारी सात्यकि ने द्रोणाचार्य के एक सौ धनुप काट डाले। इस काम में सात्यकि ने इतनी फुर्ती दिखाई कि यह किसी को विदित न हो सका कि उन्होंने कब अपने धनुष पर बाण चढ़ाया और कब द्रोणाचार्य का धनुप उससे काट डाला। सात्यकि के उस अपूर्व काम को देखकर द्रोणाचार्यजी सोचने लगे कि परशुराम, कार्तवीर्य सहस्रबाहु ४० अर्जुन, अर्जुन और भीष्म पितामह की सी फुर्ती और अस्त्रबल सात्यकि में देख पड़ रहा है। इन्द्र के समान सात्यकि का पराक्रम, अस्त्रबल और फुर्ती देखकर द्विजश्रेष्ठ द्रोणाचार्य मन ही मन उनकी बड़ाई करने लगे। अस्त्रज्ञ पुरुपों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य सात्यकि के कर्म से सन्तुष्ट हुए। इन्द्र आदि देवता, गन्धर्व, सिद्ध, चारण सभी द्रोणाचार्य के अस्त्रबल और फुर्ती को तो जानते थे; लेकिन सात्यकि के अस्त्रबल और हस्तलाघव को नहीं जानते थे। इस समय उनके असाधारण कर्म को देखकर उन्हें भी सन्तोप और आश्चर्य हुआ।

इसके बाद अस्त्र-विद्या-विशारद शत्रुदमन द्रोणाचार्य और धनुप लेकर दिव्य अस्त्रों के द्वारा युद्ध करने लगे। सात्यकि भी बहुत शीघ्र अपने अस्त्रों के द्वारा उनके अस्त्रों को निष्फल करके उन पर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। यह देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। रणकौशल के ज्ञाता कौरवदल के वीरगण, सात्यकि के अलौकिक युद्धकौशल और अस्त्रबल को देखकर, उनकी प्रशंसा करने लगे। द्रोणाचार्य ने जो-जो अस्त्र छोड़े, उनका और उन्हें व्यर्थ करनेवाले अस्त्रों का प्रयोग महावीर सात्यकि ने भी किया। शत्रुतापन आचार्य धैर्य के साथ उनसे युद्ध करने लगे; किन्तु सात्यकि के अस्त्रकौशल से वे घबरा-से गये। तब धनुर्वेद के पारगामी आचार्य ने कुपित होकर, सात्यकि को मारने के लिए, महाघोर शत्रुनाशन दिव्य आग्नेय अस्त्र का प्रयोग किया। यह देखकर सात्यकि ने असाधारण वरुणास्त्र का प्रयोग किया। दोनों वीरों को दिव्य ५० अस्त्रों का प्रयोग करते देखकर चारों ओर हाहाकार होने लगा। उस समय आकाश से आकाशचारी जीव भी हट गये। दोनों वीरों ने बाणों को जिस समय दिव्य अस्त्रों से अभिमन्त्रित किया उस समय सूर्य बीच आकाश से पश्चिम की ओर हट चुके थे, दोपहरी ढल चुकी थी। दोनों अस्त्र एक दूसरे के प्रभाव से व्यर्थ हो गये।

उस समय राजा युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल और सहदेव सात्यकि की सहायता और रक्षा करने लगे। धृष्टद्युम्न आदि योद्धा, विराट, केकय, मत्स्य और शाल्व देश की सेनाएँ द्रोणाचार्य के ऊपर वेग से आक्रमण करने लगीं। इधर आचार्य को शत्रुओं से घिरे देखकर दुःशासन को आगे किये हुए हज़ारों राजकुमार आचार्य की रक्षा के लिए उनके पास आये। राजन्! उस समय उन योद्धाओं के साथ आपके दल का घोर युद्ध होने लगा। चारों ओर

धूल और बाणों का अँधेरा छा गया। कुछ न सूझ पड़ने के कारण सब लोग घबरा उठे। इस
५७ प्रकार धूल के मारे सब सेना के विह्वल होने पर मर्यादाहीन युद्ध होने लगा।

निन्नानवे अध्याय

अर्जुन का अस्त्रविद्या के प्रभाव से रणभूमि में जल निकालकर घोड़ों को पानी पिलाना

सञ्जय कहते हैं—राजन्! सूर्यदेव अस्ताचल की ओर बढ़े। क्रमशः किरणों की तेज़ी घट चली और धूल का अँधेरा अधिकाधिक बढ़ने लगा। कौरव-सेना के योद्धा कभी सामने डटकर लड़ते थे, कभी भागते और कभी लौटकर फिर सामना करते थे। इस तरह विजय पाने का यत्न करते-करते धीरे-धीरे वह दिन बीत चला। इस प्रकार जय की इच्छा से सब सैनिक भिड़कर युद्ध करने लगे। जयद्रथ के पास जाने के लिए अर्जुन और श्रीकृष्ण बराबर आगे ही बढ़ते जा रहे थे। अर्जुन अपने तीक्ष्ण बाणों के द्वारा रथ के जाने भर की राह करते जाते थे और श्रीकृष्ण उसी राह से रथ लिये जा रहे थे। अर्जुन का रथ जहाँ-जहाँ जाता था वहाँ-वहाँ आपके पक्ष की सेना [काई की तरह] फटती जाती थी। उस समय पराक्रमी केशव उत्तम, मध्यम और अधम, त्रिविध मण्डलों को दिखाते हुए अपनी रथ हाँकने की कला का परिचय दे रहे थे। अर्जुन के नाम से अङ्कित, काल और अग्नि के तुल्य, ताँत से बँधे हुए, सुन्दर गाँठों से शोभित, चौड़े, मोटे, दूर तक जानेवाले, बाँस और लोहे के बने अत्यन्त उग्र बाण विविध शत्रुओं के प्राण हरने और मांसाहारी पक्षियों के साथ उनका रक्त पीने लगे। कृष्णचन्द्र इस वेग से रथ हाँक रहे थे कि रथ पर बैठे हुए अर्जुन कोस भर आगे जिन बाणों को छोड़ते थे, वे बाण कोस भर आगे रथ निकल जाने पर शत्रुओं के प्राण हरते थे। गरुड़ और वायु के समान वेगगामी सुशिक्षित घोड़ों को हाँककर कृष्णचन्द्र इस कौशल और तेज़ी से रथ को लिये
१० जा रहे थे कि सब लोगों को देखकर बड़ा आश्चर्य हो रहा था। जितने वेग से अर्जुन का रथ जा रहा था उतने वेग से कभी पहले इन्द्र, रुद्र और कुबेर का भी रथ नहीं चला। मतलब यह कि मन और मनोरथ के समान शीघ्र जानेवाला अर्जुन का रथ जिस तरह जा रहा था उस तरह कभी किसी का रथ नहीं गया। राजन्! शत्रुदलदलन केशव इस तरह रणभूमि में प्रवेश करके फुर्ती के साथ घोड़ों को शत्रुसेना के बीच चलाने लगे। अर्जुन के घोड़े शत्रुसेना के रथों के बीच में भूख-प्यास और थकन के मारे धीरे-धीरे चलने लगे। योद्धाओं के अनेक अस्त्र-शस्त्र लगने से उनके अङ्गों में बहुत से घाव हो चुके थे। उस व्यथा और थकन के मारे वे घोड़े धीमी चाल से विचित्र मण्डलाकार गतियों से चलने लगे। वे घोड़े मरे हुए पर्वताकार घोड़ों, हाथियों, मनुष्यों और टूटे-फूटे रथों के ऊपर से रथ को खींचते चले जा रहे थे।

राजन्! तब अवन्तिदेश के विन्द और अनुविन्द ने अर्जुन के घोड़ों को थका हुआ देखकर अपनी सेना के साथ उनका सामना किया। उन्होंने अर्जुन को चौंसठ, श्रीकृष्ण को सत्तर और घोड़ों को सौ बाणों से पीड़ित किया। तब महावीर अर्जुन ने अत्यन्त कुपित होकर उनको पैने नव बाण मारे। महाबलशाली विन्द और अनुविन्द ने अर्जुन के बाणों से अत्यन्त क्रुद्ध होकर घोर सिंहनाद किया और अर्जुन तथा श्रीकृष्ण को बाणों से ढक दिया। २० महावीर अर्जुन ने दो भल्ल बाणों से फुर्ती के साथ उनका विचित्र धनुष और सुवर्णमण्डित ध्वजाएँ काट डालीं। महाबली विन्द और अनुविन्द तुरन्त अन्य धनुप लेकर क्रोधपूर्वक अर्जुन के ऊपर बाण बरसाने लगे। यह देखकर अर्जुन ने क्रोध करके फिर दो बाणों से उनके धनुप काट डाले। फिर उनके सारथी, पृष्ठरक्षक, सहायक पैदल सिपाही और घोड़े भी मार डाले और एक विकट क्षुरप्र बाण से विन्द का सिर काट गिराया। अर्जुन के बाण से प्राणहीन होकर विन्द, आँधी से टूटे बड़े पेड़ की तरह, पृथ्वी पर गिर पड़े। बड़े भाई की मृत्यु देखकर महापराक्रमी अनुविन्द अत्यन्त क्रोध करके, वह बिना घोड़ों का रथ छोड़कर, गदा हाथ में लिये अर्जुन की ओर दौड़े। पास जाकर

अनुविन्द ने श्रीकृष्ण के मस्तक में बड़े वेग से गदा मारी। अनुविन्द के गदा-प्रहार से श्रीकृष्ण तनिक भी विचलित न हुए। वे मैनाक पर्वत की तरह अचल-अटल खड़े रहे। तब अर्जुन ने कुपित होकर छः बाणों से अनुविन्द के दोनों हाथ, दोनों पैर, गर्दन और मस्तक काट डाला। इससे वे पहाड़ की तरह भरभराकर गिर पड़े।

इस तरह महाबली विन्द और अनुविन्द के मारे जाने पर उनके सैकड़ों साथी योद्धा क्रोधपूर्वक बाण बरसाते हुए अर्जुन की ओर दौड़ पड़े। अर्जुन ने फुर्ती के साथ तीक्ष्ण बाणों ३० से उन्हें भी मार डाला। उस समय विन्द-अनुविन्द की सेना को मुशकिल से मारकर, उनके बीच से निकलकर, वे गर्मियों में वन को जलानेवाले दावानल और मेघमुक्त सूर्यदेव के समान

शोभायमान हुए। उन्हें देखकर कौरवदल के लोग पहले डरे; लेकिन फिर जयद्रथ को दूर पर स्थित और अर्जुन को थका हुआ देखकर प्रसन्न हो उठे। सबने चारों ओर से अर्जुन को घेर लिया। वे सिंहनाद करके अर्जुन पर घोर आक्रमण करने लगे। उन्हें क्रोध के मारे बाण बरसाते आते देख मुसकुराते हुए अर्जुन ने धीरे से कहा—हे वासुदेव! बाणों के प्रहार से मेरे घोड़े जर्जर हो रहे हैं, थक भी गये हैं और जयद्रथ भी अभी दूर है। आप सबसे अधिक बुद्धिमान् और हमारे नेता हैं। बताइए, इस समय क्या किया जाय? पाण्डव लोग आपकी ही चतुराई से शत्रुओं को जीत सकेंगे। मेरी सलाह तो यह है कि आप यहाँ घोड़ों को रथ से खोलकर उनके अङ्गों के सब शल्य दूर कीजिए और वे कुछ सुस्ता भी लें। अर्जुन के वचन सुनकर श्रीकृष्ण ने कहा—हे पार्थ! तुम्हारा कहना ठीक है। अब अर्जुन ने कहा—हे मित्र!
४० आप यहीं पर ठहरकर अपना काम कर लीजिए। मैं पैदल ही सब शत्रुओं को रोके रहूँगा।

अब महावीर अर्जुन निःशङ्क भाव से अपनी अस्त्रविद्या दिखाने लगे। वे रथ से उतरकर, गाण्डीव धनुष लेकर, पर्वत के समान अटल भाव से खड़े हो गये। उस समय विजय की इच्छा रखनेवाले क्षत्रियगण अर्जुन को पृथ्वी पर खड़े देखकर, आक्रमण के योग्य यही अवसर जानकर, धनुष चढ़ाकर विचित्र अस्त्र-शस्त्र छोड़ते हुए, सिंह के सामने हाथियों के झुण्ड के समान अर्जुन की ओर झपट पड़े। असंख्य रथों के बीच में अर्जुन घिर गये। क्षत्रियों के बाणजाल के बीच में अर्जुन मेघों से छिपे हुए सूर्य के समान जान पड़ने लगे। उस समय युद्धभूमि में शत्रुनाशन अर्जुन अपना अद्भुत बाहुबल दिखाने लगे। उन्होंने अपने अस्त्र के प्रभाव से शत्रुपक्ष के सब अस्त्रों को बेकाम कर दिया। अर्जुन के बाणों से विह्वल होकर शत्रुपक्ष के सब योद्धा आगे बढ़ने में असमर्थ हो गये। बाणों के परस्पर रगड़ खाने से आकाश में आग सी जल उठी। असंख्य वीरगण विजय की इच्छा से क्रोधपूर्वक बहुत से रुधिरचर्चित मस्त
५० हाथियों और घोड़ों को साथ लेकर अकेले अर्जुन को हराने और मारने का पूरा उद्योग करने लगे। उनके रथों की कतार देखने से जान पड़ता था कि मानों अपार महासागर भरा पड़ा है। उस समुद्र में बाण तरङ्गों के समान, ध्वजाएँ भँवर के समान, हाथी मगरों के समान, पैदल मछलियों के समान, पगड़ियाँ कछुओं के समान तथा छत्र और पताकाएँ फेन के समान देख पड़ती थीं। महावीर अर्जुन तटभूमि के समान उस अक्षोभ्य और हाथीरूप चट्टानों से घिरे रथ-सागर को बाणों से रोके हुए थे।

धृतराष्ट्र ने पूछा—अर्जुन जब रथ से उतर पड़े और श्रीकृष्ण ने घोड़ों को सँभाला तब, यह मौक़ा पाकर, अर्जुन को क्यों न मार डाला? सञ्जय ने कहा—ज़मीन पर खड़े रहने पर भी अकेले अर्जुन ने रथों पर सवार राजाओं का बात की बात में इस तरह रोक दिया जिस तरह वेद-विरुद्ध वाक्य मनुष्य की प्रवृत्ति को रोक देता है या लोभ सब गुणों को खदेड़ देता है।

अर्जुन ने उसी समय अस्त्र के द्वारा पृथ्वी तल को फोड़ दिया। —२३८३

स समय श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—हे पार्थ! तुम्हारे घोड़े प्यास के मारे व्याकुल हो रहे । इस समय इन्हें पानी पिलाने की आवश्यकता है। यहाँ पर घोड़ों को पानी पिलाने ायक कुँआ आदि कोई जलाशय नहीं है। इन्हें नहलाने की उतनी ज़रूरत नहीं।

अर्जुन ने निश्चिन्त भाव से "यह जलाशय है" कहकर उसी समय अस्त्र के द्वारा पृथ्वी-ल को फोड़ दिया। अस्त्र के प्रभाव से वहाँ पर एक ऐसा विस्तृत सरोवर बन गया जिसके ट पर हंस, कारण्डव, चकवे आदि पक्षी बैठे थे, जल स्वच्छ था और उसके भीतर मछली-छुए आदि जीव-जन्तु कलोलें कर रहे थे। उस ऋषि-सेवित, निर्मल जलयुक्त, प्रफुल्लित कमल-लशोभित, तत्काल-निर्मित सरोवर को देखने के लिए देवर्षि नारद आ गये। विश्वकर्मा के ६१ सान अद्भुत काम करनेवाले अर्जुन ने वहाँ पर बाणों का ही एक अद्भुत घर बना दिया, जसके बाँस (ठाठ), खम्भे, छप्पर आदि सब बाणों के ही थे। महात्मा कृष्णचन्द्र अर्जुन का ह अद्भुत कार्य देखकर हँसते हुए उन्हें बारम्बार साधुवाद देने लगे। ६३

सौ अध्याय

घोड़ों की सेवा-शुश्रूषा हो चुकने पर अर्जुन का फिर जयद्रथ की ओर बढ़ना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! इस तरह वीर अर्जुन के प्रभाव से रणस्थल में जल निकल आया, बाणों का घर बन गया और शत्रुगण भी जहाँ के तहाँ रुक गये। तब महात्मा केशव ने रथ से उतरकर कङ्कपत्र-शोभित बाणों से घायल घोड़ों को रथ से खोल दिया। उस समय सिद्ध-चारणगण और सब सैनिक पुरुष अर्जुन के उस अभूतपूर्व कार्य को देखकर बारम्बार उनकी प्रशंसा करने लगे। कौरवपक्ष के योद्धा लोग किसी तरह अर्जुन को परास्त नहीं कर पाते थे, यह देखकर सभी को बड़ा आश्चर्य हो रहा था। महारथी योद्धा और राजा लोग लगातार अर्जुन के ऊपर बाण बरसाने लगे, परन्तु वीर अर्जुन उनके प्रहार से तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन असंख्य हाथियों, घोड़ों और रथों के आक्रमण से महावीर अर्जुन घबराये नहीं; वे सबको परास्त करके, सबसे बढ़कर, अद्भुत कौशल के साथ संग्राम करने लगे। जैसे महासागर सब नदियों के वेग को सहज ही रोक लेता है, वैसे ही बली अर्जुन भी वीरों के चलाये हुए असंख्य बाण, गदा, प्रास आदि शस्त्रों के वार को झेलते रहे। कौरवगण उस समय अर्जुन और श्रीकृष्ण के अद्भुत पराक्रम की बहुत बड़ाई करने लगे कि अर्जुन और श्रीकृष्ण ने जो युद्ध के मैदान में शत्रुदल के बीच रथ के घोड़े खोल दिये, और उन्हें पानी पिलाकर विश्राम करा दिया, यह उनके लिए कुछ बड़ी बात नहीं थी। दोनों वीरों ने अपना उग्र और अद्भुत १० तेज दिखाकर हम लोगों को बहुत ही भयाकुल कर दिया है।

महाराज! उस समय अश्वविद्या में निपुण कृष्णचन्द्र ने सारी शत्रुसेना के सामने ही उस अर्जुन-रचित बाणों के घर में घोड़ों को ले जाकर उनकी थकन मिटाई, अपने हाथों से उनके शरीर के शल्य निकाले और मालिश की, नहलाया, टहलाया और दाना-पानी खिलाया-पिलाया। जब घोड़े नहाकर और खा-पीकर विश्राम कर चुके तब श्रीकृष्ण ने उन्हें फिर उसी बढ़िया रथ में जोत दिया। अर्जुन सहित श्रीकृष्ण उस रथ पर बैठकर तेज़ी के साथ आगे बढ़े। कौरव-पक्ष के वीरों ने जब देखा कि महावीर अर्जुन के घोड़े पानी पीकर, थकन मिटाकर, फिर रथ को ले चले तब वे बहुत ही अनमने हो गये। जिसके ज़हरीले दाँत तोड़ दिये गये हों उस साँप के समान लम्बी साँसें ले रहे कौरवपक्ष के योद्धा लोग आपस में कहने लगे—हाय! श्रीकृष्ण और १८ अर्जुन हमारे सामने से निकल गये और हम उनका कुछ नहीं कर सके! हमें धिक्कार है! एक ही रथ पर बैठे हुए, कवचधारी, शत्रुनाशन अर्जुन और श्रीकृष्ण क्रीड़ा-सी करते हुए अनायास शत्रुसेना का नाश करते चले जा रहे हैं। जैसे कोई लड़का खिलौनों से खेले वैसे ही अनायास अपना पराक्रम दिखाकर और हमारे बल को तुच्छ करके वे चले जा रहे हैं और हम चिल्ला ही रहे हैं। हम सब राजाओं ने लाख चेष्टा की, पर उन्हें रोक नहीं सके।

हे कुरुकुल-तिलक! श्रीकृष्ण और अर्जुन को निकल गया देखकर अन्यान्य सैनिक चिल्लाकर कहने लगे—हे कौरवो! वह देखो, कृष्णचन्द्र सब योद्धाओं के सामने ही रथ हाँके जयद्रथ के पास जा रहे हैं। इसलिए तुम लोग श्रीकृष्ण और अर्जुन को मारने का शीघ्र यत्न करो। महाराज! उस समय कोई-कोई राजा यह अद्भुत दृश्य देखकर कहने लगे—हाय! दुर्योधन के दोष से ही आज महाराज धृतराष्ट्र, उनका वंश, सारी सेना और सब क्षत्रिय नष्ट-भ्रष्ट हो रहे हैं तथा इस प्रकार सम्पूर्ण पृथ्वी उजड़ी जा रही है; किन्तु राजा दुर्योधन यह नहीं समझते। किसी-किसी ने कहा—सिन्धुराज जयद्रथ अब किसी तरह नहीं बच सकते। अदूरदर्शी दुर्योधन को उनके लिए जो कुछ अन्तिम कर्तव्य हो सो कर लेना चाहिए।

इसी समय महावीर अर्जुन बिना थके घोड़ों से युक्त रथ पर सवार होकर बड़े वेग से [ज]यद्रथ की ओर जाने लगे। उन शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ और कराल काल के समान महावीर [अ]र्जुन को कौरवपक्ष के वीरगण किसी तरह न रोक सके। शत्रुदमन अर्जुन जयद्रथ के पास ३० [प]हुँचने के लिए, मृगों पर टूटकर उनका संहार करनेवाले सिंह की तरह, कौरवसेना को भगाने [ल]गे। सैन्यसागर में घुसकर वासुदेव फुर्ती के साथ घोड़ों को हाँकने और पाञ्चजन्य शङ्ख की [ध्व]नि करने लगे। अर्जुन के रथ के घोड़े उस समय इतनी तेज़ी से जा रहे थे कि अर्जुन जिन [ब]ाणों को छोड़ते थे वे निशाने पर पीछे पहुँचते थे और रथ आगे बहुत दूर निकल जाता था। [इ]सी समय फिर अनेक राजाओं और महारथियों ने, जयद्रथ-वध के लिए उत्सुक, अर्जुन को [च]ारों ओर से घेर लिया। इस तरह सब सैनिकों ने अर्जुन का सामना किया। अर्जुन का [र]थ कुछ धीमी चाल से आगे बढ़ने लगा। इसी अवसर में महाराज दुर्योधन, [द्रोणाचार्य का [ब]ाँधा हुआ कवच पहनकर] फुर्ती के साथ युद्ध करने के लिए अर्जुन के सामने आये। परन्तु [मे]घ के सदृश गम्भीर शब्द से युक्त, हवा से फहरा रही और वानर से भूषित ध्वजा से युक्त [अ]र्जुन का रथ देखकर कौरवपक्ष के सब रथी व्याकुल हो उठे। उस समय इतनी धूल उड़ी कि [च]ारों ओर घना अँधेरा छा गया। उस अँधेरे में बाणों से पीड़ित योद्धा लोग श्रीकृष्ण और [अ]र्जुन को अच्छी तरह देखने में असमर्थ हो गये। ३७

एक सौ एक अध्याय

दुर्योधन का अर्जुन को रोकना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! कौरवपक्ष के योद्धा और राजा लोग श्रीकृष्ण और अर्जुन को शत्रुदल के भीतर घुसते देखकर पहले तो डर के मारे भागने को तैयार हो गये; किन्तु उसके बाद अपने पराक्रम की प्रेरणा से लज्जित, क्षुब्ध और क्रुद्ध होकर, स्थिर होकर, अर्जुन की ओर बढ़े। जो राजा और योद्धा रोष के मारे अर्जुन के सामने युद्ध करने को गये वे, समुद्र में गिरी हुई नदियों के समान, फिर नहीं लौटे। तब कायर क्षत्रिय, वेदों की ओर से नास्तिक की तरह, युद्ध से भाग खड़े हुए। वे कायर अपने उस कार्य से पाप और नरक के भागी हुए। श्रीकृष्ण और अर्जुन उस समय द्रोणाचार्य की सेना को चीरकर और रथों के घेरे से निकलकर राहु के ग्रास से मुक्त सूर्य और चन्द्रमा के समान शोभायमान हो रहे थे। वे उन सेनाओं को विदीर्ण करने के बाद महाजाल को छिन्न-भिन्न करके उससे बाहर निकले दो महामत्स्यों के समान देख पड़े। दुर्भेद्य द्रोणाचार्य की सेना और उसके शस्त्रपात से छुटकारा पाकर वे प्रलयकाल में उदय हुए प्रचण्ड सूर्य के समान जान पड़ने लगे। मगर के मुँह से छूटे हुए महामत्स्यों के

समान श्रीकृष्ण और अर्जुन, उस अस्त्रजाल और रथसङ्कट से छुटकारा पाकर, शत्रुसेना को उसी तरह मथने लगे जैसे बड़े-बड़े मगर समुद्र को मथते हैं।

राजन्! जिस समय महाबाहु अर्जुन और कृष्णचन्द्र द्रोणाचार्य की सेना से घिरे हुए
१० थे उस समय आपके पुत्रों और उनके पक्ष के राजाओं ने समझा था कि वासुदेव और अर्जुन कभी द्रोणाचार्य के आगे जीते नहीं बच सकते। किन्तु जब वे द्रोणाचार्य की सेना को लाँघकर आगे निकल गये तब उन लोगों को निश्चय हो गया कि अब जयद्रथ के जीवन की आशा नहीं हो सकती। द्रोणाचार्य की सेना में अर्जुन और श्रीकृष्ण के अटकने पर कौरवों को जो प्रबल आशा हुई थी कि वे द्रोणाचार्य और कृतवर्मा के हाथ से छुटकारा न पा सकेंगे और इसी कारण जयद्रथ बच जायँगे, उस आशा को निष्फल करके वे द्रोणाचार्य और कृतवर्मा की दुस्तर सेना को लाँघ गये। सेनाओं से प्रज्वलित अग्नि के समान उन दोनों का निकल जाते देखकर सब लोग जयद्रथ के जीवन से निराश हो गये। उस समय शत्रुओं को विह्वल बनानेवाले निर्भय श्रीकृष्ण और अर्जुन आपस में जयद्रथ के मारने के बारे में बातचीत करने लगे कि कौरवपक्ष के छः महारथी जयद्रथ के चारों ओर रहकर उसकी रक्षा कर रहे हैं; किन्तु हमारी आँखों के आगे पड़ जाने पर वह कभी जीता नहीं बच सकता। युद्धभूमि में यदि देवताओं सहित इन्द्र भी जयद्रथ की रक्षा करेंगे तो भी आज हम उसे अवश्य मार डालेंगे। राजन्! महाबाहु श्रीकृष्ण और अर्जुन जयद्रथ को खोजते हुए इस तरह आपस में बातचीत कर रहे थे। उधर आपके पुत्र चिल्ला-चिल्लाकर अपने सैनिकों को अर्जुन से लड़ने के लिए उत्साहित करने लगे। जिस तरह प्यासे दो गजराज मरुभूमि को लाँघकर जल पीकर आश्वस्त हों, उसी तरह श्रीकृष्ण और अर्जुन भी शत्रुसेना के उस पार जाकर परम प्रसन्न हुए। जैसे सिंह-व्याघ्र-गज आदि ख़ूनी जानवरों से परिपूर्ण पहाड़ों को लाँघकर व्यापारी प्रसन्न होते हैं वैसे ही अजर अमर श्रीकृष्ण और अर्जुन उस समय प्रसन्न देख पड़ते थे। महाराज! आपके पक्ष
२१ के लोग उन्हें शत्रुसेना से निर्मुक्त देखकर ज़ोर से चिल्लाने लगे। विषैले साँप और प्रज्वलित अग्नि के समान द्रोणाचार्य से, अन्य राजाओं से और द्रोणाचार्य की अपार सेना से छुटकारा पाने पर सूर्य के समान तेजस्वी दोनों वीर वैसे ही प्रसन्न हुए जैसे लोग समुद्र के पार पहुँचकर ख़ुश होते हैं। द्रोणाचार्य और कृतवर्मा की सुरक्षित सेना और अस्त्रों से बचकर वे दोनों वीर रणभूमि में इन्द्र और अग्नि के समान शोभायमान हुए। द्रोणाचार्य के बाणों से घायल और रक्त से भीगे हुए श्रीकृष्ण और अर्जुन फूले हुए कनैर के पेड़ों से दो पहाड़ों के समान शोभित हो रहे थे। वे दोनों वीर उस समरकुण्ड से मुक्त हो गये, जिसमें द्रोणाचार्य ही भारी ग्राह थे, शक्तियाँ ही विषैले साँप के समान थीं, तीक्ष्ण बाण ही उग्र मगर थे और क्षत्रिय योद्धा ही जल के समान भरे हुए थे। द्रोणाचार्य के अस्त्र मेघ के समान थे, जिनमें

प्रत्यञ्चा का शब्द और तल-निर्घोष ही मेघगर्जन था तथा गदा और खड्ग बिजली के समान थे। उस समय वे अँधेरे से निकले हुए सूर्य और चन्द्रमा के समान शोभित हुए। प्रशस्त और लोकप्रसिद्ध श्रीकृष्ण तथा अर्जुन को द्रोणाचार्य की सेना और अस्त्रों का निवारण करके निकल जाते देखकर सब प्राणियों ने समझा कि वे मानों दुस्तर शतद्रु, विपाशा, इरावती, चन्द्रभागा, वितस्ता और सिन्धु को हाथों से ही पार कर गये। राजन्! दो सिंह जैसे किसी मृग का शिकार करने को उद्यत हों वैसे ही श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों वीर निकटवर्ती जयद्रथ को देखते हुए रथ पर शोभायमान हो रहे थे। उनके प्रसन्न मुखवर्ण को देखकर सब योद्धाओं ३० को निश्चय हो गया कि अब जयद्रथ के प्राण गये।

उस समय आरक्तनेत्र महाबाहु श्रीकृष्ण और अर्जुन जयद्रथ को देखकर प्रसन्नतापूर्वक सिंहनाद करने लगे। घोड़ों की रास हाथ में लिये कृष्णचन्द्र और धनुष-बाण हाथ में लिये अर्जुन, सूर्य और अग्नि के समान, प्रचण्ड प्रभापूर्ण देख पड़ने लगे। शत्रुनाशन वासुदेव और अर्जुन, आचार्य की सेना से निकलकर, जयद्रथ को निकटवर्ती देख बहुत आनन्दित हुए और मांस की इच्छा से झपटनेवाले बाज़ पक्षियों की तरह पराक्रम प्रकट करते हुए क्रोध के साथ जयद्रथ की ओर चले। उस समय द्रोणाचार्य के पहनाये कवच को पहने हुए, अश्वसंस्कार में निपुण, राजा दुर्योधन अकेले रथ पर बैठे हुए श्रीकृष्ण और अर्जुन की ओर चले। श्रीकृष्ण और अर्जुन को लाँघकर, उनके आगे पहुँचकर, दुर्योधन ने श्रीकृष्ण-सञ्चालित रथ को रोका। उस समय कौरव-सेना में शङ्ख आदि बहुत से बाजे बजने लगे और सिंहनाद सुनाई पड़ने लगे। अग्नि के समान तेजस्वी जो छः महारथी जयद्रथ की रक्षा कर रहे थे वे राजा दुर्योधन को, श्रीकृष्ण और अर्जुन के आगे, उपस्थित देखकर बहुत ही प्रसन्न हुए। अनुचरों सहित दुर्योधन को पीछे की ओर से आगे आकर राह रोकते देख श्रीकृष्ण अर्जुन से उस समय के उपयोगी वचन कहने लगे। ४२

एक सौ दो अध्याय

श्रीकृष्ण का अर्जुन को दुर्योधन के मारने के लिए उत्तेजित करना

वासुदेव ने कहा—हे अर्जुन! वह देखो, दुर्योधन हमें लाँघकर आगे आ गया है। मैं समझता हूँ कि आपत्ति में पड़कर इसने हमारे सामने इस तरह आने का साहस किया है। मेरी राय में इसके सदृश रथी योद्धा दूसरा नहीं है। यह महाधनुर्द्धर, अस्त्रविद्या में सुशिक्षित, युद्ध में दुर्जय, दृढ़मुष्टि, विचित्र युद्ध में निपुण और महाबली है। इसके बाण दूर तक जाते हैं। यह अत्यन्त सुख में पला है। महारथी योद्धा इसका सम्मान करते हैं। यह कर्मवीर है और सदा पाण्डवों से डाह रखता है। हे निष्पाप! मैं समझता हूँ कि इससे तुम्हारे युद्ध करने का

यही समय है। हमारी हार-जीत का जुआ इसी के ऊपर निर्भर है। हे पार्थ ! बहुत काल से सञ्चित क्रोधरूपी विष इस समय इसके ऊपर छोड़ो। वीर पाण्डवों के ऊपर होनेवाले सब अनर्थों की जड़ यही है। सो यह पापिष्ठ इस समय सौभाग्यवश तुम्हारे, बाणों का लक्ष्य बनकर, सामने आ गया है। अब तुम अपनी सफलता का उपाय देखकर इसे मारने का यत्न करो। अगर तुम्हें सफलता न मिलनेवाली होती तो यह राज्यलोलुप राजा तुमसे युद्ध करने को क्यों आ जाता ? हे अर्जुन ! तुम वही करो जिसमें इसका प्राणान्त हो। यह ऐश्वर्य के मद में मूढ़ हो रहा है। इसने कभी दुःख नहीं पाया। हे पुरुषश्रेष्ठ ! युद्ध में तुम्हारे पराक्रम को यह नहीं जानता। हे पार्थ ! त्रिलोक के निवासी सुर-असुर-मनुष्य आदि सब मिलकर तुमको जीतने की हिम्मत नहीं कर सकते, अकेला दुर्योधन क्या चीज़ है ? बड़े भाग्य की बात है कि वही शत्रु इस समय तुम्हारे रथ के पास उपस्थित है। हे महाबाहो ! वृत्रासुर को इन्द्र ने जैसे मारा

१० था वैसे ही तुम इसे शीघ्र मारो। इसने सदा तुम सबके ऊपर अनर्थ लाने का उद्योग किया है। इसने धोखा देकर कपटद्यूत में धर्मराज को जीता है। इस पापमति ने इसी तरह अनेक क्रूर नीच व्यवहार तुम निष्पाप पाण्डवों के साथ किये हैं। हे पार्थ ! तुम किसी तरह का सोच-विचार किये बिना इस अनार्यप्रकृति, सदा क्रोधी, कामरूपी दुर्योधन को मारो। क्षत्रियों का श्रेष्ठ धर्म युद्ध ही है और उस युद्ध में शत्रु को अवश्य मारना चाहिए। छलपूर्वक राज्य-हरण, वनवास, द्रौपदी के क्लेश आदि का ख़याल करके इस समय पराक्रम प्रकट करो और दुर्योधन को मारो। यह तुम्हारा सौभाग्य है कि आज यह दुष्ट तुम्हारे कार्य में विघ्न डालने के लिए, युद्ध की इच्छा से, तुम्हारे बाणों के मार्ग में आ गया है। बड़ी बात जो यह तुम्हारे आगे आकर तुमको रोकने का यत्न कर रहा है। बड़ी बात जो यह युद्धभूमि में तुमसे लड़ना अपना कर्तव्य समझता है। आज सौभाग्यवश तुम्हारी अचिन्तित इच्छाएँ सफल होंगी। देवासुर-युद्ध में इन्द्र ने जैसे जम्भासुर को मारा था वैसे ही तुम इस अधम कुलाङ्गार को मारो। इसको मार डालने पर यह शत्रुसेना, अनाथ होकर, भाग खड़ी होगी। इस समय तुम सहज ही इन दुरात्माओं के वैर की जड़ काट सकते हो।

सञ्जय कहते हैं कि महाराज ! महामति वासुदेव के यों कहने पर, उनसे सहमत होकर, अर्जुन ने कहा—हे केशव ! आपने जो कहा वह मेरा आवश्यक कर्तव्य है। अतएव अन्यान्य कार्य छोड़कर जहाँ पर दुर्योधन है वहाँ मेरा रथ ले चलिए। हे गोविन्द ! जो पापिष्ठ बहुत समय से हमारे राज्य को निष्कण्टक होकर भोग रहा है, उसके सिर को क्या मैं आज पराक्रम-

२० पूर्वक काट सकूँगा ? क्लेश के अयोग्य द्रौपदी को केश पकड़कर खींचने से जो दुःख मिला था उसे क्या मैं, इसे मारकर, दूर कर सकूँगा ? राजन् ! वासुदेव और अर्जुन आपस में इस तरह बातें करते-करते दुर्योधन पर आक्रमण करने के लिए प्रसन्नतापूर्वक रणभूमि में आगे बढ़े।

श्रीकृष्ण ने अर्जुन के सफ़ेद घोड़े हाँक दिये। उधर राजा दुर्योधन उनके सामने निर्भय भाव से उपस्थित हुए। वे उस भयानक समर में आगे बढ़कर अर्जुन और श्रीकृष्ण को रोकने का यत्न करने लगे। यह देखकर योद्धा क्षत्रियगण उनकी प्रशंसा करने लगे। उस समय कौरवदल के लोग भयानक सिंहनाद करने लगे। इससे शत्रुनाशन वीर अर्जुन क्रोध से विह्वल हो उठे। दुर्योधन भी क्रोधान्ध होकर युद्ध कर रहे थे। दुर्योधन और अर्जुन को कुपित होकर भिड़ते देख भीमरूप राजा लोग उत्सुकता के साथ उनका युद्ध देखने लगे। राजा दुर्योधन कुपित वासुदेव और अर्जुन को देखकर हँसने और उन्हें युद्ध के लिए ललकारने लगे। यह देखकर वासुदेव और अर्जुन प्रसन्नतापूर्वक सिंहनाद और शङ्खनाद करने लगे। उन दोनों वीरों की प्रसन्नता ३० और उत्साह देखकर सब कौरव लोग दुर्योधन के जीवन से निराश हो गये। वे दुर्योधन को प्रचण्ड अग्नि के मुख में पड़ा हुआ मानकर व्याकुल हो उठे। कौरवपक्ष के योद्धा लोग अत्यन्त शङ्कित और भयविह्वल होकर "राजा मारे गये! राजा मारे गये!" कहकर चिल्लाने लगे। अपने पक्ष के लोगों का आर्तनाद सुनकर दुर्योधन कहने लगे—हे वीरो! तुम डरो नहीं। मैं बहुत शीघ्र कृष्ण और अर्जुन को यमलोक भेजे देता हूँ।

इस तरह अपने सैनिकों को ढाढ़स बँधाकर कुपित दुर्योधन ने अर्जुन से कहा—हे अर्जुन! अगर तुम सचमुच पाण्डु के बेटे हो, तो तुमने दिव्य और मानुष जितने अस्त्रों की शिक्षा प्राप्त की है वे सब मेरे ऊपर छोड़कर दिखाओ। और, केशव का जो कुछ बल है उसे वे भी दिखावें। मैं तुम दोनों के पौरुष को देखना चाहता हूँ। मैं सुनता हूँ कि मेरे पीछे तुमने बहुत से अद्भुत काम किये हैं, जिनके कारण लोग श्रेष्ठ वीर कहकर तुम्हारी प्रशंसा करते हैं। इस समय मेरे सामने वह अपनी प्रशंसनीय क्षमता और अद्भुत पराक्रम प्रकट करो। ३८

एक सौ तीन अध्याय

अर्जुन का दुर्योधन को हराना

सञ्जय कहते हैं—राजन्! इस तरह अर्जुन से कहकर दुर्योधन ने मर्मभेदी तीन बाण अर्जुन को, चार बाण उनके चारों घोड़ों को और दस बाण श्रीकृष्ण को मारकर एक भल्ल बाण से श्रीकृष्ण के हाथ की चाबुक काट डाली। तब अर्जुन ने क्रुद्ध होकर दुर्योधन के ऊपर अत्यन्त तीक्ष्ण चौदह बाण छोड़े। अर्जुन के वे बाण दुर्योधन के कवच में लगकर व्यर्थ होकर गिर पड़े। यह देखकर अर्जुन बहुत ही क्रुद्ध हुए। उन्होंने फिर चौदह बाण दुर्योधन को मारे। वे भी दुर्योधन के कवच से लगकर व्यर्थ हो गये। इस तरह दुर्योधन के ऊपर चलाये

गये अर्जुन के अट्ठाईस बाणों को व्यर्थ होते देखकर श्रीकृष्ण ने कहा—हे धनञ्जय! मैं आज अटल पहाड़ के चलने के समान यह अद्भुत बात देख रहा हूँ कि तुम्हारे छोड़े हुए बाण कुछ नहीं कर पाते। आज क्या गाण्डीव धनुष का वेग घट गया है, या तुम्हारे हाथों में और मुट्ठी में वह पहले का बल और दृढ़ता नहीं रह गई है? अथवा तुम्हारे इस शत्रु की मृत्यु का और इसके साथ तुम्हारी अन्तिम भेंट का समय ही नहीं आया? हे पार्थ! तुम्हारे इन बाणों को दुर्योधन पर व्यर्थ होकर गिरते देख मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा है। आज शत्रुओं के शरीर को छिन्न-भिन्न करनेवाले वज्र-तुल्य ये तुम्हारे बाण तुम्हारा प्रयोजन सिद्ध नहीं कर पाते, यह कैसी विडम्बना है! इसका कारण मुझे बतलाओ।

१०

अर्जुन ने कहा—हे कृष्णचन्द्र! महात्मा द्रोणाचार्य ने अवश्य ही इसे अभेद्य कवच पहनाकर युद्ध में भेजा है। यह दारुण कवच अस्त्र-शस्त्र से कट-फट नहीं सकता। त्रिभुवन में द्रोणाचार्य के और मेरे सिवा कोई इस कवच को नहीं जानता। मैंने भी उन्हीं द्रोणाचार्य से यह कवच पाया है। स्वयं इन्द्र भी अपने वज्र से इस कवच को नहीं तोड़ सकते। बाणों से तो यह कवच कभी टूट ही नहीं सकता। हे श्रीकृष्ण! आप सब हाल जानकर भी इस तरह पूछकर मुझे क्यों मोहित कर रहे हैं? त्रिलोक में त्रिकाल में होनेवाला सारा वृत्तान्त आप जानते हैं। इस कवच के बारे में आपकी ऐसी जानकारी और किसी को नहीं है। हे श्रीकृष्ण! यह दुर्योधन द्रोणाचार्य के पहनाये हुए कवच को पहने हुए मेरे सामने खड़ा है; किन्तु इस कवच को पहनकर जिस तरह युद्ध करना चाहिए सो कुछ भी नहीं जानता। एक स्त्री जैसे इस कवच को पहनकर युद्ध में आ जाय वैसे ही यह भी खड़ा है। जनार्दन! इस समय आप मेरे धनुष और हाथों के पराक्रम को देखिए। यह कहाँ जायगा, कवच से सुरक्षित रहने पर भी इसे मैं अवश्य परास्त करूँगा। यही कवच मैं भी पहने हुए हूँ। इस तेजोमय कवच को पहले देव-देव शङ्कर ने अङ्गिरा को दिया था। अङ्गिरा से बृहस्पति ने, बृहस्पति से इन्द्र ने

और इन्द्र से मैंने पाया। इन्द्र ने सन्तुष्ट होकर विधि-सहित यह कवच मुझे दिया था। यद्यपि इसका यह कवच देवनिर्मित अथवा स्वयं ब्रह्माजी के द्वारा विरचित है, तथापि मेरे बाण मारने पर इस कवच के द्वारा दुष्ट दुर्योधन की रक्षा नहीं हो सकती। २०

सञ्जय कहते हैं—अब अर्जुन ने मन्त्रों से अभिमन्त्रित बाण धनुष पर चढ़ाकर उसकी डोरी कान तक खींची। माननीय अर्जुन ने सब तरह के कवच आदि आवरणों को तोड़नेवाले मानवास्त्र का प्रयोग किया। किन्तु जिस समय वे धनुप पर चढ़ाकर उन बाणों को खींचने लगे उसी समय अश्वत्थामा ने सब अस्त्रों को नष्ट करनेवाले अस्त्र से फुर्ती के साथ वे बाण काट डाले। दूर से ही अश्वत्थामा ने जब उन बाणों को काट डाला तब अर्जुन ने विस्मित होकर कहा—श्रीकृष्ण! मैं दो बार इस अस्त्र का प्रयोग नहीं कर सकता; क्योंकि दुबारा प्रयोग करने पर यह अस्त्र मुझे और मेरी सेना को ही नष्ट कर देगा। हे नरनाथ! इसी बीच में दुर्योधन ने विषैले साँप के समान प्राणघातक नव-नव बाण श्रीकृष्ण और अर्जुन को मारे। इसके उपरान्त वे फिर श्रीकृष्ण और अर्जुन के ऊपर लगातार बाणों की वर्षा-सी करने लगे। यह देखकर कौरवपक्ष के सब योद्धा प्रसन्न होकर बाजे बजाने और सिंहनाद करने लगे। महातेजस्वी अर्जुन बहुत ही कुपित होकर ओठ चाटने लगे। उन्होंने देखा कि दुर्योधन का ऐसा कोई अङ्ग नहीं है जो उस दिव्य कवच से सुरक्षित न हो। तब उन्होंने तीक्ष्ण बाण मारकर दुर्योधन के रथ के घोड़े मार डाले, पार्श्वरक्षक और सारथी को भी मार गिराया। साथ ही फुर्ती के साथ दुर्योधन का धनुप और हस्तावाप (दस्ताने) भी काटकर वे रथ के टुकड़े-टुकड़े कर डालने का उद्योग करने लगे। रथ को काटकर अर्जुन ने दुर्योधन की हस्तावाप-हीन हथेलियों में दो ३० सुतीक्ष्ण बाण मारे। मर्मस्थल में चोट मारने में चतुर अर्जुन के बाण उँगलियों के मांस और नाखूनों के बीच लगने से दुर्योधन भाग खड़े हुए। कौरवपक्ष के योद्धा लोग दुर्योधन को इस तरह कठिन सङ्कट में देखकर उनकी सहायता और रक्षा करने के लिए चारों ओर से दौड़ पड़े। हज़ारों रथ, सुसज्जित हाथी, घोड़े, पैदल आदि से अर्जुन को घेरकर सब योद्धा उन पर अस्त्र-शस्त्र बरसाने लगे। इतने अस्त्र-शस्त्र और बाण बरसाये गये कि अर्जुन, श्रीकृष्ण और उनका रथ छिप गया। तब अर्जुन, अपने अस्त्रबल से, उस सेना का संहार करने लगे। सैकड़ों रथी, हाथी और घोड़े अङ्गहीन, प्राणहीन हो-होकर गिरने लगे। मारी जाती हुई और मारी गई सेना ने एक कोस तक रथ की राह रोक ली। [उस सेना की दीवार-सी सामने दूर तक खड़ी होने के कारण अर्जुन के घोड़े रुक गये और रथ भी ठहर गया।] तब श्रीकृष्ण ने तुरन्त कहा—अर्जुन! तुम बड़े ज़ोर से अपने धनुप का शब्द करो और मैं अपना शङ्ख बजाता हूँ। महाबली अर्जुन, श्रीकृष्ण के कथनानुसार, बड़े वेग से धनुप चढ़ाकर बाणवर्षा करके शत्रुओं को मारने लगे। बलवान् श्रीकृष्ण ने भी पूरे बल से पाञ्चजन्य शङ्ख बजाया। उस समय श्रीकृष्ण

४० के मुखमण्डल और पलकों पर धूल ही धूल पड़ी हुई थी और पसीना निकल रहा था। श्रीकृष्ण के शङ्ख-शब्द और गाण्डीव धनुष के भयानक नाद को सुनकर कौरवपक्ष के सबल-दुर्बल अथवा सजीव-निर्जीव, सभी पृथ्वी पर गिर पड़े। इस प्रकार उस सेना के घेरे से अर्जुन का रथ निकल आया और वायु-सञ्चालित मेघ के समान वेग से आगे जाने लगा।

यह देखकर अनुचरों सहित जयद्रथ के रक्षक योद्धा लोग आगे बढ़े। एकाएक अर्जुन को निकटवर्ती देखकर जयद्रथ की रक्षा करनेवाले महारथी लोग अपने भयानक सिंहनाद से पृथ्वी को कँपाने लगे। वे लोग धनुष पर बाण चढ़ाने के शब्द, शङ्खनाद, उग्र सिंहनाद आदि करके अपना उत्साह प्रकट करने लगे। महाराज ! आपके पक्ष की सेना में उठनेवाले घोर शब्द को सुनकर श्रीकृष्ण और अर्जुन भी अपना-अपना शङ्ख बजाने लगे। वह महाशब्द पर्वत, समुद्र, द्वीप और पाताल सहित सारी पृथ्वी में भर गया। हे भरतकुलश्रेष्ठ ! वह शब्द दसों दिशाओं में व्याप्त हो जाने से उसकी प्रतिध्वनि कौरवों और पाण्डवों की सेना में गूँज उठी। आपके पक्ष के महारथी योद्धा श्रीकृष्ण और अर्जुन को वहाँ उपस्थित देखकर घबरा उठे और उन्हें रोकने के लिए शीघ्रता करने लगे। क्रोध से विह्वल आपके पक्ष के योद्धा लोग कवचधारी श्रीकृष्ण और अर्जुन को देखकर बड़े वेग से उनकी ओर बढ़ने लगे।
४९ उस समय अद्भुत दृश्य दिखाई पड़ने लगा।

एक सौ चार अध्याय

अर्जुन के साथ भूरिश्रवा आदि आठ महारथियों का युद्ध

सञ्जय कहते हैं—राजन् ! श्रीकृष्ण और अर्जुन को देखकर आपके दल के लोग उन्हें मारने के लिए शीघ्रता करने लगे। अर्जुन भी शत्रुओं को मारने का उद्योग करने लगे। प्रज्वलित अग्नि के समान प्रभासम्पन्न, सुवर्णमण्डित, व्याघ्रचर्मशोभित और घोर शब्द करनेवाले बड़े-बड़े रथों पर बैठे हुए योद्धा लोग सब दिशाओं को प्रकाशित कर रहे थे। क्रुद्ध साँप के समान भयङ्कर, सुवर्ण से अलङ्कृत और आँखों में चकाचौंध पैदा कर देनेवाले धनुषों से घोर शब्द निकलने लगा। सुन्दर कवच पहने हुए भूरिश्रवा, शल, कर्ण, वृषसेन, जयद्रथ, कृपाचार्य, शल्य और अश्वत्थामा, ये आठों महारथी योद्धा श्रीकृष्ण और अर्जुन के मारने का उद्योग करने लगे। वे व्याघ्रचर्म और सुवर्णमय चन्द्रचिह्नों से शोभित, गरजते हुए मेघ के समान शब्द कर रहे रथों पर बैठकर अर्जुन के ऊपर बाणों की वर्षा करने लगे। अर्जुन के आसपास और ऊपर-नीचे बाण ही बाण दिखाई देने लगे। उन महारथियों के रथों में कुलूत देश के बढ़िया घोड़े जुते हुए थे। राजन् ! आपके पुत्र की सहायता करनेवाले कुरुकुल के श्रेष्ठ योद्धा लोग अच्छी

नस्ल के, तेज़, अनेक देशों के, पहाड़ी, नदी-तट के देशोंवाले, सिन्धु देश के घोड़ों से युक्त श्रेष्ठ रथों पर बैठकर शीघ्रता के साथ अर्जुन के रथ की ओर चले। वे लोग बड़े-बड़े शङ्खों को बजाकर सारी पृथ्वी और आकाश को उस शब्द से पूर्ण करने लगे। इधर श्रीकृष्ण ने पाञ्चजन्य शङ्ख १० और अर्जुन ने देवदत्त शङ्ख बजाया। इनका शङ्खनाद ऐसा हुआ कि शत्रुओं के शङ्खनाद और सिंहनाद उसमें छिप गये। अर्जुन के बजाये हुए देवदत्त शङ्ख का शब्द और श्रीकृष्ण के बजाये हुए पाञ्चजन्य शङ्ख का शब्द पृथ्वी, आकाश, अन्तरिक्ष और सब दिशाओं में भर गया।

राजन्! कायरों के लिए भयङ्कर और शूरों के लिए हर्ष को बढ़ानेवाला दारुण शब्द रणभूमि में गूँज उठा। उसके साथ ही तुरही, मृदङ्ग, झाँझ, घड़ियाल, नगाड़े आदि बाजे भी बजने लगे। उस समय आपकी सेना के रक्षक और दुर्योधन के हितचिन्तक कर्ण आदि आठों महारथी, अनेक देशों के राजाओं के साथ, युद्ध के लिए आगे बढ़े और श्रीकृष्ण तथा अर्जुन के शङ्खनाद को सहन न कर सकने के कारण क्रोधपूर्वक अपने-अपने महाशङ्खों को बजाने लगे। वे लोग श्रीकृष्ण और अर्जुन के शङ्खनाद का जवाब देने के लिए अपने शङ्ख बजाने लगे। उस वज्राघात-सदृश शङ्खनाद से रथी, हाथी, घोड़े आदि सब घबराकर अस्वस्थ-से हो गये। सब दिशाएँ और आकाशमण्डल प्रतिध्वनित हो उठा। प्रलयकाल के से उस घोर शब्द से सारी सेना डर गई। तब दुर्योधन और वे आठों महारथी योद्धा, जयद्रथ की रक्षा २१ करने के लिए, अर्जुन को रोकने लगे। अश्वत्थामा ने श्रीकृष्ण को तिहत्तर और अर्जुन को तीन भल्ल बाण मारे। फिर अर्जुन की ध्वजा और घोड़ों को पाँच बाण मारे। जनार्दन को घायल देखकर अर्जुन ने अत्यन्त कुपित होकर अश्वत्थामा को छः सौ बाण मारे। इसके बाद कर्ण को दस और वृषसेन को तीन बाण मारकर शल्य के बाणयुक्त धनुष को मुट्ठी के पास से काट डाला। शल्य दूसरा धनुष लेकर अर्जुन के ऊपर बाण बरसाने लगे। भूरिश्रवा ने सुवर्ण-पुङ्खयुक्त

तीक्ष्ण तीन बाण, कर्ण ने बत्तीस बाण, वृषसेन ने सात बाण, जयद्रथ ने तिहत्तर बाण, कृपाचार्य ने दस बाण और मद्रराज शल्य ने दस बाण एक साथ अर्जुन को मारे। इसके बाद अश्वत्थामा ने अर्जुन को साठ और वासुदेव को बीस बाण मारकर फिर अर्जुन को पाँच बाण मारे। अर्जुन ने हँसते-हँसते, अपने हाथ की फुर्ती दिखाते हुए, उन सब वीरों को उनके प्रहारों का जवाब ३० दिया। उन्होंने कर्ण को बारह, वृषसेन को तीन, भूरिश्रवा को तीन, शल्य को दस, कृपाचार्य को पचीस और जयद्रथ को सौ बाण मारकर अश्वत्थामा को अग्निशिखा-सदृश आठ और फिर सत्तर बाण मारे। साथ ही मूठ की जगह पर शल्य के बाणयुक्त धनुष को काट डाला। भूरिश्रवा ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर श्रीकृष्ण के हाथ की घोड़ों की रास काट डाली और अर्जुन को तिहत्तर तीक्ष्ण बाण मारे। महावीर अर्जुन अत्यन्त क्रोध करके उसी तरह अपने शत्रुओं को मारकर ३५ भगाने लगे जिस तरह प्रचण्ड आँधी मेघों को छिन्न-भिन्न करती है।

एक सौ पाँच अध्याय

रथों की ध्वजाओं का वर्णन

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! पाण्डवपक्ष के और कौरवपक्ष के वीरों के रथों में अनेक प्रकार की ध्वजाएँ लगी हुई होंगी। इस समय तुम उन ध्वजाओं का वर्णन करो।

सञ्जय ने कहा—महाराज! सुनिए, वीरों के रथों में लगी हुई तरह-तरह की ध्वजाओं का रूप, रङ्ग और नाम मैं आपको सुनाता हूँ। रणभूमि में महारथी योद्धाओं के रथों पर सोने के गहनों और मालाओं से सजी हुई सुवर्णदण्डयुक्त ध्वजाएँ प्रज्वलित अग्नि के समान, अथवा सोने के पर्वत सुमेरु के सुनहरे शिखरों के समान शोभायमान हो रही थीं। उन ध्वजाओं के ऊपर अनेक रङ्गों की इन्द्रधनुष-सी विचित्र पताकाएँ वायुवेग से फहरा रही थीं, जिन्हें देखने से जान पड़ता था मानों रङ्गभूमि में वेश्याएँ नाच रही हैं।

अर्जुन की पताका के बीच में सिंह की सी पूँछ और उग्र मुख से युक्त भयानक वानर विराजमान था, जो कौरवपक्ष की सेना को डरवा रहा था। महावीर अश्वत्थामा की श्रेष्ठ ध्वजा १० भी सिंहपुच्छयुक्त, बालसूर्य के समान चमकीली, सुवर्णमण्डित, हवा से फहरा रही, इन्द्रध्वज के समान बहुत ऊँची और कौरवों के हर्ष को बढ़ानेवाली थी। महारथी कर्ण की ध्वजा का चिह्न हाथी की सुवर्णमयी शृङ्खला था। वह इतनी ऊँची थी कि मानों आकाश को छू रही हो। वह पताका सुवर्णमाला आदि से शोभित थी। ऐसा जान पड़ता था कि वह हवा के द्वारा सञ्चालित होकर रथ पर नाच रही है। कौरवों के आचार्य तपस्वी ब्राह्मण कृपाचार्य की ध्वजा का चिह्न बैल था। उनकी वह स्वच्छ ध्वजा नन्दी के चिह्न से युक्त त्रिपुरारि शङ्कर के रथ की ध्वजा के समान शोभायमान थी। वृषसेन की ध्वजा पर मणिरत्नजटित सुवर्णनिर्मित मोर

शोभायमान था। वह मानों बोलना चाहता था। वह ध्वजा सेना के अगले भाग में थी। वृषसेन का रथ उस मोर से मयूरचिह्नयुक्त स्वामिकार्त्तिक के रथ के समान शोभायमान था। मद्रराज शल्य की ध्वजा के अग्रभाग में सब बीजों को उत्पन्न करनेवाली खेती की अधिष्ठात्री देवी के समान सुनहरा, अग्निशिखातुल्य, हल का चिह्न बना हुआ था। जयद्रथ के रथ में गुलाबी रङ्ग का सुवर्णमण्डित रजतनिर्मित वराह का चिह्न था। सिन्धुराज उस ध्वजा से देवासुर-युद्ध में आदित्य के समान शोभायमान थे। याज्ञिक बुद्धिमान् भूरिश्रवा के रथ की सूर्यसदृश ध्वजा में यूप (खम्भे) २१ का चिह्न था। उस सुवर्णमय यूप में चन्द्रमा का चिह्न बना हुआ था। राजसूय यज्ञ के उन्नत यूप के समान वह यूप ध्वजा के ऊपर था। ऐरावत जैसे इन्द्र की सेना को शोभित करता है वैसे ही शल के रथ की ध्वजा में रजतनिर्मित हाथी का चिह्न देख पड़ता था। आपकी सेना को शोभायमान करनेवाली शल की ध्वजा में गजचिह्न के आस-पास सुवर्णमय मोर उसकी शोभा बढ़ा रहे थे। राजा दुर्योधन के श्रेष्ठ रथ की सुवर्णमण्डित ध्वजा में मणिमय नाग का चिह्न था। सैकड़ों सोने के घुँघरू या छोटी घण्टियाँ उसमें बज रही थीं। महाराज! उस ऊँची उत्तम ध्वजा से कुरुश्रेष्ठ दुर्योधन की बड़ी शोभा हो रही थी। ये ऊँची और प्रलयकाल के सूर्य के समान प्रकाशमान नव महारथियों की श्रेष्ठ ध्वजाएँ आपकी सेना को शोभायमान कर रही थीं। दसवें महारथी अकेले कपिध्वज अर्जुन थे, जो अग्नि से शोभित हिमालय पर्वत के समान शोभित हो रहे थे।

इसके उपरान्त शत्रुदलदलन वीर महारथी लोग अर्जुन को हराने के लिए विचित्र चमकीले बड़े-बड़े श्रेष्ठ धनुष लेकर लड़ने को प्रस्तुत हुए। शत्रुनाशन ३० वीर अर्जुन ने भी अपना श्रेष्ठ दिव्य गाण्डीव धनुष चढ़ाया। महाराज! अनेक देशों से बुलाये और आये हुए असंख्य राजा लोग अपनी चतुरङ्गिणी सेना सहित आपकी ही अनीति के कारण मारे गये। गरजते हुए दुर्योधन आदि योद्धा और अर्जुन एक दूसरे पर प्रहार करने लगे। उस समय अकेले ही अर्जुन ने वहाँ निर्भय भाव से बहुतेरे महा-

रथियों से युद्ध किया। उन महारथियों को जीतने और जयद्रथ को मारने के लिए उद्यत वीर अर्जुन गाण्डीव धनुष को घुमाते और बाण बरसाते समय बहुत ही शोभायमान हुए। शत्रुतापन अर्जुन ने असंख्य बाण बरसाकर कौरव पक्ष के योद्धाओं को अदृश्य कर दिया। उधर उन महारथियों ने भी चारों ओर से बाण बरसाकर अर्जुन को छिपा दिया। इस तरह पुरुषसिंह अर्जुन जब उन ३८ महारथियों के बाणों से छिप गये तब आपकी सेना में बड़ा भारी कोलाहल होने लगा।

एक सौ छः अध्याय

द्रोणाचार्य और युधिष्ठिर का युद्ध

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय! अर्जुन जब इधर जयद्रथ के पास पहुँच गये तब उधर पाञ्चालों ने द्रोणाचार्य के द्वारा रक्षित कौरवों के साथ क्या किया?

सञ्जय बोले—राजन्! तीसरे पहर लोमहर्षण संग्राम होने लगा। पाञ्चाल और कौरव द्रोणाचार्य के प्राणों का जुआ खेलने लगे। उत्साहपूर्ण पाञ्चालगण द्रोणाचार्य को मारने का और कौरवगण उनको बचाने का प्रयत्न करते हुए बाण बरसाने लगे। उस समय कौरवों और पाञ्चालों का, देवासुर-युद्ध के समान, अद्भुत संग्राम होने लगा। पाण्डवों सहित सब पाञ्चालगण द्रोणाचार्य के रथ के पास पहुँचकर उनकी सेना को छिन्न-भिन्न करने के लिए अपने दिव्य अस्त्रों का प्रयोग करने लगे। द्रोण के रथ तक रथसवार रथी योद्धा देख पड़ते थे और वे रणभूमि को कँपाते हुए युद्ध कर रहे थे। केकय देश के महावीर राजा बृहत्क्षत्र, इन्द्र के वज्र के समान, तीक्ष्ण बाण बरसाते हुए द्रोणाचार्य की ओर चले। इधर से महायशस्वी महारथी क्षेमधूर्ति भी सैकड़ों-हज़ारों बाण छोड़ते हुए बृहत्क्षत्र को रोकने के लिए आगे बढ़े। यह देखकर महापराक्रमी धृष्टकेतु अत्यन्त कुपित हो उठे। शम्बरासुर पर आक्रमण करने के लिए जैसे इन्द्र चले थे वैसे ही वे फुर्ती के साथ द्रोणाचार्य की तरफ़ बढ़े। मुँह फैलाये मृत्यु के १० समान आते हुए चेदिराज धृष्टकेतु से लड़ने के लिए महाबाहु वीरधन्वा चले।

तब महावीर्यशाली द्रोणाचार्य विजय की इच्छा से सेना सहित सामने उपस्थित महाराज युधिष्ठिर को अपने बाणों से रोकने का प्रयत्न करने लगे। युद्धकुशल पराक्रमी नकुल को आते देखकर उनसे लड़ने के लिए आपके पराक्रमी पुत्र विकर्ण चले। सहदेव को आते देखकर शत्रुदमन दुर्मुख हज़ारों शीघ्रगामी बाण बरसाते हुए उनका सामना करने लगे। वीर सात्यकि को विचलित करते हुए व्याघ्रदत्त उनपर तीक्ष्ण भयानक बाण छोड़ने लगे। महावीर शल अपने ऊपर तीक्ष्ण बाण चला रहे कुपित द्रौपदी के पाँचों पुत्रों को रोकने लगे। महाबली भयानक ऋष्यशृङ्ग के पुत्र ने कुपित होकर आ रहे भीमसेन का सामना किया। उन दोनों, मनुष्य और राक्षस, में वैसा ही घोर युद्ध होने लगा जैसा पूर्वकाल में राम और रावण का हुआ था।

उस समय धर्मराज युधिष्ठिर ने तीक्ष्ण नव्वे बाण महावीर द्रोणाचार्य के मर्मस्थानों में मारे। आचार्य ने भी क्रोधविह्वल होकर उनकी छाती में पचीस बाण मारे। और, फिर सब योद्धाओं के सामने ही उनकी ध्वजा, सारथी और घोड़ों को बीस बाण मारे। तब धर्मात्मा २० युधिष्ठिर ने फुर्ती के साथ अपने बाणों से द्रोणाचार्य के सब बाण काट डाले। यह देखकर श्रेष्ठ धनुर्द्धर आचार्य ने कुपित होकर शीघ्र ही युधिष्ठिर का धनुष काट डाला और असंख्य बाण मारकर उनको घायल कर दिया। आचार्य के असंख्य बाणों में जब राजा युधिष्ठिर छिप गये तब समरभूमि में स्थित सभी लोग समझने लगे कि राजा मार डाले गये। किसी-किसी ने समझा कि आचार्य के बाणप्रहार से विह्वल होकर धर्मराज युद्धभूमि से भाग गये। उधर द्रोणाचार्य के बाणों से विपन्न युधिष्ठिर उस कटे धनुष को छोड़कर एक बढ़िया दृढ़ धनुष लेकर बाण-वर्षा करने लगे। उन्होंने दम भर में द्रोण के सब बाणों को काट गिराया। यह देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। आचार्य के बाण काट डालने के बाद क्रोध से लाल आँखें करके राजा युधिष्ठिर ने पर्वतों को भी फाड़नेवाली, स्वर्णदण्डयुक्त, आठ घण्टों से शोभित, भयानक शक्ति हाथ में ली। उस शक्ति को उठाकर बली युधिष्ठिर ने सिंहनाद किया, जिससे सब प्राणी डर गये। ३० युद्ध में युधिष्ठिर को शक्ति तानते देखकर सब लोग शङ्कित हो उठे और द्रोणाचार्य के लिए "स्वस्ति" कहने लगे। युधिष्ठिर के हाथ से छूटी हुई, महासर्प के समान, भयानक शक्ति दिशा-विदिशा और आकाश को प्रज्वलित करती हुई द्रोणाचार्य के पास आ पहुँची। अग्निमय मुख से भयानक नागिन के समान उस शक्ति को आते देखकर अस्त्र-विद्या में निपुण महारथी द्रोण ने तत्काल ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। वह अस्त्र उस घोर शक्ति को भस्म करके फुर्ती के साथ यशस्वी युधिष्ठिर के रथ पर पहुँचा।

राजा युधिष्ठिर ने द्रोणाचार्य के उस अस्त्र को ब्रह्मास्त्र के ही द्वारा शान्त कर दिया। फिर पाँच तीक्ष्ण बाण द्रोण के पैर में मार करके एक क्षुरप्र बाण से उनका धनुष काट डाला। धनुष कट

जाने पर आचार्य ने युधिष्ठिर पर एक भारी गदा चलाई। उस गदा को रोकने के लिए युधिष्ठिर ने अपनी सुदृढ़ गदा का प्रयोग किया। वीरों के हाथ से छूटी हुई दोनों गदाएँ, परस्पर टकराने से, चिनगारियाँ उगलती हुई टूटकर गिर पड़ीं।

४० महावीर द्रोणाचार्य ने अत्यन्त क्रोध करके चार बाणों से उनके घोड़े मार डाले, एक से धनुष और अन्य एक से इन्द्रध्वज के समान उन्नत ध्वजा काट डाली और उनको ताककर तीन बाण मारे। युधिष्ठिर तुरन्त रथ से उतर पड़े और शस्त्र फेंककर ऊपर को हाथ उठाकर खड़े हो गये। उन्हें रथ और शस्त्र से हीन देख द्रोणाचार्यजी बाण बरसाकर उनकी सेना को पीड़ित करने लगे। भयङ्कर सिंह जैसे मृगों को भगाता है वैसे ही द्रोणाचार्य पाण्डवों की सेना को मारकर भगाने लगे। इस प्रकार द्रोणाचार्य ने जब युधिष्ठिर को परास्त कर दिया तब पाण्डवपक्ष के सब योद्धा हाहाकार करके कहने लगे कि आचार्य ने राजा युधिष्ठिर को मार डाला। उस समय महाराज युधि-

४७ ष्ठिर, सहदेव के रथ पर बैठकर, तेज़ी से रथ हँकाते हुए आचार्य के सामने से हट गये।

एक सौ सात अध्याय

संकुल युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—राजन्! महारथी क्षेमधूर्ति ने रणभूमि में उपस्थित केकयदेश के योद्धा अतुल पराक्रमी बृहत्क्षत्र की छाती में असंख्य बाण मारे। राजा बृहत्क्षत्र ने भी आचार्य की सेना को छिन्न-भिन्न करने के लिए फुर्ती के साथ उनको सन्नतपर्ववाले नव्वे बाण मारे। तब क्षेमधूर्ति ने क्रुद्ध होकर धारदार भल्ल बाण से वीर बृहत्क्षत्र का धनुष काट डाला और उनको तीक्ष्ण बाणों से घायल कर दिया। बृहत्क्षत्र ने भी हँसते-हँसते दूसरा धनुष लेकर क्षेमधूर्ति के घोड़े, सारथी और रथ आदि के टुकड़े-टुकड़े कर डाले और फिर भयानक भल्ल बाण से उनका मणिकुण्डल-मण्डित सिर काटकर गिरा दिया। क्षेमधूर्ति का, घुँघराले बालों से शोभित, किरीटयुक्त कटा हुआ सिर एकाएक गिरकर आकाश से गिरी हुई उल्का के समान शोभा को प्राप्त हुआ। इस तरह वीर क्षेमधूर्ति को मारकर प्रसन्नचित्त बृहत्क्षत्र, पाण्डवों की सहायता करने के लिए, तेज़ी के साथ कौरव-सेना की ओर बढ़े।

महावीर धृष्टकेतु आचार्य पर आक्रमण करने के लिए उनके सामने चले। उनको महापराक्रमी वीरधन्वा ने रोका। दोनों पराक्रमी वीर हज़ारों बाणों से एक दूसरे को घायल

१० करते हुए दुर्गम जङ्गल में विचरनेवाले यूथपति मत्त दो गजराजों के समान, अथवा गुफा में स्थित दो सिंहों के समान, एक दूसरे को मारने की इच्छा से घोर समर करने लगे। सिद्ध-चारणगण आश्चर्यपूर्ण दृष्टि से उनका वह अद्भुत युद्ध देखने लगे। उस समय महावीर वीर-

धन्वा ने क्रोध और उत्साह से पूर्ण होकर भल्ल बाण से धृष्टकेतु का धनुष काट डाला। चेदि-राज धृष्टकेतु ने उसी दम वह धनुष फेंककर सुवर्णदण्ड-मण्डित एक लोहे की भयानक शक्ति हाथ में ली और ताककर वीरधन्वा के रथ पर फेंकी। उस वीर-घातिनी शक्ति के प्रहार से महावीर वीरधन्वा का हृदय फट गया और वे पृथ्वी पर गिरकर मर गये। राजन्! त्रिगर्तदेश के वीर वीरधन्वा के मर जाने पर पाण्डवपक्ष की सेना ने बड़े वेग से कौरव-सेना के ऊपर आक्रमण किया और उसका संहार शुरू कर दिया।

उधर सहदेव को साठ बाण मारकर परम प्रतापी वीर दुर्मुख तर्जन-गर्जन और सिंहनाद करने लगे। सहदेव उस तर्जन-गर्जन से क्रोधित होकर बाणों के प्रहार से उन्हें पीड़ित करने लगे। सहदेव की तेज़ी देखकर उनको दुर्मुख ने नव बाण मारे। अब सहदेव ने एक भल्ल २० बाण से दुर्मुख की ध्वजा काट डाली, चार बाणों से उनके चारों घोड़े मार डाले, एक तीक्ष्ण भल्ल बाण से सारथी का सिर काट डाला, एक तीक्ष्ण क्षुरप्र बाण से उनका धनुष काट डाला और फिर पाँच बाण मारकर उन्हें घायल कर दिया। विना घोड़ों के रथ को छोड़कर दुर्मुख उदास भाव से निरमित्र के रथ पर चले गये। शत्रुनाशन सहदेव ने निरमित्र पर क्रुद्ध होकर एक भल्ल बाण मारा, जिससे वे मर गये। सहदेव का दारुण बाण लगने से त्रिगर्तराज के पुत्र निरमित्र मरकर फ़ौरन् रथ से गिर पड़े। यह देखकर कौरवपक्ष की सेना अत्यन्त व्यथित हुई और त्रिगर्त लोग हाहाकार करने लगे। हे नरनाथ! राक्षस खर को मारकर रामचन्द्र जैसे शोभायमान हुए थे वैसे ही, निरमित्र को मारकर, सहदेव शोभायमान हुए।

हे नरनाथ! महाबाहु नकुल ने आपके पुत्र विशाललोचन विकर्ण को दम भर में परास्त करके सब लोगों को विस्मित कर दिया। उधर महावीर व्याघ्रदत्त ने तीक्ष्ण बाण बरसाकर सेना ३० के मध्य में स्थित घोड़े, सारथी, ध्वजा आदि सहित वीर सात्यकि को अदृश्य सा कर दिया। महावीर सात्यकि ने भी हाथों की फुर्ती दिखाते हुए व्याघ्रदत्त के बाणों को व्यर्थ कर दिया और उनके घोड़े, सारथी आदि को मारकर रथ की ध्वजा काट गिराई। साथ ही तीक्ष्ण बाण के प्रहार से व्याघ्रदत्त को मार गिराया। इस तरह मगधराज के पुत्र के मारे जाने पर मगधदेश के वीर क्रोधान्ध हो उठे। वे सात्यकि के सामने आकर उन पर असंख्य बाण, तोमर, भिन्दिपाल, प्रास, मुशल, मुद्गर आदि अस्त्र-शस्त्र बरसाने लगे। युद्धनिपुण सात्यकि ने हँसते-हँसते सहज ही उन सब वीरों को परास्त कर दिया। मरने से बचे हुए मगधदेश के योद्धा, प्राण बचाने के लिए, चारों ओर भागने लगे। राजन्! सात्यकि इस तरह धनुष कँपाते और आपके सैनिकों का संहार करते हुए समरभूमि में विचरने लगे। उनसे संग्राम करने का साहस कोई नहीं कर सका। ३८ तब महावीर द्रोणाचार्य क्रुद्ध होकर लाल-लाल आँखें करके सात्यकि की ओर चले।

एक सौ आठ अध्याय

शल का मारा जाना और अलम्बुष की हार

सञ्जय कहते हैं—राजन्! सोमदत्त के पुत्र महाधनुर्द्धर यशस्वी शल द्रौपदी के पुत्रों से युद्ध करने लगे। उन्होंने पहले पाँच-पाँच बाण पाँचों को मारकर फिर सात-सात बाणों से उन्हें पीड़ित किया। शल के बाण लगने से द्रौपदी के पाँचों पुत्र अचेत-से हो गये। वे कुछ निश्चय न कर सके कि अब उन्हें क्या करना चाहिए। इसके उपरान्त नकुल के पुत्र शतानीक, नरश्रेष्ठ शल को दो तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित करके, सिंहनाद करने लगे। द्रौपदी के अन्य चारों पुत्रों ने भी शल को तीन-तीन बाण मारे। महावीर शल ने भी हर एक की छाती ताककर एक-एक बाण मारा। शल के प्रहार से पीड़ित पाँचों भाई चारों ओर से शल के ऊपर तीक्ष्ण बाण छोड़ने लगे। अर्जुन के पुत्र ने कुपित होकर तीक्ष्ण चार बाणों से शल के चारों घोड़े मार डाले। भीमसेन के पुत्र ने उनका धनुष काट डाला और सिंहनाद करके तीक्ष्ण बाणों से उन्हें घायल किया। युधिष्ठिर के पुत्र ने शल की ध्वजा काट डाली और नकुल के पुत्र ने फुर्ती के साथ उनके सारथी का सिर काट डाला। सहदेव के पुत्र ने अपने भाइयों के प्रहार से शल को शिथिल देखकर एक क्षुरप्र बाण से उनका सिर काट डाला। तरुण सूर्य के समान तेजस्वी, सोने के गहनों से अलङ्कृत, शल का सिर पृथ्वी पर गिरने से समरभूमि प्रकाशित हो उठी। उस समय शल की मृत्यु देखकर आपके सैनिक लोग डर के मारे इधर-उधर भागने लगे।

१०

राजन्! जैसे रावण के पुत्र इन्द्रजित् ने लक्ष्मण से घोर युद्ध किया था वैसे ही क्रुद्ध राक्षस अलम्बुष महापराक्रमी भीमसेन से युद्ध करने लगा। इन दोनों वीरों का भयङ्कर युद्ध देखकर सब लोग विस्मित और आह्लादित हुए। उस समय महावीर भीमसेन ने हँसकर क्रुद्ध राक्षसराज अलम्बुष

को तीक्ष्ण नव बाण मारे। ऋष्यशृङ्ग का पुत्र अलम्बुष उन बाणों से घायल होकर गरजता हुआ भीमसेन और उनके साथियों के सामने पहुँचा। उसने भीमसेन को पाँच बाण मारकर उनके साथी तीस रथी योद्धाओं को मार गिराया। फिर और चार सौ रथी योद्धाओं को मारकर भीमसेन को उसने तीक्ष्ण बाण मारे। राक्षस के बाणों से महावीर भीमसेन अत्यन्त विह्वल हो उठे। वे रथ के ऊपर मूर्च्छित हो गये। दम भर के बाद उनको होश आया। वे क्रोध से काँपने लगे। उन्होंने धनुष चढ़ाकर तीक्ष्ण बाणों के प्रहार से अलम्बुष को अत्यन्त पीड़ित किया। भीमसेन के बाणों से घायल होने पर काला-कलूटा निशाचर फूले हुए ढाक के पेड़ के समान जान पड़ने लगा। हे नरनाथ! उस समय अलम्बुष को अपने भाई के वध का स्मरण हो आया। उसने भयानक रूप धारण करके भीमसेन से कहा—रे नराधम! खड़ा रह, आज समरभूमि में तू मेरा पराक्रम देख। तू पहले मेरे भाई महावीर वक राक्षस को मार करके भाग्यवश जीता बच गया था। मैं उस समय वहाँ पर होता तो अवश्य ही तुझे जीता न छोड़ता। भीमसेन से इतना कहकर वीर अलम्बुष देखते ही देखते अन्तर्द्धान हो गया। राक्षस ने बाणवर्षा से भीमसेन को छिपा दिया। उन्होंने भी उसको सामने न पाकर तीक्ष्ण बाणों से आकाश को परिपूर्ण कर दिया। भीम के बाणों से पीड़ित राक्षस मायाबल से रथ सहित कभी पृथ्वी पर आ जाता और कभी आकाश में चला जाता था। कभी सूक्ष्म, कभी बड़ा और कभी स्थूल आकार धारण करके वह मेघ के समान गरजने, कटु वचन कहने और आकाशमार्ग में रहकर चारों ओर से बाण बरसाने लगा। राक्षस के चलाये हुए शक्ति, कणप, प्रास, शूल, पट्टिश, परिघ, तोमर, शतघ्नी, भिन्दिपाल, परशु, शिला, खड्ग, लगुड़, ऋष्टि, वज्र आदि अस्त्र-शस्त्र जलधारा की तरह गिरकर भीमसेन की असंख्य सेना का संहार करने लगे। बहुत से हाथी, घोड़े, रथी और पैदल कट-कटकर गिरने लगे।

२०

३०

राजन्! [वीर अलम्बुष इस तरह पाण्डवपक्ष की सेना को मारकर अपना पराक्रम प्रकट करने लगा।] उसने राक्षसगण-सेवित रक्त की नदी बहा दी। रथ उस नदी के आवर्त-से, हाथी उसके ग्राह-से, छत्र उसमें हंस-से और कटे हुए हाथ साँप-से जान पड़ते थे। चेदि, पाञ्चाल और सृञ्जयगण उस नदी में बहने लगे। उस भयानक संग्राम में निशाचर का निर्भय होकर विचरना, लड़ना और अद्भुत पराक्रम देखकर पाण्डवगण बहुत ही उद्विग्न हो उठे। कौरव-सेना के लोग अत्यन्त हर्षित होकर बाजे बजाने और लोमहर्षण सिंहनाद करने लगे। साँप जैसे ताली पीटने के शब्द को नहीं सह सकता वैसे ही भीमसेन कौरवपक्ष के बाजों के शब्द और सिंहनाद को नहीं सह सके। वे क्रोध के मारे लाल आँखें करके शत्रुसेना की ओर देखने लगे। इसके बाद उन्होंने धनुष पर बाण चढ़ाकर त्वाष्ट्र अस्त्र का प्रयोग किया। तब चारों ओर से हज़ारों बाण प्रकट हुए जिससे कौरव-सेना में भगदड़ मच गई। कौरवों की

४० सेना डर के मारे घबराकर भागने लगी। उस समय भीमसेन के छोड़े हुए उस त्वाष्ट्र अस्त्र ने रणभूमि में राक्षस की माया को मिटा दिया। उस अस्त्र से राक्षस पीड़ित होने लगा। वह निशाचर पीड़ित होकर युद्ध छोड़कर आचार्य की सेना की ओर भागा।

राजन्! इस प्रकार राक्षस को जब भीमसेन ने परास्त कर दिया तब पाण्डवगण अतीव प्रसन्न होकर सिंहनाद और शङ्खनाद से दसों दिशाओं को परिपूर्ण करने लगे। प्रह्लाद के परास्त होने पर देवताओं ने इन्द्र की जैसे प्रशंसा की थी वैसे ही सब लोग भीमसेन की बड़ाई ४४ करते हुए उन्हें असंख्य धन्यवाद देने लगे।

एक सौ नव अध्याय

अलम्बुष का मारा जाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! महावीर अलम्बुष इस तरह भीमसेन के सामने से भागकर रणभूमि में दूसरी ओर जा निकला। तब घटोत्कच वेग के साथ उसके सामने आकर तीक्ष्ण बाणों से उसे पीड़ित करने लगा। [अलम्बुष भी अत्यन्त क्रुद्ध होकर घटोत्कच के ऊपर प्रहार करने लगा।] वे दोनों राक्षसश्रेष्ठ इस तरह परस्पर भिड़कर बहुत सी मायाएँ प्रकट करते हुए इन्द्र और शम्बरासुर के समान घोर संग्राम करने लगे। पहले राम और रावण ने जैसे घोर युद्ध किया था वैसे ही उस समय दोनों राक्षस घोरतर युद्ध करने लगे। बीस नाराच बाणों से अलम्बुष का हृदय भेदकर घटोत्कच बारम्बार सिंह की तरह गरजने लगा। अलम्बुष भी बारम्बार तीक्ष्ण बाणों से रणदुर्मद घटोत्कच को घायल करता हुआ सिंहनाद करने लगा। वे मायायुद्ध में निपुण महापराक्रमी दोनों राक्षस क्रोधान्ध होकर सैकड़ों माया प्रकट करके एक दूसरे को मोहित करते हुए मायायुद्ध करने लगे। घटोत्कच ने जो-जो माया प्रकट की, वह-वह माया अलम्बुष ने अपनी माया के प्रभाव से उसी दम नष्ट कर दी। इसी समय भीमसेन आदि पाण्डव मायायुद्धनिपुण अलम्बुष के ऊपर क्रुद्ध होकर, रथों पर १० बैठकर, चारों ओर से उसकी ओर चले और अपने दल के असंख्य रथों से उसे घेरकर उस पर बाण बरसाने लगे। उन वीरों के बाणों की चोट खाकर वह राक्षस जलती हुई लकड़ियों से मारे जा रहे हाथी के समान जान पड़ने लगा। अस्त्रमाया के प्रभाव से उन सब अस्त्र-शस्त्रों को नष्ट करता हुआ अलम्बुष, जले हुए वन से निकलते हुए हाथी के समान, रथों के घेरे से बाहर निकल आया। इन्द्र के वज्र के समान शब्द करते हुए भयानक धनुष को चढ़ाकर उसने भीमसेन को पचीस, घटोत्कच को पाँच, युधिष्ठिर को तीन, सहदेव को सात, नकुल को तिहत्तर और द्रौपदी के पाँचों पुत्रों को पाँच-पाँच बाण मारकर सिंहनाद किया। तब उधर से
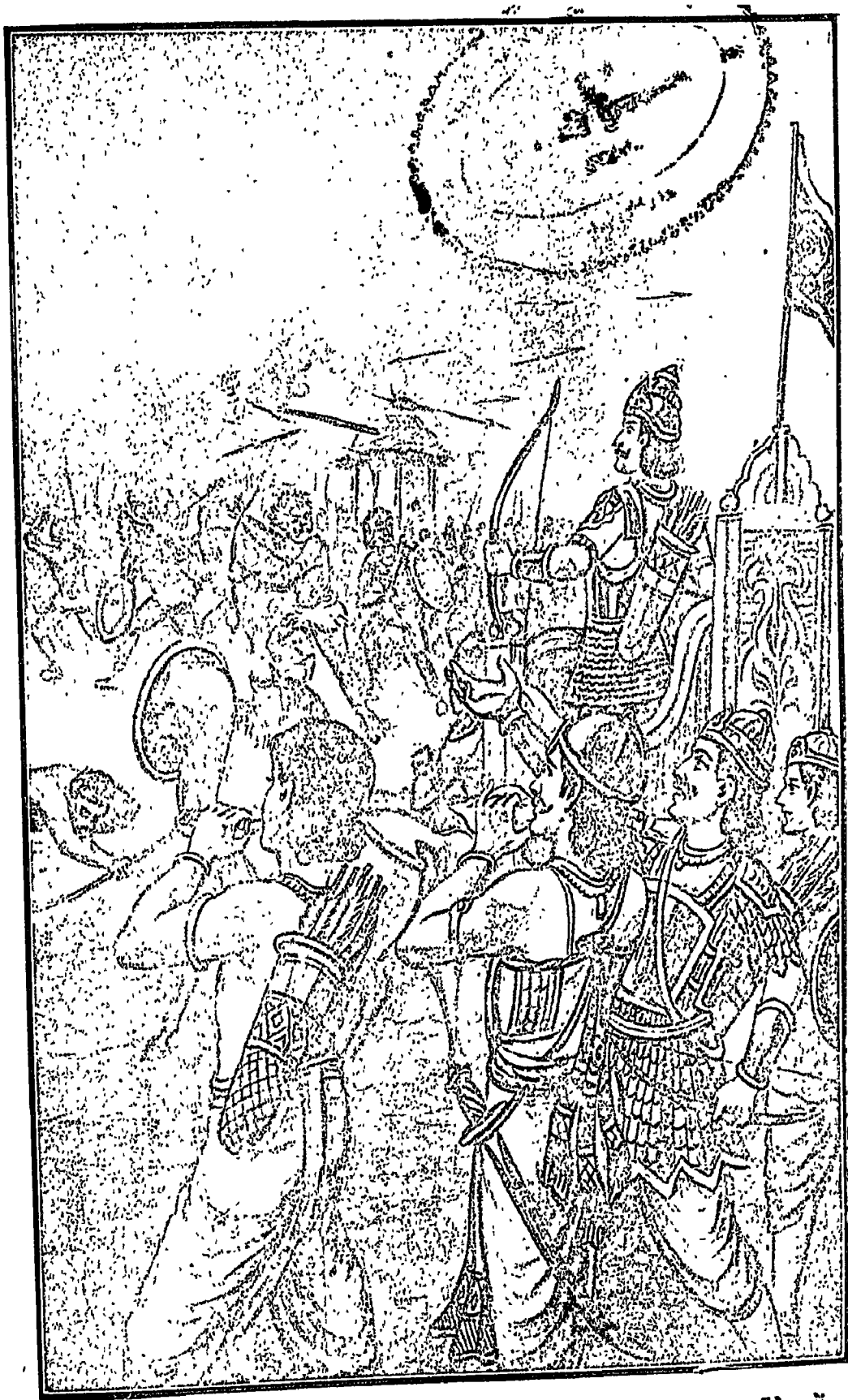
राक्षस को जब भीमसेन ने परास्त कर दिया...पाण्डवगण अतीव प्रसन्न होकर...शंखनाद से दशों दिशाओं को परिपूर्ण करने लगे।—पृ० २४०२

भीमसेन ने नव, सहदेव ने पाँच, युधिष्ठिर ने सौ, नकुल ने चौंसठ और द्रौपदी के पुत्रों ने तीन-तीन बाण उस राक्षस को मारे। इसी समय महाबली घटोत्कच ने भी पहले उसे पचास और फिर सत्तर बाण मारकर सिंहनाद किया। उसके भयानक सिंहनाद से पर्वत, वन, जलाशय आदि सहित यह पृथ्वी काँप उठी।

राजन्! निशाचर अलम्बुष ने इस तरह इन महारथियों के तीक्ष्ण बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर सबको पाँच-पाँच बाण मारे। राक्षस घटोत्कच ने भी कुपित होकर फिर अलम्बुष को तीक्ष्ण सात बाण मारे। राक्षसेन्द्र अलम्बुष उन बाणों से पीड़ित होकर फुर्ती के साथ घटोत्कच के ऊपर सुवर्णपुङ्खयुक्त और तेज़ किये गये बाण बरसाने लगा। महाबली कुपित नाग जैसे तेज़ी के साथ पर्वत के शिखर में घुसते हैं वैसे ही वे बाण घटोत्कच के शरीर में प्रवेश कर गये। महाबली पाण्डवगण घटोत्कच के साथ मिलकर चारों ओर से अलम्बुष के ऊपर बाण बरसाने लगे। विजयाभिलाषी पाण्डवों के विकट बाणों से व्यथित अलम्बुष उस समय साधारण मनुष्यों की तरह शिथिल और कर्तव्य निश्चित करने में असमर्थ हो गया। उसकी यह दशा देखकर उसे मार डालने के लिए युद्धनिपुण महाबली घटोत्कच बड़े वेग से अपने रथ से अलम्बुप के, जले हुए शैलशिखर अथवा अञ्जनराशि के तुल्य, रथ पर झपटा। गरुड़ जैसे साँप को पकड़ ले वैसे ही घटोत्कच ने अलम्बुष को पकड़कर ऊपर उठा लिया और कई बार ऊपर घुमाकर नीचे पटक दिया। पत्थर पर पटके गये घड़े की तरह अलम्बुप के अङ्ग चूर-चूर हो गये। बली, फुर्तीले, पराक्रमी, क्रुद्ध घटोत्कच ने रणभूमि में सब सैनिकों को डरवा दिया। इस तरह वीर घटोत्कच ने, शालकटंकट नाम से भी प्रसिद्ध, भयानक राक्षस अलम्बुप को पटककर मार डाला। उसका वध देखकर पाण्डवों की सेना में आनन्द-कोलाहल होने लगा। लोग सिंहनाद करके, कपड़े हिला-हिलाकर, हर्ष प्रकट करने लगे। कौरवदल के सैनिक और शूर योद्धा लोग राक्षसराज अलम्बुप को पर्वत के फ़टे हुए

शिखर की तरह रणस्थल में गिरते देखकर क्षोभ को प्राप्त हुए और हाहाकार करने लगे। युद्ध देखने के लिए आये हुए लोग कौतूहल के साथ उस युद्धभूमि में, आकाश से अपने आप गिरे हुए मङ्गल ग्रह की तरह, पड़े हुए राक्षस को देखने लगे।

महाराज! महाबली घटोत्कच इस तरह महातेजस्वी अलम्बुष को, पके हुए अलम्बुष-फल की तरह, पृथ्वी पर गिराकर बहुत प्रसन्न हुआ। यह दुष्कर कर्म करके, बल दैत्य को मारने पर इन्द्र की तरह शोभायमान, घटोत्कच ज़ोर से सिंहनाद करने लगा। उसके पिता, चाचा और उनके बान्धवगण उसकी बड़ाई करते हुए साधुवाद देने लगे। पाण्डवों की सेना में अनेक प्रकार के बाण आदि अस्त्र-शस्त्रों का और शङ्खों का महान् शब्द होने लगा। इस प्रकार ३७ घोरतर नाद से तीनों लोक प्रतिध्वनित-से हो उठे।

एक सौ दस अध्याय

युधिष्ठिर का सात्यकि को अर्जुन की ख़बर लाने के लिए भेजना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! युद्धनिपुण सात्यकि ने द्रोणाचार्य को युद्ध में किस तरह परास्त किया? यह वृत्तान्त कहो। मुझे बड़ा कौतूहल हो रहा है।

सञ्जय ने कहा—हे महाप्राज्ञ महाराज! सात्यकि आदि पाण्डवपक्ष के वीरों के साथ द्रोणाचार्य का जैसा घोर युद्ध हुआ, उसे सुनिए। महाबली द्रोणाचार्य सत्यविक्रमी सात्यकि को सेना का संहार करते देखकर स्वयं उनकी ओर बढ़े। महारथी आचार्य को, एकाएक अपने पास आते देखकर, सात्यकि ने पचीस क्षुद्रक बाण मारे। महावीर्यशाली द्रोण ने भी शीघ्रता के साथ सुवर्णपुङ्खयुक्त तीक्ष्ण पाँच बाणों से उन्हें घायल कर दिया। वे शत्रुओं के मांस को खानेवाले बाण सात्यकि के सुदृढ़ कवच को तोड़कर वैसे ही पृथ्वी में घुस गये जैसे फुफकार रहे साँप बाँबी में घुसें। तब महाबाहु सात्यकि ने अंकुशपीड़ित गजराज की तरह क्रुद्ध होकर अग्नितुल्य पचास नाराच बाण आचार्य को मारे। उन्होंने सात्यकि के प्रहार से घायल होकर बहुत से बाणों से उनको पीड़ित किया। द्रोणाचार्य को अपने ऊपर लगातार बाण बर-१० साते देखकर महावीर सात्यकि किङ्कर्तव्यविमूढ़ और उदास हो उठे। महाराज! तब आपके पुत्र और सैनिक लोग सात्यकि की यह दशा देखकर प्रसन्नता के साथ बारम्बार सिंहनाद करने लगे। वह भयानक सिंहनाद सुनकर और सात्यकि को अत्यन्त पीड़ित देखकर धर्मपुत्र युधिष्ठिर अपने सैनिकों और योद्धाओं से कहने लगे—हे वीर योद्धाओ! राहु जैसे सूर्य को ग्रसता है वैसे ही महारथी द्रोणाचार्य बाणवर्षा के द्वारा यादवश्रेष्ठ सात्यकि को अत्यन्त पीड़ित कर रहे हैं। अतएव तुम लोग शीघ्र वहाँ पर जाओ जहाँ द्रोणाचार्य के साथ सात्यकि संग्राम

महाबली घटोत्कच इस तरह महातेजस्वी अलम्बुष को........पृथ्वी पर गिरा कर बहुत प्रसन्न हुआ। —पृ० २४०४

कर रहे हैं; तुम उनकी सहायता करो। अपने सैनिकों और योद्धाओं को इस प्रकार आज्ञा देकर धर्मराज युधिष्ठिर पाञ्चालराज के पुत्र धृष्टद्युम्न से बोले—हे धृष्टद्युम्न! तुम इस समय भी निश्चिन्त क्या खड़े हो, शीघ्र द्रोणाचार्य के पास जाओ। आचार्य की ओर से हम लोगों पर विषम विपत्ति उपस्थित है। तुम्हें क्या उस घोर भय और विपत्ति का ख़याल नहीं है? धागे में बँधे हुए पक्षी से जैसे कोई बालक खेले वैसे ही महावीर द्रोणाचार्य सात्यकि के साथ खेल-सा कर रहे हैं। इसलिए तुम भीमसेन आदि वीरों को साथ लेकर शीघ्र सात्यकि के रथ के पास जाओ। मैं भी सेना लेकर तुम्हारे पीछे आता हूँ। हे पाञ्चालराजकुमार! इस समय तुम मृत्यु के मुँह में पड़े हुए सात्यकि को बचाओ।

अब सात्यकि की रक्षा और सहायता करने के लिए धर्मराज युधिष्ठिर, वीर योद्धाओं को साथ लेकर, आचार्य द्रोण के रथ की ओर शीघ्रता से चले। पाण्डव और सृञ्जयगण जब २० अकेले द्रोणाचार्य से युद्ध करने लगे तब रणभूमि में महाकोलाहल होने लगा। सब वीर एकत्र होकर आचार्य के ऊपर कङ्कपत्र और मयूरपङ्ख से शोभित अत्यन्त तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। लोग जैसे अतिथियों को जल, आसन आदि दे करके ग्रहण करते हैं वैसे ही द्रोणाचार्य भी हँसते हुए उन वीरों को ग्रहण करके असंख्य बाणों से उनका सत्कार करने लगे। द्रोणाचार्य के बाणों से वे धनुर्द्धर योद्धा वैसे ही तृप्त हो गये जैसे किसी अतिथि-सेवक मनुष्य के घर पर आये हुए अतिथि, सत्कार और भोजन आदि से, तृप्त होते हैं। दोपहर के सूर्य के समान तपते हुए द्रोणाचार्य को कोई अच्छी तरह देख भी न सकता था। सूर्य जैसे अपनी तीक्ष्ण किरणों से सब लोगों को तपाते हैं वैसे ही धनुर्द्धरश्रेष्ठ द्रोणाचार्य अपने असंख्य तीक्ष्ण बाणों के प्रहार से सब वीरों को पीड़ित करने लगे।

दलदल में फँसे हुए हाथी के समान निरुपाय होकर मारे जा रहे पाण्डवों और सृञ्जयों को उस समय अपनी रक्षा करनेवाला कोई नहीं देख पड़ता था। द्रोणाचार्य के बड़े-बड़े बाण चारों

और लोगों को तपाते हुए सूर्य की किरणों के समान फैलते दिखाई पड़ रहे थे। उस युद्ध में महारथी द्रोणाचार्य ने धृष्टद्युम्न के साथी पाञ्चाल देश के पचीस प्रधान-प्रधान वीरों को मार डाला। इस तरह पाण्डवों और पाञ्चालों की सेना के चुने हुए योद्धाओं को द्रोणाचार्य ढूँढ़-
३० ढूँढ़कर मारने लगे। केकयसेना के सौ वीरों को मारकर और अन्यान्य सब वीरों को भगाकर रणभूमि में, मुँह फैलाये हुए काल के समान, द्रोणाचार्य विचरने लगे। पाञ्चाल, सृञ्जय, मत्स्य और केकय देश के बहुत से वीर पुरुष द्रोणाचार्य के बाणों से छिन्न-भिन्न, पराजित और रणविमुख होकर—वन में दावानल से घिरे हुए वनवासी जीवों की तरह—चिल्लाने और आर्तनाद करने लगे। उस समय युद्ध देखने के लिए आये हुए देवता, गन्धर्व, पितर, सिद्ध, चारण आदि सब परस्पर कहने लगे कि वह देखो, पाञ्चाल और पाण्डव लोग अपनी-अपनी सेना के साथ भागे जा रहे हैं।

महाराज! महाप्रतापी द्रोणाचार्य जब शत्रुसंहार के लिए तैयार हुए तब न तो कोई उनके पास जा सकता था और न कोई उन्हें बाण आदि शस्त्रों से घायल करने का मौक़ा ही पाता था। द्रोणाचार्य के साथ पाण्डवों का ऐसा वीरविनाशन घोरतर युद्ध होने पर एकाएक धर्मराज युधिष्ठिर को कृष्णचन्द्र के पाञ्चजन्य का गंभीर शब्द सुन पड़ा। वह शङ्ख महात्मा वासुदेव के मुँह की हवा से परिपूर्ण होकर बड़े ज़ोर से बज रहा था। उस समय जयद्रथ के रक्षक महारथी वीर पुरुष वेग से बाण बरसाते हुए अर्जुन के रथ के समीप सिंहनाद कर रहे थे। इसी कारण उनके गाण्डीव धनुष का शब्द उस कोलाहल में छिप गया। तब श्रीकृष्ण के शङ्ख का शब्द सुनकर और गाण्डीव धनुष का शब्द न सुन पड़ने के साथ ही कौरवों का सिंहनाद सुन पड़ने से खिन्न होकर युधिष्ठिर सोचने लगे कि श्रीकृष्ण का शङ्खनाद और कौरवों का प्रसन्नतासूचक सिंहनाद सुन पड़ रहा है। इसमें सन्देह नहीं कि अवश्य अर्जुन के विषय में कोई अमङ्गल दुर्घटना हुई है। व्याकुलहृदय धर्मराज इसी सोच में पड़ गये; बारम्बार मोहाभिभूत होकर वे
४० कर्तव्य का निश्चय न कर सके। उन्होंने अश्रुगद्गद स्वर में कहा—हे सात्यकि! पहले सज्जन लोग संग्राम के समय सुहृदों के कर्तव्य के बारे में जो कुछ कह गये हैं, उसी कर्तव्य के करने का यह समय उपस्थित है। महात्मन्! बहुत खोजने पर भी सब योद्धाओं में तुम्हारे समान प्रिय सुहृद् और हितकारी मुझे कोई नहीं देख पड़ता। हे यादवश्रेष्ठ! जो व्यक्ति सदा प्रफुल्लचित्त और अनुगत हो उसी को, मेरे मत में, संग्राम के काम में नियुक्त करना चाहिए। तुम वासुदेव के समान महाबली हो और उन्हीं की तरह सदा हम लोगों को आश्रय देते हो। अतएव इस समय जो भार मैं तुमको सौंपता हूँ उसे वहन करो। मेरी इच्छा और अनुरोध को अस्वीकार न करना। महावीर अर्जुन तुम्हारे भाई, सखा और गुरु हैं। इस कारण विपत्ति के समय तुम उनकी सहायता करो। तुम सत्यव्रत, बलवीर्यशाली, मित्रों के लिए प्रियदर्शन और अपने

आचरण के प्रभाव से सर्वसाधारण में सत्यवादी प्रसिद्ध हो। हे शिनिवंशी! जो व्यक्ति अपने मित्र के लिए युद्ध में लड़कर प्राण देता है और जो व्यक्ति सत्पात्र ब्राह्मणों को सम्पूर्ण पृथ्वी दान करता है, वे दोनों समान फल के भागी होते हैं। मैंने सुना है कि असंख्य राजा लोग यज्ञ करके, सारी पृथ्वी ब्राह्मणों को दान करके, स्वर्गलोक को गये हैं। इस समय तुम मित्र की सहायता करके पृथ्वी-दान के सदृश अथवा उससे भी अधिक फल प्राप्त करो। मैं हाथ जोड़कर तुमसे यह प्रार्थना करता हूँ। हे यदुकुल-तिलक! केवल महारथी केशव और तुम, ये दोनों जने मित्रों को अभय-दान करके जीवन से निरपेक्ष होकर युद्ध करते हैं। और देखो, महाबली वीर पुरुष ही यश के लाभ की इच्छा से वीर पुरुषों की सहायता करते हैं, साधारण पुरुष कभी ऐसा नहीं कर सकते। अतएव ५०

इस विपत्ति के समय में तुम्हारे सिवा और कोई मुझे अर्जुन का रक्षक या सहायक नहीं देख पड़ता। हे वीर! अर्जुन बारम्बार तुम्हारी प्रशंसा और तुम्हारे अद्भुत कार्यों का बखान करके मेरे हर्ष को बढ़ाया करते हैं। एक बार उन्होंने द्वैतवन में, सज्जन-समाज में, तुम्हारे पीछे तुम्हारे यथार्थ गुणों का वर्णन करते-करते कहा था—महाराज! सात्यकि महाबली, चित्रयुद्ध में निपुण, समझदार, सब अस्त्रों के प्रयोग में कुशल और महावीर हैं। वे कभी न तो युद्ध में घबराते ही हैं और न मोहित ही होते हैं। वे विशाल-लोचन, चौड़ी छाती और बैल के से ऊँचे पुष्ट कन्धोंवाले, महारथी, मेरे शिष्य और सखा हैं। मैं उनका प्रियपात्र हूँ और वे मुझे बहुत ही प्यारे हैं। वे मेरे सहायक होकर कौरवों को नष्ट करेंगे। यदि महावीर श्रीकृष्ण, बलदेव, अनिरुद्ध, प्रद्युम्न, गद, सारण, साम्ब और अन्यान्य वृष्णिवंश के वीर यादव युद्ध में मेरी सहायता करें, तो भी मैं नरश्रेष्ठ सात्यकि को अवश्य अपना सहायक बनाऊँगा। उनके समान योद्धा कोई नहीं है। हे प्रिय सात्यकि! अर्जुन इस तरह तुम्हारे गुणों का बखान किया ६२ करते हैं। इसलिए तुम उन अर्जुन के, भीमसेन के और मेरे उक्त विचार को निष्फल न करना।

तीर्थ-यात्रा के प्रसङ्ग में द्वारका में पहुँचकर मैंने अर्जुन के ऊपर तुम्हारी दृढ़ भक्ति देखी है। ख़ासकर हम लोगों की इस विपत्ति के समय तुम जैसी मित्रता और अनुगत भाव दिखा रहे हो, वैसा भाव मुझे और किसी में नहीं देख पड़ता। तुम कुलीन हो, एकान्त अनुगत हो, सत्यवादी और महावीर्यशाली हो। इसलिए इस समय अपने प्रिय सखा, विशेषकर आचार्य, अर्जुन के प्रति कृपा दिखाने के लिए अपने योग्य कार्य करने में प्रवृत्ति दिखाओ। दुर्योधन आचार्य के बाँधे हुए कवच को धारण करके अर्जुन के पास गया है और कौरवपक्ष के अन्यान्य महारथी पहले से ही वहाँ जुटे हुए हैं। वह देखो, अर्जुन के रथ के सामने बहुत ही कोलाहल हो रहा है। अतएव उस जगह चटपट पहुँचना तुम्हारा कर्तव्य है। यदि महाबली द्रोणाचार्य तुम पर आक्र-
७० मण करेंगे, तो हम महावीर भीमसेन को और असंख्य सेना को साथ लेकर उन्हें रोकेंगे। हे सात्यकि! वह देखो, कौरवपक्ष के सब सैनिक, पर्वकाल में वायु के वेग से क्षोभ को प्राप्त महासागर की तरह, अर्जुन के बाणों से छिन्न-भिन्न होकर, युद्ध छोड़कर, महाकोलाहल करते हुए भागे जा रहे हैं। वह देखो; मनुष्य, घोड़े और रथ जो दौड़ रहे हैं, उससे इतनी धूल उड़ी है कि चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा छाया हुआ है, कुछ नहीं सूझ पड़ता। महापराक्रमी सिन्धु-सौवीरगण तोमर, प्रास आदि शस्त्र उठाये शत्रुनाशन अर्जुन को चारों ओर से घेर रहे हैं। उन्हें नष्ट किये बिना अर्जुन कभी जयद्रथ को नहीं मार सकेंगे। वे लोग जयद्रथ की रक्षा के लिए प्राणपण से युद्ध करेंगे। वह देखो, बाण, शक्ति, ध्वजा आदि से परिपूर्ण, हाथियों और घोड़ों से व्याप्त, अत्यन्त दुरधिगम्य कौरव-सेना समरभूमि में सामने डटी खड़ी है। दुन्दुभियों का शब्द, गम्भीर शङ्खध्वनि, सिंहनाद, रथों के पहियों की घरघराहट, हाथियों की चिग्घार, घोड़ों की हिनहिनाहट और भागते हुए पैदलों के पैरों की धमक सुनाई पड़ रही है। उनके चलने से पृथ्वीतल कम्पाय-मान हो रहा है। अगले भाग में सिन्धुदेश की सेना और पिछले भाग में द्रोणाचार्य मौजूद हैं। वे लोग संख्या में इतने अधिक हैं कि इन्द्र के भी छक्के छुड़ा सकते हैं। इसी असीम सेना के भीतर महातेजस्वी अर्जुन घुस गये हैं और इसी लिए उनके जीवननाश की आशङ्का है। अर्जुन अगर
८० समर में मारे गये तो फिर मैं किस तरह जीता रहूँगा? हे सात्यकि! तुम्हारे जीवित रहने पर भी क्या मुझे ऐसा कष्ट सहना पड़ेगा? प्रियदर्शन अर्जुन ने सूर्योदय के समय कौरवों की सेना में प्रवेश किया था। वह सेना समुद्र-सदृश है; उसके भीतर देवगण भी सहज में नहीं धँस सकते; किन्तु अर्जुन अकेले ही उसके भीतर गये हैं। उनके अमङ्गल की आशङ्का से मेरी बुद्धि किसी तरह युद्ध के विषय में प्रस्फुरित नहीं होती। वह देखो, महाबाहु द्रोणाचार्य युद्ध के लिए उत्सुक होकर तुम्हारे सामने ही मेरी सेना को पीड़ित कर रहे हैं। हे सात्यकि! हे शूरशिरोमणे! तुम जटिल कर्तव्य की उलझन को सुलझाने में निपुण हो। इसलिए इस समय जो अच्छा समझो, वही करो; किन्तु मेरी समझ में और सब काम छोड़कर अर्जुन की रक्षा और सहायता ही

करनी चाहिए। मुझे जगत्पति श्रीकृष्ण के लिए कुछ भी चिन्ता नहीं है। मैं तुमसे सच कहता हूँ कि इस कौरव-सेना की कौन कहे, अगर तीनों लोकों के योद्धा भी एकत्र होकर सामने आवें तो उनको भी वे परास्त कर सकते हैं! महापराक्रमी अर्जुन रणस्थल में असंख्य योद्धाओं के चलाये हुए बाणों से पीड़ित होकर कहीं जान न खो बैठें, इसी चिन्ता के मारे मैं मूढ़ सा हो रहा हूँ। ९० अतएव मेरे कहने से तुम अर्जुन के पीछे जाओ। मुझ-से पुरुष [के कहने से तुम-से पुरुष] का यही कर्तव्य है। हे वीर यादवश्रेष्ठ! वृष्णिवंश में तुम और प्रद्युम्न यही दो अतिरथी हैं। हे वीर! तुम अस्त्र-बल में श्रीकृष्ण के तुल्य, बाहुबल में संकर्षण के समान और पराक्रम तथा वीरता में महावीर अर्जुन के सदृश हो। सज्जन यह कहकर तुम्हारी प्रशंसा किया करते हैं कि सात्यकि के लिए समर में कोई काम असाध्य नहीं है, महावीर सात्यकि युद्धनिपुण और भीष्म-द्रोण से भी बढ़कर प्रतापी हैं। इसलिए तुम मेरे कहने के अनुसार कार्य करो। हे महाबली! अपने दल के सब लोगों की, मेरी और अर्जुन की धारणा को मिथ्या न करना। इस समय परम प्रिय प्राणों का मोह छोड़कर तुम वीरों की तरह समरभूमि में बेखटके विचरण करो। हे शिनि-नन्दन! यादवों की यही परिपाटी है कि वे रण में जाकर अपने जीवन का मोह नहीं करते। युद्धभूमि में प्रवेश करके युद्ध न करना, अस्थिर होना या संग्राम से भागना डरपोक असत् पुरुषों का काम है। यादवों को इन बातों का अभ्यास नहीं है। धर्मात्मा अर्जुन तुम्हारे गुरु हैं और कृष्णचन्द्र तुम्हारे और अर्जुन के भी गुरु हैं। इसी से सहायता के लिए अर्जुन के पास जाने को मैं तुमसे कहता हूँ। मैं तुम्हारे गुरु का गुरु हूँ; अतएव मेरी बात न मानना तुम्हारा कर्तव्य १०० नहीं है। हे सात्यकि! यह मेरा कथन श्रीकृष्ण और अर्जुन के मत के अनुकूल है। यह मैं तुमसे सत्य कहता हूँ। अब तुम अर्जुन के पास शीघ्र जाओ। हे सत्यपराक्रमी! मेरे वचनों को मानकर तुम दुर्मति दुर्योधन की इस सेना में प्रवेश करो। युद्ध में महारथी वीरों का सामना करते हुए तुम अपने योग्य कर्म करके सबको दिखलाओ। १०३

एक सौ ग्यारह अध्याय

सात्यकि का उत्तर और युधिष्ठिर का प्रत्युत्तर

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! धर्मराज युधिष्ठिर के प्रीतिप्रद, समय के लायक, न्यायानुकूल वाक्य सुनकर सात्यकि ने कहा—राजन्! आपने महावीर अर्जुन के लिए जो नीतिपूर्ण यशस्कर वाक्य कहे उन्हें मैंने सुना। ऐसे समय वीर अर्जुन को जैसे आप आज्ञा देते वैसे ही मुझे भी दे सकते हैं और आपकी दी हुई आज्ञा का पालन करना मेरा कर्तव्य है। मैं अर्जुन

की रक्षा के लिए प्राण भी देने को तैयार हूँ। खासकर जब आप आज्ञा करते हैं तब संग्रामभूमि में चाहे जो कार्य हो, उसे करना ही मेरा कर्तव्य है। मैं आपकी अनुमति पाकर देवता, असुर, मनुष्य आदि सहित इस समग्र त्रिभुवन से संग्राम कर सकता हूँ; इस हीन-बल दुर्योधन की सेना के साथ संग्राम करना तो कोई बड़ी बात नहीं। मैं अवश्य ही समरभूमि में इस सम्पूर्ण कौरव-सेना को परास्त करूँगा। महाराज! मैं बिना किसी रोक-टोक और विघ्न के, अर्जुन के पास जाऊँगा और दुरात्मा जयद्रथ के मारे जाने पर फिर आपसे आ मिलूँगा। किन्तु वासुदेव और अर्जुन जो कुछ मुझसे कह गये हैं वह आपसे निवेदन कर देना भी मेरे लिए अत्यन्त आवश्यक है। महावीर अर्जुन ने जाते समय सब सैनिकों के और महात्मा श्रीकृष्ण के

१० सामने बारम्बार मुझसे कहा था कि "हे सात्यकि! मैं जब तक जयद्रथ को मारकर नहीं लौट आता तब तक सावधान होकर धर्मराज युधिष्ठिर की रक्षा करना। मैं तुम्हें या प्रद्युम्न को धर्मराज की रक्षा का भार देकर ही निश्चिन्त होकर जयद्रथ को मारने के लिए जा सकता हूँ। तुम कौरवपक्ष के प्रधान योद्धा द्रोणाचार्य को अच्छी तरह जानते हो और उनकी प्रतिज्ञा भी सुन चुके हो। वे युधिष्ठिर को पकड़ने के लिए अत्यन्त यत्न कर रहे हैं और असल में अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण भी कर सकते हैं। इसलिए मैं इस समय धर्मात्मा युधिष्ठिर को तुम्हें सौंपकर जयद्रथ के मारने को जाता हूँ। उसे मारकर बहुत जल्द लौट आऊँगा। तुम यही यत्न करना कि महावीर द्रोणाचार्य धर्मराज को किसी तरह पकड़ न सकें। अगर द्रोणाचार्य उन्हें पकड़ ले गये तो मैं जयद्रथ के मारने में अकृतकार्य और अत्यन्त अप्रसन्न होऊँगा। सत्यव्रत युधिष्ठिर अगर युद्ध में पकड़ लिये गये तो अवश्य ही हम लोगों को फिर वन में जाकर रहना पड़ेगा और फिर हमारी जीत भी निष्फल हो जायगी। अतएव हे सात्यकि! आज तुम मेरा प्रिय करने के लिए,
२० विजय और यश पाने के लिए, युधिष्ठिर की रक्षा करो।"

हे धर्मराज! द्रोणाचार्य की आशङ्का से महावीर अर्जुन आपको मेरे हाथ में सौंप गये हैं। इस समय यहाँ मुझे महावीर प्रद्युम्न के सिवा और कोई योद्धा ऐसा नहीं देख पड़ता, जो द्रोणाचार्य का सामना कर सके। कोई-कोई मुझे भी द्रोणाचार्य का सामना करने में समर्थ कहते हैं। सो मैं अपने ऊपर होनेवाले इस विश्वास अथवा आत्मोत्कर्ष और अपने गुरु अर्जुन की आज्ञा को कैसे व्यर्थ कर सकता हूँ! मैं ऐसी अवस्था में आपको छोड़कर कैसे जाऊँ? दुर्भेद्य कवच धारण किये हुए आचार्य का हस्तकौशल (फुर्ती) प्रसिद्ध है। वे युद्धभूमि में आपको पाकर, अपने वश में करके, वैसे ही खेल सा खेलेंगे जैसे कोई बालक किसी चिड़िया को लेकर क्रीड़ा करे। वासुदेव के पुत्र प्रद्युम्न अगर इस जगह होते तो मैं उनके हाथ में आपको सौंप जाता। वे महावीर अर्जुन की ही तरह आपकी रक्षा करते। [मैं अर्जुन के पास चला जाऊँगा तो ऐसा योद्धा कोई नहीं है जो आचार्य के सामने ठहरकर युद्ध करे और आपको बचावे।] इसलिए आप और सब ख़याल छोड़कर अपनी रक्षा कीजिए। मैं चला जाऊँगा तो आपकी रक्षा कौन करेगा? राजन्! महावीर अर्जुन किसी कार्य का भार उठाकर कभी हिम्मत नहीं हारते, इसलिए आप उनके बारे में किसी तरह का भय न कीजिए। ये सौवीर, सिन्धु, पुरु और उत्तर, दक्षिण आदि देशों के सब योद्धा और कर्ण आदि महारथी वीर कुपित अर्जुन के सोलहवें अंश के भी समान नहीं हैं। देवता, दैत्य, मनुष्य, राक्षस, किन्नर, महानाग आदि चराचर प्राणी युद्धभूमि में अर्जुन का सामना नहीं कर सकते। इस कारण आप उनके लिए कोई शङ्का न करें। जहाँ महाबली अर्जुन और वासुदेव एक साथ हैं, वहाँ कार्य में किसी तरह के विघ्न की सम्भावना नहीं है। महाराज! आप अपने भाई के दैवबल, अस्त्रशिक्षा, धनुर्विद्या के अभ्यास, अमर्ष, शूरता, कृतज्ञता, दया आदि गुणों पर विचार कीजिए। साथ ही यह भी ख़याल कीजिए कि आपका सहायक मैं अर्जुन के पास चला जाऊँगा तो द्रोणाचार्य न जाने क्या-क्या करेंगे। महावीर द्रोणाचार्य, अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए, आपको पकड़ने की बहुत चेष्टा कर रहे हैं। इसलिए इस समय आत्मरक्षा करना ही आपका कर्त्तव्य है। राजन्! इस समय अगर मैं चला जाऊँ तो ऐसा कौन है जिसे आपका रक्षक बनाकर आपको उसके हाथ में सौंपूँ? मैं सच कहता हूँ, आपको किसी को सौंपे बिना मैं अर्जुन के पास न जाऊँगा। अतएव सब बातों पर विचार करके आप जो श्रेयस्कर जान पड़े वह अनुमति कीजिए। ३१

अब युधिष्ठिर ने कहा—हे यादवश्रेष्ठ! तुमने जो कहा, उसमें मुझे कुछ भी सन्देह नहीं; किन्तु अर्जुन के अनिष्ट की आशङ्का लगातार मुझे उद्विग्न कर रही है। अतएव मैं स्वयं अपनी रक्षा का यत्न करूँगा। तुम मेरी अनुमति के अनुसार अर्जुन के पास जाओ। मैं अपनी रक्षा, और अर्जुन की रक्षा के लिए तुमको भेजना, इन दोनों बातों पर विचार करके यही ठीक समझता हूँ कि अर्जुन की रक्षा के लिए तुमको भेज दूँ। अतएव तुम तुरन्त अर्जुन के पास जाने ४०

का यत्न करो। महापराक्रमी भीमसेन, धृष्टद्युम्न, उनके भाई, द्रौपदी के पुत्र, केकय देश के राजकुमार पाँचों भाई, राक्षस घटोत्कच, राजा विराट, द्रुपद, महाबली शिखण्डी, पराक्रमी धृष्टकेतु, कुन्तिभोज, नकुल, सहदेव और पाञ्चाल-सृञ्जयगण तथा अन्यान्य राजा लोग सावधान होकर मेरी रक्षा करेंगे। इससे द्रोणाचार्य और कृतवर्मा दोनों न तो मुझे पकड़ सकेंगे और न मुझपर आक्रमण ही कर सकेंगे। जैसे तटभूमि महासमुद्र के वेग को रोके रहती है वैसे ही वीर्यशाली धृष्टद्युम्न भी बल प्रकट करके द्रोणाचार्य को रोकेंगे। जहाँ धृष्टद्युम्न रहेंगे वहाँ महाबली द्रोणाचार्य अपनी सेना साथ लेकर कभी आक्रमण न कर सकेंगे। द्रोणाचार्य को मारने के लिए ही महावीर धृष्टद्युम्न अग्नि से प्रकट हुए हैं। इस समय तुम विश्वासपूर्वक कवच पहनो, धनुष-बाण-खड्ग आदि शस्त्र लो और अर्जुन के पास जाओ। मेरे लिए तुम तनिक भी
५१ चिन्ता न करो। महावीर धृष्टद्युम्न ही कुपित द्रोणाचार्य को रोक सकेंगे।

हिन्दी महाभारत

आवश्यक सूचनायें

(१) हमने प्रथम खण्ड की समाप्ति पर उसके साथ एक महाभारत-कालीन भारतवर्ष का प्रामाणिक सुन्दर मानचित्र भी देने की सूचना दी थी। इस सम्बन्ध में हम ग्राहकों को सूचित करते हैं कि पूरा महाभारत समाप्त हो जाने पर हम प्रत्येक ग्राहक को एक परिशिष्ट अध्याय बिना मूल्य भेजेंगे जिसमें महाभारत-सम्बन्धी महत्त्व-पूर्ण खोज, साहित्यिक आलोचना, चरित्र-चित्रण तथा विश्लेषण आदि रहेगा। इसी परिशिष्ट के साथ ही मानचित्र भी लगा रहेगा जिसमें पाठकों को मानचित्र देख कर उपरोक्त बातें पढ़ने और समझने आदि में पूरी सुविधा रहे।

(२) महाभारत के प्रेमी ग्राहकों को यह शुभ समाचार सुन कर बड़ी प्रसन्नता होगी कि हमने कानपुर, उन्नाव, काशी (रामनगर), कलकत्ता, ग़ाज़ीपुर, बरेली, मथुरा (वृन्दावन), जोधपुर, बुलन्दशहर, प्रयाग और लाहौर आदि में ग्राहकों के घर पर ही महाभारत के अङ्क पहुँचाने का प्रबन्ध किया है। अब तक ग्राहकों के पास यहीं से सीधे डाक-द्वारा प्रतिमास अङ्क भेजे जाते थे जिसमें प्रति अङ्क तीन चार आना ख़र्च होता था पर अब हमारा नियुक्त किया हुआ एजेंट ग्राहकों के पास घर पर जाकर अङ्क पहुँचाया करेगा और अङ्क का मूल्य भी ग्राहकों से वसूल कर ठीक समय पर हमारे यहाँ भेजता रहेगा। इस व्यवस्था पर ग्राहकों को ठीक समय पर प्रत्येक अङ्क सुरक्षित रूप में मिल जाया करेगा और वे डाक, रजिस्टरी तथा मनीआर्डर इत्यादि के व्यय से बच जायँगे। इस प्रकार उन्हें प्रत्येक अङ्क केवल एक रुपया मासिक देने पर ही घर बैठे मिल जाया करेगा। यथेष्ट ग्राहक मिलने पर अन्य नगरों में भी शीघ्र ही इसी प्रकार का प्रबन्ध किया जायगा। आशा है जिन स्थानों में इस प्रकार का प्रबन्ध नहीं है, वहाँ के महाभारतप्रेमी सज्जन शीघ्र ही अधिक संख्या में ग्राहक बन कर इस अवसर से लाभ उठावेंगे। और जहाँ इस प्रकार की व्यवस्था हो चुकी है वहाँ के ग्राहकों के पास जब एजेंट अङ्क लेकर पहुँचे तो ग्राहकों को रुपया देकर अङ्क ठीक समय पर ले लेना चाहिए जिससे उन्हें ग्राहकों के पास बार बार आने जाने का कष्ट न उठाना पड़े। यदि किसी कारण उस समय ग्राहक मूल्य देने में असमर्थ हों तो अपनी सुविधा-नुसार एजेंट के पास से जाकर अङ्क ले आने की कृपा किया करें।

(३) हम हिन्दी-भाषा-भाषी सज्जनों से एक सहायता की प्रार्थना करते हैं। वह यही कि हम जिस विराट् आयोजन में संलग्न हुए हैं आप लोग भी कृपया इस पुण्य-पर्व में सम्मिलित होकर पुण्य-सञ्चय कीजिए, अपनी राष्ट्र-भाषा हिन्दी का साहित्य-भाण्डार पूर्ण करने में सहायक हूजिए और इस प्रकार सर्वसाधारण का हित-साधन करने का उद्योग कीजिए। सिर्फ़ इतना ही करें कि अपने दस-पांच हिन्दी-प्रेमी इष्ट-मित्रों में से कम से कम दो स्थायी ग्राहक इस वेद तुल्य सर्वाङ्गसुन्दर महाभारत के और बना देने की कृपा करें। जिन पुस्तकालयों में हिन्दी की पहुँच हो वहाँ इसे ज़रूर मँगवावें। एक भी समर्थ व्यक्ति ऐसा न रह जाय जिसके घर यह पवित्र ग्रन्थ न पहुँचे। आप सब लोगों के इस प्रकार साहाय्य करने से ही यह कार्य्य अग्रसर होकर समाज का हितसाधन करने में समर्थ होगा।

—प्रकाशक

विषय-सूची

रङ्गीन चित्रों की सूची

एक सौ बारह अध्याय

सात्यकि का जाना

सञ्जय कहते हैं—हे नरनाथ! रण में दुर्द्धर्ष, शिनिवंशी सात्यकि धर्मराज युधिष्ठिर के वचन सुनकर मन में आशङ्का करने लगे कि इनको छोड़कर जाने से मैं अर्जुन की दृष्टि में अपराधी होऊँगा और लोग भी मुझे अर्जुन के पास जाते देखकर समझेंगे कि मैं आचार्य से डरकर भाग गया। महाबली सात्यकि बारम्बार इस तरह सोचकर धर्मराज से कहने लगे—हे नरनायक! अगर आप आत्मरक्षा के बारे में निश्चिन्त हो चुके हैं तो मैं आपकी आज्ञा से महाबाहु अर्जुन के पास जाता हूँ; आपका कल्याण हो। मैं सच कहता हूँ कि मुझे त्रिभुवन भर में महाबाहु अर्जुन से अधिक प्रिय कोई नहीं है। आपके हित के लिए मैं कुछ कसर नहीं रख सकता। अपने गुरुजन की आज्ञा की तरह आपकी आज्ञा का पालन करना मेरे लिए सर्वथा कर्तव्य है। आपके अन्य भाई, अर्जुन और श्रीकृष्ण, जिस तरह आपका प्रिय कार्य पूरा करने में तत्पर हैं उसी तरह मैं भी अर्जुन और श्रीकृष्ण का प्रिय करने में सावधान हूँ। इसलिए हे प्रभो! मैं आपकी आज्ञा मान करके महावीर अर्जुन के लिए, क्रुद्ध मत्स्य जैसे समुद्र में घुसकर उसको मथ डालता है वैसे ही, दुर्भेद्य द्रोणाचार्य की सेना को छिन्न-भिन्न करता हुआ उस स्थान को जाऊँगा जहाँ जयद्रथ अर्जुन के डर से विह्वल होकर अश्वत्थामा, कर्ण, कृपाचार्य आदि महारथियों के साथ असंख्य सेना के द्वारा सुरक्षित है। जयद्रथ-वध के लिए महावीर अर्जुन जिस जगह पर हैं वह स्थान शायद यहाँ से तीन योजन के फ़ासले पर है। किन्तु मैं दावे के साथ कहता हूँ कि अर्जुन के तीन योजन दूर रहने पर भी उनके पास अवश्य जाऊँगा और उनके साथ जयद्रथ के मारे जाने के समय तक रहूँगा। राजन्! गुरुजन की आज्ञा बिना मिले कौन वीर पुरुष संग्राम में जायगा? और बड़ों की आज्ञा मिलने पर मुझ सरीखा कौन व्यक्ति संग्राम से विमुख होगा? महाराज! मुझको जिस जगह पर जाना होगा उसे मैं अच्छी तरह जानता हूँ। आज मैं असंख्य हल, शक्ति, गदा, प्रास, चर्म, खड्ग, ऋष्टि, तोमर आदि अस्त्र-शस्त्रों से परिपूर्ण इस अथाह सैन्य-सागर को मथ डालूँगा। ये जो रणप्रिय बहुत से म्लेच्छ वीरों से सुशोभित और जल बरसानेवाले मेघ के सदृश बड़े डील-डौल के हाथी महावतों के द्वारा सञ्चालित होकर आगे बढ़ रहे हैं, वे अब पीछे नहीं लौट सकेंगे। इनका संहार किये बिना मुझे जय नहीं मिल सकती। और, ये जो सुवर्ण-शोभित रथों पर विराजमान महावीर राजपुत्र दिखाई पड़ रहे हैं, ये सभी धनुर्वेदविशारद और रथ तथा हाथी की सवारी के युद्ध, अस्त्रयुद्ध, मुष्टियुद्ध, गदायुद्ध, मल्लयुद्ध तथा ढाल-तलवार के युद्ध में निपुण, शूर, कृतविद्य, परस्पर स्पर्धा रखकर समर में शत्रुओं को जीतनेवाले हैं। इन्हें रुक्मरथ कहते हैं। इन महा-

रथियों को कर्ण ने यहाँ पर व्यूहरक्षा के लिए नियुक्त कर रक्खा है। ये सब दुःशासन के अनुगत हैं। इनके पराक्रम की प्रशंसा श्रीकृष्ण भी करते हैं। ये कर्ण के वशवर्ती और उसका प्रिय करने में तत्पर हैं और कर्ण के ही कहने से अर्जुन से नहीं लड़े हैं। दृढ़ कवच और धनुष धारण किये हुए ये वीर, दुर्योधन की आज्ञा से, मुझे रोकने को खड़े हैं। ये कभी नहीं थकते। हे कुरुकुल-तिलक! मैं इस समय आपका हित करने के लिए इन वीरों को समर में मारकर अर्जुन के पास जाऊँगा। आप जो ये दिव्यभूषण-भूषित, कवचों से रक्षित, सात सौ हाथी देख रहे हैं, इन पर वीर दुर्द्धर्ष किरातगण बैठे हैं। पहले किरातों के राजा ने, अपने जीवन की रक्षा के लिए, महावीर अर्जुन को ये हाथी भेंट किये थे। ये सब पहले आपके ही कार्य में निरत रहते थे; किन्तु काल की गति कैसी विचित्र और अद्भुत है! इस समय ये आपके ही विरुद्ध युद्ध करने को तैयार हैं। इनके महावत और म्लेच्छ किरात योद्धा गजशिक्षा
३० में निपुण हैं। ये अग्नियोनि किरात पहले वीर अर्जुन से हारकर उनके अधीन हुए थे; किन्तु आज दुर्योधन के वशीभूत होकर आपके विरुद्ध मुझसे युद्ध करने को सामने खड़े हैं। मैं इस समय समर में दुर्द्धर्ष इन किरातों को अपने बाणों से मारकर अर्जुन के पास जाऊँगा।

महाराज! ये जो सुनहरे कवचों से सुरक्षित, वरुण के वाहन अञ्जन नामक दिग्गज के वंश में उत्पन्न, सुशिक्षित, कठिन शरीरवाले, ऐरावत-तुल्य मस्त गजराज दिखाई पड़ रहे हैं, इन पर उत्तरगिरि से आये हुए, बड़े कर्कश स्वभाव के, शूर दस्यु बैठे हैं। ये दस्यु गोयोनि, वानर-योनि, मनुष्ययोनि आदि अनेक योनियों से उत्पन्न हैं। इन हिमदुर्गनिवासी, पापाचारी म्लेच्छों के एकत्र होने से सेना का वह भाग धुएँ के रङ्ग का जान पड़ता है। महाराज! काल के द्वारा प्रेरित दुर्योधन इन राजाओं और योद्धाओं को तथा कृपाचार्य, भूरिश्रवा, महारथी द्रोण, सिन्धुराज जयद्रथ और कर्ण आदि को सहायक पाकर अपने को कृतार्थ समझता है और वीर
४० पाण्डवों को तुच्छ मानता है। किन्तु यदि ये वीर हवा के समान वेग से भागें तो भी इस समय मेरे नाराच बाणों के आगे से भागकर नहीं जा सकेंगे। पराये बल पर फूला न समानेवाला दुर्योधन सदा इन वीरों का सम्मान करता है; परन्तु आज ये सब अवश्य मेरे हाथ से मारे जायँगे। और, ये जो सुवर्णमण्डित ध्वजाओं से शोभित महारथी देख पड़ रहे हैं, ये काम्बोज देश के शूर योद्धा हैं। ये सभी कृतविद्य, धनुर्वेद की शिक्षा पाये हुए और रण-निपुण हैं। आपने इनके बल-विक्रम का वर्णन सुना ही होगा। ये एक दूसरे की सहायता और हित करने के लिए यहाँ आये हैं। ये सब योद्धा और कौरवों के द्वारा सुरक्षित दुर्योधन की कई अक्षौहिणी सेना कुपित होकर सावधानी के साथ मुझे रोकने के लिए खड़ी है। किन्तु आग जैसे फूस के ढेर को जला देती है वैसे ही मैं इन सबको मारूँगा। अतएव अब आप रथ सजानेवालों को शीघ्र आज्ञा दीजिए कि वे बाण-पूर्ण तरकस और अन्यान्य सब सामान मेरे रथ पर यथास्थान

रख दें। इस समर में बड़े-बड़े योद्धाओं का सामना करना पड़ेगा, इसलिए अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र ले जाना आवश्यक है। आचार्यों के उपदेश के अनुसार रथ पर पँचगुनी सामग्री रखनी चाहिए। विषैले साँप के समान वीर काम्बोज देश के योद्धा, अनेक अस्त्र-शस्त्र धारण किये अत्यन्त उग्र विष-तुल्य किरातगण, सदा दुर्योधन के द्वारा प्रतिपालित-सम्मानित और उनके हितचिन्तक पराक्रमी शक लोग तथा प्रज्वलित अग्नि के समान दुर्द्धर्ष दुर्जय कालतुल्य युद्धदुर्मद ५० अन्यान्य अनेक देशों के असंख्य योद्धा मुझसे लड़ने को खड़े हैं। इस समय युद्धभूमि में मुझे उन सबसे भिड़ना होगा। रथ सजानेवाले नौकरों को आज्ञा दीजिए कि वे सम्पूर्ण सुलक्षणों से युक्त अच्छी नस्ल के प्रसिद्ध घोड़ों को पानी पिलाकर टहलाकर फिर मेरे रथ में जोतें।

सञ्जय कहते हैं—महाराज! सात्यकि के यों कह चुकने पर युधिष्ठिर ने रथ सजाने-वाले नौकरों को आज्ञा दी कि वे चटपट तरकस, विविध शस्त्र-अस्त्र और अन्य सब सामग्री यथास्थान रखकर उनका रथ तैयार कर दें। तब उन लोगों ने सात्यकि के रथ में जुते हुए चारों घोड़ों को खोलकर मस्त करनेवाली मदिरा पिलाई, नहलाया, टहलाया, मला और उनके अङ्गों में लगे हुए शल्य निकाले। इसी समय सात्यकि के प्रिय सखा सारथी दारुक के छोटे भाई ने उन प्रसन्नचित्त, सुनहरे रङ्ग के, सुवर्ण की मालाओं से अलङ्कृत, बढ़िया घोड़ों को सात्यकि के रथ में जोता। वह रथ मणि-मोती-मूँगा आदि रत्नों और सफ़ेद पताकाओं से शोभित, ऊँचे छत्र के दण्ड से युक्त, सिंहचिह्नयुक्त ध्वजा और अन्यान्य बहुमूल्य सुवर्ण की सामग्री से अलङ्कृत था। उस रथ को सामने लाकर, इन्द्र से मातलि सारथी की तरह, उस सारथी ने सात्यकि से कहा—हे नरश्रेष्ठ! रथ तैयार है। तब श्रीमान् सात्यकि नहा-धोकर पवित्र हुए। उन्होंने उस समय ६० हज़ार स्नातक ब्राह्मणों को सोने की मुद्राएँ दान कीं। ब्राह्मण लोग उन्हें

आशीर्वाद देने लगे। अब किरात देश की तीव्र मदिरा पीने से श्रेष्ठ महारथी सात्यकि के नेत्र लाल हो गये। फिर उन्होंने प्रसन्नचित्त होकर, दर्पण देखकर, धनुष-बाण धारण किया। उनका

तेज दूना हो उठा; वे प्रज्वलित प्रचण्ड अग्नि के समान जान पड़ने लगे। ब्राह्मण लोग स्वस्त्ययन-पाठ करने लगे। तब कवच और आभूषणों से अलङ्कृत सात्यकि का कन्याओं ने अक्षत, चन्दन, माला आदि से अभिनन्दन किया। सात्यकि ने हाथ जोड़कर राजा युधिष्ठिर के पैर छुए। धर्मराज ने स्नेहपूर्वक उनका मस्तक सूँघा। अब सात्यकि अपने श्रेष्ठ रथ पर सवार हुए। हृष्ट-पुष्ट, तेज़, सिन्धु देश के बढ़िया घोड़े उन्हें लेकर चले। धर्मराज को प्रणाम करके और उनसे आशीर्वाद पाकर महाबली भीमसेन भी सात्यकि के साथ चले। राजन्! उस समय द्रोणाचार्य आदि कौरवपक्ष के वीर योद्धा लोग उन दोनों वीरों को सेना के भीतर घुसते देखकर, सावधान होकर, अपने-अपने स्थान पर डट गये।

उधर कवचधारी वीर भीमसेन को अपने साथ आते देखकर, प्रणाम करके, महावीर सात्यकि ने प्रसन्नतापूर्वक कहा—हे वीरवर! मेरी समझ में इस समय आपको महाराज युधिष्ठिर की ही रक्षा करनी चाहिए। मैं अकेला ही इस कौरव-सेना को छिन्न-भिन्न करके इसके भीतर जाऊँगा। आप तो मेरे पराक्रम को अच्छी तरह जानते हैं। इसलिए अगर आप मेरा प्रिय और हित करना चाहते हैं तो धर्मराज के पास जाकर उनकी रक्षा कीजिए। वर्तमान और भविष्य को देखते हुए राजा की रक्षा करना ही आपका कर्तव्य है। ७०

यह सुनकर महावीर भीमसेन ने कहा—हे पुरुषश्रेष्ठ! तुमने जो कहा वही मैं करूँगा। अब तुम झटपट अर्जुन के पास जाओ। तुम्हारा कार्य सिद्ध हो। तब सात्यकि ने कहा—हे भीमसेन! आप धर्मराज की रक्षा के लिए तुरन्त जाइए। आप मेरे स्नेही, अनुरक्त और वशवर्ती हैं; इधर सब तरह के सुलक्षण और सगुन देख पड़ते हैं। इससे जान पड़ता है कि मुझे युद्ध में जय प्राप्त होगी। हे भीमसेन! महात्मा अर्जुन के हाथ से पापी जयद्रथ की मृत्यु हो जाने पर मैं लौटकर फिर महाराज युधिष्ठिर के गले लगूँगा।

महावीर सात्यकि अब भीमसेन को बिदा करके, बाघ जैसे मृगों के झुण्ड की ओर ताकता है वैसे ही, कौरव-सेना की ओर देखने लगे। उनको प्रवेश करते देखकर कौरवों की सेना काँप उठी। सबके होश-हवास जाते रहे। सात्यकि भी धर्मराज की आज्ञा से अर्जुन की ख़बर लाने के लिए कौरव-सेना के भीतर घुस गये। ८०

एक सौ तेरह अध्याय

सात्यकि के साथ कृतवर्मा का युद्ध

सञ्जय कहते हैं—हे नरनाथ! महारथी सात्यकि इस तरह हमारी सेना के सामने लड़ने को आये। उनके पीछे राजा युधिष्ठिर भी बहुत सी सेना साथ लेकर द्रोणाचार्य के रथ

के सामने चले। उस समय युद्धप्रिय दुर्द्धर्ष पाञ्चालराज द्रुपद के पुत्र और राजा वसुदान पाण्डव-सेना के बीच चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे—जल्द आओ, आगे बढ़ो, मारो-काटो, जिसमें प्रतापी सात्यकि सहज ही शत्रु-सेना के भीतर जा सकें। देखो, अनेक महारथी योद्धा उन्हें जीतने का यत्न करेंगे। यों कहते हुए पाण्डवपक्ष के महारथियों ने कौरव-सेना पर हमला किया। उधर से विजय की इच्छा रखनेवाले कौरवदल के योद्धा भी प्रत्याक्रमण करने लगे। सात्यकि के रथ के पास बड़ा कोलाहल होने लगा। दुर्योधन के सैनिक चारों ओर से सात्यकि पर टूट पड़े। महावीर सात्यकि ने पल भर में ही उन सबको बाण मारकर छिन्न-भिन्न कर दिया। उन्होंने सामने स्थित सात प्रसिद्ध धनुर्द्धर योद्धाओं को और अन्य अनेक राजाओं को मार गिराया। वे कभी एक बाण से सौ आदमियों को और कभी सौ बाणों से एक ही व्यक्ति को मारते थे। महारुद्र जैसे प्रलयकाल में प्राणियों का संहार करते हैं वैसे ही वे हाथियों, हाथियों के सवारों, घोड़ों और उनके सवारों, रथों और उनके सवारों को फुर्ती के साथ मारकर नष्ट करने लगे। उस समय कौरवपक्ष का कोई वीर उन बाण-वर्षा करनेवाले सात्यकि के सामने ठहरना कैसा, जा ही नहीं सकता था। सात्यकि के बाणों से विमर्दित, विमोहित और विह्वल होकर वे चारों ओर भागने लगे। उन्हें चारों ओर सात्यकि ही नज़र आते थे। टूटे-फूटे रथ, रथों के पहिये, छत्र, ध्वजा, अनुकर्ष, पताका, सुवर्णमय शिरस्त्राण, हाथी की सूँड़ के समान अङ्गदयुक्त चन्दन-चर्चित कटे हुए हाथ और साँप के आकार की जाँघें, कुण्डलमण्डित चन्द्र-सदृश सिर आदि अङ्ग समरभूमि में पड़े थे। पहाड़ ऐसे बड़े-बड़े हाथी पृथ्वी पर गिरने लगे, जिनसे वह समरभूमि पर्वतों से परिपूर्ण सी जान पड़ने लगी। मोतियों की माला, सोने के जोत और विचित्र आकार के कवच-जाल आदि से भूपित घोड़े सात्यकि के बाणों से मथित होकर, पृथ्वी पर गिर-गिरकर, एक अपूर्व शोभा को प्राप्त हुए। १०

महाराज! महावीर सात्यकि इस तरह आपकी सेना को मारते, गिराते और भगाते हुए उसके भीतर घुसे और जिस राह से अर्जुन गये थे उसी राह से जाने को उद्यत हुए। द्रोणाचार्य उनको रोकने लगे। यह देखकर महावीर सात्यकि लौटे नहीं; बल्कि यत्नपूर्वक द्रोणाचार्य के साथ अत्यन्त घोर संग्राम करने लगे और उमड़ा हुआ सागर जैसे तटभूमि को तोड़ने की चेष्टा करे वैसे द्रोण को हटाने का यत्न करने लगे। महावीर द्रोणाचार्य ने सात्यकि को मर्मभेदी अत्यन्त तीक्ष्ण पाँच बाण मारे। सात्यकि ने भी कङ्कपत्र-शोभित, शिला पर घिसकर तीक्ष्ण किये गये, सुवर्णपुङ्खयुक्त सात बाण आचार्य को मारे। आचार्य ने छः बाण मारकर उन्हें और उनके सारथी को पीड़ित किया। सात्यकि भी आचार्य के पराक्रम को न सह सकने के कारण क्रुद्ध होकर क्रमशः दस, छः और आठ बाणों से उन्हें घायल करके सिंहनाद करने लगे। फिर और दस बाण मारकर उनके घोड़ों को चार बाण मारे, ध्वजा में एक बाण और सारथी को एक २०

बाण मारा। तब महावीर द्रोणाचार्य ने एकदम टीड़ीदल के समान असंख्य बाणों से सात्यकि के रथ, घोड़े, ध्वजा और सारथी को ढक दिया। अब सात्यकि ने भी आचार्य को बहुत से बाण मारे। द्रोणाचार्य ने हँसकर सात्यकि से कहा—हे शिनिनन्दन! तुम्हारे गुरु अर्जुन आज ३० मुझसे युद्ध करते-करते कायर की तरह युद्ध छोड़कर चले गये हैं, वैसे ही अगर तुम भी मुझसे लड़ते-लड़ते भाग न गये तो मेरे आगे से जीते बचकर न जा सकोगे। सात्यकि ने कहा—ब्रह्मन्! आपका कल्याण हो। मैं धर्मराज की आज्ञा से अर्जुन के पास, उन्हीं की राह से, जाना चाहता हूँ। मैं अधिक विलम्ब नहीं कर सकता। गुरु जिस मार्ग पर चलते हैं उसी मार्ग पर शिष्य भी चला करते हैं। इसलिए मैं उसी राह से जाता हूँ, जिससे मेरे गुरु गये हैं। सञ्जय कहते हैं—राजन्! सात्यकि इतना कहकर द्रोणाचार्य को छोड़ उनके दक्षिण ओर से अकस्मात् अपना रथ निकाल ले गये। उन्होंने जाते समय सारथी से कहा—हे सारथी! आचार्य मुझे रोकने के लिए कुछ उठा न रक्खेंगे, इसलिए तुम सावधानी से निकल चलो। और यह जो अवन्ति-देश की प्रभावशालिनी अगम्य सेना देख पड़ रही है, इसके बाद दाक्षिणात्य शूरों की अपार सेना है; उसके पास ही बाह्लीक देश के योद्धाओं का भारी जमघट है। इन सेनाओं के समीप ही कर्ण की सेना देख पड़ती है। ये सब

सेनाएँ भिन्न-भिन्न होने पर भी एक दूसरे की रक्षा कर रही हैं। ये जो प्रहार करने के लिए उद्यत बाह्लीकगण, दाक्षिणात्यगण, सूत-पुत्र कर्ण और अनेक देशों की पैदल और चतुरङ्गिणी सेना ४२ का दल देख पड़ता है इसके भीतर होकर तुम मेरा रथ ले चलो, आचार्य को छोड़ दो।

महावीर सात्यकि ने जब यह आज्ञा दी तब सारथी ने उसी दम वेग से रथ हाँक दिया। द्रोणाचार्य क्रोधविह्वल होकर बेधड़क जानेवाले सात्यकि के ऊपर असंख्य बाण बरसाते हुए उनके पीछे चले। अपने तीक्ष्ण बाणों से कर्ण की सेना को नष्ट-भ्रष्ट करके महावीर सात्यकि कौरव-सेना के भीतर जा घुसे। सात्यकि जब सेना के भीतर घुस गये और सेना तितर-बितर हो गई

तब असहनशील वीर कृतवर्मा उन्हें रोकने का यत्न करने लगे। महावीर सात्यकि ने कृतवर्मा को आते देखकर छः बाण मारे। चार बाणों से उनके चारों घोड़ों को भी मार गिराया, साथ ही अत्यन्त तीक्ष्ण सोलह बाण उनकी छाती में मारे। इस तरह सात्यकि के तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित होने पर भी कृतवर्मा विह्वल नहीं हुए। उन्होंने उसी समय वायु के समान वेग से जानेवाला साँप-सदृश वत्सदन्त बाण कान तक तानकर सात्यकि की छाती में मारा। वह बाण सात्यकि के कवच और शरीर को भेदकर रक्त में भीगकर पृथ्वी में घुस गया। अस्त्रविद्या में निपुण कृतवर्मा ने अनेक बाणों से सात्यकि का धनुष काट डाला और फिर उनकी छाती में तीक्ष्ण दस बाण मारे। धनुष कटने पर सात्यकि ने एक शक्ति उठाकर कृतवर्मा के दाहने हाथ में मारी और फिर दूसरा धनुष लेकर उनके ऊपर हज़ारों बाण बरसाकर रथ सहित उन्हें अदृश्य कर दिया। राजन्! इस तरह कृतवर्मा को बाणों से व्याप्त करके उन्होंने एक भल्ल बाण से उनके सारथी का सिर काट डाला। उसके मर जाने पर, बिना सारथी के, घोड़े इधर-उधर रथ को लिये भागने लगे। भोजराज कृतवर्मा ने जल्दी से ख़ुद घोड़ों को सँभाला। धनुष हाथ में लिये हुए वे अपनी सेना को युद्ध के लिए उत्साहित करने लगे। दम भर में घोड़ों को सँभालकर वे फिर अपने घोर युद्ध से शत्रुओं के भय को बढ़ाने लगे। कृतवर्मा की सेना पर सात्यकि बड़े वेग से टूट पड़े। उस सेना के भीतर से निकलकर वे फुर्ती के साथ काम्बोज-सेना के भीतर जा घुसे। वहाँ महाबली वीरों ने उनको घेर लिया, उनके रथ की गति रुक गई; परन्तु वे तनिक भी विचलित नहीं हुए। इधर द्रोणाचार्य भी कृतवर्मा को अपनी सेना की रक्षा का काम सौंपकर सात्यकि से लड़ने के लिए आगे बढ़े। इस प्रकार द्रोणाचार्य को सात्यकि का पीछा करते देखकर पाण्डवों की सेना के योद्धा उन्हें रोकने का उद्योग करने लगे। भीमसेन और पाञ्चालगण कृतवर्मा के पास पहुँचकर उत्साहहीन हो गये। कृतवर्मा ने अपने पराक्रम से उन भीतर घुसने का यत्न करनेवाले पाञ्चालदेश के योद्धाओं को रोक दिया। वे अचेत-से हो गये और उनके वाहन भी थक गये। कृतवर्मा ने उस समय असंख्य बाण बरसाकर अपना अद्भुत रणकौशल दिखलाया। भीमसेन के बाहुबल से रक्षित पाञ्चालगण प्रधान रथी कृतवर्मा के पास जाकर आगे नहीं बढ़ सके। कृतवर्मा ने उन युद्ध की इच्छा से आगे बढ़नेवाले वीरों को बाणों से पीड़ित कर दिया; किन्तु वे सब वीर कृतवर्मा के बाणों से जर्जर हो जाने पर भी, यश पाने के लिए, सामने ही डटे रहे। वे लोग कृतवर्मा की सेना को परास्त करने के लिए अत्यन्त यत्न करने लगे।

५० ६० ६७

———

एक सौ चौदह अध्याय

कृतवर्मा के पराक्रम का वर्णन

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! मेरी सेना के योद्धा महाबलशाली, फुर्तीले, दृढ़, लम्बे-चौड़े डील-डौल के, नीरोग, कवचधारी और शस्त्र चलाने में निपुण हैं। उनके पास युद्ध के सभी सामान हैं। उनके व्यूह की रचना भी शास्त्रोक्त विधि से की गई है। उनमें न कोई बहुत बूढ़ा है, न बालक है, न बहुत दुबला है और न बहुत मोटा। हम लोग सदा उनका सत्कार करते रहे हैं और वे भी लगातार हमारी इच्छा के अनुसार काम करते आये हैं। वे सवारी में, पीछे हटने में, धावे में, अच्छी तरह प्रहार करने तथा व्यूह के भीतर जाने और बाहर निकलने में अत्यन्त निपुण हैं। हाथी, घोड़े, रथ की सवारी और युद्ध में कई बार उनकी परीक्षा ले ली गई है। उचित वेतन देकर सब नौकर रक्खे गये हैं; केवल बातचीत करके ही कोई नहीं रक्खा गया। किसी उपकार या सम्बन्ध के कारण ही हमारी ओर से कोई नहीं लड़ने आया है। मेरी सेना का ऐसा कोई सैनिक नहीं, जो बिना बुलाये आया हो या जिसे तनख़्वाह न दी जाती हो। सभी कुलीन, हृष्ट-पुष्ट, यशस्वी, मनस्वी, नम्र और कहने पर चलनेवाले हैं। लोकपाल-सदृश पुण्यकर्मा मुख्य सचिव और अन्य श्रेष्ठ राजा लोग उनके प्रतिपालक हैं। हमारे हितचिन्तक महाबली असंख्य राजा लोग भी अपनी ही इच्छा से वशवर्त्ती होकर, अपनी-अपनी १० सेना और प्रधान अनुचरों को साथ लेकर, हमारी ओर से लड़ने आये हैं। चारों ओर से आई हुई नदियाँ जैसे समुद्र को भर देती हैं वैसे ही अनेक देशों से आये हुए राजाओं की सेनाओं ने मिलकर हमारे सैन्यदल को बढ़ाया है। पंख न होने पर भी पक्षियों के समान उड़नेवाले (तेज़ी से चलनेवाले) रथ, घोड़े और हाथी मेरी विशाल सेना में भरे पड़े हैं; किन्तु मेरी ऐसी चुनी हुई बढ़िया सेना भी मेरे दुर्भाग्य से नष्ट हो गई। मेरी सेना सागर के समान अथाह है। योद्धा लोग उसमें अक्षय जल की तरह भरे पड़े हैं। वाहन तरङ्गों के समान हैं। क्षेपणी, खड्ग, गदा, शक्ति, बाण, प्रास आदि अस्त्र-शस्त्र ही छोटी-बड़ी मछलियाँ हैं। ध्वजा और भूषण ही रत्न तथा चट्टानें हैं। दौड़ते हुए वाहन ही हवा का वेग हैं, जिससे वह सागर उमड़ता हुआ प्रतीत होता है। द्रोणाचार्य ही उसका गम्भीर पाताल-तल हैं। कृतवर्मा उसके महाकुण्ड के समान हैं। उसमें वीर जलसन्ध को महाग्राह मानना चाहिए। कर्ण ही उसके लिए पूर्ण चन्द्र का उदय है, जिसके कारण वह उमड़ उठा है। हे सञ्जय! ऐसे अपार सैन्य-सागर को चीरकर केवल एक रथ से अर्जुन और सात्यकि निकल गये! मुझे तो जान पड़ता है कि अर्जुन और सात्यकि के घुसने पर मेरी सेना बिलकुल न बची होगी। काल-प्रेरित कौरवों ने उन दोनों वीरों को अपनी सेना के भीतर घुसते और जयद्रथ को गाण्डीव धनुष के सामने

उपस्थित देखकर उस दारुण समय में क्या कर्तव्य सोचा ? मैं तो समझता हूँ कि कौरव अवश्य ही काल का ग्रास बन चुके हैं। इस समय रण में उनका वैसा पराक्रम भी नहीं देख पड़ता। महावीर श्रीकृष्ण और अर्जुन घावों से बचे रहकर मेरी सेना के भीतर प्रवेश कर गये। २० उन्हें रोकनेवाला शायद इस लोक में कोई है ही नहीं। देखो, मेरी सेना में अच्छी तरह जाँच-कर, यथेष्ट वेतन देकर, अनेक महारथी योद्धा नौकर रक्खे गये हैं। कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें प्रिय वचन और सत्कार से सन्तुष्ट करके रक्खा गया है। मेरी सेना में ऐसा कोई नहीं है, जिसे सत्कार अथवा वेतन से सन्तुष्ट न रक्खा जाता हो। सभी को अपने-अपने काम [और योग्यता] के अनुसार भोजन और वेतन मिलता है। मेरी सेना में ऐसा कोई नहीं है, जो अपने काम में होशियार न हो, या कम तनख़्वाह पाता हो अथवा जिससे बेगार में काम लिया जाता हो। मैंने और मेरे सजातीयों, पुत्रों और भाई-बन्धुओं ने दान, मान और सभा में यथायोग्य आसन देकर यथाशक्ति सबको सम्मानित किया है। किन्तु ऐसे वीर महारथी योद्धा भी सात्यकि के बाहु-बल से विमर्दित और अर्जुन के सामने जाते ही परास्त हो गये, तो इसे निःसन्देह मेरा दुर्भाग्य ही कहना चाहिए। जिस जयद्रथ की रक्षा की जाती है और जो लोग उसकी रक्षा करनेवाले हैं, उन दोनों की एक ही गति (मृत्यु) नज़र आती है।

हे सञ्जय ! मेरे पुत्र मूढ़मति दुर्योधन ने अर्जुन को जयद्रथ के रथ के पास पहुँचते और सात्यकि को सेना के भीतर बेधड़क प्रवेश करते देखकर उस समय के योग्य क्या काम किया ? हमारे पक्ष के वीरों ने भी श्रीकृष्ण और अर्जुन को, सब तरह की बाण-वर्षा को व्यर्थ करके, सेना के भीतर घुसते देखकर क्या किया ? जान पड़ता है, श्रीकृष्ण और सात्यकि को अर्जुन ३० की सहायता के लिए उद्यत देखकर मेरे पुत्र शोक से अत्यन्त व्याकुल हो उठे होंगे। सात्यकि और अर्जुन को सब सेनाएँ लाँघकर आगे बढ़ते और कौरवपक्ष के योद्धाओं को भागते देखकर मेरे पुत्र शोक के वेग को सँभाल न सकते होंगे। वे अपने पक्ष के रथी, महारथी योद्धाओं को शत्रु-विजय में निरुत्साह और भागने के लिए उद्यत देखकर खेद कर रहे होंगे। सात्यकि तथा अर्जुन के बाणों से सब रथों के आसनों को रथी और सारथी से ख़ाली, योद्धाओं को निहत और असंख्य हाथी, घोड़े, रथ और पैदल वीरों को व्यग्रभाव से इधर-उधर भागते देख-कर मेरे पुत्र अत्यन्त शोकपीड़ित हो रहे होंगे। हाथियों को अर्जुन के बाणों की चोट से भागते और पृथ्वी पर गिरते देखकर, और अर्जुन तथा सात्यकि के बाणों से घोड़ों को सवारों से ख़ाली और मनुष्यों को रथ-हीन देखकर, वे अत्यन्त पश्चात्ताप कर रहे होंगे। हज़ारों घोड़ों का मरना और बचे हुओं का भागना देखकर मेरे पुत्र पछता रहे होंगे। पैदल सिपाहियों को युद्ध से भागते देखकर उनके हृदय से जय की आशा दूर हो गई होगी। अत्यन्त दुर्जय महावीर अर्जुन और वासुदेव को दम भर में आचार्य की सेना को भेदकर चले गये देखकर मेरे पुत्र पछता रहे होंगे। ४०

हे सञ्जय! श्रीकृष्ण सहित अर्जुन और सात्यकि को कौरव-सेना के भीतर घुसते सुनकर मैं घबरा रहा हूँ। महावीर सात्यकि जब कृतवर्मा की सेना को छिन्न-भिन्न करके कौरव-सेना के भीतर गये तब मेरी सेना के वीरों ने क्या किया? द्रोणाचार्य के बाणों से पाण्डवों के अत्यन्त पीड़ित होने पर किस तरह युद्ध हुआ? यह सब विस्तार के साथ मुझसे कहो। महावीर द्रोणाचार्य प्रधान बली, अस्त्रविद्या में निपुण, युद्धकला के आचार्य और परम पराक्रमी हैं। पाञ्चालों ने उनसे किस तरह युद्ध किया? द्रोणाचार्य से पाञ्चालों का पुराना वैर है; वे सब तरह से अर्जुन की जय चाहते हैं। महारथी द्रोणाचार्य भी पाञ्चालों को अपना वैरी मानते हैं। हे सञ्जय! अर्जुन ने जयद्रथ को मारने के लिए क्या किया? तुम सब हाल अच्छी तरह जानते हो। इसलिए सब वृत्तान्त कहो।

सञ्जय ने कहा—राजन्! आपके ही दोष से यह दारुण दुःख उपस्थित हुआ है। इस समय साधारण मनुष्य की तरह शोक करना आपके लिए उचित नहीं। अनुभवी विदुर आदि मित्रों ने पहले आपको मना किया था कि आप पाण्डवों को न निकालिए; किन्तु आपने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। जो मनुष्य हितैषियों की बातों पर ध्यान नहीं देता उसे आपकी ही तरह विपत्ति में फँसकर व्याकुल होना पड़ता है। पहले भी महात्मा वासुदेव मेल कराने के लिए आपके पास प्रार्थना करने आये थे; किन्तु आपने उनकी वह प्रार्थना नहीं पूरी ५० की। उन्होंने जब देखा कि आप निकम्मे हैं, पुत्रों का पक्ष लेते हैं, धर्म का ख़याल न करके दुरङ्गी बातें करते हैं और पाण्डवों के प्रति द्वेष तथा वक्रभाव आपके हृदय में है, तभी निराश होकर उन्होंने कौरवों को भस्म करनेवाली समर की आग जलाई है। महाराज! आपके दोष से ही यह युद्ध छिड़ा है, जिसमें असंख्य प्राणियों का संहार हो रहा है। अब इसके लिए दुर्योधन को दोषी ठहराना उचित नहीं। पहले, बीच में या अन्त में कभी आपका कोई सत्कार्य नहीं देख पड़ता। वास्तव में देखा जाय तो आप ही इस घोर पराजय के मूल कारण हैं। इसलिए इस समय स्थिर होकर, इस लोक की अनित्यता का विचार करके, इस देवासुर-युद्ध के समान अत्यन्त घोर युद्ध का वृत्तान्त ब्योरेवार सुनिए।

सत्यपराक्रमी सात्यकि जब सेना के भीतर घुस गये तब भीमसेन को आगे किये हुए पाण्डव लोग भी आपकी सेना के अगले भाग में घुसने लगे। उस समय महारथी कृतवर्मा अकेले ही क्रोधपूर्ण अनुचरों समेत पाण्डवों को, एकाएक आते देखकर, रोकने लगे। जैसे तटभूमि उमड़ हुए समुद्र को रोक रखती है वैसे ही महावीर कृतवर्मा ने पाण्डवसेना को आगे बढ़ने से रोक दिया। पाण्डवदल मिलकर भी उन्हें हटा नहीं सका। कृतवर्मा का यह पराक्रम देखकर ६० सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। इसी बीच में भीमसेन ने कृतवर्मा को तीन बाणों से घायल करके पाण्डवों को प्रसन्न करनेवाला शङ्ख बजाया। तब सहदेव ने बीस, युधिष्ठिर ने पाँच, नकुल ने सौ,

भीमसेन ने सुवर्णदण्ड-शोभित लोहे की बनी.........उठाकर रथ के ऊपर फेंका।—पृ० २४२३

द्रौपदी के पाँचों पुत्रों ने तिहत्तर, घटोत्कच ने सात और धृष्टद्युम्न ने तीन बाण मारकर एक साथ कृतवर्मा को पीड़ित किया। इसके बाद राजा द्रुपद और विराट ने कृतवर्मा को पाँच-पाँच बाण मारे। शिखण्डी ने पहले पाँच बाण मारकर फिर हँसते-हँसते बीस बाण और मारे। महावीर कृतवर्मा ने हर एक को पाँच बाण मारकर भीमसेन को सात बाण मारे और उनका धनुप तथा ध्वजा काट डाली। फिर उन्होंने अत्यन्त कुपित होकर फुर्ती के साथ भीमसेन की छाती में तीक्ष्ण सत्तर बाण मारे। धनुष कट जाने के कारण भीमसेन कुछ न कर सके। कृतवर्मा के बाण लगने से महावीर भीमसेन भूकम्प के समय भारी पर्वत के समान काँप उठे। युधिष्ठिर आदि सब वीर योद्धा लोग भीमसेन की वह दशा देखकर, उनकी रक्षा के लिए, रथों द्वारा चारों ओर से कृतवर्मा को घेरकर तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित करने लगे। ७०

उधर महापराक्रमी भीमसेन ने होश में आकर, सुवर्णदण्ड-शोभित लोहे की बनी शक्ति उठाकर, उसी समय कृतवर्मा के रथ के ऊपर फेंकी। केंचुल से निकले हुए साँप के समान भयानक वह भीम की भुजाओं से छूटी हुई उग्र शक्ति कृतवर्मा के आगे प्रज्वलित हो उठी। महावीर कृतवर्मा ने दो बाणों से उस प्रलयकाल की आग के समान, सुवर्णभूषित, शक्ति के दो टुकड़े कर दिये। उस समय कृतवर्मा के बाणों से कटी हुई वह शक्ति आकाशमण्डल से गिरी हुई उल्का के समान चारों ओर प्रकाश फैलाती हुई गिर पड़ी। अपनी शक्ति को निष्फल होते देखकर पराक्रमी भीमसेन बहुत ही कुपित हो उठे। उन्होंने दूसरा धनुप लेकर कृतवर्मा को रोकने के लिए उनकी छाती में पाँच बाण मारे। भीमसेन के बाणों से भोजराज कृतवर्मा के अङ्ग कट-फट गये और रक्त बहने लगा, जिससे वे लाल अशोक के फूल के समान शोभायमान हुए। क्रोध के मारे विकट हँसी हँसकर कृतवर्मा फिर युद्ध करने लगे। उन्होंने भीमसेन को तीन बाणों से घायल किया। साथ ही, रोकने के लिए चेष्टा करनेवाले, अन्य महारथियों को भी तीन-तीन बाण मारे। उन्होंने भी कृतवर्मा को सात-सात बाण मारे। महावीर ८० कृतवर्मा ने क्रोध और अवज्ञा की हँसी हँसकर एक क्षुरप्र बाण से शिखण्डी का धनुप काट डाला। महावीर शिखण्डी ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर खड्ग और सुवर्णालङ्कृत प्रकाशमान ढाल हाथ में ली। उन्होंने ढाल घुमाते हुए आगे बढ़कर कृतवर्मा के रथ पर खड्ग का वार किया। वह भयानक खड्ग लगने से कृतवर्मा का धनुप और बाण दोनों कट गये। आकाश से गिरे हुए तारे के समान वह खड्ग पृथ्वी पर गिर पड़ा। इसी अवसर में सब महारथी लोग तीक्ष्ण बाणों से कृतवर्मा पर गहरे वार करने लगे।

महावीर कृतवर्मा ने वह कटा हुआ धनुप फेंककर दूसरा धनुप हाथ में लिया। उन्होंने तीन-तीन बाणों से पाण्डवों को और आठ बाणों से शिखण्डी को पीड़ित किया। महावीर शिखण्डी भी कृतवर्मा के बाणों से घायल होकर अत्यन्त कुपित हो उठे और उसी घड़ी दूसरा

धनुष लेकर कूर्म-नख बाणों के प्रहार से कृतवर्मा को पीड़ित करने लगे। यह देखकर वे अत्यन्त क्रुद्ध हुए। बाघ जैसे हाथी पर झपटता है वैसे ही कृतवर्मा भी महात्मा भीष्म को ९० गिरानेवाले महावीर शिखण्डी के प्रति बल दिखाते हुए वेग से दौड़े। दिग्गज-सदृश और प्रज्वलित अग्नितुल्य वे दोनों वीर एक दूसरे के ऊपर अनन्त बाण बरसाने लगे। वे कभी धनुष बजाते, कभी बाण चढ़ाते और कभी सूर्यकिरण-सदृश असंख्य बाण चलाते थे। प्रलयकाल में प्रकट प्रचण्ड सूर्य के समान वे दोनों वीर इस तरह एक दूसरे को तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित करने लगे। महावीर कृतवर्मा ने महाबाहु शिखण्डी को पहले तिहत्तर और फिर सात बाण मारे। कृतवर्मा के बाणों की गहरी चोट से शिखण्डी बहुत ही व्यथित हुए। उनके हाथ से धनुष-बाण छूट पड़ा और वे अचेत-से होकर रथ पर बैठ गये। उनको इस तरह पीड़ित देखकर कौरव-पक्ष के वीर कृतवर्मा की प्रशंसा करने और कपड़े हिलाकर आनन्द प्रकट करने लगे। शिखण्डी का सारथी अपने स्वामी की हालत बुरी देखकर उसी घड़ी समरभूमि से रथ को हटा ले गया।
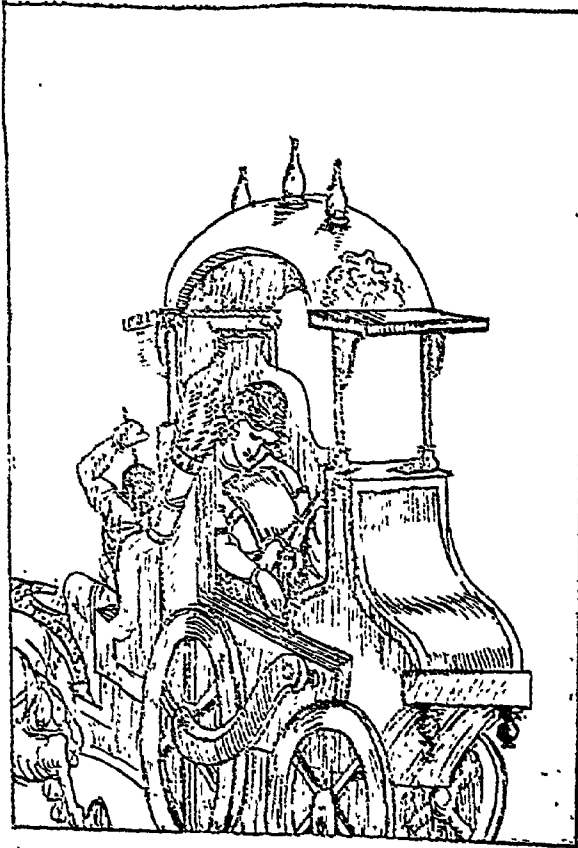
राजन्! पाण्डवों ने शिखण्डी को अत्यन्त पीड़ित और शिथिल देखकर फुर्ती के साथ अनेक रथों के द्वारा चारों ओर से कृतवर्मा को घेर लिया। महावीर कृतवर्मा अकेले होने पर भी अद्भुत बल प्रकट करके पाण्डवों को और उनके साथी योद्धाओं को रोकने लगे। इसके बाद उन्हें हराकर चेदि, पाञ्चाल, सृञ्जय और केकयदेश के १०० वीरों को जीत लिया। पाण्डवपक्ष के लोग कृतवर्मा के बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर इधर-उधर भागने लगे; वे किसी तरह जमकर संग्राम न कर सके। भीमसेन आदि पाण्डवों और पाञ्चालों को परास्त करके महावीर कृतवर्मा धूमहीन प्रचण्ड आग के समान शोभायमान हुए। महाराज! इस तरह कृतवर्मा के १०३ बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर पाण्डव-पक्ष के वीर युद्ध छोड़कर इधर-उधर भागने लगे।

———

एक सौ पन्द्रह अध्याय

जलसन्ध का मारा जाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज ! आपने जो हाल मुझसे पूछा था उसे एकाग्र होकर सुनिए। पाण्डवों की सेना जब यादवश्रेष्ठ कृतवर्मा के बाणों से पीड़ित होकर भाग खड़ी हुई और लज्जा के मारे वीरों के सिर झुक गये तब कौरवों को असीम आनन्द हुआ। अगाध सैन्यसागर में आश्रय पाने के लिए लालायित पाण्डवों को, टापू की तरह, उबारनेवाले महाबाहु सात्यकि ने कौरवों का भयङ्कर सिंहनाद सुनकर उसी समय कृतवर्मा पर आक्रमण किया। सात्यकि ने क्रुद्ध होकर सारथी से कहा—हे सूत, मेरे रथ को कृतवर्मा के पास ले चलो। वह क्रोध करके पाण्डवों की सेना का संहार कर रहा है। उसे जीतकर फिर अर्जुन के पास चलेंगे।

अब सारथी पल भर में रथ को कृतवर्मा के पास ले गया। महारथी कृतवर्मा भी सात्यकि के ऊपर असंख्य तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। सात्यकि ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर चार बाणों से उनके चारों घोड़े मार डाले, एक तीक्ष्ण भल्ल बाण से धनुष काट डाला और उनके पृष्ठरक्षक तथा सारथी आदि को अनेक बाण मारे। महावीर सात्यकि ने कृतवर्मा को रथ-हीन करके तीक्ष्ण बाणों से उनकी सेना को नष्ट-भ्रष्ट करना शुरू कर दिया। सात्यकि के बाणों से पीड़ित होकर कृतवर्मा के सैनिक तितर-बितर होने लगे। महापराक्रमी सात्यकि अब वहाँ से चल दिये। राजन् ! इसके बाद महावीर सात्यकि ने जो कुछ किया, सो सब आपसे कहता हूँ, सुनिए। वे द्रोणाचार्य की सेना को लाँघकर और कृतवर्मा को परास्त करके प्रसन्नतापूर्वक अपने सारथी से

१०
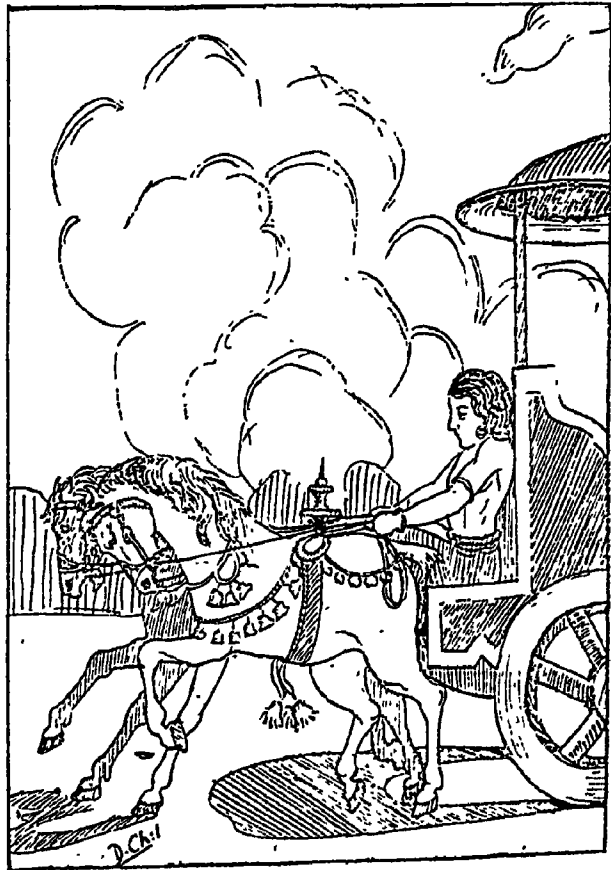
बोले—हे सूत ! तुम निर्भय होकर धीरे-धीरे रथ हाँको। अब महाबाहु सात्यकि ने असंख्य रथ, हाथी, घोड़े, पैदल आदि से परिपूर्ण कौरवों की चतुरङ्गिणी सेना की ओर नज़र डालकर

कहा—हे सारथी ! यह जो आचार्य की सेना के बाँयें भाग में सुवर्णमय ध्वजाओं से भूषित महामेघतुल्य हाथियों पर सवार योद्धाओं की सेना दिखाई पड़ रही है, उसमें त्रिगर्तदेश के राजपुत्र, महापराक्रमी विचित्र योद्धा और महारथी लोग हैं। उन्हें हराना सहज काम नहीं है। ये लोग अपने प्रधान रुक्मरथ को आगे करके, दुर्योधन की आज्ञा के अनुसार, मुझसे प्राणपण से युद्ध करने को खड़े हैं। इसलिए तुम तुरन्त उनके आगे मेरा रथ ले चलो। मैं द्रोणाचार्य के सामने ही उन लोगों से युद्ध करूँगा।

अब सारथी ने सात्यकि की आज्ञा से धीरे-धीरे घोड़ों को उसी ओर हाँका। कुन्द-पुष्प, चन्द्रमा और चाँदी के समान सफ़ेद, वायुवेगगामी, सारथी के वशवर्ती, हिनहिना रहे वे २० घोड़े सात्यकि के रथ को ले चले। उस चमकीले रथ पर पताका फहरा रही थी। उस समय शत्रुपक्ष के फुर्तीले, लघुवेधी, महारथी योद्धा उन्हें आते देखकर अनेक प्रकार के तीक्ष्ण बाण बरसाते हुए आगे बढ़े। उन्होंने हाथियों के घेरे में सात्यकि को घेर लिया। वर्षा ऋतु आने पर प्रचण्ड मेघ जैसे पहाड़ पर पानी बरसाते हैं वैसे ही महापराक्रमी सात्यकि उस गज-सेना पर बाण बरसाने लगे। सात्यकि के चलाये हुए, वज्र के समान स्पर्शवाले, बाणों की चोट से पीड़ित होकर वे हाथी रणभूमि में इधर-उधर भागने लगे। किसी के दाँत टूट गये, किसी का मस्तक फट गया और उनके शरीर रक्त से नहा गये। किसी के कान कट गये, किसी की सूँड़ कट गई, किसी का महावत मारा गया, किसी की पताकाएँ कटकर गिर पड़ीं, किसी का चमड़ा छिन्न-भिन्न हो गया, किसी का घण्टा चूर्ण हो गया, किसी के ऊपर की ध्वजा का डण्डा टुकड़े-टुकड़े हो गया, किसी के ऊपर का योद्धा मर गया और किसी के हौदे से बहुमूल्य कम्बल गिर पड़ा। इस प्रकार मेघ की तरह गरजनेवाले हाथियों के झुण्ड सात्यकि के नाराच, वत्सदन्त, भल्ल, अञ्जलिक, क्षुरप्र और अर्धचन्द्र आदि बाणों से नष्ट होने लगे। उनके शरीर कटने-फटने लगे और वे आर्तस्वर से चिल्लाने, मल-मूत्र त्यागने और घबराकर चारों ओर भागने लगे। उनके शरीरों से रक्त के फुहारे छूट रहे थे। उनमें से कुछ इधर-उधर घूमने लगे, कुछ लड़खड़ाकर गिर पड़े, कुछ बाणों की चोट से विह्वल होकर गिर पड़े और कुछ अधमरे-से हो गये।

राजन् ! उस गज-सेना के इस तरह नष्ट होने पर महाबलशाली राजा जलसन्ध बड़े यत्न ३० से आगे बढ़कर सात्यकि के सामने अपना हाथी ले आये। वे सोने के कर्णाभरण और सुवर्ण-मणिमय अङ्गद आदि आभूषण पहने हुए थे। किरीट तथा कुण्डल पहने, लाल चन्दन लगाये वे महावीर मस्तक में सुवर्ण की माला और वक्षःस्थल में निष्क तथा कण्ठसूत्र आदि आभूषण धारण किये थे और हाथी पर सवार थे। उस समय महाधनुष बजाते हुए राजा जलसन्ध बिजली से युक्त बादल के समान शोभायमान होने लगे। उनके गजराज को एकाएक अपनी ओर आते देखकर सात्यकि ने झटपट उस हाथी को इस तरह रोका जैसे तटभूमि उमड़े हुए समुद्र

को रोकती है। महावीर जलसन्ध ने सात्यकि की बाण-वर्षा से विह्वल हाथी को भागते देखकर अत्यन्त क्रुद्ध हो तीक्ष्ण बाणों से उनको घायल करना शुरू किया। सात्यकि की छाती में कई बाण मारकर हँसते-हँसते उन्होंने एक भल्ल बाण से सात्यकि का धनुष काट डाला और पाँच बाण फिर मारे। जलसन्ध के बाण लगने से सात्यकि तनिक भी विचलित नहीं हुए। यह देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। महावीर सात्यकि ने स्थिर चित्त से सोचा कि कौन और कैसा बाण जलसन्ध पर छोड़ना चाहिए। अपना कर्तव्य निश्चित करके अन्य धनुष लेकर "ठहर जा, ठहर जा!" कहते और हँसते हुए सात्यकि ने जलसन्ध की छाती में साठ बाण मारे, एक तीक्ष्ण क्षुरप्र बाण से उनके धनुष की मूठ काट डाली और फिर तीन बाण उनको ताककर मारे। ४०

महावीर जलसन्ध ने धनुष-बाण छोड़कर उस घड़ी सात्यकि के ऊपर एक तीक्ष्ण तोमर फेंका। जलसन्ध का चलाया हुआ वह तोमर सात्यकि के बाँयें बाहु को भेदकर फुफकारते हुए नाग के समान पृथ्वी में घुस गया। इस तरह उनके प्रहार से हाथ घायल होने पर भी सात्यकि विचलित नहीं हुए। उन्होंने जलसन्ध को तीस बाण मारे। अब खड्ग और शतचन्द्र-शोभित वृषचर्म की ढाल घुमाते हुए महाप्रतापी जलसन्ध झपटे। उन्होंने वह खड्ग सात्यकि पर चलाया। उस खड्ग के प्रहार से सात्यकि का धनुष कट गया और वह खड्ग भी पृथ्वी पर गिरकर अङ्गारचक्र के समान शोभा को प्राप्त हुआ। यह देखकर महाबली सात्यकि के क्रोध का ठिकाना न रहा। उन्होंने तुरन्त साखू की शाखा के समान बड़ा और वज्र की तरह घोर शब्द करने-वाला दूसरा धनुष लेकर जलसन्ध को बाण मारा और हँसते-हँसते दो तीक्ष्ण क्षुरप्र बाणों से उनके दोनों हाथ काट डाले। जलसन्ध के, बेलन के समान मोटे, दोनों हाथ पहाड़ से गिरे हुए पाँच-पाँच सिरोंवाले दो विषैले नागों की तरह हाथी की पीठ पर से नीचे गिर पड़े। इसके बाद पराक्रमी सात्यकि ने अन्य क्षुरप्र बाण से जलसन्ध का कुण्डल-भूषित और मनोहर दन्त-पंक्ति से शोभित सिर काट डाला। जलसन्ध के कबन्ध की रक्तधाराओं से हाथी नहा गया। रक्त से तर और घायल वह हाथी सात्यकि के बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर आर्तनाद करता हुआ, लटके हुए हौदे को लिये, अपनी ही सेना को रौंदता हुआ भागा। राजन्! यह देखकर आपकी सेना में हाहाकार मच गया। महावीर जलसन्ध की मृत्यु देखकर योद्धा लोग जयलाभ से निरुत्साह और युद्ध से विमुख होकर इधर-उधर भागने लगे। इसी समय महारथी द्रोणाचार्य ने बड़े वेग से रथ हाँककर सात्यकि का सामना किया। कौरव लोग भी सात्यकि को प्रचण्ड रूप से आक्रमण करते देखकर क्रोधपूर्वक आचार्य के साथ उन पर आक्रमण करने को चले। तब महात्मा द्रोणाचार्य और कौरवों के साथ सात्यकि का अत्यन्त घोर संग्राम होने लगा। ५० ६१

एक सौ सोलह अध्याय

दुर्योधन और कृतवर्मा की हार

सञ्जय कहते हैं—महाराज! युद्धनिपुण वीरगण इस तरह समर में प्रवृत्त होकर सात्यकि पर बाण बरसाने लगे। अब महापराक्रमी द्रोणाचार्य ने सतहत्तर, दुर्मर्षण ने बारह, दुःसह ने दस, विकर्ण ने तीस, दुर्मुख ने दस, दुःशासन ने आठ और चित्रसेन ने दो बाण एक साथ ही सात्यकि के बाँयें पार्श्व और छाती में मारे। दुर्योधन और अन्य अनेक वीर सात्यकि को असंख्य बाण मारने लगे। महाबली सात्यकि उन वीरों के बाणों से घायल होकर भी हटे नहीं। उन्होंने द्रोणाचार्य को तीन, दुःसह को नव, विकर्ण को पचीस, चित्रसेन को सात, दुर्मर्षण को बारह, विविंशति को आठ, सत्यव्रत को नव और विजय को दस बाण मारे। अब रुक्माङ्गद धनुष को चलाते हुए सात्यकि शीघ्र ही आपके पुत्र राजा दुर्योधन के सामने पहुँचे और असंख्य बाण
१० मारकर उनको पीड़ित करने लगे। उस समय उन दोनों वीरों में घोर संग्राम होने लगा। तीक्ष्ण बाण बरसाकर उन्होंने एक दूसरे को छिपा दिया। दुर्योधन के बाणों से घायल सात्यकि का शरीर रक्त से भीग गया। उस समय वे लाल चन्दन के उस वृक्ष के समान जान पड़ने लगे जिससे रस बह रहा हो। राजा दुर्योधन भी सात्यकि के बाणों से घायल होकर सुवर्णमय शिरोभूषण-भूषित ऊँचे यज्ञयूप के समान शोभायमान हुए।

तब महापराक्रमी सात्यकि ने सहज ही एक क्षुरप्र बाण से राजा दुर्योधन का धनुष काटकर उन्हें असंख्य बाणों से ढक दिया। शत्रु के बाणों से राजा दुर्योधन अत्यन्त पीड़ित हो उठे और उनके विजय के लक्षण को न सह सके। सुवर्णमण्डित पीठवाला दूसरा धनुष लेकर दुर्योधन ने सात्यकि को सौ बाण मारे। महाबली सात्यकि भी दुर्योधन के बाण-प्रहार से अत्यन्त व्यथित और क्रुद्ध होकर उनको बड़े ज़ोर से बाण मारने लगे। आपके अन्य पुत्रों ने राजा दुर्योधन को पीड़ित और सङ्कट में पड़े देखकर सात्यकि पर इतने बाण बरसाये कि वे छिप से गये। इस तरह अपने को बाण-जाल में देखकर महावीर सात्यकि ने [पहले तो उन बाणों को काटकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया और फ़िर] उनमें से हर एक को क्रमशः पाँच-पाँच और सात-सात बाण मारे। उन्होंने हँसते-हँसते फुर्ती के साथ वेग से जानेवाले तीक्ष्ण आठ बाणों से राजा दुर्योधन को विह्वल करके उनका धनुष और मणिमुक्तामण्डित नागचिह्नयुक्त बड़ी ध्वजा
२१ काट डाली। फिर अन्य चार तीक्ष्ण बाणों से राजा के रथ के चारों घोड़े मार डाले, एक तीक्ष्ण क्षुरप्र बाण से सारथी को मार गिराया और अनेक मर्मभेदी तीक्ष्ण बाणों से उनके भारी रथ को ढक दिया। इस तरह आपके पुत्र दुर्योधन, सात्यकि के बाणों से पीड़ित और विह्वल होकर, युद्ध छोड़कर भाग खड़े हुए। उन्होंने धनुर्द्धर चित्रसेन के रथ में जाकर आश्रय लिया।

सात्यकि के बाणों के मारे सब लोग प्राण-सङ्कट में पड़ गये और छिपे हुए राजा दुर्योधन को राहुग्रस्त चन्द्रमा के समान देखकर हाहाकार करने लगे।

उस हाहाकार को सुनकर महारथी कृतवर्मा धनुष कँपाते हुए तेज़ी के साथ रथ हाँकने के लिए, तिरस्कारपूर्वक, सारथी से कहने लगे—हे सूत! बहुत जल्द रथ हाँको, आगे बढ़ो। कृतवर्मा को मुँह फैलाये हुए यमराज के समान आते देखकर महारथी सात्यकि ने सारथी से कहा—हे सारथी! वह देखो, रथ पर सवार कृतवर्मा अस्त्र-शस्त्र लिये युद्ध करने आ रहे हैं; तुम झटपट इनके सामने रथ ले चलो। सारथी ने उसी दम सात्यकि की आज्ञा के अनुसार, सुसज्जित घोड़ों को हाँककर, कृतवर्मा के सामने रथ पहुँचा दिया। प्रज्वलित अग्नि के

३०

समान तेजस्वी वे दोनों वीर, दो विकट क्रुद्ध शार्दूलों की तरह, आमने-सामने आ गये। वीर कृतवर्मा ने सोने से मढ़ी हुई पीठवाला धनुष चढ़ाकर पहले सात्यकि को छब्बीस, उनके सारथी को पाँच और चारों घोड़ों को चार बाण मारे। फिर वे सात्यकि पर सुवर्णपुङ्खयुक्त असंख्य बाण बरसाने लगे। अर्जुन के पास जाने की इच्छा से जल्दी करनेवाले यादवश्रेष्ठ सात्यकि ने, फुर्ती के साथ, कृतवर्मा को तीक्ष्ण अस्सी बाण मारे। बलवान् शत्रु के बाणों की चोट से पीड़ित होकर महावीर कृतवर्मा, भूकम्प के समय भारी पहाड़ की तरह, काँपने लगे। इसी अवसर में सत्यपराक्रमी सात्यकि ने उनके चारों घोड़ों को तिरसठ बाण और सारथी को सात बाण मारे। इसके बाद उन्होंने क्रुद्ध विषैले साँप के समान भयङ्कर सुवर्णपुङ्ख बाण कृतवर्मा को मारा। वह यमदण्ड-सदृश बाण कृतवर्मा के सुवर्णमय विचित्र कवच को काटकर, शरीर भेदकर, ख़ून से तर हो पृथ्वी में घुस गया। उस भयानक बाण की चोट से महावीर कृतवर्मा अत्यन्त पीड़ित, ख़ून से तर और अचेत होकर रथ से गिर पड़े। उनके हाथ से छूटकर धनुष और बाण नीचे गिर पड़े। ४०

राजन् ! इस तरह सत्यपराक्रमी सात्यकि उन सहस्रबाहु अर्जुन के सदृश पराक्रमी और महासागर के समान अक्षोभ्य महारथी कृतवर्मा को परास्त करके फिर आगे बढ़े। इन्द्र जैसे असुरों की सेना को चीरकर निकल गये थे वैसे ही सात्यकि सब योद्धाओं के आगे ही उस खड्ग शक्ति धनुष आदि शस्त्रों से अगम्य, हाथी घोड़े रथ आदि से परिपूर्ण और ख़ून से तर कौरवसेना को लाँघकर आगे जाने लगे। इधर महाबली कृतवर्मा को जब होश आया तब वे ४६ अन्य धनुष लेकर रणक्षेत्र में पाण्डवों को रोकने लगे।

एक सौ सत्रह अध्याय

सात्यकि के पराक्रम का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज ! इस तरह जब सात्यकि ने आपकी सेना में भगदड़ मचा दी तब द्रोणाचार्य उनके ऊपर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। पहले राजा बलि के साथ इन्द्र का जैसे घोर समर हुआ था वैसे ही उस समय सब सैनिकों के सामने सात्यकि और द्रोणाचार्य दारुण युद्ध करने लगे। महाबली द्रोण ने सात्यकि के मस्तक में विषैले साँप के आकार के तीन लोहमय बाण मारे। वे तीनों बाण सात्यकि के मस्तक में लगे, जिनसे वे त्रिशृङ्ग (तीन शिखर-वाले) पर्वत के समान शोभा को प्राप्त हुए। इसी अवसर में मौक़ा पाकर द्रोणाचार्य उनके ऊपर बाण बरसाने लगे। उन बाणों की गति से वज्र का सा घोर शब्द होता था। श्रेष्ठ अस्त्रों के ज्ञाता सात्यकि ने भी दो-दो बाणों से आचार्य के एक-एक बाण को काट डाला।

महावीर द्रोणाचार्य ने सात्यकि की ऐसी फुर्ती देखकर हँसकर उनसे अधिक फुर्ती दिखाने के लिए पहले तीस और फिर पचास तीक्ष्ण बाण उनके ऊपर छोड़े। क्रुद्ध साँप जैसे बाँबी से निकलते हैं वैसे ही द्रोणाचार्य के रथ से, शरीर को छिन्न-भिन्न करनेवाले, बाण निकलते दिखाई पड़ते थे। उसी दम सात्यकि के चलाये हुए सैकड़ों-हज़ारों बाणों ने द्रोणाचार्य के रथ को ढक १० दिया। इस तरह वे दोनों योद्धा समान भाव से युद्ध करने लगे। द्रोणाचार्य और सात्यकि दोनों की फुर्ती और पराक्रम समान दिखाई दे रहा था। कोई किसी से कम न था।

फिर सात्यकि ने द्रोणाचार्य को सन्नतपर्व तीक्ष्ण नव बाणों से घायल करके उनकी ध्वजा में असंख्य बाण मारे और सौ बाणों के प्रहार से उनके सारथी को भी विह्वल कर दिया। महावीर द्रोण ने सात्यकि की फुर्ती देखकर उनके सारथी को सत्तर बाण मारकर घोड़ों को तीन-तीन बाणों से पीड़ित किया और एक बाण से रथ की ध्वजा काट डाली। फिर सुवर्ण-पुङ्खशोभित भल्ल बाण से उनका धनुष भी काट डाला। उस समय क्रोध से अत्यन्त अधीर

सात्यकि ने धनुष छोड़कर भारी गदा उठाई और आचार्य को ताककर फेंकी। आती हुई उस सुवर्णपत्र-भूषित लोहे की गदा को आचार्य ने बहुत से विविध तीक्ष्ण बाणों से व्यर्थ कर दिया। तब सात्यकि ने क्रुद्ध होकर दूसरा धनुष लेकर सिल्ली पर तेज़ किये गये बाणों से आचार्य को पीड़ित करके घोर सिंहनाद किया। शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ आचार्य उस सिंहनाद को न सह सके। उन्होंने सुवर्णदण्ड-मण्डित, लोहे की बनी, शक्ति उठाकर सात्यकि के रथ पर फेंकी। २० वह कालसदृश शक्ति सात्यकि के शरीर में तो नहीं छू गई, किन्तु उनके रथ को तोड़कर घोर शब्द करती हुई पृथ्वी में घुस गई। महावीर सात्यकि ने भी आचार्य के दाहने हाथ में बाण मारा। आचार्य ने एक अर्धचन्द्र बाण से सात्यकि का धनुष काट डाला और रथशक्ति के प्रहार से उनके सारथी को अचेत कर दिया। उस भयानक रथशक्ति के प्रहार से सारथी कुछ देर के लिए रथ पर अचेत हो गया। उस समय सात्यकि ने अद्भुत कार्य किया। वे घोड़ों की रास भी सँभाले हुए थे और द्रोणाचार्य से युद्ध भी कर रहे थे। यह देखकर सब लोग आश्चर्य के साथ उनकी प्रशंसा करने लगे। सात्यकि ने उत्साह के साथ आचार्य को सौ बाण मारे। द्रोणाचार्य ने भी सात्यकि को भयङ्कर पाँच बाण मारे। वे बाण उनके कवच को तोड़-कर शरीर में घुसकर रक्त पीने लगे। आचार्य के बाणों से अत्यन्त पीड़ित और क्रुद्ध होकर सात्यकि उनके ऊपर असंख्य बाण बरसाने लगे। सात्यकि ने एक बाण से आचार्य के सारथी को मार डाला और अन्य अनेक बाण मारकर उनके घोड़ों को पीड़ा पहुँचाई। सात्यकि के बाणों से पीड़ित वे घोड़े इधर-उधर मण्डलाकार गति से भागने लगे। सूर्य के समान प्रकाश-मान आचार्य का रथ इधर-उधर मारा-मारा फिरने लगा। यह देखकर कौरवपक्ष के सब राजा ३० और राजपुत्र यह कहकर चिल्लाने लगे कि "दौड़ो दौड़ो, आचार्य के घोड़ों को पकड़ो—सँभालो।" वे महारथी लोग रण में सात्यकि को छोड़कर तुरन्त द्रोणाचार्य के पास दौड़े गये। सात्यकि के बाणों से पीड़ित महावीरों को इस तरह भागते देखकर सब सेना डर गई और प्राण लेकर चारों तरफ़ भाग खड़ी हुई। सात्यकि के बाणों से पीड़ित होकर आचार्य के घोड़े हवा के समान वेग से उनके रथ को फिर व्यूह के द्वार पर ले गये। पाण्डवों और पाञ्चालों के प्रयत्न से व्यूह को टूटते देखकर पराक्रमी द्रोण व्यूह की ही रक्षा करने लगे; उन्होंने सात्यकि को रोकने की चेष्टा छोड़ दी। पाण्डवों और पाञ्चालों को भगाकर क्रोधरूपी ईंधन से प्रज्व-लित अग्निरूप द्रोणाचार्य, मानों भस्म कर देंगे इस तरह, व्यूह के द्वार पर विराजमान हुए। उस समय वे कालसूर्य के समान प्रचण्ड हो उठे। ३६

एक सौ अठारह अध्याय

सुदर्शन नाम के राजा का मारा जाना

सञ्जय कहते हैं कि राजन्! पुरुषश्रेष्ठ सात्यकि ने द्रोणाचार्य और कृतवर्मा आदि महारथियों को जीतकर हँसते-हँसते अपने सारथी से कहा—हे सूत! महात्मा श्रीकृष्ण और अर्जुन पहले ही इन महारथियों और रथियों को प्राणहीन कर गये हैं। हम लोग तो इनके मारने में कारणमात्र हैं। अर्जुन के द्वारा पहले ही मारे गये इन योद्धाओं को मारने में हमारी विशेष प्रशंसा नहीं है। शत्रुनाशन सात्यकि अब बाण बरसाते हुए, मांसलोभी श्येन पक्षी की तरह, समरभूमि में विचरने लगे। उन इन्द्र के तुल्य प्रभावशाली, असह्य पराक्रमी, उत्साही, पुरुषश्रेष्ठ सात्यकि को चन्द्र और शङ्ख के सदृश सफ़ेद घोड़ों से शोभित रथ पर चढ़कर शरद-ऋतु के प्रचण्ड सूर्य की तरह युद्धस्थल में भ्रमण करते देखकर आपके पक्ष के वीर और दल मिलकर भी रोक नहीं सके। तब विचित्रयुद्ध-निपुण, अमर्षपूर्ण, सुवर्ण का कवच पहने, धनुष धारण किये राजा सुदर्शन सात्यकि को रोकने के लिए उनके सामने आये। उस समय उन दोनों महावीरों का घोर संग्राम होने लगा। पहले देवताओं ने इन्द्र और वृत्रासुर के रण की जैसे प्रशंसा की थी वैसे ही सात्यकि और सुदर्शन का युद्ध देखकर कौरवपक्ष के योद्धा और सोमकगण वारम्बार उनकी बड़ाई करने लगे। महावीर सुदर्शन बार-बार सात्यकि को अत्यन्त तीक्ष्ण बाण मारने लगे। वे बाण सात्यकि के शरीर में लगने भी नहीं पाये; सात्यकि ने उन्हें बीच में ही काट डाला। उधर इन्द्र-सदृश प्रभाव-शाली सात्यकि ने सुदर्शन के ऊपर जितने बाण छोड़े उन्हें महावीर सुदर्शन ने श्रेष्ठ बाणों से काट डाला।
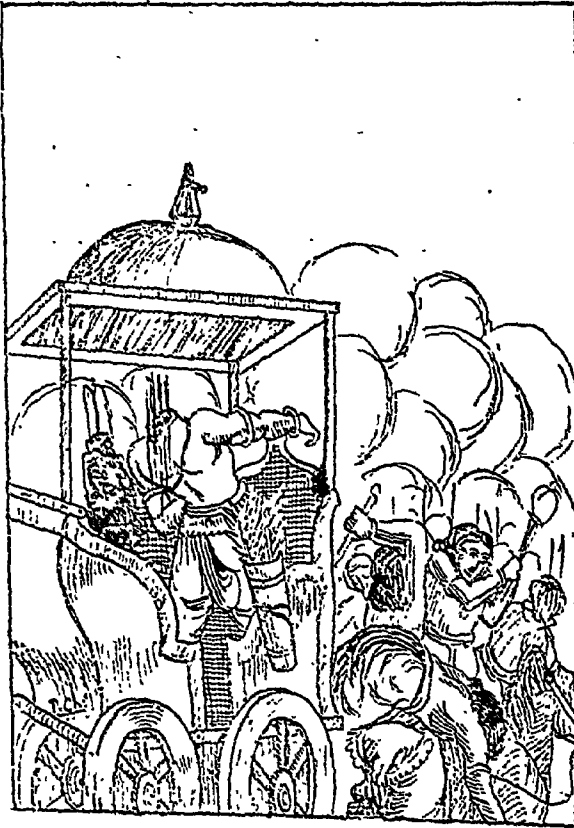
सात्यकि के बाणों से अपने बाणों को निष्फल देखकर अत्यन्त क्रुद्ध हो महावीर
१० सुदर्शन उनके ऊपर सुवर्ण-शोभित विचित्र बाण बरसाने लगे। सुदर्शन ने कानों तक धनुष की

डोरी खींचकर फिर उनको अग्नि-सदृश तीन बाण मारे। सुदर्शन के बाण सात्यकि के कवच को तोड़कर शरीर के भीतर घुस गये। सुदर्शन ने और अग्नि-सदृश प्रज्वलित चार बाण सात्यकि के घोड़ों को मारे। पराक्रमी सात्यकि ने तीक्ष्ण बाणों से सुदर्शन के घोड़ों को मार डाला और घोर सिंहनाद किया। फिर इन्द्र के वज्र के समान भयानक भल्ल बाण से सुदर्शन के सारथी का सिर काट डाला और साथ ही एक कालाग्नि-सदृश क्षुर बाण से सुदर्शन का कुण्डल-शोभित पूर्ण-चन्द्र-सदृश मस्तक काटकर गिरा दिया। पहले समय में वज्रपाणि इन्द्र जैसे महाबली बल नामक दानव का सिर काटकर सुशोभित हुए थे, वैसे ही सात्यकि भी सुदर्शन का सिर काटकर शोभाय-मान हुए। उत्तम घोड़ों से युक्त रथ पर बैठे हुए परम प्रसन्न सात्यकि बाण-वर्षा से कौरव-सेना को परास्त और अपने अद्भुत कार्य से लोगों को विस्मित करते हुए अर्जुन की ओर चले। वे बाणों के सामने पड़नेवाले शत्रुओं को आग की तरह भस्म करते जा रहे थे। रणभूमि में एकत्र सब योद्धा सात्यकि के उन आश्चर्यजनक श्रेष्ठ कर्मों की प्रशंसा करने लगे। १८

एक सौ उन्नीस अध्याय

सात्यकि के हाथों दुर्योधन की सेना का संहार

सञ्जय कहते हैं कि हे नरनाथ! इस तरह वीर सुदर्शन को मारकर वृष्णिवीर सात्यकि ने अपने सारथी से कहा—हे सूत! बाण-शक्तिरूप तरङ्ग, खड्गरूप मछली और गदारूप ग्राह से युक्त, असंख्य हाथी-घोड़े-रथ आदि से परिपूर्ण, अनेक प्रकार के शस्त्रों के परस्पर टकराने के शब्द और बाजों की ध्वनिरूप गर्जन से भयङ्कर, वीरों के लिए कठिन स्पर्श, जय की इच्छा रखने-वालों के लिए दुर्द्धर्ष, जलसन्ध की राक्षस-सदृश सेना से उमड़े हुए द्रोणसेनारूप महासागर के पार जब हम पहुँच गये हैं तब यह, मरने से बची हुई, सेना क्या है! यह तो क्षुद्र नदी सी जान पड़ती है। इसलिए अब तुम तुरन्त घोड़ों को हाँक दो। मैं इस स्वल्प सेना को फुर्ती से लाँघ-कर अर्जुन के पास पहुँचना चाहता हूँ। दुर्जय द्रोण और कृतवर्मा को जीत लिया तो अब मैं मानों अर्जुन के पास ही पहुँच गया। सामने की सेना को देखकर मुझे रत्ती भर डर नहीं मालूम पड़ता। ये सैनिक योद्धा, आग में सूखी घास की तरह, मेरे बाणों से भस्म हो रहे हैं। वह देखो, पाण्डवश्रेष्ठ अर्जुन जिस मार्ग से गये हैं उस मार्ग में असंख्य हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों की लाशें तथा रथ नष्ट-भ्रष्ट हुए पड़े हैं। अर्जुन के वज्रसदृश बाणों से पीड़ित होकर कौरवदल के योद्धा रण छोड़कर भाग रहे हैं। हाथियों, घोड़ों और रथों के तेज़ी के साथ भागने से रेशमी कपड़े-सी लाल धूल उड़ रही है और महातेजस्वी अर्जुन के गाण्डीव धनुष का उग्र शब्द १० सुनाई पड़ रहा है। इससे जान पड़ता है कि महावीर अर्जुन यहाँ से निकट ही कहीं हैं।

हे सूत ! इस समय जो लक्षण और सगुन देख पड़ते हैं, उनसे जान पड़ता है कि दिन डूबने के पहले ही वीर अर्जुन जयद्रथ को मार लेंगे। अब तुम उस जगह पर मेरा रथ ले चलो, जहाँ शत्रु-सेना का जमघट है और जहाँ दुर्योधन आदि वीरगण, युद्धदुर्मद क्रूरकर्मा कवचधारी काम्बोजगण, धनुष-बाण लिये यवनगण और बहुत प्रकार के अस्त्र-शस्त्र धारण किये हुए शक, किरात, दरद, बर्बर, ताम्रलिप्तक आदि, और म्लेच्छगण मेरे साथ युद्ध करने के लिए जमा हैं। तुम यह समझ लो कि मैं इन सब वीरों को रथ, हाथी, घोड़े आदि वाहनों सहित नष्ट करके इस विषम सङ्कट से निकल गया हूँ।

यह सुनकर सारथी ने कहा—महात्मन् ! अगर यमदग्नि के पुत्र परशुराम, महारथी द्रोणाचार्य, कृपाचार्य अथवा मद्रराज शल्य कुपित होकर एक साथ आपके सामने आवें तो भी, आपके आश्रय में रहकर, मैं शङ्कित नहीं हो सकता। समर में रणदुर्मद [क्रूरकर्मा कवचधारी २० काम्बोजगण, धनुष-बाण धारण किये और प्रहार करने में निपुण यवनगण, विविध अस्त्र धारण करनेवाले किरात, दरद, बर्बर, शक और ताम्रलिप्तक आदि म्लेच्छ] लोगों को आज आपने हराया है। मैं पहले कभी बड़े युद्ध में भी नहीं डरा; फिर आज इस साधारण संग्राम में कैसे डरूँगा ? अब आप मुझे यह बतलाइए कि मैं आपको किस मार्ग से अर्जुन के पास ले चलूँ ? हे आयुष्मन् ! आप किन लोगों पर कुपित हुए हैं ? किनकी मौत आई है ? किन्होंने यमपुर जाने की इच्छा की है ? कौन लोग आपको यम की तरह आते देखकर रणभूमि से भागेंगे ? यमराज ने किनको याद किया है ? आज्ञा दीजिए, उन्हीं के सामने आपका रथ ले चलूँ।

सात्यकि ने कहा—हे सूत ! तुम झटपट रथ हाँककर ले चलो। इन्द्र ने जैसे दानवों का संहार किया था वैसे ही आज मैं इन मुण्डित-मस्तक काम्बोजगण का संहार करके प्रतिज्ञा-पालन, और वीर अर्जुन से भेंट, करूँगा। आज दुर्योधन आदि कौरव, इस सेना का विनाश देखकर, समर में मेरे पराक्रम का अनुभव करेंगे। मेरे बाणों से जिनके अङ्ग छिन्न-भिन्न हो गये होंगे, उन कौरवदल के सैनिकों का करुण विलाप सुनकर आज दुर्योधन को अवश्य ही पश्चात्ताप करना पड़ेगा। आज मैं पाण्डवश्रेष्ठ वीर अर्जुन का बताया हुआ युद्धकौशल समर ३० में दिखाऊँगा। मेरे बाणों से हज़ारों वीरों को मरते देखकर आज राजा दुर्योधन अवश्य ही पश्चात्ताप करेंगे। आज कौरवगण मेरी बाण चलाने की फुर्ती और मेरे धनुष का अलातचक्र की तरह घूमना देखेंगे। आज राजा दुर्योधन मेरे बाणों से घायल और रक्त से भीगे हुए अपने सैनिकों की दुर्दशा और संहार देखकर खेद करेंगे। वे संग्राम में मेरा भयानक रूप और कौरव-दल के चुने हुए वीरों का मारा जाना देखकर अवश्य ही सोचेंगे कि इस लोक में दूसरे अर्जुन का अवतार हुआ है। आज मैं कौरवपक्ष के हज़ारों नरपतियों का बध करूँगा जिससे

दुर्योधन पछतावेंगे और मैं पाण्डवों के प्रति अपनी भक्ति और स्नेह का परिचय दूँगा। आज कौरव लोग मेरे बल-वीर्य और कृतज्ञता को विशेष रूप से जानेंगे।

सञ्जय कहते हैं—राजन्! सारथी ने सात्यकि के ये वचन सुनकर सफ़ेद सुशिक्षित घोड़ों को उधर ही हाँक दिया। हवा के समान वेग से घोड़े इस तरह चले मानों आकाश को पी लेंगे। सात्यकि शीघ्र ही यवनों के पास पहुँच गये। वे भी मिलकर फुर्ती दिखाते हुए आगे बढ़कर, सेना के अगले भाग में स्थित, सात्यकि पर असंख्य तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करने लगे। ४० सात्यकि ने अपने सन्नतपर्व बाणों से उनके बाणों को बीच में ही काट डाला। वीर सात्यकि सुवर्णपुङ्खयुक्त, सीधे और दूर जानेवाले तीक्ष्ण बाणों से यवनों के सिर और हाथ काटने लगे। सात्यकि के सुदृढ़ बाण उनके लाल रङ्ग के लोहमय और कांस्यमय कवचों को तोड़कर शरीरों को फोड़ते हुए पृथ्वी में घुस जाते थे। इस प्रकार सात्यकि के बाणों के प्रहार से सैकड़ों यवन मरने और पृथ्वी पर गिरने लगे। वीर सात्यकि धनुष को खींचकर लगातार बाण बरसा रहे थे। वे एक-एक बार में पाँच-पाँच, छः-छः, सात-सात, आठ-आठ यवनों को मार रहे थे। सात्यकि के प्रहार से काम्बोज, शक, शबर, किरात, बर्बर आदि म्लेच्छगण हज़ारों की संख्या में मर-मरकर पृथ्वी पर गिर रहे थे। उनके मांस और रक्त की कीच से समरभूमि अगम्य हो गई। महाराज! वीर सात्यकि इस तरह आपकी सेना को चौपट करने लगे। दस्युओं के शिरस्त्राण-शोभित सिर चारों ओर बिछ गये। उनके सिर के बाल कटे हुए [और दाढ़ी-मूछ के बाल बड़े-बड़े] थे। उनके कटे हुए सिर पङ्ख और पूँछ से रहित पक्षियों के समान जान पड़ते थे। रक्त से नहाये हुए कबन्धों से वह पृथ्वी लाल रङ्ग के मेघों से शोभित आकाश के समान जान पड़ने लगी। इस तरह सात्यकि के वज्रसमस्पर्श, सीधे जानेवाले, तीक्ष्ण बाणों से मारे गये शत्रुओं की लाशों से वह पृथ्वी व्याप्त हो गई। मरने से बचे हुए योद्धा भयविह्वल और अचेतनप्राय होकर घोड़ों को एड़ मारकर, ज़ोर-ज़ोर से कोड़े लगाकर, भगाते हुए भाग ५० खड़े हुए। राजन्! इस तरह सत्यपराक्रमी सात्यकि ने दुर्जय काम्बोज, शक, यवन आदि की भारी सेना को मारकर भगा दिया और विजय प्राप्त करके सारथी से आगे रथ बढ़ाने के लिए कहा। महाराज! अर्जुन की पृष्ठ-रक्षा करने के लिए अद्भुत पराक्रम और अलौकिक कार्य करके जाते हुए सात्यकि की गन्धर्व चारण आदि बारम्बार बड़ाई करने लगे। यहाँ तक कि कौरवदल के लोग भी उन्हें धन्य-धन्य कहने लगे। ५५

एक सौ बीस अध्याय

सात्यकि के पराक्रम का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज! महारथी सात्यकि इस तरह यवन-काम्बोज आदि को जीत-कर, कौरवसेना के मध्यभाग से होकर, अर्जुन के पास जाने लगे। सुन्दर दाँतोंवाले विचित्र कवच-ध्वज-धारी वीरश्रेष्ठ सात्यकि, मृगों पर बाघ की तरह, शत्रुसेना पर झपटकर उसे भय-विह्वल करने लगे। वे धनुष को घुमाते नज़र आते थे और उनका रथ विचित्र गति से जा रहा था। सोने के अङ्गद, शिरस्त्राण, कवच, ध्वजा और धनुष से शोभित शूर सात्यकि सुमेरु पर्वत के शिखर की तरह जान पड़ते थे। वे मण्डलाकार धनुषरूप मण्डल और बाणरूप तेजोमय किरणों से शरद ऋतु में उदय हुए सूर्य के समान शोभायमान हुए। साँड़ के से ऊँचे कन्धे और परा-क्रम से शोभित, उसी की सी बड़ी-बड़ी आँखोंवाले वीर सात्यकि गउओं के झुण्ड में बड़े साँड़ की तरह आपकी सेना में थे। मस्त हाथी के समान पराक्रमी, उसी की सी चाल से चलने-वाले और सेनादल के बीच में मस्त हाथी के समान स्थित सात्यकि को मारने की इच्छा से व्याघ्र के समान आपके पक्ष के योद्धा चारों ओर से दौड़े। द्रोण की सेना, कृतवर्मा की दुस्तर सेना, समुद्र-सदृश जलसन्ध की सेना और काम्बोज आदि की सेना के पार पहुँचे हुए सात्यकि को कृतवर्मा रूप ग्राह के मुँह से उबरते और सैन्यसागर के पार जाते देखकर आपके पक्ष के अनेक योद्धा कुपित हो उठे; उन सबने मिलकर चारों ओर से सात्यकि को घेर लिया। दुर्योधन, चित्र-सेन, दुःशासन, विविंशति, शकुनि, दुःसह, युवा दुर्धर्षण, क्रथ और अन्य अनेक शस्त्रधारी दुर्द्धर्ष क्रोधी योद्धा लोग सात्यकि के पीछे दौड़े। उस समय तूफ़ान की आँधी से उमड़े हुए समुद्र के समान आपकी सेना में बड़ा कोलाहल होने लगा। उन सबको वेग से अपनी

१०

ओर आते देखकर सात्यकि ने हँसकर अपने सारथी से कहा—हे सूत ! रथ को धीरे-धीरे ले चलो । यह देखो, उमड़े हुए समुद्र के समान रथों की घरघराहट होती है और कोलाहल से सब दिशाओं, पृथ्वी, अन्तरिक्ष और सागरों को कँपाती और प्रतिध्वनित करती हुई दुर्योधन की सेना मेरी ओर झपटती आ रही है । पूर्णिमा के दिन उमड़े हुए समुद्र के समान इस सैन्यसागर को मैं अपने पराक्रम से, तटभूमि की तरह, रोकूँगा । आज इस महासमर में तुम इन्द्र के समान मेरा पराक्रम देखो । मैं अभी अपने तीक्ष्ण बाणों से शत्रुसेना का नाश करता हूँ । तुम देखना कि मेरे अग्नितुल्य बाणों से हज़ारों पैदल, हाथी, घोड़े और रथ छिन्न-भिन्न हो रहे हैं ।

महाबली सात्यकि अपने सारथी से इस तरह कह ही रहे थे कि युद्ध की इच्छा रखनेवाले कौरवपक्ष के सैनिक "मारो, ठहरो, दौड़ो, देखो देखो" कहते हुए उनके पास आ गये । २०
यह कहनेवाले शत्रुओं को सात्यकि अपने तीक्ष्ण बाणों से मारने लगे । उन्होंने देखते ही देखते तीन सौ घोड़ों, चार सौ हाथियों और असंख्य वीरों को मार डाला । उस समय सात्यकि के साथ कौरवपक्ष के योद्धाओं का ऐसा घोर युद्ध हुआ कि जान पड़ा फिर देवासुर-संग्राम हो रहा है । सात्यकि अपने विषैले साँप-सदृश बाणों से आपके पुत्र की सेना को छिन्न-भिन्न करने लगे । चारों ओर से सात्यकि के ऊपर बाणों की वर्षा हो रही थी, पर वे तनिक भी नहीं घबराये । उन्होंने आपकी सेना के बहुत से वीरों को मार डाला । हे राजेन्द्र ! उस समय मैंने यह बड़ा आश्चर्य देखा कि पराक्रमी सात्यकि का एक भी बाण निष्फल नहीं जाता था ।

रथ-हाथी-घोड़े आदि के जल से पूर्ण और पैदल सेनारूप तरङ्गों से युक्त वह सैन्यसागर तटभूमि-सदृश सात्यकि के पास जाकर जहाँ का तहाँ रुक रहा । सात्यकि के बाणों से मारे जाते हुए आपकी सेना के मनुष्य, हाथी और घोड़े बारम्बार इधर से उधर ऐसे भटक रहे थे जैसे जाड़े से पीड़ित गउएँ इधर-उधर फिरती हैं । उस समय आपकी सेना में ऐसा कोई पैदल, रथ, हाथी, घोड़ा या घोड़े का सवार नहीं देख पड़ता था जिसको सात्यकि ने घायल न किया हो । वीर सात्यकि ने निडर होकर हाथों की फुर्ती और असाधारण रण-निपुणता दिखाकर जिस तरह आपकी सेना का नाश किया उस तरह अर्जुन ने भी नहीं किया था । मेरी समझ में तो सात्यकि ने उस समय युद्ध में अर्जुन से भी बढ़कर काम किया । ३०

इसी समय राजा दुर्योधन ने सात्यकि को पहले तीन और फिर आठ बाण मारे । उन्होंने सात्यकि के सारथी को भी तीन और घोड़ों को चार बाण मारे । दुःशासन ने सात्यकि को सोलह बाण मारे; साथ ही शकुनि ने पचीस, चित्रसेन ने पाँच और दुःसह ने पन्द्रह तीक्ष्ण बाण उनकी छाती में मारे । यादवश्रेष्ठ सात्यकि इस तरह शत्रुओं के बाणों की चोट खाकर भी विचलित नहीं हुए । उन्होंने हँसते-हँसते उन सबको तीन-तीन बाण मारे । अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों से शत्रुओं को गहरी चोट पहुँचाकर वीरश्रेष्ठ सात्यकि, श्येन पक्षी की तरह, झपटते हुए चारों

ओर समरभूमि में विचरने लगे। उन्होंने फिर शकुनि का धनुष और हस्तावाप (दस्ताने) काटकर दुर्योधन की छाती में तीन, चित्रसेन को सौ, दुःसह को दस और दुःशासन को बीस बाण मारे। शकुनि ने दूसरा धनुष लेकर पहले आठ और फिर पाँच बाण मारकर सात्यकि को घायल किया। साथ ही दुःशासन ने दस, दुःसह ने तीन और दुर्मुख ने बारह बाण
४० उनको मारे। महाराज! दुर्योधन ने भी सात्यकि को तिहत्तर और उनके सारथी को तीक्ष्ण तीन बाण मारे। महावीर सात्यकि ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर सबको पाँच-पाँच बाणों से घायल करके एक भयङ्कर भल्ल बाण से दुर्योधन के सारथी को मार गिराया। सात्यकि के बाणों से पीड़ित होकर दुर्योधन के घोड़े, सारथी न रहने पर, बड़े वेग से उनके रथ को ले भागे। उस समय अन्य सैकड़ों वीर योद्धा भी राजा दुर्योधन के रथ के साथ भाग खड़े हुए। वीर सात्यकि उस सेना को भागते देखकर उस पर सुवर्णपुङ्खयुक्त तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। इस तरह आपकी सेना के हज़ारों योद्धाओं को भगाकर महारथी सात्यकि, अर्जुन के पास जाने के लिए, आगे बढ़े। कौरवपक्ष के योद्धा सात्यकि को एक साथ बाण छोड़ते और
४७ सारथी की तथा अपनी रक्षा करते देखकर बहुत विस्मित हुए और उनकी प्रशंसा करने लगे।

एक सौ इक्कीस अध्याय

दुःशासन का पराजित होना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! महावीर सात्यकि जब कौरवसेना को नष्ट-भ्रष्ट करते हुए अर्जुन के पास जाने लगे तब मेरे निर्लज्ज पुत्रों ने क्या किया? अर्जुन के ही समान सात्यकि का पराक्रम देखकर मेरे मरणोन्मुख पुत्र किस तरह सात्यकि के सामने ठहरे? सेना के बीच में सात्यकि से हारकर वे क्षत्रियों के आगे क्या कहेंगे? महायशस्वी सात्यकि मेरे पुत्रों के जीते जी किस तरह उस सेना के पार पहुँचे? हे सञ्जय! सात्यकि अकेले ही शत्रुपक्ष के असंख्य महारथियों से युद्ध करके उनका संहार कर रहे हैं, यह अद्भुत बात तुमसे सुनकर मुझे स्पष्ट जान पड़ता है कि दैव ही मेरे पुत्रों के प्रतिकूल है। बड़े आश्चर्य की बात है! मेरी सेना, सब पाण्डवों की कौन कहे, अकेले सात्यकि का सामना भी नहीं कर सकती! इस समय मुझे साफ़ मालूम पड़ता है कि अकेले सात्यकि ही चित्रयुद्ध में निपुण महारथी द्रोणाचार्य को जीतकर, पशुओं को सिंह की तरह, मेरे पुत्रों को मार डालेंगे। जब कृतवर्मा आदि अनेक महारथी वीर मिलकर भी सात्यकि को नहीं मार सके तब वे अवश्य ही मेरे पुत्रों को परास्त करेंगे।
१० यशस्वी सात्यकि ने जैसा युद्ध किया वैसा युद्ध तो महापराक्रमी अर्जुन भी नहीं कर सके।

सञ्जय ने कहा—राजन्! केवल आपकी कुमन्त्रणा और दुर्योधन की दुर्बुद्धि ही इस घोरतर नाश का कारण है। अब जो घटनाएँ हुई हैं उनका मैं वर्णन करता हूँ, आप सावधान होकर सुनिए। जो योद्धा भाग खड़े हुए थे वे, दुर्योधन के कहने से, फिर युद्ध की क्रूर बुद्धि करके प्राणपण से युद्ध करने की क़सम खाकर लौट पड़े। दुर्योधन के अनुगामी तीन हज़ार घुड़सवार योद्धा, शक, काम्बोज, बाह्लीक, यवन, पारद, कुलिन्द, तङ्गण, अम्बष्ठ, पैशाच, बर्बर और पत्थर हाथों में लिये कुपित पहाड़ी जातियों के लोग, आग में कूदने को तैयार पतङ्गदल की तरह, सात्यकि का सामना करने को आ गये। पत्थर हाथों में लिये पाँच सौ शूर पहाड़ी लोग भी सात्यकि पर आक्रमण करने को चले। उस समय हज़ार रथ, सौ महारथी, एक हज़ार हाथी, दो हज़ार घोड़े और असंख्य पैदल सेना बाणों की वर्षा करती हुई सात्यकि के सामने आई। उन सबको वीर दुःशासन यह कहकर उत्तेजित करते जाते थे कि "इसे मारो, डरो नहीं।" महाराज! इस तरह बहुत सी सेना और महारथी योद्धाओं को लेकर दुःशासन ने सात्यकि पर आक्रमण किया। किन्तु कैसे आश्चर्य की बात है! हमने सात्यकि का अद्भुत पराक्रम देखा कि उन्होंने अकेले ही उन सबके साथ युद्ध किया और तनिक भी नहीं घबराये। वे उन महारथियों का सामना करते हुए अपने तीक्ष्ण बाणों से असंख्य हाथी, उनके सवार, घुड़सवार, रथ और दस्युगण आदि को नष्ट करने लगे। २० उनकी बाणवर्षा से टूटे-फूटे और कटे-फटे रथों के पहिये, ईषादण्ड, अक्ष, शस्त्र, हाथी, घोड़े, ध्वजा, कवच, माला, कपड़े, गहने, रथ के नीचे की लकड़ी इत्यादि के इधर-उधर बिखरने और ढेर होने से उस समय समरभूमि ग्रह-तारागण आदि से शोभित गगनमण्डल के समान शोभायमान हो रही थी। अञ्जन, वामन, सुप्रतीक, महापद्म और ऐरावत आदि महादिग्गजों के वंश में उत्पन्न पर्वताकार हाथी रणभूमि में उनके बाणों की चोट से गिर-गिरकर मर रहे थे। महावीर सात्यकि ने वनायु, काम्बोज, बाह्लीक आदि देशों के, और पहाड़ी, श्रेष्ठ घोड़ों

को मार डाला। उन्होंने अनेक देशों और बहुत सी जातियों के सैकड़ों-हज़ारों हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों को मारकर बिछा दिया।

इस तरह मारे जाने पर मरने से बचे हुए सैनिक भागने लगे। उस समय दस्यु आदि को भागते देखकर दुःशासन कहने लगे—अरे क्षत्रियधर्म न जाननेवालो! लौट आओ, शत्रु से युद्ध करो। इस तरह भागने से क्या होगा? इस ढँग से उत्साहित किये जाने पर भी उन्हें न लौटते देखकर आपके पुत्र दुःशासन ने पत्थरों की वर्षा करनेवाले, पहाड़ी जाति के, शूर योद्धाओं को युद्ध के लिए प्रेरित करते हुए कहा—

३० हे वीरो! तुम पाषाणयुद्ध में बड़े निपुण हो; और सात्यकि इस शिलायुद्ध को बिलकुल नहीं जानते। इसलिए तुम लोग पाषाण-वर्षा करके इन्हें मारो। कौरवगण शिलायुद्ध में निपुण नहीं हैं [नहीं तो वे तुम्हारी सहायता करते]। तुम लोग आक्रमण करो। सात्यकि तुम्हारा सामना नहीं कर सकेंगे। महाराज! पाषाणयुद्ध में निपुण वे पहाड़ी योद्धा, राजा के पास मन्त्री की तरह, सात्यकि की ओर वेग से चले। वे पहाड़ी लोग हाथी के सिर के समान बड़े-बड़े पत्थर तानकर सात्यकि के सामने आये। क्षेपणीय यन्त्रों से शिलाएँ बरसाते हुए उन पहाड़ियों ने दुःशासन की आज्ञा से चारों ओर से सात्यकि को, मारने की इच्छा से, घेर लिया। यादवश्रेष्ठ सात्यकि ने उन्हें पत्थर बरसाते आते देखकर तीक्ष्ण बाण बरसाना शुरू किया। सात्यकि ने साँप-सदृश नाराच बाणों से उनकी फेंकी हुई शिलाओं को चूर-चूर कर डाला। जुगनुओं की तरह चमककर चारों ओर गिरते हुए उन पत्थरों के चूर्ण से सेना का संहार होने लगा और हाहाकार मच गया। शिलाएँ ताने प्रहार करने को उद्यत पाँच सौ शूर योद्धाओं के हाथ सात्यकि ने काट डाले। हाथ काट दिये जाने पर वे सब

४० मर गये। हज़ारों पहाड़ी लोग सात्यकि पर पत्थरों की घोर वर्षा कर रहे थे और सात्यकि फुर्ती के साथ उनके प्रहारों को निष्फल करते हुए उनका संहार करते जाते थे। मारने

का यत्न करनेवाले हज़ारों पाषाण-युद्ध-निपुण पहाड़ी वीरों को सात्यकि ने मार गिराया। उन्होंने यह बहुत ही अद्भुत कार्य किया।

तब फिर व्यात्तमुख (एक प्रकार के म्लेच्छ), अयोहस्त, शूलहस्त, दरद, खस, तङ्गण, लम्प्राक, कुलिन्द आदि अनेक जातियों के योद्धा लोग बारम्बार सात्यकि पर शिलाओं की वर्षा करने लगे। किन्तु उपाय जाननेवाले चतुर सात्यकि ने नाराच बाणों से उन शिलाओं को व्यर्थ कर दिया। सात्यकि के तीक्ष्ण बाणों से टूटती हुई शिलाओं का शब्द चारों ओर फैल गया। वह भयानक शब्द सुनकर झुण्ड के झुण्ड रथी, हाथी, घोड़े और पैदल सिपाही डर के मारे भागने लगे। उस शिलाचूर्ण के गिरने से मनुष्य, हाथी और घोड़े वैसे ही व्याकुल हो उठे जैसे किसी को भिड़ें लिपटकर काटने लगें और वह तिलमिलाने लगे। उनके लिए समरभूमि में ठहरना असम्भव हो गया। उस समय मरने से बचे हुए, ख़ून से नहाये, भिन्न-मस्तक बड़े-बड़े हाथी सात्यकि के रथ के पास से दूर भागने लगे। पूर्णिमा के दिन उमड़े हुए समुद्र का शब्द जैसे सुनाई पड़े वैसा ही घोर कोलाहल सात्यकि के बाणों से पीड़ित कौरवों की सेना में सुनाई पड़ने लगा।

राजन्! उस समय महावीर द्रोणाचार्य ने वह तुमुल शब्द सुनकर अपने सारथी से कहा—हे सूत! महारथी सात्यकि क्रुद्ध होकर कौरवों की सेना को अनेक प्रकार से छिन्न-भिन्न करते हुए युद्धभूमि में मृत्यु की तरह विचर रहे हैं। जान पड़ता है, वे इस समय शिला बरसानेवाली जातियों के योद्धाओं से युद्ध कर रहे हैं, इसलिए तुम इसी दम वहीं पर मेरा रथ ले चलो। यह देखो, रथी योद्धाओं को लिये हुए घोड़े रणभूमि से भागे जा रहे हैं। शस्त्र और कवच आदि से हीन योद्धा घायल होकर गिर रहे हैं। सारथी लोग किसी तरह घोड़ों को सँभाल नहीं सकते। तब सारथी ने शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य के वचन सुनकर कहा—हे आयुष्मन्! यह देखिए, कौरव पक्ष के योद्धा लोग संग्राम छोड़कर डर के मारे चारों ओर भाग रहे हैं। इधर महाबली पाञ्चाल और पाण्डव मिलकर आपके मारने की इच्छा से आ रहे हैं। उधर सात्यकि भी बहुत दूर निकल गये हैं। अतएव उनके पीछे जाना चाहिए, या यहीं ठहरकर पाण्डवों को रोकना चाहिए? इन दोनों बातों में जो ठीक हो सो आप निश्चय कीजिए। इधर द्रोणाचार्य और सारथी से इस तरह बातचीत हो रही थी, उधर महावीर सात्यकि बहुत से रथी योद्धाओं का नाश करते हुए दिखाई पड़े। रथी लोग सात्यकि के बाणों से पीड़ित होकर, उनके रथ का घेरा छोड़कर, द्रोणाचार्य की सेना की ओर भागने लगे। दुःशासन जिन रथी योद्धाओं को साथ लेकर सात्यकि पर आक्रमण करने गये थे वे डर के मारे द्रोणाचार्य के रथ की तरफ़ भाग खड़े हुए। ५०, ५८

एक सौ बाईस अध्याय

द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न का युद्ध

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! महावीर द्रोणाचार्य ने दुःशासन के रथ को अपने रथ के पास खड़ा देखकर कहा—हे दुःशासन! ये सब रथी क्यों भाग खड़े हुए हैं? राजा दुर्योधन तो कुशल से हैं? सिन्धुराज जयद्रथ तो जीवित हैं? तुम राजा के पुत्र, राजा के भाई, महारथी योद्धा और युवराज होकर भी क्यों युद्ध से इस तरह भाग रहे हो? तुमने पहले द्यूत के समय द्रौपदी से कहा था कि "हे दासी, हमने तुझे जुए में जीत लिया है, इसलिए अब तू स्वेच्छाचारिणी होकर हमारे बड़े भाई राजा दुर्योधन के कपड़े लाकर दिया कर। तेरे पति सार-हीन तिलों के समान निकम्मे हैं। तू अब समझ ले कि तेरे पति हैं ही नहीं।" हे दुःशासन! पहले द्रौपदी से ऐसे दुर्वचन कहकर और आप ही पाण्डवों तथा पाञ्चालों से वैर उत्पन्न करके

अब क्यों युद्ध से भाग रहे हो? इस समय सात्यकि को ही युद्ध में उपस्थित देखकर क्यों डर के मारे व्याकुल हो रहे हो? पहले द्यूत-क्रीड़ा में हाथ में पाँसे लेते समय तुमने क्या नहीं जाना था कि ये पाँसे ही विषैले साँप-सदृश बाणों का रूप धारण करेंगे? तुमने पहले पाण्डवों को बहुत से कटु वचन सुनाये हैं और तुम्हारे ही कारण द्रौपदी को क्लेश सहने पड़े हैं। हे महारथी! इस समय तुम्हारा वह अभिमान, वह बल और शेख़ी कहाँ है? तुम विषैले साँप-सदृश पाण्डवों को छोड़कर अब कहाँ भाग रहे हो? तुम दुर्योधन के साहसी भाई होकर अब युद्ध से भागोगे तो कहना पड़ेगा कि कुरुराज और कौरव पक्ष के वीरों की अत्यन्त शोचनीय दशा उपस्थित है। हे वीर! आज इन डरे हुए कौरवदल के सैनिकों की तुम्हें अपने बाहुबल से रक्षा करनी चाहिए। किन्तु तुम वह अपना कर्त्तव्य न करके, संग्राम छोड़-

कर, केवल शत्रु पक्ष के हृदय में हर्ष उत्पन्न कर रहे हो। हे शत्रुदमन युवराज! तुम सेनापति होकर, डर के मारे समर छोड़कर, इस तरह भागोगे तो और कौन व्यक्ति रणभूमि में ठहर सकेगा? हे कौरव! तुम आज अकेले सात्यकि से ही लड़कर उनके आगे से भाग रहे हो तो गाण्डीव-धनुषधारी अर्जुन, महाबली भीमसेन, वीर नकुल और सहदेव का सामना होने पर क्या करोगे? सात्यकि के बाण तो महावीर अर्जुन के, सूर्य और अग्नि के समान, भयङ्कर उग्र बाणों के तुल्य नहीं हैं। सो तुम सात्यकि के इन बाणों की चोट से ही डरकर भाग खड़े हुए! तुम झटपट गान्धारी के पेट में जा छिपो। दूसरी जगह तुम्हारे प्राण नहीं बच सकते। यदि भागने का निश्चय ही कर लिया हो तो जब तक महाबाहु अर्जुन के, केंचुल छोड़े हुए विषैले साँप के आकार के, नाराच बाण तुम्हारे शरीर में नहीं प्रवेश करते; जब तक महावीर पाण्डवगण तुम सौ भाइयों को मारकर अपना राज्य नहीं ले लेते; जब तक धर्मराज युधिष्ठिर और संग्रामविजयी वासुदेव क्रोध नहीं करते तथा जब तक महावीर भीमसेन इस विशाल सेना के भीतर घुसकर तुम्हारे भाइयों को गदा के प्रहार से यमपुर नहीं भेजते उसके पहले ही पाण्डवों से मेल करके धर्मराज युधिष्ठिर को उनका राज्य दे दो। पहले पितामह भीष्म ने २१ तुम्हारे बड़े भाई राजा दुर्योधन से कहा था कि तुम समरभूमि में लड़कर किसी तरह पाण्डवों को परास्त नहीं कर सकोगे। इसलिए उनसे सन्धि कर लो। किन्तु मन्दमति दुर्योधन इस पर राज़ी नहीं हुए। अतएव इस समय तुम हिम्मत करके यत्नपूर्वक पाण्डवों के साथ युद्ध करो। मैंने सुना है कि भीमसेन तुम्हारा रक्त पियेंगे। उनकी बात टल नहीं सकती। हे मन्दमति, क्या तुम्हें भीमसेन के पराक्रम का पता नहीं है? जब तुम युद्ध से भागते हो तो भीमसेन से वैर क्यों मोल लिया था? जहाँ पर सात्यकि तुम्हारी सेना का नाश कर रहे हैं, वहाँ शीघ्र जाओ; नहीं तो तुम्हारी सब सेना भाग खड़ी होगी।

महाराज! द्रोणाचार्य के ये वचन सुनकर आपके पुत्र दुःशासन चुप हो रहे। आचार्य की बातें मानों सुनी ही नहीं ऐसा भाव दिखाकर वे, संग्राम से कभी न हटनेवाले, शूर म्लेच्छों की सेना साथ लेकर उधर ही चले जिधर सात्यकि गये थे। वहाँ पहुँचकर फिर वे सात्यकि के साथ संग्राम करने लगे। इधर वीरवर द्रोणाचार्य अत्यन्त कुपित होकर वेग से पाण्डवों और पाञ्चालों की सम्मिलित सेना की ओर चले। वे शत्रुओं की सेना में घुस पड़े और बाणों की ३० वर्षा से असंख्य वीरों को भगाने लगे। महारथी आचार्य ऊँचे स्वर से अपना नाम सुनाकर पाण्डव, पाञ्चाल, मत्स्य आदि की सेना के वीरों को मारने लगे। तब तेजस्वी पाञ्चालराज-कुमार वीरकेतु ने समरविजयी द्रोणाचार्य को युद्ध के लिए ललकारा। वीरकेतु ने सन्नतपर्वयुक्त तीक्ष्ण पाँच बाण आचार्य को मारे, एक बाण उनकी ध्वजा में मारा और सात बाण उनके सारथी को भी मारे। महारथी द्रोणाचार्य अत्यन्त यत्न करके भी वीरकेतु को हटा नहीं सके। यह देखकर

हमको बड़ा आश्चर्य हुआ। इसी समय युधिष्ठिर की विजय चाहनेवाले पाञ्चालगण रणभूमि में आचार्य को रुकते देखकर, चारों ओर से घेरकर, उन पर अग्नि-सदृश सुदृढ़ सैकड़ों तोमर और अन्य प्रकार के अस्त्र-शस्त्र बरसाने लगे। किन्तु उन लोगों के बाण और शस्त्र आचार्य के बाणों से राह में ही कट-कुट गये और हवा के वेग से टुकड़े-टुकड़े हो गये मेघों के समान आकाश में दिखाई पड़ने लगे। तब शत्रुनाशन आचार्य ने, सूर्य और अग्नि के समान प्रज्वलित, भयङ्कर बाण धनुष पर चढ़ाकर वीरकेतु के ऊपर छोड़ा। आचार्य के छोड़े हुए उस बाण ने वेग से आकर वीरकेतु ४० की देह का चीर डाला और फिर वह रक्त में नहाकर पृथ्वी में घुस गया। आँधी से उखड़ा हुआ चम्पे का पेड़ जैसे पहाड़ पर से नीचे गिर पड़े वैसे ही पाञ्चाल-राजकुमार वीरकेतु रथ पर से गिर पड़े। इस तरह धनुर्धर महाबली राजकुमार वीरकेतु के मारे जाने पर पाञ्चालों की सेना और भी कुपित होकर चारों ओर से आचार्य पर आक्रमण करने लगी। तब भाई की मृत्यु से शोकार्त होकर महावीर सुधन्वा, चित्रकेतु, चित्रवर्मा और चित्ररथ आचार्य से युद्ध करने के लिए सामने आये और वर्षाऋतु के मेघ जैसे जल बरसाते हैं वैसे ही आचार्य के ऊपर लगातार तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। ब्राह्मणश्रेष्ठ द्रोणाचार्य उन महावीर राजकुमारों के बाणों से अत्यन्त घायल होकर क्रोधित हो उठे और उन्हें मारने के लिए भयानक बाण छोड़ने लगे। कान तक खींच-कर छोड़े गये आचार्य के बाणों की चोट से पीड़ित राजकुमार घबरा गये और निश्चय न कर सके कि क्या करना चाहिए। महायशस्वी द्रोणाचार्य ने उन्हें घबराये हुए देखकर कुछ हँसकर पहले उनके रथ, सारथी और घोड़ों को नष्ट कर दिया और फिर पीछे से भल्ल बाणों से उनके कुण्डल-भूषित सिर काटकर पृथ्वी पर गिरा दिये। इस तरह आचार्य के बाणों से मरकर वे राजपुत्र, देवासुर-युद्ध में मरनेवाले दानवों की तरह, रथों से पृथ्वी पर गिर पड़े। राजन्! ५० उन्हें मारकर महापराक्रमी द्रोणाचार्य अपना सुवर्णमण्डित दुर्द्धर्ष धनुष नचाने लगे।

अपने वीर भाइयों की मृत्यु देखकर महावीर धृष्टद्युम्न बहुत ही शोकाकुल हुए। उनकी आँखों से आँसू गिरने लगे। इसके बाद वे क्रुद्ध होकर द्रोणाचार्य के सामने आये और उनके ऊपर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। धृष्टद्युम्न के बाणों की वर्षा में आचार्य द्रोण छिप गये। यह देखकर युद्धभूमि में एकाएक हाहाकार मच गया। किन्तु महारथी द्रोणाचार्य धृष्टद्युम्न के बाणों के प्रहार से तनिक भी व्यथित नहीं हुए। वे कुछ मुसकाते हुए [उन बाणों को व्यर्थ करके] धृष्टद्युम्न के साथ युद्ध करने लगे। इसी समय महावीर धृष्टद्युम्न ने बहुत ही क्रोध करके आचार्य की छाती में बड़े विकट नब्बे बाण मारे। उन बाणों की गहरी चोट से महायशस्वी आचार्य मूर्च्छित हो गये। महारथी धृष्टद्युम्न ने आचार्य को, अचेत पाकर, मार डालने का इरादा किया। क्रोध के मारे उनकी आँखें लाल हो रही थीं। धृष्टद्युम्न धनुष रखकर, तलवार लेकर, उनका सिर काटने के लिए फुर्ती के साथ अपने रथ से उनके रथ पर कूद गये।

धृष्टद्युम्न धनुष रखकर अपने रथ से उनके रथ पर कूद गये।—पृ० २४४४

किन्तु उसी समय आचार्य सचेत हो गये। वध की इच्छा से आये हुए धृष्टद्युम्न को देखकर वे विचलित नहीं हुए। वे हाथ में धनुष लेकर, निकट युद्ध के लिए उपयोगी, बालिश्त भर के छोटे-छोटे बाण धृष्टद्युम्न को मारने लगे। महाबली धृष्टद्युम्न आचार्य के बाणों से घायल होकर फ़ौरन् उनके रथ से अपने रथ पर चले गये और धनुष लेकर फिर आचार्य पर बाण बरसाने लगे। द्रोणाचार्य भी उन पर प्रहार कर रहे थे। त्रैलोक्य के राज्य की इच्छा रखनेवाले इन्द्र और प्रह्लाद के समान वे दोनों महाघोर युद्ध करने लगे। दोनों रण-निपुण वीर विचित्र मण्डल और यमक आदि विविध गतियाँ दिखा-कर चारों ओर विचरते हुए अनेक प्रकार के बाणों से एक दूसरे के अंगों को छिन्न-भिन्न करने लगे। ६०

वीरों को भी मोहित करनेवाला युद्ध करनेवाले उन दोनों महारथियों ने, वर्षा ऋतु के दो मेघों की जलधारा के समान, बाण बरसाकर एकदम पृथ्वीमण्डल, आकाशमण्डल और सब दिशाओं को बाणों से व्याप्त कर दिया। रणभूमि में उपस्थित सब सैनिक क्षत्रिय योद्धा बारम्बार धन्य-धन्य कहते हुए उस युद्ध की प्रशंसा करने लगे। इस अवसर में पाञ्चालगण यह कहकर चिल्लाने लगे कि जब आचार्य धृष्टद्युम्न के साथ युद्ध करने लगे हैं तब वे अवश्य ही हमारे वश में हो जायँगे; धृष्टद्युम्न अवश्य उन्हें परास्त करेंगे। उधर महाबाहु द्रोणाचार्य ने, वृक्ष से पके फल की तरह, धृष्टद्युम्न के सारथी का सिर काट गिराया। सारथी के न रहने से धृष्टद्युम्न के घोड़े रथ को लेकर इधर-उधर भागने लगे। ७० तब मौक़ा पाकर द्रोणाचार्य पाञ्चालों और सृञ्जयों की सेना से युद्ध करने लगे। प्रबल प्रतापी शत्रुदमन द्रोणाचार्य इस तरह पाण्डवों और पाञ्चालों को परास्त करके फिर अपने व्यूह के द्वार पर डट गये। पाण्डवों और पाञ्चालों में से कोई उन्हें परास्त नहीं कर सका। ७३

एक सौ तेईस अध्याय

दुःशासन की हार होना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! इधर वीर दुःशासन जलधारा बरसानेवाले मेघ के समान बाण बरसाते हुए सात्यकि के पास चले। उन्होंने सात्यकि को पहले साठ और फिर सोलह तीक्ष्ण बाण मारे; किन्तु महावीर सात्यकि उनके प्रहार से तनिक भी व्यथित न होकर मैनाक पर्वत की तरह अटल खड़े रहे। तब कुरुश्रेष्ठ दुःशासन ने अनेक देशों के वीर योद्धाओं के साथ बाण बरसाते हुए, मेघगर्जन-सदृश सिंहनाद से दसों दिशाओं को कँपाते हुए, वीर सात्यकि पर पूरे वेग से आक्रमण किया। यह देखकर सात्यकि ने क्रोध से आगे बढ़कर बाणों की वर्षा से दुःशासन आदि को अदृश्य सा कर दिया। दुःशासन के साथी अन्यान्य वीरगण सात्यकि के बाणों के डर से सेना के सामने ही भागने लगे। उस समय अकेले दुःशासन समरभूमि में ठहरकर सात्यकि को बाण मारने लगे। उन्होंने सात्यकि के घोड़ों को चार, सारथी को तीन और सात्यकि को सौ बाणों से घायल करके सिंहनाद किया। शत्रुनाशन सात्यकि क्रोध से प्रज्वलित हो उठे। उन्होंने इतने बाण छोड़े कि दुःशासन का रथ, सारथी और ध्वजा तक उनमें छिप गई। मकड़ा जैसे मक्खी को अपने जाल में फँसा लेता है वैसे
१० ही उन्होंने दुःशासन को बाणजाल में फँसा दिया।

राजन्! राजा दुर्योधन ने दुःशासन को इस तरह बाणजाल में फँसते देखकर युद्ध-विशारद क्रूरकर्मा त्रिगर्त देश के तीन हज़ार वीरों को सात्यकि से लड़ने के लिए भेजा। उन्होंने दुर्योधन की आज्ञा से सात्यकि के सामने जाकर, तत्परता के साथ समर से न हटने का प्रण करके, चारों ओर से सात्यकि को रथों से घेरकर उनपर तीक्ष्ण बाण बरसाना शुरू किया। उस समय सात्यकि ने उन बाणवर्षा करनेवाले त्रिगर्त देश के योद्धाओं में से पाँच सौ प्रधान वीरों को मार डाला। वे हवा के वेग से उखड़े या टूटे हुए बड़े-बड़े वृक्षों की तरह गिरने लगे। सात्यकि के बाणों से कटे, रक्त से भीगे हुए, असंख्य हाथी, सोने के गहनों से भूषित घोड़े और ध्वजा आदि के गिरने से वह समरभूमि खिले हुए ढाक के पेड़ों से व्याप्त सी जान पड़ने लगी। सात्यकि के बाणों से घायल होकर कौरव पक्ष के सब योद्धा, दलदल में फँसे हाथियों के समान, सङ्कट में पड़-कर निःसहाय हो गये। महानाग जैसे गरुड़ के डर से बिल के भीतर घुस जाते हैं वैसे ही वे कौरव पक्ष के सैनिक, सात्यकि के डर से विह्वल होकर, द्रोणाचार्य के पास भागकर पहुँचे।

इस तरह सात्यकि घोर विषैले साँप-सदृश तीक्ष्ण बाणों के द्वारा पाँच सौ योद्धाओं को
२१ मारकर धीरे-धीरे अर्जुन के पास जाने लगे। इसी अवसर में आपके पुत्र दुःशासन ने सन्नत-पर्वयुक्त नव बाण सात्यकि को मारे। महाधनुर्द्धर सात्यकि ने भी सुवर्णपुङ्खशोभित पाँच बाण

उनको मारे। दुःशासन ने हँसते-हँसते सात्यकि को पहले तीन और फिर पाँच बाण मारे। महाबली सात्यकि ने यह देखकर उनके ऊपर पाँच बाण छोड़े और फिर धनुष भी काट डाला। दुःशासन को यों अचम्भे में डालकर वे अर्जुन की ओर बढ़े। अब दुःशासन ने क्रुद्ध होकर उन्हें मार डालने के लिए लोहे की भयानक शक्ति फेंकी। वीर सात्यकि ने फुर्ती के साथ कङ्क-पत्र-शोभित तीक्ष्ण बाणों से उस शक्ति के सैकड़ों टुकड़े कर डाले। महातेजस्वी दुःशासन ने दूसरा धनुष लेकर सात्यकि को बाणों से घायल किया और सिंह की तरह गर्जना की। वह सिंहनाद सुनकर पराक्रमी सात्यकि क्रोध से अधीर हो उठे। उन्होंने दुःशासन को घबराहट में डालकर, उनकी छाती में अग्निशिखा के समान बहुत से बाण मारकर, तीन और फिर बड़े भयानक आठ बाण मारे। वीर दुःशासन ने सात्यकि को बीस बाण मारे। तब अस्त्र जाननेवालों में प्रधान सात्यकि ने दुःशासन की छाती में तीन सन्नतपर्व बाण मारे और फिर बहुत ही उग्र कई बाणों से उनके सारथी और घोड़ों को मार डाला। एक भल्ल बाण से दुःशासन का धनुष, पाँच भल्लों से दस्ताना, दो भल्लों से ध्वजा और रथशक्ति को काटकर अन्य तीक्ष्ण बाणों से उनके दोनों पृष्ठरक्षकों को मार डाला। त्रिगर्तसेना के सेनापति ने जब देखा कि दुःशासन का धनुष कट गया, घोड़े और सारथी मर गये तथा रथ भी नष्ट हो गया तब उसने फुर्ती के साथ उनको अपने रथ पर बिठा लिया। वह उन्हें युद्धस्थल से हटा ले गया। महावीर सात्यकि ने दुःशासन को मार डालने के लिए दम भर उसका पीछा किया; किन्तु फिर यह स्मरण करके कि भीमकर्मा भीमसेन ने सभा में सबके सामने आपके सब पुत्रों को मारने की प्रतिज्ञा कर रक्खी है, फिर दुःशासन पर प्रहार नहीं किया। राजन्! शिनिवंशी सत्यपराक्रमी सात्यकि, दुःशासन को परास्त करके, उसी मार्ग से आगे बढ़ने लगे जिस मार्ग से अर्जुन गये थे। ३०, ३७

एक सौ चौबीस अध्याय

दुर्योधन के युद्ध का वर्णन

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! मेरी सेना में क्या कोई ऐसे महारथी योद्धा नहीं थे, जो अर्जुन के पास अकेले जाते हुए सात्यकि को रोक लेते? इन्द्र के समान पराक्रमी, सत्यविक्रमी सात्यकि ने दानव-नाशन इन्द्र की तरह अकेले ही समरभूमि में इतना बड़ा कार्य कर दिखाया। सात्यकि क्या सारी कौरव-सेना को मारकर, राह को बिलकुल ख़ाली करके, उधर से गये थे अथवा उधर बहुत से वीर मर चुके थे जिधर से सात्यकि गये? हे सञ्जय! तुम सात्यकि के द्वारा रण में जिस अद्भुत कर्म का होना बताते हो उसे स्वयं इन्द्र भी तो नहीं कर सकते! यादवश्रेष्ठ सात्यकि के

अश्रद्धेय अचिन्त्य अद्भुत पराक्रम का हाल सुनकर मैं बहुत ही व्यथित हो रहा हूँ। हे सञ्जय! तुम जैसा वर्णन कर रहे हो उससे तो यही जान पड़ता है कि मेरे पुत्र किसी तरह बच नहीं सकते। सात्यकि ने अकेले ही बहुत सी सेना का संहार कर डाला। अब तुम यह हाल मुझे सुनाओ कि अकेले सात्यकि बहुत सी सेना को लाँघकर किस तरह अर्जुन के पास गये।

सञ्जय ने कहा—महाराज! आपकी सेना में असंख्य रथ, हाथी, घोड़े और पैदल योद्धा थे। आपकी सेना का उद्योग अपूर्व था। उतनी सेना कभी किसी युद्ध में एकत्र न हुई होगी। ऐसा जान पड़ता था कि यह सेना प्रलय कर देगी। आपकी सेनाओं में इतने देशों के शूर योद्धा आये थे कि उनकी गिनती नहीं की जा सकती। देखने के लिए आये हुए देवता और सिद्ध-
१० चारण आदि आपस में कह रहे थे कि संसार में इससे अधिक सेना एकत्र न हो सकेगी। राजन्! जयद्रथ-वध की प्रतिज्ञा सुनकर द्रोणाचार्य ने जैसा व्यूह बनाया था वैसा व्यूह और नहीं हो सकता। दोनों ओर से आक्रमण के लिए दौड़नेवाले सेना के झुण्डों में ऐसा कोलाहल हो रहा था मानों तूफ़ान से उमड़े हुए सागरों का घोर गर्जन सुनाई पड़ रहा हो। आपके और पाण्डवों के दल में हज़ारों राजा लोग अपनी-अपनी सेना लेकर सम्मिलित हुए थे। समर में प्रशंसनीय कर्म करनेवाले कुपित वीरों का लोमहर्षण शब्द सुनाई पड़ रहा था।

उस समय महाबली भीमसेन, धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव और धर्मराज युधिष्ठिर अपने सैनिकों से पुकार-पुकारकर कहने लगे—तुम लोग शीघ्र आओ, दौड़ो, प्रहार करो। महा-तेजस्वी अर्जुन और सात्यकि शत्रुसेना के भीतर गये हैं। इस समय ऐसा यत्न करो, जिसमें वे शीघ्र ही सहज में जयद्रथ के पास पहुँचकर उसको मार सकें। आज अगर महावीर अर्जुन और सात्यकि मारे गये तो कौरवगण कृतार्थ और हम परास्त होंगे। अतएव तुम सब मिल-कर यत्नपूर्वक उसी तरह कौरवसेना को मथ डालो जिस तरह तूफ़ान महासागर को मथ डालता है। इस तरह धर्मराज आदि की आज्ञा सुनकर महातेजस्वी योद्धा लोग, जीवन का मोह छोड़कर, कौरवों पर टूट पड़े। वे लोग अपने सुहृद पाण्डवों के हित के लिए शस्त्रप्रहार से
२० निहत होकर स्वर्ग जाने में तनिक भी शङ्कित नहीं हुए। कौरवदल के योद्धा भी यश पाने के लिए उत्सुक होकर घोर युद्ध करते हुए आगे बढ़ने लगे।

राजन्! उस लोमहर्षण युद्ध में वीर सात्यकि सारी कौरवसेना को जीतते हुए अर्जुन की ओर बढ़ते ही जा रहे थे। कवचों पर सूर्य की किरणें पड़ने से जो चमक पैदा होती थी उससे सैनिकों की आँखों में चकाचौंध लगती थी। महाराज! उस समय वीर और मानी राजा दुर्योधन ने शूर पाण्डवों को व्यूह तोड़ने का प्रयत्न करते देखकर उनकी सारी सेना के भीतर प्रवेश किया। तब पाण्डवों की सेना के साथ दुर्योधन का महाभयङ्कर और जनसंहारकारी युद्ध होने लगा।

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! मेरे पुत्र राजा दुर्योधन ने शत्रुसेना में घुस करके और सङ्कट में पड़कर युद्ध में पीठ तो नहीं दिखाई ? एक तो अकेले बहुत लोगों से लड़ना, उस पर स्वयं राजा का ऐसा करना, मुझे बहुत ही विषम जान पड़ता है। दुर्योधन सदा सुख में पला है; वह लक्ष्मी और प्रजा का स्वामी है। वह अकेला ही बहुत लोगों से युद्ध करने जाकर विषम विपत्ति देख रण से भाग तो नहीं खड़ा हुआ ?

सञ्जय ने कहा—राजन् ! आपके पुत्र दुर्योधन ने अकेले ही अनेक लोगों के साथ बड़ा अद्भुत युद्ध किया। मैं सब हाल कहता हूँ, सुनिए। जैसे मस्त हाथी कमल के वन को रौंदता है वैसे ही महावीर दुर्योधन पाण्डवों की सेना को रौंदने लगे। महावीर भीमसेन और पाञ्चालगण अपनी सेना को नष्ट होते देखकर दुर्योधन की ओर वेग से दौड़ पड़े। तब वीर दुर्योधन ने ३१ भीमसेन को दस, नकुल को तीन, सहदेव को तीन, युधिष्ठिर को सात, विराट और द्रुपद को छः, शिखण्डी को सौ, धृष्टद्युम्न को बीस और द्रौपदी के पाँचों पुत्रों को तीन-तीन तीक्ष्ण बाण मारे। क्रुद्ध काल जैसे प्रजा का संहार करता है वैसे ही राजा दुर्योधन सैकड़ों अन्य योद्धाओं, रथों और हाथियों को बाणों से काट-काटकर गिराने लगे। वे कब बाण निकालते, कब धनुष पर चढ़ाते और कब छोड़ते थे, यह नहीं देख पड़ता था। यही देख पड़ता था कि वे शिक्षा और अस्त्र-बल के प्रभाव से शत्रुओं को नष्ट कर रहे हैं और उनका सुवर्णपृष्ठ धनुष मण्डलाकार घूम रहा है। तब राजा युधिष्ठिर ने दो भल्ल बाणों से दुर्योधन का वह सुदृढ़ भारी धनुष काटकर उनको तीक्ष्ण-दस बाण मारे। वे बाण दुर्योधन के कवच को तोड़कर पृथ्वी में घुस गये। देवताओं ने वृत्रासुर-वध के समय जैसे इन्द्र को घेर लिया था वैसे ही पाण्डवपक्ष के सब योद्धा युधिष्ठिर को चारों ओर से घेरकर उनकी रक्षा करने लगे। अब पराक्रमी दुर्योधन ने दूसरा धनुष लेकर ४० "ठहर जाओ, ठहर जाओ" कहकर धर्मराज पर आक्रमण किया। विजयाभिलाषी पाण्डवगण दुर्योधन को आते देख प्रसन्न होकर उनकी ओर दौड़े। इधर [दुर्योधन की रक्षा करने के लिए] द्रोणाचार्य भी आ पहुँचे और प्रचण्ड आँधी के झोंकों से सञ्चालित मेघों को जैसे महापर्वत रोकता है वैसे ही सब पाञ्चाल-सेना को रोकने लगे। राजन् ! उस समय कौरवों और पाण्डवों का लोमहर्षण संग्राम होने लगा। समरभूमि लाशों से, महाश्मशान के समान, भयङ्कर दिखाई पड़ने लगी। उसी समय जिधर महाबाहु अर्जुन थे उधर रोमाञ्चकारी महा-कोलाहल सुनाई पड़ा। महावीर अर्जुन और सात्यकि कौरवपक्ष की सेना से और व्यूह के द्वार पर स्थित द्रोणाचार्य पाण्डवों की सेना से घोर युद्ध करने लगे। इन वीरों के क्रुद्ध होकर युद्ध करने से भयङ्कर संहार हुआ। ४७

एक सौ पचीस अध्याय

द्रोणाचार्य के पराक्रम का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—हे नर-नायक! इसके बाद तीसरा पहर होने पर फिर सोमकों के साथ आचार्य भयङ्कर युद्ध करने लगे। आपके हितचिन्तक, महाधनुर्द्धर, वीरवरों में अग्रगण्य द्रोणाचार्य लाल रङ्ग के घोड़ों से शोभित रथ पर बैठे हुए धीमी चाल से पाण्डव-सेना की ओर बढ़ने लगे। वे विचित्र पुङ्खयुक्त तीक्ष्ण बाणों से प्रधान-प्रधान योद्धाओं को मारते हुए समरभूमि में विचर रहे थे। उस समय केकय देश के राजकुमार पाँचों भाइयों में सबसे बड़े युद्धनिपुण महावीर बृहत्क्षत्र महामेघ जैसे गन्धमादन पर्वत पर लगातार जल बरसावें वैसे अत्यन्त तीक्ष्ण बाण बरसाकर आचार्य को पीड़ित करने लगे। बाणों की मार से कुपित होकर आचार्य ने उनको क्रुद्ध साँप-सदृश सुवर्णपुङ्ख-शोभित पन्द्रह बाण मारे। महाबाहु बृहत्क्षत्र ने आचार्य के हर एक बाण को पाँच-पाँच बाणों से काट करके व्यर्थ कर दिया। आचार्य ने उनकी फुर्ती देखकर हँसकर उन पर फिर सन्नतपर्वयुक्त आठ उग्र बाण चलाये। बृहत्क्षत्र ने आचार्य के १० बाणों को आते देखकर अपने उतने ही तीक्ष्ण बाणों से काट डाला। बृहत्क्षत्र का यह दुष्कर कार्य देखकर कौरवदल के सैनिक बहुत विस्मित हुए। तब बृहत्क्षत्र की प्रशंसा करते हुए द्रोणाचार्य ने उनके ऊपर दिव्य ब्रह्मास्त्र छोड़ा। महाबाहु बृहत्क्षत्र ने भी फुर्ती के साथ दुर्जय ब्रह्मास्त्र को ब्रह्मास्त्र से ही शान्त कर दिया। उन्होंने फिर द्रोणाचार्य को सुवर्णपुङ्खयुक्त पैने साठ बाण मारे। तब वीरवर द्रोण ने बृहत्क्षत्र को घोर नाराच बाण मारा। वह बाण बृहत्क्षत्र के कवच को छिन्न-भिन्न करता हुआ वैसे ही पृथ्वी में घुस गया जैसे कोई काला नाग बिल में प्रवेश करे। आचार्य के बाणों की गहरी चोट खाने पर वीर बृहत्क्षत्र की आँखें क्रोध से लाल हो आईं। उन्होंने सत्तर तीक्ष्ण बाण आचार्य को और एक भयङ्कर बाण उनके सारथी को मर्मस्थल में मारा। बृहत्क्षत्र के बाणों से महारथी द्रोणाचार्य बहुत पीड़ित हुए। उन्होंने भी अनेक तीक्ष्ण बाण मारकर बृहत्क्षत्र को व्याकुल कर दिया। फिर चार बाणों से उनके चारों घोड़ों को और एक बाण २० से सारथी को रथ से गिरा दिया, अन्य दो बाणों से छत्र और ध्वजा काट डाली और एक भयानक नाराच बाण से बृहत्क्षत्र का हृदय फाड़ करके उन्हें रथ से गिरा दिया।

केकयराज वीर बृहत्क्षत्र के मारे जाने पर शिशुपाल के पुत्र धृष्टकेतु अत्यन्त कुपित होकर सारथी से बोले—हे सूत! सुदृढ़ कवचधारी आचार्य द्रोण जहाँ पर सारी केकय और पाञ्चाल-सेना का नाश कर रहे हैं वहाँ मेरा रथ ले चलो। यह सुनकर उनका सारथी काम्बोज देश के वेगगामी घोड़ों को हाँककर द्रोणाचार्य के पास रथ ले गया। महाबली चेदिराज धृष्टकेतु, आग में कूदने को तैयार पतङ्ग की तरह, मरने के लिए आचार्य के सामने पहुँचे। उन्होंने

आचार्य के रथ, ध्वजा और घोड़ों को ताककर साठ बाण मारे और आचार्य के ऊपर भी असंख्य तीक्ष्ण बाणों की वर्षा की। सोता हुआ बाघ जैसे छेड़ने से कुपित होता है वैसे ही महावीर द्रोण भी धृष्टकेतु के बाण-प्रहार से कुपित हो उठे। उन्होंने एक क्षुरप्र बाण से धृष्टकेतु के धनुष के दो टुकड़े कर डाले। तब धृष्टकेतु ने जल्दी से दूसरा धनुष लेकर कङ्कपत्रयुक्त बाण आचार्य को मारे। महावीर द्रोण ने चार बाणों से धृष्टकेतु के चारों घोड़े मारकर हँसते-हँसते उनके सारथी का सिर काट डाला। फिर धृष्टकेतु को तीक्ष्ण पचीस बाण मारे। तब महावीर धृष्टकेतु पत्थर की बहुत भारी सुवर्ण-भूषित भयानक गदा लेकर रथ से कूद पड़े। उन्होंने वह भयानक गदा आचार्य के ऊपर चलाई। वीर द्रोणाचार्य ने कुपित काली नागिन या कालरात्रि के समान उस गदा को, आते देख, बहुत से बाण मारकर फुर्ती के साथ काट डाला। द्रोणाचार्य के बाणों से टुकड़े-टुकड़े होकर उस गदा के पृथ्वी पर गिरने से बड़ा भारी शब्द हुआ। तब क्रोधविह्वल महावीर धृष्टकेतु ने उस गदा को व्यर्थ होते देख द्रोणाचार्य के ऊपर तीक्ष्ण तोमर और सुवर्णभूषित भयानक शक्ति फेंकी। द्रोणाचार्य ने पाँच-पाँच बाणों से तोमर और शक्ति को भी काट डाला। गरुड़ के काटे हुए साँपों के समान दोनों शस्त्र कटकर पृथ्वी पर गिर पड़े। इसके बाद प्रबल प्रतापी आचार्य ने धृष्टकेतु को मारने के लिए एक अत्यन्त तीक्ष्ण बाण छोड़ा। द्रोणाचार्य के उस बाण ने धृष्टकेतु का कवच तोड़कर हृदय विदीर्ण कर डाला। इस तरह धृष्टकेतु को मार करके वह बाण, कमलवन में घुसनेवाले हंस की तरह, पृथ्वी में घुस गया। भूखा नीलकण्ठ पक्षी जैसे क्षुद्र पतङ्ग को ग्रस लेता है वैसे ही महारण में शूर द्रोणाचार्य ने धृष्टकेतु को मार डाला।

३०

हे राजेन्द्र ! चेदिराज धृष्टकेतु के मारे जाने पर उनके पुत्र ने कुपित होकर द्रोणाचार्य का सामना किया। वह भी शूर और श्रेष्ठ अस्त्रों का जानकार था; किन्तु बली व्याघ्र जैसे हिरन के बच्चे को मार डालता है वैसे ही आचार्य ने हँसते-हँसते उसे भी मार डाला। हे कुरुराज !

४०

इस प्रकार पाण्डव-सेना को नष्ट होते देखकर महावीर जरासन्ध के पुत्र द्रोणाचार्य के सामने आये और मेघ जैसे सूर्य को छिपा लेते हैं वैसे ही उन्होंने बाणवर्षा से आचार्य को अदृश्य सा कर दिया। क्षत्रियमर्दन द्रोणाचार्य ने उसकी फुर्ती देखकर उस पर सैकड़ों-हज़ारों बाण बरसाये और सब धनुर्द्धर योद्धाओं के सामने ही जरासन्ध के पुत्र को मार डाला। हे नरनाथ! उस समय रणभूमि में जो-जो वीर योद्धा उन यम-सदृश द्रोणाचार्य से लड़ने के लिए सामने आते थे, उन सबको वे देखते ही देखते मार डालते थे। महाराज! इसके बाद वीर द्रोणाचार्य समरभूमि में अपना नाम सुनाकर हज़ारों-लाखों बाणों से पाण्डव-सेना को पीड़ित करने लगे। सिल्ली पर घिसकर तेज़ किये गये और द्रोणाचार्य के नाम से शोभित वे बाण सैकड़ों मनुष्यों, हाथियों और घोड़ों के प्राण हरने लगे। इन्द्र के हाथों से मारे जा रहे असुरों के समान आचार्य के हाथों मारे जाते हुए पाञ्चालसेना के वीरगण शीत से पीड़ित गायों की तरह डर से काँपने लगे।

हे भरतवंशावतंस! इस तरह आचार्य के बाणों से सब सेना का संहार होने पर पाण्डव-
५० पक्ष में कोलाहल सुन पड़ने लगा। एक तो सामने सूर्य का असह्य तेज, दूसरे द्रोणाचार्य के तीक्ष्ण बाणों की असह्य चोट का सामना था! पाञ्चालसेना के लोग बहुत ही व्याकुल और भय से विह्वल हो उठे। द्रोण के बाणों की वर्षा से पाञ्चालसेना के वीर महारथी ऐसे मोहित हो गये जैसे किसी ने उनके पैर पकड़ लिये हों। इसी समय चेदि, सृञ्जय, काशी और कोशल आदि देशों की सेनाओं के वीरगण द्रोणाचार्य से युद्ध करने के लिए आगे बढ़े। चेदि, पाञ्चाल, सृञ्जय आदि सब "द्रोण को मारो, द्रोण को मारो" कहते हुए आचार्य पर आक्रमण करने चले। वे सब वीर एकत्र होकर अपनी पूरी शक्ति से महातेजस्वी द्रोणाचार्य को मार डालने का यत्न करने लगे। उन्हें इस तरह अपने वध के लिए विशेष यत्न करते देखकर द्रोणाचार्य ने बाण बरसाना शुरू किया। उन्होंने दम भर में चेदि आदि वीरों को विनष्ट कर दिया। चेदिगण जिनमें प्रधान थे, उन वीरों का समूह क्षीण होने पर द्रोणाचार्य के बाणों से पीड़ित पाञ्चालगण डर से काँपने लगे। द्रोणाचार्य का उग्र रूप और भयानक कर्म देखकर सब सेना अपनी रक्षा के लिए महाबली भीमसेन और धृष्टद्युम्न को चिल्ला-चिल्लाकर पुकारने लगी। उस समय भीमसेन आप ही आप कहने लगे कि इन ब्राह्मण द्रोण ने अवश्य ही दुष्कर तप किया है तभी तो उसके प्रभाव से ये युद्ध में क्रुद्ध होकर हमारे पक्ष के श्रेष्ठ-श्रेष्ठ क्षत्रियों को मार रहे हैं। क्षत्रिय का धर्म युद्ध है और ब्राह्मणों का परम धर्म तपस्या। तपस्वी और कृत-
६० विद्य ब्राह्मण केवल दृष्टिपात से भस्म कर सकता है। अग्नि के समान तेजस्वी द्रोणाचार्य के अस्त्रों की आग में बहुत से प्रधान-प्रधान क्षत्रिय भस्म हो गये हैं। ये महातेजस्वी महारथी द्रोणाचार्य अपने बल, उत्साह और शक्ति के अनुसार सब प्राणियों को मोहित करते हुए हमारी सेना का संहार कर रहे हैं।

तब महाबली चेकितान ने आचार्य पर आक्रमण किया। —पृ० २४२३

राजन् ! भीमसेन के ये वचन सुनकर धृष्टद्युम्न के पुत्र महापराक्रमी महावीर क्षत्रधर्मा क्रोधान्ध द्रोणाचार्य के सामने पहुँचे। उन्होंने अर्धचन्द्र बाण से आचार्य का बाणयुक्त धनुष काट डाला। क्षत्रियदल-दलन द्रोणाचार्य ने और अधिक क्रोधित होकर दूसरा सुदृढ़ धनुष हाथ में लिया। बलवान् आचार्य ने शत्रुसेना को नष्ट करनेवाला एक बाण धनुष पर चढ़ाकर, कान तक खींचकर, क्षत्रधर्मा को मारा। वह बाण क्षत्रधर्मा के प्राण लेकर पृथ्वी में घुस गया। क्षत्रधर्मा का हृदय फट गया और वे मरकर पृथ्वी पर गिर पड़े। धृष्टद्युम्न के पुत्र की मृत्यु देखकर पाञ्चालसेना डर के मारे काँपने लगी। तब महाबली चेकितान ने आचार्य पर आक्रमण किया। उन्होंने आचार्य की छाती में तीव्र दस बाण मारे। फिर आचार्य के सारथी को चार और घोड़ों को भी चार बाण मारे। आचार्य ने भी उनकी छाती और हाथों में तीन तीव्र बाण मारकर सात बाणों से ध्वजा काट डाली। फिर तीन बाणों से सारथी को मार गिराया। सारथी के मरने पर चेकितान के घोड़े रथ को ले भागे। द्रोणाचार्य ने बाण मारकर घोड़ों को व्याकुल कर दिया। चेकितान को घोड़े-रथ-सारथी से हीन देख द्रोणाचार्य ने शूर चेदि, पाञ्चाल, सृञ्जय आदि को मारना और भगाना शुरू किया। उस समय साँवले वृद्ध द्रोणाचार्य—जिनकी अवस्था चार सौ वर्ष की थी और जिनके कानों तक के बाल पक गये थे—सोलह वर्ष के युवा की तरह फ़ुर्ती और उत्साह के साथ युद्ध कर रहे थे। निर्भय भाव से समरभूमि में विचरते हुए द्रोणाचार्य को उनके शत्रु इन्द्र समझ रहे थे। ७०

महाराज ! तब महाबाहु बुद्धिमान् द्रुपद राजा ने कहा—बाघ जैसे क्षुद्र मृगों को मारता है वैसे ही ये, लोभ के मारे दुर्योधन का पक्ष लेनेवाले, द्रोणाचार्य क्षत्रियों को मार रहे हैं। दुर्मति दुर्योधन मरकर नरक में घोर यातना भोगेगा; क्योंकि उसी के लोभ के कारण अकारण समर में वीर क्षत्रिय मारे जा रहे हैं। कटे हुए बैलों की तरह ये सब क्षत्रिय रक्त से नहाये हुए पृथ्वी पर पड़े हैं; कुत्ते और गीदड़ इन्हें खा रहे हैं। राजन् ! अक्षौहिणीपति राजा द्रुपद यों कहकर, पाण्डवों को आगे करके, तेज़ी के साथ द्रोणाचार्य पर आक्रमण करने चले। ७८

एक सौ छब्बीस अध्याय

युधिष्ठिर का घबराकर अर्जुन और सात्यकि का हाल जानने के लिए उनके पास भीमसेन को भेजना

सञ्जय कहते हैं—महाराज ! पाण्डवों के व्यूहों को द्रोणाचार्य ने इस तरह विमर्दित किया कि पाञ्चाल और सोमक लोग उनसे बहुत दूर चले गये। प्रलयकाल-तुल्य जगत् का नाश

करनेवाला लोमहर्षण युद्ध होने लगा। पराक्रमी आचार्य युद्धभूमि में वारम्वार सिंहनाद कर रहे थे। पाञ्चालों की सेना कम हो चली और पाण्डवों की सेना बहुत ही पीड़ित हुई। उस समय धर्मराज़ युधिष्ठिर को ऐसा कोई वीर न देख पड़ा, जो उनकी सेना की रक्षा करता। हे राजेन्द्र! वे बारम्बार यह सोचकर भी कुछ निश्चय न कर सके कि किस तरह उनकी सेना की रक्षा हो। इसके बाद अर्जुन को देखने के लिए व्याकुल होकर वे चारों ओर देखने लगे; किन्तु अर्जुन या श्रीकृष्ण न देख पड़े। केवल अर्जुन के रथ की वानरचिह्नयुक्त ऊँची ध्वजा देख पड़ी और गाण्डीव धनुष का भयानक शब्द सुनाई पड़ा। व्यथित युधिष्ठिर को महारथी सात्यकि भी नहीं देख पड़े। सात्यकि, अर्जुन और वासुदेव को न देखकर धर्मराज युधिष्ठिर बहुत ही चिन्तित हुए; उन्हें किसी तरह शान्ति नहीं मिलती थी। लोकापवाद से डरकर धर्मराज, सात्यकि के रथ की ओर देखते हुए, सोचने लगे कि मैंने मित्रों को अभय देनेवाले सत्यपराक्रमी सात्यकि को अर्जुन की ख़बर लाने के लिए भेज दिया है। पहले मुझे एक अर्जुन के लिए १० ही चिन्ता थी, पर अब मुझे सात्यकि और अर्जुन दोनों के लिए चिन्ता हो रही है। सात्यकि और अर्जुन दोनों के कुशल-समाचार मालूम होने चाहिएँ। अर्जुन की ख़बर लाने के लिए तो सात्यकि को भेजा था; अब सात्यकि की ख़बर लाने के लिए किसको भेजूँ? अगर मैं सात्यकि के कुशल-समाचार पाने का यत्न न करके अपने भाई अर्जुन की ही खोज करूँगा तो लोग मेरी निन्दा करेंगे। सो लोकापवाद के डर से मैं इस समय महाबली भीमसेन को सात्यकि का पता लगाने के लिए भेजूँगा। ऐसा न करने से लोग कहेंगे कि धर्मराज ने भाई की ख़बर लाने के लिए सात्यकि को तो भेज दिया, लेकिन उनकी ख़बर न ली। शत्रुनाशन अर्जुन मुझे जितने प्यारे हैं, उतने ही प्रिय वृष्णिवीर सात्यकि भी हैं। मैंने महावीर सात्यकि को बड़ा भारी काम सौंपकर भेजा है। वे भी मित्र के अनुरोध और अपने गौरव-लाभ का विचार करके, महासागर में मगर की तरह, शत्रुओं की भारी सेना के भीतर घुस गये हैं। महारथी सात्यकि के साथ ऐसे सैनिक युद्ध कर रहे हैं जो समर से पीछे नहीं हटते। यह उन्हीं का घोर कोलाहल सुन पड़ रहा है। अतएव मैं इस समय अवसर के अनुरूप कर्तव्य का निश्चय करके अर्जुन और सात्यकि के पास भीमसेन को भेजना ही ठीक समझता हूँ। इस लोक में ऐसा २० कोई कार्य नहीं जिसे महाबली भीमसेन न कर सकते हों। वे अकेले ही अपने बाहुबल के प्रभाव से पृथ्वी के सब वीरों से युद्ध कर सकते हैं। हम उन्हीं के बाहुबल के भरोसे वनवास के कष्टों से उबरकर लौटे हैं और अपराजित समझे जाते हैं। वही महाबली भीमसेन, अर्जुन और सात्यकि के पास जाकर, अवश्य उनकी सहायता कर सकेंगे। सात्यकि और अर्जुन दोनों ही सब प्रकार के अस्त्रों के ज्ञान में निपुण हैं; ख़ासकर श्रीकृष्ण उनके रक्षक हैं। उनके लिए तो किसी तरह चिन्ता करना उचित नहीं; किन्तु फिर भी मेरा मन उनकी कुशल जानने के लिए

बहुत उत्कण्ठित हो रहा है। अतएव सात्यकि की ख़बर लाने के लिए मैं इस समय भीमसेन को भेजूँगा। ऐसा करने से ही मैं सात्यकि के प्रति अपने कर्तव्य का पालन कर सकूँगा।

धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने मन में अपने कर्तव्य का निश्चय कर लिया और फिर सारथी से कहा—हे सूत! तुम इसी समय मेरे रथ को भीमसेन के रथ के पास ले चलो। अश्वविद्या-विशारद सारथी ने युधिष्ठिर के रथ को भीमसेन के पास पहुँचा दिया। घब-राये हुए राजा युधिष्ठिर ने वहाँ पहुँच-कर, ठीक अवसर जानकर, भीमसेन से कहा—"भाई! केवल एक रथ से जिन महावीर ने देवता, गन्धर्व, दैत्य आदि को जीत लिया था उन्हीं तुम्हारे भाई अर्जुन का कोई चिह्न नहीं देख पड़ता।" इतना कहकर शोक से व्याकुल राजा युधिष्ठिर अचेत-से हो गये। उनकी यह दशा देखकर भीमसेन ने कहा—हे धर्मराज! आपको इस तरह व्याकुल होते या घबराते मैंने कभी देखा या सुना नहीं। पहले वनवास आदि के समय, अत्यन्त दुःख के अवसरों पर, आप हमें समझाते और

३०

धैर्य देते थे। महात्मन्! उठिए उठिए, शोक करना छोड़िए। राजेन्द्र! आज्ञा कीजिए, मैं क्या करूँ? हे कुरुश्रेष्ठ! शोक न कीजिए। कहिए, क्या आज्ञा है? इस लोक में ऐसा कोई कार्य नहीं जिसे मैं आपके लिए न कर सकूँ।

[सञ्जय कहते हैं कि महाराज!] काले नाग की तरह साँसें लेते हुए युधिष्ठिर आँखों में आँसू भरकर मलिन मुख हो भीमसेन से कहने लगे—हे भीम! यशस्वी श्रीकृष्ण कुपित होकर शङ्ख बजा रहे हैं। उनके शङ्ख का जैसा शब्द सुन पड़ रहा है उससे मुझे जान पड़ता है कि तुम्हारे भाई अर्जुन संग्राम में मारे गये हैं। और, उनके मरने से क्रुद्ध होकर, स्वयं कृष्णचन्द्र शत्रुसेना से युद्ध कर रहे हैं। पाण्डवगण जिनके बल-वीर्य के भरोसे जीते हैं, जो वीर विपत्ति के समय हम लोगों का प्रधान सहारा हैं, उन पराक्रमी, मस्त हाथी के समान बलशाली, प्रिय-दर्शन अर्जुन को जयद्रथ-वध के लिए कौरवों की भारी सेना के भीतर प्रवेश किये बड़ी देर हुई;

परन्तु वे अभी तक नहीं लौटे। उनकी कुछ ख़बर भी नहीं मिली। यही मेरे शोक का कारण
४० है। महाबाहु अर्जुन और सात्यकि के लिए मेरा शोक, घी की आहुति पड़ने से आग के समान, बढ़ता जा रहा है। मुझे अर्जुन की ध्वजा नहीं देख पड़ती। इससे मैं शोकाभिभूत हो रहा हूँ। मुझे जान पड़ता है कि अर्जुन को निहत देखकर युद्धनिपुण श्रीकृष्ण स्वयं युद्ध कर रहे हैं। महारथी सात्यकि भी अकेले ही तुम्हारे भाई अर्जुन की ख़बर लेने गये हैं। उनके लिए भी मैं मोहित सा हो रहा हूँ। हे भीमसेन! मैं तुम्हारा बड़ा भाई हूँ। अगर मेरी आज्ञा का पालन करना तुम अपना कर्तव्य समझते हो, अगर मेरे प्रति तुम्हें श्रद्धा-भक्ति है, तो जहाँ अर्जुन और सात्यकि हैं वहाँ के लिए चल दो। सात्यकि को तुम अर्जुन से भी प्रिय समझो। वे महावीर मेरे हित के लिए अत्यन्त दुर्गम, साधारण लोगों के लिए अगम्य, बहुत ही भयानक मार्ग से अकेले ही अर्जुन के पास गये हैं। हे वीरश्रेष्ठ! तुम अभी जाओ। यदि वासुदेव, अर्जुन और सात्यकि कुशल से हों तो ज़ोर से सिंहनाद करके उसकी सूचना
४६ मुझको देना। [तुम्हारा सिंहनाद ही उसका इशारा होगा।]

एक सौ सत्ताईस अध्याय

धृतराष्ट्र के कई पुत्रों को मारकर भीमसेन का द्रोणाचार्य्य का रथ तोड़ डालना

भीमसेन ने कहा—हे धर्मराज! महावीर अर्जुन और श्रीकृष्ण जिस बढ़िया रथ पर बैठकर गये हैं उस पर पहले समय में ब्रह्मा, महेश्वर, इन्द्र और वरुण बैठते थे। इस कारण श्रीकृष्ण और अर्जुन के लिए रत्ती भर भी खटका नहीं है, तथापि मैं आपकी आज्ञा को मानकर उनके पास जाता हूँ। आप शोक न करें, मैं अभी उनके पास पहुँचकर उनके कुशल-समाचार दूँगा।

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! युधिष्ठिर से यों कहकर और धृष्टद्युम्न तथा अन्य मित्रों को युधिष्ठिर की रक्षा का भार सौंप करके महाबली भीमसेन शत्रुसेना की ओर बढ़े। उन्होंने परम प्रतापी धृष्टद्युम्न को सम्बोधन करके कहा—हे महाबाहो! तुम अच्छी तरह जानते ही हो कि महारथी द्रोणाचार्य धर्मराज को पकड़ने के लिए पूरा यत्न कर रहे हैं। इस समय उनकी रक्षा करना ही मेरा मुख्य काम है। अर्जुन के पास मेरे जाने की उतनी आवश्यकता नहीं; किन्तु धर्मराज मुझसे जाने के लिए कह रहे हैं। मैं उनकी आज्ञा को टाल नहीं सकता। बेखटके धर्मराज की आज्ञा मानना ही मेरा कर्तव्य है। इस कारण मैं अर्जुन और सात्यकि की ख़बर लेने जाता हूँ। अब तुम सावधान होकर रणभूमि में युधिष्ठिर की रक्षा करो; मैं वहाँ जाता हूँ जहाँ मरनेवाला जयद्रथ छिपा हुआ है। धर्मराज की रक्षा करना ही हम लोगों का आवश्यक कर्तव्य है।

'धर्मराज ने उन्हें गले से लगाकर उनका मस्तक सूँघा और आशीर्वाद दिया—पृ० २४५७

राजन् ! महावीर धृष्टद्युम्न ने भीमसेन के वचन सुनकर कहा—हे पार्थ ! तुम कुछ सोच-विचार न करो। जाओ, मैं तुम्हारी इच्छा के अनुसार धर्मराज की रक्षा करूँगा। मैं सच कहता हूँ, मेरे जीते जी द्रोणाचार्य किसी तरह धर्मराज को नहीं पकड़ सकेंगे। १०

कुण्डल, अङ्गद आदि गहनों से शोभित और ढाल-तलवार बाँधे हुए भीमसेन इस तरह धृष्टद्युम्न को युधिष्ठिर की रक्षा का काम सौंपकर, उनके चरणों में प्रणाम करके, जाने को तैयार हुए। धर्मराज ने उन्हें गले से लगाकर उनका मस्तक सूँघा और आशीर्वाद दिये। पूजित सम्मानित प्रसन्नचित्त ब्राह्मणों की प्रदक्षिणा करके आठ प्रकार के माङ्गलिक पदार्थों (अग्नि, गाय, सुवर्ण, दूब, गोरोचन, अमृत अर्थात् घी, अक्षत और दही) को छूकर भीमसेन ने कैरातक तीव्र मदिरा पी। उनकी आँखें लाल हो आईं और तेज दूना हो उठा। हवा उनके अनुकूल चलकर विजय की सूचना देने लगी। ब्राह्मणों ने विजय के लिए उनका स्वस्त्ययन किया। वे मन ही मन अपने को विजयी समझकर आनन्दित हो उठे। उनके अङ्ग में स्वर्णखचित मणि-मुक्तामण्डित महामूल्य लोहमय कवच होने से वे विद्युद्दाममण्डित मेघजाल के समान शोभा को प्राप्त हुए। पीले, लाल, सफ़ेद, काले आदि रङ्गों के चित्र-विचित्र कपड़े और कण्ठत्राण पहनने से वे इन्द्रधनुष से शोभित मेघ के समान जान पड़ने लगे।

इसी समय फिर पाञ्चजन्य शङ्ख का शब्द सुन पड़ा। धर्मराज युधिष्ठिर उस त्रिभुवन को डरा देनेवाले शङ्खनाद को सुनकर भीमसेन से कहने लगे—हे भीमसेन ! यह देखो, महात्मा २० वासुदेव का श्रेष्ठ शङ्ख पाञ्चजन्य पृथ्वी और अन्तरिक्ष को प्रतिध्वनित कर रहा है। अवश्य ही अर्जुन महाविपत्ति में पड़ गये हैं और श्रीकृष्ण कौरवों से युद्ध कर रहे हैं। आज अवश्य ही आर्या कुन्ती, द्रौपदी और सुभद्रा बन्धु-बान्धवों सहित ऐसी कठिन आपत्ति को, असगुनों के रूप में, देख रही होंगी। अतएव तुम चटपट यहाँ से जाओ। महावीर सात्यकि और अर्जुन को न देख पाने से मुझे सब ओर अँधेरा ही देख पड़ रहा है।

महाराज ! भाइयों के हितचिन्तक प्रतापी महावीर भीमसेन, इस तरह बड़े भाई के बार-बार व्याकुल होकर अनुरोध करने से, उसी समय गोह के चमड़े के अंगुलित्राण उँगलियों में पहनकर धनुष-बाण लेकर धनुष को वारम्वार बजाने लगे। उस समय भीमसेन ने दुन्दुभि और शङ्ख बजाकर सिंहनाद किया। इससे वीरों के भी हृदय दहल गये। भीमसेन अब युद्ध के लिए अपनी सेना से निकले। विशोक सारथी के द्वारा रथ में जोते गये, उत्साहपूर्ण, मन और हवा के सदृश वेग से जानेवाले घोड़े उनके रथ को ले चले। महावीर भीमसेन धनुष की ३० डोरी खींचकर बाण बरसाकर शत्रुपक्ष की सेना को मारते-भगाते और शस्त्रों के प्रहार से छिन्न-भिन्न करते हुए आगे बढ़ने लगे। इन्द्र के पीछे जानेवाले देवताओं के समान पाञ्चालगण और सोमक-गण भीमसेन के पीछे-पीछे जाने लगे। राजन् ! उस समय दुःशल, चित्रसेन, कुण्डभेदी, विविं-

शति, दुर्मुख, दुःसह, विकर्ण, शल, विन्द, अनुविन्द, सुमुख, दीर्घबाहु, सुदर्शन, वृन्दारक, सुहस्त, सुषेण, दीर्घलोचन, अभय, रौद्रकर्मा, सुवर्मा और दुर्विमोचन, ये सब आपके पुत्र असंख्य सेना और पैदल योद्धाओं को साथ लेकर भीमसेन की ओर दौड़े और उन्हें आगे न बढ़ने देने का प्रयत्न करने लगे। उन वीर राजकुमारों से घिरे हुए भीमसेन ने क्रोध-पूर्ण दृष्टि से उनकी ओर देखा और कुपित सिंह जैसे मृगों के झुंड पर झपटता है वैसे ही उन पर आक्रमण किया। मेघ जैसे सूर्यमण्डल को ढक लेते हैं वैसे ही उन वीरों ने दिव्य अस्त्र-शस्त्र बरसाकर भीमसेन को ढक दिया। महापराक्रमी भीमसेन बड़े वेग से उन्हें लाँघकर द्रोणाचार्य की सेना के सामने पहुँचे। अपने सामने की गज-सेना के ऊपर वे तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। उनके बाणों से छिन्न-भिन्न
४० हाथियों के दल चारों ओर भागने लगे। वन में शरभ (सिंह से भी बढ़कर जीवधारी) के गरजने से मृगों के झुण्ड जैसे डर जाते हैं वैसे ही भीमसेन के सिंहनाद और बाण-प्रहार से वे हाथी बहुत ही डर गये और भयानक शब्द करते हुए इधर-उधर भागने लगे।

महावीर भीमसेन इस तरह गज-सेना को लाँघकर बड़े वेग से द्रोणाचार्य की सेना के सामने दौड़े। तटभूमि जैसे महासमुद्र के वेग को रोकती है वैसे ही आचार्य ने भीमसेन को रोका और हँसकर उनके मस्तक में एक बाण मारा। मस्तक में आचार्य का बाण लगने से भीमसेन उस समय ऊर्ध्वरश्मि सूर्य के समान शोभायमान हुए।

द्रोणाचार्य ने, यह समझकर कि अर्जुन की तरह भीमसेन भी मेरा सम्मान करेंगे, उनसे कहा—हे भीमसेन! मैं तुम्हारा शत्रु हूँ। इस समय मुझे परास्त किये बिना तुम शत्रु-सेना के भीतर नहीं जा सकते। श्रीकृष्ण सहित अर्जुन मेरी अनुमति से इस व्यूह के भीतर गये हैं; किन्तु तुम किसी तरह नहीं जा सकते।

क्रोध से लाल आँखें किये और बारम्बार साँसें ले रहे भीमसेन ने गुरु द्रोणाचार्य के ये वचन सुनकर कहा—हे ब्राह्मण! अर्जुन तुम्हारी अनुमति से इस व्यूह के भीतर नहीं गये हैं। महापराक्रमी दुर्द्धर्ष अर्जुन इन्द्र की सेना के भीतर भी अपने बाहुबल से जा सकते हैं। और, जो उन्होंने तुम्हारी पूजा और सम्मान किया भी हो तो मैं वैसा नहीं कर सकता। मैं दयालु अर्जुन नहीं, तुम्हारा शत्रु भीमसेन हूँ। हे आचार्य! जब तुम हमारे पिता, गुरु और
५० हितैषी थे तब हम भी तुम्हारे पुत्र थे। उस समय हम प्रणत होकर तुम्हारा सम्मान करते थे; किन्तु अब तुम उसके विपरीत आचरण कर रहे हो और अपने को हमारा शत्रु बता रहे हो, इसलिए अब वह सम्बन्ध नहीं रहा। यदि तुम अपने को पाण्डवों का शत्रु मानते हो तो वही सही। यह देखो, भीमसेन तुम्हारे साथ शत्रु के योग्य कार्य ही करके दिखाता है। अब उन्होंने वैसे ही गदा घुमाकर द्रोणाचार्य के ऊपर फेंकी जैसे यमराज कालदण्ड को घुमावें। द्रोणाचार्य चटपट रथ से कूद पड़े। उस गदा के प्रहार से द्रोणाचार्य का रथ, ध्वजा, घोड़े

और सारथी सब चूर-चूर हो गया। महाराज! महाबली भीमसेन इस तरह आचार्य को रथ-हीन करके आपकी सेना को नष्ट करने लगे। प्रचण्ड आँधी जैसे वृक्षों को तोड़ती और गिराती है वैसे ही वायु के तुल्य पराक्रमी भीमसेन वेग से आपकी सेना को रौंदने और मारने लगे। तब अस्त्रधारियों में श्रेष्ठ आचार्य दूसरे रथ पर बैठकर व्यूह के द्वार की रक्षा करने लगे।

राजन्! उस समय आपके पुत्रों ने फिर भीमसेन को घेर लिया। महापराक्रमी भीमसेन क्रुद्ध होकर, सामने स्थित रथसेना को लक्ष्य करके, तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। आपके वीर पुत्रगण भीमसेन के बाणों से पीड़ित होकर भी जय की इच्छा से मैदान में जमे रहे और भीमसेन से भिड़कर घोर संग्राम करने लगे। तब दुःशासन ने कुपित होकर भीमसेन को मार डालने की इच्छा से उन पर, यमदण्ड के तुल्य, लोहे की उग्र रथशक्ति चलाई। महावीर भीम ने दुःशासन की फेंकी हुई शक्ति को आते देखकर उसके दो टुकड़े कर डाले। उन्होंने यह बहुत ही अद्भुत कार्य किया। भीमसेन ने क्रुद्ध होकर तीन तीव्र बाणों से कुण्डभेदी, सुषेण और दीर्घलोचन को मार डाला। फिर कुरुकुल की कीर्ति बढ़ानेवाले वीर वृन्दारक को मार गिराया। इसके बाद उन्होंने तीन बाणों से अभय, रौद्रकर्मा और दुर्विमोचन नाम के आपके तीन पुत्रों को यमपुर भेज दिया। महाबली भीमसेन के हाथों मारे जा रहे आपके पुत्र भी भीमसेन को चारों ओर से घेरकर उन पर उसी तरह तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे जिस तरह बरसात में मेघ पर्वतों पर जलधारा छोड़ते हैं। पर्वत की तरह अटल होकर पराक्रमी भीमसेन उस शिलावर्षा के तुल्य बाणवर्षा को सहने लगे। उन्हें उससे तनिक भी व्यथा नहीं हुई। इसके बाद भीमसेन ने हँसते-हँसते तीक्ष्ण बाणों से सुवर्मा, विन्द और अनुविन्द को मार डाला; फिर आपके पुत्र वीर सुदर्शन को भी उन्होंने तीक्ष्ण बाणों से मार गिराया। महापराक्रमी भीमसेन ने बहुत जल्द उस रथसेना को तीव्र बाणों से नष्ट कर दिया। कुछ योद्धा मर गये और कुछ भाग गये। तब भीमसेन के रथ के शब्द और सिंहनाद से डरकर बाणवर्षा से पीड़ित आपके पुत्र, सिंह के आगे से मृगों के समान, भागने लगे। भीमसेन ने कौरवों की उस विशाल सेना का पीछा किया और चारों ओर से कौरवों को बाणों से घायल करना शुरू कर दिया। उनके हाथों मारे जा रहे आपकी सेना के वीर योद्धा, उन्हें छोड़कर, वेग से अपने वाहनों को हाँकते हुए समरभूमि से भागने लगे। महाराज! महाबली भीमसेन इस तरह उन सबको जीतकर सिंह की तरह गरजने और ताल ठोंकने लगे। उस रथसेना को परास्त करके, वीरों को मारकर और रथियों को लाँघकर भीमसेन फिर द्रोणाचार्य की सेना की ओर वेग से चले। ७४

(margin verse numbers: ६०, ७०)

एक सौ अट्ठाईस अध्याय

अर्जुन को देखकर भीमसेन का सिंहनाद करना और उसे सुनकर
युधिष्ठिर का प्रसन्न होना

सञ्जय कहते हैं—राजन् ! द्रोणाचार्य ने भीमसेन को जब विशाल रथसेना लाँघकर आगे बढ़ते देखा तब उन्हें रोकने के लिए वे बाणों की वर्षा करने लगे। द्रोणाचार्य के धनुष से छूटे हुए बाणों को भीमसेन मानों पीते जाते थे। वे अपना बल प्रकट करके आपके पुत्रों को मोहित करते हुए उनकी ओर वेग से चले। तब राजा लोग बड़े-बड़े धनुष लेकर, आपके पुत्रों की प्रेरणा से, भीमसेन की तरफ़ बढ़े और घेरकर उन पर प्रहार करने लगे। उनसे घिरे हुए भीम, मुसकुराते हुए, गदा तानकर भयानक सिंहनाद करने लगे। शत्रुपक्ष को नष्ट करनेवाली गदा घुमाकर भीमसेन ने उन पर आक्रमण किया। भीमसेन की चलाई हुई, इन्द्र के वज्र के समान, भयङ्कर गदा रणभूमि में आपके सैनिकों को नष्ट करने लगी। महाशब्द से पृथ्वी को परिपूर्ण करती और तेज से प्रज्वलित वह गदा आपके पुत्रों को भयविह्वल करने लगी। आपके पक्ष के सब वीर योद्धा उस तेजोराशि गदा को अपने ऊपर गिरते देखकर आर्तनाद करते हुए चारों ओर भागने लगे। गदा का असह्य शब्द सुनकर रथी लोग इतने डर गये कि रथों पर से नीचे गिरने लगे। भीमसेन की गदा से मारे जा रहे आपके पक्ष के सैनिक,

सिंह को देखकर भागनेवाले मृगों के समान, डरकर भागने लगे। महापराक्रमी भीमसेन इस
१० तरह दुर्जय दुर्द्धर्ष शत्रुओं को भगाकर गरुड़ के समान वेग से उस सेना को लाँघ गये।

महावीर द्रोणाचार्य महान् महारथी भीमसेन को इस तरह सेना का संहार करते देखकर उनके सामने आये। बाण-वर्षा से भीमसेन को रोककर उन्होंने एकाएक पाण्डवों को

भय-विह्वल कर देनेवाला सिंहनाद किया। उस समय देवासुर-युद्ध के तुल्य द्रोणाचार्य और भीमसेन का घोर युद्ध होने लगा। आचार्य सुतीक्ष्ण बाणों से हज़ारों वीरों को मारने और गिराने लगे। तब भीमसेन अपने रथ से कूद पड़े और आँखें मूँदकर बड़े वेग से पैदल ही द्रोणाचार्य की ओर दौड़े। बड़ा भारी साँड़ जैसे सहज ही जल की वर्षा को सह लेता है वैसे ही द्रोणाचार्य के बाणों की कुछ परवा न करके भीमसेन आचार्य के पास पहुँच गये। कन्धे में सिर और छाती में दोनों हाथ रखकर मन, वायु और गरुड़ के समान वेग से दौड़कर भीमसेन ने द्रोणाचार्य के रथ का धुरा पकड़कर उसे उठाया और पटक दिया। उस रथ से आचार्य चटपट कूद पड़े। [रथ चूर्ण हो गया।] अब दूसरे रथ पर बैठकर आचार्य व्यूह के द्वार पर आ गये। भीमसेन ने गुरु को उत्साह-हीन भाव से आते देखकर फिर वही काम किया; अर्थात् अत्यन्त कुपित भीमसेन ने धुरा पकड़कर उस रथ को भी पटक दिया। महाराज! इस तरह महाबली भीमसेन ने, जैसे कोई बालक खेल करे वैसे, द्रोणाचार्य के आठ रथ चूर-चूर कर डाले; किन्तु द्रोणाचार्य फिर दम भर में अन्य रथ पर बैठकर आ जाते थे। आपके पक्ष के योद्धा लोग आश्चर्यपूर्ण दृष्टि से भीमसेन का यह अद्भुत काम देख रहे थे। इसी समय भीमसेन का सारथी फुर्ती के साथ घोड़ों को हाँककर उनके पास रथ ले आया। महाबली भीमसेन अपने रथ पर बैठकर बड़े वेग से आपके पुत्र की सेना को मारते हुए आगे चले। प्रचण्ड आँधी जैसे वृक्षों को तोड़ती और गिराती है वैसे ही युद्धभूमि में क्षत्रियों को मारते और सिन्धु का वेग जैसे वृक्षों की रुकावट को नहीं मानता वैसे ही शत्रुसेना को चीरते-फाड़ते महाबली भीमसेन आगे बढ़ने लगे। फिर कृतवर्मा के द्वारा सुरक्षित भोज-सेना के पास जाकर उसे भी उन्मथित करते हुए वे और आगे निकल गये। तल-शब्द से सब सेनाओं को डराते हुए महाबली भीमसेन ने वैसे ही सबको परास्त कर दिया जैसे बैलों के झुण्ड को सिंह मार भगाता है। भोज-सेना को लाँघकर काम्बोजों, दरदों तथा अन्य बहुत से युद्धनिपुण म्लेच्छों की सेना को मारते और लाँघते हुए भीमसेन ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ से उन्हें युद्ध कर रहे महारथी सात्यकि देख पड़े। महाबली भीमसेन वेग से रथ हाँककर आगे बढ़ने लगे। महाराज! अर्जुन को देखने के लिए उत्कण्ठित भीमसेन इस तरह आपके सब योद्धाओं को हराते और लाँघते हुए अर्जुन के पास पहुँच गये। उन्होंने देखा कि पराक्रमी अर्जुन, जयद्रथ को मारने के लिए, यत्नपूर्वक घोर युद्ध कर रहे हैं। वर्षाकाल के मेघ जैसे ज़ोर से गरजते हैं वैसे ही, अर्जुन को देखकर, भीमसेन भयानक सिंहनाद करने लगे। उस समय तेजस्वी भीमसेन का भयङ्कर सिंहनाद सुनकर, उन्हें देखने की इच्छा से, महावीर अर्जुन और श्रीकृष्ण बारम्बार गरजते हुए दो बली साँड़ों की तरह आगे बढ़ने लगे।

महाराज! भीमसेन और अर्जुन का सिंहनाद सुनकर इधर धर्मराज युधिष्ठिर बहुत ही प्रसन्न हुए और समर में अर्जुन की विजय की आशा करने लगे। मद-मत्त गजराज की तरह

भीमसेन का गरजना सुनकर धर्मात्मा युधिष्ठिर हँसकर मन में कहने लगे कि हे भीमसेन! तुमने गुरुजन की आज्ञा का पालन करके अर्जुन के कुशल-समाचार को मुझ तक पहुँचा दिया, इससे मेरी चिन्ता दूर हो गई। हे पाण्डव! जिनसे तुम शत्रुता रखते हो वे कभी युद्ध में विजय ४० नहीं पा सकते। बड़ी बात जो अर्जुन जीवित हैं। यह भी सौभाग्य की बात है कि सत्य-पराक्रमी सात्यकि कुशल से हैं। बड़ी बात जो मैं रणभूमि में श्रीकृष्ण और अर्जुन के गरजने का शब्द सुन रहा हूँ। इन्द्र को रण में जीतकर अग्नि को तृप्त करनेवाले और शत्रुओं का नाश करनेवाले अर्जुन रणभूमि में जीवित हैं, यह बड़े भाग्य की बात है। जिनके बाहु-बल के भरोसे हम लोग जीवित हैं वे रण में शत्रुसेना का नाश करनेवाले अर्जुन जीवित हैं, यह बड़े भाग्य की बात है। देवताओं के लिए दुर्जय निवातकवच दानवों को एक धनुष से जीतनेवाले अर्जुन जीवित हैं, यह बड़े भाग्य की बात है। विराट नगर में गोहरण के लिए आये हुए सब कौरवों को परास्त करनेवाले, चौदह हज़ार दुर्द्धर्ष कालकेय दानवों को महारण में बाहु-बल से मारने-वाले, दुर्योधन को छुड़ाने के लिए बली गन्धर्वराज को अस्त्रबल से जीतनेवाले, किरीटमाली, बलवान्, श्रीकृष्ण को अपना सारथी बनानेवाले, मेरे परम प्रिय अर्जुन जीवित हैं, यह बड़े सौभाग्य की बात है। पुत्र के मारे जाने के शोक से पीड़ित होकर महावीर अर्जुन ने दुष्कर कर्म करने की इच्छा से जयद्रथ के वध की प्रतिज्ञा की है। उनकी वह प्रतिज्ञा क्या सफल होगी? क्या वे युद्ध में जयद्रथ को मार सकेंगे? श्रीकृष्ण के द्वारा सुरक्षित अर्जुन सूर्य के अस्त होने से ५० पहले ही जयद्रथ को मारकर, प्रतिज्ञा पूर्णकर, क्या मुझसे आकर मिलेंगे? दुर्योधन का हितैषी राजा जयद्रथ अर्जुन के हाथों से मरकर अपने शत्रु पाण्डवों को क्या प्रसन्न करेगा? अर्जुन के बाणों से जयद्रथ को मरते देखकर राजा दुर्योधन क्या हम लोगों से सन्धि कर लेंगे? भीमसेन के हाथों अपने भाइयों को मरते देखकर मन्दमति दुर्योधन क्या हम लोगों से सन्धि करेंगे? अन्य बड़े-बड़े वीर योद्धाओं को मरकर पृथ्वी पर गिरते देख क्या मन्दमति दुर्योधन को पश्चात्ताप होगा? क्या केवल भीष्म पितामह की मृत्यु से हम लोगों का वैर शान्त हो जायगा? क्या बचे हुए वीरों की रक्षा करने के लिए दुर्योधन हमसे सन्धि कर लेंगे? महाराज! दयालु राजा युधिष्ठिर इधर इस तरह अनेक बातें सोच रहे थे और ५६ उधर कौरव और पाण्डव घोर संग्राम कर रहे थे।

एक सौ उन्तीस अध्याय

कर्ण का हारना और दुःशल का मारा जाना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! महावीर भीमसेन जब इस तरह मेघ-गर्जन के समान घोर सिंहनाद करने लगे तब किन शूरों ने उन्हें रोकने की चेष्टा की? काल की तरह युद्ध के लिए

गदा उठाकर खड़े हुए कुपित भीमसेन के आगे युद्धभूमि में खड़ा होनेवाला मुझे तो त्रिभुवन में कोई नहीं देख पड़ता। जो बाहुबलशाली भीमसेन रथ से रथ को और हाथी से हाथी को मार डालते हैं उनके आगे कौन ठहरेगा? साक्षात् इन्द्र भी तो उनके आगे ठहरने का साहस नहीं कर सकते। बतलाओ, साक्षात् काल के समान महावीर भीमसेन कुपित होकर जब, वन को जलाते हुए दावानल के समान, मेरे पुत्रों का संहार करने लगे तब दुर्योधन के हितचिन्तक किस-किस वीर ने सामने जाकर उन्हें रोकने का यत्न किया? हे सञ्जय! महावीर भीमसेन के बाहुबल से मैं जितना डरता हूँ उतना अर्जुन, श्रीकृष्ण, सात्यकि, धृष्टद्युम्न आदि से नहीं डरता। हे सञ्जय! मेरे पुत्रों को भस्म करने के लिए जलती हुई आग के समान क्रोध से प्रचण्ड भीमसेन को किन-किन योद्धाओं ने रोका? यह विस्तारपूर्वक मुझसे कहो। ८

सञ्जय ने कहा—राजन्! महाबली भीमसेन को सिंहनाद करते देखकर महारथी कर्ण घोर सिंहनाद करते हुए उनके सामने आये। उनसे युद्ध करने और रण में अपना बल-विक्रम दिखाने की इच्छा से कुपित होकर, बहुत बड़ा धनुष खींचकर, कर्ण ने भीमसेन की राह रोक ली। जैसे कोई बड़ा पेड़ हवा को रोकना चाहे वैसे ही कर्ण भी भीमसेन को रोकने की चेष्टा करने लगे। पराक्रमी भीमसेन वेग से आकर सामने कर्ण को देख बहुत कुपित हुए और उन पर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। महावीर कर्ण भी अपने तीव्र बाणों से उनके बाणों को व्यर्थ, और उन्हें पीड़ित, करने की चेष्टा करने लगे। वहाँ रथों और घोड़ों पर सवार जितने वीर योद्धा कर्ण और भीमसेन का युद्ध देख रहे थे वे उनकी तलध्वनि और सिंहनाद सुनकर काँपने लगे। भीमसेन का भयानक सिंहनाद सुनकर क्षत्रियों को मालूम पड़ा कि आकाश और पृथ्वीमण्डल उस सिंहनाद से परिपूर्ण हो रहा है। अब महापराक्रमी भीमसेन ने ऐसा घोर सिंहनाद किया कि सब योद्धाओं के हाथों से धनुष और शस्त्र गिर पड़े। कोई-कोई मर गये। डर के मारे बहुतों का मल-मूत्र निकल पड़ा। सब वाहन उदास हो गये। उस समय बहुत से घोर असगुन और उत्पात दिखाई पड़ने लगे। अन्तरिक्ष में गिद्धों और कङ्क पक्षियों के झुण्ड मँडराने लगे। १०

तब महाबली कर्ण ने बीस बाण भीमसेन को और पाँच बाण उनके सारथी को मारे। यह देखकर हँसते हुए भीमसेन ने कर्ण को चौंसठ बाण मारे। महावीर कर्ण ने फिर चार बाण मारे। महाप्रतापी भीमसेन ने ऐसी फुर्ती दिखाई कि अपने सन्नतपर्व बाणों से उन बाणों को राह में ही काट डाला। तब महावीर कर्ण ने असंख्य बाण बरसाकर भीमसेन को अदृश्य कर दिया। महाबली भीमसेन ने कर्ण की बाण-वर्षा में बारम्बार अपने को छिपते देखकर अत्यन्त कुपित हो उनके धनुष को काट डाला और फिर तीव्र बाण मारे। वीर कर्ण दूसरा धनुष लेकर, उस पर डोरी चढ़ाकर, फिर तीक्ष्ण बाणों से भीमसेन को पीड़ित करने लगे। कर्ण के बाणों की चोट से अत्यन्त क्रुद्ध होकर भीमसेन ने उनकी छाती में बड़े विकट तीन बाण मारे। छाती २०

में लगे हुए इन तीन बाणों से वीर कर्ण बड़े ऊँचे शिखरवाले त्रिशृङ्ग पर्वत के समान शोभायमान हुए। धातु की धाराएँ बहानेवाले पहाड़ से जैसे गेरू बहती है वैसे ही कर्ण के हृदय से रक्त बह चला। महापराक्रमी कर्ण ने इस तरह भीमसेन के भयानक प्रहार से अत्यन्त पीड़ित और
३० कुछ विचलित होकर, धनुष पर बाण चढ़ाकर, उन पर लगातार हज़ारों बाण बरसाये। कर्ण के बाणों से पीड़ित भीमसेन ने, क्रोध और गर्व के साथ, क्षुर बाण से कर्ण के धनुष की डोरी काटकर उनके सारथी को भल्ल बाण से मारा और रथ के घोड़ों को भी मार गिराया। बिना घोड़ों के रथ से कर्ण चटपट उतरकर वृषसेन के रथ पर चले गये।

महाराज! पराक्रमी भीमसेन इस तरह वीर कर्ण को हराकर मेघगर्जन के समान दारुण सिंहनाद करने लगे। धर्मराज युधिष्ठिर वह सिंहनाद सुनकर, कर्ण को परास्त समझ, बहुत ही प्रसन्न हुए। पाण्डवों की सेना में चारों ओर शङ्ख बजने लगे। कौरवदल के वीर भी शत्रुपक्ष का शङ्खनाद और कोलाहल सुनकर, उसके उत्तर में, सिंहनाद करने लगे। प्रबलप्रतापी वीर अर्जुन भी गाण्डीव धनुष की डोरी बजाने लगे और वासुदेव पाञ्चजन्य शङ्ख के शब्द से शत्रुओं के हृदय दहलाने लगे। किन्तु महावीर भीमसेन का भीषण सिंहनाद उन सब शब्दों को दबाकर योद्धाओं के कानों में प्रवेश करने लगा। इस समय कर्ण कुछ सुस्ती से और भीमसेन दृढ़ता
३६ से एक दूसरे पर फिर बाण बरसाने लगे।

एक सौ तीस अध्याय

द्रोणाचार्य और दुर्योधन का संवाद और दुर्योधन का युद्ध करना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! इस तरह सब सेना के भागने पर जयद्रथ की ओर अर्जुन को और उनके पीछे सात्यकि तथा भीमसेन को जाते देखकर आपके पुत्र दुर्योधन कर्त्तव्य के बारे में बहुत कुछ सोचते-विचारते हुए द्रोणाचार्य के पास गये। दुर्योधन का रथ बड़ी तेज़ी के साथ आचार्य के पास पहुँचा। दुर्योधन ने क्रोध-पूर्ण स्वर में घबराहट के साथ कहा—हे गुरुवर! अर्जुन, सात्यकि और भीमसेन हमारी सब सेना को मथकर और महारथियों को जीतकर सिन्धुराज जयद्रथ के पास पहुँच गये हैं। उन्हें कोई नहीं रोक सका। वे अपराजित होकर युद्ध कर रहे हैं और हमारी सेना का संहार किये डालते हैं। मान लीजिए कि महारथी अर्जुन आपके आगे से निकल गये और आप उन्हें रोक नहीं सके। किन्तु सात्यकि और भीमसेन किस तरह आपको लाँघकर व्यूह के भीतर चले गये? समुद्र के सूख जाने के समान इस असम्भव को सम्भव होते देख सब लोगों को बड़ा आश्चर्य हो रहा है। अर्जुन, सात्यकि और भीमसेन से आपके हारने का दृश्य देखकर लोग आपकी निन्दा कर रहे हैं। सबका कहना

दुर्योधन ने क्रोध-पूर्ण स्वर में घबराहट के साथ कहा। —पृ० २४६४

है कि धनुर्वेद के पूरे पण्डित द्रोणाचार्य को युद्ध में इन लोगों ने कैसे परास्त कर दिया ? इनसे आचार्य के हारने की वास्तविकता में सबको सन्देह है। मैं सचमुच बड़ा अभागा हूँ। ये तीनों महारथी जब आप जैसे वीर को लाँघकर व्यूह के भीतर चले गये हैं तब अवश्य ही इस संग्राम में मेरा विनाश होगा। जो होना था सो तो हो गया। अब सोचिए, आगे के लिए क्या प्रबन्ध हो। इस समय अच्छी तरह सोचकर सिन्धुराज की रक्षा का कोई उपाय कीजिए। १०

द्रोणाचार्य ने कहा—हे दुर्योधन ! सोचने को तो बहुत कुछ सोचा जा सकता है, किन्तु इस समय जो करना चाहिए सो सुनो। पाण्डवपक्ष के तीन महारथी हमारी सेना को लाँघकर आगे निकल गये हैं। पीछे उनका जैसा डर है, वैसा ही आगे भी भय है। किन्तु जहाँ पर अर्जुन और श्रीकृष्ण हैं वहीं अधिकतर भय की आशङ्का है। कौरवों की सेना को इस समय आगे से भी और पीछे से भी शत्रुओं ने घेर लिया है। मेरी राय में इस समय सब तरह से जयद्रथ की रक्षा करना सबसे आवश्यक है। हे तात ! क्रुद्ध अर्जुन से ही हमें हर तरह जयद्रथ की रक्षा करनी चाहिए। कठिनता यह है कि सात्यकि और भीमसेन भी अर्जुन की सहायता करने को जयद्रथ की ओर गये हैं। राजन् ! पहले शकुनि की सलाह मानकर तुमने सभा में जो द्यूतक्रीड़ा की थी उसी का यह फल अब प्राप्त हुआ है। उस समय सभा में हार-जीत कुछ नहीं हुई थी। इस समय हम लोग प्राणों की बाज़ी लगाकर जो जुआ खेल रहे हैं, इसी में असली हार-जीत होगी। पहले कुरु-सभा में शकुनि ने जिन पाँसों को लेकर खेल खेला था उन्हें वह पाँसे समझता था; किन्तु असल में वे पाँसे नहीं, दुर्द्धर्ष तीव्र बाण थे, जो इस समय बड़े-बड़े वीरों का नाश कर रहे हैं। महाराज ! उस समय जुआ नहीं हुआ था, असली जुआ इसी समय हो रहा है। कौरवों और पाण्डवों में बाज़ी लगी हुई है। सेना को गोटें, बाणों को पाँसे और जयद्रथ के जीवन को बाज़ी अर्थात् दाँव समझो। आज ही जुए की हार-जीत का फ़ैसला होगा। आज जयद्रथ के जीवन की बाज़ी लगाकर शत्रुओं के साथ जो जुआ खेला जा रहा है इसी पर तुम्हारी जीत या हार निर्भर है। महाराज ! हम लोग अपने जीवन का मोह छोड़कर रणभूमि में विधिपूर्वक जयद्रथ की रक्षा करेंगे। उनकी रक्षा में हमारी जय है और उनकी मृत्यु में हमारी हार। जहाँ पर महारथी लोग यत्नपूर्वक जयद्रथ की रक्षा कर रहे हैं वहाँ तुम भी झटपट जाओ और जयद्रथ की रक्षा करनेवालों की रक्षा करो। मैं इसी जगह रहकर पाञ्चाल, पाण्डव, सृञ्जय आदि की सेना को रोकूँगा और तुम लोगों की सहायता के लिए कुमक भेजूँगा। २०

महाराज ! द्रोणाचार्य की आज्ञा से राजा दुर्योधन उग्र कर्म करने के लिए उद्यत होकर, अपने अनुचरों के साथ, जयद्रथ के पास जाने के लिए शीघ्र आगे बढ़े। उसी समय अर्जुन के चक्ररक्षक पाञ्चाल-राजकुमार युधामन्यु और उत्तमौजा, सेना के बाहरी भाग को भेदकर, अर्जुन के पास जाने को बढ़े। अर्जुन जब आपकी सेना के भीतर घुसे थे तब वीर कृतवर्मा

ने इन चक्ररक्षकों को भीतर जाने नहीं दिया था। युधामन्यु और उत्तमौजा ने जब उधर जाने की राह न पाई तब बीच से जाने का इरादा छोड़कर, सेना के पार्श्वभाग को छिन्न-भिन्न करके, वे आपकी सेना के भीतर गये। दुर्योधन ने उन्हें पार्श्वभाग से अर्जुन के पास जाने के लिए तैयार देखकर रोका। बली दुर्योधन और उनके भाई शीघ्रता के साथ उन दोनों वीरों से घोर युद्ध करने लगे। महारथी क्षत्रिय-श्रेष्ठ युधामन्यु और उत्तमौजा ने भी धनुष तानकर दुर्योधन आदि का सामना किया। युधामन्यु ने कङ्कपत्रशोभित तीस बाण दुर्योधन को मारे। साथ ही बीस बाण उनके सारथी को और चार बाण घोड़ों को मारे। वीर दुर्योधन ने कुपित होकर एक बाण से युधामन्यु की ध्वजा काट डाली, एक बाण से धनुष काट डाला, एक भल्ल बाण से सारथी को मार गिराया और चार तीक्ष्ण बाण मारकर उनके रथ के चारों घोड़ों को विह्वल कर दिया। तब महावीर युधामन्यु ने क्रुद्ध होकर फुर्ती के साथ दुर्योधन की छाती में तीस बाण मारे। उत्तमौजा ने भी क्रोध करके सुवर्णभूषित बाणों से दुर्योधन के सारथी को मारकर गिरा दिया। वीर दुर्योधन ने कुपित होकर उत्तमौजा के दोनों पार्श्वरक्षकों, सारथी और चारों घोड़ों को मार डाला। इस तरह सारथी और घोड़ों के मरने पर महावीर उत्तमौजा फुर्ती के साथ अपने भाई युधामन्यु के रथ पर चले गये और बाणों की वर्षा करके दुर्योधन के घोड़ों को भगाने लगे। वे घोड़े उत्तमौजा के बाणों से पीड़ित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े और मर गये। उस समय युधामन्यु ने तीक्ष्ण बाण से दुर्योधन के तरकस और धनुष को काट डाला। तब पराक्रमी राजा दुर्योधन सारथी और घोड़ों से रहित रथ छोड़कर, गदा हाथ में लेकर, पाञ्चाल देश के दोनों वीरों पर झपटे। वे शत्रुविजयी क्रुद्ध दुर्योधन को गदा मारने के लिए आते देखकर चटपट रथ से उतर पड़े। दुर्योधन ने गदा के प्रहार से उनके सुवर्ण-मण्डित रथ को घोड़े, सारथी, ध्वजा आदि समेत चूर्ण कर डाला।

३०

४०

अब दुर्योधन महाराज शल्य के रथ पर चले गये। पाञ्चालदेश के दोनों राजकुमार भी अन्य रथों पर बैठकर अर्जुन के पास जाने के लिए आगे बढ़े। ४४

एक सौ इकतीस अध्याय

भीमसेन का कर्ण को परास्त करना

सञ्जय ने कहा—राजन्! इस तरह लोमहर्षण संग्राम छिड़ जाने पर सब सेना को व्याकुल देखकर महारथी कर्ण ने भीमसेन का सामना किया। जैसे वन में मस्त हाथी मस्त हाथी से भिड़ता है वैसे ही महावीर कर्ण भीमसेन से युद्ध करने के लिए उनकी ओर झपटे।

धृतराष्ट्र ने कहा—सञ्जय! अर्जुन के रथ के समीपवर्ती स्थान में महाबली भीमसेन और कर्ण से कैसा संग्राम हुआ? वीर कर्ण पहले भीमसेन से परास्त होकर भी फिर कैसे उनसे युद्ध करने गये? और भीमसेन को ही पृथ्वी में प्रसिद्ध महारथी कर्ण से लड़ने के लिए कैसे साहस हुआ? भीष्म और द्रोण के सिवा अगर धर्मराज युधिष्ठिर को किसी से डर है, तो महारथी कर्ण से ही। वे नित्य महारथी कर्ण के पराक्रम का ख़याल करके उनके डर से बरसों नींद भर सोने तक नहीं। उन्हीं अजय्य, पराक्रमी, समर से विमुख न होनेवाले श्रेष्ठ योद्धा कर्ण से भीमसेन ने निडर होकर कैसे युद्ध किया? महाबली कर्ण और भीमसेन ने परस्पर भिड़कर किस तरह कैसा युद्ध किया? पहले कुन्ती से कर्ण ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं अर्जुन के सिवा और किसी पाण्डव को नहीं मारूँगा और कर्ण को यह भी मालूम हो गया था कि पाण्डव उनके भाई हैं। फिर दयालु कर्ण ने भीमसेन से कैसे युद्ध किया? शूर भीमसेन ने १० ही कर्ण से होनेवाले अपने पहले के वैर को स्मरण करके किस तरह उनसे युद्ध करने का साहस किया? हे सञ्जय! मेरा पुत्र दुर्योधन सदा आशा किया करता था कि कर्ण अकेले ही सब पाण्डवों को संग्राम में परास्त कर देगा। मेरे मन्दमति पुत्र की जय की आशा कर्ण पर निर्भर है; मेरे पुत्रों ने कर्ण का ही भरोसा करके महारथी पाण्डवों से वैर किया था; उसी कर्ण से भीमसेन ने कैसा युद्ध किया? कर्ण के कारण होनेवाले अपने अनेक अपकारों का स्मरण करके भीमसेन ने उससे कैसा युद्ध किया? जिस पराक्रमी ने एक रथ से पृथ्वी को जीत लिया था और जिसने कवच और कुण्डल पहने हुए ही जन्म लिया था उसी कर्ण से भीमसेन ने किस तरह युद्ध किया? हे सञ्जय! उन दोनों ने किस तरह युद्ध किया और उनमें कौन विजयी हुआ, यह वृत्तान्त विस्तार के साथ मुझसे कहो।

सञ्जय कहते हैं—महाराज! भीमसेन कर्ण को छोड़कर अर्जुन और श्रीकृष्ण के पास जाने के लिए तैयार हुए। यह देखकर अत्यन्त क्रुद्ध होकर वीर कर्ण ने उनका पीछा किया।

बादल जैसे पहाड़ पर पानी बरसाते हैं वैसे ही वीर कर्ण भीमसेन के ऊपर कङ्कपत्रयुक्त तीक्ष्ण
२० बाण बरसाने लगे। कर्ण ने ज़ोर से हँसकर, लड़ने के लिए ललकारकर, भीमसेन से कहा—हे भीम! स्वप्न में भी सोचा नहीं जा सकता कि तुम शत्रुओं को पीठ दिखाओगे। फिर तुम अर्जुन को देखने की इच्छा से मेरे सामने से क्यों भागे जाते हो? हे वीर! यह कार्य कुन्ती के पुत्र के योग्य कदापि नहीं है। इसलिए मेरे सामने डटकर मुझ पर बाण चलाओ।

कर्ण की इस ललकार को महावीर भीमसेन न सह सके। वे अर्धमण्डल गति से घूमकर कर्ण से युद्ध करने लगे। महायशस्वी भीमसेन सब शस्त्रों के चलाने में निपुण, कवचधारी, द्वन्द्वयुद्ध करने को तैयार कर्ण के ऊपर सीधे जानेवाले बाणों की वर्षा करने लगे। कलह का अन्त करने की इच्छा से कर्ण को पहले मारकर औरों को भी मारने के लिए महाबली भीमसेन कर्ण के ऊपर उग्र बाण बरसाने लगे। श्रेष्ठ अस्त्रज्ञ कर्ण ने मत्त हाथी की तरह चलनेवाले भीमसेन की उस बाण-वर्षा को अपने अस्त्रों से रोक दिया। महाबाहु, अस्त्रविद्या में निपुण, आचार्य के समान धनुर्द्धर कर्ण बली भीमसेन से घोर युद्ध करने लगे। राजन्! अनादर की हँसी हँसकर कर्ण
३० ने क्रोध से विह्वल होकर युद्ध करते हुए भीमसेन का तिरस्कार किया। उस उपहास को भीमसेन न सह सके। उन्होंने अत्यन्त कुपित होकर सब वीरों के सामने ही, महागजराज के ऊपर अंकुश-प्रहार की तरह, कर्ण की छाती में पहले कई वत्सदन्त बाण मारकर फिर अत्यन्त तीक्ष्ण इक्कीस बाण मारे। तब महावीर कर्ण ने भीमसेन के स्वर्णजालभूषित, वायु के समान वेगगामी घोड़ों को पाँच-पाँच बाणों से घायल करके असंख्य बाणों से दम भर में भीमसेन के सारथी, रथ और ध्वजा को अदृश्य सा कर दिया। फिर चौंसठ बाणों से भीमसेन का सुदृढ़ कवच तोड़कर उनको मर्मभेदी बाण मारे। महाबाहु भीमसेन कर्ण के धनुष से छूटे हुए तीक्ष्ण बाणों के प्रहार का कुछ ख़याल न करके, बेधड़क होकर, कर्ण के बिलकुल पास पहुँच गये। उनके साँप-तुल्य उग्र बाण भीमसेन को तनिक भी व्यथा नहीं पहुँचा सके। अन्त को उन्होंने तीक्ष्ण
४० बत्तीस भल्ल बाण कर्ण के मर्मस्थलों में मारे। कर्ण ने भी क्रीड़ा करते-करते जयद्रथ-वध में सहायता पहुँचानेवाले भीमसेन को बाणजाल से छिपा दिया। कर्ण तो भीमसेन पर कोमल प्रहार करते थे, किन्तु भीमसेन पहले का वैर याद करके कर्ण पर कसकर प्रहार करते थे। कर्ण ने लापर्वाही दिखाकर भीमसेन का जो अपमान किया उसे वे नहीं सह सके। वे फुर्ती के साथ कर्ण के ऊपर असंख्य बाणों की वर्षा सी करने लगे। भीमसेन के छोड़े हुए वे बाण बोलनेवाले पक्षियों के समान चारों ओर से वीर कर्ण के ऊपर गिरने लगे। पतङ्गे जैसे आग के ऊपर छा जाते हैं वैसे ही भीमसेन के धनुष से निकले हुए उन सुवर्णपुङ्खयुक्त महावेगशाली बाणों ने चारों ओर से कर्ण को छा लिया। तब महारथी कर्ण ने भी उन बाणों को नष्ट करने के लिए असंख्य बाण बरसाये। महावीर भीमसेन ने विविध भल्ल बाणों के द्वारा कर्ण के

तीक्ष्ण बाणों को राह में ही काट डाला। कर्ण ने फिर असंख्य बाणों से भीमसेन को ढक दिया। उन बाणों से सब शरीर छिद जाने के कारण महावीर भीमसेन रणभूमि में काँटेदार स्याही (एक पशु) के समान जान पड़ने लगे। सूर्यदेव जैसे सहज में अपनी किरणों को धारण करते हैं वैसे ही भीमसेन को भी कर्ण के तेज़ बाण धारण करने में कुछ क्लेश नहीं हुआ। ५८
कर्ण के धनुष से छूटे हुए, सुवर्णपुङ्खयुक्त, सिल्ली पर रगड़कर तीक्ष्ण बनाये गये, बाण लगने से भीमसेन का शरीर रक्त से लथपथ हो गया और वे फूले हुए अशोक वृक्ष के समान शोभा को प्राप्त हुए। कर्ण का इस तरह लीलापूर्वक समर में विचरना भीमसेन से नहीं सहा गया। वे क्रोध से लाल आँखें करके गरजने लगे।

उन्होंने कर्ण को ताककर पचीस बाण मारे। शरीर में भीमसेन के बाण लगने से महावीर कर्ण तीव्र विषवाले नागों से घिरे हुए सफ़ेद पर्वत के समान शोभा को प्राप्त हुए। अब महावीर भीम ने कर्ण के मर्मस्थल में और चौदह बाण मारे। फिर उनका धनुष काटकर सारथी और घोड़ों को भी मार डाला। उन्होंने सूर्य के समान प्रभासम्पन्न तीक्ष्ण बाण कर्ण की छाती में भी मारे। सूर्य की किरणें जैसे मेघों को फाड़कर पृथ्वी पर गिरती हैं वैसे ही भीमसेन के चलाये हुए बाण कर्ण के शरीर को भेदकर गिर पड़े। राजन्! वीरता की डींग मारनेवाले महावीर कर्ण इस तरह भीमसेन के बाणों से घायल तथा धनुष और रथ से हीन हो जाने पर फुर्ती के साथ, दूसरे रथ की खोज में, उनके आगे से हट गये। ६९

एक सौ बत्तीस अध्याय

कर्ण और भीमसेन का फिर युद्ध

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! साक्षात् शङ्कर के शिष्य परशुराम हैं; उनका शिष्य कर्ण अस्त्रविद्या में उनके तुल्य या उनसे अच्छा होने पर भी सहज ही भीमसेन से हार गया। जिसके

बल पर मेरे पुत्रों को जय की आशा थी उसी कर्ण को भीमसेन के आगे रथ से भागते देखकर दुर्योधन ने क्या कहा ? महाबली भीमसेन ने इसके उपरान्त किस तरह युद्ध किया ? और रण-भूमि में भीमसेन को प्रज्वलित अग्नि के समान प्रचण्ड होते देखकर कर्ण ने ही क्या किया ?

सञ्जय बोले—महाराज ! महारथी कर्ण फिर विधिपूर्वक सुसज्जित अन्य रथ पर बैठकर, प्रचण्ड आँधी से उमड़े हुए महासागर की तरह, वेग से भीमसेन की ओर चले। उस समय कर्ण को कुपित देखकर आपके पुत्रों ने समझा कि भीमसेन अब आग में गिरे मनुष्य की तरह जीवित नहीं बच सकते। पराक्रमी कर्ण ने धनुष की डोरी बजाकर ताल ठोंके। अब वे भीमसेन के रथ की ओर चले। कर्ण और भीमसेन का घोर संग्राम होने लगा। एक दूसरे को मार डालने की इच्छा रखनेवाले दोनों वीर क्रोध से लाल आँखें करके परस्पर देख रहे थे। दोनों ही कुपित विषैले साँप की तरह साँसें ले रहे थे। परस्पर प्रहार करने से दोनों १० के शरीर छिन्न-भिन्न हो गये। वे दो कुपित व्याघ्रों की तरह, दो झपट रहे बाज़ों की तरह और दो क्रोधान्ध शरभों की तरह संग्राम करने लगे।

राजन् ! पहले द्यूतक्रीड़ा के समय, वनवास में, विराट नगर में रहते समय, और बहुरत्नपूर्ण राज्य हर लेने के कारण, पाण्डवों को क्लेश भोगने पड़े हैं; आपने ,अपने पुत्रों की सलाह से पुत्रों सहित तपस्विनी कुन्ती को लाक्षाभवन में जलाने का उद्योग किया था; आपने पाण्डवों को अनेक प्रकार के दुःख दिये हैं; आपके दुर्मति पुत्रों ने सभा में द्रौपदी को लाकर क्लेश दिये थे; दुःशासन ने भरी सभा में केश पकड़कर द्रौपदी का अपमान किया था; आपके सामने ही आपके पुत्रों ने द्रौपदी से यह कहकर कि "हे द्रौपदी, तुम अपना और पति चुन लो, समझ लो कि तुम्हारे पति हैं ही नहीं; खोखले तिल के तुल्य निकम्मे तुम्हारे पति पाण्डव नरकगामी (दुर्दशाग्रस्त) हो गये हैं !" उनका अपमान किया था; आपके पुत्रों ने द्रौपदी को दासीभाव से भोग करने की भी इच्छा की थी; मृगछाला धारण करके वन को जाते हुए पाण्डवों से भरी सभा में, आपके सामने ही, कर्ण ने असह्य दुर्वचन कहे थे; और आपके पुत्र दुर्योधन ने ,खुद अच्छी स्थिति में रहकर, हीन दशा को प्राप्त पाण्डवों को तृणतुल्य समझकर, क्रोध के वश होकर उछल-कूद की थी; सो ये सब बातें उस समय भीमसेन को स्मरण हो आईं। लड़कपन से अब तक मिले हुए दुःखों और २० क्लेशों का ख़याल करके शत्रुदमन धर्मात्मा भीमसेन मानों अपने जीवन से ऊब गये। वे सुवर्ण-पृष्ठ-शोभित भारी धनुष चढ़ाकर, जान पर खेलकर, कर्ण के सामने पहुँचे। कर्ण के रथ पर सुतीक्ष्ण असंख्य बाण बरसाकर भीमसेन प्राणपण से युद्ध करने लगे। उनकी बाण-वर्षा से सूर्य का प्रकाश छिप गया, अँधेरा सा छा गया। महारथी, महाबाहु, महाबली कर्ण ने हँसकर फुर्ती के साथ अपने तीक्ष्ण बाणों से भीमसेन के सब बाण काट डाले और फिर भीमसेन को नव उग्र

वाणों से घायल किया। अंकुश से लौटाये जा रहे गजराज की तरह कर्ण के वाणों से पीड़ित होकर भी भीमसेन न तो लौटे और न घबराये ही। उन्होंने दूने वेग से कर्ण पर आक्रमण किया। मस्त हाथी जैसे महाबाहु कर्ण ने समर के लिए अत्यन्त उत्सुक और मस्त हाथी के समान पराक्रमी भीमसेन को वेग से आते देखकर, उत्साह के साथ उनकी ओर बढ़कर, सैकड़ों नगाड़ों के समान गम्भीर शब्द उत्पन्न करनेवाला अपना श्रेष्ठ शङ्ख ज़ोर से बजाया। उस शब्द को सुनकर सेना प्रसन्नता प्रकट करने लगी। महावीर भीमसेन ने असंख्य हाथियों, घोड़ों, रथों और पैदलों से परिपूर्ण सेना में हलचल होते देखकर कर्ण को असंख्य वाणों से छा दिया। महावीर कर्ण ने भी भीमसेन को अपने वाणों से पीड़ित करके उनके सफ़ेद घोड़ों से अपने काले घोड़े मिला दिये। इस तरह कर्ण के रथ को भीमसेन के रथ के पास देखकर आपके पुत्र हाहाकार करने लगे। उन दोनों वीरों के, हवा के समान वेग से चलनेवाले, सफ़ेद और काले घोड़े परस्पर मिलकर आकाशमण्डल में स्थित सफ़ेद और काले बादलों के समान शोभायमान हुए। ३०

महाराज! तब कौरवदल के महारथी लोग भीमसेन और कर्ण को अत्यन्त कुपित देखकर मारे डर के काँपने लगे। यमपुरी के समान भयानक रणभूमि की ओर देखा नहीं जाता था। देखनेवाले महारथी योद्धा उन दोनों वीरों में से किसी की जय या पराजय का निश्चय नहीं कर सकते थे; वे लोग खेल की तरह टकटकी लगाकर यही देख रहे थे कि वे दोनों महायोद्धा परस्पर निकटवर्त्ती होकर किस तरह अस्त्रयुद्ध कर रहे हैं। राजन्! यह आपकी और आपके पुत्र की कुमन्त्रणा का फल है। उस समय शत्रुदल-दलन वे दोनों वीर परस्पर वध की इच्छा से जल बरसानेवाले मेघों के समान एक दूसरे पर वाण बरसाकर उनसे आकाशमण्डल को परिपूर्ण कर रहे थे। उनके सुवर्णपुङ्खयुक्त वाणों से जान पड़ता था कि आकाशमण्डल भयङ्कर उल्काओं से व्याप्त हो रहा है अथवा शरद्ऋतु में उड़नेवाले सारस गगनमण्डल की शोभा को बढ़ा रहे हैं। महाबली भीमसेन को इस तरह महारथी कर्ण से युद्ध करते देखकर श्रीकृष्ण और अर्जुन सोचने लगे कि भीमसेन पर यह भारी बोझ आ पड़ा है। कर्ण और भीमसेन के छोड़े हुए वाणों के दृढ़ प्रहार से मरे हुए घोड़े, हाथी और मनुष्य दूर-दूर पर जाकर गिर रहे थे। महाराज! गिरे हुए, गिरते हुए और मर रहे असंख्य मनुष्यों के नष्ट होने से आपकी सेना बहुत कम हो गई। हे भरतकुल-तिलक! क्षण भर में मरे हुए मनुष्यों, घोड़ों और हाथियों की लाशों के ढेर से रणभूमि पट गई। ४० ४७

को मिथ्या नहीं कर सकते। इसलिए आप लोग मुझे अनुमति दीजिए कि मैं अपनी जान लेकर अपने घर चला जाऊँ। आप लोगों का भला हो। मैं यहाँ से भागकर ग़ायब हो जाऊँगा तो पाण्डव मुझे यहाँ देख ही न पावेंगे।

डर और शङ्का से व्याकुल जयद्रथ को इस तरह विलाप करते देखकर अपन काम को ही श्रेष्ठ माननेवाले राजा दुर्योधन यों कहकर उन्हें दिलासा देने लगे—हे पुरुषसिंह, तुम डरो मत। इतने वीर क्षत्रियों के बीच में तुम रहोगे फिर कौन युद्धभूमि में तुम पर आक्रमण करने का साहस कर सकेगा? देखो मैं, वीर कर्ण, चित्रसेन, विविंशति, भूरिश्रवा, शल, शल्य, दुर्द्धर्ष वीर वृषसेन, पुरुमित्र, जय, भोज, काम्बोजराज सुदक्षिण, सत्यव्रत, महाबाहु विकर्ण, दुर्मुख, दुःशासन, सुबाहु, सशस्त्र कलिङ्गराज, अवन्ति देश के दोनों भाई विन्द और अनुविन्द, द्रोणाचार्यजी, अश्वत्थामा, शकुनि तथा और भी अनेक देशों के राजा लोग अपनी-अपनी सेना साथ लेकर तुम्हारी रक्षा करेंगे। तुम अपने मन से यह चिन्ता दूर कर दो। तुम ख़ुद भी तो श्रेष्ठ रथी और शूर हो। फिर क्यों पाण्डवों से इतना डर रहे हो? मेरी ग्यारह अक्षौहिणी सेना तुम्हारी रक्षा करने के लिए जी खोलकर युद्ध करेगी। हे वीर सिन्धुराज! तुम मत डरो।

सञ्जय कहते हैं—महाराज! सिन्धुराज जयद्रथ को इस तरह दिलासा देकर राजा दुर्योधन उन्हें साथ लिये हुए रात को ही द्रोणाचार्य के स्थान पर पहुँचे। आचार्य को प्रणाम करके दोनों बैठ गये। तब जयद्रथ ने विनीत भाव से कहा—हे आचार्य! निशाने पर बाण मारने, दूर तक बाण चलाने, फुर्ती और दृढ़ प्रहार करने में अर्जुन में और मुझमें क्या अन्तर है? आप कृपा करके मुझे बताइए। द्रोणाचार्य ने कहा—हे तात! अर्जुन और तुम दोनों ही मेरे शिष्य हो और मैंने दोनों को बाण-विद्या की एक सी शिक्षा दी है। किन्तु अर्जुन ने अधिक अभ्यास करके और कष्ट सहकर तुमसे अधिक निपुणता प्राप्त कर ली है। इसी कारण अर्जुन तुमसे सब बातों में बढ़कर हैं। परन्तु युद्ध में अर्जुन से तुम्हें बिलकुल न डरना चाहिए; क्योंकि इस डर से मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। मेरे बाहुबल से रक्षित पुरुष का देवता भी कुछ नहीं बिगाड़ सकते। मैं कल ऐसे व्यूह की रचना करूँगा, जिसे अर्जुन किसी तरह नहीं तोड़ सकेंगे। इसलिए तुम निडर होकर युद्ध करो। हे महारथी! अपने क्षत्रिय-धर्म का पालन करके बाप-दादे की राह पर चलो। तुमने विधिपूर्वक वेदों को पढ़ा है, तुम अग्निहोत्र करते हो और बहुत से यज्ञ भी कर चुके हो। तुम तो सब तरह कृतार्थ हो चुके हो। अब तुम्हें मृत्यु से न डरना चाहिए। अगर तुम अर्जुन से लड़कर मारे भी जाओगे तो मन्द मनुष्यों के लिए दुर्लभ और महाभाग्य से मिलनेवाले मनुष्य-शरीर का पाना सफल हो जायगा; तुम बाहुबल से जीते हुए दिव्य लोकों में जाओगे। अपने मन में ख़ूब समझ लो कि यादव, कौरव, पाण्डव, मैं और मेरा पुत्र कोई अमर नहीं है; सबको एक दिन मरना ही होगा। बली काल

ली। उन्होंने वज्र के समान भयानक वह शक्ति तानकर भीमसेन को मारी और घोर सिंह-नाद किया। वह सिंहनाद सुनकर दुर्योधन आदि आपके सब पुत्र बहुत प्रसन्न हुए। तब महावीर भीमसेन ने प्राणों की खोज सी कर रही, अग्नि और सूर्य के समान प्रभापूर्ण, बिना केंचुल के भुजङ्ग के समान भीषण, वह कर्ण की छोड़ी हुई शक्ति आते देखकर उसे आकाश में ही सात बाणों से काट डाला। वे कुपित होकर कर्ण के ऊपर मयूर-पत्र-शोभित, स्वर्णपुङ्ख-युक्त, सिल्ली पर रगड़कर तेज़ किये गये यमदण्ड-तुल्य असंख्य बाण बरसाने लगे। कर्ण भी सुवर्णपृष्ठयुक्त दूसरा धनुष लेकर, उस पर डोरी चढ़ाकर, भीमसेन को बाणवर्षा से पीड़ित करने लगे। उन्होंने नव तीक्ष्ण बाणों से कर्ण के सब बाण काटकर घोर सिंहनाद किया। २१

महाराज! इसी तरह वे दोनों वीर कभी गाय के लिए लड़नेवाले दो साँड़ों की तरह चिल्लाते थे और कभी मांस के लिए झगड़नेवाले दो सिंहों की तरह तर्जन-गर्जन करते थे। कभी एक दूसरे पर प्रहार करने को उद्यत होता था, कभी एक दूसरे पर वार करने का अवसर ढूँढ़ता था और कभी गोशाला में स्थित बड़े दो साँड़ों की तरह एक दूसरे की ओर ताकता था। दो मस्त हाथी जैसे भिड़कर एक दूसरे पर दाँत का प्रहार करते हैं वैसे ही लाल-लाल आँखें किये हुए वे दोनों योद्धा एक दूसरे पर बाणों की वर्षा करने लगे। राजन्! इसी तरह उन दोनों का घोर संग्राम होने लगा। वे दोनों वीर कभी हँसते, कभी झिड़कते और कभी शङ्ख बजाते थे। इसी बीच में महावीर भीमसेन ने कर्ण के धनुष की मूठ काट डाली। फिर उनके घोड़ों को भी नष्ट करके उनके सारथी को मारकर गिरा दिया। इस तरह भीमसेन के बाणों से धनुप कटने और सारथी तथा घोड़ों के मरने से महावीर कर्ण चिन्ता-सागर में मग्न हो गये। उनसे कुछ करते-धरते न बन पड़ा। ३०

महाराज! राजा दुर्योधन ने कर्ण को अत्यन्त सङ्कट में पड़े देखकर, क्रोधान्ध होकर, दुर्जय से कहा—भाई! देखते क्या हो? वीर कर्ण भीमसेन की बाण-वर्षा से अत्यन्त पीड़ित

एक सौ तैंतीस अध्याय

कर्ण के सहकारी दुर्जय का मारा जाना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! फुर्तीले महायोद्धा कर्ण से भीमसेन इस तरह युद्ध कर सके, यह सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा है। जो सम्पूर्ण शस्त्र धारण किये यक्ष, असुर, मनुष्यगण सहित देवताओं को भी समर में परास्त कर सकता है, अकेले ही उनका सामना कर सकता है, वही कर्ण भीमसेन को नहीं हरा सका ! हे सञ्जय, इसका क्या कारण है ? ख़ैर, अब तुम यह बताओ कि इन दोनों वीरों ने परस्पर प्राण-संशय उपस्थित करनेवाला घोर युद्ध कैसे किया ? मैं समझता हूँ कि इसी युद्ध के ऊपर दोनों पक्षों की हार-जीत निर्भर है। हे सञ्जय ! मेरा पुत्र दुर्योधन केवल कर्ण की सहायता के भरोसे पर ही श्रीकृष्ण और सात्यकि सहित सब पाण्डवों को जीतने का हौसला रखता है। किन्तु इस समय वारम्वार कर्ण को समर में भीमसेन से हारते सुनकर मैं निराशा से घबरा रहा हूँ। दुर्योधन के अन्याय से ही मेरे पक्ष का नाश होगा, यह स्पष्ट जान पड़ रहा है। हे सञ्जय ! वीर पाण्डवों को कर्ण कभी नहीं जीत सकेगा। कर्ण ने पाण्डवों से जब युद्ध किया है तभी उसने नीचा देखा है। इन्द्र सहित सब देवता भी पाण्डवों को नहीं जीत सकते; किन्तु मेरा मन्दमति पुत्र दुर्योधन यह बातें नहीं समझता ! शहद उतारनेवाला मूर्ख जैसे ऊपर चढ़कर अपने नीचे गिरने की सम्भावना पर ध्यान नहीं देता, वैसे ही कुबेर-सदृश धर्मराज के धन (राज्य) को हरकर उससे होनेवाले अपने १० विनाश को दुर्योधन नहीं देख पाता। कपटनिपुण दुर्योधन कपट के द्वारा पाण्डवों का राज्य हरकर यह समझता है कि वह विजयी है। यही समझकर वह पाण्डवों का अपमान करता है। स्थिर बुद्धि न रहने से मैंने भी, पुत्रस्नेह के वश होकर, धर्म पर चलनेवाले पाण्डवों से छल किया। दूरदर्शी युधिष्ठिर ने कुलक्षय के डर से ही पहले मेल कर लेना चाहा था; किन्तु मेरे पुत्रों ने उन्हें युद्ध करने में अशक्त समझकर उनकी बात नहीं मानी। पहले के अन्यायों और दुःखों को याद करके भीमसेन ने कर्ण से घोर युद्ध किया होगा। इसलिए हे सञ्जय ! तुम मुझसे कहो कि परस्पर वध करने के लिए उद्यत, श्रेष्ठ योद्धा, महाबली कर्ण और भीमसेन ने किस तरह कठिन संग्राम किया।

सञ्जय ने कहा—राजन् ! वन में भिड़नेवाले दो मस्त हाथियों की तरह परस्पर वध के लिए उद्यत महारथी कर्ण और महाबली भीमसेन ने जिस तरह युद्ध किया, सो सुनिए। महा-पराक्रमी कर्ण ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर, पराक्रम प्रकट करके, क्रोधान्ध भीमसेन को तीस बाण मारे। भीमसेन ने भी पैने बाणों से कर्ण का धनुष काटकर एक भल्ल बाण से उनके सारथी को मार डाला। सारथी मरकर रथ से नीचे गिर पड़ा। तब क्रोधान्ध होकर कर्ण ने कनक-वैदूर्यसमलङ्कृत, सुवर्णदण्ड से शोभित, कालदण्ड के समान प्राण हरनेवाली महाशक्ति हाथ में

हो रहे हैं। इसलिए तुम कर्ण की सहायता करने को तुरन्त जाओ और इस विना दाढ़ी-मूँछ के भीमसेन को मारो। हे नरनाथ! तब आपके पुत्र दुर्जय, बड़े भाई की आज्ञा मानकर,

४० वाण वरसाते हुए वेग से भीमसेन की ओर चले। दुर्जय ने भीमसेन को नव, घोड़ों को आठ और सारथी को छः वाण मारे। इस तरह भीमसेन को पीड़ित करके उनके रथ की ध्वजा में तीन वाण मारकर फिर तीक्ष्ण सात वाणों से भीमसेन को पीड़ित किया। इससे वे अत्यन्त कुपित हो उठे। उन्होंने पहले दुर्जय के सारथी, घोड़े और फिर दुर्जय को भी यमपुर भेज दिया। दुर्जय की मृत्यु से महावीर कर्ण वहुत दुःखित हुए। उनकी आँखों से आँसू वहने लगे। वे दिव्य आभूषणों से शोभित और पृथ्वी पर गिरकर साँप की तरह तड़प रहे दुर्जय के चारों ओर घूमने और शोक प्रकट करने लगे। अपने घोर वैरी कर्ण को रथ-हीन करके मुसकाते हुए महावली भीमसेन तीक्ष्ण वाण, शतघ्नी और शङ्कु आदि से वेतरह घायल करने लगे। शत्रुदमन

४५ महावीर कर्ण इस तरह कुपित भीमसेन के वाणों से पीड़ित होने पर भी युद्ध से नहीं हटे।

एक सौ चौंतीस अध्याय

भीमसेन के आगे से कर्ण का भागना

सञ्जय कहते हैं—राजन्! भीमसेन के वाणों से रथ-हीन और परास्त होने पर महावीर कर्ण तुरन्त दूसरे रथ पर वैठकर भीमसेन के सामने आये और उन्हें वाणों से पीड़ित करने लगे। दो मस्त हाथी जैसे भिड़कर एक दूसरे पर दाँतों का प्रहार करें वैसे ही वे दोनों वीर कानों तक तान-तानकर एक दूसरे को वाण मारने लगे। कर्ण ने भीमसेन के ऊपर वाण वरसाकर घोर सिंहनाद किया और फिर उनकी छाती में वाण मारे। भीमसेन ने भी कर्ण को पहले दस और फिर सत्तर तीक्ष्ण वाण मारे। महाप्रतापी कर्ण ने भीमसेन की छाती में नव वाण मारे और ध्वजा में एक वाण मारा। जैसे कोई हाथी को अङ्कुश या घोड़े को चावुक मारे वैसे ही भीमसेन ने कर्ण को तिरसठ वाण मारे।

इस तरह भीमसेन के वाणों की गहरी चोट खाने से कर्ण की आँखें लाल हो आईं। क्रोध के मारे ओठ चाटते हुए कर्ण ने भीमसेन को मार डालने के लिए, इन्द्र के छोड़े वज्र के समान, शरीर को विदीर्ण करनेवाला एक भयानक वाण मारा। वह विचित्र पुङ्खयुक्त वाण कर्ण के धनुष से छूटकर भीमसेन के शरीर को भेदकर पृथ्वी में घुस गया। तव महापराक्रमी भीमसेन ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर, कुछ भी विचलित हुए विना, एक वज्रतुल्य, चार हाथ की, छः पहलू-

११ वाली, लोहे की, सुवर्णशोभित भारी गदा लेकर कर्ण के ऊपर चलाई। इन्द्र ने जैसे वज्र से असुरों को मारा था वैसे ही कुपित भीमसेन ने उस गदा से कर्ण के वढ़िया घोड़ों को मार डाला। फिर महावाहु भीमसेन ने दो क्षुर वाणों से कर्ण की ध्वजा काटकर वाणों से सारथी

३० समान शोभा को प्राप्त हुए। मर्मभेदी नाराचों से अत्यन्त घायल भीमसेन के शरीर से, पहाड़ से झरने की तरह, बहुत सा रक्त बहा। तब भीमसेन ने क्रोधान्ध होकर, गरुड़ के समान वेग-शाली, तीन उग्र बाण कर्ण को मारे और सात बाणों से उनके सारथी को घायल कर दिया। भीमसेन के बाणों की चोट से अत्यन्त विह्वल और भयभीत होकर महायशस्वी कर्ण तेज़ी के साथ घोड़ों को हँकाकर रणभूमि से भाग गये। सुवर्णशोभित धनुष चढ़ाकर भीमसेन प्रज्वलित अग्नि ३१ के समान रणभूमि में विचरने लगे। कोई महारथी उनका सामना न कर सका।

एक सौ पैंतीस अध्याय

दुर्मर्षण आदि दुर्योधन के पाँच भाइयों का भीमसेन के हाथ से मारा जाना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! उस पौरुष को धिक्कार है जो किसी काम में नहीं आता! मुझे तो दैव (भाग्य) ही सबसे प्रबल जान पड़ता है; क्योंकि कर्ण जैसा महारथी योद्धा अकेले भीमसेन को नहीं परास्त कर सका! दुर्योधन के मुँह से बारम्बार मैंने सुना है कि कर्ण अकेले ही श्रीकृष्ण सहित सब पाण्डवों को हरा सकता है; कर्ण के समान दूसरा योद्धा पृथ्वी में मुझे नहीं देख पड़ता। मन्दमति दुर्योधन पहले मुझसे कहा करता था कि कर्ण बलवान्, शूर, दृढ़-धनुर्द्धर और युद्ध में कभी न थकनेवाला महारथी योद्धा है। वही कर्ण मेरा सहायक है। जिस समय कर्ण मेरा सहायक हो उस समय सब देवता भी मेरा सामना नहीं कर सकते, दीन पाण्डवों की तो कुछ बात ही नहीं। अब उसी कर्ण को भीमसेन से हारकर विषहीन साँप के समान युद्धभूमि से भागते देख दुर्योधन ने क्या कहा? अहो, दुर्योधन ऐसा मोहित हो गया कि उसने युद्धविद्या में कच्चे दुर्मुख को अकेले ही, अग्नि के मुँह में पतङ्ग की तरह, भीम-सेन के आगे लड़ने को भेज दिया! अश्वत्थामा, शल्य, कृपाचार्य और कर्ण, ये सब मिलकर भी पराक्रमी कुपित भीमसेन का सामना नहीं कर सकते! वे भी भीमसेन के दस हज़ार हाथियों के बल, महाघोर प्रकृति और उग्र निश्चय को जानने के कारण उनका सामना न करेंगे। क्रूर-कर्मा और अन्तक के तुल्य भीमसेन के क्रोध और बल-वीर्य को जाननेवाले अश्वत्थामा आदि वीरगण क्यों भीमसेन के क्रोध की आग भड़कावेंगे? एक महाबाहु कर्ण को ही अपने बल-१० वीर्य का ऐसा अभिमान था कि उसने भीमसेन को तुच्छ समझा और उनसे युद्ध किया। इन्द्र जैसे असुरों को जीतते हैं वैसे ही सेना सहित कर्ण को जिन भीमसेन ने बारम्बार परास्त कर दिया, उन्हें युद्ध में कोई नहीं जीत सकता। जो भीमसेन अर्जुन के पास जाने के लिए, द्रोणाचार्य ऐसे महारथी योद्धा को विमुख करके, मेरी सेना के व्यूह में घुस गये उनका सामना

करके कौन जीता बच सकता है ? या जीवन की इच्छा रखनेवाला कौन व्यक्ति उनका सामना कर सकता है ? वज्रपाणि इन्द्र के सामने दानवों के समान कौन शस्त्रधारी भीमसेन के आगे ठहर सकता है ? यमपुर में जाकर चाहे कोई मनुष्य लौट भी आवे, लेकिन कुपित भीमसेन के आगे जाकर कोई जीता नहीं लौट सकता। जो नासमझ लोग विमोहित होकर क्रुद्ध भीमसेन के ऊपर आक्रमण करने को गये वे, पतङ्ग जैसे आग में मरने के लिए कूदते हैं वैसे ही, मृत्यु के मुख में चले गये। उग्रप्रकृति भीमसेन ने कौरव-सभा में कुपित होकर मेरे सौ पुत्रों के मारने की जो प्रतिज्ञा की थी उसी का ख़याल करके, और कर्ण को परास्त देखकर, डर के मारे दुःशासन और दुर्योधन ने उस समय भीमसेन का सामना नहीं किया।

हे सञ्जय ! दुर्बुद्धि दुर्योधन ने कौरवसभा में गर्व के साथ बारम्बार कहा था कि मैं, कर्ण और दुःशासन, तीनों जने युद्ध में पाण्डवों को जीत लेंगे। किन्तु इस समय कर्ण को रथ-हीन और भीमसेन से परास्त देखकर, सन्धि का प्रस्ताव लेकर आये हुए श्रीकृष्ण को लौटा देने का ख़याल करके, उसे बड़ा पश्चात्ताप हो रहा होगा। अपने ही अपराध से युद्ध में भीमसेन के हाथों कवचधारी भाइयों की मृत्यु देखकर मेरा पुत्र मूढ़ दुर्योधन अवश्य पछता रहा होगा। २० जीवन की इच्छा रखनेवाला कौन पुरुष भीमशस्त्रधारी, साक्षात् काल के समान युद्धभूमि में खड़े हुए, क्रुद्ध भीमसेन के साथ भिड़ने जायगा ? मेरी समझ में तो यह आता है कि बाड़वानल के भीतर से चाहे कोई जीता निकल आवे, लेकिन भीमसेन के हाथ में पड़कर किसी तरह नहीं जीता बच सकता। पाण्डवगण, पाञ्चालगण, कृष्णचन्द्र और सात्यकि, ये लोग कुपित होकर जब युद्धभूमि में उपस्थित होते हैं तब प्राणों का मोह छोड़कर लड़ते हैं। अहो, सञ्जय ! इस समय मेरे पुत्रों के लिए जीवनसङ्कट उपस्थित है।

सञ्जय ने कहा—राजन् ! अब महाभय और लोकक्षय उपस्थित होने पर आप इस तरह शोक कर रहे हैं, किन्तु वास्तव में इस घोर अनर्थ की जड़ आप ही हैं। आपने ही पुत्रों का कहा मानकर यह युद्ध की प्रचण्ड आग सुलगाई है। जैसे मरनेवाला मनुष्य हितकर औषध को नहीं लेता वैसे ही उस समय आपके हितचिन्तकों ने जो उचित उपदेश दिये, उन्हें आपने स्वीकार नहीं किया। हे नरोत्तम ! न पचनेवाला कालकूट विष पहले आपने पिया है; अब उसका फल भोगिए। महाबली योद्धा लोग तो प्राणपण से युद्ध कर रहे हैं और आप उनकी व्यर्थ निन्दा कर रहे हैं। अब ध्यान देकर युद्ध का वृत्तान्त सुनिए, मैं वर्णन करता हूँ।

महाराज ! कर्ण को परास्त देखकर दुर्मर्षण, दुःसह, दुर्मद, दुर्द्धर और जय, ये पाँचों आपके पुत्र अत्यन्त कुपित हो उठे। पाँचों भाइयों ने वेग से जाकर चारों ओर से भीमसेन को घेर लिया। वे भीमसेन पर टीड़ीदल के समान असंख्य तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। उन देव- ३१ तुल्य सुन्दर सुकुमार राजकुमारों के बाणों की चोट को हँसते-हँसते भीमसेन ने सह लिया।

दुर्मर्षण आदि आपके पुत्रों को महाबली भीमसेन के सामने उपस्थित देखकर कर्ण फिर भीमसेन के सामने आये और उनके ऊपर सुवर्णपुङ्खयुक्त तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। महाराज! आपके पाँचों पुत्र भीमसेन को रोक रहे थे तथापि वे उनकी परवा न करके अपने प्रतिद्वन्द्वी कर्ण की ओर चले। तब आपके सब पुत्र कर्ण की रक्षा के लिए उन्हें चारों ओर से घेरकर भीमसेन के ऊपर सन्नतपर्वयुक्त तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करने लगे। यह देखकर भीमसेन क्रोध से विह्वल हो उठे। उन्होंने पचीस तीक्ष्ण बाणों से आपके पाँचों पुत्रों को, घोड़े और सारथी सहित, मारकर गिराया। सारथियों सहित पाँचों राजकुमार आँधी से टूटे हुए विचित्र पुष्पयुक्त वृक्षों की तरह रथों पर से गिर पड़े। उस समय हम लोगों ने भीमसेन का अद्भुत पराक्रम देखा। उन्होंने बाणों से कर्ण को भी

रोका और आपके पुत्रों को भी मार डाला। भीमसेन के तीक्ष्ण बाणों से विह्वल कर्ण ने अत्यन्त क्रोध की दृष्टि से उनको देखा। भीमसेन भी क्रोध से लाल आँखें करके, धनुष चढ़ाकर, बारम्बार कर्ण की ओर देखने लगे। ४०

एक सौ छत्तीस अध्याय

भीमसेन के हाथ से दुर्योधन के अन्य भाइयों का मारा जाना

सञ्जय ने कहा—राजन्! भीमसेन के बाणों से आपके पुत्रों को मारे जाते देखकर महारथी कर्ण बहुत ही कुपित हो उठे। उन्हें अपना जीवन भारी सा जँचने लगा। अपने ही सामने आपके पुत्रों का नाश होते देखकर उसके लिए वे अपने को ही अपराधी सा मानने लगे। उस समय महावीर भीमसेन पुराने वैर को स्मरण करके, क्रोधान्ध होकर, कर्ण के ऊपर

पूरा ज़ोर लगाकर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। कर्ण ने पहले पाँच बाण और फिर हँसते-हँसते सुवर्णपुङ्खशोभित तीक्ष्ण सत्तर बाण मारकर भीमसेन को पीड़ित किया। भीमसेन ने कर्ण के उन बाणों का कुछ भी ख़याल न करके उनको आनतपर्वयुक्त तीक्ष्ण सौ बाण मारे। फिर बहुत ही उग्र पाँच बाणों से कर्ण के मर्मस्थल में आघात करके एक भल्ल बाण से उनका धनुष काट डाला। इससे कर्ण बहुत ही उदास हो गये। वे अन्य धनुष लेकर असंख्य बाणों से भीमसेन को पीड़ित करने लगे। कर्ण के बाणों में भीमसेन छिप से गये। अब उन्होंने क्रुद्ध होकर कर्ण के सारथी और घोड़ों को मार डाला। फिर हँसते-हँसते बाणों से उनके सुवर्णमण्डित उस धनुष को भी काट डाला। महारथी कर्ण क्रोध से अधीर होकर रथ से उतर पड़े। उन्होंने भीमसेन के ऊपर एक गदा फेंकी। कर्ण की उस गदा को आते देखकर महाबली भीमसेन ने सब सैनिकों के सामने ही अविचलित भाव से बाण मारकर उस प्रहार को व्यर्थ कर दिया। फिर वे कर्ण को मारने के लिए उन पर लगातार हज़ारों बाण छोड़ने लगे। महापराक्रमी कर्ण ने अपने तीक्ष्ण बाणों से भीमसेन के सब बाणों को निष्फल कर दिया और फिर अपने उग्र बाणों से उनका सुवर्णशोभित सुदृढ़ कवच काट डाला। फिर सब योद्धाओं के सामने ही ताककर उनको पचीस बाण मारे। कर्ण की यह फुर्ती और धैर्य देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। १०

अब महावीर भीमसेन ने क्रोध से विह्वल होकर कर्ण को बहुत ही उग्र नव बाण मारे। वे बाण कर्ण के कवच को तोड़कर, दाहनी भुजा को भेदकर, वैसे ही पृथ्वी में घुस गये जैसे कुपित साँप बिल में घुस जाते हैं। इस तरह भीमसेन के बाणों से पीड़ित होकर महारथी कर्ण फिर समर से हट गये। यह देखकर राजा दुर्योधन ने अपने भाइयों से कहा—हे वीरो! तुम लोग झटपट यत्नपूर्वक कर्ण के रथ के पास जाकर उनकी सहायता करो। महाराज! तब आपके पुत्र चित्र, उपचित्र, चित्राक्ष, चारुचित्र, चित्रायुध और चित्रवर्मा, ये बड़े भाई की आज्ञा से, बाण बरसाते हुए भीमसेन की ओर दौड़े। महावीर भीमसेन ने उनके पहुँचने के पहले ही एक-एक बाण से उन सबको मार डाला। वे लोग उसी समय, आँधी से टूटे पेड़ों की तरह, पृथ्वी पर मरकर गिर पड़े। आपके महारथी पुत्रों का विनाश होते देखकर महावीर कर्ण आँखों में आँसू भरकर विदुर के वचनों को स्मरण करने लगे। इसके बाद विधिपूर्वक सुसज्जित अन्य रथ पर बैठकर वे तुरन्त युद्ध करने को भीमसेन के सामने आये। उस समय वे दोनों महावीर सुवर्णपुङ्ख, सुशाणित, उग्र बाणों से एक दूसरे को पीड़ित करने लगे। दोनों ही सूर्य की किरणों से युक्त दो मेघों के समान शोभा को प्राप्त हुए। इसके बाद महाबली भीमसेन ने क्रोधित होकर महातीक्ष्ण छत्तीस भल्ल बाणों से कर्ण का कवच काट डाला। महारथी कर्ण ने भी उनको अत्यन्त तीव्र पचास बाण मारे। तब वे रक्तचन्दन-चर्चित दोनों वीर बाणों के घावों से बहुत ही शोभित हुए। उस समय वे उदय को प्राप्त २०

चन्द्रमा और सूर्य के समान जान पड़ने लगे। उस समय उनके कवच छिन्न-भिन्न और शरीर रक्त से लिप्त होने के कारण वे केंचुल छोड़े हुए दो महानागों के समान जान पड़ने लगे।

अब वे दोनों वीर दाँतों से काटने के लिए उद्यत दो व्याघ्रों की तरह और जलधारा बर-
३० सानेवाले दो मेघों की तरह परस्पर बाणवर्षा करने लगे। जिस तरह दो गजराज भिड़कर एक दूसरे के शरीर को दाँतों से चीर-फाड़ डालते हैं, वैसे ही वे बाणों के प्रहार से एक दूसरे के शरीर को छिन्न-भिन्न करने लगे। वे कभी सिंहनाद, कभी बाणों की वर्षा, कभी क्रीड़ापूर्वक युद्ध, कभी क्रोधपूर्ण दृष्टिपात और कभी मण्डलाकार गति से रथ घुमाते हुए घूम रहे थे। सिंह-सदृश पराक्रमी वे दोनों महावीर गाय के लिए उत्सुक दो साँड़ों की तरह ज़ोर से गरजते तथा इन्द्र और राजा बलि की तरह घोरतर संग्राम करते थे। महावीर भीमसेन भयानक धनुष खींचकर बिजली से शोभित मेघ के समान समरभूमि में शोभा को प्राप्त हुए। उन्होंने जलधारा के समान सुवर्णपुङ्खयुक्त बाणों की लगातार वर्षा से पर्वत-सदृश कर्ण को ढक दिया। उनके धनुष का शब्द वज्र की कड़क के समान सुनाई पड़ने लगा। राजन्! उस समय आपके पुत्रगण आश्चर्य के साथ भीमसेन के अद्भुत बलवीर्य को देखने लगे। महावीर भीमसेन अर्जुन, श्रीकृष्ण, सात्यकि और चक्ररक्षक युधामन्यु तथा उत्तमौजा को आनन्दित करते हुए कर्ण के साथ भयानक युद्ध करने लगे। राजन्! भीमसेन के असाधारण पराक्रम, बाहुबल और धैर्य को
४० देखकर आपके पुत्र बहुत ही उदास हो गये।

एक सौ सैंतीस अध्याय

दुर्योधन के अन्य भाइयों का भीमसेन के हाथों मारा जाना

सञ्जय ने कहा—राजन्! मस्त हाथी जैसे अपने प्रतिद्वन्द्वी गजराज के गर्जन को सह नहीं सकता वैसे ही कर्ण भी भीमसेन की प्रत्यञ्चा के शब्द को सह नहीं सके। वे क्षण भर भीमसेन के पास से हटकर, उनके बाणों से मरे हुए आपके पुत्रों को देखकर, अत्यन्त खिन्न हो गये। इसके बाद वे फिर भीमसेन से भयानक युद्ध करने लगे। उनकी आँखें क्रोध से लाल हो आईं। वे फुफकार मारनेवाले विषैले नाग की तरह गरम साँसें लेने और बाणों की वर्षा करने लगे। उस समय उनकी शोभा किरणें फैला रहे सूर्य के समान हुई। महावीर भीमसेन भी सूर्य की किरणों के समान बाण बरसाकर कर्ण को इस तरह व्याप्त करने लगे जिस तरह पहाड़ को सूर्य किरणों से ढक लेते हैं। पक्षी जैसे वृक्ष के कोटर में घुसते हैं वैसे ही मयूरपुच्छशोभित कर्ण के छोड़े हुए बाण भीमसेन के अङ्गों में धँसने लगे। उस समय कर्ण के धनुष से छूटे हुए सुवर्णपुङ्खयुक्त बाण लगातार चारों ओर से गिरकर क़तार बाँधे हुए

हंसों के समान दिखाई पड़ने लगे। ऐसा जान पड़ने लगा कि कर्ण के बाण केवल धनुष से ही नहीं, बल्कि उनके ध्वज, छत्र, ईषामुख और रथ के अन्यान्य सामानों से लगातार निकल रहे हैं। इस तरह महावीर कर्ण ने, जीवन का मोह छोड़कर, वेगशाली सुवर्णमय बाण बरसाकर आकाशमण्डल को व्याप्त कर दिया। तब महाबली भीमसेन ने अपने बाणों से कर्ण के चलाये हुए बाणों को छिन्न-भिन्न कर दिया और कर्ण को तीक्ष्ण बीस बाण मारे। कर्ण ने पहले भीमसेन को जैसे बाणों से ढक दिया था वैसे ही भीमसेन ने कर्ण को बाणों से छिपा दिया। राजन्! तब आपके पक्ष के वीर और चारणगण भीमसेन का पराक्रम देखकर, परम सन्तुष्ट हो, उन्हें धन्यवाद देने लगे। उस समय कौरवपक्ष के भूरिश्रवा, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, शल्य, जयद्रथ और पाण्डवपक्ष के युधामन्यु, उत्तमौजा, सात्यकि, श्रीकृष्ण और अर्जुन, ये दस महारथी भीमसेन को धन्य-धन्य कहकर सिंहनाद करने लगे। समरभूमि में चारों ओर लोमहर्षण कोलाहल सुनाई पड़ने लगा। ९

हे कुरुराज! तब आपके पुत्र राजा दुर्योधन ने फुर्ती के साथ अपने भाइयों से कहा—भाइयो! तुम्हारा भला हो। तुम तुरन्त कर्ण की सहायता करने का यत्न करो। उनके पास जाओ और कुपित भीमसेन से उनकी रक्षा करो। तुम सहायता नहीं करोगे तो अवश्य ही भीमसेन के तीव्र बाणों से कर्ण का प्राणान्त हो जायगा। महाराज! तब आपके सात पुत्र, बड़े भाई दुर्योधन की आज्ञा से, कुपित होकर, भीमसेन की ओर वेग से चले और बाणवर्षा से उन्हें रोकने की चेष्टा करने लगे। वर्षा ऋतु में मेघ जैसे जलधाराओं से पर्वत को ढक लेते हैं २० वैसे ही उन्होंने बाणवर्षा से भीमसेन को अदृश्य सा कर दिया। प्रलयकाल में सात ग्रह जैसे चन्द्रमा को पीड़ित करते हैं वैसे ही वे सातों महारथी भाई वीर भीमसेन को पीड़ित करने लगे। महावीर भीमसेन को पिछले वैर का स्मरण हो आया। उन्होंने क्रोधान्ध होकर दृढ़ मुष्टि से शोभित धनुष को खींचा और सूर्यकिरण-सदृश सात उग्र बाण छोड़े। जिस समय भीमसेन ने धनुष पर बाणों को चढ़ाकर खींचा उस समय ऐसा जान पड़ा मानों वे आपके पुत्रों के प्राणों को खींच रहे हैं। भीमसेन के छोड़े हुए वे सुवर्णपुङ्खयुक्त पैने बाण सातों भाइयों के शरीरों को चीरकर, उन्हें प्राणहीन करके, रक्त-पान करके आकाश में गरुड़ पक्षियों के समान शोभायमान हुए। रक्त से भीगे हुए पङ्खवाले उन बाणों के प्रहार से हृदय फट जाने के कारण मरकर आपके सातों पुत्र पृथ्वी पर गिर पड़े। उनके गिरते समय ऐसा जान पड़ा मानों पर्वत के शिखर पर उत्पन्न बड़े-बड़े वृक्षों को किसी हाथी ने तोड़कर गिरा दिया हो। राजन्! इस तरह शत्रुञ्जय, शत्रुसह, चित्र, चित्रायुध, दृढ़, चित्रसेन और विकर्ण, ये आपके सात पुत्र मारे गये। उनमें से विकर्ण पाण्डवों को बहुत प्रिय थे। विकर्ण के शोक से अत्यन्त व्याकुल ३० होकर भीमसेन कहने लगे—भाई विकर्ण! मैंने युद्ध में तुम सौ भाइयों को मारने की प्रतिज्ञा

की थी। उसी प्रतिज्ञा की रक्षा करने के लिए आज, अप्रिय होने पर भी, मुझे तुम्हारा वध करना पड़ा। तुम क्षत्रिय-धर्म के अनुसार युद्ध करने आये और इसी कारण मारे गये। हा! युद्ध का धर्म बड़ा ही निष्ठुर है। हम पाण्डवों के, विशेष कर राजा युधिष्ठिर के, तुम हित-चिन्तक थे। न्याय से हो या अन्याय से, चाहे जिस तरह, तुम्हारा वध मुझे करना ही पड़ा। बृहस्पति के तुल्य अगाध बुद्धिवाले परम पूज्य पितामह भीष्म भी मारे जाकर पृथ्वी पर पड़े हैं। इसी से कहना पड़ता है कि युद्ध बड़ा ही निष्ठुर काम है।

सञ्जय कहते हैं—महाराज! कर्ण के सामने ही इस तरह आपके सात पुत्रों को मार-कर भीमसेन घोर सिंहनाद करने लगे। उनका सिंहनाद सुनने से धर्मराज युधिष्ठिर को पता लग गया कि हमारी विजय हो रही है। इससे उन्हें परम आनन्द हुआ। पाण्डवपक्ष में बाजे बजाकर भीमसेन के सिंहनाद का उत्तर दिया गया। धर्मराज युधिष्ठिर इस तरह महा-वीर भीमसेन का इशारा पाकर प्रसन्नतापूर्वक शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ आचार्य की ओर आक्रमण

४० करने के लिए चले। इधर राजा दुर्योधन अपने इकतीस भाइयों की मृत्यु देखकर, शोकाकुल होकर, सोचने लगे कि महामति विदुर ने ठीक ही कहा था। इस तरह सोच-विचार में पड़-कर राजा दुर्योधन किङ्कर्त्तव्यविमूढ़ से हो गये।

राजन्! आपके पुत्र दुर्मति दुर्योधन और दुरात्मा कर्ण ने द्यूतक्रीड़ा के समय भरी सभा में द्रौपदी को लाकर, उनको सम्बोधन करके आपके, सब पाण्डवों के और कौरवों के सामने कहा था कि "हे द्रौपदी! पाण्डवों को तुम मरा हुआ समझो; वे सदा के लिए नरकगामी हो गये हैं। इसलिए अब तुम किसी और को अपना पति पसन्द कर लो।" महाराज! अब उन कठोर वचनों के फल को भोगने का समय उपस्थित हुआ है। आपके पुत्रों ने वीर पाण्डवों को खोखले तिल, निःसार आदि कटु वचन कहकर उनके हृदय में जो क्रोध की आग भड़काई थी, उस क्रोधाग्नि को तेरह बरस बाद प्रचण्ड करके भीमसेन आपके पुत्रों के प्राण ले रहे हैं। महामति विदुर बहुत कुछ समझा-बुझाकर, विलाप करके भी, आपको शान्ति के पक्ष में नहीं ला सके। इस समय आप अपने पुत्रों के साथ विदुर की बात न मानने का फल भोगिए। आपने स्वयं वृद्ध, धीर, विचक्षण और तत्त्वदर्शी होकर भी दैवविडम्बना-वश अपने हितचिन्तकों के हितवचन नहीं सुने। अब शोक करना वृथा है। मुझे जान पड़ता है कि अपनी दुर्नीति के

५० कारण आप अपने पुत्रों के विनाश का कारण बने हैं। हे कुरुनायक! महावीर विकर्ण और चित्रसेन आदि आपके जो महाबली पुत्र भीमसेन के आगे पड़े वे यमपुर को चले गये। आपके

५३ ही कारण मुझे, भीमसेन और कर्ण के बाणों से, हज़ारों वीर सैनिकों का संहार देखना पड़ा।

———

एक सौ अड़तीस अध्याय

भीमसेन और कर्ण का युद्ध

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! मुझे जान पड़ता है कि इस बार में मेरा ही बड़ा भारी दोष है और उसी का यह शोचनीय फल उपस्थित है। पहले मैं यह सोचकर बीती बात की उपेक्षा करता था कि जो हो गया सो हो गया, उसके लिए चिन्ता करना ठीक नहीं; किन्तु इस समय बीती बात के प्रतिविधान के लिए मैं अत्यन्त व्यग्र हो रहा हूँ। ख़ैर, मैं धैर्य धारण करके सब सुनूँगा। तुम मेरी दुर्नीति के कारण होनेवाले जनसंहार का वर्णन करो।

सञ्जय ने कहा—राजन्! इसके बाद महारथी कर्ण और भीमसेन दोनों, जलधारा बरसानेवाले बादलों के समान, बाण बरसाने लगे। भीमसेन के नाम से अङ्कित सुवर्णपुङ्ख तीक्ष्ण बाण कर्ण के जीवन को चोट पहुँचाते हुए उनके शरीर में प्रवेश कर रहे थे। कर्ण के मयूर-पुच्छ-चिह्नित असंख्य बाणों में भीमसेन भी ढक गये। चारों ओर उन दोनों महावीरों के बाण गिरने से कौरवों की सेना क्षोभ को प्राप्त समुद्र के समान तितर-बितर होने लगी। भीमसेन धनुष से विषैले सर्प-सदृश भयानक बाण छोड़कर कौरव-सेना का नाश करने लगे। आँधी से टूटे वृक्षों की तरह तीक्ष्ण बाणों से गिराये गये असंख्य हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों की लाशों से समरभूमि पट गई। भीमसेन के बाणों की गहरी चोट खाकर कौरवपक्ष के हज़ारों सैनिक "अरे यह क्या हुआ!" कहते हुए भागने लगे। महाबाहु कर्ण भी उस समय विमोहित से होकर कौरवपक्ष के ही असंख्य सैनिकों का संहार करने लगे। सिन्धु-सौवीर देश की और कौरवों की सेना के जो योद्धा मरने से बच गये थे वे महावीर कर्ण और भीमसेन के बाणों से पीड़ित और हाथी, घोड़े, रथ आदि वाहनों से हीन होकर, उन्हें छोड़कर, चारों ओर भागने और यह कहने लगे—"जान पड़ता है कि पाण्डवों की ओर से देवता लोग हम पर हमला कर रहे हैं। ऐसा नहीं है तो कर्ण और भीमसेन के बाणों से हमारी ही सेना का नाश क्यों हो रहा है?" राजन्! आपकी वह भयपीड़ित सेना यों कहती हुई, उन दोनों वीरों के बाणों के गिरने की सीमा को पार करके, दूर जाकर संग्राम का दृश्य देखने लगी। १०

उस समय असंख्य हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों के रक्त से, रणभूमि में शूरों के उत्साह और आनन्द को बढ़ानेवाली और डरपोंक मनुष्यों के लिए भयावनी, एक नदी बह चली। मारे गये असंख्य मनुष्य, हाथी, घोड़े, उनके अलङ्कार, ढेर के ढेर—अनुकर्ष, पताका, रथभूषण, पहिये, अक्ष और कूबर से हीन—रथ, गम्भीर शब्द करनेवाले सुवर्णचित्रित धनुष, सुवर्ण-पुङ्ख-युक्त बाण, बिना केंचुल के सर्प-सदृश प्रास, तोमर, खड्ग, परशु, सुवर्णमय गदा, मुशल, पट्टिश, अनेक आकार के ध्वज, शक्ति, परिघ और विचित्र शतघ्नी आदि शस्त्रों से रणभूमि परिपूर्ण हो

२० गई। बाणों से कटे हुए ढेरों अङ्गद, हार, कुण्डल, मुकुट, कङ्कण, अङ्गुलिवेष्टन, चूड़ामणि, पगड़ी, सोने के गहने, कवच, तलत्राण, ग्रैवेय, कपड़े, छत्र, चमर, असंख्य हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों के शरीर तथा रक्त से सने हुए बाण इधर-उधर पड़े होने से रणभूमि ग्रह-तारागण से पूर्ण गगन-मण्डल की तरह शोभा को प्राप्त हुई। युद्ध देखने के लिए आये हुए सिद्ध और चारणगण उन दोनों महावीरों के अचिन्तनीय अमानुष कार्य देखकर बहुत ही विस्मित हो रहे थे। जैसे वायु सहित आग सूखी घास के ढेर में घूम-फिरकर उसे सहज ही भस्म कर देती है वैसे ही महावीर भीमसेन कर्ण के साथ सेना के बीच में विचरते हुए उसका संहार करने लगे। दो हाथी जैसे लड़ते-भिड़ते हैं और नरकुल के वन को रौंदते हैं वैसे ही महावीर कर्ण और भीमसेन परस्पर युद्ध करके असंख्य ध्वजाओं से भूषित रथों, हाथियों, घोड़ों और मनुष्यों को छिन्न-भिन्न तथा नष्ट करने लगे। महा-

२९ राज, महावीर भीम और कर्ण इसी तरह असंख्य सेना का नाश करने लगे।

एक सौ उन्तालीस अध्याय

भीमसेन और कर्ण का भयानक युद्ध

सञ्जय कहते हैं—महाराज! कर्ण ने भीमसेन को तीन बाण मारकर लगातार असंख्य बाण छोड़े। महावीर भीमसेन कर्ण के बाणों से बहुत घायल होने पर भी, तोड़े जा रहे पर्वत के समान, तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने तेल से साफ़ किये गये तीक्ष्ण कर्णी बाण से कर्ण के कान को फाड़ दिया। आकाश से गिरी हुई सूर्य-किरणों की तरह कर्ण का मनोहर कुण्डल पृथ्वी पर गिर पड़ा। फिर उनकी छाती में भीमसेन ने एक भल्ल बाण और मस्तक में साँप-सदृश दस नाराच बाण मारे। साँप जैसे बाँबी में घुसते हैं, वैसे ही भीमसेन के नाराच

बाण कर्ण के मस्तक में विंध गये। कर्ण पहले मस्तक पर नील कमलों की माला धारण करने से जैसे शोभित होते थे, वैसे ही उस समय उन बाणों से उनकी शोभा हुई। वे इस तरह भीमसेन के बाणों की गहरी चोट खाकर रक्त से तर हो गये। वे रथकूबर का सहारा लेकर, आँखें मूँदकर, दम भर के लिए अचेत से हो गये। होश आने पर वे कुपित होकर बड़े वेग से भीमसेन के रथ की ओर दौड़े और उनके ऊपर, गिद्धों के पङ्खों से शोभित, सैकड़ों-हज़ारों बाण बरसाने लगे।

महावीर भीमसेन, कर्ण के बल-वीर्य का कुछ भी ख़याल न करके, अनादरपूर्वक उनके ऊपर तेज़ बाण चलाने लगे। कर्ण ने भी बेहद क्रोध में आकर भीमसेन की छाती में नव बाण मारे। इसी तरह वे दोनों पराक्रमी वीर परस्पर स्पर्धा करके जलधारा बरसानेवाले दो बादलों के समान विविध बाण बरसाते और तलध्वनिपूर्वक सिंहनाद करते हुए एक दूसरे को शङ्कित करने लगे। महाबाहु भीमसेन ने क्षुरप्र बाण से कर्ण का धनुष काटकर घोर सिंहनाद किया। वीर कर्ण ने फुर्ती के साथ वह कटा हुआ धनुष फेंककर और सुदृढ़ धनुष हाथ में लिया। इसे भी भीमसेन ने देखते ही देखते काट गिराया। अब यह दशा हुई कि कर्ण ज्योंही नया धनुष हाथ में लेते थे त्योंही भीमसेन उसे काट डालते थे। इस प्रकार बहुत से धनुषों के कट जाने पर फुर्ती से धनुष हाथ में लेकर कर्ण ने देखा कि कौरव और सिन्धु-सौवीर देश की सेना नष्ट हो रही है; ढेर के ढेर कवचों, ध्वजाओं और शस्त्रों से रणभूमि परिपूर्ण हो रही है, और चारों ओर हाथियों, घोड़ों और रथों के सवार घायल हो-होकर मरकर गिर रहे हैं। यह देखकर कर्ण क्रोध से प्रज्वलित हो उठे। वे धनुष चढ़ाकर, क्रोधपूर्ण दृष्टि से भीमसेन की ओर देखकर, असंख्य बाण बरसाने लगे। उस समय वे शरदृतु के दोपहर के सूर्य के समान प्रचण्ड हो उठे। उनकी ओर आँख भरकर देखना असम्भव सा हो गया। उनका रौद्र रूप और भयानक शरीर, भीमसेन के बाणों से बिंधा हुआ होने के कारण, किरणमण्डित सूर्यबिम्ब के समान जान पड़ने लगा। वे कब बाण निकालते हैं, कब धनुष पर चढ़ाते हैं, कब धनुष की डोरी खींचते हैं और कब बाण छोड़ते हैं, यह कुछ भी नहीं देख पड़ता था। वे दोनों हाथों से बाण बरसाने लगे। उनके मण्डलाकार घूमते हुए धनुष से अग्निचक्र की चिनगारियों के समान भयानक बाण लगातार निकलने लगे। उनके धनुष से छूटे हुए असंख्य बाण आकाश में फैल गये। उनसे सब दिशा-विदिशाएँ व्याप्त हो गईं, सूर्य का प्रकाश छिप गया। उनके बाण क्रौञ्च पक्षी की तरह क़तार बाँधकर आकाश में जाते दिखाई पड़ने लगे। कर्ण फिर सुवर्णमण्डित, सिल्ली पर तेज़ किये गये, गिद्ध के पङ्खों से युक्त, वेगशाली बाण भीमसेन पर बरसाने लगे। वे सुवर्ण-शोभित बाण भीमसेन के रथ पर लगातार गिरने लगे। आकाश-मार्ग में बाण टीड़ीदल से प्रतीत होते थे। कर्ण इतनी फुर्ती के साथ बाण बरसाने लगे कि उन बाणों का सिलसिला

बहुत बड़े लम्बे बाण के समान जान पड़ता था। मेघ जैसे जल बरसाकर पर्वत को ढक लेता है, वैसे ही वीर कर्ण ने क्रोधपूर्वक बाण बरसाकर भीमसेन को ढक दिया।

राजन्! उस समय आपके पुत्र और सारी सेना, सब लोग युद्ध छोड़कर भीमसेन के बाहुबल, पराक्रम और अद्भुत कार्य देखने लगे। पराक्रमी भीमसेन, क्षोभ को प्राप्त समुद्र के समान, भयानक बाणों की परवा न करके क्रुद्ध होकर कर्ण के रथ की ओर वेग से बढ़े। उनके ४० सुवर्णपृष्ठ, मण्डलाकार, इन्द्रचाप-तुल्य धनुष से सुवर्णपुङ्खयुक्त बाण निकलकर आकाश-मण्डल को व्याप्त करने लगे, जिससे जान पड़ता था कि आकाश में सोने की माला लटक रही है।

इसी समय महावीर कर्ण ने क्रोध करके विष के बुझे तीक्ष्ण बाण भीमसेन को मारना शुरू कर दिया। वे आकाशचारी बाण भीमसेन के बाणों से कटकर नीचे गिरने लगे। भीमसेन और कर्ण के सुवर्णपुङ्खयुक्त, सीधे जानेवाले, आग की चिनगारी के समान बाणों से आकाश-मण्डल व्याप्त हो गया। उस समय सूर्य का प्रकाश छिप गया, वायु की गति रुक गई और बाणों के मारे अँधेरा हो जाने से कोई भी चीज़ अच्छी तरह नहीं दिखाई देती थी। सूतपुत्र कर्ण भीमसेन के बल-वीर्य की परवा न करके उन्हें अधिकतर बाणों से ढककर और भी अधिक बाहुबल दिखाने लगे। भीमसेन भी उन पर हज़ारों बाण छोड़ने लगे। उन दोनों वीरों के बाण हवा के वेग से जाकर परस्पर टकराने लगे। उन बाणों की रगड़ से आग उत्पन्न हो गई। पराक्रमी कर्ण अत्यन्त कुपित होकर, भीमसेन के वध के लिए, सान पर रक्खे हुए तीक्ष्ण बाण बरसा रहे थे। महाबाहु भीम ने भी अधिक बल-विक्रम प्रकट करके फुर्ती के साथ बाणों के ५० द्वारा, अन्तरिक्ष में, कर्ण के चलाये हुए एक-एक बाण के तीन-तीन टुकड़े कर डाले; और "ठहर जा, ठहर जा!" कहकर वे ललकारने लगे। इसके बाद उन्होंने फिर, जलाने के लिए उद्यत अग्नि की तरह, क्रोध से लाल होकर तीक्ष्ण बाण बरसाना शुरू किया। उन दोनों वीरों के, गोह के कड़े चमड़े के बने, अङ्गुलित्राणों के आघात से चट-चट शब्द होने लगा। भीषण तलशब्द, सिंहनाद, रथों की घर्घराहट और प्रत्यञ्चा का शब्द समरभूमि में गूँज उठा। अन्यान्य योद्धाओं ने परस्पर मारने को तैयार कर्ण और भीमसेन का बाहुबल और पराक्रम देखने के लिए युद्ध करना बन्द कर दिया। देवता, ऋषि, सिद्ध और गन्धर्वगण दोनों वीरों को धन्य-धन्य कहने लगे। विद्याधरगण उनके ऊपर फूल बरसाने लगे। पराक्रमी भीमसेन क्रोध से विह्वल होकर अपने अस्त्रों से कर्ण के अस्त्रों को व्यर्थ करके उन पर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। महावीर कर्ण ने भीमसेन के बाणों को रोककर उन पर विषैले साँप से विकट नव नाराच बाण छोड़े। भीम ने नव ही बाणों से राह में उन बाणों को काट डाला। अब ठहर, ठहर कहकर भीम ने ताककर एक यमदण्ड तुल्य बाण कर्ण को मारा। पराक्रमी कर्ण ने हँसते-हँसते भीमसेन के उस ६० बाण को बीच में ही तीन बाणों से काट डाला। तब महावीर भीमसेन फिर अत्यन्त भयानक

बाण बरसाने लगे। कर्ण भी अपना अस्त्रबल प्रकट करते हुए बेखटके होकर उन बाणों को रोकने लगे। इसके बाद अत्यन्त कुपित होकर कर्ण ने नतपर्व तीक्ष्ण बाणों से भीमसेन के तरकस, धनुष की डोरी और घोड़ों की लगाम, मय जोत के, काट डाली। फिर उनके घोड़ों को मार डाला और सारथी को भी पाँच बाण मारे। उन बाणों की चोट से भीमसेन का सारथी विह्वल हो उठा और भागकर महावीर सात्यकि के रथ पर चला गया।

तब कालानल तुल्य महाप्रतापी कर्ण ने क्रोध से अत्यन्त अधीर होकर, निरादर की हँसी हँसकर, भीमसेन की ध्वजा और पताका काट डाली। यह देखकर भीमसेन क्रोध के मारे आपे से बाहर हो गये। उन्होंने सुवर्णमण्डित लोहे की उग्र शक्ति घुमाकर कर्ण के रथ पर चलाई। मित्र के लिए प्राण-पण से युद्ध करते हुए कर्ण ने बड़ी भारी उल्का के समान प्रज्वलित उस शक्ति को आते देखकर तत्काल दस बाणों से खण्ड-खण्ड कर दिया। तब भीमसेन ने मृत्यु या जय में से एक को पाने के लिए उत्सुक होकर सोने से मढ़ी हुई ढाल और तलवार हाथ में ली। महावीर कर्ण ने हँसते-हँसते उसी दम बहुत से बाणों से उस ढाल को काट डाला। भीमसेन ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर चटपट कर्ण के रथ पर तलवार का वार किया। उस वार से कर्ण का ७० धनुष, डोरी समेत, कट गया। इस तरह धनुष को काटकर वह तलवार, आकाश से गिरे हुए कुपित साँप की तरह, पृथ्वी पर गिर पड़ी। अब भीमसेन को मारने के लिए कर्ण ने एक सुदृढ़ प्रत्यञ्चायुक्त धनुष लेकर तीक्ष्ण सुवर्णपुङ्खशोभित हज़ारों बाण बरसाना शुरू किया।

महाबाहु भीमसेन इस तरह कर्ण के बाणों से अत्यन्त पीड़ित हो उठे। वे क्रोध से कर्ण को व्यथित करते हुए आसमान में उछले। जय पाने के लिए अधिकतर उद्योग कर रहे भीमसेन के असाधारण कार्य को देखकर महावीर कर्ण रथ में छिप गये और भीमसेन के अद्भुत आक्रमण से बचने की चेष्टा करने लगे। कर्ण को रथ में छिपे और व्याकुल देखकर, उनकी ध्वजा पकड़कर, भीमसेन पृथ्वी पर आ गये। पक्षियों के राजा गरुड़ जैसे

किसी महासर्प को मारने की चेष्टा करें वैसे ही भीमसेन को कर्ण-वध के लिए यत्न करते देखकर कौरव और चारणगण उनके साहस और बल की बहुत-बहुत बड़ाई करने लगे। महावीर भीमसेन इस तरह अपना रथ छोड़कर, क्षत्रिय-धर्मानुसार युद्ध करने को, कर्ण के पास जा पहुँचे। कर्ण भी अत्यन्त क्रोध के आवेश से अधीर होकर युद्ध के लिए आये हुए भीमसेन के पास ८० पहुँचे। अब वे दोनों महावीर सम्मिलित होकर, परस्पर स्पर्धा प्रकट करते हुए, वर्षाऋतु के दो मेघों के समान भयानक शब्द से गरजने लगे। देवासुर-युद्ध की तरह उनका युद्ध भयङ्कर हो गया। महाबली कर्ण ने अस्त्रबल के प्रभाव से भीमसेन को निहत्था करके उनका पीछा किया। यह देखकर भीमसेन बहुत डरे। अर्जुन के बाणों से विनष्ट गज-सेना के भीतर वे चटपट घुस गये। वहाँ पर वे पहाड़ ऐसे हाथियों की लाशों की ओट में जा पहुँचे। उन्होंने सोचा कि कर्ण का रथ इसके भीतर नहीं आ सकेगा। वहाँ से रथदुर्ग में प्रवेश करके, अपनी रक्षा के लिए, उन्होंने कर्ण पर प्रहार नहीं किया। हनुमान् ने जैसे महौषधि-युक्त गन्धमादन पहाड़ उठा लिया था वैसे ही, अर्जुन के बाणों से, मरा हुआ एक हाथी उठाकर उसकी आड़ में भीमसेन आत्मरक्षा करने लगे। वीर कर्ण ने बाणों से वह हाथी की लाश भी काट डाली। यह देखकर महाबली भीमसेन अतीव क्रुद्ध हो उस हाथी के कटे हुए अङ्ग उठा-उठाकर कर्ण के ऊपर फेंकने लगे। पहिये, मरे हुए घोड़े आदि जिस पदार्थ को सामने पाया, वही उठा-उठाकर वे कर्ण के ऊपर फेंकने लगे। महारथी कर्ण ने असंख्य बाणों से भीमसेन की फेंकी हुई उन सब चीज़ों को फुर्ती के साथ काट डाला।

तब कर्ण को मारने के लिए पराक्रमी भीमसेन वज्रतुल्य दारुण घूँसा तानकर दौड़े। किन्तु उन्हें मार डालने के लिए समर्थ होकर भी, अर्जुन की प्रतिज्ञा सफल करने के विचार से, ९० भीमसेन ने उन्हें मारा नहीं। महापराक्रमी कर्ण भी उग्र बाण मारकर भीमसेन को अत्यन्त व्याकुल और बारम्बार मूर्च्छित करने लगे। वे चाहते तो निहत्थे भीमसेन को सहज ही मार डालते; किन्तु कुन्ती से जो वादा किया था कि मैं अर्जुन के सिवा और किसी पाण्डव को नहीं मारूँगा, उसी के अनुसार उन्होंने भीमसेन का वध नहीं किया। कर्ण ने दौड़कर धनुष के सिरे से भीमसेन के शरीर को छू दिया। क्रुद्ध साँप की तरह साँसें ले रहे भीमसेन ने वह धनुष छीनकर कर्ण के माथे में मारा। कर्ण की आँखें क्रोध से लाल हो आईं। उन्होंने अनादर की हँसी हँसकर बारम्बार यों कहा—अरे तूवरक (बिना मूँछों के नपुंसक)! अरे मूढ़! अरे पेटू! अरे डरपोक! अरे नादान! अरे अस्त्रविद्या को न जाननेवाले! अरे दुर्मति! युद्ध मत करो। युद्धभूमि तुम्हारे योग्य स्थान नहीं है। जहाँ बहुत से भक्ष्य भोज्य आदि अनेक प्रकार के खाने-पीने के पदार्थ हों, वही स्थान तुम्हारे योग्य है। हे भीम! तुम युद्ध करने में निपुण नहीं हो, इसलिए फल-फूल-कन्द-मूल का आहार करके वन में रहना और व्रत-

अरे मूढ़ ! अरे पेट्ट ! अरे नादान !.........युद्ध मत कर ।—पृ० २४८८
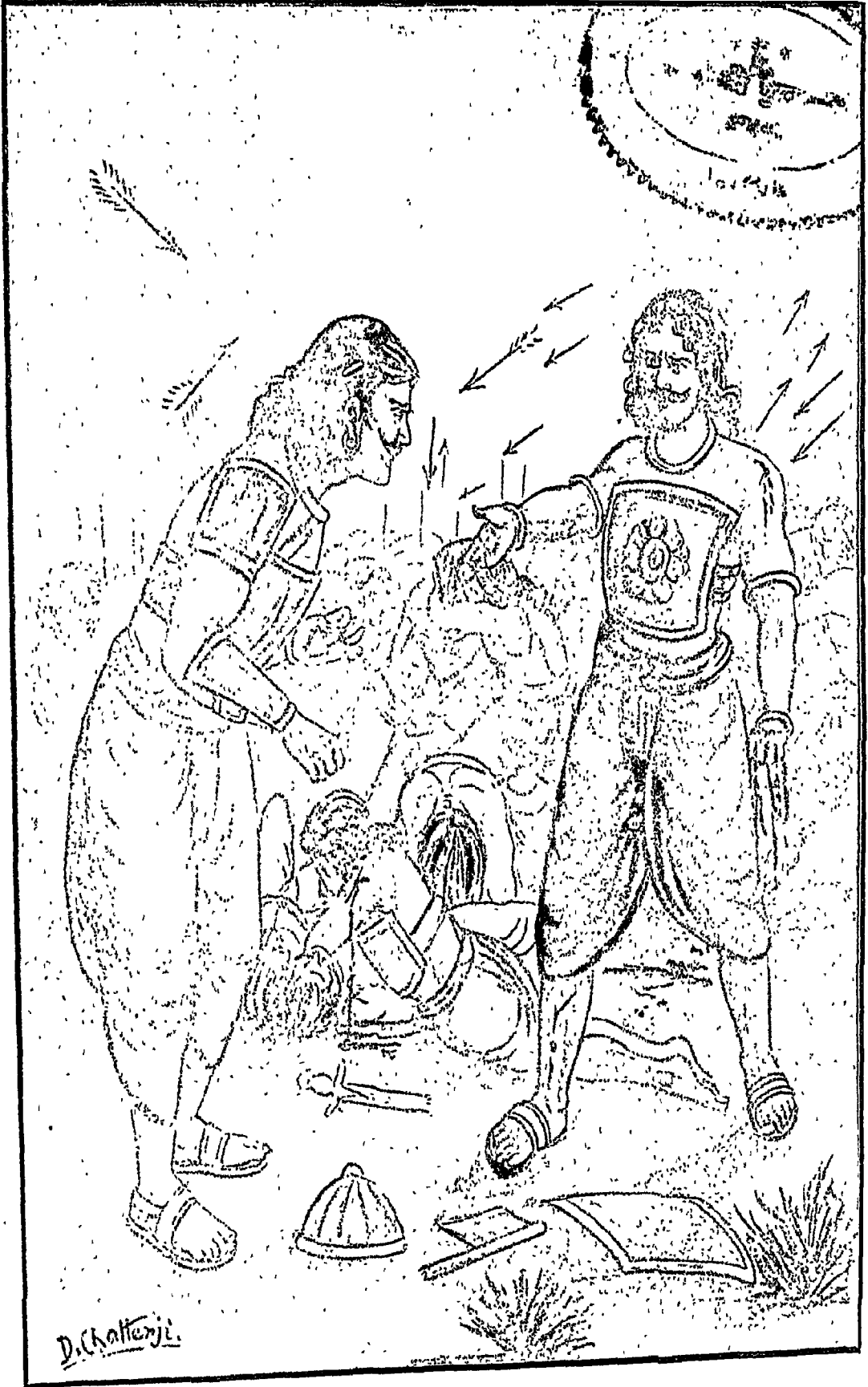
नियम करना ही तुम्हारे योग्य है। हे वृकोदर! कहाँ तो युद्ध और कहाँ मुनिव्रत! तुम वन में जाओ। हे तात! तुम युद्ध करने लायक़ नहीं हो। हे भीमसेन! तुम तो घर में रसोइये, भृत्य, दास आदि को जल्द भोजन तैयार करने के लिए क्रोध से डाँटने और मारने-पीटने की योग्यता रखते हो। अथवा हे दुर्मति भीम! मुनिव्रत धारण करके वन में फल-मूल लाओ और खाओ। हे वृकोदर! मैं तुमको शस्त्र धारण करके युद्ध करने के योग्य नहीं समझता। तुम तो वन में रहकर फल-मूल-भोजन और अतिथि-पूजन भर कर सकते हो। १०१

सञ्जय कहते हैं—महाराज! कर्ण ने यों कहकर उपहास करके, भीमसेन के बचपन के अप्रिय कामों का उल्लेख करते हुए, उनको अनेक रूखी बातें सुनाईं। फिर समर करते-करते थककर संकुचित हो अपने को छिपा रहे भीमसेन को धनुष के सिरे से टहोका देकर कर्ण ने हँसकर कहा—हे वृकोदर! और लोगों से तुम भले ही युद्ध करो, किन्तु मुझ सरीखे योद्धाओं से अब कभी न भिड़ना। मुझ सरीखे योद्धाओं से लड़नेवालों की ऐसी ही, बल्कि इससे भी बुरी, दशा होती है। जहाँ कृष्ण और अर्जुन हैं वहाँ जाओ; वे तुम्हारी रक्षा करेंगे। अथवा घर लौट जाओ। तुम बालक हो, तुमको युद्ध की क्या पड़ी है?

कर्ण के ये दारुण वचन सुनकर महावीर भीमसेन, क्रोध की हँसी हँसकर, सबके सामने कहने लगे—अरे दुष्ट कर्ण! मैंने तुमको कई बार हराया और भगा दिया है। फिर तुम क्यों वृथा आत्मश्लाघा करते हुए ऐसी बातें बक रहे हो? प्राचीन लोगों ने इन्द्र को भी जीतते और हारते देखा है। हे नीच कुल में उत्पन्न कर्ण! अगर तुमको कुछ गर्व है तो आओ, मुझसे मल्लयुद्ध करो। जैसे मैंने राजा विराट के यहाँ महाबली महाभोगी कीचक को मारा था वैसे ही सब राजाओं के सामने तुमको भी मार डालूँगा। राजन्! भीमसेन को मल्लयुद्ध के लिए उद्यत देखकर बुद्धिमानों में श्रेष्ठ कर्ण सब धनुर्द्धर वीरों के सामने ही युद्ध से हट गये।

महाराज! इस तरह भीमसेन को रथहीन तथा शस्त्रहीन करके श्रीकृष्ण और अर्जुन के आगे ही कर्ण उनको दुर्वचन सुनाने और आत्मश्लाघा करने लगे। [भीमसेन ने अत्यन्त कुपित होकर भी कर्ण के प्राण नहीं लिये। क्योंकि अर्जुन के महाबल का ख़याल करके और उनकी कर्ण के मारने की प्रतिज्ञा स्मरण करके उन्होंने सोचा कि कर्ण तो मरे के ही समान है। इसी समय भीमसेन को कर्ण के पराक्रम से पीड़ित देखकर] कृष्णचन्द्र ने कहा—हे अर्जुन! देखो, कर्ण ने भीमसेन को पीड़ित कर रक्खा है, तुम उनकी रक्षा करो। महाराज! केशव के वचन सुनकर क्रोध के मारे अर्जुन के नेत्र लाल हो गये। उन्होंने श्रीकृष्ण के कहने से कर्ण के ऊपर तीक्ष्ण दारुण बाण छोड़े। अर्जुन के चलाये हुए, सुवर्णभूषित, गाण्डीव धनुष से छूटे हुए वे बाण, क्रौञ्च पर्वत में हंसों की तरह, कर्ण के शरीर में प्रवेश करने लगे। साँपसदृश उन बाण लगने से कर्ण व्याकुल हो उठे। उनका धनुष पहले ही भीमसेन ने काट डाला था। इस १०

समय अर्जुन के असह्य वाणों की गहरी चोट से विह्वल होकर, रथ पर बैठकर, वे भीमसेन को छोड़कर तेज़ी के साथ भाग खड़े हुए। पराक्रमी भीमसेन भी चटपट सात्यकि के रथ पर बैठकर अपने भाई अर्जुन के साथ हो गये। इसी समय अर्जुन ने क्रोध के मारे लाल-लाल आँखों से कर्ण की ओर भयानक दृष्टि डाली और फुर्ती के साथ मृत्युतुल्य एक भयङ्कर नाराच वाण उनके ऊपर छोड़ा। साँप को पकड़ने के लिए तैयार गरुड़ की तरह वह गाण्डीव धनुष से छूटा हुआ विकट वाण, आकाशमार्ग होकर, शीघ्रता के साथ कर्ण की ओर चला। अर्जुन से कर्ण को बचाने के लिए उस समय महारथी अश्वत्थामा ने, फुर्ती के साथ, आकाश में ही अपने वाण से उस भयानक नाराच को काट डाला। तब अर्जुन ने अत्यन्त कुपित होकर अश्व-
१२० त्थामा को चौंसठ शिलीमुख वाण मारे। अर्जुन कहने लगे—"ठहरो, ठहरो, जाओ नहीं"। अर्जुन के वाणों से पीड़ित अश्वत्थामा ने अर्जुन की बात पर ध्यान नहीं दिया। वे तुरन्त ही मत्तमातङ्गपूर्ण रथ-सेना के भीतर जा छिपे। महावीर अर्जुन गाण्डीव धनुष के गम्भीर शब्द से अन्यान्य वीरों के सुवर्णमण्डित धनुषों के शब्द को दबाकर अश्वत्थामा के पीछे दौड़े। वे अपने वाणों से शत्रुसेना को भयभीत करते हुए, थोड़ी ही दूर पर पहुँचे हुए, अश्वत्थामा का पीछा करने लगे। नाराच वाणों से मनुष्य, हाथी, घोड़े आदि के शरीरों को चीरते हुए अर्जुन ने कङ्क मोर आदि पक्षियों के पङ्खों से शोभित वाणों के द्वारा शत्रुसेना का नाश करना शुरू
१२५ किया। उन्होंने दम भर में कौरव पक्ष की बहुत सी सेना को नष्ट कर दिया।

एक सौ चालीस अध्याय

अलम्बुष का मारा जाना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! प्रतिदिन मेरा उज्ज्वल यश घटता जा रहा है और मेरे बहुत से योद्धा मारे जा रहे हैं। अतएव जान पड़ता है कि दैव हम लोगों के बिलकुल प्रतिकूल है। अश्वत्थामा और कर्ण के द्वारा सुरक्षित और देवगण के लिए भी अगम्य कौरवसेना के भीतर अर्जुन पहुँच गये हैं। महाबलशाली तेजस्वी श्रीकृष्ण, भीमसेन और यादवश्रेष्ठ सात्यकि के साथ होने से उनका बल और पराक्रम बहुत बढ़ गया है। हे सञ्जय! यह हाल मैंने जब से सुना है तब से शोक की आग मेरे हृदय को उसी तरह जला रही है जिस तरह आग सूखी घास को जलाती है। मुझे जयद्रथ आदि सब राजा काल के गाल में गये से जान पड़ते हैं। हे सूत! जयद्रथ पहले अर्जुन का महाअनिष्ट कार्य कर चुके हैं। इस समय उन्हीं अर्जुन के सामने पड़कर वे कैसे अपनी रक्षा कर सकेंगे? मुझे तो जान पड़ता है कि जयद्रथ का जीवन नष्ट हो चुका है। अच्छा, अब तुम युद्ध के वृत्तान्त का वर्णन करो। जिन महा-

वीर ने अर्जुन की सहायता करने के लिए, नलिनीवन को रौंदनेवाले मस्त हाथी की तरह, बारम्बार कौरवसेना को मथकर क्रुद्ध होकर उसके भीतर प्रवेश किया उन वृष्णिवंशी सात्यकि ने किस तरह कैसा युद्ध किया ?

सञ्जय ने कहा—राजन् ! महावीर सात्यकि कर्ण के बाणों से अत्यन्त पीड़ित पुरुषश्रेष्ठ भीमसेन को जाते देखकर रथ पर चढ़कर उनके पीछे चलने लगे और वर्षाकाल के मेघ के समान गम्भीर गर्जन के साथ शत्रुदल का संहार करने लगे। क्रोध के मारे शरदऋतु के प्रचण्ड सूर्य के समान वे प्रज्वलित हो उठे। उनका वह रौद्र रूप देखकर कौरवपक्ष के सैनिकों के हृदय काँप उठे। वे जिस समय सफ़ेद घोड़ों को हँकाकर आगे बढ़ने लगे उस समय कौरवपक्ष का कोई भी वीर उन्हें रोकने का साहस नहीं कर सका। तब क्रोधी, युद्ध से कभी न हटनेवाले, धनुष और सुवर्णकवच धारण किये वीर अलम्बुप ने यादवश्रेष्ठ सात्यकि के सामने जाकर उन्हें आगे बढ़ने से रोका। उस समय उन दोनों वीरों का अभूतपूर्व दारुण युद्ध होने लगा। महाराज ! युद्धभूमि में उपस्थित दोनों पक्ष के योद्धा युद्ध छोड़कर उन दोनों वीरों का संग्राम देखने लगे। अलम्बुप ने सात्यकि को लक्ष्य करके दस बाण मारे। सात्यकि ने अपने बाणों से राह में ही अलम्बुप के बाणों को काट डाला। तब अलम्बुप ने धनुष चढ़ाकर फिर अग्निसदृश तीन उग्र बाण सात्यकि को मारे। वे बाण सात्यकि के कवच को तोड़कर उनके शरीर में घुस गये। इस तरह वीर अलम्बुप ने अग्नि और वायु के सदृश प्रभावशाली अत्यन्त प्रकाशपूर्ण बाणों से सात्यकि के शरीर को छिन्न-भिन्न करके चटपट उनके चारों घोड़ों को चार बाणों से व्याकुल कर दिया। १०

अब विष्णु के समान प्रभावशाली सात्यकि ने वेगगामी चार बाणों से अलम्बुप के घोड़ों को मार डाला और फिर कालानलतुल्य एक भल्ल बाण से उनके सारथी का सिर काट डाला। उन्होंने सारथी को मारकर अलम्बुप का, कुण्डलों से अलङ्कृत पूर्णचन्द्र सदृश, सिर भी काटकर पृथ्वी पर गिरा दिया। राजन् ! यदुकुलतिलक सात्यकि इस तरह अलम्बुप को मारकर कौरवों की सेना को पीड़ित करते हुए अर्जुन के पास जाने लगे। दूध, कुन्द, चन्द्र और बर्फ़ के समान सफ़ेद, सिन्धु देश के, सुवर्णजालमण्डित, उनके घोड़े उनकी इच्छा के अनुसार उन्हें समरभूमि में लेकर घूमने लगे। इसी समय आपके पुत्रगण और सब सेना, दुःशासन को आगे करके, सात्यकि की ओर चली। कौरवों की सेना और सब योद्धा लोग सात्यकि को घेरकर उन पर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। महावीर सात्यकि भी अग्निसदृश बाणों से उनको रोकने लगे। उन्होंने फुर्ती के साथ दुःशासन के घोड़ों को मार डाला। उस समय महावीर अर्जुन और श्रीकृष्ण, सात्यकि को देखकर, बहुत ही प्रसन्न हुए। २१ २५

———

एक सौ इकतालीस अध्याय

सात्यकि और भूरिश्रवा का सामना

सञ्जय कहते हैं—महाराज ! तब सुनहरी ध्वजाओं से शोभित त्रिगर्त देश के वीर योद्धाओं ने शिनिवंशी महाबाहु सात्यकि को फुर्ती के साथ, अर्जुन की विजय की इच्छा से, दुःशासन की समुद्रसदृश सेना के भीतर प्रवेश करते देखकर, कुपित होकर असंख्य रथों से घेर लिया। वे लोग चारों ओर से सात्यकि के ऊपर असंख्य बाणों की वर्षा करने लगे। तब सत्यपराक्रमी सात्यकि ने अकेले ही उस खड्ग-शक्ति-गदा आदि शस्त्रों से परिपूर्ण और तलनाद से शब्दायमान, अपार, प्लव (नाव-जहाज़ आदि) रहित सागर के समान सेना के भीतर जा करके त्रिगर्त देश के पचास राजकुमारों को परास्त कर दिया। उस समय हमने महावीर सात्यकि की ऐसी फुर्ती देखी कि सब दङ्ग रह गये। वे अभी पश्चिम ओर देख पड़े तो तुरन्त ही पूर्व ओर उनका रथ देख पड़ा। इसी तरह पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर आदि सभी दिशाओं और विदिशाओं में एक साथ उनका रथ देख पड़ता था। वे अकेले ही अनेक प्रतीत होते थे और सम्पूर्ण समरभूमि में नृत्य सा कर रहे थे। त्रिगर्त देश के सैनिक सिंह के समान पराक्रमी सात्यकि की फुर्ती, शीघ्र गति और रणकौशल देखकर उनके सामने से हटकर अपने दल में जा मिले। महाराज ! तब शूरसेन देश के प्रधान-प्रधान शूर योद्धा सात्यकि को रोकने के लिए आगे आये। मत्त हाथी के ऊपर अंकुश-प्रहार के समान वे लोग सात्यकि के ऊपर लगातार बाण बरसाने लगे। वीरश्रेष्ठ सात्यकि उनसे लड़ते-भिड़ते हुए, उन्हें छिन्न-भिन्न करके, दम भर में आगे बढ़ गये। आगे कलिंग देश की सेना मिली। अचिन्त्य बल-विक्रमवाले सात्यकि क्षण भर में कलिङ्ग देश की दुर्लङ्घ्य सेना को भी लाँघ गये और महावीर अर्जुन के पास जा पहुँचे। जैसे कोई पुरुष तैरते-तैरते थक गया हो और वह स्थलभूमि को पाकर आनन्दित हो वैसे ही पुरुषसिंह सात्यकि, अर्जुन को देखकर, आनन्दित और आश्वस्त हुए। ११

महाराज ! सात्यकि को आते देखकर महात्मा कृष्णचन्द्र अर्जुन से बोले—हे वीर ! वह देखो, तुम्हारे अनुगामी सात्यकि आ रहे हैं। ये तुम्हारे शिष्य और सखा हैं। इन्होंने कौरव-दल के सब योद्धाओं को तृण-तुल्य जानकर परास्त कर दिया है। ये महापराक्रमी अपने बाणों के प्रभाव से द्रोणाचार्य और कृतवर्मा को परास्त कर आये हैं। ये अस्त्रविद्या की अच्छी शिक्षा पा चुके हैं और सदा धर्मराज का हित करने में तत्पर हैं। इन्होंने शत्रुसेना में घुसकर बहुत से योद्धाओं को मारा और अत्यन्त दुष्कर कार्य किया है। बाहु-बल के भरोसे इन्होंने अकेले ही शत्रुसेना को छिन्न-भिन्न करके द्रोणाचार्य आदि बहुत से महारथी वीरों से युद्ध किया है। तुम्हें प्राणों से प्रिय सात्यकि, धर्मराज के भेजने से, तुम्हें देखने को आ रहे हैं। २०

गायों के झुण्ड से सिंह की तरह सहज ही कौरव-सेना के भीतर से निकलकर और बहुत सी सेनाओं को मारकर ये युद्धदुर्मद सात्यकि आ रहे हैं। इन्होंने राजाओं के कमलसदृश मुखों को बाणों से काटकर उनसे रणभूमि को पाट दिया है। भाइयों सहित दुर्योधन को जीतने के बाद जलसन्ध को मारकर, रक्त की नदी बहाकर और मांस की कीच मचाकर तथा घास-फूस के समान कौरवों को छिन्न-भिन्न करके ये सात्यकि आ रहे हैं।

महाराज! श्रीकृष्ण के वचन सुनकर महावीर अर्जुन कहने लगे—हे महाबाहो! सात्यकि के आने से मेरा चित्त प्रसन्न नहीं हुआ। ये धर्मराज को छोड़कर चले आये हैं। मालूम नहीं, धर्मराज अब जीवित हैं या नहीं। सात्यकि को धर्मराज की रक्षा करनी चाहिए थी। [यह काम मैं उन्हें सौंप आया था।] फिर वे धर्मराज को छोड़कर मेरे पीछे क्यों चले आये? उधर द्रोणाचार्य के आगे धर्मराज अकेले पड़ गये हैं, इधर मैं भी जयद्रथ को नहीं मार सका हूँ। हे केशव! देखो, वीर भूरिश्रवा सात्यकि से युद्ध करने जा रहे हैं। जयद्रथ-वध की प्रतिज्ञा के कारण इस समय मेरे ऊपर बहुत बड़ा बोझ आ पड़ा है। मुझे धर्मराज का हाल जानना है, सात्यकि की रक्षा करनी है और जयद्रथ को भी मारना है। सूर्य के अस्त होने में अब अधिक विलम्ब नहीं है। हे वासुदेव! महाबाहु सात्यकि युद्ध करते-करते थक गये हैं, अब इनमें थोड़ा ही दम रह गया है। [इनके पास बाण भी कम रह गये हैं।] इनका सारथी और रथ के घोड़े भी थक गये हैं। उधर भूरिश्रवा थके नहीं हैं और सहाय-सम्पन्न भी हैं। इस युद्ध-समागम में सात्यकि की कुशल हो। सत्यपराक्रमी सात्यकि समुद्र के पार होकर कहीं गाय के पैर के गढ़े में न गोता खा जायँ। कौरवश्रेष्ठ, अस्त्रविद्या में निपुण, महात्मा भूरिश्रवा से युद्ध करने में सात्यकि को विजय प्राप्त हो, उनका भला हो। हे केशव! मैं तो इसे धर्मराज की मोटी भूल समझता हूँ कि उन्होंने द्रोणाचार्य के डर का ख़याल न करके सात्यकि को मेरे पास भेज दिया। श्येन

३०

पक्षी जैसे मांस की इच्छा रखता है वैसे ही द्रोणाचार्य हर घड़ी धर्मराज को पकड़ने की धुन में ३७ लगे रहते हैं। राजा शायद ही कुशल से हों।

एक सौ बयालीस अध्याय

सात्यकि और भूरिश्रवा का युद्ध; निहत्थे सात्यकि के केश पकड़कर सिर काटने को भूरिश्रवा का प्रयत्न

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! उधर महावीर भूरिश्रवा ने रणदुर्मद सात्यकि को आते देखकर क्रोधपूर्वक उनके सामने जाकर कहा—हे सात्यकि! बड़े भाग्य की बात है कि आज तुम रण में मेरे सामने आ गये। इसमें सन्देह नहीं कि मैं आज समर में अपने बहुत दिनों के मनोरथ को पूरा करूँगा। अगर तुम संग्राम से विमुख न हुए तो मेरे जीते रहते तुम कभी मेरे हाथ से छुटकारा नहीं पा सकते। तुम सदा अपनी शूरता का अभिमान करते रहते हो। आज मैं तुम्हें मार करके कुरुराज दुर्योधन को आनन्दित करूँगा। आज महावीर कृष्ण और अर्जुन देखेंगे कि तुम मेरे बाणों से मरकर पृथ्वी पर पड़े हुए हो। जिनके कहने से तुम कौरव-सेना के भीतर घुसे हो वे धर्मराज तुम्हें मेरे प्रहार से मरा हुआ सुनकर अवश्य लज्जित और दुःखित होंगे। आज तुम रक्त से नहाकर मरकर जब रणभूमि में लेटोगे तब महावीर अर्जुन मेरे पराक्रम का परिचय पावेंगे। हे सात्यकि! मेरे मन में तुमसे युद्ध करने की इच्छा बहुत दिनों से थी। पहले देवासुर-युद्ध में राजा बलि से इन्द्र का जैसा घोर संग्राम हुआ था वैसा ही संग्राम आज मैं तुमसे करूँगा। आज तुम मेरे वीर्य, बल और पौरुष को अच्छी तरह जान सकोगे। रामचन्द्र के भाई लक्ष्मण ने जैसे रावण के पुत्र इन्द्रजित् को मारा था वैसे ही आज १० मैं तुमको मारूँगा और तुम मेरे प्रहार से मरकर यमराज की संयमनी पुरी को जाओगे। आज कृष्ण, अर्जुन और धर्मराज तुम्हारे मरने पर उत्साहहीन होकर निःसन्देह युद्ध बन्द कर देंगे। आज मैं तुम्हें तीक्ष्ण बाणों से मारकर उन स्त्रियों को आनन्दित करूँगा जिनके वीर पतियों को तुमने मार डाला है। हे माधव! तुम सिंह के सामने पड़े हुए क्षुद्र मृग की तरह इस समय मेरे आगे आ गये हो। अब किसी तरह जीते नहीं बच सकते।

राजन्! भूरिश्रवा के ये वचन सुनकर सात्यकि ने हँसकर कहा—हे कुरुश्रेष्ठ! संग्राम से मैं रत्ती भर भी नहीं डरता। केवल बड़ी-बड़ी बातें करके कोई मुझे नहीं डरा सकता। हे कौरव! जो रण में मुझे शस्त्रहीन कर सके वही मार सकता है। जो मुझे मार सकता है वह सर्वत्र सब समय विजयी हो सकता है। ख़ैर, बहुत बकने की क्या ज़रूरत है, जो कहते हो वह कर दिखाओ। शरदऋतु के मेघ के गरजने के समान तुम्हारा यह बकना व्यर्थ है। तुम्हारा यह तर्जन-गर्जन सुनकर मुझे हँसी आ रही है। अब हम दोनों के चिरकाङ्क्षित संग्राम

चौड़ी छातीवाले, लोहे के बेलन सरीखी बड़ी-बड़ी बाहुओंवाले, कुश्ती लड़ने में निपुण दोनों वीर परस्पर भिड़ गये।—पृष्ठ २४६९

का आरम्भ होना चाहिए। तुमसे युद्ध करने के लिए मेरा मन बहुत जल्दी कर रहा है। हे नराधम! तुमको मारे बिना मैं संग्राम से न हटूँगा।

महाराज! वे दोनों तेजस्वी परस्पर स्पर्धा रखनेवाले वीर इस तरह कटुवचन कहकर, २० हथिनी के लिए क्रुद्ध होकर भिड़नेवाले दो मस्त हाथियों की तरह, कुपित होकर एक दूसरे को मारने की इच्छा से प्रहार करने लगे। दो मेघ जैसे जलधारा बरसाते हैं वैसे ही वे एक दूसरे पर बाण बरसाने लगे। महावीर भूरिश्रवा ने सात्यकि को, मार डालने के लिए बाणों की वर्षा से अदृश्य सा करके उनको अत्यन्त तीक्ष्ण दस बाण मारे। इस प्रकार प्रहार करके वे फिर सात्यकि पर बाणों की वर्षा करने लगे। महावीर सात्यकि ने भी फुर्ती के साथ उन बाणों को अपने बाणों से राह में ही काट डाला। इस तरह वे दोनों वीर बाणों की वर्षा करने लगे। जिस तरह दो सिंह नखों से, अथवा दो हाथी दाँतों से, परस्पर प्रहार करें वैसे ही वे भी रथशक्ति और बाणों के द्वारा परस्पर प्रहार करने लगे। कुरु और वृष्णिवंश के यश को बढ़ानेवाले उन दोनों वीरों के शरीर छिन्न-भिन्न हो गये और रक्त की धाराएँ बहने लगीं। इस तरह प्राणों की बाज़ी लगाकर लड़नेवाले दोनों योद्धा, दल के स्वामी दो गजराजों की तरह, उत्तम कर्म करते हुए लड़ने और एक दूसरे को रोकने लगे।

युद्ध में मरकर श्रेष्ठ गति पाने की इच्छा रखनेवाले दोनों वीर तर्जन-गर्जन करते हुए लड़ने लगे। महाराज! आपके पुत्रों के सामने ही सात्यकि और भूरिश्रवा उत्साहपूर्वक एक दूसरे पर बाणों की वर्षा करने लगे। सब लोग उन दोनों वीरों के युद्ध को आश्चर्य के साथ देखने लगे। ३१ हथिनी के लिए भिड़नेवाले दो गजराजों के समान वे दोनों भयानक संग्राम कर रहे थे। सात्यकि और भूरिश्रवा ने एक दूसरे के घोड़े मार डाले और धनुष काट डाले। अब रथ न रहने पर वे खड्गयुद्ध करने को तैयार हुए। दोनों जने गैंडे की बड़ी-बड़ी विचित्र ढालें लेकर और म्यान से तलवारें निकालकर पैंतरे के साथ आमने-सामने विचरने लगे। विचित्र कवच और निष्क, अङ्गद आदि गहने पहने हुए दोनों कुपित वीर विविध मार्ग और मण्डलाकार गति से घूम-घूमकर एक दूसरे पर खड्ग-प्रहार करने लगे। भ्रान्त, उद्भ्रान्त, आविद्ध, आप्लुत, विप्लुत, सृत, सम्पात और समुदीर्ण आदि गति और पैंतरे दिखा-दिखाकर वे दोनों यशस्वी वीर परस्पर प्रहार करने लगे। दोनों ही वार करने का मौक़ा ढूँढ़ते थे, दोनों ही विचित्र शब्द करके गरजते थे। दोनों ही अपनी शिक्षा, फुर्ती और प्रहार करने की ख़ूबसूरती दिखा रहे थे। दोनों ही श्रेष्ठ योद्धा एक दूसरे को परास्त करने की चेष्टा कर रहे थे। दोनों वीर इस तरह सबके सामने युद्ध करते और घड़ी भर दम लेने लगते थे। राजन्! खड्ग-प्रहार से जब दोनों की शत-चन्द्रशोभित विशाल ढालें कट गईं तब वे बाहुयुद्ध करने लगे। चौड़ी छातीवाले, लोहे ४० के बेलन सरीखी बड़ी-बड़ी बाहुओंवाले, कुश्ती लड़ने में निपुण दोनों वीर परस्पर भिड़ गये। वे

अपनी शिक्षा और बल के अनुसार ताल ठोकने, हाथ में हाथ डालकर और गर्दन में हाथ डालकर ज़ोर करने लगे। उनका युद्ध देखकर सब योद्धा बहुत प्रसन्न हुए। परस्पर अङ्गों में अङ्गों के लगने से पर्वत पर वज्र गिरने का सा भयानक शब्द होने लगा। दो हाथी जैसे दाँतों से अथवा दो साँड़ जैसे सींगों से युद्ध करें वैसे ही वे दोनों वीर कभी बाहुओं से बाँधकर, कभी सिरों की टक्कर लगाकर, कभी पैरों से खींचकर, कभी पैर लपेटकर, कभी अतिस्फोटन-अवलुञ्चन आदि करके, कभी पैर और पेट के बन्धन से, कभी पैंतरे काटकर, कभी गत-प्रत्यागत और आक्षेप से, कभी गिराकर, कभी उठकर और कभी उछलकर भयानक संग्राम करने लगे। इस तरह भूरिश्रवा और सात्यकि बत्तीस प्रकार के कौशल दिखाकर युद्ध करने लगे।

शस्त्र न रहने पर बाहुयुद्ध करनेवाले सात्यकि को देखकर श्रीकृष्ण ने कहा—हे अर्जुन! देखो, धनुर्द्धरों में श्रेष्ठ सात्यकि रथ और शस्त्र न रहने से बाहुयुद्ध कर रहे हैं। हे पार्थ! ये महावीर सात्यकि तुम्हारे पीछे कौरव-सेना को छिन्न-भिन्न करके महापराक्रमी योद्धाओं से युद्ध करते हुए यहाँ आये हैं। इन्होंने मुख्य-मुख्य महारथियों को मारा है। हे अर्जुन! याज्ञिक भूरिश्रवा युद्ध की इच्छा से उस समय सात्यकि से भिड़े हैं जिस समय वे थक चुके हैं।
५० इसलिए यह सम-युद्ध नहीं है। महाराज! उसी समय कुपित होकर युद्धदुर्मद भूरिश्रवा ने सात्यकि को उठाकर पृथ्वी पर ऐसे पटक दिया, जैसे कोई मस्त हाथी मस्त हाथी को दे मारे। क्रुद्ध दोनों महारथी श्रीकृष्ण और अर्जुन रथ पर बैठे हुए यह महायुद्ध देख रहे थे। सात्यकि की दशा देखकर श्रीकृष्ण ने कहा—हे अर्जुन! देखो, वृष्णि और अन्धक वंश के सिंह सात्यकि को भूरिश्रवा ने अपने वश में कर लिया है। दुष्कर कर्म करके थक जाने के कारण सात्यकि की इस समय यह दशा हुई है। हे अर्जुन! तुम चटपट अपने शिष्य सात्यकि की रक्षा करो। ये इस समय तुम्हारे ही लिए यहाँ आकर इस दशा को पहुँचे हैं। इसलिए तुम तुरन्त ऐसा करो जिसमें भूरिश्रवा के क़ाबू में आकर सात्यकि अपने प्राण न खो बैठें।

[भूरिश्रवा के पराक्रम को देखकर मन ही मन प्रसन्न होकर] अर्जुन ने कहा—हे वासुदेव! देखो, वन में जैसे कोई सिंह मस्त हाथी से क्रीड़ा करे वैसे ही ये कुरुश्रेष्ठ भूरिश्रवा वीर सात्यकि के साथ क्रीड़ा सी कर रहे हैं। सञ्जय कहते हैं—महाराज! महावीर अर्जुन इस तरह कह ही रहे थे कि भूरिश्रवा ने सात्यकि को पृथ्वी पर पटक दिया। यह देखकर सैनिक लोग महा हाहाकार करने लगे। सिंह जैसे गजराज को खींचे वैसे ही सात्यकि को, केश पकड़कर,
६० घसीटते हुए भूरिश्रवा ने म्यान से तलवार निकाली। फिर सात्यकि की छाती में लात मारकर वे उनका कुण्डलों से शोभित सिर काटने को तैयार हुए। उस समय कुँभार के डण्डे से घूमते हुए चक्र की तरह सात्यकि अपने सिर को चारों ओर घुमाने और भूरिश्रवा के प्रहार से अपने को बचाने लगे। सात्यकि की यह दशा देखकर महामति श्रीकृष्ण फिर अर्जुन से बोले—
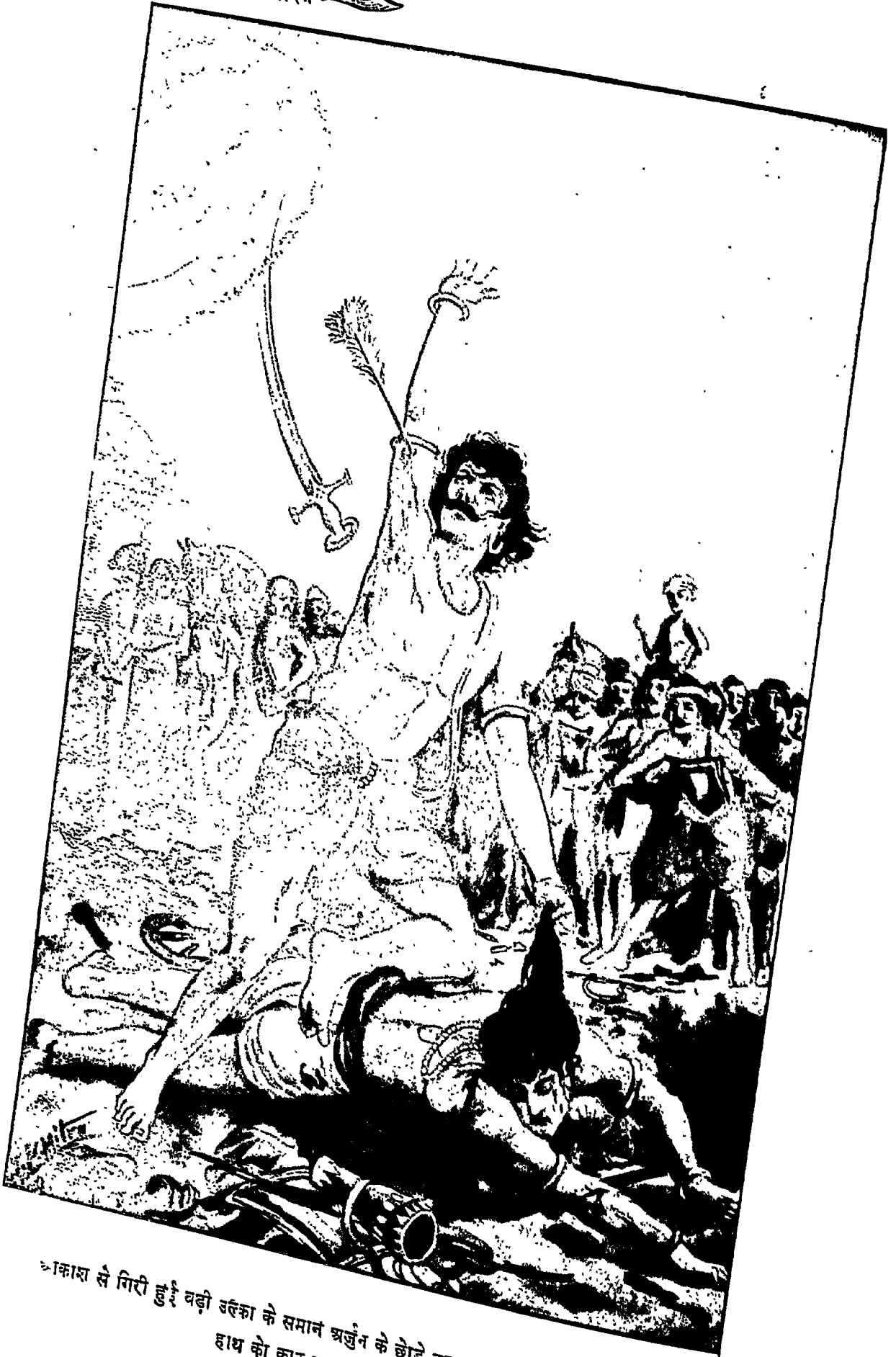
आकाश से गिरी हुई बड़ी उल्का के समान अर्जुन के छोड़े हुए उस बाण ने........दाहिने हाथ को काट डाला। —पृ० २४६७

हे महाबाहो ! देखो, अन्धकश्रेष्ठ सात्यकि भूरिश्रवा के वश में हो गये हैं। ये वीर तुम्हारे शिष्य हैं और धनुर्विद्या में तुमसे कम नहीं हैं। सच तो यह है कि पराक्रम अनित्य है। अगर ऐसा न होता तो सात्यकि कैसे भूरिश्रवा के वश में होकर इस शोचनीय अवस्था को पहुँचते। भूरिश्रवा वीरश्रेष्ठ सात्यकि से विशेष बल दिखाकर उनके सत्यविक्रमी नाम को व्यर्थ किये देते हैं।

श्रीकृष्ण के वचन सुनकर महारथी अर्जुन मन ही मन भूरिश्रवा की प्रशंसा करते हुए कहने लगे कि कुरुकुल की कीर्ति बढ़ानेवाले वीर भूरिश्रवा वृष्णिवंशी सात्यकि के प्राण न लेकर, वन में सिंह जैसे किसी गजराज को खींचे वैसे ही, उनको खींचते हुए खेल से रहे हैं। उनके इस अद्भुत पराक्रम को देखकर वास्तव में मुझे हर्ष हो रहा है। अब उन्होंने कहा—श्रीकृष्ण ! लगातार जयद्रथ की ओर लक्ष्य रखने के कारण मैं सात्यकि की ओर ध्यान नहीं दे सका। अब मैं इनकी रक्षा के लिए दुष्कर कार्य करता हूँ; [क्योंकि ये मेरे प्रिय शिष्य हैं और मेरे ही लिए मेरे शत्रुओं से युद्ध कर रहे हैं। दावानल से सिंह के बच्चे की तरह मैं अभी सात्यकि को शत्रु के हाथ से छुड़ाता हूँ।] महाराज ! यों कहकर सात्यकि का प्रिय करने के लिए अर्जुन ने एक तीक्ष्ण क्षुरप्र बाण गाण्डीव धनुष पर चढ़ाया। आकाश से गिरी हुई बड़ी उल्का के समान अर्जुन के छोड़े हुए उस बाण ने भूरिश्रवा के खड्ग सहित दाहने हाथ को काट डाला। ७० ७२

एक सौ तेंतालीस अध्याय

सात्यकि का भूरिश्रवा के सिर को काट डालना

सञ्जय कहते हैं—राजन् ! महावीर भूरिश्रवा का वह अङ्गद-शोभित खड्ग सहित दाहना हाथ, अदृश्य अर्जुन के बाण से, कटकर सब लोगों के मन में दुःसह दुःख उत्पन्न करता हुआ पाँच मुखवाले साँप की तरह बड़े वेग से पृथ्वी पर गिर पड़ा। अब भूरिश्रवा ने अपने को किसी काम का न समझकर सात्यकि को छोड़ दिया। वे अत्यन्त क्रोध से अर्जुन का तिरस्कार करते हुए कहने लगे—हे अर्जुन ! मैं एकाग्र होकर दूसरे से लड़ रहा था, ऐसी दशा में तुमने मेरा हाथ काटकर बहुत ही निन्दित काम किया है। धर्मराज युधिष्ठिर जब तुमसे मेरी मृत्यु का वृत्तान्त पूछेंगे तब तुम क्या उनसे यह कहोगे कि मैंने भूरिश्रवा को सात्यकि-वध करते देखकर अनुचित रीति से मारा है ? [सच है, मनुष्य जिसकी सङ्गति करता है उसी का सा स्वभाव उसका शीघ्र ही हो जाता है।] हे पार्थ ! इस तरह अस्त्र का प्रयोग करना तुम्हें इन्द्र ने बताया है या भगवान् शङ्कर ने ? अथवा द्रोणाचार्य या कृपाचार्य से तुमको ऐसी शिक्षा मिली है ? लोग कहते हैं कि तुम अन्य योद्धाओं की अपेक्षा अस्त्रप्रयोग के धर्म को अधिक जानते हो। फिर तुमने मुझ पर इस तरह कैसे प्रहार किया ? असावधान, डरे हुए, रथहीन, शरणागत और सङ्कट में पड़े

हुए शत्रु पर सज्जन पुरुष प्रहार नहीं करते। फिर तुम इस, नीच पुरुषों के योग्य और सज्जनों के लिए अतीव दुष्कर, पाप-कार्य में कैसे प्रवृत्त हुए ? आर्य पुरुष सत्कार्य को सहज ही कर सकते हैं, किन्तु असत् कार्य करना उनके लिए अत्यन्त कठिन होता है। महात्मन् ! इस बात के तुम प्रत्यक्ष उदाहरण हो कि मनुष्य जैसी सोहबत में रहता है शीघ्र ही वैसा हो जाता है। देखो, तुम राजघराने में, ख़ासकर कुरुवंश में उत्पन्न, अत्यन्त सुशील और सत्यव्रतपरायण हो। किन्तु इस समय क्षत्रिय-धर्म के विरुद्ध आचरण करते हुए तुमने जो सात्यकि के प्राणों की रक्षा करने को यह अनुचित काम किया है, सो कृष्ण की इच्छा या कहने से किया है। ऐसा विचार स्वयं तुम्हारे मन में नहीं आ सकता। हे धनञ्जय ! जो कृष्ण का सखा नहीं है वह कभी दूसरे के साथ युद्ध कर रहे असावधान पुरुष को इस तरह विपत्ति में नहीं डाल सकता। हे पार्थ ! वृष्णि और अन्धक वंश के यादव व्रात्य (पतित) क्षत्रिय हैं। वे स्वभाव से ही निन्दनीय होते हैं। उनके मत के अनुसार कार्य करने में भला तुम कैसे प्रवृत्त हुए ?

राजन् ! भूरिश्रवा के वचन सुनकर महावीर अर्जुन कहने लगे—प्रभो ! जान पड़ता है कि वृद्धावस्था आने पर मनुष्य की बुद्धि भी जीर्ण हो जाती है। अभी आपने जो बातें मुझसे कही हैं वे निरर्थक हैं। आप मुझे और श्रीकृष्ण को अच्छी तरह जानकर भी उनकी निन्दा करते हैं, यह ठीक नहीं है। मैं युद्ध-धर्म का ज्ञाता और सब शास्त्रों का जानकार होकर कैसे अधर्म का आचरण कर सकता हूँ ? [अपने पक्ष की रक्षा करने से जय और यश मिलता है। और श्रीकृष्ण का साथ करने से आप जो मेरी निन्दा कर रहे हैं, यह आपकी बुद्धि का भ्रम है। भला श्रीकृष्ण से मैत्री कौन न चाहेगा ?] पिता, भाई, पुत्र, सम्बन्धी और अन्यान्य भाई-बन्धुओं के साथ मिलकर उनके बाहुबल के सहारे ही क्षत्रियगण संग्राम करते हैं। राजन् ! समरभूमि में केवल आत्मरक्षा करना ही राजा या मुख्य योद्धा का कर्त्तव्य नहीं होता। जो लोग उसके

कार्यसाधन में नियुक्त हैं, पहले उनकी रक्षा करना ही उसका प्रधान कर्त्तव्य है। उन लोगों के सुरक्षित रहने से ही राजा सुरक्षित होता है और उसे विजय मिलती है। महावीर सात्यकि हम लोगों के लिए ही जीवन का मोह छोड़कर अत्यन्त भयानक युद्ध कर रहे हैं। सात्यकि मेरे शिष्य, प्रिय सम्बन्धी और दक्षिण बाहु-स्वरूप सहायक हैं। आप उन्हें मार डालने को तैयार थे। अगर मैं उनकी उपेक्षा करता तो मुझे अवश्य नरक-भागी होना पड़ता और सात्यकि का वियोग होता। इसी कारण मैंने सात्यकि की रक्षा की है। फिर आप क्यों मुझ पर वृथा क्रोध कर रहे हैं? महाराज! आप दूसरे के साथ संग्राम कर रहे थे, ऐसी दशा में मैंने आपका हाथ काट डाला है, इसी लिए आप मेरी निन्दा कर रहे हैं। किन्तु विचारकर देखने से मैं कभी निन्दनीय नहीं ठहराया जा सकता। हाथी-घोड़े-रथ-पैदल आदि से परिपूर्ण, सिंह-नादसमाकुल, अत्यन्त गम्भीर सैन्यसागर में घुसकर मैं कभी कवच-कम्पन कर रहा था; कभी रथ पर सवार हो रहा था; कभी धनुष की डोरी खींचता और कभी शत्रुओं के साथ तुमुल संग्राम कर रहा था। ऐसे भयङ्कर समर-सागर में अकेले सात्यकि के साथ किसी एक व्यक्ति का युद्ध कैसे सम्भव है। फिर हे महाबाहो! सात्यकि बहुत लोगों से लड़कर अनेक महा-रथियों को जीतकर थक गये थे और बेदम हो रहे थे। उनके घोड़े भी थक चुके थे। इस अवस्था में वे आपके क़ाबू में आ गये थे। आप अपने को उनसे अधिक बली और पराक्रमी समझकर खड्ग से उनका सिर काटने को तैयार थे। भला अपने आत्मीय प्रिय शिष्य को प्राण-सङ्कट में पड़ा देखकर कौन उसकी रक्षा नहीं करेगा? आपका कोई आश्रित अगर इस तरह विपत्ति में पड़ा होता तो आप कैसा व्यवहार करते? आप आत्मरक्षा पर ध्यान न देकर दूसरे को मारने के लिए उद्यत थे, इसलिए आपको अपनी ही निन्दा करनी चाहिए। ३०

सञ्जय कहते हैं—महाराज! महायशस्वी याज्ञिक भूरिश्रवा ने अर्जुन के ये वचन सुन-कर सात्यकि को छोड़ दिया और प्राण-त्यागने का विचार किया। उन्होंने ब्रह्मलोक जाने की इच्छा से बाँयें हाथ से बाणों की शय्या बिछाई और सब इन्द्रियों के अधिष्ठाता देवताओं में इन्द्रियों को अर्पित कर दिया। प्राणों को प्राणवायु में स्थापित किया। सूर्य में दृष्टि को और चन्द्र में प्रसन्न शुद्ध मन को स्थापित करके वे महती उपनिषद् का जप करने लगे। इस तरह मौन भाव से वे योगयुक्त हो गये। उस समय सभी सैनिक श्रीकृष्ण और अर्जुन को बुरा-भला कहने लगे। चारों ओर भूरिश्रवा की प्रशंसा होने लगी। श्रीकृष्ण और अर्जुन ने अपनी निन्दा सुनकर भी कुछ अप्रिय वचन नहीं कहे और अपनी प्रशंसा सुनकर भूरिश्रवा कुछ प्रसन्न नहीं हुए। राजन्! उस समय आपके पुत्रों के मुँह से अपनी निन्दा सुनकर अर्जुन सह नहीं सके। वे अपने क्रोध को रोककर आक्षेप करते हुए कहने लगे—सब राजा लोग मेरे इस महाव्रत को जानते हैं कि जहाँ तक मेरे बाण की गति है उस सीमा के भीतर जो कोई मेरे पक्ष

४० का आदमी होगा उसको कोई शत्रु नहीं मार सकेगा। मेरी इस प्रतिज्ञा का ख़याल करके मेरी निन्दा करना ठीक नहीं। धर्म के असली रूप को जाने बिना दूसरे की निन्दा न करनी चाहिए। सात्यकि निहत्थे थे, उनको खड्ग से मार डालने के लिए उद्यत महाराज भूरिश्रवा का हाथ जो मैंने काट डाला उसकी [अगर वह धर्मविरुद्ध हो तो भी] तुम लोग निन्दा नहीं कर सकते; क्योंकि तुम बहुतों ने मिलकर रथ, शस्त्र और कवच से हीन अकेले बालक अभिमन्यु को मार डाला है! वह कार्य क्या किसी धर्मात्मा के योग्य था ?

हे महाबाहो! अर्जुन के यों कह चुकने पर महात्मा भूरिश्रवा ने पृथ्वी में सिर लगाकर बायें हाथ से अपना कटा हुआ दाहना हाथ अर्जुन के पास फेंक दिया। वे चुपचाप प्राण-त्याग करने को तैयार हुए। [पूर्वोक्त कार्य द्वारा उन्होंने यह प्रकट किया कि अर्जुन ने धर्मानुसार ही उनके हाथ को काटा है। राजन्! भूरिश्रवा को देहत्याग के लिए प्रायोपवेशन (मरने के लिए अन्न-जल को छोड़कर बैठ जाना) करते देखकर करुणापूर्ण होकर] अर्जुन कहने लगे—महात्मन्, हे शल के बड़े भाई! मुझे धर्मराज युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल और सहदेव जैसे प्रिय हैं वैसे ही आप भी प्रिय हैं। महात्मा वासुदेव और मैं दोनों आज्ञा देते हैं कि उशीनर के पुत्र शिवि की तरह आप उन लोकों में जाइए, जिनमें पुण्यात्मा लोग जाते हैं।

अर्जुन के बाद कृष्णचन्द्र ने कहा—महात्मन्! हे सदा अग्निहोत्र यज्ञ करनेवाले! ब्रह्मा आदि श्रेष्ठ देवगण जिन विमल प्रकाशपूर्ण तेजोमय लोकों की इच्छा करते हैं उन्हीं लोकों को शीघ्र जाओ। मेरे ही समान रूप पाओ और गरुड़गामी बनो।

सञ्जय कहते हैं—महाराज! उधर भूरिश्रवा के बाहुपाश से छुटकारा पाकर महाबली सात्यकि खड़े हो गये। अर्जुन के बाण से जिनका हाथ कट गया था, और जिसकी सूँड़ कट गई हो उस हाथी के समान जो बैठे हुए थे, उन निष्पाप भूरिश्रवा को मारने के लिए सात्यकि ने हाथ में खड्ग लिया। वे जब भूरिश्रवा का सिर काटने के लिए आगे बढ़े तब सब योद्धा लोग

५१ चिल्लाकर उन्हें मना करने लगे। महामति श्रीकृष्ण, अर्जुन, भीमसेन, उत्तमौजा, युधामन्यु, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कर्ण, वृषसेन और जयद्रथ आदि अपने और पराये पक्ष के सब लोगों ने लाख-लाख रोका लेकिन सात्यकि ने किसी की नहीं सुनी। उन्होंने तलवार से, प्रायोपवेशन किये हुए छिन्नबाहु व्रतधारी, भूरिश्रवा का सिर काट ही डाला। अर्जुन पहले ही भूरिश्रवा को एक तरह से मार चुके थे। सात्यकि ने किसी का कहा न मानकर जो उनका सिर काट डाला इससे कोई भी प्रसन्न नहीं हुआ। सब सैनिक सात्यकि की निन्दा करने लगे। देवता सिद्ध चारण मनुष्य आदि सब लोग प्रायोपवेशन में मारे गये इन्द्र-तुल्य भूरिश्रवा के कर्म से विस्मित होकर उनकी बड़ाई करने लगे। महाराज! उस समय आपकी सेना के लोग तरह-तरह की बातें कहने लगे। कुछ तो सात्यकि की निन्दा करने लगे और कुछ कहने लगे कि
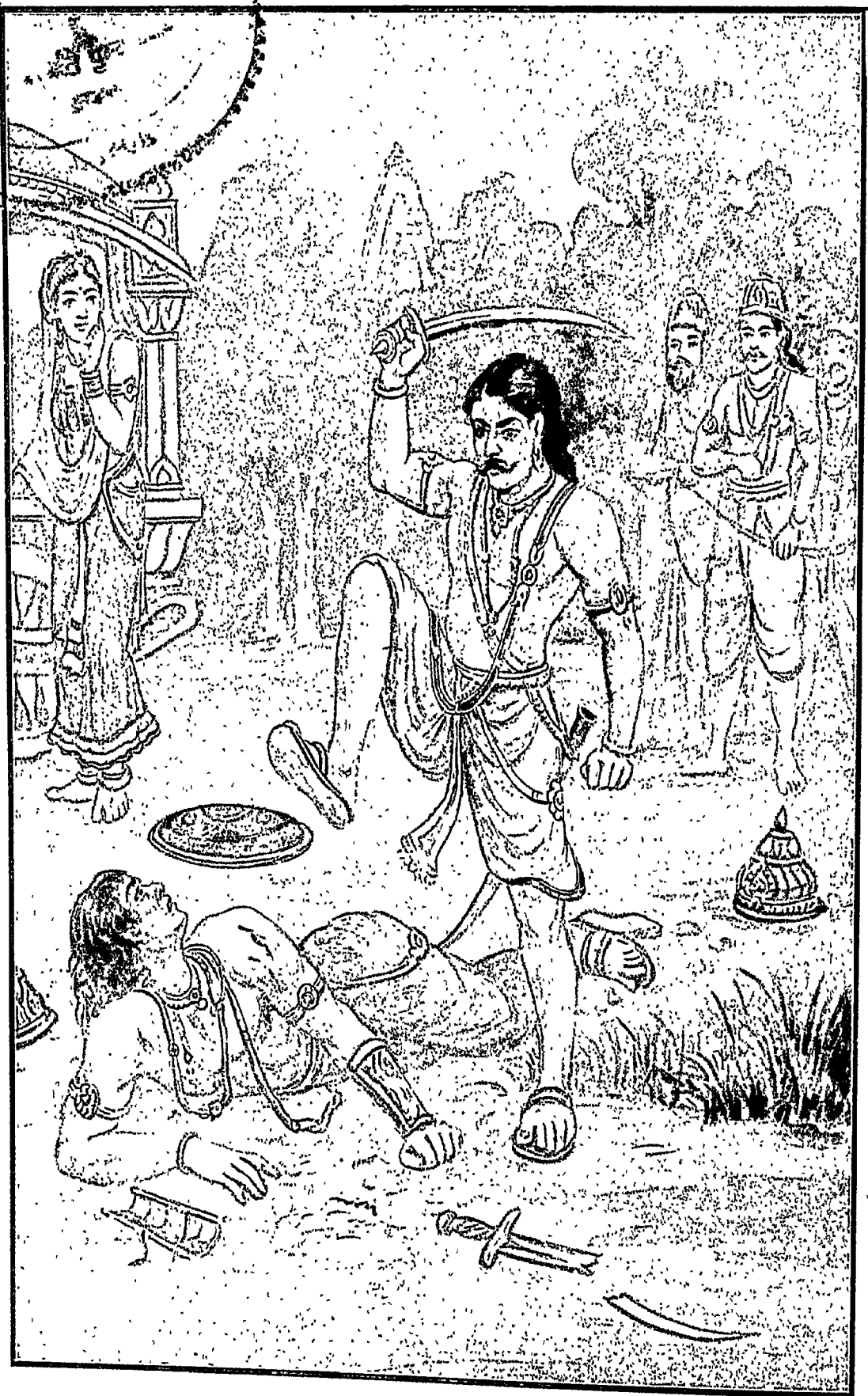
शिनि ने एक हाथ से उनके केश पकड़ कर उनकी छाती में लात मारी।—पृ० २५०२

"इस बारे में वीर सात्यकि का कुछ दोष नहीं, होनी ही ऐसी थी। इस घटना के लिए हमें क्रोध नहीं प्रकट करना चाहिए। क्रोध ही मनुष्यों के दुःख का प्रधान कारण है। विधाता ने ही युद्ध-भूमि में इस तरह सात्यकि के हाथ से भूरिश्रवा की मृत्यु लिख दी थी।"

६०

महापराक्रमी सात्यकि ने कुपित होकर कौरवों को सम्बोधन करके कहा—अरे धर्म-कञ्चुकधारी अधर्मी मन्दमति कौरवो! 'न मारना, न मारना' कहकर क्या चिल्ला रहे हो? दूसरे के समय धर्म की दोहाई देते हो, पर अपने समय धर्म को ताक पर रख देते हो! जब अकेले वीर बालक अभिमन्यु को तुम नीचों ने मिलकर निहत्था कर दिया और मार डाला था तब तुम्हारा धर्म कहाँ चला गया था? मेरी तो यह प्रतिज्ञा ही है कि अकारण कटु वचन कहकर निन्दा करनेवाला और संग्राम में जीते जी मुझे पटककर मेरी छाती में क्रोध से लात मारनेवाला कोई भी हो—चाहे मुनि-व्रतधारी ही क्यों न हो—वह शत्रु मेरा वध्य है; मैं उसे नहीं छोड़ सकता। मैं शत्रु के वश होकर भी उस पर वार करने की चेष्टा कर रहा था, मेरे हाथ सही सलामत थे। तुम लोग आँखें रहते भी, ऐसी अवस्था में, मुझे मृत समझते थे सो यह तुम्हारी बुद्धि की कमी थी। हे कुरुवंशियो! मैंने मौक़ा पाकर शत्रु को मार डाला, सो बिलकुल ठीक है। मुझे खेद यही रह गया कि अर्जुन ने मुझे विपत्तिग्रस्त देखकर, अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा करने को, भूरिश्रवा का खड्ग सहित हाथ पहले ही काट डाला। जो होना है वही होता है, दैव उसी के अनुसार सब चेष्टा करा लेता है। उसी दैव की प्रेरणा से इस युद्ध में भूरिश्रवा मारे गये। इसमें मैंने अधर्म ही क्या किया? महर्षि वाल्मीकि पहले कह गये हैं कि जिससे शत्रु को कष्ट हो वह कार्य मनुष्य को सदा करना चाहिए। सो मैंने वही किया है। फिर तुम लोग मूढ़ की तरह क्यों मेरी निन्दा कर रहे हो?

सञ्जय कहते हैं—महाराज! सात्यकि के यों कहने पर सब कौरव चुप हो रहे और सात्यकि के कथन को युक्ति-सङ्गत मानकर मन में उनकी प्रशंसा करने लगे। महायज्ञों में मन्त्रा-

.भिषेक से पवित्र, भारी दक्षिणाएँ देनेवाले यशस्वी भूरिश्रवा उस समय वानप्रस्थ मुनि के तुल्य थे। उनके वध से शत्रु मित्र कोई भी प्रसन्न नहीं हुआ। भूरिश्रवा का नीले केशों से अलङ्कृत, कबूतर की सी लाल आँखों से शोभित सिर वहाँ पर, यज्ञशाला में अश्वमेध (बलिदान) के घोड़े के कटे सिर की तरह, शोभा को प्राप्त हुआ। महारथी भूरिश्रवा, शरीर त्यागकर, शस्त्र-वध की उत्तम मृत्यु से मरने के कारण पवित्र तेज से सम्पन्न होकर [विमान पर बैठकर दिव्य शरीर से] ऊपर के लोकों को गये। सबकी इच्छा पूरी करनेवाले और वरदान के योग्य भूरिश्रवा की
७१ प्रशंसा तथा पुण्य-धर्म से पृथ्वी और गगनमण्डल व्याप्त हो गया।

एक सौ चवालीस अध्याय

सञ्जय का भूरिश्रवा से सात्यकि के पराजित होने का कारण बतलाना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! धर्मराज से अर्जुन के पास जाने का वादा करके जो महावीर सहज ही सागर सदृश कौरवसेना के पार चले गये और जिन्हें महारथी द्रोणाचार्य, कर्ण, विकर्ण, कृतवर्मा जैसे वीर योद्धा नहीं हरा सके, उन्हीं सात्यकि को अकेले भूरिश्रवा ने कैसे परास्त कर दिया? भूरिश्रवा ने उनको कैसे बलपूर्वक पृथ्वी पर पटक दिया?

सञ्जय ने कहा—राजन्! मैं इस समय सात्यकि और भूरिश्रवा के जन्म का वृत्तान्त कहता हूँ, सुनिए। यह वृत्तान्त सुनने से आपका सब संशय दूर हो जायगा। महर्षि अत्रि के पुत्र सोम थे, सोम के पुत्र बुध थे, बुध के पुत्र देवराज सदृश राजर्षि पुरूरवा हुए। पुरूरवा के पुत्र आयु, आयु के पुत्र नहुष और नहुष के पुत्र राजर्षि ययाति हुए। देवयानी के गर्भ से ययाति के पुत्र यदु हुए। यदु उनके सबसे बड़े पुत्र थे। यदु के वंश में देवमीढ़ नाम के एक महानुभाव उत्पन्न हुए। देवमीढ़ के पुत्र जगत्प्रसिद्ध शूर हुए। शूर के पुत्र महायशस्वी वसुदेव हुए। महाबली शूर धनुर्विद्याविशारद और युद्ध करने में कार्त्तवीर्य अर्जुन के समान थे। उसी कुल में, वैसे ही पराक्रमी, शिनि नाम के और एक वीर उत्पन्न हुए। राजन्! इसी बीच में राजा देवक की कन्या देवकी का स्वयंवर रचा गया। उस स्वयंवर-सभा में सब क्षत्रिय राजा आकर जमा हुए थे। शिनि ने सब राजाओं को जीतकर, वसुदेव के लिए, देवकी को रथ पर बिठा लिया।
१० वहाँ सोमदत्त भी उपस्थित थे। शिनि के रथ पर देवकी को देखकर वीर सोमदत्त सहन नहीं कर सके। देवकी के लिए महावीर शिनि और सोमदत्त का युद्ध छिड़ गया। दोपहर तक बहुत विचित्र बाहुयुद्ध हुआ। इसी बीच में शिनि ने बलपूर्वक सोमदत्त को पृथ्वी पर पटक दिया। शिनि ने एक हाथ से उनके केश पकड़कर, दूसरे हाथ से तलवार तानकर, उनकी छाती में लात मारी। वहाँ हज़ारों राजा खड़े देख रहे थे। उनके सामने ही शिनि ने इस तरह सोमदत्त को परास्त करके फिर कृपापूर्वक उनको जीता छोड़ दिया।

सोमदत्त ने शङ्कर से यही वर माँगा कि मुझे ऐसा बली पुत्र दीजिए जो......शिनि के पुत्र को पटक कर लात मारे।—पृ० २५०२

राजन् ! शूर शिनि के किये हुए अपने घोर अपमान से महावीर सोमदत्त बहुत क्रुद्ध हुए। वे महादेव को प्रसन्न करने के लिए घोर तप करने लगे। वरदानी महादेव प्रसन्न होकर उनके आगे प्रकट हुए और बोले—"वरदान माँगो।" सोमदत्त ने शङ्कर से यही वर माँगा कि मुझे ऐसा बली पुत्र दीजिए, जो युद्ध में हज़ारों राजाओं के सामने शिनि के पुत्र को पटककर लात मारे। सोमदत्त के ये वचन सुनकर, "तथास्तु" कहकर, शङ्कर अन्तर्द्धान हो गये। उसी वरदान के अनुसार सोमदत्त के भूरिश्रवा उत्पन्न हुए और उन्होंने, सब सैनिकों के आगे, सात्यकि को पछाड़कर उनकी छाती में लात मारी। राजन् ! आपने जो मुझसे पूछा था, सो मैंने कह दिया। महाराज ! महाप्रतापी सात्यकि को रण में कोई भी श्रेष्ठ योद्धा नहीं जीत सकता। ये यादव लोग विचित्र युद्ध में निपुण होते और अचूक निशाना मारते हैं। देवता, दानव, गन्धर्व आदि को भी उन्होंने जीता है। ऐसे काम उनके लिए कुछ नये नहीं हैं। वे लोग अपने बाहुबल से विजय प्राप्त करते हैं; और किसी के भरोसे युद्ध नहीं करते। प्रभो ! पृथ्वी पर वृष्णिवंशी यादवों की बराबरी करनेवाला बली न हुआ है, न है और न होगा। वे अपने जातिवालों और नातेदारों का अनादर नहीं करते; वे सदा बड़े-बूढ़ों की आज्ञा का पालन करते हैं। देवता, गन्धर्व, असुर, नाग, राक्षस आदि भी वृष्णिवंशियों को परास्त नहीं कर सकते; मनुष्यों की तो बात ही क्या है। वे ब्राह्मण के धन, गुरु के धन और जातिवालों के धन को नहीं हरते। ब्राह्मण, गुरु, जातिभाई और आपत्ति में पड़े हुए अन्य लोगों की रक्षा करना वे अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं। वे धनी, अहङ्कार-हीन, ब्राह्मणभक्त और सत्यवादी हैं। वे समर्थ पुरुषों का अनादर नहीं करते और दीन दुर्बलों का उद्धार और सहायता करते हैं। वे नित्य देवभक्त, जितेन्द्रिय, विनयी और रक्षक हैं। वे अपने मुँह अपनी बड़ाई नहीं करते। इसी कारण वृष्णिवंश के वीरों का सर्वत्र बोलबाला है। चाहे कोई सुमेरु पर्वत को उखाड़कर लादकर ले जाय, चाहे कोई सागर को तैर जाय; किन्तु वृष्णि-वीरों से युद्ध ठानकर विजय नहीं पा सकता। हे कुरुराज ! यह मैंने सब हाल सुना दिया। इससे आपका संशय दूर हो गया होगा। प्रभो ! आपके महान् अन्याय के कारण ही ये सब दुर्घटनाएँ हो रही हैं। २०, २९

एक सौ पैंतालीस अध्याय

श्रीकृष्ण और अर्जुन का संवाद तथा कर्ण के साथ सात्यकि का युद्ध

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! इस तरह प्रायोपवेशन की अवस्था में शस्त्र-हीन पराक्रमी भूरिश्रवा के मारे जाने पर फिर जिस तरह युद्ध हुआ, सो वर्णन करो। सञ्जय ने कहा कि महाराज ! वीर भूरिश्रवा के मारे जाने पर अर्जुन ने कहा—हे कृष्णचन्द्र ! तुम झटपट मेरे रथ के घोड़ों को हाँककर जयद्रथ के पास ले चलो और मेरी प्रतिज्ञा को सफल करो। हे निष्पाप !

सूर्य तेज़ी के साथ अस्ताचल को जा रहे हैं। मुझे शीघ्र ही जयद्रथ-वध रूप महत् कार्य करना होगा। कौरवपक्ष के महारथी, जीवन का मोह छोड़कर, जयद्रथ की रक्षा कर रहे हैं। इसलिए तुम उस ढङ्ग से मेरा रथ हाँको जिससे मैं सूर्य अस्त होने के पहले ही जयद्रथ को मारकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर लूँ। महाराज! तब घोड़ों की जानकारी में निपुण श्रीकृष्ण ने उसी दम अर्जुन के सफ़ेद घोड़ों को जयद्रथ के रथ की ओर हाँकना शुरू किया। महावीर दुर्योधन, कर्ण, वृषसेन, शल्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य और स्वयं राजा जयद्रथ, ये सब योद्धा अमोघ अस्त्र-वाले महावीर अर्जुन को, वाण-से शीघ्रगामी घोड़ों को तेज़ी से हँकवाकर, अपनी ओर आते देखकर फुर्ती के साथ उनकी ओर बढ़े। सामने सिन्धुराज जयद्रथ को पाकर क्रोध से लाल हो १० रही आँखों से अर्जुन इस तरह देखने लगे मानों दृष्टि से ही उन्हें भस्म कर डालेंगे।

राजन्! अर्जुन को जयद्रथ के रथ के सामने जाते देखकर दुर्योधन ने कर्ण से कहा—हे राधेय! अब यह युद्ध का समय उपस्थित है, तुम अपना बाहुबल दिखाओ और ऐसा करो कि अर्जुन जयद्रथ को न मार सकें। दिन थोड़ा सा ही रह गया है। तुम वाण-वर्षा करके शत्रु के उद्योग को व्यर्थ कर दो। हे कर्ण! दिन डूबते ही हमारी जय निश्चित है। सूर्य के अस्त होने तक जयद्रथ की रक्षा कर सकने पर अर्जुन की प्रतिज्ञा निष्फल होगी और वे आग में जल मरेंगे। अर्जुन के यों प्राण दे देने पर उनके भाई और अनुगत लोग भी मर जायँगे। इस तरह आसानी से पाण्डवों के मर जाने पर हम समुद्र-पर्यन्त पृथ्वी का निष्कण्टक राज्य भोगेंगे। आज भावी के वश होकर अर्जुन की बुद्धि विपरीत हो गई है और वे कर्तव्याकर्तव्य का विचार न करके, आत्मविनाश के लिए, दिन भर में ही

जयद्रथ को मारने की प्रतिज्ञा कर बैठे हैं। भला तुम जैसे दुर्द्धर्ष मित्र के रहते अर्जुन की क्या ताब कि दिन डूबने से पहले जयद्रथ को मार लें! मैं, मद्रराज शल्य, कृपाचार्य, अश्वत्थामा और दुःशासन, हम सब मिलकर वीर जयद्रथ की रक्षा करेंगे, तो अकेले अर्जुन कैसे उनका वध

कर सकेंगे? एक तो असंख्य वीर एकत्र होकर संग्राम कर रहे हैं, दूसरे उधर सूर्यदेव भी अस्ताचल के शिखर तक पहुँच गये हैं। इससे जान पड़ता है कि अर्जुन किसी तरह दिन रहते जयद्रथ को नहीं मार सकेंगे। हे कर्ण! इस समय तुम अश्वत्थामा, शल्य, कृपाचार्य और अन्य सब वीरों को साथ लेकर, यत्न के साथ, अर्जुन को रोको और युद्ध करो। २१

महाराज! पराक्रमी कर्ण ने दुर्योधन की ये बातें सुनकर कहा—हे नरनाथ! महावीर भीमसेन ने असंख्य तीक्ष्ण बाणों से मेरे अङ्ग छिन्न-भिन्न करके सारा शरीर जर्जर कर दिया है। समरभूमि से भाग जाना ठीक न समझकर ही मैं ठहरा हुआ हूँ, नहीं तो कभी का चला गया होता। भीमसेन के बाण लगने से मेरे अङ्ग-प्रत्यङ्ग अत्यन्त व्यथित हो रहे हैं; किन्तु यह जीवन तुम्हारे ही लिए है। अतएव यथाशक्ति अर्जुन से युद्ध करके मैं ऐसी चेष्टा करूँगा जिसमें अर्जुन जयद्रथ को न मार सकें। मैं जब कुपित होकर रणभूमि में तीक्ष्ण बाण बरसाऊँगा तब अर्जुन कदापि जयद्रथ को नहीं पा सकेंगे। राजन्! हितकार्य करनेवाले और अनुगत लोग जैसा कार्य करते हैं, वैसा ही कार्य मैं करूँगा; किन्तु जय या पराजय दैव के अधीन है। आज मैं तुम्हारा कार्य सिद्ध करने और जयद्रथ को बचाने के लिए कोई बात उठा न रक्खूँगा। आज सेना के क्षत्रिय लोग मेरा और अर्जुन का अत्यन्त दारुण संग्राम देखेंगे। ३०

हे कुरुकुलश्रेष्ठ! इधर दुर्योधन और कर्ण इस तरह बातें कर रहे थे और उधर महावीर अर्जुन घोर रूप से आपकी सेना का नाश करने में लगे हुए थे। वे सुतीक्ष्ण बाणों से समर से न हटनेवाले वीरों के, परिघ और हाथी की सूँड़ के समान, हाथ और मस्तक काट-काटकर रणभूमि को पाटने लगे। घोड़ों की गरदनों, हाथियों की सूँड़ों, रथों के पहिये-धुरे-जुए आदि अङ्ग-प्रत्यङ्गों का कट-कटकर ढेर होने लगा। वे क्षुरप्र बाणों से रक्त से नहाये हुए प्रास-तोमरधारी घुड़सवारों के दो-दो तीन-तीन टुकड़े करने लगे। असंख्य घोड़े और हाथी उनके बाणों से मरकर, छिन्न-भिन्न होकर, रणभूमि में गिरने लगे। ध्वजा, छत्र, धनुष, चामर और वीरों के सिर कट-कटकर चारों ओर बिछ गये। जैसे आग प्रकट होकर घास-फूस के ढेरों को भस्म कर देती है वैसे ही महावीर अर्जुन अपने बाणों की आग से कौरव-सेना को नष्ट करने लगे। शीघ्र ही वहाँ रक्त की कीच हो गई। महाराज! प्रतापी सत्यविक्रमी अर्जुन इस तरह आपके दल के असंख्य वीरों को युद्ध में नष्ट करके जयद्रथ के पास पहुँच गये। भीमसेन और सात्यकि उनकी सहायता और रक्षा कर रहे थे। वे उस समय प्रचण्ड और प्रज्वलित अग्नि के समान जान पड़ने लगे। अर्जुन को इस तरह अपना बल और वीरता प्रकट करते देखकर कौरव पक्ष के वीर बहुत क्रुद्ध हुए। उनके लिए अर्जुन का अद्भुत पराक्रम असह्य हो उठा। उस समय राजा दुर्योधन, कर्ण, वृषसेन, शल्य, अश्वत्थामा और कृपाचार्य अत्यन्त कुपित होकर अर्जुन को घेरने और जयद्रथ की रक्षा करने लगे। रणनिपुण और मुँह फैलाये काल ४०

के समान महाभयङ्कर अर्जुन धनुष की टङ्कार और तलध्वनि के साथ युद्ध करते हुए समरभूमि में चारों ओर नाचते से थे। कौरव पक्ष के सब वीर निर्भय भाव से उनको घेरकर, जयद्रथ को अपने पीछे करके, घोर युद्ध करने लगे। वे सब श्रीकृष्ण सहित अर्जुन को मारने का घोर प्रयत्न करने लगे। महाराज! इसी अवसर में सूर्यमण्डल का लाल रङ्ग हो गया; वे अस्त हो चले। यह देखकर कौरव पक्ष के वीर बहुत ही आनन्दित हो उठे। वे सूर्य के शीघ्र अस्त हो जाने की आशा करके, साँप के फन के समान मोटी, बलिष्ठ भुजाओं से धनुष झुका-झुकाकर अर्जुन के ऊपर चारों ओर से सूर्यकिरण सदृश चमकीले और तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। रणदुर्मद अर्जुन भी उनके हर एक बाण के राह में ही दो-चार और आठ तक टुकड़े करके अपने बाणों के प्रहार से उन्हें विह्वल करने लगे।

तब सिंहपुच्छ से चिह्नित ध्वजावाले रथ पर बैठे हुए अश्वत्थामा, अपनी शक्ति और पराक्रम दिखाने के लिए, अर्जुन का सामना करने को आये। उन्होंने दस बाण अर्जुन को और सात बाण श्रीकृष्ण को मारे। अब वे जयद्रथ की रक्षा करने के लिए अर्जुन के रथ की राह रोककर ५० खड़े हो गये। कौरव पक्ष के अन्यान्य महावीर भी, दुर्योधन की आज्ञा के अनुसार, चारों ओर से रथमण्डल के द्वारा अर्जुन को घेरकर जयद्रथ की रक्षा करने का प्रयत्न करते हुए धनुष चढ़ा-चढ़ाकर अर्जुन के ऊपर असंख्य बाण बरसाने लगे। उस समय सब लोग महावीर अर्जुन का बाहुबल, शिक्षा और अभ्यास देखकर दङ्ग रह गये। गाण्डीव धनुष की शक्ति और अक्षय बाणों को देखकर सबके आश्चर्य की सीमा नहीं रही। अर्जुन ने अस्त्र-प्रयोग के द्वारा अश्वत्थामा और कृपाचार्य के अमोघ अस्त्रों को व्यर्थ कर दिया। जयद्रथ की रक्षा के लिए उद्योग करनेवाले हर एक कौरवपक्ष के वीर को अर्जुन ने दस-दस बाण मारे। उस समय अश्वत्थामा ने पचीस, वृषसेन ने सात, दुर्योधन ने बीस तथा कर्ण और शल्य ने तीन-तीन बाण अर्जुन को मारे। वे लोग इस तरह एक साथ अर्जुन पर प्रहार करके तर्जन-गर्जन-पूर्वक युद्ध करने लगे। उक्त वीर चारों ओर से अर्जुन का रथ घेरकर बारम्बार उन्हें असंख्य तीक्ष्ण बाण मारने लगे।

ये सब महावीर रथ से रथ सटाकर सूर्य के शीघ्र अस्त होने की इच्छा से धनुष चढ़ाने, सिंहनाद करने और जैसे मेघ पर्वत के ऊपर जलधारा बरसाते हैं वैसे ही अर्जुन के ऊपर अत्यन्त तीक्ष्ण असह्य बाण बरसाने लगे। किन्तु महावीर अर्जुन कौरव पक्ष के असंख्य वीरों का नाश ६० करके जयद्रथ के पास पहुँच ही गये। यह देखकर, भीमसेन और सात्यकि के सामने ही, महावीर कर्ण बाण बरसाकर महापराक्रमी अर्जुन को रोकने लगे। अर्जुन ने भी सब सैनिकों के सामने ही उनके बाणों को व्यर्थ करके दस बाणों से कर्ण को गहरी चोट पहुँचाई। साथ ही सात्यकि ने तीन, भीमसेन ने तीन और अर्जुन ने भी और सात बाण कर्ण को मारे। कर्ण ने उनमें से हर एक को साठ-साठ बाण मारे। इस तरह अकेले कर्ण कई वीरों के साथ दारुण

संग्राम करने लगे। उस समय हम लोग कर्ण के अद्भुत पराक्रम को देखकर बहुत ही विस्मित हुए। वे कुपित होकर अकेले ही इन तीन महारथियों को रोकने लगे।

तब पराक्रमी अर्जुन ने कर्ण के मर्मस्थलों में सौ तीक्ष्ण बाण ताक-ताककर मारे। कर्ण रक्त से नहा गये, तथापि विचलित न होकर उन्होंने अर्जुन को पचास बाण मारे। कर्ण की फुर्ती देखकर अर्जुन ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर उनका धनुष काट डाला और उनकी छाती में तीक्ष्ण नव बाण मारे। अब कर्ण ने दूसरा धनुष लेकर अर्जुन को आठ हज़ार बाण मारे। इस बाण-वर्षा को अर्जुन ने इस तरह काट दिया जिस तरह आँधी टिड्डियों को हटा देती है। फिर कर्ण ७० को मार डालने के लिए अर्जुन ने फुर्ती के साथ सूर्यसदृश तेजोमय एक उग्र बाण छोड़ा। महावीर अश्वत्थामा ने अर्जुन के छोड़े हुए उस अमोघ बाण को वेग से आते देखकर एक तीक्ष्ण अर्धचन्द्र बाण से राह में ही काट डाला। अब वीर कर्ण भी उनके कार्य का जवाब देने के लिए हज़ारों बाणों से अर्जुन को आच्छादित करने लगे। वे दोनों महावीर इसी तरह युद्ध करते और साँड़ों की तरह गरजते थे। उन्होंने सीधे जानेवाले बाणों से आकाश-मण्डल को भर दिया और स्वयं भी उस बाण-वर्षा में अदृश्य हो गये। वे दोनों वीर अपने नामों का उल्लेख करके गरजते और तीक्ष्ण बाणों से परस्पर प्रहार करते थे। कर्ण कहते थे—अर्जुन, खड़े रहो, मैं कर्ण हूँ। अर्जुन कहते थे—कर्ण, खड़े रहो, मैं अर्जुन हूँ। इसी तरह कठोर वचनों से तर्जन-गर्जन कर रहे दोनों वीर ख़ूबसूरती और फुर्ती के साथ विचित्र युद्ध कर रहे थे। सब योद्धाओं के सामने दोनों वीरों का रूप दर्शनीय हो रहा था। सिद्ध चारण नाग आदि दोनों वीरों की प्रशंसा करने लगे। इस तरह परस्पर

वध की इच्छा से दोनों वीर घोर संग्राम करने लगे। महाराज! उस समय राजा दुर्योधन ने कौरव पक्ष के सब वीर योद्धाओं से कहा—हे वीरो! तुम सब लोग यत्नपूर्वक कर्ण की रक्षा करो। महाप्रतापी कर्ण आज अर्जुन को बिना मारे या बिना जीते नहीं लौटेंगे। ८०

राजन्! दुर्योधन सब वीरों से यों कह रहे थे, इसी समय अर्जुन ने कर्ण के बल-विक्रम को देखकर अत्यन्त कुपित हो कानों तक खींचकर चार बाण छोड़े, जिनसे कर्ण के रथ के चारों घोड़े मर गये। फिर अर्जुन ने एक भल्ल बाण से कर्ण के सारथी को भी मार डाला। इसके बाद वे आपके पुत्र राजा दुर्योधन के सामने ही वीर कर्ण को असंख्य तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित करने लगे। इस तरह अर्जुन के बाणों से सारथी और घोड़े मर जाने पर बाण-वर्षा से पीड़ित महारथी कर्ण क्षण भर के लिए मोहित और किङ्कर्त्तव्यविमूढ़ से हो गये। तब महावीर अश्वत्थामा ने विरथ कर्ण को अपने रथ पर चढ़ा लिया। अब वीर अश्वत्थामा अर्जुन से घोर युद्ध करने लगे। उस समय शल्य ने अर्जुन को तीस तीक्ष्ण बाण मारे। कृपाचार्य ने भी श्रीकृष्ण को बीस बाण मारकर अर्जुन के ऊपर बारह बाण छोड़े। साथ ही सिन्धुराज जयद्रथ ने चार और वृषसेन ने सात बाण अर्जुन को मारे। इस तरह वे सब एक साथ श्रीकृष्ण और अर्जुन के ऊपर प्रहार करने लगे। तब महावीर अर्जुन ने अश्वत्थामा को चौंसठ बाण, शल्य को एक सौ बाण, जयद्रथ को दस भल्ल बाण, वृषसेन को तीन बाण और कृपाचार्य को बीस बाण मारकर सिंहनाद किया। राजन्! इसके उपरान्त आपके पक्ष के वीर योद्धा लोग अर्जुन की प्रतिज्ञा को निष्फल करने के लिए बड़ा यत्न करने लगे। वे क्रोध से विह्वल होकर बाणवर्षा करते हुए अर्जुन की ओर बढ़ने लगे। ६०

तब अर्जुन ने कौरवों को भय-विह्वल करके दिव्य वारुण अस्त्र का प्रयोग किया। वह अस्त्र चारों ओर प्रकट होकर आपके पुत्रों के मन में त्रास उत्पन्न करने लगा। उधर कौरवगण भी बड़े-बड़े रथों पर बैठकर बाणवर्षा करते हुए वीर अर्जुन पर आक्रमण करने को चले। उस समय मोहित करनेवाला घमासान युद्ध होने लगा। किन्तु वीर अर्जुन उससे विचलित न होकर लगातार बाण बरसाने लगे। वे कौरवों के दिये हुए अपने बारह वर्ष के वनवास के दुःखों को स्मरण करके, राज्य और विजय पाने के लिए उत्सुक होकर, गाण्डीव धनुष से छूटे हुए बाणों की वर्षा से चारों दिशाओं को व्याप्त करने लगे। उस समय आकाशमण्डल दिन में ही असंख्य उल्काओं से प्रज्वलित हो उठा। मनुष्यों की लाशों पर बेशुमार कौए मँडलाते हुए गिरने लगे। रुद्रदेव ने जैसे कुपित होकर, पिङ्गल वर्ण प्रत्यञ्चा से शोभित, पिनाक धनुष के द्वारा शत्रुओं का संहार किया था वैसे ही अर्जुन भी गाण्डीव धनुष से छूटे हुए बाणों के द्वारा हाथी घोड़े रथ आदि वाहनों पर सवार कौरवों के बाणों को व्यर्थ करके उन्हें मारकर गिराने लगे। तब योद्धा राजा लोग भारी गदा, लोहमय बेलन, खड्ग, शक्ति और अन्य प्रकार के अस्त्र-शस्त्र लेकर गरजते हुए वेग से अर्जुन की ओर दौड़े। यह देखकर महावीर अर्जुन हँसे और प्रलयकाल के मेघ के समान गम्भीर शब्द से युक्त सुदृढ़ गाण्डीव धनुष को चढ़ाकर उग्र बाणों की अग्नि से कौरव-सेना को भस्म करने लगे। राजन्! महावीर अर्जुन उन धनुर्द्धर योद्धाओं को शस्त्र-हीन करके और रथ, हाथी, घोड़े, पैदल आदि सहित सबको मारकर यमराज का राज्य बढ़ाने लगे। ९८

महाभारत के स्थायी ग्राहक बनने के नियम

(१) जो सज्जन हमारे यहाँ महाभारत के स्थायी ग्राहकों में अपना नाम और पता लिखा देते हैं उन्हें महाभारत के अङ्कों पर २०) सैकड़ा कमीशन काट दिया जाता है। अर्थात् १।) प्रति अङ्क के बजाय स्थायी ग्राहकों को १) में प्रति अङ्क दिया जाता है। ध्यान रहे कि डाकखर्च स्थायी और फुटकर सभी तरह के ग्राहकों को अलग देना पड़ेगा।

(२) साल भर या छः मास का मूल्य १२) या ६), दो आना प्रति अङ्क के हिसाब से रजिस्ट्री खर्च सहित १३॥) या ६॥।) जो सज्जन पेशगी मनीआर्डर-द्वारा भेज देंगे, केवल उन्हीं सज्जनों को डाकखर्च नहीं देना पड़ेगा। महाभारत की प्रतियाँ राह में गुम न हो जायँ और ग्राहकों की सेवा में वे सुरक्षित रूप में पहुँच जायँ, इसी लिए रजिस्ट्री द्वारा भेजने का प्रबन्ध किया गया है।

(३) इसके प्रत्येक खंड के लिए अलग से बहुत सुन्दर जिल्दें भी सुनहले नाम के साथ तैयार कराई जाती हैं। प्रत्येक जिल्द का मूल्य ।॥) रहता है परन्तु स्थायी ग्राहकों को वे ॥) ही में मिलती हैं। जिल्दों का मूल्य महाभारत के मूल्य से बिलकुल अलग रहता है।

(४) स्थायी ग्राहकों के पास प्रतिमास प्रत्येक अङ्क प्रकाशित होते ही बिना विलम्ब वी० पी० द्वारा भेजा जाता है। बिना कारण वी० पी० लौटाने से उनका नाम ग्राहक-सूची से अलग कर दिया जायगा।

(५) ग्राहकों को चाहिए कि जब किसी प्रकार का पत्र-व्यवहार करें तो कृपा कर अपना ग्राहक-नम्बर जो कि पता की स्लिप के साथ छपा रहता है और पूरा पता अवश्य लिख दिया करें। बिना ग्राहक-नम्बर के लिखे हज़ारों ग्राहकों में से किसी एक का नाम ढूँढ निकालने में बड़ी कठिनाई पड़ती है और पत्र की कार्रवाई होने में देरी होती है। क्योंकि एक ही नाम के कई-कई ग्राहक हैं। इसलिए सब प्रकार का पत्र-व्यवहार करते तथा रुपया भेजते समय अपना ग्राहक-नम्बर अवश्य लिखना चाहिए।

(६) जिन ग्राहकों को अपना पता सदा अथवा अधिक काल के लिए बदलवाना हो, अथवा पते में कुछ भूल हो, उन्हें कार्यालय को पता बदलवाने की चिट्ठी लिखते समय अपना पुराना और नया दोनों पते और ग्राहक-नम्बर भी लिखना चाहिए। जिससे उचित संशोधन करने में कोई दिक़्क़त न हुआ करे। यदि किसी ग्राहक को केवल एक दो मास के लिए ही पता बदलवाना हो, तो उन्हें अपने हलके के डाकखाने से उसका प्रबन्ध कर लेना चाहिए।

(७) ग्राहकों से सविनय निवेदन है कि नया आर्डर या किसी प्रकार का पत्र लिखने के समय यह ध्यान रक्खें कि लिखावट साफ़ साफ़ हो। अपना नाम, गाँव, पोस्ट और ज़िला साफ़ साफ़ हिन्दी या अँगरेज़ी में लिखना चाहिए ताकि अङ्क या उत्तर भेजने में दुबारा पूछ-ताछ करने की ज़रूरत न हो। "हम परिचित ग्राहक हैं" यह सोच कर किसी को अपना पूरा पता लिखने में लापरवाही न करनी चाहिए।

(८) यदि कोई महाशय मनी-आर्डर से रुपया भेजें, तो 'कूपन' पर अपना पता-ठिकाना और रुपया भेजने का अभिप्राय स्पष्ट लिख दिया करें, क्योंकि मनीआर्डरफ़ार्म का यही अंश हमको मिलता है।

सब प्रकार के पत्रव्यवहार का पता—

मैनेजर महाभारत विभाग, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

आवश्यक सूचनायें

(१) हमने प्रथम खण्ड की समाप्ति पर उसके साथ एक महाभारत-कालीन भारतवर्ष का प्रामाणिक सुन्दर मानचित्र भी देने की सूचना दी थी। इस सम्बन्ध में हम ग्राहकों को सूचित करते हैं कि पूरा महाभारत समाप्त हो जाने पर हम प्रत्येक ग्राहक को एक परिशिष्ट अध्याय बिना मूल्य भेजेंगे जिसमें महाभारत-सम्बन्धी महत्त्व-पूर्ण खोज, साहित्यिक आलोचना, चरित्र-चित्रण तथा विश्लेषण आदि रहेगा। उसी परिशिष्ट के साथ ही मानचित्र भी लगा रहेगा जिसमें पाठकों को मानचित्र देख कर उपरोक्त बातें पढ़ने और समझने आदि में पूरी सुविधा रहे।

(२) महाभारत के प्रेमी ग्राहकों को यह शुभ समाचार सुन कर बड़ी प्रसन्नता होगी कि हमने कानपुर, उन्नाव, काशी (रामनगर), कलकत्ता, ग़ाज़ीपुर, बरेली, मथुरा (वृन्दावन), जोधपुर, बुलन्दशहर, प्रयाग और लाहौर आदि में ग्राहकों के घर पर ही महाभारत के अङ्क पहुँचाने का प्रबन्ध किया है। अब तक ग्राहकों के पास यहीं से सीधे डाक-द्वारा प्रतिमास अङ्क भेजे जाते थे जिसमें प्रति अङ्क तीन चार आना खर्च होता था पर अब हमारा नियुक्त किया हुआ एजेंट ग्राहकों के पास घर पर जाकर अङ्क पहुँचाया करेगा और अङ्क का मूल्य भी ग्राहकों से वसूल कर ठीक समय पर हमारे यहाँ भेजता रहेगा। इस व्यवस्था पर ग्राहकों को ठीक समय पर प्रत्येक अङ्क सुरक्षित रूप में मिल जाया करेगा और वे डाक, रजिस्टरी तथा मनीआर्डर इत्यादि के व्यय से बच जायँगे। इस प्रकार उन्हें प्रत्येक अङ्क केवल एक रुपया मासिक देने पर ही घर बैठे मिल जाया करेगा। यथेष्ट ग्राहक मिलने पर अन्य नगरों में भी शीघ्र ही इसी प्रकार का प्रबन्ध किया जायगा। आशा है जिन स्थानों में इस प्रकार का प्रबन्ध नहीं है, वहाँ के महाभारतप्रेमी सज्जन शीघ्र ही अधिक संख्या में ग्राहक बन कर इस अवसर से लाभ उठावेंगे। और जहाँ इस प्रकार की व्यवस्था हो चुकी है वहाँ के ग्राहकों के पास जब एजेंट अङ्क लेकर पहुँचे तो ग्राहकों को रुपया देकर अङ्क ठीक समय पर ले लेना चाहिए जिसमें उन्हें ग्राहकों के पास बार बार आने जाने का कष्ट न उठाना पड़े। यदि किसी कारण उस समय ग्राहक मूल्य देने में असमर्थ हों तो अपनी सुविधानुसार एजेंट के पास से जाकर अङ्क ले आने की कृपा किया करें।

(३) हम हिन्दी-भाषा-भाषी सज्जनों से एक सहायता की प्रार्थना करते हैं। वह यही कि हम जिस विराट् आयोजन में संलग्न हुए हैं आप लोग भी कृपया इस पुण्य-पर्व में सम्मिलित होकर पुण्य-सञ्चय कीजिए, अपनी राष्ट्र भाषा हिन्दी का साहित्य भाण्डार पूर्ण करने में सहायक हूजिए और इस प्रकार सर्वसाधारण का हित-साधन करने का उद्योग कीजिए। सिर्फ़ इतना ही करें कि अपने दस-पांच हिन्दी-प्रेमी इष्ट-मित्रों में से कम से कम दो स्थायी ग्राहक इस वेद-तुल्य सर्वाङ्गसुन्दर महाभारत के और बना देने की कृपा करें। जिन पुस्तकालयों में हिन्दी की पहुँच हो वहाँ इसे ज़रूर मँगवावें। एक भी समर्थ व्यक्ति ऐसा न रह जाय जिसके घर यह पवित्र ग्रन्थ न पहुँचे। आप सब लोगों के इस प्रकार साहाय्य करने से ही यह कार्य्य अग्रसर होकर समाज का हितसाधन करने में समर्थ होगा।

—प्रकाशक

विषय-सूची

रंगीन चित्रों की सूची

एक सौ छियालीस अध्याय

जयद्रथ का मारा जाना

सञ्जय कहते हैं—राजन्! उस समय अर्जुन के खींचे हुए गाण्डीव धनुष का शब्द काल के गर्जन अथवा वज्राघात के समान भयङ्कर हो रहा था। उसे सुनकर आपकी सेना डर के मारे घबरा गई। उस समय आपकी सेना की दशा प्रलयकाल की आँधी से क्षोभ को प्राप्त, ऊँची तरङ्गों से पूर्ण उस महासमुद्र के जल की सी हुई, जिसमें मछली मगर आदि जल-जन्तु छिप जाते हैं। महाबली अर्जुन एक साथ दसों दिशाओं में दृष्टिपात और सभी अस्त्रों का प्रयोग करते हुए चारों ओर विचर रहे थे। महाराज! उस समय [अद्भुत फुर्ती के कारण] हम लोगों को देख ही नहीं पड़ता था कि अर्जुन कब बाण निकालते हैं, कब धनुष पर चढ़ाते हैं, कब धनुष खींचते हैं और कब बाण छोड़ते हैं। तब अर्जुन ने अत्यन्त कुपित होकर सब कौरवों को डराते हुए दुर्द्धर्ष इन्द्रास्त्र का प्रयोग किया। उस दिव्य अस्त्र के प्रभाव से असंख्य अग्निमुख प्रज्वलित बाण प्रकट होने लगे। कान तक खींचकर छोड़े गये, अग्नि और सूर्य की किरणों के समान, बाणों से आकाशमण्डल उल्का-परिपूर्ण सा जान पड़ने लगा और दुर्निरीक्ष्य हो उठा। राजन्! कौरव दल के वीरों ने अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा करके आकाश में जो अँधेरा कर दिया था, उसे अन्य कोई योद्धा नष्ट करने का ख़याल भी नहीं कर सकता था। किन्तु वीर अर्जुन ने तनिक भी विचलित न होकर, सूर्यदेव जैसे प्रातःकाल रात्रि के अँधेरे को दूर कर देते हैं वैसे ही, पराक्रमपूर्वक फुर्ती के साथ दिव्य अस्त्र से अभिमन्त्रित बाणों के द्वारा उस अन्धकार को नष्ट कर दिया। ग्रीष्म ऋतु के सूर्य जैसे अपनी उग्र किरणों द्वारा जलाशय के जल को सोख लेते हैं, वैसे ही अर्जुन अपने बाणों से आपकी सेना का नाश करने लगे। दिव्य अस्त्रों के जानने- १० वाले अर्जुन के चलाये हुए बाण, संसार में सूर्य की किरणों के समान, शत्रु-सेना में सर्वत्र फैलने लगे। अर्जुन के छोड़े हुए असंख्य तीक्ष्ण विकट बाण, प्रिय मित्र की तरह, शत्रु दल के वीरों के हृदयों में शीघ्रता के साथ प्रवेश करने लगे। अपने को शूर समझनेवाले जो आपके योद्धा अर्जुन से लड़ने गये वे, जलती हुई आग में गिरनेवाले पतङ्गों की तरह, नष्ट हो गये। महाराज! इस तरह वीर अर्जुन शरीरधारी मृत्यु के समान चारों ओर विचरकर शत्रुओं के यश और जीवन को नष्ट करने लगे। वे किसी के किरीट मुकुट वस्त्र सहित सिर, किसी के अङ्गदादि अलङ्कारयुक्त विशाल बाहु और किसी के कुण्डलयुक्त कान बाणों से काट-काटकर गिराने लगे। उन्होंने हाथियों के सवारों के तोमर सहित हाथों का, घुड़सवारों के प्रास-युक्त हाथों का, पैदलों के ढाल-तलवार सहित हाथों का, रथ-स्थित योद्धाओं के धनुष सहित हाथों का और सारथियों के चाबुक तथा घोड़ों की रास से युक्त हाथों का, काट-काटकर, ढेर लगा दिया। उस समय

वीर अर्जुन चिनगारियों और ज्वालाओं से युक्त अग्नि के समान शोभायमान हो रहे थे। प्रज्वलित उग्र बाण किरण-से जान पड़ते थे। सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ, इन्द्र के तुल्य पराक्रमी, दर्शनीय रूप, पुरुषश्रेष्ठ, रथ पर स्थित अर्जुन एक साथ ही सब ओर घूमकर अस्त्र-शस्त्र बरसा रहे थे। धनुष की
२० डोरी और तल का शब्द करते हुए वे चारों ओर नृत्य सा कर रहे थे। दोपहर के सूर्य के समान प्रचण्डरूप अर्जुन ऐसे दुर्निरीक्ष्य हो रहे थे कि सब राजा लोग लाख यत्न करके भी उनकी ओर नज़र भरकर नहीं देख सकते थे। प्रदीप्त उग्र बाण बरसाते हुए वीर अर्जुन उस समय वर्षा ऋतु में इन्द्र-धनुष से शोभित होकर जल बरसा रहे महामेघ के समान दिखाई पड़ रहे थे। इस तरह अर्जुन की की हुई अस्त्रवर्षा में और दुस्तर महाघोर युद्धसागर में बड़े-बड़े योद्धा बहने और डूबने लगे। जिनके सिर कट गये हैं ऐसे धड़, बिना भुजाओं के शरीर, जिनकी हथेलियाँ कट गई हैं ऐसे हाथ, जिनकी उँगलियाँ कट गई हैं ऐसी हथेलियाँ, जिनकी सूँड़ और दाँत कट गये हैं ऐसे मस्त हाथी, जिनकी गर्दन कट गई है ऐसे घोड़े, टुकड़े-टुकड़े हो गये रथ, जिनकी आँतें, पैर तथा अन्य अङ्ग-प्रत्यङ्ग कट गये हैं और जो घायल तथा अधमरे होकर तड़प रहे हैं ऐसे सैकड़ों-हज़ारों मनुष्य उस रणभूमि में चारों ओर देख पड़ते थे। महाराज! हम लोगों ने देखा कि वह रणभूमि मृत्यु के दृश्यों से महाभयानक हो रही थी। कायर लोग उसे देख-कर ही डर जाते थे। वह रणभूमि ऐसी जान पड़ती थी मानों पूर्व समय में पशु-विनाश में प्रवृत्त रुद्रदेव की क्रीड़ाभूमि हो। हाथियों की कटी हुई सूँड़ें साँपों के समान चारों ओर दिखाई देती थीं। विचित्र पगड़ी मुकुट कुण्डल आदि से अलङ्कृत वीरों के मुखकमल कहीं पर कटे पड़े थे, जिन्हें देखने से जान पड़ता था कि रणभूमि माला पहने हुए है। सुनहरे कवच, हाथियों और घोड़ों के अलङ्कार, मुकुट और सैकड़ों किरीट-मुकुट आदि पड़े रहने से रणभूमि
३० विचित्र नई दुलहिन के समान शोभायमान हो रही थी।

महाराज! उस समय वीर अर्जुन ने मरे हुए शत्रुओं के रक्त से घोर वैतरणी के समान महाभयङ्कर और भीरु जनों के लिए भयावनी एक नदी बहा दी। वह मज्जा-मेदा की कीच और रक्तप्रवाह की लहरों से पूर्ण थी। बड़ी-बड़ी हड्डियों के कारण दुर्गम उस नदी में केश ही सेवार के समान थे। कटे हुए सिर और हाथ किनारे की शिलाओं की जगह पर थे। रीढ़ आदि की बड़ी हड्डियाँ उसके दुर्गम स्थल थे। विचित्र ध्वजा-पताका, छत्र और धनुष लहरों के समान प्रतीत होते थे। मरे हुए मनुष्यों और हाथियों के बड़े-बड़े शरीर उसमें बह रहे थे। सैकड़ों रथ नाव और डोंगी की जगह पर थे। घोड़ों के शरीर तटभूमि से जान पड़ते थे। रथों के पहिये, जुए, धुरे, ईषा, कूबर आदि अङ्ग और प्रास, खड्ग, शक्ति, परशु, बाण आदि शस्त्र नागों के समान उसे दुर्गम बनाये हुए थे। काक, कङ्क आदि पक्षी महानक्र-से थे। गीदड़ों के झुण्ड उत्कट मगर-से थे। विकट गिद्ध घड़ियाल-से थे। गिदड़ियों का घोर शब्द उसे महा-

भयानक बना रहा था। उसके किनारे हज़ारों भूत, प्रेत, पिशाच नाच रहे थे। मरे हुए योद्धाओं के सैकड़ों शरीर उसमें वह रहे थे।

साक्षात् काल के समान अर्जुन के अद्भुत पराक्रम को देखकर रणभूमि में कौरवगण बहुत ही डर गये। अर्जुन सब महारथियों से बढ़कर रौद्र कर्म करके अपने रौद्र पराक्रम का परिचय देने लगे। उन्होंने अपने अमोघ अस्त्रों से सब वीरों के अस्त्रों को व्यर्थ कर दिया। सब महारथियों को परास्त करके आकाश में दोपहर के सूर्य के समान तपते हुए अर्जुन की ओर कोई प्राणी नज़र भरकर नहीं देख सकता था। संग्राम में अर्जुन के गाण्डीव धनुष से लगातार निकल रहे तीक्ष्ण बाण आकाश में हंसों की पंक्ति के समान देख पड़ते थे। वीरों के अस्त्रों को अपने अस्त्रों से काटकर उग्र कर्म करनेवाले अर्जुन ने अपना रौद्र रूप सबको दिखाया। जयद्रथ-वध करने के लिए नाराच बाणों के प्रहार से सबको मोहित सा कर रहे अर्जुन सब महारथियों से बढ़कर युद्ध-कौशल दिखाने लगे। दर्शनीयरूप अर्जुन, सारथी श्रीकृष्ण की सहायता से, सब दिशाओं में बाण बरसाते हुए विचर रहे थे। वीर अर्जुन के हज़ारों बाण अन्तरिक्ष में सनसनाते जा रहे थे। उस समय हमें नहीं देख पड़ता था कि कब अर्जुन बाण निकालते हैं, कब धनुष पर चढ़ाते हैं और कब छोड़ते हैं। महावीर अर्जुन ने इस तरह दसों दिशाओं को बाणों से व्याप्त और वीरों को व्याकुल कर दिया। उन्होंने आगे बढ़कर जयद्रथ को चौंसठ बाण मारे। कौरव पक्ष के वीर, अर्जुन को जयद्रथ की ओर जाते देखकर, जयद्रथ के जीने की आशा और समर एक साथ छोड़ बैठे। राजन्! आपके पक्ष के जो-जो वीर अर्जुन के सामने गये वे उनके बाणों से मरने लगे। महावीर अर्जुन इस तरह अग्नितुल्य बाणों के प्रहार से आपकी चतुरङ्गिणी सेना को व्याकुल और रणभूमि को कबन्धों से पूर्ण करके जयद्रथ की ओर चले। उन्होंने अश्वत्थामा को पचास, वृषसेन को तीन, कर्ण को बत्तीस, कृपाचार्य को नव, शल्य को सोलह और जयद्रथ को चौंसठ बाण मारकर घोर सिंहनाद किया। जयद्रथ, अर्जुन के बाण-प्रहार से, अंकुश-पीड़ित गजराज के समान अत्यन्त क्रुद्ध हो उठे। अर्जुन का वह पराक्रम उन्हें अत्यन्त असह्य हुआ। वे अर्जुन के रथ को ताककर शीघ्रता के साथ विषैले नाग के समान, सिकलीगरों के हाथ से साफ़ और तेज़ किये गये, गृध्रपत्र-शोभित तीक्ष्ण बाण कान तक खींच-खींचकर छोड़ने लगे। फिर जयद्रथ ने श्रीकृष्ण को तीन और अर्जुन को छः बाण मारकर उनके घोड़ों को आठ बाण मारे तथा ध्वजा में एक बाण मारा। महावीर अर्जुन ने जयद्रथ के बाणों को व्यर्थ कर दिया। फिर धनुष पर एक साथ दो बाण चढ़ाकर एक से जयद्रथ के सारथी का सिर काट डाला और दूसरे से सुसज्जित, अग्निशिखा-सदृश, वराह-चिह्नयुक्त ध्वजा काट गिराई। [मुँह फैलाये हुए काल के समान अर्जुन जयद्रथ को सुरक्षित देखकर, उनके प्राण लेने का मौक़ा न पाकर, क्रोध से विह्वल हो उठे। उनकी आँखें लाल हो आईं। वे क्रोध से

४१

५०

६०

ओठ चाटते हुए सूर्य की ओर देखने लगे।] इसी समय सूर्य को शीघ्रता के साथ अस्ताचल पर जाते देख श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—हे वीर! वह देखो, सूर्य अब जल्दी अस्त होनेवाले हैं। उधर महाबली छः महारथी मिलकर, जयद्रथ को अपने बीच में रखकर, उसकी रक्षा कर रहे हैं। अपनी जीवन-रक्षा के लिए सिन्धुराज जयद्रथ बहुत ही डर गया है। तुम इन छः महारथियों को परास्त किये बिना, प्राणपण से यत्न करके भी, जयद्रथ को न मार सकोगे। बिना धोखा दिये जयद्रथ इतनी जल्दी नहीं मारा जा सकता। इसलिए मैं सूर्य को छिपाने का उपाय करता हूँ। जयद्रथ को देख पड़ेगा कि सूर्य अस्त हो गये हैं। जीवन की चाह रखनेवाला जयद्रथ उस समय हर्ष के मारे अपने को छिपा नहीं सकेगा। प्रतिज्ञा मिथ्या होने के कारण तुम अपने प्राण न रक्खोगे, यह सोचकर प्रसन्नता के कारण दुर्मति जयद्रथ अवश्य उस समय छिपा न रहेगा। बस, उसी समय तुम उसको मार डालना। देखो मित्र, उस समय यह समझकर कि सूर्य अस्त हो गये हैं, तुम जयद्रथ-वध करने में हिचकना नहीं। हे कुरुकुलश्रेष्ठ! अर्जुन ने श्रीकृष्ण की यह बात मान ली।

अब महात्मा श्रीकृष्ण ने योग द्वारा अन्धकार उत्पन्न कर दिया और उसमें सूर्य छिप गये। योगेश्वर महायोगी श्रीकृष्ण के योगबल से छिपे सूर्य को सचमुच ही अस्तंगत जानकर कौरव पक्ष के सब योद्धा बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने समझा कि प्रतिज्ञा मिथ्या होने के कारण अब अर्जुन प्राण दे देंगे। सूर्य के न देख पड़ने से कौरव दल के सब सैनिक अत्यन्त आनन्द प्रकट करने लगे। उस समय जयद्रथ भी उत्सुकता के मारे गर्दन उठाकर सूर्य की ओर देखने लगे [कि सचमुच सूर्य अस्त हो गये हैं या नहीं]। तब श्रीकृष्ण ने कहा—अर्जुन, देखो-देखो, जयद्रथ बेखटके होकर सूर्य की ओर देख रहा है। यही उसको मारने का अवसर है। इसलिए झटपट इसका सिर काटकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो।

७०

श्रीकृष्ण के वचन सुनकर पराक्रमी अर्जुन, अग्नि और सूर्य की किरणों के समान, बाणों की वर्षा से कौरव-सेना को मारने और व्याकुल करने लगे। उन्होंने कृपाचार्य को बीस, कर्ण को पचास, शल्य को छः,

दुर्योधन को छः, वृषसेन को आठ, जयद्रथ को साठ तथा कौरव पक्ष के अन्य सैनिकों को असंख्य बाण मारे। अब वे जयद्रथ की ओर वेग से चले। जयद्रथ की रक्षा करनेवाले वीरगण, प्रज्वलित होकर जलाने को उद्यत अग्नि के समान, अर्जुन को निकटवर्ती देखकर बहुत ही घबराये। उन्हें जयद्रथ के बचने के बारे में कुछ भी आशा न रही। महाराज! तब आपके सब योद्धा, जय की इच्छा से, अर्जुन के ऊपर लगातार असंख्य बाण छोड़ने लगे। अनेक बाणों से अपने को आच्छादित देखकर अपराजित महाबाहु अर्जुन बहुत ही कुपित हुए। अब वे आपकी सेना को नष्ट करने के लिए घोर बाण बरसाने लगे। वीर अर्जुन के बाणों से मारे जा रहे आपके योद्धा ८० लोग डर के मारे जयद्रथ को छोड़, जहाँ जिसको राह मिली, भाग खड़े हुए। उस समय हम लोगों ने महायशस्वी अर्जुन का अद्भुत पराक्रम देखा। उस समय अर्जुन ने जैसा काम किया वैसा न कभी किसी ने किया है और न कभी कोई कर ही सकेगा। रुद्र ने जैसे पशुओं की हत्या की थी वैसे ही वीर अर्जुन भी सवारों सहित हाथियों, घोड़ों और रथों को नष्ट कर रहे थे। महाराज! उस समय मुझे वहाँ ऐसा कोई हाथी, घोड़ा या मनुष्य नहीं देख पड़ा, जिसको अर्जुन के बाण न लगे हों। धूल और अँधेरे के मारे योद्धाओं को कुछ भी नहीं सूझता था। सभी घबरा गये थे। परस्पर अपने पक्ष के आदमी को भी कोई नहीं पहचान सकता था। हे भारत! अर्जुन के बाणों से सब सैनिकों के मर्मस्थल छिन्न-भिन्न हो गये। कोई चक्कर खाकर गिरता था, कोई लड़खड़ाकर गिरता था, कोई कराहता था और कोई मरकर मलिन हो जाता था। उस प्रलय-काल के समान जनसंहारक महाभयङ्कर दुस्तर युद्ध के समय रक्त बहने और प्रचण्ड आँधी चलने से पृथ्वी की धूल बैठ गई। राजन्! इतना रक्त बहा कि आपके योद्धाओं के, वेग से चलते हुए, रथों के पहिये धरती में आधे-आधे धँस गये। जिनके सवार मरकर गिर गये थे ऐसे छिन्न-भिन्न और रक्त से नहाये हुए हज़ारों हाथी अपनी ही सेना को रौंदते और आर्तनाद करते हुए इधर-उधर भागने लगे। बिना सवारों के घोड़े और पैदल सिपाही, अर्जुन के बाणों से पीड़ित ९० और भयाकुल होकर, प्राण बचाने के लिए चारों ओर भाग रहे थे। लोगों के केश खुले हुए थे, कवच कटकर गिर पड़े थे, घावों से रक्त बह रहा था और वे डर के मारे युद्ध का मैदान छोड़कर भाग रहे थे। कुछ लोगों के पैर ही मानों किसी ने पकड़ लिये और वे वहीं खड़े-खड़े मरकर गिरने लगे। कुछ लोग मरे हुए हाथियों की ओट में छिपकर अपनी जान बचाने लगे।

महाराज! इस तरह आपकी सब सेना को भगाकर वीर अर्जुन ने जयद्रथ के रक्षक महारथियों को घोर बाणों से पीड़ित किया। अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कर्ण, शल्य, वृषसेन और दुर्योधन को अर्जुन ने तीव्र बाणों से अदृश्य कर दिया। उस समय अर्जुन ऐसी फुर्ती दिखा रहे थे कि मालूम ही न पड़ता था कि कब वे बाण लेते हैं, कब चढ़ाते हैं और कब छोड़ते हैं। यही देख पड़ता था कि उनका धनुष मण्डलाकार घूम रहा है और उससे लगातार बाण निकलकर

चारों ओर फैल रहे हैं। अर्जुन ने कर्ण और वृषसेन का धनुष काट डाला और एक भल्ल बाण से शल्य के सारथी को मारकर गिरा दिया। अब विजयी अर्जुन ने मामा-भानजे कृपाचार्य और

अश्वत्थामा के मर्मस्थलों में तीव्र बाण मारे जिससे वे विह्वल हो गये। महाराज! इस तरह आपके सब महारथियों को व्याकुल करके महावीर अर्जुन ने एक अग्नि-तुल्य, इन्द्र के वज्र के समान दारुण, दिव्य अस्त्र से अभिमन्त्रित, बड़ी-बड़ी कड़ी चीज़ों को तोड़ने में समर्थ, सदा चन्दन माला आदि से पूजा जानेवाला भयानक

१०१ बाण निकाला। फिर उन्होंने विधिपूर्वक उसे वज्रास्त्र से संयुक्त करके फुर्ती के साथ गाण्डीव धनुष पर चढ़ाया। अग्नि के समान तेजोमय उस बाण को जिस समय अर्जुन धनुष पर चढ़ाने लगे उस समय अन्तरिक्ष में स्थित सिद्ध चारण आदि में खलबली मच गई।

तब महात्मा कृष्णचन्द्र ने फुर्ती के साथ कहा—हे अर्जुन! झटपट दुरात्मा जयद्रथ का सिर काट डालो, क्योंकि सूर्यास्त होने में थोड़ी सी कसर है। इसके सिवा जयद्रथ के वध के बारे में एक गुप्त बात मैं बतलाता हूँ; उसे ध्यान देकर सुनो और उसी के अनुसार काम करो। जगत्प्रसिद्ध राजा वृद्धक्षत्र जयद्रथ के पिता हैं। घोर तपस्या करने पर उनके यहाँ जयद्रथ का जन्म हुआ था। इसके जन्म के समय आकाशवाणी हुई थी कि हे राजा वृद्धक्षत्र! तुम्हारा यह पुत्र कुल, शील, दम आदि गुणों से सम्पन्न और सर्वथा माता और पिता के अथवा सूर्यवंश और चन्द्रवंश के उपयुक्त होगा। शूर लोग नित्य इस क्षत्रियश्रेष्ठ का सत्कार करेंगे; किन्तु युद्ध के अवसर पर कोई क्षत्रिय-वीर शत्रु कुपित होकर अलक्षित भाव से इसका सिर काट डालेगा। हे अर्जुन! शत्रुदमन सिन्धुराज वृद्धक्षत्र यह आकाशवाणी सुनकर पुत्र-
११० स्नेह से विह्वल हो देर तक सोचते रहे। इसके बाद उन्होंने अपने जातिभाइयों से कहा कि जो कोई संग्राम के समय भारी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर लेकर बहुत लोगों से युद्ध कर रहे मेरे इस पुत्र का सिर काटकर पृथ्वी पर गिरावेगा, उसके सिर के भी उसी समय सौ टुकड़े हो जायँगे।

हे पार्थ ! राजा वृद्धक्षत्र इतना कहकर, यथासमय जयद्रथ को राजगद्दी पर बिठाकर, वन को चले गये और वहीं अब तक उग्र तप कर रहे हैं। वे तेजस्वी राजा यहीं कुरुक्षेत्र में, समन्त-पञ्चक क्षेत्र के बाहर वन में, घोर तप कर रहे हैं। इसलिए तुम अद्भुत कर्म करनेवाले दिव्य घोर अस्त्र से जयद्रथ का कुण्डलों से अलङ्कृत सिर काटकर वृद्धक्षत्र की ही गोद में गिरा दो। हे अर्जुन ! अगर तुम जयद्रथ का सिर काटकर पृथ्वी पर गिराओगे तो उसी दम तुम्हारे सिर के सौ टुकड़े हो जायँगे। हे कुरुश्रेष्ठ ! तुम दिव्य अस्त्र के बल से ऐसा करो कि वृद्धक्षत्र को तो मालूम न होने पावे और अलक्षित भाव से जयद्रथ का सिर उनकी गोद में जाकर गिर पड़े। हे अर्जुन ! त्रिभुवन में ऐसा कोई काम नहीं है जिसे तुम न कर सको।

महातेजस्वी अर्जुन ने महात्मा श्रीकृष्ण के ये वचन सुनकर जयद्रथ के मारने के लिए धनुष पर चढ़ाया हुआ वह भयानक बाण वेग से छोड़ा। उस समय वे क्रोध से अधीर होकर ओठ चाट रहे थे। महाराज ! बाज़ पक्षी जैसे वृक्ष के ऊपर से किसी चिड़िया को दबोचकर उड़ जाता है, वैसे ही गाण्डीव धनुष से छूटे हुए वज्रतुल्य उस सुदृढ़ बाण ने जयद्रथ का सिर काट लिया। अब महावीर अर्जुन ने, शत्रुओं का शोक और मित्रों का हर्ष बढ़ाने के लिए, फुर्ती के साथ ऐसे अनेक बाण मारे, जिन्होंने उस सिर को नीचे न गिरने देकर समन्तपञ्चक तीर्थ के बाहर पहुँचा दिया। साथ ही वे छहों महारथियों का भी सामना करते रहे। राजा वृद्धक्षत्र उस समय सन्ध्योपासन कर रहे थे। महाराज ! अर्जुन ने [अस्त्रविद्या के प्रभाव से] वह जयद्रथ का सिर उनकी गोद में गिरा दिया। आपके सम्बन्धी वृद्धक्षत्र को इसकी ख़बर ही नहीं हुई। सन्ध्या करके वृद्धक्षत्र ज्योंही आसन से उठे त्योंही वह काले केशों और कुण्डलों से अलङ्कृत जयद्रथ का सिर पृथ्वी पर गिर पड़ा। उस सिर के पृथ्वी पर गिरते ही वृद्धक्षत्र के सिर के भी सौ टुकड़े हो गये। यह देखकर सब सैनिकों को बड़ा आश्चर्य हुआ। श्रीकृष्ण भी प्रसन्न होकर महारथी अर्जुन की बहुत प्रशंसा करने लगे।

१२१

३०

महाराज ! इस तरह अर्जुन जब जयद्रथ को मार चुके तब श्रीकृष्ण ने वह अँधेरा दूर कर दिया। हे नृपश्रेष्ठ! पीछे से आपके पुत्रों और उनके अनुगामी राजाओं को मालूम हुआ कि यह श्रीकृष्ण की माया थी, वास्तव में सूर्य अस्त नहीं हुए थे। राजन् ! महावीर अर्जुन ने आठ अक्षौहिणी सेना मारकर आपके दामाद सिन्धुराज जयद्रथ का वध किया। उनकी मृत्यु देखकर, दुःख और शोक के मारे, आपके पुत्रों की आँखों से आँसू बहने लगे। जय-प्राप्ति के बारे में वे निराश हो गये। इस तरह जयद्रथ के मारे जाने पर महात्मा कृष्णचन्द्र और शत्रुदमन अर्जुन ज़ोर से अपने-अपने शङ्ख बजाने लगे। भीमसेन, सात्यकि, युधामन्यु और पराक्रमी उत्त-मौजा ने भी अपने-अपने शङ्ख बजाये। उस महाशङ्ख-नाद को सुनकर युधिष्ठिर समझ गये कि अर्जुन जयद्रथ को मार चुके। तब वे भी अनेक युद्ध के बाजे बजवाकर, अपने पक्ष के योद्धाओं

को, प्रसन्न और उत्साहित करते हुए, युद्ध करने के लिए द्रोणाचार्य की ओर बढ़े। महाराज! १४० उस सूर्यास्त के समय द्रोणाचार्य के साथ सोमकगण दारुण युद्ध करने लगे। जयद्रथ के मारे जाने पर महारथी सोमकगण बड़े प्रयत्न से द्रोणाचार्य को मारने के लिए घोर संग्राम करने लगे। जय पाकर और जयद्रथ को मारकर उत्साहित और उन्मत्तप्राय पाण्डवगण, पूरा ज़ोर लगाकर, द्रोणाचार्य से युद्ध करने लगे। राजन्! जैसे सूर्य उदय होकर अन्धकार को नष्ट करते हैं और इन्द्र ने जैसे अपने शत्रु दानवों का संहार किया था, वैसे ही अर्जुन ने अपने शत्रुओं का नाश किया। वीर अर्जुन इस तरह अपनी प्रतिज्ञा पूरी करके और आपके पक्ष के सैनिकों को चारों १४४ ओर भगाकर अन्त को प्रधान-प्रधान रथी योद्धाओं से युद्ध करने लगे।

एक सौ सैंतालीस अध्याय

कर्ण और सात्यकि का युद्ध

धृतराष्ट्र ने कहा—सञ्जय! अर्जुन जब महावीर जयद्रथ का वध कर चुके तब मेरे पक्ष के वीरों ने क्या किया? यह सब हाल तुम मुझे सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—हे भरतकुलश्रेष्ठ! शारद्वत कृपाचार्य, जयद्रथ की मृत्यु से अत्यन्त कुपित होकर, अर्जुन के ऊपर उग्र असंख्य बाण बरसाने लगे। तब अश्वत्थामा भी रथ पर बैठकर अर्जुन की ओर दौड़ पड़े। इस तरह महारथी कृपाचार्य और अश्वत्थामा दोनों, दोनों ओर से, अर्जुन के रथ पर तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करने लगे। उनके उग्र बाणों के प्रहार से रथी योद्धाओं में श्रेष्ठ अर्जुन बहुत ही पीड़ित और कातर हो उठे। गुरु और गुरुपुत्र को मार डालना तो अर्जुन चाहते न थे, इसलिए वे धीमे हाथ से इन दोनों पर प्रहार करने लगे। उन्होंने द्रोणाचार्य की तरह

पराक्रम प्रकट करके दम भर में कृपाचार्य और अश्वत्थामा के बाण-जाल को छिन्न-भिन्न कर

राजा वृद्धक्षत्र सन्ध्योपासन कर रहे थे। अर्जुन ने [अस्त्रविद्या के प्रभाव से] वह जयद्रथ का सिर उनकी गोद में गिरा दिया।

डाला। अर्जुन के चलाये हुए बाण शरीर में लगने से वृद्ध कृपाचार्य और अश्वत्थामा अत्यन्त पीड़ित हो गये। यद्यपि वे बाण मन्दगति थे तथापि, बहुत होने के कारण, उन्होंने दोनों वीरों को व्याकुल कर दिया। अर्जुन के बाणों से मूर्च्छित होकर कृपाचार्य शिथिल और निश्चेष्ट भाव से रथ पर गिर पड़े। बाणों से पीड़ित अपने स्वामी को, मरा हुआ समझकर, सारथी रण-भूमि से हटा ले गया। इस तरह कृपाचार्य के विमुख होने पर अश्वत्थामा भी डर के मारे अर्जुन के आगे से हट गये और अन्य स्थान पर और योद्धाओं से युद्ध करने लगे। १०

बाण-पीड़ित मूर्च्छित अपने गुरु कृपाचार्य की दशा देखकर अर्जुन खिन्न होकर रोने और दीन वचन कहकर इस तरह विलाप करने लगे—हा! मुझे धिक्कार है, धिक्कार है! महामति विदुर ने दिव्य दृष्टि से यह परिणाम पहले ही देख लिया था। इसी से उन्होंने कुल का नाश करनेवाले पापी कुलाङ्गार दुर्योधन के पैदा होते ही महाराज धृतराष्ट्र से कहा था कि राजन्! आप इस कुलपांसन पुत्र को अभी मरवा डालिए। क्योंकि यह जीता रहा तो इसके द्वारा वंश का विनाश होगा और मुख्य-मुख्य कुरुवंशियों के लिए महाभय उपस्थित होगा! महात्मा सत्यवादी विदुर की वह बात अब सामने आई है। दुरात्मा दुर्योधन के ही कारण मैं इस समय अपने पूज्य गुरु की यह दशा देख रहा हूँ। उसी दुष्ट के कारण आज कृपाचार्य मृतप्राय होकर बाणशय्या पर छटपटा रहे हैं। क्षत्रियधर्म को और मेरे बल-पौरुष को धिक्कार है! मुझ सरीखा और कौन पुरुष ब्राह्मण और आचार्य के ऊपर प्रहार करेगा? ऋषिपुत्र, मेरे आचार्य और द्रोणाचार्य के परम मित्र ये कृपाचार्य मेरे बाणों से पीड़ित होकर रथ पर पड़े हुए हैं! मैंने लाचार होकर इन्हें बाण मारकर पीड़ित किया है। मैं नहीं चाहता था कि इन्हें क्लेश पहुँचे। इनकी दशा देखकर मेरा हृदय मानों फटा जा रहा है। पुत्रशोक से विह्वल और बाणों से पीड़ित होकर मैंने इनको बहुत से बाण मारे हैं। ये रथ पर मृतप्राय से पड़े हैं। इनकी यह दशा देखकर मुझे पुत्रवध से भी बढ़कर दुःख हो रहा है। हे श्रीकृष्ण! इन्होंने कुपित होकर मुझे बहुत से बाण मारे थे, तथापि मुझे उपेक्षा ही करनी चाहिए थी; किन्तु मैंने वैसा नहीं किया। जो लोग गुरु से विद्या प्राप्त करके उन्हें, उनकी इच्छा के अनुसार, गुरु-दक्षिणा देते हैं वे देवभाव को प्राप्त होते हैं। किन्तु जो नराधम मेरी तरह गुरुओं से विद्यालाभ करके उन्हीं पर प्रहार करते हैं, वे दुष्ट अवश्य नरकगामी होते हैं। सो इस समय अपने आचार्य को बाणों की मार से पीड़ित करके, मृतप्राय अवस्था में रथ पर गिराकर, अवश्य ही मैंने नरक जाने का काम किया है। कृपाचार्य ने अस्त्रशिक्षा देते समय पहले मुझसे कहा था कि हे कौरव्य! गुरु के ऊपर कभी प्रहार न करना। किन्तु आज उन्हीं महात्मा आचार्य के ऊपर बाण बरसाकर मैंने उनकी आज्ञा का उल्लङ्घन किया है। हे यदुकुलावतंस! गुरु पर प्रहार करनेवाले मुझ पापी को धिक्कार है। रण से न हटनेवाले अपने गुरुवर कृपाचार्य को मैं प्रणाम करता हूँ। २०

राजन्! अर्जुन इस तरह विलाप कर ही रहे थे कि महावीर कर्ण, सिन्धुराज जयद्रथ की मृत्यु से अत्यन्त कुपित होकर, अर्जुन की ओर वेग से चले। कर्ण को अर्जुन की ओर जाते देखकर युधामन्यु, उत्तमौजा और सात्यकि कर्ण को रोकने के लिए उनके सामने आये। यह देखकर महारथी कर्ण भी अर्जुन की ओर न जाकर सात्यकि पर आक्रमण करने को उद्यत हुए। तब अर्जुन ने हँसकर श्रीकृष्ण से कहा—हे वासुदेव! वह देखो, कर्ण सात्यकि से लड़ने जा ३० रहा है। यह महावीर किसी तरह भूरिश्रवा की मृत्यु को नहीं क्षमा करेगा, अवश्य सात्यकि से उसका बदला लेने की चेष्टा करेगा। इसलिए हे जनार्दन! कर्ण के पास ही मेरा रथ ले चलो, जिसमें वह किसी तरह सात्यकि की वही दशा न करे जो भूरिश्रवा की हुई है।

यह सुनकर महाबाहु वासुदेव उनसे इस तरह समयानुकूल वाक्य कहने लगे—हे अर्जुन! महावीर सात्यकि अकेले ही कर्ण से युद्ध कर सकते हैं। वे स्वयं कर्ण के समकक्ष योद्धा हैं। फिर इस समय तो युधामन्यु और उत्तमौजा भी उनके सहायक हैं। इसलिए तुम कुछ चिन्ता न करो। मेरी समझ में इस समय तुम्हारा कर्ण से युद्ध करना ठीक नहीं। अभी कर्ण के पास इन्द्र की दी हुई, प्रज्वलित उल्का के समान, अमोघ शक्ति मौजूद है। महावीर कर्ण तुमको मारने के लिए ही वह शक्ति अपने पास रक्खे हुए है। इसलिए उसको इस समय सात्यकि से युद्ध करने दो। हे अर्जुन! तुम जिस समय इस दुरात्मा शत्रु को तीक्ष्ण बाणों से मारोगे उस समय को मैं अच्छी तरह जानता हूँ।

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! महावीर भूरिश्रवा और जयद्रथ की मृत्यु हो चुकने पर वीर सात्यकि के साथ कर्ण का कैसा संग्राम हुआ? सात्यकि का रथ तो भूरिश्रवा ने नष्ट कर दिया था। इस समय किसके रथ पर बैठकर सात्यकि ने युद्ध किया? और अर्जुन के रथचक्रों के रक्षक युधामन्यु और उत्तमौजा ने कैसा युद्ध किया? सब वृत्तान्त तुम मुझसे कहो।

सञ्जय ने कहा—राजन्! आपकी ही दुर्नीति के कारण होनेवाले जनसंहारकारी घोर संग्राम का मैं वर्णन करता हूँ। आप मन लगाकर सुनिए। महात्मा श्रीकृष्ण भूत, भविष्य, वर्त्तमान, तीनों समय का सब हाल वर्तमान की तरह जानते हैं। उन्हें यह पहले से ही मालूम था कि भूरिश्रवा वीर सात्यकि को परास्त करेंगे। इसी कारण उन्होंने अपने सारथी दारुक को ४१ रथ तैयार कर रखने की आज्ञा दे रक्खी थी। हे कुरुराज! देवता, गन्धर्व, यक्ष, नाग, राक्षस और मनुष्य आदि में ऐसा प्रभावशाली योद्धा कोई नहीं है, जो महात्मा श्रीकृष्ण अथवा अर्जुन को हरा सकता हो। प्रजापति आदि देवता और सिद्धगण इन दोनों महात्माओं के अतुल प्रभाव को अच्छी तरह जानते हैं। अब जिस तरह संग्राम हुआ, सो मैं कहता हूँ। ध्यान देकर सुनिए।

महात्मा श्रीकृष्ण ने सात्यकि को रथ-हीन और कर्ण को समर के लिए उद्यत देखकर ऋषभ स्वर में ज़ोर से अपना पाञ्चजन्य शङ्ख बजाया। वह शङ्खनाद सुनते ही श्रीकृष्ण के इशारे

को समझकर दारुक सारथी फुर्ती के साथ, गरुड़युक्त ध्वजा से शोभित, रथ लेकर सात्यकि के पास आ गया। तब महावीर सात्यकि श्रीकृष्ण की आज्ञा से उस यथेष्टगामी, सुवर्ण के अलङ्कारों से शोभित शैव्य, सुग्रीव, वलाहक, मेघपुष्प नाम के चार दिव्य घोड़ों से युक्त, सूर्य और अग्नि के समान प्रकाशमान, विमानतुल्य रथ पर सवार हुए और तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करते हुए कर्ण की ओर बढ़े। अब चक्ररक्षक युधामन्यु और उत्तमौजा भी, अर्जुन के रथ की रक्षा करना छोड़कर, कर्ण से युद्ध करने के लिए बड़े वेग से दौड़े। उस समय महावीर कर्ण अत्यन्त क्रुद्ध होकर बाण-वर्षा करते हुए सात्यकि की ओर झपटे। महाराज! उस समय कर्ण और सात्यकि ने जैसा ५० घमासान युद्ध किया वैसा युद्ध पृथ्वी पर या स्वर्ग में कभी देवता, गन्धर्व, असुर, नाग, राक्षस आदि किसी ने नहीं किया। उस समय दोनों पक्षों के वीर योद्धा लोग, युद्ध बन्द करके, उन दोनों वीरों का वह आश्चर्यजनक संग्राम देखने लगे। सब लोग दोनों वीरों के असाधारण युद्ध और रथ पर स्थित दारुक सारथी का गत, प्रत्यागत, आवर्तन, मण्डल, सन्निवर्तन आदि विविध गतियाँ दिखाकर रथ हाँकना देखकर बहुत ही विस्मित हुए। देवता, दानव और गन्धर्वगण आकाश में स्थित होकर एकाग्र भाव से उन दोनों वीरों का अत्यन्त घोर संग्राम देखने लगे।

तब अपने-अपने मित्र के लिए युद्ध करनेवाले वे दोनों महाबली योद्धा लगातार एक दूसरे पर असह्य उग्र बाणों की वर्षा करने लगे। भूरिश्रवा और जलसन्ध की मृत्यु से क्रुद्ध होकर देवतुल्य महावीर कर्ण बाणवर्षा से सात्यकि को पीड़ित करने लगे। शोक के मारे महानाग की तरह साँसें लेते हुए कुपित कर्ण इस तरह सात्यकि को देख रहे थे, मानों दृष्टि से ही भस्म कर देंगे। वे बड़े वेग से बार-बार दौड़कर सात्यकि पर आक्रमण कर रहे थे। कर्ण को कुपित देखकर सात्यकि ने भी उन पर आक्रमण किया और महागज जैसे अपने प्रतिद्वन्द्वी गज के ६० ऊपर दाँत से चोट करता है वैसे ही वे कर्ण के ऊपर लगातार बाण छोड़ने लगे। इस तरह वे दोनों पराक्रमी योद्धा परस्पर भिड़कर घोर प्रहारों से एक दूसरे को घायल कर रहे थे।

महापराक्रमी सात्यकि ने बारम्बार तीक्ष्ण बाणों से कर्ण को घायल करके एक भल्ल बाण से उनके सारथी को मार डाला। सारथी मरकर रथ से नीचे गिर गया। फिर सात्यकि ने तीक्ष्ण बाणों से कर्ण के चारों सफ़ेद घोड़े मार डाले और उनकी ध्वजा तथा रथ के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। इस तरह वीर सात्यकि ने, आपके पुत्र के सामने ही, कर्ण को रथ-हीन कर दिया। अब आपके पक्ष के मद्रराज शल्य, कर्ण के पुत्र वृषसेन और द्रोण के पुत्र अश्वत्थामा, इन तीनों महारथियों ने चारों ओर से सात्यकि को घेर लिया। तब ऐसा घोर युद्ध हुआ और अँधेरा छा गया कि सब सैनिक बेहद व्याकुल हो उठे। किसी को कुछ भी नहीं सूझ पड़ता था। आपके पक्ष के सैनिकगण कर्ण को रथ-हीन देखकर हाहाकार करने लगे। महाराज! इस तरह महावीर कर्ण राजा दुर्योधन के साथ अपनी लड़कपन की मित्रता

स्मरण करके, शत्रुविजयपूर्वक उन्हें निष्कण्टक राज्य दिलाने की अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने के लिए, घोर संग्राम कर रहे थे। वे सात्यकि के बाणों से छिप से गये और बहुत ही विह्वल हो उठे। अन्त को लम्बी साँसें लेते हुए वे दुर्योधन के रथ पर चले गये।

राजन्! महावीर सात्यकि कर्ण को रथहीन करके दुःशासन आदि योद्धाओं को रथरहित और विह्वल करने लगे। किन्तु भीमसेन की प्रतिज्ञा का स्मरण करके सात्यकि ने उनको मारा नहीं। महावीर अर्जुन ने, दुबारा द्यूतक्रीड़ा के अवसर पर, कर्ण को मारने की प्रतिज्ञा की थी, इसी लिए सात्यकि ने समर्थ होकर भी कर्ण का वध नहीं किया। कर्ण आदि महारथियों ने सात्यकि को मारने के लिए बारम्बार घोर प्रयत्न किया, किन्तु किसी तरह उस उद्योग में वे कृतकार्य नहीं हो सके। युधिष्ठिर का हित करने की इच्छा से महावीर सात्यकि ने, जीवन का मोह छोड़कर, केवल धनुष की सहायता से दारुण संग्राम किया और अकेले ही अश्वत्थामा, कृतवर्मा तथा अन्य महारथियों को परास्त कर दिया। इस तरह श्रीकृष्ण और अर्जुन के सदृश पराक्रमी सात्यकि हँसते-हँसते कौरव पक्ष के चुने-चुने वीर योद्धाओं को जीतने लगे। राजन्! इस पृथ्वीमण्डल में महात्मा कृष्णचन्द्र, अर्जुन और सात्यकि, यही तीन सर्वश्रेष्ठ योद्धा हैं। इनके समान चौथा कोई नहीं है। ७१

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! बल-वीर्य-गर्वित, श्रीकृष्ण-सदृश वीर सात्यकि ने श्रीकृष्ण के अजेय रथ पर बैठकर, रथ हाँकने में निपुण दारुक सारथी को पाकर, वीर कर्ण को रथ-हीन कर दिया। मैं यह जानना चाहता हूँ कि उसके बाद सात्यकि ने क्या अन्य किसी रथ पर बैठकर (अथवा उसी रथ पर बैठकर) युद्ध किया? हे सञ्जय! तुम सब हाल मुझसे कहो, क्योंकि तुम वर्णन करने में बहुत निपुण हो। सात्यकि का पराक्रम मुझे असह्य जान पड़ता है। ८०

सञ्जय ने कहा—राजन्! आपने जो कुछ पूछा, वह मैं कहता हूँ। सुनिए। क्षण भर के बाद दारुक सारथी का छोटा भाई एक सुन्दर, सुसज्जित रथ लेकर सात्यकि के पास आ गया।

वह रथ घण्टाजाल-ध्वनियुक्त, शक्ति तोमर आदि अस्त्र-शस्त्र और संग्राम की सामग्री से परिपूर्ण, लोहमय और सुवर्णमय पहियों से विभूषित, विचित्र कूवरयुक्त, सहस्र ताराओं से अलङ्कृत और सिंहचिह्न-युक्त ध्वजा-पताकाओं से सम्पन्न था। उसमें पवन के समान वेग से जानेवाले सिन्धु देश के, सफ़ेद रङ्ग के, किसी तरह के भी शब्द से न भड़कनेवाले, परिश्रमी, दृढ़, सोने के कवच से रक्षित बढ़िया घोड़े जुते हुए थे। उसके चलने में मेघगर्जन के समान गम्भीर शब्द होता था। महावीर सात्यकि उस रथ पर बैठकर कौरवसेना की ओर वेग से बढ़े। सारथी दारुक भी श्रीकृष्ण के रथ को लेकर बेखटके श्रीकृष्ण के पास चला गया। उधर कर्ण के लिए भी एक सुन्दर भारी रथ लाया गया। वह रथ सुवर्णकक्षा, ध्वजा, यन्त्र, पताका, बहुत से शस्त्र और निपुण सारथी से सम्पन्न था। उसमें सफ़ेद रङ्ग के, विचित्र सुवर्णमय साज से शोभित, तेज़, श्रेष्ठ घोड़े जुते हुए थे। कर्ण भी उस रथ पर बैठकर शत्रुओं पर आक्रमण करने दौड़े। राजन्! जो आपने मुझसे पूछा था सो मैंने कह दिया। अब आप अपनी दुर्नीति से होने-वाले महान् जनविनाश का वृत्तान्त भी सुनिए। इस संग्राम में वीर भीमसेन ने, चित्रयुद्ध में निपुण, दुर्मुख आदि आपके इकतीस पुत्रों को मार डाला। सात्यकि और अर्जुन ने भी भीष्म और भगदत्त आदि सैकड़ों शूर-वीरों का संहार किया। महाराज! आपकी अनीति के कारण ही इस तरह यह घोर नाश हुआ। ८२

एक सौ अड़तालीस अध्याय

कर्ण-पुत्र के मारने की अर्जुनकृत प्रतिज्ञा और श्रीकृष्ण तथा अर्जुन का रणभूमि देखते हुए अपने डेरे को लौटना

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय! मेरे और पाण्डव पक्ष के महारथी जब इस प्रकार की दशा को प्राप्त हुए तब पराक्रमी भीमसेन ने क्या किया?

सञ्जय कहते हैं कि राजन्! कर्ण जब भीमसेन को रथ-हीन और शस्त्र-हीन करके कटु वचन सुनाने लगे तब कर्ण के वाक्यबाणों से पीड़ित और क्रोधान्ध होकर भीमसेन ने अर्जुन से कहा—भाई अर्जुन! कर्ण ने तुम्हारे सामने ही बारम्बार यों कहकर मेरा अपमान किया कि "हे भीम, तू बिना दाढ़ी-मूँछ का, मूढ़, पेटू, अस्त्रविद्या न जाननेवाला, बालक और समर से जी चुराता है। इसलिए युद्ध न कर; युद्ध छोड़कर चला जा।" हे पार्थ! तुम जानते ही हो, मेरी प्रतिज्ञा है कि इस तरह कटु वचन कहनेवाले को मैं अवश्य मार डालूँगा। सो इस समय कर्ण को मारना मेरा कर्तव्य है; किन्तु इससे पहले ही तुम कर्ण के मारने की प्रतिज्ञा कर चुके हो। यदि मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए कर्ण को मारता हूँ, तो तुम्हारी प्रतिज्ञा कैसे पूरी होगी? इस-लिए ऐसा करो जिसमें मेरी और तुम्हारी दोनों की प्रतिज्ञा सत्य हो।

महाबाहु अर्जुन ने भीमसेन के वचन सुनकर, कुपित हो, कर्ण के कुछ पास जाकर कहा—हे कर्ण ! तुम मूढ़, अधर्मबुद्धि, सूत-पुत्र और अपने मुँह से अपनी बड़ाई करनेवाले हो। इस समय जो मैं कहता हूँ, उसे ध्यान देकर सुनो। रण में शूरों को या तो जय मिलती है या उनकी पराजय होती है। युद्ध के यही दो परिणाम हैं। किन्तु साक्षात् इन्द्र भी जो युद्ध करें तो वे सदा विजयी नहीं हो सकते। उनके लिए भी जय-पराजय अनिश्चित है। सात्यकि ने तुमको रथहीन, अचेत, मृतप्राय करके भी यही सोचकर जीवित छोड़ दिया कि मैं १० तुम्हें मारने की प्रतिज्ञा कर चुका हूँ। महाबली भीमसेन को किसी तरह रथ-हीन करके जो तुमने कटु और रूखे वचन कहे हैं, वह काम सर्वथा अधर्म और अनुचित है। अनार्य पुरुष ही ऐसा करते हैं। जो सज्जन शूर और पुरुषश्रेष्ठ हैं वे शत्रु को जीतकर बहुत बढ़-बढ़कर बातें नहीं करते। वे न तो दुर्वचन ज़बान पर लाते हैं और न पराजित शत्रु की निन्दा करते हैं। हे सूत-पुत्र ! तुम्हारी बुद्धि साधारण और चञ्चल है। इसी कारण तुमने ऐसी असङ्गत, अश्राव्य, अप्रिय बातें बकी हैं। युद्ध कर रहे, पराक्रमी, शूर, आर्यव्रततत्पर (युद्ध से न भागनेवाले) भीमसेन के प्रति जो तुमने अप्रिय वचनों का प्रयोग किया है, सो अनुचित है। तुम्हारी ये बातें, जिनका प्रयोग तुमने भीमसेन के प्रति किया है, सर्वथा मिथ्या हैं। सब सेना के, मेरे और श्रीकृष्ण के सामने ही भीमसेन ने कई बार तुमको रथ-हीन किया और रण से भगा दिया था; फिर भी उन्होंने तुम्हारे प्रति एक भी कठोर वचन का प्रयोग नहीं किया। अभी तुमने मेरे आगे भीमसेन को बहुत सी अप्रिय कटु बातें सुनाई हैं और मेरी अनुपस्थिति में तुम बहुतों ने मिलकर अकेले बालक अभिमन्यु को मार डाला है। ये काम करके भी तुम अहङ्कार प्रकट कर रहे हो। इसका फल तुम्हें शीघ्र मिलेगा। हे दुर्मति मूढ़ सूत-पुत्र ! तुमने अपने विनाश के लिए ही बालक अभिमन्यु का धनुष काट डाला था। इसलिए सेवकों, पुत्रों, बान्धवों सहित तुम मेरे हाथ से मारे जाने योग्य हो। तुम अपने सब आवश्यक कर्तव्य कर लो; क्योंकि तुम्हारे लिए भारी सङ्कट आया हुआ है। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि युद्ध में तुम्हारे सामने ही तुम्हारे प्रिय पुत्र वृषसेन २० को मारूँगा। मूर्खतावश और जो राजा लोग मुझसे लड़ने आवेंगे उन सबको भी मैं न छोड़ूँगा। मैं शस्त्र छूकर सत्य की शपथ खाता हूँ। हे नासमझ ! हे अभिमानी ! मैं जब तुमको युद्ध में मारकर गिरा दूँगा तब मन्दमति दुर्योधन तुम्हारी दशा देखकर बहुत ही पछतायगा।

महाराज ! इस तरह जब अर्जुन ने कर्ण के पुत्र को मारने की प्रतिज्ञा की तब सब रथी योद्धाओं की मण्डली में महाकोलाहल होने लगा। इसी समय भगवान् भास्कर का प्रकाश धीमा पड़ गया; वे अस्ताचल की चोटी पर पहुँच गये। उस समय महाघोर युद्ध होने लगा। तब कृष्णचन्द्र ने अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करके प्रसन्न हो रहे अर्जुन को गले लगाकर कहा—हे जिष्णु ! हे अर्जुन ! बड़े भाग्य की बात है कि तुम जयद्रथ को मारकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर

चुके। बड़ी बात जो राजा वृद्धक्षत्र और उनका पुत्र जयद्रथ दोनों मारे गये। हे धनञ्जय! इसमें सन्देह नहीं कि इस दुर्योधन की सेना के आगे देवताओं की सेना भी आकर विजय नहीं प्राप्त कर सकती। मैं बहुत सोचने पर भी तुम्हारे सिवा और किसी योद्धा को नहीं देख पाता, जो इस कौरव-सेना से युद्ध कर सकता हो। हे पार्थ! दुर्योधन की सहायता करने के लिए जो राजा लोग इस दल में आकर जमा हुए थे वे बड़े प्रभावशाली थे। उनमें बहुत से तो तुम्हारे समान योद्धा थे और बहुत से तुमसे भी अधिक पराक्रमी थे। वे कवचधारी राजा क्रुद्ध होकर तुम्हारे सामने आये किन्तु जीवित नहीं लौटे। तुम्हारा बल और पराक्रम रुद्र, इन्द्र और काल के समान है। हे शत्रुतापन! तुमने अकेले ही युद्ध में जैसा पराक्रम प्रकट किया है वैसा और कोई नहीं कर सकता। इसी तरह अपने अनुगामियों सहित दुरात्मा कर्ण जब तुम्हारे हाथ से मारा जायगा तब तुम शत्रुविजयी निष्कण्टक का मैं अभिनन्दन करूँगा। ३०

श्रीकृष्ण के ये वचन सुनकर अर्जुन कहने लगे—हे हृषीकेश! आज मैं आपके अनुग्रह से ही देवताओं के लिए भी दुस्तर इस कठिन प्रतिज्ञा को पूर्ण कर सका हूँ। हे श्रीकृष्ण, जिनके स्वामी आप हैं उनका विजय पाना कोई आश्चर्य की बात नहीं। आपकी कृपा से ही राजा युधिष्ठिर समग्र पृथ्वीमण्डल का राज्य पावेंगे। हे यादवश्रेष्ठ! हमारे सब कार्यों की सिद्धि का भार आपके ही ऊपर है। हे प्रभो! यह जय भी आपकी ही हुई है। हे मधुसूदन! हमें उत्साहित और उत्तेजित करना आपका कर्तव्य ही है।

अर्जुन के यों कह चुकने पर श्रीकृष्ण मन्द-मन्द मुसकाकर उन्हें वह भयानक रणभूमि दिखाते हुए धीरे-धीरे रथ के घोड़ों को हाँकने और कहने लगे—हे धनञ्जय! वह देखो, ये महावीर राजा लोग समर में विजय और यश पाने के लिए तुमसे युद्ध करके, तुम्हारे बाणों से मरकर, पृथ्वी पर पड़े हुए हैं। वह देखो, उनके गहने और अस्त्र-शस्त्र चारों ओर बिखरे पड़े हैं। रथ चूर्ण हो गये हैं, हाथी और घोड़े मरे पड़े हैं। इनके कवच और मर्मस्थल छिन्न-भिन्न हो गये हैं। कुछ अधमरे हैं और कुछ मर गये हैं, तथापि मर जाने पर भी ये जीवित से जान पड़ते हैं। वह देखो, इन राजाओं के स्वर्णपुङ्खशोभित बाण, विविध तीक्ष्ण शस्त्र, वाहन और आयुध आदि सामग्री से युद्धभूमि पटी पड़ी है। हे भरतकुलश्रेष्ठ! बिखरे पड़े हुए असंख्य कवच, ढाल-तलवार, हार, कुण्डलयुक्त सिर, पगड़ी, मुकुट, माला, चूड़ामणि, कपड़े, कण्ठसूत्र, अङ्गद, निष्क और अन्य अनेक प्रकार के आभूषणों से रणभूमि की विचित्र शोभा हो रही है। ढेर के ढेर अनुकर्ष, उपासङ्ग, पताका, ध्वजा, अलङ्कार, आसन, ईषादण्ड, पहिये, विचित्र जुए, धुरे, युग, जोत, लगाम, धनुष, बाण, विचित्र कम्बल, परिघ, अंकुश, शक्ति, भिन्दि-पाल, शूल, परश्वध, तूणीर, प्रास, तोमर, कुन्त, यष्टि, ऋष्टि, शतघ्नी, भुशुण्डी, खड्ग, परशु, मुशल, मुद्गर, गदा, कुणप, सुवर्णशोभित कशा (कोड़े), हाथियों के घण्टे, हौदे और ४१

बहुमूल्य विविध वस्त्रों तथा आभूषणों के चारों ओर पड़े रहने से यह युद्धभूमि शरद ऋतु में ग्रह-नक्षत्र-शोभित आकाशमण्डल के समान अपूर्व शोभा धारण कर रही है। राजा लोग राज्य पाने के लिए नष्ट होकर वैसे ही पृथ्वी को छाती से लगाये हुए युद्धभूमि में पड़े हैं जैसे सोये हुए पुरुष अपनी मनोहारिणी प्रियतमा को लिपटाते हैं। वह देखो, पर्वतों की कन्दराओं के मुख से जैसे गेरू की धारा बहती है वैसे ही, तुम्हारे बाणों से घायल होकर धरती पर लोट रहे ऐरावत सदृश हाथियों के, अङ्ग प्रत्यङ्ग के शस्त्रकृत, घावों से रक्त की धाराएँ निकल रही हैं। सोने के अलङ्कारों से शोभित घोड़े कटे और

५० मरे पड़े हैं। रथी और सारथी से ख़ाली, गन्धर्व-नगर सदृश, विमान-तुल्य रथ टूटे-फूटे पड़े हैं; उनके ध्वजा, पताका, अक्ष, पहिये, कूबर, युग, ईषादण्ड आदि अङ्ग-प्रत्यङ्ग टुकड़े-टुकड़े हो गये हैं। धनुष और कवच धारण किये हज़ारों पैदल योद्धा पृथ्वी से लिपटे पड़े हैं। उनके खुले हुए बाल धूल से भरे हैं और शरीर रक्त से तर हैं। वह देखो, तुम्हारे बाणों से योद्धाओं के सुदृढ़ शरीर कट-फट गये हैं। गिरे हुए हाथियों, घोड़ों और रथों से पटी हुई समरभूमि की ओर देखा नहीं जाता। रणभूमि में सर्वत्र रक्त, चर्बी और मांस की कीचड़ सी हो रही है। राक्षस, कुत्ते, भेड़िये, गीदड़, गिद्ध और पिशाच आदि मांसाहारी जीव प्रसन्नतापूर्वक चारों ओर क्रीड़ा कर रहे हैं। हे अर्जुन! तुमने इस युद्धभूमि में जैसा यश बढ़ानेवाला कठिन कार्य किया है वैसा कार्य सिवा दैत्यदानव-दलन इन्द्र के और कोई नहीं कर सकता। सञ्जय कहते हैं—राजन्! महात्मा श्रीकृष्ण प्रसन्नतापूर्वक इस तरह सात्यकि आदि के साथ अर्जुन को युद्धभूमि दिखलाते जा रहे थे। अब समरभूमि को लाँघकर उन्होंने अपना पाञ्चजन्य शङ्ख ज़ोर से बजाया। उन्होंने धर्मराज युधिष्ठिर के

५९ पास पहुँचकर ख़बर दी कि जयद्रथ मारा गया।

———
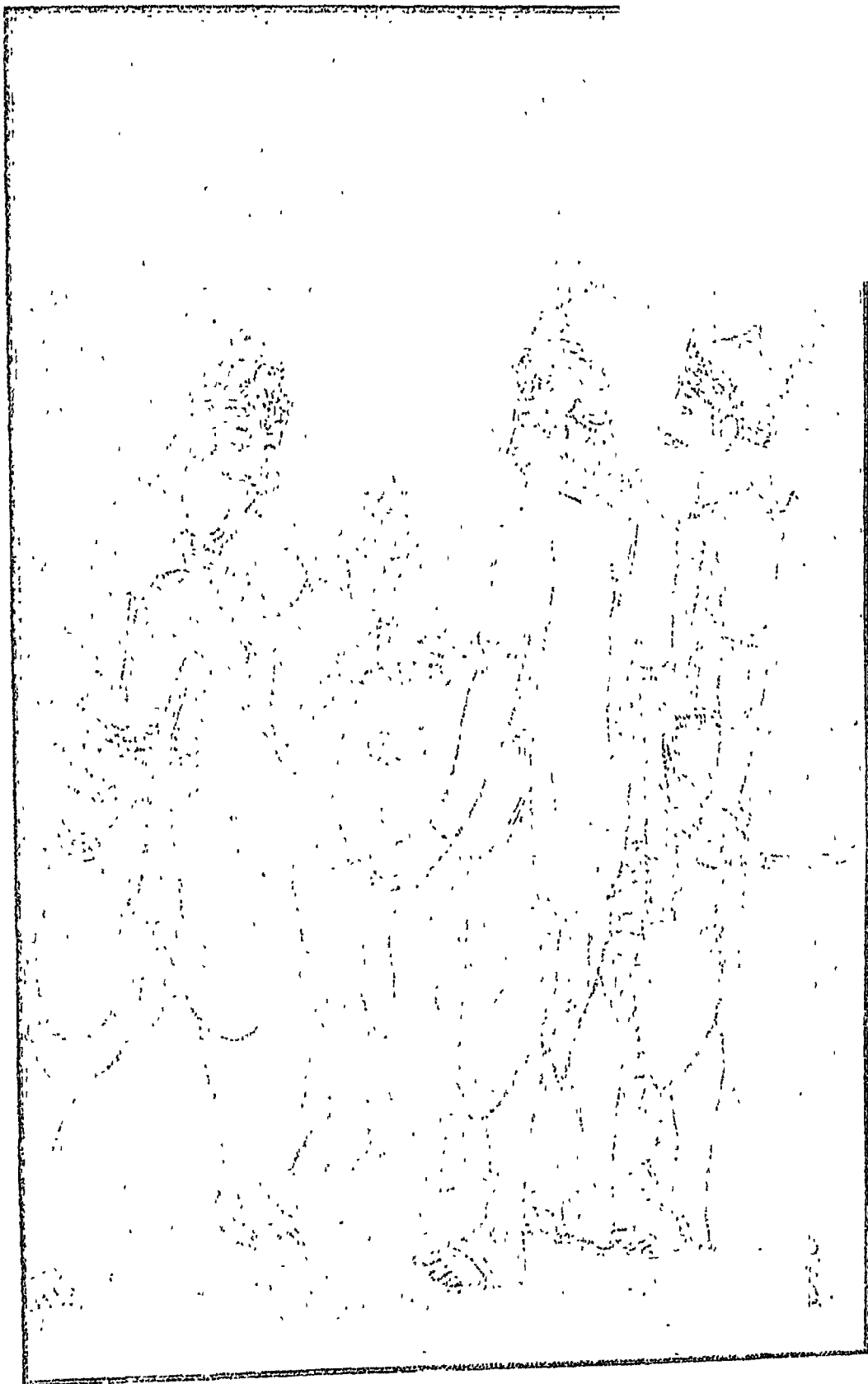
धर्मराज युधिष्ठिर......रथ से उतर कर अर्जुन और श्रीकृष्ण को गले से लगा लिया।—पृ० २२२५

उस समय दुर्योधन ने अपने अनन्य मित्र और सहायक कर्ण से कहा।—पृ० २१३२

एक सौ उनचास अध्याय

युधिष्ठिर से श्रीकृष्ण आदि की बातचीत

सञ्जय कहते हैं—महाराज ! श्रीकृष्ण प्रसन्न चित्त से अर्जुन को साथ लिये धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर के पास पहुँचे। वहाँ युधिष्ठिर को प्रणाम करके उन्होंने कहा—महाराज ! आज आप निःसन्देह बड़े ही भाग्यवान् हैं। आज सौभाग्यवश आपका शत्रु मारा गया और महावीर अर्जुन अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर आये हैं।

श्रीकृष्ण की ये बातें सुनकर धर्मराज युधिष्ठिर अत्यन्त आनन्दित हुए। आँखों में आनन्द के आँसू भरकर उन्होंने, रथ से उतरकर, अर्जुन और श्रीकृष्ण को गले से लगा लिया। फिर आँसुओं के वेग को रोककर श्रीकृष्ण और अर्जुन से कहा—हे वीरो ! आज सौभाग्यवश पापी नराधम जयद्रथ मारा गया। बड़ी बात जो तुम दोनों मित्र प्रतिज्ञा के बन्धन से छुटकारा पा गये। मैं इस समाचार से अत्यन्त आनन्दित हुआ और हमारे शत्रु शोक-सागर में डूब गये। हे श्रीकृष्ण ! तुम तीनों लोकों के गुरु हो। तुम्हारे सहायक होने पर त्रिभुवन में कोई कार्य दुःसाध्य नहीं है। हे मधुसूदन ! पहले इन्द्र ने तुम्हारी कृपा से जैसे दुष्ट दानवों का नाश किया था वैसे ही हम लोग, तुम्हारे ही प्रसाद से, शत्रुओं को परास्त करेंगे। हे श्रीकृष्ण ! तुम हर तरह से हमारी भलाई करने के लिए तत्पर हो। तुम्हारे ही भरोसे हम लोगों ने यह लड़ाई ठानी है। तुम्हारी चतुराई से ही अर्जुन ने जयद्रथ के वध जैसा कठिन काम किया है। हमने बचपन से तुम्हारे दिव्य अलौकिक कामों का वर्णन सुन रक्खा है; और इसी से हमें अपने शत्रुओं पर विजय पाकर राज्य प्राप्त करने का भरोसा हो गया था। तुम्हारी कृपा से ही इन्द्र समर में दानवों का दलन करके त्रिलोक-विजयी और देवताओं के स्वामी हुए हैं। तुम्हारे अनुग्रह से ही इस पृथ्वी के चराचर प्राणी अपने-अपने

१०

धर्म का पालन करते हुए नित्य जप तप होम आदि पुण्यकार्यों में तत्पर हैं। पहले यह चराचर जगत् समुद्रमय और गहरे अँधेरे से ढका हुआ था। बाद को तुम्हारे प्रसाद से ही फिर इस विश्व की अभिव्यक्ति हुई है। तुम सब लोकों की सृष्टि करनेवाले, परमात्मा, अव्यय, पुराणपुरुष, देवदेव, सनातन, परात्पर, परब्रह्म और परमपुरुष हो। तुम अनादि और अनन्त हो। एक बार भी जो तुम्हारा दर्शन पा जाते हैं वे कभी माया के मोह में नहीं फँसते। तुम भक्तजनों को विपत्ति से उबारते हो। जो व्यक्ति तुम्हारी शरण में आता है वह परम ऐश्वर्य प्राप्त करता है। हे परमात्मा! चारों वेदों में तुम्हारी महिमा गाई गई है। मैं तुम्हें पाकर अतुल ऐश्वर्य का उपभोग कर रहा हूँ। हे पुरुषोत्तम! तुम परमेश्वर हो, पशु-पक्षी आदि तिर्यक् योनियों के भी ईश्वर हो। मैं तुमको प्रणाम करता हूँ। हे माधव! [इस विजय-लाभ के लिए] मैं तुम्हारी संवर्द्धना करता हूँ। हे सब के आत्मा! हे विशाललोचन! तुम सब लोकों के आदिकारण हो। हे वासुदेव! तुम अर्जुन के सखा, प्रिय करनेवाले और दुःख दूर करनेवाले रक्षक हो। तुम्हारी शरण में आनेवाला सदा सुख पाता और वृद्धि को प्राप्त होता है।

२१

हे निष्पाप! तुम्हारे चरित को जाननेवाले पुरातन ऋषि मार्कण्डेय तुम्हारे अनुभाव और माहात्म्य का वर्णन कर चुके हैं। असित, देवल, नारद और मेरे पितामह व्यासजी ने तुमको उत्तम विधि कहा है; तुम तेज, परब्रह्म, सत्य और महत्तप हो; तुम श्रेय, यश, प्रधान और जगत् के कारण हो। तुम्हीं ने स्थावर-जङ्गम जगत् की रचना की है। हे जगत्पते! प्रलय के समय यह सब तुम्हीं में समा जाता है। न तुम्हारा आदि है न अन्त। वेदवेत्ता कहते हैं कि तुम चराचर के प्रभु, पालक, अजन्मा और अव्यक्त हो। तुम प्राणिमात्र के आत्मा हो, महात्मा हो। तुम अनन्त और विश्वतोमुख हो। तुम्हें देवता भी नहीं जानते। तुम गुप्त, आद्य, जगत्पति, नारायण, परमदेव, परमात्मा और ईश्वर हो। तुमसे ज्ञान उत्पन्न है। तुम हरि, विष्णु और मोक्ष की कामना रखनेवालों के स्थान हो। तुम पुराणों से भी परे पर पुरुष हो। ऐसे-ऐसे तुम्हारे जो दिव्य और ऐहिक गुण-कर्म हैं, उनका लेखा नहीं लगाया जा सकता। इन्द्र जिस तरह देवताओं की रक्षा करते हैं उसी तरह तुम सब तरह से हमारी रक्षा करो; क्योंकि सब गुणों से सम्पन्न तुम हमारे सुहृद् हो।

३०

महाराज! धर्मराज युधिष्ठिर के ये वचन सुनकर श्रीकृष्ण बहुत सन्तुष्ट और आनन्दित हुए। उन्होंने धर्मराज से कहा—राजन्! आपकी ही उग्र तपस्या, परम धर्म, साधुत्व और नम्रता से पापी सिन्धुराज जयद्रथ मारा गया। आपकी कृपा से ही अर्जुन ने यह काम किया है और असंख्य कौरव-सेना नष्ट हुई है। बाहु-बल, स्थिरता, फुर्ती और सफल विचार में तथा काम सफल कर लेने में अर्जुन की जोड़ का कोई नहीं है। हे भरतश्रेष्ठ, आपके भाई अर्जुन ने युद्ध में सेना का नाश करके जयद्रथ का सिर काट लिया है।

हे राजा धृतराष्ट्र, अब धर्मराज ने अर्जुन को गले लगाया, उनका मुँह धोया, ढाढ़स बँधाया और कहा—अर्जुन, तुमने वह काम किया है जिसे इन्द्र सहित देवता भी नहीं कर ४० सकते। भाग्य से तुम इस प्रतिज्ञा से उत्तीर्ण हुए हो। फिर उन्होंने अर्जुन की पीठ पर अपना पवित्र हाथ रक्खा। इस पर श्रीकृष्ण और अर्जुन ने धर्मराज से कहा—आपके ही क्रोध से कौरवगण नष्ट हुए हैं, हो रहे हैं और होंगे। हे वीर! दुर्मति दुर्योधन आपको कुपित करने के कारण ही भाई-बन्धुओं सहित रणभूमि में मारा जायगा। पहले देवता लोग भी जिन्हें परास्त नहीं कर सके वही कुरुपितामह भीष्म आज, आपके ही कोप के प्रभाव से, शरशय्या पर पड़े हुए हैं। जो आपके द्वेषी हैं उन्हें अवश्य ही मरना पड़ेगा। आप जिन पर क्रुद्ध हैं उनका राज्य, जीवन, प्रिय पुत्र और बहुविध सुखभोग आदि सब प्रकार का कल्याण शीघ्र ही नष्ट हो जायगा। हे राजधर्मपरायण महीपाल! आप जब कुपित हुए हैं तब अवश्य ही भाई-बन्धुओं सहित कौरवों का नाश होगा। ५१

राजन्! महामति श्रीकृष्ण और अर्जुन युधिष्ठिर से यों बातचीत कर रहे थे, इसी समय शत्रुओं के बाणों से घायल महाधनुर्द्धर महावीर भीमसेन और महारथी सात्यकि वहाँ आ गये। दोनों ही परमगुरु युधिष्ठिर को प्रणाम करके, पाञ्चाल वीरों के साथ हाथ जोड़कर, आगे खड़े हो गये। धर्मराज युधिष्ठिर ने महावीर भीमसेन और सात्यकि को प्रसन्नतापूर्वक हाथ जोड़कर खड़े देख उनका अभिनन्दन करते हुए कहा—वीरो! बड़ी बात जो आज तुम द्रोणरूप ग्राह और कृतवर्मारूप मगर के कारण अगम्य कौरवसेनारूप महासमुद्र के पार निकल आये। आज सौभाग्यवश पृथ्वी के सब राजा और द्रोणाचार्य तथा कृतवर्मा तुमसे परास्त हुए। तुम प्रशंसनीय और सौभाग्यशाली हो कि तुमने कर्णिक बाण के प्रहार से वीर कर्ण को जीत लिया और शल्य को विमुख कर दिया। हे रणनिपुण दोनों महारथियो! आज बड़े भाग्य की बात है कि मैं तुम दोनों को युद्धभूमि से सकुशल लौट आते देख सका। तुमने मेरी आज्ञा का पालन करके सम्मान की रक्षा की है। तुम कभी समर से विमुख नहीं होते।

महाराज! भीमसेन और सात्यकि से इस तरह कहकर, आँखों में आनन्द के आँसू भरकर, धर्मराज युधिष्ठिर ने उन्हें गले से लगा लिया। पाण्डवसेना भी उन्हें प्रसन्न देखकर बड़े आनन्द से उत्साहित होकर शत्रुसेना से युद्ध करने लगी। ६२

एक सौ पचास अध्याय

दुर्योधन का द्रोणाचार्य के आगे खिन्न होकर उलाहना देना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! इधर आपके पुत्र दुर्योधन जयद्रथ के मारे जाने से निरुत्साह होकर, आँखों में आँसू भरे, मलिन मुख किये, दाँत टूटने पर फुफकारें मार रहे नाग की

तरह बारम्बार साँसें लेने लगे। वे महावीर अर्जुन, सात्यकि और भीमसेन के बाणों से अपनी सेना का नाश हुआ देखकर विवर्ण, कृश और अत्यन्त दीन भाव से सोचने लगे कि सचमुच इस पृथ्वी पर अर्जुन के समान दूसरा योद्धा नहीं है। द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, कर्ण आदि कोई भी महारथी कुपित अर्जुन के आगे ठहर नहीं सकता। उन्होंने रण में मेरे महारथियों को जीतकर जयद्रथ को मारा और कोई भी अर्जुन को न रोक सका। यह कौरवों की विशाल सेना मरी हुई ही समझनी चाहिए। साक्षात् इन्द्र भी इसकी रक्षा नहीं कर सकते। जिनके भरोसे मैंने यह महासंग्राम ठाना था उन कर्ण को अर्जुन ने जीत लिया और जयद्रथ को मार डाला। सन्धि कराने के लिए आये हुए कृष्ण को, तृणतुल्य तुच्छ समझकर जिनके बाहुबल के भरोसे, मैंने सूखा जवाब दे दिया था वही महारथी कर्ण आज युद्ध में हार गये।

राजन्! इस तरह खिन्नचित्त राजा दुर्योधन द्रोणाचार्य से मिलने के लिए उनके पास गये। हे भरतश्रेष्ठ! अकारण युद्ध ठानकर जनसंहार कराने के कारण दुर्योधन सबके निकट १० अपराधी थे। उन्होंने आचार्य के पास जाकर शत्रुओं के जीतने का सब वृत्तान्त कह सुनाया। दुर्योधन ने कहा—हे आचार्य! मेरी ओर से लड़नेवाले मूर्द्धाभिषिक्त राजाओं के इस महासंहार को देखिए। मेरे दल के राजा लोग हमारे पितामह शूर भीष्म को आगे करके लड़ रहे थे। धूर्त शिखण्डी ने छल से उन भीष्म पितामह को मार गिराया और अब वह सफल-मनोरथ होकर पाञ्चाल-सेना को साथ लिये पाण्डवसेना के अगले भाग में स्थित है और हमारी सेना पर हमला कर रहा है। आपके अन्य शिष्य दुर्द्धर्ष राजा जयद्रथ को आज अर्जुन ने, सात अक्षौहिणी सेनाओं का नाश करके, मार डाला है। हमारी विजय के लिए लड़नेवाले मेरे जो उपकारी सुहृद युद्ध में मारे गये हैं, उनके ऋण को मैं कैसे चुका सकूँगा! जो राजा लोग राज्य, भोग और ऐश्वर्य को छोड़कर मुझे राज्य दिलाने के लिए युद्ध कर रहे थे वे सब पृथ्वी पर मरे पड़े हैं। मैं बड़ा नीच और पापी हूँ। मैंने ही अपने मित्रों का यह घोर नाश कराया है। हज़ार अश्वमेध यज्ञ करने पर भी मैं इस पाप से छुटकारा नहीं पा सकता। मैं लोभी, पापी और धर्म का नाश करनेवाला हूँ। राजा लोग मेरे ही लिए विजय की इच्छा से युद्ध करके मारे गये हैं। मुझ-से पापी, पतित, मित्रद्रोही को इस राजमण्डली के बीच पृथ्वी भी फटकर स्थान नहीं देती! मैं राजमण्डली के बीच रक्त से नहाये, शरशय्या पर पड़े हुए, समर में मारे गये भीष्म की रक्षा २० नहीं कर सका! वे धर्म से परलोक को जीतनेवाले दुर्द्धर्ष पितामह, सामने उपस्थित होने पर, मुझ अनार्य मित्रद्रोही अधर्मी को क्या कहेंगे? देखिए, मेरे लिए प्राणों का मोह छोड़कर लड़नेवाले महाधनुर्द्धर महारथी शूर जलसन्ध को सात्यकि ने मार डाला। काम्बोजराज सुदक्षिण, राजा अलम्बुष तथा अन्य बहुत से प्राणप्रिय मित्र मरे पड़े हैं। अब मैं ही किसलिए जीता रहूँ? मेरे विजयलाभ के लिए यथाशक्ति यत्न करके जो वीर योद्धा लोग युद्ध में मरे हैं,

उनका ऋण चुकाने के लिए आज मैं युद्ध में घोर पराक्रम दिखाऊँगा और यमुना-तट पर जाकर, जलाञ्जलि देकर, उन्हें तृप्त करूँगा। हे सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ! मैं आपके आगे सत्य, इष्टा-पूर्त (कुआँ बावली आदि खुदवाना, बाग़ लगाना), बल-वीर्य और अपने पुत्र आदि की क़सम खाकर कहता हूँ कि या तो रण में सब पाञ्चालों और पाण्डवों को मारकर शान्ति प्राप्त करूँगा और या अर्जुन आदि शत्रुओं के बाणों से मर करके अपने कार्य को सिद्ध करने के लिए मरने-वाले मित्र राजाओं का साथ दूँगा। हे महाबाहो! मेरे पक्ष के राजा लोग, भली भाँति रक्षित न होने के कारण, इस समय मेरी सहायता करने में उत्साह नहीं दिखाते। वे हमारे पक्ष में रहने की अपेक्षा पाण्डवों के आश्रय में जाना अच्छा समझते हैं। हे आचार्य! आपने, सत्य-प्रतिज्ञ होने के कारण, स्वयं हमारी मृत्यु की व्यवस्था कर दी है। अर्जुन आपके प्रिय शिष्य हैं, इसी लिए आप उनसे मन लगाकर युद्ध नहीं करते। यही कारण है कि हमारी जय के लिए यत्न करनेवाले वीर योद्धा मारे जा रहे हैं। इस समय मुझे एक कर्ण ही ऐसे देख पड़ते हैं, जो मेरी जय चाहते हैं और उसके लिए यथाशक्ति यत्न करते हैं। सच है, जो मन्दमति पुरुष मित्र की यथार्थता को बिना जाने ही उसे मित्र के काम में लगाता है वह स्वयं सङ्कट में पड़ता है और उसका काम भी बिगड़ जाता है। वैसे ही मोहवश लोभ के अधीन हो रहे मुझ पापी कठोरहृदय धन के लोलुप कपटी के मित्रों ने भी मेरा कार्य किया और मेरे कारण उनके प्राण गये। छल-बल-कौशल आदि प्रयत्नों से सर्वथा युद्ध में मेरा साथ देनेवाले जयद्रथ, पराक्रमी भूरिश्रवा और अभीषाह, शूरसेन, शिवि, वसाति आदि देशों के वीर मेरे ही लिए अर्जुन से लड़े और मारे गये। अब मैं भी युद्ध करके वहीं जाऊँगा जहाँ ये सब वीर पुरुष गये हैं। इन पुरुषश्रेष्ठ मित्रों के बिना मैं कदापि जीवित रहना नहीं चाहता। हे पाण्डवों के आचार्य! आप मुझे इसकी आज्ञा दीजिए। ३०, ३६

एक सौ इक्यावन अध्याय

द्रोणाचार्य्य का दुर्योधन को आश्वासन देना

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय! महावीर अर्जुन के हाथ से जयद्रथ और भूरिश्रवा के मारे जाने पर तुम लोगों के मन की क्या दशा हुई? दुर्योधन ने कौरव-मण्डली के बीच द्रोणाचार्य से जब इस तरह कहा तब आचार्य ने क्या उत्तर दिया?

सञ्जय ने कहा—हे कुरुकुलश्रेष्ठ! वीर जयद्रथ और भूरिश्रवा के मारे जाने पर आपकी सेना में घोर कोलाहल सुनाई पड़ने लगा। आपके पुत्र की दुर्मति और कुमन्त्रणा के कारण

ही सैकड़ों श्रेष्ठ क्षत्रियों की मृत्यु होते देखकर सब लोग उस कुमन्त्रणा के प्रति अनादर का भाव प्रकट करने लगे। इधर द्रोणाचार्य भी दुर्योधन के वचन सुनकर अत्यन्त खिन्न हुए और दम भर सोचकर अत्यन्त आर्तभाव से यों कहने लगे—हे दुर्योधन! तुम मुझे क्यों इस तरह वाक्य-बाणों से पीड़ा पहुँचा रहे हो? मैं सदा से तुमसे कहता आ रहा हूँ कि युद्ध में अर्जुन को कोई नहीं जीत सकता। हे कौरव! अर्जुन के द्वारा सुरक्षित शिखण्डी ने भीष्म पितामह को जब समरभूमि में गिरा दिया था तभी, उतने से ही, तुमको अर्जुन का असाधारण बल-वीर्य जान लेना चाहिए था। सम्पूर्ण देवता और दानव मिलकर भी जिन्हें समर में नहीं मार सकते थे उन महापराक्रमी भीष्म पितामह को जब मैंने समरभूमि में गिरते देखा था तभी जान लिया था कि यह विशाल कौरव-सेना अब नहीं

बच सकती। तीनों लोकों में जो सर्वश्रेष्ठ शूर समझे जाते थे वे भीष्म ही जब रणभूमि में गिरा दिये गये तब हम और किसका आश्रय लें? हे तात! शकुनि ने कौरवों की सभा में जो पाँसे फेंके थे वे पाँसे नहीं, शत्रुओं को सन्ताप पहुँचानेवाले तीक्ष्ण बाण थे। हे दुर्योधन! उन्हीं बाणों को चलाकर इस समय अर्जुन हमें मार रहे हैं। धीर-प्रकृति महामति विदुर ने, तुम्हारे ही भले के लिए, अनेक प्रकार के उपदेश दिये थे; तुम्हारे सामने ही तुम्हारी करतूत और कुमति के लिए बारम्बार विलाप किया था किन्तु तुमने उनकी बातों पर ध्यान ही नहीं दिया। विदुर की बातें न मानने से और दुःशासन के किये अत्याचार से ही इस समय यह घोर जनविनाश हो रहा है। जो मूढ़ मनुष्य हितचिन्तक मित्रों की बातें न मानकर अपने मन का काम करता है वह बहुत जल्द शोचनीय दशा को प्राप्त होता है। राजन्! तुमने जो हम लोगों के सामने, कौरवों की भरी सभा में, सत्कुल की बेटी धर्मपरायणा और सर्वथा उस दशा के अयोग्य द्रौपदी को बुलाकर उन पर अत्याचार किया था, उसी अधर्म का यह घोर फल तुमको मिल रहा है। अगर तुम यहीं इस प्रकार उस पाप का फल न भोग लेते तो परलोक में अवश्य इससे भी भया-

नरक क्लेश तुमको मिलता। हे दुर्योधन! तुमने पाण्डवों को कपटद्यूत में हराकर, मृगछाला पहनाकर, वन को भेजा था इसलिए दोष तुम्हारा ही है। मेरे सिवा ऐसा कौन अधम ब्राह्मण होगा, जो सदा धर्म का पालन करनेवाले, पुत्र के समान मुझे अपना बड़ा माननेवाले पाण्डवों का अनिष्ट करना चाहेगा? तुमने कौरव-सभा में शकुनि की सहायता और महाराज धृतराष्ट्र की अनुमति से पाण्डवों पर अत्याचार करके उन्हें कुपित कर रक्खा है। तुमने पाण्डवों के जिस क्रोध की जड़ डाली थी, उसे दुःशासन ने सींचा और कर्ण ने बढ़ाया है। तुम विदुर के वचनों का अनादर करके बारम्बार अपने प्रतिकूल व्यवहार से उस क्रोध को भड़काते रहे हो। देखो, २० तुम लोगों ने बारम्बार परास्त होकर भी यत्नपूर्वक अर्जुन को चारों ओर से घेरकर रोकना चाहा था, फिर क्यों न रोक सके? तुमने जयद्रथ को असंख्य सेना और छः महारथियों के बीच में रक्खा था, फिर वे तुम लोगों के सामने ही क्यों मारे गये? कर्ण, कृपाचार्य, शल्य और अश्वत्थामा के तथा तुम्हारे जीवित रहते ही जयद्रथ कैसे मारे गये? सब तेजस्वी राजाओं ने मिलकर घोर युद्ध किया, जयद्रथ की रक्षा के लिए कुछ उठा नहीं रक्खा, फिर भी अर्जुन ने उनको मार ही डाला। हे दुर्योधन! राजा जयद्रथ को तुमसे और विशेषकर मुझसे यह आशा थी कि हम अर्जुन से उनकी रक्षा कर सकेंगे। हमीं दोनों से उन्होंने अपनी रक्षा के लिए विशेष रूप से प्रार्थना की थी; किन्तु भरसक प्रयत्न करके भी मैं अर्जुन से जयद्रथ को नहीं बचा सका। मुझे स्वयं अपने बचने की आशा नहीं देख पड़ती। धृष्टद्युम्न के साथ युद्ध करने में मुझे अपनी मृत्यु साफ़ देख पड़ती है। धृष्टद्युम्न के पराक्रम-सागर में मैं अपने को डूबा हुआ सा समझता हूँ। धृष्टद्युम्न और शिखण्डी सहित पाञ्चाल-सेना को जब तक मैं नहीं मार लेता तब तक, मुझे जान पड़ता है कि, धृष्टद्युम्न के हाथ से मेरा छुटकारा नहीं है। राजन्! जयद्रथ की रक्षा करने में असमर्थ होने के कारण मुझे विलाप और पश्चात्ताप करते देखकर भी तुम क्यों मुझे वाक्य-बाण मार रहे हो? सत्यसन्ध और सहज ही अद्भुत कर्म करनेवाले महावीर भीष्म का सुवर्ण-मय ध्वजा का दण्ड युद्धभूमि में नहीं देख पड़ता। फिर तुम कैसे जय पाने की आशा कर रहे हो? महारथियों के बीच में सुरक्षित जयद्रथ और भूरिश्रवा जब मारे गये हैं तब रही क्या गया है? दुर्द्धर्ष कृपाचार्य अभी तक जीवित हैं और जयद्रथ की दशा को नहीं पहुँचे हैं, इसके लिए मैं उनकी प्रशंसा करता हूँ। राजन्! जब मैंने तुम्हारे और तुम्हारे छोटे भाई ३० दुःशासन के सामने ही, दुष्कर कर्म करनेवाले और संग्राम में इन्द्र सहित देवताओं के भी मारे न मरनेवाले, पराक्रमी पितामह भीष्म को संग्राम में गिरते देखा था तभी मुझे निश्चय हो गया था कि अब [कौरवपक्ष की कुशल नहीं है और] तुम्हारे हाथ से राज्य निकल गया। हे भारत! यह देखो, पाण्डवों और सृञ्जयों की विशाल सेनाएँ मिलकर मुझ पर आक्रमण करने को आ रही हैं। हे धृतराष्ट्र के पुत्र! आज मैं तुम्हारा हित करने के लिए यह प्रतिज्ञा करता

हूँ कि सब पाञ्चालों का नाश किये बिना शरीर से कवच नहीं खोलूँगा। हे दुर्योधन! तुम मेरे पुत्र अश्वत्थामा के पास जाकर उससे कहो कि "तुम अपने जीवन की रक्षा का ख़याल न करना और सोमक लोगों को जीवित न छोड़ना। तुम्हारे पिता ने जो उपदेश दिया है उसका पालन करना और नीच नृशंस काम छोड़कर दया, इन्द्रियदमन, सत्य, सरलता आदि सत्प्रवृत्तियों से न डिगना। तुम धर्म-अर्थ-काम के सम्पादन में निपुण हो, इसलिए धर्म और अर्थ को यथोचित मात्रा में सम्पन्न करते हुए लगातार धर्मप्रधान श्रेष्ठ काम करते रहना। दृष्टि और मन से ब्राह्मणों को सन्तुष्ट रखना और यथाशक्ति उनकी पूजा करना। ब्राह्मणों का अनिष्ट और अप्रिय कभी न करना; क्योंकि वे अग्निशिखा के समान तेजस्वी होते हैं।" राजन्! तुम इस तरह मेरा यह उपदेश अश्वत्थामा से कहना। मैं अब तुम्हारे वाक्यबाणों से अत्यन्त पीड़ित होने के कारण तुम्हारे शत्रुओं की सेना में जाता हूँ। आज मैं दारुण रण करूँगा। हे दुर्योधन! अगर तुममें शक्ति हो तो इस अपनी सेना की रक्षा करो। पाण्डव और पाञ्चालगण आज अत्यन्त क्रुद्ध हो रहे हैं, इसलिए वे रात को भी विश्राम न करके लड़ेंगे।

सञ्जय कहते हैं—हे कुरुकुलश्रेष्ठ! इतना कहकर महारथी द्रोणाचार्य युद्ध करने के लिए पाण्डवों और पाञ्चालों की सेना में जा घुसे। सूर्य जैसे नक्षत्रों को प्रकाशहीन कर देते हैं वैसे ही आचार्य का पराक्रम और तेज क्षत्रियों को निस्तेज करने लगा। ४१

एक सौ बावन अध्याय

दुर्योधन और कर्ण का संवाद। रात्रियुद्ध का प्रारम्भ

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! आपके पुत्र राजा दुर्योधन ने द्रोणाचार्य के ये वचन सुनकर, क्रोध के वश हो, युद्ध करने का ही निश्चय कर लिया। उस समय दुर्योधन ने अपने अनन्य मित्र और सहायक कर्ण से कहा—हे कर्ण! देखो, कृष्ण की सहायता से अर्जुन ने आचार्य के बनाये व्यूह को, जिसे देवगण भी नहीं तोड़ सकते थे, तोड़ डाला। तुम और महात्मा द्रोणाचार्य लाख यत्न करते रहे लेकिन अर्जुन को नहीं रोक सके। अर्जुन ने मुख्य-मुख्य योद्धाओं के सामने ही हमारी सेना में घुसकर प्रिय जयद्रथ को मार ही डाला। देखो, सिंह जैसे क्षुद्र मृगों को मार भगावे वैसे ही अकेले अर्जुन ने पृथ्वी के श्रेष्ठ वीरों को युद्ध में मार डाला। हे शत्रुनाशन कर्ण! समरभूमि में मेरे लाख यत्न करने पर भी अर्जुन ने मेरी अधिकांश सेना नष्ट कर डाली है, बहुत ही थोड़ी सेना बच रही है। महामति द्रोणाचार्य अगर मन लगाकर युद्ध करते तो भला अर्जुन, कोटि यत्न करके भी, उस दुर्भेद्य व्यूह को कैसे तोड़ सकते थे?

हे कर्ण ! देखो, अर्जुन ने जयद्रथ को मारकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर ली। महेन्द्र के समान पराक्रमी बहुत से राजाओं को अर्जुन ने युद्ध में मारकर पृथ्वी पर गिरा दिया है। अगर पराक्रमी द्रोणाचार्य अर्जुन को रोकने का यत्न करते; उनको व्यूह के भीतर न जाने देना चाहते, तो लाख यत्न करने पर भी अर्जुन व्यूह को तोड़कर भीतर नहीं जा सकते थे। हे वीर कर्ण ! असल बात यह है कि महात्मा द्रोणाचार्य को अर्जुन बहुत प्रिय हैं, इसी से उन्होंने बिना युद्ध किये ही प्रिय शिष्य को भीतर जाने के लिए राह दे दी। द्रोणाचार्य ने जयद्रथ को अभय-दान करके भी, मुझे गुण-हीन देखकर, अर्जुन को भीतर घुस जाने दिया। अगर द्रोणाचार्य पहले ही जयद्रथ को घर जाने की आज्ञा दे देते तो उनके प्राण बच जाते और इतने मनुष्यों की जान भी न जाती। द्रोणाचार्य से अभय-दान पाकर ही मुझ नीच और मूढ़ ने, जीवन की इच्छा से घर जा रहे, जयद्रथ को रोक लिया। हाय ! आज हम दुरात्माओं के सामने ही मेरे चित्रसेन आदि प्रिय भाई भीमसेन के हाथ से मारे गये! १०

कर्ण ने कहा—राजन्! तुम्हारा यह कहना ठीक नहीं। महात्मा द्रोणाचार्य बल-वीर्य और उत्साह के अनुसार जी-जान से युद्ध कर रहे हैं, इसलिए तुम उनकी निन्दा न करो। पराक्रमी अर्जुन जो द्रोणाचार्य को लाँघकर हमारी सेना के भीतर घुस गये, इसमें मुझे द्रोणाचार्य का रत्ती भर भी दोष नहीं देख पड़ता। द्रोणाचार्य वृद्ध होने के कारण न तो जल्दी चल सकते हैं और न उनमें उतनी फुर्ती ही है। उधर कृष्ण जिनके सारथी हैं वे महावीर अर्जुन कार्यकुशल, नौजवान, अस्त्रनिपुण, फुर्तीले और शीघ्रगामी हैं। वे दुर्भेद्य कवच पहने, बाहु-बल के दर्प से पूर्ण और दिव्य अस्त्रों के बल से सम्पन्न हैं। वे जो कृष्ण-से सारथी की सहायता पाकर, दिव्य वानरध्वज रथ पर बैठकर, अजेय सुदृढ़ गाण्डीव धनुष से पैने बाण बरसाते हुए फुर्ती के साथ द्रोणाचार्य को लाँघकर निकल गये, इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है। मैं तो यही कहूँगा कि इसमें द्रोणाचार्य का रत्ती भर अपराध नहीं है। राजन् ! अस्त्रविद्या के अद्वितीय ज्ञाता द्रोणाचार्य को लाँघकर अर्जुन हमारी सेना में घुस गये, यह देखकर मेरी तो धारणा हो गई है कि पाण्डवों को कोई हरा नहीं सकता। मैं तो समझता हूँ कि दैव बड़ा प्रबल है। जो होनी है उसे कोई किसी तरह टाल नहीं सकता। हम लोग छल-बल-कौशल से सब तरह जय पाने की चेष्टा कर रहे हैं, पर सब वृथा हो रहा है। हे सुयोधन ! हम लोग यथाशक्ति घोर युद्ध करके जयद्रथ को बचाने की चेष्टा करते रहे, तथापि जयद्रथ को नहीं बचा सके। इसी से कहना पड़ता है कि होनी बड़ी प्रबल है। देखो न, हम तुम्हारे साथ मिलकर रणभूमि में शत्रुओं को मारने और विजय पाने का बेहद यत्न कर रहे हैं, किन्तु दैव के प्रतिकूल होने से उसका फल उलटा हो रहा है। दैव ही हमारे पौरुष और उद्योग को नष्ट करके हमें पीछे ढकेल रहा है। दैव जिस पुरुष के प्रतिकूल है उसके सब काम बिगड़ जाते हैं। महाराज ! २१

मैं तो यही समझता हूँ कि अध्यवसायी पुरुष जिस काम के करने का विचार करे, या जिसे कर्तव्य समझे, उसे बेखटके बराबर करता रहे। हाँ, उसका सिद्ध होना दैव के हाथ में है। हम लोगों ने पाण्डवों के साथ छल-कपट किया, उन्हें धोखा दिया, विष दिया, लाक्षाभवन में रखकर आग लगवा दी और फिर द्यूत में हराकर, राजनीति के अनुसार, वन को भेजा। इस तरह स्वयं निष्कण्टक होने के लिए हमने जो-जो यत्न किये उन सबको प्रतिकूल दैव ने ही व्यर्थ कर दिया। राजन्! अब तुम यत्नपूर्वक दैव को व्यर्थ करके प्राणपण से बराबर युद्ध करते रहो। इस तरह अपने-अपने जयलाभ के लिए यत्न करते हुए हम दोनों (पाण्डवों और कौरवों) में जिसका यत्न सुदृढ़ होगा, अध्यवसाय या तत्परता अखण्डित होगी, उसी के अनुकूल दैव हो ३० जायगा। मैं तो पाण्डवों का कोई सुमतिकृत सुकृत या तुम्हारा दुर्बुद्धिकृत दुष्कृत नहीं देखता। तुम्हारी हार या पाण्डवों की जीत का कारण दैव है, सुकृत और दुष्कृत नहीं। दैव का और कोई काम ही नहीं है। वह मनुष्यों के सोते रहने पर भी जागा करता है। महाराज! पहले युद्ध के आरम्भ के समय तुम्हारे पास बहुत सी सेना और बहुत से योद्धा थे। जितनी सेना और योद्धा तुम्हारे थे उतनी सेना और योद्धा पाण्डवों के नहीं थे; तथापि उन्होंने संख्या में कम होकर भी हमारे संख्या में बहुत और पराक्रमी वीरों को मारकर कम कर दिया है। यह सब उसी दैव की लीला है। दैव ही हमारे पौरुष को वृथा कर रहा है।

सञ्जय कहते हैं—महाराज! दुर्योधन और कर्ण से बातचीत हो ही रही थी कि युद्ध-भूमि में पाण्डवों की बहुत सी सेना आती हुई देख पड़ी। तब दोनों पक्ष के योद्धा, रथ, हाथी और घोड़े परस्पर भिड़ गये और घमासान युद्ध होने लगा। राजन्! आपकी कुमन्त्रणा के ३६ फल से ही यह घोर जननाशक संग्राम हुआ है।

घटोत्कचवधपर्व

एक सौ तिरपन अध्याय

युधिष्ठिर से दुर्योधन का हारना

सञ्जय कहते हैं—राजन्! आपकी वह हाथियों की सेना पाण्डव-सेना के भीतर घुसकर चारों ओर घोर युद्ध करने लगी। पाञ्चालगण और कौरवगण जीवन का मोह छोड़कर, यम-पुर जाने की दीक्षा सी लेकर, एक दूसरे से लड़ने लगे। वीर योद्धा लोग अपने प्रतिपक्षी वीरों पर झपटकर, उनसे भिड़कर, परस्पर बाण, तोमर, शक्ति आदि के प्रहार करने और मरने-मारने लगे। रथी लोग रथी लोगों से भिड़कर बाणों की वर्षा करने और एक दूसरे के शरीर से रक्त की धाराएँ बहाने लगे। मदमत्त हाथी परस्पर भिड़कर, कुपित होकर, दाँतों के प्रहार से

एक दूसरे के शरीर को चीरने-फाड़ने लगे। घोड़ों के सवार परस्पर भिड़कर, महान् यश प्राप्त करने की इच्छा से उत्तेजित होकर, प्रास शक्ति परश्वध आदि शस्त्रों से प्रहार करके एक दूसरे को घायल करने लगे। उस तुमुल युद्ध में सैकड़ों सशस्त्र पैदल योद्धा परस्पर भिड़कर, पराक्रम प्रकट करके, एक दूसरे पर आक्रमण करने लगे। उस समय वीरों के मुख से उच्चारित अपने-अपने गोत्र, नाम और कुल को सुनकर ही हमें जान पड़ता था कि कौन कौरवपक्ष का है और कौन पाञ्चालसेना का है। [नहीं तो उस अँधेरे में कुछ भी नहीं सूझता था कि कौन किससे कहाँ युद्ध कर रहा है।] योद्धा लोग निर्भय भाव से बाण, शक्ति, परश्वध आदि शस्त्रों के प्रहार से एक दूसरे को मारते हुए इधर-उधर विचर रहे थे। उनके छोड़े हुए हज़ारों बाणों के फैलने से वही दशा हुई जो सूर्य के अस्त हो जाने से दसों दिशाओं में अँधेरा फैलने पर होती है और कुछ भी नहीं सूझ पड़ता। १०

महाराज! पाण्डवों और कौरवों की सेना में इस तरह घोर युद्ध होने लगा। उस समय जयद्रथ की मृत्यु से अत्यन्त दुःखित होकर, जीवन की आशा त्यागकर, रथ के शब्द से दसों दिशाओं को प्रतिध्वनित और पृथ्वी को कम्पायमान करते हुए महाराज दुर्योधन शत्रु-सेना में घुस पड़े। उस समय दुर्योधन और पाण्डवों से घनघोर युद्ध होने लगा, जिसमें असंख्य सैनिकों का नाश हुआ। राजन्! आपके प्रतापी पराक्रमी पुत्र अपने अग्नितुल्य बाणों से पाण्डवसेना को सन्ताप पहुँचाने और भस्म करने लगे। उस समय वे दोपहर के प्रचण्ड सूर्य के समान जान पड़ने लगे। पाण्डवपक्ष के योद्धा दुर्योधन की ओर आँख उठाकर अच्छी तरह देख भी नहीं सकते थे। दुर्योधन के बाणों से मारे जा रहे पाञ्चालगण, शत्रुओं के जीतने में निरुत्साह होकर, भागने लगे। आपके धनुर्द्धर पुत्र ने सुवर्णपुङ्ख-शोभित तीक्ष्ण नोकवाले बाणों से पाण्डवपक्ष के सैनिकों को पीड़ित करना शुरू किया और वे मर-मरकर गिरने लगे। महाराज! उस समय आपके पुत्र ने अकेले ही जैसा अद्भुत युद्ध किया वैसा युद्ध आपके पक्ष के किसी योद्धा ने नहीं किया। जिस तरह मस्त हाथी सरोवर के भीतर घुसकर फूले हुए कमल-वन को दलित करे, उसी तरह दुर्योधन ने चारों ओर से पाण्डवसेना को मथ डाला। सूर्य और वायु के प्रभाव से जल सूख जाने पर कमलिनी जैसे मुरझा जाती है वैसे ही पाण्डवों की सेना, आपके पुत्र के पराक्रम और तेज से, प्रभाहीन और नष्ट-भ्रष्ट हो गई। २०

राजन्! इसी समय भीमसेन सहित पाञ्चालगण अपने पक्ष की सेना को नष्ट-भ्रष्ट और कम होते देखकर दुर्योधन पर आक्रमण करने के लिए दौड़े। तब दुर्योधन ने भीमसेन को दस, नकुल और सहदेव को तीन-तीन, विराट और द्रुपद को छः, शिखण्डी को सौ, धृष्टद्युम्न को सत्तर, युधिष्ठिर को सात, सात्यकि को पाँच तथा द्रौपदी के पुत्रों को तीन-तीन बाण मारकर केकय और चेदि देश के वीरों को बहुत से तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित किया। इसके बाद घटो-

त्कच को और बहुत से हाथियों पर सवार अन्य वीरों को, उनके वाहनों सहित, बाणों से घायल करके क्रुद्ध वीर दुर्योधन सिंह की तरह गरजने लगे। काल जैसे प्रजा का संहार करता है वैसे ही कुपित राजा दुर्योधन ने तीक्ष्ण बाणों से मनुष्यों, हाथियों और घोड़ों के शरीर खण्ड-खण्ड कर डाले। महाराज! आपके पुत्र ने शिलीमुख बाणों से पाण्डव-सेना को इस तरह पीड़ित किया कि सब सैनिक उनके आगे से भाग खड़े हुए। उस समय प्रचण्ड सूर्य की तरह तप रहे तेजस्वी कुरुराज की ओर पाण्डवपक्ष के सैनिक देख भी नहीं सकते थे।

महाराज! तब धर्मराज युधिष्ठिर क्रुद्ध होकर, मार डालने के विचार से, दुर्योधन की ओर झपटे। राज्य के लिए पराक्रम प्रकट कर रहे राजा युधिष्ठिर और दुर्योधन दोनों शत्रुदमन वीर आमने-सामने होकर घोर युद्ध करने लगे। महारथी राजा दुर्योधन ने अत्यन्त कुपित होकर दस तीक्ष्ण बाणों से राजा युधिष्ठिर को घायल करके एक बाण से उनके रथ की ध्वजा ३१ काट डाली और फिर महात्मा युधिष्ठिर के प्रिय सारथी इन्द्रसेन के मस्तक में तीन बाण मारे। साथ ही फुर्ती के साथ एक बाण से युधिष्ठिर का धनुष काटकर चार बाणों से उनके रथ के बढ़िया घोड़ों को भी घायल कर दिया। धर्मराज युधिष्ठिर फुर्ती से दूसरा धनुष लेकर, क्रोध और वेग के साथ, दुर्योधन की ओर झपटे। उन्होंने दो भल्ल बाणों से शत्रुओं को मार रहे राजा दुर्योधन के सुवर्णभूषित धनुष के तीन टुकड़े कर डाले और फिर उनको दस बाण मारे। वे बाण दुर्योधन के शरीर को भेद करके पृथ्वी में घुस गये। तब पाण्डवपक्ष के सब योद्धा, सहायता करने के लिए, राजा युधिष्ठिर के चारों ओर आ गये, जैसे वृत्रासुर से युद्ध कर रहे इन्द्र के आसपास देवगण विराजमान थे। अब युधिष्ठिर ने सूर्यकिरणतुल्य तीक्ष्ण और अनिवार्य एक उग्र बाण धनुष पर चढ़ाकर "हा, तुम मारे गये!" कहकर दुर्योधन के ऊपर छोड़ा। कानों तक खींचकर छोड़े गये युधिष्ठिर के उस बाण की गहरी चोट लगने से राजा दुर्योधन मूर्च्छित होकर रथ के ऊपर गिर पड़े। उस समय "दुर्योधन मारे गये!" यों कहकर प्रसन्नता ४० प्रकट कर रहे पाञ्चालसेना के योद्धा बड़ा कोलाहल करने लगे। इसी समय द्रोणाचार्य फुर्ती के साथ वहाँ आते दिखाई पड़े। इधर दुर्योधन भी होश में आ गये और "ठहर, ठहर!" कहते हुए दूसरा दृढ़ धनुष लेकर युधिष्ठिर की ओर वेग से चले। उस समय, उस स्थान पर, बाणों का उग्र शब्द चारों ओर गूँज उठा। पाञ्चालगण भी जय की इच्छा से दुर्योधन को रोकने के लिए आगे बढ़े। राजन्! जैसे प्रचण्ड आँधी जल बरसानेवाले मेघों को रोकती और छिन्न-भिन्न कर देती है वैसे ही द्रोणाचार्य भी आक्रमण करनेवाले पाञ्चालसेना के वीरों को मारकर दुर्योधन की रक्षा करने लगे। उस समय युद्ध के लिए भिड़ रहे कौरव और पाञ्चालगण सहित ४४ पाण्डवपक्ष के वीर दारुण रण करके घोर जन-संहार करने लगे।

एक सौ चौवन अध्याय

द्रोणाचार्य के युद्ध का वर्णन

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! महाबली आचार्य मेरे स्वेच्छाचारी पुत्र मन्दमति दुर्योधन का तिरस्कार करने के उपरान्त जब क्रुद्ध होकर पाण्डवसेना में घुसे और रथ पर बैठकर बेखटके शत्रु-संहार करते हुए विचरने लगे, तब उन शूर पुरुषसिंह का सामना किसने किया ? पाण्डव पक्ष के वीरों ने किस तरह उन्हें रोका? उस महायुद्ध में किस-किस ने आचार्य के रथ के दाहने और बायें पहिये की रक्षा की ? कौन वीर उनके पृष्ठरक्षक हुए ? शत्रुपक्ष के कौन-कौन वीर सामने आकर उनसे लड़े? हे सञ्जय! मुझे तो जान पड़ता है कि प्रधान धनुर्द्धर विजयी द्रोणाचार्य जब पाञ्चालसेना में घुसे होंगे तब पाञ्चालगण डर से वैसे ही काँपने लगे होंगे जैसे कोई पुरुष असमय में जूड़ी आने से काँपने लगता है, अथवा शीतकाल में गाय आदि पशु जैसे काँपते हैं। सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ महावीर द्रोणाचार्य क्रोध से धूमकेतु की तरह प्रज्वलित होकर समर-भूमि में चारों ओर नाच सा करते हुए पाञ्चालसेना को भस्म करने लगे होंगे। हे सञ्जय ! प्रतापी द्रोणाचार्य शत्रुओं से लड़ते-लड़ते किस तरह मारे गये? सब वृत्तान्त मुझसे कहो।

सञ्जय ने कहा—महाराज! जयद्रथ को मारने के उपरान्त वीर अर्जुन सन्ध्या के समय धर्मराज युधिष्ठिर से मिलकर, फिर सात्यकि को साथ लिये हुए, युद्ध करने के लिए द्रोणाचार्य की ओर दौड़े। उस समय धर्मराज युधिष्ठिर और महाबली भीमसेन भी अलग-अलग सेना साथ लेकर आचार्य से लड़ने चले। इसी तरह नकुल, दुर्जय सहदेव, धृष्टद्युम्न, शतानीक, राजा विराट, केकय देश के पाँचों राजकुमार, मत्स्य और शाल्व देश के सेना सहित वीर योद्धा　१०
सब द्रोणाचार्य से ही युद्ध करने के लिए वेग से दौड़े। पाञ्चालसेना से सुरक्षित धृष्टद्युम्न के पिता राजा द्रुपद, द्रौपदी के पाँचों पुत्र और राक्षस घटोत्कच, ये भी अपनी-अपनी सेना साथ लिये द्रोणाचार्य के सामने आ पहुँचे। पाञ्चालदेश के छः हज़ार युद्धनिपुण योद्धा और प्रभद्रकगण, शिखण्डी के साथ होकर, द्रोणाचार्य पर आक्रमण करने को चले। इनके सिवा पाण्डवपक्ष के और भी अनेक महारथी क्षत्रिय द्रोणाचार्य की ही ओर दौड़े। महाराज ! जिस समय ये सब वीर युद्ध के लिए आगे बढ़े उस समय डरपोक पुरुषों के मन में डर बढ़ानेवाली, भयावनी, वीरविनाशिनी, संहारकारिणी घोर रात्रि हो गई थी। उस रात्रि में असंख्य मनुष्यों, घोड़ों और हाथियों का नाश होने लगा।

महाराज ! उस रात्रि के समय अशुभरूपिणी गिदड़ियों के दल मुँह फैलाकर घोर शब्द करने लगे; उनके मुँह से आग की ज्वालाएँ निकलने लगीं। उनका वह अमङ्गल शब्द लोगों के लिए महाभय की सूचना देने लगा। उल्लू पक्षियों के झुण्ड के झुण्ड, विशेषकर कौरवों की

सेना में, दारुण शब्द करते हुए डर और अनर्थ की सूचना देने लगे। उस समय सेनाओं में महा कोलाहल सुनाई पड़ने लगा। भेरी, मृदङ्ग आदि बाजे बजने लगे, हाथी चिग्घारने और २० घोड़े हिनहिनाने लगे। घोड़ों, हाथियों और मनुष्यों के दौड़ने से उनके पैरों का अपरिमित शब्द चारों ओर फैल गया। उस सन्ध्याकाल में पाञ्चाल-सेना के साथ द्रोणाचार्य का दारुण युद्ध होने लगा। दिशाओं में रात का गहरा अँधेरा छाया हुआ था और पृथ्वी से उड़ी हुई धूल आकाश में छा गई थी, इससे कहीं कुछ नहीं सूझ पड़ता था। इससे हम लोग मोहित-से हो गये। थोड़ी देर में मनुष्यों, हाथियों और घोड़ों के शरीरों से इतना रक्त बहा कि उससे वह धूल बैठ गई। रात को पहाड़ पर बाँसों के वन में आग लगने से जैसे चट-चट शब्द होता है वैसा ही शब्द चारों ओर शस्त्रों और बाणों के गिरने से सुनाई पड़ने लगा। मृदङ्ग, नगाड़े, डङ्के, झल्लरी, पटह, शङ्ख आदि बाजों के शब्द और घोड़ों के हिनहिनाने से रणभूमि परिपूर्ण और आकुल हो उठी। अँधेरे के मारे अपना-पराया कुछ नहीं जान पड़ता था। सब लोग उन्मत्त और मोहित-से हो उठे। इसके बाद रक्तप्रवाह से पृथ्वी की धूल बैठ गई और सुनहरे कवचों तथा जड़ाऊ गहनों की प्रभा से रात का अँधेरा कम हो गया। उस समय शक्ति ध्वजा आदि से अलङ्कृत तथा मणिमय सोने के अलङ्कारों से शोभित कौरवसेना, नक्षत्रों से जगमगाते हुए आकाशमण्डल की तरह, अपूर्व शोभा को प्राप्त हुई। गीदड़, कौए आदि जीव सर्वत्र शब्द कर रहे थे, हाथी घोर शब्द से लोगों के मन में त्रास उत्पन्न कर रहे थे तथा सैनिकगण सिंह- ३० नाद और प्रतिद्वन्द्वी को ललकारने के शब्द से अपना उत्साह प्रकट कर रहे थे।

इन्द्र के वज्र के गिरने के समान लोमहर्षण कोलाहल चारों ओर गूँज उठा। महाराज! उस अँधेरे में कौरवसेना अङ्गद, कुण्डल, किरीट, निष्क आदि गहनों और तरह-तरह के अस्त्र-शस्त्रों की आभा से प्रकाशमान होकर अत्यन्त शोभा को प्राप्त हुई। उस सेना में सुवर्णभूषित हाथी और रथ बिजली सहित मेघों के समान दिखाई पड़ रहे थे। चारों ओर खड्ग, शक्ति, ऋष्टि, गदा, बाण, मुशल, प्रास और पट्टिश आदि शस्त्र-अस्त्र लगातार गिरने से ऐसा जान पड़ता था कि आग बरस रही है। महाराज! उस सेना में द्रोणाचार्य और अर्जुन मेघ के समान बाण बरसा रहे थे। दुर्योधन वर्षा के समय आगे चलनेवाली हवा के समान थे। रथ और हाथी उड़नेवाली बगलों की क़तार से जँचते थे। खड्ग, शक्ति, गदा आदि शस्त्रों का शब्द वज्रपात की समता कर रहा था। बाजों का शब्द मेघ-गर्जन सा सुनाई पड़ता था। धनुष और ध्वजाएँ बिजली-सी चमक रही थीं। बाणों की वर्षा जल की वर्षा-सी जान पड़ती थी। अस्त्र पवन-से चल रहे थे। [शस्त्रपात ही उमस की तरह व्याकुल कर रहा था।] वह उग्र, घोर, आश्चर्य उत्पन्न करनेवाली, जीवन नष्ट करनेवाली, भयवर्द्धिनी सेना बिना नाव की नदी के समान दुस्तर थी। युद्ध करने के लिए उद्यत वीरगण उसी सेनासागर में घुस पड़े। इस तरह रात्रि के समय महाशब्द-

परिपूर्ण, कायरों के लिए भयङ्कर और शूरों के लिए आनन्दवर्द्धक दारुण युद्ध छिड़ने पर कुपित पाञ्चाल और पाण्डवगण मिलकर द्रोणाचार्य पर चारों ओर से आक्रमण करने लगे। किन्तु जो-जो महारथी योद्धा महात्मा द्रोणाचार्य के सामने गये उन सबको उन्होंने हटा दिया और बहुतों को तो मार ही डाला। उस समय महावीर द्रोणाचार्य ने अकेले ही नाराच बाणों की मार से हज़ार हाथी, दस हज़ार रथ, प्रयुत संख्यक पैदल और एक अर्बुद घोड़े मार डाले। ४१

एक सौ पचपन अध्याय

ध्रुव, जयरात, दुर्मद और दुष्कर्ण का मारा जाना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! सिन्धुराज जयद्रथ और भूरिश्रवा के मारे जाने पर महा-तेजस्वी द्रोणाचार्य ने, दुर्योधन के तिरस्कार को न सह सकने के कारण, कुपित होकर जब पाञ्चाल-सेना में प्रवेश किया तब तुम लोगों के मन में किस भाव का उदय हुआ? कहा न माननेवाले मेरे पुत्र दुर्योधन से पूर्वोक्त बातें कहकर शत्रुसेना में प्रवेश करते हुए द्रोणाचार्य को देखकर अर्जुन ने क्या सोचा और क्या किया? दुर्द्धर्ष और शत्रुओं को पीड़ित करनेवाले आचार्य को शत्रु-सेना में जाते देखकर दुर्मति दुर्योधन ने उस समय के उपयुक्त क्या कर्त्तव्य सोचा? द्विजश्रेष्ठ द्रोणाचार्य जब युद्ध करने के लिए चले तब कौन कौन महारथी योद्धा उनके पीछे गये? उन्हें रण में शत्रुओं का नाश करते देखकर पाण्डव पक्ष के कौन-कौन वीर संग्राम करने के लिए उनके सामने आये? मुझे जान पड़ता है कि सब पाण्डव और उनके पक्ष के योद्धा, द्रोणाचार्य के बाणों से पीड़ित होकर, शीतकाल में गायों के समान डर के मारे काँपने लगे होंगे। शत्रुनाशन महाधनुर्द्धर वीर द्रोणाचार्य पाञ्चालों की सेना में घुस करके किस तरह मारे गये? हे सञ्जय! रात के उस घोर युद्ध में जब सब महारथी योद्धा परस्पर भिड़कर युद्ध करने लगे और दोनों पक्षों की सेनाओं में हलचल मच गई तब कौरव पक्ष के कौन-कौन बुद्धिमान् धीर-वीर पुरुष जम-कर लड़ने लगे? तुम कहते हो कि हमारे पक्ष के योद्धा मारे गये, हार गये, रथ-हीन होकर किंकर्त्तव्यविमूढ़-से हो गये। पाण्डवों के प्रहार से पीड़ित, गहरे अँधेरे में निमग्न और शत्रुओं के द्वारा विमर्दित मेरे सैनिकों ने उस समय अपना क्या कर्त्तव्य निश्चित किया? तुम पाण्डवों को विजय-लाभ से अत्यन्त सन्तुष्ट, प्रसन्न, उत्साहित और कौरवों को खिन्न, उत्साह-हीन और रण से विमुख बतलाते हो। किन्तु उस रात के घने अँधेरे में युद्ध से न भागनेवाले पाण्डवों और कौरवों का यह सब हाल तुमने कैसे देखा? १०

सञ्जय ने कहा—महाराज! उस रात में घोर संग्राम छिड़ जाने पर पाण्डव और सोमकगण चारों ओर से द्रोणाचार्य पर ही आक्रमण करने लगे। द्रोणाचार्य ने कुपित होकर

शीघ्रगामी तीक्ष्ण बाणों से केकय देश के वीरों को और धृष्टद्युम्न के पुत्रों को मार डाला। उस समय जो महारथी द्रोणाचार्य के सामने पहुँचे उन सबको उन्होंने मार गिराया। तब पराक्रमी राजा शिवि, महारथी द्रोण को पाञ्चाल-सेना का संहार करते देखकर, क्रुद्ध हो उनके सामने आ गये। महावीर द्रोणाचार्य ने उनको, युद्ध के लिए आते देखकर, ख़ालिस लोहे के तीक्ष्ण दस बाण मारे। शिवि ने भी उनको तीक्ष्ण तीस बाण मारे और हँसते-हँसते एक भल्ल बाण से उनके सारथी को मार गिराया। यह देखकर द्रोणाचार्य बहुत ही कुपित हुए। उन्होंने राजा शिवि के सारथी और घोड़ों को मारकर शिरस्त्राण सहित उनका सिर धड़ से अलग कर दिया। दुर्योधन ने फुर्ती के साथ और एक सारथी द्रोणाचार्य के रथ पर भेज दिया। वह सारथी आकर द्रोणाचार्य के २० रथ के घोड़ों को हाँकने लगा। तब फिर आचार्य शत्रुसेना को मारते हुए आगे बढ़े।

उधर कलिङ्गराज का पुत्र, कलिङ्ग देश की सेना साथ लेकर, भीमसेन की ओर चला। पहले उसके पिता को भीमसेन मार चुके थे, इसी से वह बहुत क्रुद्ध हो रहा था। उसने भीमसेन को पहले पाँच और फिर सात उग्र बाण मारकर उनके सारथी विशोक को तीन तीक्ष्ण बाण मारे और एक बाण भीमसेन की ध्वजा में मारा। कलिङ्ग देश के वीर को क्रुद्ध देखकर कुपित भीमसेन ने, अपने रथ से उसके रथ पर फुर्ती से जाकर, बड़े ज़ोर से एक घूँसा मारा। भीमसेन के वज्रतुल्य मुष्टिप्रहार से कलिङ्गराजकुमार की हड्डियाँ निकलकर गिर पड़ीं। तब कर्ण और कलिङ्गराजकुमार के भाई—ध्रुव और जयरात—अपने भाई के वध को न सह सके। वे कुपित होकर विषैले साँप के समान नाराच बाणों से भीमसेन को पीड़ित करने लगे। अब महाबली भीमसेन फुर्ती के साथ शत्रु के रथ को छोड़कर ध्रुव के रथ पर चले गये। वहाँ जाकर लगातार बाण बरसानेवाले ध्रुव के सिर में उन्होंने भयङ्कर घूँसा मारा। महाबली भीमसेन के मुष्टिप्रहार से उसके प्राण निकल गये और वह मरकर गिर पड़ा। महाराज! इस तरह ध्रुव

कलिङ्ग देश के वीर को क्रुद्ध देखकर कुपित भीमसेन ने, अपने रथ से उसके रथ पर फुर्ती से जाकर, बड़े ज़ोर से घूँसा मारा। इससे कलिङ्ग राजकुमार की हड्डियाँ निकल कर गिर पड़ीं।

को मारकर भीमसेन जयरात के रथ पर पहुँचे और वारम्बार सिंह की तरह गरजने लगे। कर्ण के सामने ही महाबली भीमसेन ने जयरात को बाँये हाथ से चाँटे मारकर पृथ्वी पर पटक दिया। इससे वह मर गया। अब महावीर कर्ण ने कुपित होकर भीमसेन के ऊपर हिरण्मयी शक्ति चलाई। प्रतापी भीमसेन ने हँसते-हँसते उस शक्ति को हाथ से पकड़ लिया और कर्ण के ऊपर ही वह शक्ति फेंक दी। महावीर शकुनि ने उस शक्ति को कर्ण के ऊपर गिरते देखकर एक तीक्ष्ण बाण से काट डाला। ३०

महाराज! इस तरह यह अद्भुत काम करके पराक्रमी भीमसेन अपने रथ पर सवार हो लिये और फिर आपकी सेना को मारते हुए आगे बढ़े। कुपित काल के समान भयङ्कर महाबाहु भीमसेन को अपनी सेना का संहार करते आते देख आपके महारथी पुत्र, उन्हें रोकने के लिए, उन पर असंख्य बाण बरसाने लगे। तब भीमसेन ने हँसते-हँसते तीक्ष्ण बाणों से राजकुमार दुर्मद के सारथी और घोड़ों को मार गिराया। दुर्मद अपने भाई दुष्कर्ण के रथ पर चले गये। शत्रुनाशन दोनों भाई एक ही रथ पर बैठकर भीमसेन की ओर वेग से चले। जैसे मित्र (सूर्य) और वरुण तारकासुर पर आक्रमण करने चले थे वैसे ही वे दोनों भाई भीमसेन पर हमला करने के लिए झपटे। एक रथ पर बैठे हुए आपके पुत्र दुर्मद और दुष्कर्ण भीमसेन को बाणों से घायल करने लगे। अब कुपित भीमसेन ने कर्ण, अश्वत्थामा, दुर्योधन, कृपाचार्य, सोमदत्त, बाह्लीक आदि योद्धाओं के सामने ही इतने ज़ोर से लात मारी कि उनका रथ पृथ्वी के भीतर घुस गया। इसके बाद क्रोध से विह्वल बली भीमसेन ने घूँसे से आपके दोनों शूर पुत्रों को गिराकर रौंद डाला। इस प्रकार दुर्मद और दुष्कर्ण को मारकर भीमसेन सिंह की तरह गरजने लगे। यह देखकर सब सैनिक हाहाकार करने लगे। भीमसेन का कर्म देखकर ४० सब राजा कहने लगे कि अरे यह तो साक्षात् रुद्र ही, भीम का रूप रखकर, धृतराष्ट्र के पुत्रों के प्राण ले रहे हैं। हे भरतश्रेष्ठ! इस तरह कहते हुए सब राजा भाग खड़े हुए। वे इतने डरे और घबराये कि कोई किसी की राह नहीं देखता था। सब के सब मोहित और मूर्च्छित-से होकर तेज़ी से अपने वाहनों को हाँकते हुए भीमसेन के आगे से भागने लगे।

पराक्रमी भीमसेन ने रात्रियुद्ध में इस तरह कौरव-सेना को मथकर छिन्न-भिन्न कर दिया। पाण्डव पक्ष के श्रेष्ठ क्षत्रिय और राजा लोग उनकी प्रशंसा करने लगे। भीमसेन ने युधिष्ठिर के पास जाकर प्रसन्नतापूर्वक उनकी पूजा की। धर्मराज युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव, राजा विराट, द्रुपद और केकय देश के राजकुमार बहुत ही प्रसन्न हुए और बारम्बार भीमसेन की बड़ाई करने लगे। जिस तरह अन्धकासुर के मारे जाने पर देवताओं ने शिव की प्रशंसा की थी उसी तरह सब लोग भीमसेन की बड़ाई करने लगे। हे भरतश्रेष्ठ! तब वरुणपुत्र-तुल्य देवसदृश आपके पुत्र बहुत ही कुपित हो उठे। वे महात्मा आचार्य के साथ आगे बढ़े।

उन्होंने चतुरङ्गिणी सेना के द्वारा भीमसेन को चारों ओर से घेर लिया। उस समय चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा फैल गया। उस महाभयङ्कर समय में महाभयानक युद्ध होने लगा। महात्मा वीरगण गीदड़, भेड़िये, कौए और गिद्ध आदि मांसाहारी जीवों के लिए ४६ आनन्द बढ़ानेवाला अत्यन्त अद्भुत संग्राम करने लगे।

एक सौ छप्पन अध्याय

सात्यकि-सोमदत्त और अश्वत्थामा-घटोत्कच के युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! प्रायोपवेशन की अवस्था में अपने पुत्र भूरिश्रवा को सात्यकि के हाथ से मारे जाते देखकर सोमदत्त बहुत ही कुपित हो उठे। उन्होंने कहा—हे सात्यकि! तुमने महात्मा देवताओं के द्वारा निश्चित श्रेष्ठ क्षत्रिय-धर्म को छोड़कर दस्यु-धर्म का अनुसरण कैसे किया? रण से अलग, अस्त्र-शस्त्र त्यागकर दीन भाव से मृत्यु की इच्छा करके बैठे हुए, भूरिश्रवा को मारकर तुमने बड़ा अधर्म किया। क्षत्रिय-धर्म में निरत विज्ञ पुरुष ऐसे व्यक्ति पर कभी प्रहार नहीं करेगा। वृष्णिवंश में तुम और वीर प्रद्युम्न यही दो महारथी और तेजस्वी योद्धा माने जाते हो। फिर तुमने उस प्रायोपविष्ट भूरिश्रवा के ऊपर प्रहार करने का नृशंस कार्य क्यों किया जिसका हाथ अर्जुन के बाण से कट गया था? हे दुश्चरित्र! उस निष्ठुर कर्म का फल तुमको शीघ्र ही मिलेगा। मैं अभी बाण से तुम्हारा सिर काटकर गिराये देता हूँ। हे यादव! मैं अपने दो पुत्रों की और याग-यज्ञ आदि तथा पुण्य की शपथ खाकर कहता हूँ कि अगर अर्जुन तुम्हारी रक्षा न करें तो इस रात में, अपने को वीर समझनेवाले, तुमको और तुम्हारे भाइयों को अवश्य मार डालूँगा। हे वृष्णिकुलकलङ्क! अगर मेरी यह प्रतिज्ञा मिथ्या हो तो मैं घोर नरक को जाऊँ। महाराज! इस तरह कहकर कुपित महाबली सोमदत्त ने ज़ोर से शङ्ख बजाकर सिंहनाद किया।

तब कमल-नयन, सिंह की सी दाढ़ों से भयानक, दुर्द्धर्ष सात्यकि ने भी क्रोधान्ध होकर १० महाराज सोमदत्त से कहा—हे कौरव! तुमसे या अन्य लोगों से युद्ध करने में मुझे रत्ती भर भी डर नहीं है। अगर तुम सारी सेना से सुरक्षित होकर भी मुझसे युद्ध करोगे तो भी मैं व्यथित नहीं होने का। मैं क्षत्रिय-धर्म पर चलता हूँ। तुम इस तरह असत् पुरुषों के से अनर्थक वाक्यों से युद्ध के समय मुझे डरवा नहीं सकते। हे नराधिप! अगर तुम मेरे साथ युद्ध करना चाहते हो तो निर्दय होकर मुझ पर तीक्ष्ण बाणों से प्रहार करो; मैं भी तुम पर वैसे ही प्रहार करूँगा। मैंने तुम्हारे महाबली पुत्र भूरिश्रवा को और भाई के मारे जाने से दुःखित शल को मारा है और अब तुमको भी अन्य पुत्रों तथा भाइयों सहित मारूँगा। तुम

भीमसेन ने युधिष्ठिर के पास जाकर प्रसन्नता-पूर्वक उनकी पूजा की।—पृ० २५४१

महारथी कौरव हो, इसलिए रण में स्थिर होकर युद्ध और मुझे मारने का यत्न करो। जिन महात्मा में आत्मत्याग, जितेन्द्रियता, पवित्रता, अहिंसा, लोकलज्जा, धैर्य, क्षमा आदि सब गुण सदा बने रहते हैं उन मृदङ्गकेतु महाराज युधिष्ठिर के तेज अथवा कोप से पहले ही तुम मर चुके हो। इस समय कर्ण और शकुनि के साथ तुम अवश्य ही मरोगे। श्रीकृष्ण के चरणों की, याग-यज्ञ आदि की और कुआँ-बावली-बाग आदि की स्थापना के पुण्य की शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं अवश्य कुपित होकर तुमको और तुम्हारे पुत्रों को मारूँगा। हाँ, अगर युद्ध छोड़कर भाग जाओगे तो तुम्हारे प्राण बच जायँगे। राजन्! इस तरह परस्पर कटु वचन कहकर वे दोनों पुरुषश्रेष्ठ वीर क्रोध से लाल आँखें किये हुए बाणवर्षा करने के लिए तैयार हो गये। २०

उस समय कुरुराज दुर्योधन हज़ार रथ और दस हज़ार हाथी लेकर सोमदत्त को घेर-कर उनकी रक्षा करने लगे। अत्यन्त कुपित, शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ, वज्रतुल्य दृढ़ अङ्गोंवाले, युवा, महाबाहु आपके साले शकुनि भी अपने पुत्र, पोते, इन्द्र के समान पराक्रमी भाई और कुछ अधिक एक लाख घुड़सवार सेना साथ लेकर महाधनुर्द्धर सोमदत्त की रक्षा करने लगे। इस प्रकार बली योद्धाओं से सुरक्षित महावीर सोमदत्त सात्यकि के ऊपर तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करने लगे। महाबली धृष्टद्युम्न सात्यकि को बाणवर्षा से पीड़ित देखकर, कुपित हो, बहुत सी सेना साथ लेकर उनकी सहायता करने के लिए बढ़े। उस समय परस्पर प्रहार करती हुई दोनों सेनाओं में वैसा ही कोलाहल होने लगा जैसा कि प्रचण्ड तूफ़ान आने पर समुद्र में होता है। सोमदत्त ने सात्यकि को नव बाण मारे। तब सात्यकि ने भी उनको नव बाण मारे। दृढ़धन्वा सात्यकि के बाणों की गहरी चोट लगने से वीर सोमदत्त मूर्च्छित होकर रथ पर गिर पड़े। मूर्च्छित देखकर उन्हें सारथी जल्दी से रणभूमि से हटा ले गया। सोमदत्त को सात्यकि के विकट प्रहार से मूर्च्छित देखकर पराक्रमी द्रोणाचार्य कुपित होकर, सात्यकि को मार डालने के लिए, बड़े वेग से उनकी ओर चले। युधिष्ठिर आदि पाण्डव कुपित आचार्य को आते देखकर सात्यकि की रक्षा करने के लिए आगे बढ़े। अब उन्होंने सात्यकि को अपने बीच में कर लिया। ३०

महाराज! पहले त्रैलोक्य-विजय की इच्छा रखनेवाले राजा बलि से देवताओं ने जैसा घोर संग्राम किया था वैसा ही दारुण युद्ध आचार्य के साथ पाण्डवों के योद्धा करने लगे। महा-तेजस्वी द्रोणाचार्य बाण-वर्षा से पाण्डव-सेना को छिन्न-भिन्न और युधिष्ठिर को पीड़ित करने लगे। उन्होंने सात्यकि को दस, धृष्टद्युम्न को बीस, भीमसेन को नव, नकुल को पाँच, सहदेव को आठ, शिखण्डी को सौ, मत्स्यराज विराट को आठ, द्रुपद को दस, द्रौपदी के पुत्रों को पाँच-पाँच, युधामन्यु को तीन, उत्तमौजा को छः और अन्यान्य सेनापति वीरों को असंख्य बाण मारे। इस तरह सबको पीड़ित करके वे युधिष्ठिर की ओर वेग से दौड़े। आचार्य के बाणों से घायल आर्तनाद करती हुई पाण्डव-सेना भयभीत होकर भागने लगी।

तब अपनी सेना को आचार्य के बाणों से छिन्न-भिन्न देखकर महापराक्रमी अर्जुन कुछ कुपित हो द्रोणाचार्य की ओर वेग से दौड़े। यह देखकर पाण्डव-सेना फिर उत्साह के साथ युद्ध करने के लिए लौट पड़ी। अब पाण्डवों की सेना के साथ आचार्य का फिर अत्यन्त घोर युद्ध होने लगा। आग जैसे रुई के ढेर को भस्म करे, वैसे ही महावीर द्रोणाचार्य, आपके पुत्रों के साथ, चारों ओर विचरकर शत्रुसेना को चौपट करने लगे। प्रचण्ड सूर्य और प्रज्वलित अग्नि के समान महावीर द्रोणाचार्य मण्डलाकार धनुष घुमाकर लगातार तीक्ष्ण बाणों की वर्षा से शत्रुसेना को पीड़ित कर रहे थे। उनका सामना करने की कौन कहे, कोई उनकी ओर देख भी नहीं सकता था। उस समय समर में बेधड़क जा रहे अपराजित आचार्य के सामने जो कोई आया, उसी का सिर कटकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। महाराज! पाण्डवों की सेना इस तरह आचार्य के बाणों से निहत, पीड़ित और अत्यन्त भय से आकुल होकर अपने रक्षक अर्जुन के सामने ही फिर भागने लगी। यह देखकर महावीर अर्जुन ने कहा—हे श्रीकृष्ण! अब तुम झटपट मेरा रथ द्रोणाचार्य के सामने ले चलो। श्रीकृष्ण ने, अर्जुन के कहने से, सफ़ेद रङ्ग के घोड़ों को आचार्य के रथ के सामने हाँक दिया। भीमसेन ने अर्जुन को आचार्य के रथ की ओर जाते देखा तो अपने सारथी विशोक से कहा—हे सूत! तुम इस समय मुझे आचार्य की सेना के भीतर ले चलो। आज्ञा पाते ही विशोक अर्जुन के रथ के पीछे ही भीमसेन के रथ को ले चला। तब पाञ्चाल, सृञ्जय, मत्स्य, चेदि, करूष, कोशल और केकय देश के वीरगण भी उन दोनों भाइयों को आचार्य की सेना के सामने वेग से जाते देखकर उनके पीछे चले। (४१–५१)

राजन्! अब अत्यन्त भयानक संग्राम होने लगा। महावीर अर्जुन दाहने भाग में और भीमसेन बाँयें भाग में स्थित होकर अपने अनुगामी रथी योद्धाओं के साथ आपकी सेना में घुसे। यह देखकर महाबली धृष्टद्युम्न और सात्यकि भी संग्राम करने के लिए कौरव-सेना के अगले भाग पर आक्रमण करने चले। प्रचण्ड तूफ़ानी हवा के आघात से महासागर के जल में जैसी उथल-पथल मचती है और अत्यन्त घोर शब्द होता है, वैसा ही महाकोलाहल परस्पर प्रहार करती हुई दोनों सेनाओं में होने लगा। उस समय महाप्रतापी वीर अश्वत्थामा सात्यकि को सामने देखकर, भूरिश्रवा के मारे जाने से उत्पन्न, क्रोध से अधीर होकर उनकी ओर वेग से चले। यह देखकर भीमसेन का पुत्र राक्षसराज घटोत्कच लोहे के बने हुए, रीछ के चमड़े से मढ़े हुए, तीस 'नल्व' (४०० हाथ) के लम्बे-चौड़े, यन्त्रसन्नाह आदि से युक्त, आठ पहियों से शोभित, मेघ के समान गम्भीर शब्द करनेवाले, आँतों की मालाओं से भयङ्कर, ख़ून से तर लाल ध्वजा से अलङ्कृत बहुत बड़े रथ पर बैठकर अश्वत्थामा से लड़ने के लिए चला। (५८) उसके साथ शूल, मुद्गर, शिला, वृक्ष आदि हाथ में लिये रौद्ररूप राक्षसों की एक अक्षौहिणी सेना थी। उसके रथ में हाथी या घोड़े नहीं लगे हुए थे, बल्कि घोर पिशाच उसके रथ को खींच

राक्षसराज घटोत्कच लोहे के बने हुए, रीछ के चमड़े से मढ़े हुए, आठ पहियों से शोभित, मेघ के समान गम्भीर शब्द करनेवाले, आँतों की मालाओं से भयङ्कर, खून से तर लाल ध्वजा से अलङ्कृत बहुत बड़े, रथ पर बैठकर अश्वत्थामा से लड़ने के लिए चला ।

रहे थे। उसकी ध्वजा पर एक भारी गिद्ध बैठा हुआ था, जो आँखें निकाले, पैर और पर फैलाये भयानक शब्द कर रहा था। धनुष चढ़ाकर आ रहे, प्रलयकाल में दण्ड हाथ में लिये मृत्यु के समान दुर्द्धर्ष, घटोत्कच को देखकर राजा लोग बहुत ही व्याकुल हो उठे। आपके पुत्र की सेना उस धनुर्द्धर, पर्वतशिखर के समान, भीमरूप, दाढ़ों से कराल उग्र मुखवाले, नुकीले कानों और चौड़ी ठोढ़ीवाले, उठे हुए केशों से भयावने, विरूपनयन, प्रदीप्तमुख और गहरे पेट-वाले, भारी गढ़े के समान मुख-विवरवाले, किरीटधारी, सब प्राणियों को भय-विह्वल बनानेवाले, शत्रुसेना में हलचल डालनेवाले राक्षस घटोत्कच को मुँह फैलाये यम के समान आते देखकर आतङ्क से काँप उठी। हवा के झोंकों से क्षोभ को प्राप्त महानदी गङ्गा के समान कौरव-सेना, डर के मारे, इधर-उधर भागने लगी। घटोत्कच के घोर सिंहनाद से, दहशत के मारे, हाथी मूतने लगे और मनुष्य व्याकुल हो उठे।

इसके उपरान्त राक्षस लोग सन्ध्याकाल में अधिक बलशाली होकर पृथ्वी पर चारों ओर से घोर शिलाएँ पटकने लगे। लोहे के तीक्ष्ण चक्र, भुशुण्डी, शक्ति, प्रास, तोमर, शूल, शतघ्नी और पट्टिश आदि अस्त्र-शस्त्र चारों ओर लगातार बरसने लगे। महाराज! उस भयानक अत्यन्त निष्ठुर संग्राम को देखकर सब राजा लोग, आपके पुत्रगण और कर्ण अत्यन्त व्याकुल और भय-विह्वल होकर चारों ओर भागने लगे। उस समय केवल अस्त्र-शस्त्र के बल से निडर अश्वत्थामा को किसी तरह का क्षोभ नहीं हुआ। वे अपने रथ पर बेखटके बैठकर घटोत्कच से लड़ने लगे। उन्होंने अस्त्रों के प्रभाव से दम भर में राक्षस घटोत्कच की सब मायाओं को नष्ट कर दिया। यह देखकर राक्षसराज घटोत्कच अत्यन्त क्रुद्ध हो उनके ऊपर घोर बाणों की वर्षा करने लगा। क्रुद्ध सर्प जैसे फुफकारते हुए बाँबी में घुसते हैं वैसे ही वे बाण अश्वत्थामा के शरीर को छिन्न-भिन्न करके, खून से तर होकर, पृथ्वी में घुस गये। तब महाप्रतापी फुरतीले अश्वत्थामा ने कुपित होकर घटोत्कच को दस

तीक्ष्ण बाण मारे। अश्वत्थामा के बाणों से मर्मस्थल में पीड़ित घटोत्कच ने उन्हें मार डालने के लिए दोपहर के सूर्य के समान प्रकाशपूर्ण, प्रज्वलित, मणि हीरे आदि से अलङ्कृत, एक लाख आरों से युक्त, छुरे की सी तीक्ष्ण धारावाला एक भयानक चक्र उन पर फेंका। वेग से अपनी ओर आते हुए उस भयङ्कर चक्र को अश्वत्थामा ने फुर्ती के साथ तीक्ष्ण बाण मारकर गिरा दिया। अभागे पुरुष के इरादे की तरह वह चक्र निष्फल होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। अपने चक्र को व्यर्थ होकर गिरते देखकर, सूर्य को राहु जैसे छिपा लेता है वैसे ही, घटोत्कच ने तीक्ष्ण बाणों की वर्षा से वीर अश्वत्थामा के रथ को अदृश्य सा कर दिया।

८० अब अञ्जनगिरि के समान काले घटोत्कच के पुत्र ने अश्वत्थामा को वैसे ही रोका जैसे वेग से आती हुई आँधी को कोई बड़ा पर्वत रोक ले। भीमसेन के पोते और घटोत्कच के पुत्र अञ्जनपर्वा के बाणों की वर्षा से अश्वत्थामा वैसे ही शोभायमान हुए, जैसे बरस रहे मेघ की धाराओं से आवृत सुमेरु पर्वत की शोभा होती है। रुद्र, उपेन्द्र और इन्द्र के समान पराक्रमी अश्वत्थामा यह देखकर अत्यन्त कुपित हो उठे। अब उन्होंने एक बाण से अञ्जनपर्वा के रथ की ध्वजा, तीन बाणों से रथ, एक बाण से धनुष काटकर चार बाणों से चारों घोड़ों और दो बाणों से दोनों सारथियों को मार डाला। महावीर अञ्जनपर्वा इस तरह रथ-हीन होने पर सुवर्ण-बिन्दुशोभित खड्ग लेकर अश्वत्थामा की ओर चला। तब अश्वत्थामा ने फुर्ती के साथ तीक्ष्ण बाण से उसके हाथ में ही उस खड्ग के टुकड़े कर डाले। अब घटोत्कच का पुत्र क्रोध से गदा घुमाता हुआ आगे बढ़ा। उसने वह गदा बड़े वेग से अश्वत्थामा के ऊपर फेंकी। महावीर अश्वत्थामा ने उस गदा को भी बाणों से काट डाला। तब अञ्जनपर्वा एकाएक आकाश में जाकर, कालमेघ की तरह गरजकर, अश्वत्थामा के ऊपर बड़े-बड़े वृक्षों की वर्षा करने लगा। आचार्य के पुत्र ने अत्यन्त कुपित होकर, सूर्य जैसे अपनी किरणों से बादल को बेधते हैं वैसे ही, अपने तीक्ष्ण बाणों से मायावी अञ्जनपर्वा के शरीर को छिन्न-भिन्न करना शुरू किया। तब वह राक्षस आकाश से पृथ्वी पर आकर, अपने सुवर्णमण्डित रथ पर बैठकर, बहुत ऊँचे अञ्जन पर्वत के समान अश्वत्थामा के सामने आया। शिव ने जैसे दुष्ट अन्धक दैत्य को मारा था वैसे ही अश्वत्थामा ने लोहकवचधारी अञ्जनपर्वा को तीक्ष्ण बाणों से मार गिराया।

९० महाराज! इस तरह अपने पुत्र का मारा जाना देखकर वीर घटोत्कच क्रोध से प्रज्वलित हो उठा और वन को भस्म कर रहे दावानल के समान पाण्डव-सेना का संहार करनेवाले महावीर अश्वत्थामा के पास जाकर बोला—हे आचार्य के पुत्र! तुम दम भर यहाँ मेरे सामने ठहर भर जाओ। तुम किसी तरह मेरे हाथ से जीते नहीं बच सकते। कार्त्तिकेय ने जैसे क्रौञ्च पर्वत को विदीर्ण किया था वैसे ही मैं इस समय तुम्हारे शरीर को चीर करके तुम्हें जीता न छोड़ूँगा। घटोत्कच के ये वचन सुनकर अश्वत्थामा कहने लगे—वत्स! हे

अमर-विक्रम घटोत्कच ! जाओ, और लोगों से युद्ध करो, मुझसे न उलझो। भीमसेन के पुत्र होने के कारण तुम मेरे भी पुत्र हो। पुत्र को कदापि पिता से लड़ना या पिता के मन में क्रोध अथवा खेद उत्पन्न करना न चाहिए। हे हिडिम्बा के पुत्र ! तुम पर मैं कुपित नहीं हूँ; किन्तु क्रोध आने पर मनुष्य अपनी हत्या तक कर डालता है, पुत्र-वध की कौन कहे। [इसलिए अगर तुम जीना चाहते हो तो मुझे कुपित न करके और लोगों से जाकर युद्ध करो।]

सञ्जय कहते हैं—तब पुत्र-शोक से पीड़ित घटोत्कच ने लाल-लाल आँखें करके अत्यन्त क्रुद्ध होकर अश्वत्थामा से कहा—हे द्रोण-पुत्र ! मैं क्या नीच पुरुषों की तरह समर से इतना डरता हूँ, जो तुम ऐसी बातें कहकर मुझे धमका रहे हो ? तुम्हारा यह कहना ठीक नहीं है। मैं कौरवों के बहुविस्तृत वंश में भीमसेन के वीर्य से उत्पन्न हुआ हूँ। मैं युद्ध से न हटनेवाले पाण्डवों का पुत्र और बल में रावण के समान राक्षसों का राजा हूँ। हे द्रोण-पुत्र ! दम भर ठहर जाओ, मेरे सामने से तुम जीते नहीं जा सकते। मैं रणभूमि में तुम्हारी युद्ध की इच्छा को दूर कर दूँगा। क्रोध से जिसकी आँखें लाल हो रही हैं ऐसा राक्षस घटोत्कच इतना कहकर, गज-राज पर सिंह की तरह, अश्वत्थामा पर प्रहार करने के लिए झपटा। मेघ जैसे जल की वर्षा १०० करते हैं वैसे ही क्रोधान्ध घटोत्कच, रथ के डण्डे के समान, लम्बे बड़े बाण महारथी अश्वत्थामा के ऊपर बरसाने लगा। वीर अश्वत्थामा ने उन बाणों को अपने पास तक नहीं आने दिया; अपने बाणों से उनके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। उस समय जान पड़ने लगा कि आकाशमार्ग में बाणों का अलग ही संग्राम हो रहा है। अस्त्र-शस्त्रों के आपस में टकराने और रगड़ खाने से चिन-गारियाँ निकलने लगीं, जिनसे जान पड़ा कि आकाश में असंख्य जुगनू चमक रहे हैं।

इस तरह अश्वत्थामा ने घटोत्कच की अस्त्र-माया को मिटा दिया। तब घटोत्कच ने अन्तर्द्धान होकर और माया उत्पन्न की। उसने बड़े-बड़े वृक्षों से युक्त भारी पहाड़ का रूप रख

लिया और वह झरने की धाराओं के समान शूल, प्रास, खड्ग, मुशल आदि अस्त्र-शस्त्र अश्वत्थामा के ऊपर बरसाने लगा। महाबाहु अश्वत्थामा उस अञ्जनराशिसदृश पर्वत और उससे लगातार गिरनेवाले अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा को देखकर तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने हँसकर वज्रास्त्र छोड़ा, जिससे वह भारी पहाड़ चूर-चूर हो गया। अब घटोत्कच इन्द्रधनुष से शोभित काले मेघ का रूप रखकर अश्वत्थामा के ऊपर शिलाओं की घोर वर्षा करने लगा। महावीर अश्वत्थामा ने वायव्य अस्त्र का प्रयोग करके उस मेघ को हटा दिया। वीर अश्वत्थामा ने लाखों बाणों से सब दिशाओं को व्याप्त करके एक लाख रथी योद्धा मार डाले। १०

अब राक्षसेन्द्र घटोत्कच सिंहशार्दूल और मस्त हाथियों के समान पराक्रमी, विकटमुख, विकृतमस्तक और टेढ़ी-मेढ़ी गर्दनवाले, अनेक अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित, कवचधारी, भयानक आकारवाले, क्रोध से निकली हुई लाल-लाल आँखों से भयङ्कर, इन्द्रसदृश महापराक्रमी, युद्धप्रिय, दुर्द्धर्ष, रथ हाथी घोड़े आदि पर सवार राक्षसों की सेना साथ लेकर फिर अश्वत्थामा के सामने आ गया। राजन्! आपके पुत्र दुर्योधन यह देखकर बहुत ही शङ्कित हुए। तब महावीर अश्वत्थामा ने दुर्योधन को विषादग्रस्त व्याकुल देखकर कहा—महाराज! आप धैर्य धारण करके भाइयों और पराक्रमी इन्द्रतुल्य राजाओं सहित यहीं ठहरिए। मैं प्रतिज्ञा करके कहता हूँ कि आपके शत्रुओं को मारूँगा; आप हार नहीं सकते। आप यत्न करके अपनी सेना को ढाढ़स बँधाइए। हे कुरुकुलश्रेष्ठ! तब राजा दुर्योधन ने अश्वत्थामा के ये वचन सुनकर कहा—हे आचार्यनन्दन! तुम्हारा हृदय जो ऐसा उदार है और हम लोगों के प्रति तुमको ऐसी भक्ति और प्रेम है सो कुछ अद्भुत या आश्चर्य की बात नहीं है।

सञ्जय कहते हैं कि राजा दुर्योधन अब शकुनि से कहने लगे—मामाजी! महावीर अर्जुन रण में शोभित होनेवाले एक हज़ार घोड़ों से युक्त रथ साथ लिये हुए युद्ध कर रहे हैं। तुम साठ हज़ार रथी योद्धा साथ लेकर उनसे लड़ने जाओ। कर्ण, वृषसेन, कृपाचार्य, नील, कृतवर्मा, पुरुमित्र, सुतापन, दुःशासन, निकुम्भ, कुण्डभेदी, पुरञ्जय, दृढ़रथ, पताकी, हेमकम्पन, शल्य, आरुणि, इन्द्रसेन, सञ्जय, विजय, जय, कमलाक्ष, परक्राथी, जयवर्मा, सुदर्शन, पुरुमित्र के पुत्रगण, औदीच्यगण और साठ हज़ार पैदल सेना तुम्हारे साथ सहायता के लिए जायगी। मामाजी! इन्द्र ने जैसे असुरों का सत्यानाश किया था वैसे ही तुम भीमसेन, नकुल, सहदेव और युधिष्ठिर को मारो। मेरी जय की आशा तुम्हीं पर निर्भर है। कार्त्तिकेय ने जैसे दानवों को मारा था वैसे ही तुम, अश्वत्थामा के बाणों से घायल और छिन्न-भिन्न, पाण्डवों को मार डालो। १२०

राजन्! दुर्योधन के वचन सुनकर शकुनि, आपके पुत्रों को प्रसन्न और पाण्डवों को चौपट करने के इरादे से, युद्ध के लिए चटपट चल दिये। उस समय, इन्द्र और प्रह्लाद के युद्ध के समान, अश्वत्थामा और घटोत्कच का दारुण संग्राम होने लगा। घटोत्कच ने क्रुद्ध होकर

विष और अग्नि के तुल्य उग्र दस बाण अश्वत्थामा की छाती में ताककर मारे। घटोत्कच के प्रहार से अश्वत्थामा बहुत पीड़ित हुए और आँधी से काँपते हुए पेड़ की तरह विचलित होकर रथ पर ध्वजदण्ड के सहारे बैठ गये। घटोत्कच ने फिर फुर्ती के साथ एक अञ्जलिक बाण से अश्वत्थामा के हाथ के सुवर्णमण्डित दृढ़ धनुष को काट डाला। अश्वत्थामा ने फ़ौरन् दूसरा ३० सुन्दर दृढ़ धनुष लेकर, मेघ जैसे जल बरसाता है वैसे ही, राक्षस-सेना के ऊपर सुवर्णपुङ्खयुक्त तीक्ष्ण शत्रुविनाशन बाण लगातार बरसाना शुरू कर दिया। चौड़ी छाती और लम्बे डील-डौलवाले राक्षस, अश्वत्थामा के बाणों से पीड़ित होकर, सिंह से सताये हुए हाथियों की सी दशा को प्राप्त हुए। जैसे प्रलयकाल में अग्निदेव जीवों को जलाते हैं वैसे ही महाबली अश्वत्थामा कुपित होकर सारथी और हाथी, घोड़े, रथ आदि वाहनों सहित राक्षसों को बाणों से नष्ट करने लगे। पूर्व समय में भगवान् शूलपाणि आकाशमार्ग में त्रिपुरासुर को भस्म करके जैसी शोभा को प्राप्त हुए थे वैसे ही महावीर अश्वत्थामा भी राक्षस-सेना का संहार करके शोभायमान हुए।

अब राक्षसराज घटोत्कच ने क्रोधान्ध होकर अश्वत्थामा को मार डालने के लिए भयानक कर्म करनेवाले राक्षसों की सेना को आज्ञा दी। महाराज! दाँतों की चमक से जिनके मुख-मण्डल जगमगा रहे थे ऐसे, लम्बी जीभें निकाले हुए, विकटमूर्ति भयङ्कर राक्षसगण घटोत्कच की आज्ञा पाते ही क्रोध से लाल-लाल आँखें निकालकर, मुँह फैलाकर, सिंहनाद करके पृथ्वी को कँपाते हुए अश्वत्थामा को मारने के लिए वेग से दौड़ पड़े। वे लोग अश्वत्थामा के सिर पर शक्ति, शतघ्नी, परिघ, वज्र, शूल, पट्टिश, खड्ग, गदा, भिन्दिपाल, मुसल, परश्वध, प्रास, १४० तोमर, कणप, पैने कम्पन, स्थूल, भुशुण्डी, अश्मगदा, लोहमय स्थूणा, शत्रुओं को चूर्ण करने-वाले महाघोर मुद्गर आदि अनेक प्रकार के शस्त्रों की वर्षा करने लगे। महाराज! आपके पक्ष के योद्धा लोग यह देखकर बहुत ही व्यथित और शङ्कित हो उठे; किन्तु महावीर अश्वत्थामा तनिक भी नहीं घबराये। वे तीक्ष्ण वज्रतुल्य बाणों से उन अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा को व्यर्थ करके तुरन्त ही दिव्य मन्त्र से अभिमन्त्रित सुवर्णपुङ्ख बाणों के प्रहार से राक्षस-सेना को घायल और नष्ट करने लगे। विशाल वक्षःस्थलवाले राक्षस लोग उनके बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर, सिंह ने जिन पर आक्रमण किया हो उन हाथियों की तरह, व्याकुल हो उठे और फिर कुपित होकर उन्हें मार डालने के लिए दौड़े। तब दिव्य अस्त्रों के ज्ञाता अश्वत्थामा ने अत्यन्त दुष्कर विचित्र पराक्रम प्रकट करके अकेले ही दम भर में घटोत्कच के सामने प्रज्वलित बाणों से उस राक्षस-सेना को नष्ट कर दिया और सब प्राणियों का संहार कर चुके प्रलयकाल के संवर्तक अग्नि ५० की तरह वे प्रज्वलित हो उठे। उस समय राक्षसश्रेष्ठ घटोत्कच को छोड़कर और कोई भी पाण्डवपक्ष का राजा या योद्धा अश्वत्थामा को नज़र भरकर नहीं देख सकता था। पराक्रमी घटोत्कच क्रोध से लाल-लाल आँखें निकालकर, विषैले नागतुल्य बाणों से पाण्डव-सेना को भस्म

कर रहे, अश्वत्थामा की ओर देखने लगा। उसने हाथ पर हाथ पटककर, दाँतों से ओठ चबा-कर, अपने सारथी से कहा—हे सूत! तुम तुरन्त अश्वत्थामा के पास मेरा रथ ले चलो। सारथी ने आज्ञा पाते ही जयपताका-युक्त प्रकाशमान घोररूप राक्षसेन्द्र का रथ हाँककर अश्व-

त्थामा के पास पहुँचा दिया। अब राक्षस और अश्वत्थामा का घोर युद्ध होने लगा। पराक्रमी राक्षस ने घोर सिंहनाद करके अश्वत्थामा के ऊपर आठ घण्टों से शोभित देवनिर्मित महा-घोर वज्र घुमाकर फेंका। अश्वत्थामा ने चटपट रथ पर धनुष रखकर, उछलकर, उस वज्र को हाथों से रोक लिया और उलटे घटोत्कच के ही ऊपर उसका प्रहार किया। राक्षस उसी दम रथ से कूदकर अलग हो गया। वह शङ्करनिर्मित वज्र राक्षस के घोड़े, सारथी और ध्वजा सहित रथ को भस्म करके पृथ्वी में समा गया। यह देखकर सब लोग अश्वत्थामा की बहुत-बहुत बड़ाई करने लगे। तब पराक्रमी

१६० घटोत्कच धृष्टद्युम्न के रथ पर चला गया। इन्द्रधनुष के समान दृढ़ धनुष लेकर वह फिर अश्व-त्थामा के ऊपर तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करने लगा। महावीर धृष्टद्युम्न भी बेखटके होकर अश्व-त्थामा की छाती में ताक-ताककर विषैले सर्पसदृश सुवर्णपुङ्खयुक्त बाण मारने लगे। महावीर अश्वत्थामा उन दोनों को असंख्य नाराच बाण मारने लगे। राक्षस और धृष्टद्युम्न ने अग्नि-तुल्य उग्र बाणों से अश्वत्थामा के सब नाराच बाण काट डाले।

महाराज! इस तरह उन दोनों वीरों का अत्यन्त घोर, और अश्वत्थामा तथा अन्य वीरों के लिए उत्साह और आनन्द को बढ़ानेवाला, संग्राम होने लगा। तब महाबली भीमसेन हज़ार रथ, तीन सौ हाथी और छः हज़ार घोड़े लेकर उस स्थान में आये। महापराक्रमी अश्वत्थामा उस समय घटोत्कच और भाइयों सहित धृष्टद्युम्न से युद्ध करने लगे। उन्होंने वहाँ पर ऐसा अद्भुत पराक्रम दिखलाया कि पृथ्वी पर और कोई योद्धा शायद वैसा पराक्रम न दिखला सकता। उन्होंने पल भर में महावीर भीमसेन, घटोत्कच, धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव, धर्मपुत्र

युधिष्ठिर, अर्जुन और केशव के सामने ही उस असंख्य हाथियों, रथों, सारथियों और घोड़ों से परिपूर्ण राक्षसों की एक अक्षौहिणी सेना को मार डाला। अश्वत्थामा के भयङ्कर नाराच बाणों से घायल और विदीर्ण होकर बड़े-बड़े हाथी, शिखर सहित पहाड़ों की तरह, पृथ्वी पर गिरने लगे। कटी हुई हाथियों की सूँड़ें चारों ओर रणभूमि में लोट रही थीं, जिन्हें देखने से जान पड़ता था कि भयानक साँप घूम रहे हैं। सुनहरी डण्डी के सफ़ेद छत्र कट-कटकर गिरने से जान पड़ने लगा कि प्रलयकाल में आकाशमण्डल चन्द्रमा, सूर्य और ग्रह आदि से परिपूर्ण हो रहा है। उस समय अश्वत्थामा के बाणों की चोट खाकर असंख्य हाथी, घोड़े, मनुष्य मरने से समर-भूमि में कायरों के मन में भय उत्पन्न करनेवाली रक्त की नदी बह चली। बड़ो-बड़ो ध्वजाएँ मेंढक-सी, नगाड़े बड़े-बड़े कच्छप-से, सफ़ेद छत्र हंसपंक्ति-से, चँवर फेनपुञ्ज-से, कङ्क और गिद्ध पक्षी बड़े-बड़े ग्राह-से, अनेकों शस्त्र मछली-से, बड़े-बड़े हाथी चट्टान-से, मरे हुए घोड़े मगर-से, रथ तटभूमि-से, पताकाएँ रुचिर वृक्ष-सी, बाण छोटी मछली-से, प्रास शक्ति-ऋष्टि आदि शस्त्र डुण्डुभ पक्षो-से, कबन्ध डोंगी-से, केश सेवार और घास-से और योद्धाओं का आर्त्तनाद उसका गर्जन-सा प्रतीत होता था। उस महारौद्र नदी में मांस और मज्जा की भारी कीचड़ हो रही थी। वह महाघोर नदी यमराज्यरूपी महासागर से मिलने जा रही थी। ७०

राजन्! वीर अश्वत्थामा इस तरह राक्षस-सेना का नाश करके फिर तीक्ष्ण बाणों के प्रहार से घटोत्कच को पीड़ित करने लगे। वे अत्यन्त कुपित होकर भीमसेन और धृष्टद्युम्न को भी पोड़ा पहुँचाने लगे। अश्वत्थामा ने पाण्डवों को नाराच बाणों से घायल करके द्रुपद के पुत्र सुरथ को मार डाला। इसके बाद द्रुपद के पुत्र शत्रुञ्जय, बलानीक, जयाश्व, जयानीक और राजा श्रुताह्व को मार गिराया। फिर घोर सिंहनाद करके सुवर्णपुङ्खयुक्त अन्य तीन तीक्ष्ण बाणों से हेममाली, पृषध्र और चन्द्रसेन नाम के तीन वीरों को यमपुर भेज दिया। अब दस बाणों से राजा कुन्तिभोज के दस पुत्रों के प्राण हर लिये। महापराक्रमी अश्वत्थामा ने अत्यन्त कुपित होकर धनुष पर एक यमदण्डतुल्य उग्र और सीधा जानेवाला बाण चढ़ाकर कान तक धनुष की डोरी खींची और वह बाण घटोत्कच को ताककर मारा। वह बाण धनुष से छूटते ही घटोत्कच के हृदय को चीरता हुआ पुङ्ख सहित पृथ्वी में घुस गया। महारथी धृष्टद्युम्न ने घटो-त्कच को गिरते देखकर समझा कि वह मर गया। तब वे व्याकुल होकर अश्वत्थामा के आगे से अपना रथ हटाकर भाग खड़े हुए। यह देखकर पाण्डव-सेना भी संग्राम छोड़कर भागने लगी। महाराज! इस तरह युधिष्ठिर के योद्धाओं को परास्त कर और शत्रुसेना को भगाकर महाबली अश्वत्थामा शेर की तरह गरजने लगे। आपके पुत्र और अन्य सब युद्ध देखने-वाले लोग उनकी प्रशंसा करने लगे। सैकड़ों बाणों से जिनके शरीर कट-फट गये हैं ऐसे मरे और अधमरे पड़े हुए राक्षसों के पर्वतशिखर-से शरीरों से वह रणभूमि चारों ओर १८०

अत्यन्त दुर्गम और भयानक हो उठी। राजन्! उस समय सिद्ध, गन्धर्व, पिशाच, नाग, सुपर्ण, पितृगण, पक्षी, राक्षस, भूतगण, अप्सराएँ, देवता और आपके पुत्र तथा अन्य वीर लोग
१९० महारथी अश्वत्थामा की बार-बार प्रशंसा करने लगे।

एक सौ सत्तावन अध्याय

वाह्लीक, दुर्योधन के दस भाई और शकुनि के पाँच भाई आदि योद्धाओं का मारा जाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! तब धर्मराज युधिष्ठिर, भीमसेन, धृष्टद्युम्न और सात्यकि ने अश्वत्थामा के प्रहार से द्रुपद के पुत्रों, कुन्तिभोज के बेटों और हज़ारों राक्षसों की मृत्यु देखकर यत्नपूर्वक युद्ध करने का ही निश्चय कर लिया। उस समय फिर विजय की इच्छा से लड़नेवाले कौरवों और पाण्डवों में घोर संग्राम होने लगा। उधर महावीर सोमदत्त ने सात्यकि को फिर युद्ध करने के लिए उद्यत देखकर, कुपित होकर, उनके ऊपर असंख्य बाण बरसाना शुरू किया। उनके बाणों में सात्यकि और उनका रथ छिप सा गया। तब पराक्रमी भीमसेन सात्यकि की सहायता करने लगे। उन्होंने सोमदत्त को दस तीक्ष्ण बाण मारे। महारथी वीर सोमदत्त ने भी भीमसेन को सौ बाण मारे। तब कुपित सात्यकि ने पुत्रशोक से पीड़ित, बूढ़े, बूढ़ों के योग्य गुणों से युक्त, नहुष के पुत्र ययाति के समान प्रतापी सोमदत्त को दस तीक्ष्ण, वज्रतुल्य चोट पहुँचानेवाले, बाण मारे। फिर एक शक्ति मारकर और सात बाण मारे। उधर भीमसेन ने भी सात्यकि की सहायता करने के लिए एक लोहे का भारी बेलन सोमदत्त के सिर पर
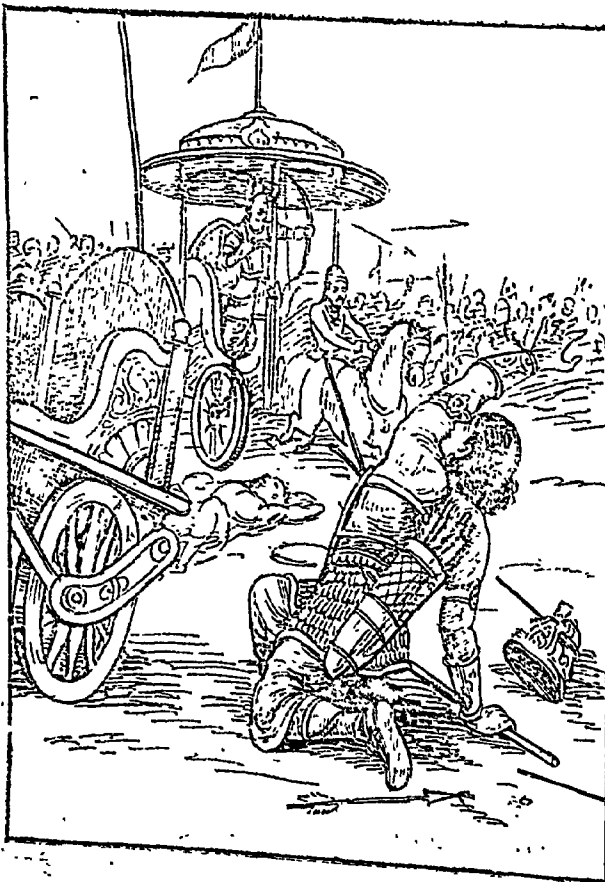
मारा। सात्यकि ने एक अग्नितुल्य उग्र और तीक्ष्ण बाण सोमदत्त की छाती में फिर मारा।
१० वह घोर बेलन और उग्र बाण दोनों एक साथ ही सोमदत्त के शरीर में लगे और वे मूर्च्छित

होकर गिर पड़े। अपने पुत्र की यह दशा देखकर बाह्लीक अत्यन्त कुपित हो, प्रलयकाल के मेघ के समान, बाणवर्षा करते हुए सात्यकि की ओर वेग से चले। तब भीमसेन ने, सात्यकि की सहायता करने के लिए, वृद्ध बाह्लीक को नव विकट बाण मारे। उन्होंने अत्यन्त क्रुद्ध होकर भीमसेन की छाती में, इन्द्र जैसे वज्रप्रहार करें वैसे ही, एक तीव्र शक्ति मारी। उस शक्ति की चोट से भीमसेन काँप उठे और मूर्च्छित हो गये। दम भर में होश आने पर भीमसेन ने बड़े वेग से एक भारी गदा बाह्लीक के सिर पर मारी। उस गदा ने बाह्लीक के सिर को चूर-चूर कर दिया। वे मरकर, वज्र से फटे हुए पहाड़ की तरह, पृथ्वी पर गिर पड़े।

महाराज! इस तरह बूढ़े वीर बाह्लीक के मरने पर रामचन्द्र के तुल्य पराक्रमी आपके दस पुत्र नागदत्त, दृढ़रथ, महाबाहु, अयोभुज, दृढ़, सुहस्त, विरजा, प्रमाथी, उग्र और अनुयायी भीमसेन के सामने आकर उन्हें प्रहारों से पीड़ित करने लगे। उन्हें देखकर भीमसेन अत्यन्त कुपित हो उठे। उन्होंने दस उग्र बाण लेकर, एक-एक बाण मर्मस्थल में मारकर, दसों को यम-पुर भेज दिया। आँधी से टूटकर पहाड़ पर से गिरनेवाले वृक्षों की तरह वे दसों राजकुमार मरकर रथों से नीचे गिर पड़े। इस तरह दस नाराच बाणों से आपके पुत्रों को मारकर परा- २० क्रमी भीमसेन कर्ण के प्रिय पुत्र वृषसेन को बाण-वर्षा से व्याकुल करने लगे। तब कर्ण के भाई वृकरथ भीमसेन को नाराच बाण मारने लगे। बली भीमसेन उन पर भी घोर प्रहार करते हुए आगे बढ़े। इसके बाद भीमसेन ने आपके सात महारथी सालों को मारकर पराक्रमी महारथी शतचन्द्र को नाराच बाणों के प्रहार से मार डाला। शतचन्द्र के वध को न सह सकने के कारण, अत्यन्त कुपित होकर, शकुनि के भाई पाँच महारथी—गवाक्ष, शरभ, विभु, सुभग और भानुदत्त—वेग से भीमसेन के सामने आकर उन पर तीक्ष्ण नाराच बाण बरसाने लगे। जल की वर्षा से न डिगनेवाले पहाड़ की तरह उनके बाणप्रहार से व्यथित न होनेवाले पराक्रमी भीमसेन ने पाँच ही बाणों से उन पाँचों अतिरथी वीरों को मार डाला। उन पाँचों भाइयों को मरते देखकर अन्यान्य राजा लोग डर के मारे भागने लगे।

राजन्! इसी समय धर्मराज युधिष्ठिर भी अत्यन्त क्रुद्ध हो उठे। उन्होंने द्रोणाचार्य तथा कौरवपक्ष के वीर योद्धाओं के सामने ही आपके पक्ष के अम्बष्ठ, मालव, त्रिगर्त, शिबि, अभीषाह, शूरसेन, बाह्लीक, वसाति, यौधेय और मद्र देश के वीरों की सेना को असंख्य बाणों से नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। उनके रक्त और मांस से पृथ्वी में कीचड़ सी हो गई। उस समय युधिष्ठिर के ३० रथ के सामने केवल "मारो, पकड़ लाओ, खींच लो, काट डालो, बाणों से वेध डालो" इत्यादि शब्द सुनाई पड़ रहे थे और घोर कोलाहल हो रहा था। युधिष्ठिर को कौरव-सेना का संहार करते और उसे भगाते देखकर महारथी द्रोणाचार्य, दुर्योधन के कहने से, आगे बढ़े और युधिष्ठिर को बाण-वर्षा से पीड़ित करने लगे। फिर उन्होंने कुपित होकर युधिष्ठिर के ऊपर वायव्य अस्त्र

का प्रयोग किया। धर्मराज ने अपने अस्त्र से चटपट उस अस्त्र को व्यर्थ कर दिया। महाराज! इस प्रकार वायव्य अस्त्र निष्फल होने पर द्रोणाचार्य अत्यन्त कुपित हो उठे। उन्होंने युधिष्ठिर को मारने की इच्छा से लगातार क्रमशः वारुण, याम्य, आग्नेय, त्वाष्ट्र और सावित्र अस्त्र का प्रयोग किया। किन्तु धर्मराज ने निर्भय भाव से अपने अस्त्रों से द्रोणाचार्य के सब अस्त्रों को निष्फल कर दिया। तब दुर्योधन के हितैषी आचार्य ने धर्मराज को मारने और अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए प्रजापति और इन्द्र के अमोघ भयङ्कर अस्त्र प्रकट किये। गज और सिंह के समान पराक्रमी, चौड़ी छातीवाले, विशाल लाल नेत्रोंवाले, महातेजस्वी युधिष्ठिर ने भी माहेन्द्र अस्त्र का प्रयोग करके द्रोणाचार्य के अस्त्रों को शान्त कर दिया। महाराज! इस तरह सब अस्त्रों के वारम्वार व्यर्थ होने पर महावीर द्रोणाचार्य क्रोध के मारे अधीर हो उठे। उन्होंने युधिष्ठिर के नाश के लिए ब्रह्मास्त्र का सन्धान किया। राजन्! उस ब्रह्मास्त्र के प्रभाव से रणभूमि में घना अँधेरा छा गया।
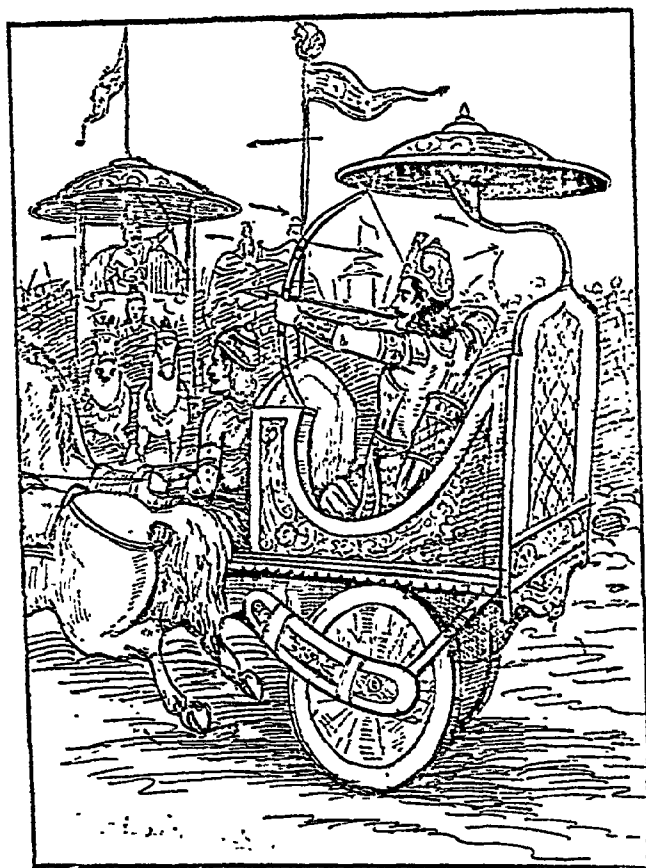
४० उस समय हम लोगों को कुछ भी नहीं सूझता था। योद्धा लोग डर गये। तब युधिष्ठिर ने भी ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया और उसके प्रभाव से द्रोणाचार्य के ब्रह्मास्त्र को शान्त कर दिया। यह देखकर आपके प्रधान-प्रधान योद्धा लोग रणनिपुण, धनुर्द्धर वीरों में श्रेष्ठ, द्रोणाचार्य और युधिष्ठिर की वारम्वार प्रशंसा करने लगे।

इसके वाद युधिष्ठिर को छोड़कर द्रोणाचार्य क्रोध से लाल नेत्र किये हुए दूसरी ओर झुके और वायव्य अस्त्र से राजा द्रुपद की सेना को पीड़ित करने लगे। पाञ्चालसेना के योद्धा लोग द्रोणाचार्य के वाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर, महारथी अर्जुन और वली भीमसेन के सामने ही, धीरज छोड़कर भाग खड़े हुए। तव अर्जुन और भीम एकाएक आचार्य की ओर लौट पड़े और असंख्य रथ साथ में लेकर शत्रुदल के सामने आ गये। अर्जुन दाहनी ओर से और भीमसेन वाईं ओर से शत्रुसेना पर आक्रमण करके वाण वरसाने और आचार्य को पीड़ित करने

लगे। महातेजस्वी पराक्रमी केकय, मत्स्य, सृञ्जय, पाञ्चाल और यादवगण भी, अर्जुन और भीमसेन के साथ, शत्रुओं पर वेग से आक्रमण करने लगे। राजन्! इस प्रकार उस अन्धकारपूर्ण दारुण रण में निद्रा से व्याकुल कौरव-सेना के योद्धाओं को अर्जुन के बाण विदीर्ण और प्राणहीन करने लगे। महावीर द्रोणाचार्य और आपके पुत्र राजा दुर्योधन किसी तरह भीमसेन और अर्जुन को नहीं रोक सके। ४८

एक सौ अट्ठावन अध्याय

कर्ण और कृपाचार्य्य का विवाद

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! दुर्योधन पाण्डव-सेना को बहुत ज़ोर पकड़ते देखकर उसके पराक्रम को अत्यन्त असह्य समझ कर्ण से कहने लगे—हे वीर कर्ण, हे मित्रवत्सल! यही समय मित्र के कर्तव्य को कर दिखाने का है। इसलिए तुम हमारे पक्ष के योद्धाओं की रक्षा करो। फुफकार रहे कुपित साँप के समान भयङ्कर महारथी पाञ्चाल, केकय, मत्स्य और पाण्डवों ने हमारी सेना को घेर लिया है। वे हमारी सेना को काट रहे हैं। वह देखो, इन्द्र के समान पराक्रमी विजयी पाञ्चालगण और पाण्डव प्रसन्नतापूर्वक सिंहनाद कर रहे हैं।

महावीर कर्ण ने दुर्योधन के वचन सुनकर कहा—महाराज! तुम धीरज धरो। आज अगर स्वयं इन्द्र आकर अर्जुन की रक्षा करें तो उन्हें भी परास्त करके मैं अर्जुन को मारूँगा। मैं तुमसे प्रतिज्ञा करता हूँ कि आज तुम्हारा प्रिय करने के लिए इन पाञ्चालों और पाण्डवों को मारूँगा और शङ्कर के पुत्र कार्त्तिकेय ने जैसे असुरविनाश करके इन्द्र को विजयदान किया था, वैसे ही तुमको विजयी बनाऊँगा। हे भरतश्रेष्ठ! कुन्ती के पुत्रों में अर्जुन ही सबसे अधिक बलवान् हैं, अतएव इन्द्र की दी हुई वह अमोघ शक्ति मैं अर्जुन के ऊपर ही चलाऊँगा; क्योंकि महाधनुर्द्धर अर्जुन के मारे जाने पर उनके सब भाई हार मानकर तुम्हारे अधीन हो जायँगे अथवा फिर पहले की तरह वन को चले जायँगे। महाराज! मेरे जीते जी तुम तनिक भी खेद न करो। मैं आज अवश्य ही पाण्डवों के साथ आये हुए पाञ्चाल, केकय और वृष्णिवंश के यादवों को हराकर, रणभूमि में बाणों से खण्ड-खण्ड करके, यह सम्पूर्ण पृथ्वी तुमको दूँगा। ११

सञ्जय कहते हैं कि राजन्! महायोद्धा कर्ण के यों कहने पर महात्मा कृपाचार्य ने मुसकाकर कर्ण से कहा—हे सूतपुत्र! अगर तुम्हारे कहने से ही कार्य सिद्ध हो सकता हो तो फिर क्या कहना है! तुम जैसे सहायक को पाकर राजा दुर्योधन सनाथ हैं। दुर्योधन के सामने तो तुम खूब बढ़-बढ़कर बातें करते हो, परन्तु कार्य के समय उसके अनुसार फल या तुम्हारा कुछ पराक्रम नहीं देख पड़ता। हे कर्ण! रणभूमि में कई बार अर्जुन से तुम्हारा सामना हो चुका

है, परन्तु कभी तुम विजयी नहीं हुए। पाण्डवों ने सर्वत्र तुमको जीता है। देखो, जब गन्धर्व-गण दुर्योधन को वन में पकड़े लिये जा रहे थे तब सब कौरव-सेना तो लड़ती रही, एक तुम्हीं सबके आगे भाग खड़े हुए। विराट-नगर में जब संग्राम हुआ तब भी अकेले अर्जुन ने सारी कौरव-सेना को और भाइयों सहित तुमको हरा दिया। हे कर्ण! जब अकेले असहाय अर्जुन के सामने तुम नहीं ठहर सके तब श्रीकृष्ण सहित सब पाण्डवों को जीतने का उत्साह कैसे कर रहे हो? कर्ण! तुम इतनी आत्मश्लाघा क्यों करते हो? चुपचाप युद्ध करो। सत्पुरुषों का व्रत यही है कि वे मुँह से कुछ न कहकर कार्य से अपना पराक्रम प्रकट करते हैं। हे सूतपुत्र! तुम शरद् ऋतु के ख़ाली मेघ की तरह वृथा गरज रहे हो, इसका फल कुछ नहीं देख पड़ता। किन्तु राजा दुर्योधन की समझ में यह नहीं आता। हे कर्ण! मैं सच कहता हूँ, जब तक अर्जुन का सामना नहीं होता तब तक ख़ूब गरज लो। अर्जुन जब तुम्हारे निकट देख पड़ेंगे तब यह गरजना दुर्लभ हो जायगा। जब तक अर्जुन के वज्र-से बाण तुम्हारे शरीर में नहीं लगते तब तक गरज लो। अर्जुन के

२०

बाण जब शरीर में घुसेंगे तब यह तुम्हारा गर्जन दुर्लभ हो जायगा। क्षत्रिय लोग बाहुओं के शूर होते हैं और ब्राह्मण लोग बातों के शूर होते हैं। अर्जुन धनुष के द्वारा वीरता दिखाते हैं और तुम कर्ण, मनोरथों की कल्पना में ही सारी शूरता दिखा देते हो। जिन अर्जुन ने समर में साक्षात् शङ्कर को अपने बल-वीर्य से सन्तुष्ट कर दिया है उनका सामना करनेवाला, उनको मारनेवाला, कौन है?

महाराज! कृपाचार्य ने ऐसे वचन कहकर कर्ण को अत्यन्त कुपित कर दिया। तब धनुर्द्धरश्रेष्ठ कर्ण ने कहा—कृपाचार्य! वर्षाकाल के बादलों की तरह शूर सदा गरजते हैं और उपजाऊ भूमि में बोये गये बीज की तरह शीघ्र ही फल भी देते हैं। युद्ध में भारी भार उठानेवाले शूरों का अपने पराक्रम का वर्णन करना मेरी समझ में बुरा कार्य नहीं है। जो व्यक्ति मन में

जिस कार्य को करने का निश्चय करता है, उस कार्य के करने में दैव उसकी सहायता करता ही है। मैं जिस कार्य को करने की ठान लेता हूँ उसे पूरा कर दिखाता हूँ। दृढ़ निश्चय ही मेरा साथी है। मैं अगर कृष्ण सहित पाण्डवों को मारने का निश्चय करके गरजता हूँ तो हे ब्राह्मण, इससे तुम्हारी क्या हानि होती है? जल-भरे बादल की तरह शूर पुरुष वृथा नहीं गरजते। समझदार योद्धा लोग अपनी शक्ति को जानकर ही गरजते हैं। सो आज मैं रण में विजय के लिए यत्न करनेवाले कृष्ण और अर्जुन को जीतने का उत्साह रखता हूँ, और इसी से वैसी बात कहकर गरज रहा हूँ। हे विप्र! तुम मेरे इस गरजने का फल देखो। मैं आज कृष्ण और यादवों सहित पाण्डवों को युद्ध में मारकर दुर्योधन को निष्कण्टक राज्य अर्पण करूँगा। ३०

कृपाचार्य ने कहा—हे कर्ण! मैं तुम्हारे इन मनोरथ के प्रलापों को नहीं मानता। तुम सदा अर्जुन, श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर को तुच्छ बताकर उनकी निन्दा किया करते हो। किन्तु याद रक्खो, जहाँ देवता, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस आदि सब कवचधारी योद्धाओं से भी न जीते जा सकनेवाले रणनिपुण अर्जुन और श्रीकृष्ण हैं उस पक्ष की जय सर्वथा निश्चित है। धर्मपुत्र युधिष्ठिर स्वयं ब्राह्मण-भक्त, सत्यवादी, जितेन्द्रिय, गुरुजन देवता आदि की पूजा करनेवाले, नित्य धर्मनिष्ठ, विशेष रूप से अस्त्रविद्या में निपुण, धीर और कृतज्ञ हैं और उनके भाई भी बली, सब अस्त्रों में अभ्यास रखनेवाले, बुद्धिमान्, धर्मात्मा, यशस्वी, गुरुजन के अनुगामी और बहुत बड़े-बड़े काम करनेवाले हैं। उनके सम्बन्धी धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, दुर्मुख के पुत्र जनमेजय, चन्द्रसेन, रुद्रसेन,

कीर्तिधर्मा, ध्रुव, धर, वसुचन्द्र, दामचन्द्र, सिंहचन्द्र, सुतेजन, द्रुपद के पुत्र, अस्त्रों के ज्ञाता राजा द्रुपद, मत्स्यराज विराट और उनके भाई शतानीक, सूर्यदत्त, श्रुतानीक, श्रुतध्वज, बलानीक, जयानीक, जयाश्व, रथवाहन, चन्द्रोदय और समरथ आदि सब योद्धा इन्द्र के समान पराक्रमी, अनुरक्त और प्रहार करने में निपुण हैं। पाण्डवों की ओर से नकुल, सहदेव, द्रौपदी के बेटे और ४०

राक्षसेन्द्र घटोत्कच आदि योद्धा लड़ रहे हैं। इसलिए पाण्डवों की हार या विनाश असम्भव है। ये सब वीर और दल-बल सहित अन्य राजा लोग पाण्डवों के सहायक हैं। सबसे बढ़-कर पराक्रमी भीमसेन और अर्जुन हैं, जो अस्त्रों के प्रभाव से क्षण भर में यक्ष, राक्षस, भूत, नाग, हाथी आदि से परिपूर्ण जगत् को नष्ट कर सकते हैं। स्वयं युधिष्ठिर ही घोर क्रोध की दृष्टि से देखकर सारी पृथ्वी को भस्म कर सकते हैं। अपरिमित बलवाले अपराजित श्रीकृष्ण भी कवच धारण किये पाण्डवों की सहायता कर रहे हैं। हे कर्ण! तुम ऐसे अजेय शत्रुओं को जीतने की हिम्मत कैसे कर रहे हो? तुम यह बड़ा अन्याय करते हो। तुम्हारा यह मनोरथ सब तरह से अनुचित है, जो तुम श्रीकृष्ण सहित पाण्डवों को समर में जीतना चाहते हो।

सञ्जय कहते हैं कि राधा के पुत्र कर्ण, गुरु कृपाचार्य के ये वचन सुनकर, उनसे हँसकर कहने लगे—ब्रह्मन्! तुमने पाण्डवों के सम्बन्ध में जो कुछ कहा, सो सब ठीक है। तुम्हारे कहे हुए तथा और भी बहुत से गुण पाण्डवों में हैं और इन्द्र सहित सब देवता, दैत्य, यक्ष, गन्धर्व, पिशाच, नाग, राक्षस आदि मिलकर भी रण में उनको नहीं जीत सकते; तथापि मैं

५१ इन्द्र की दी हुई अमोघ शक्ति से पाण्डवों को जीत लूँगा। हे द्विज! इन्द्र ने मुझे यह अमोघ शक्ति दी है, इससे मैं युद्ध में अर्जुन को मार डालूँगा। अर्जुन के मरने पर उनके भाई, बिना उनके, कभी राज्य नहीं कर सकेंगे। वे सब, अर्जुन के वियोग में, शोक से प्राण दे देंगे। उनके यों मर जाने पर यह सारी पृथ्वी सहज ही दुर्योधन के अधीन हो रहेगी। हे गौतम! इस संसार में सुनीति और यत्न से सब कार्य सिद्ध होते हैं। इसी से मैं गरजता हूँ। तुम ब्राह्मण, वृद्ध, युद्ध करने में अशक्त और पाण्डवों से स्नेह रखनेवाले हो। इसी से मोहवश मेरा अपमान करते हो। किन्तु हे द्विज! अगर फिर तुम मुझे अप्रिय कटु वचन सुनाओगे तो मैं तुम्हारी दुर्मति का दण्ड तुमको अवश्य दूँगा, फ़ौरन तलवार निकालकर तुम्हारी जीभ काट लूँगा। हे दुर्मति ब्राह्मण! तुम कौरव-सेना को डराते और उत्साहहीन करते हुए पाण्डवों की बड़ाई कर रहे हो। इस बारे में मैं जो ठीक बात कहता हूँ सो सुनो। कौरवपक्ष के योद्धा ऐसे-वैसे नहीं हैं। कुरुराज दुर्योधन, द्रोणाचार्य, शकुनि, दुर्मुख, जय, दुःशासन, वृषसेन, शल्य, सोम-दत्त, भूरि, अश्वत्थामा, विविंशति और स्वयं तुम, ये युद्धनिपुण योद्धा जहाँ कवच पहन करके लड़ने को खड़े हों वहाँ इन्द्र के बराबर बल रखनेवाला भी शत्रु कोई मनुष्य इन्हें सहज में नहीं

६१ जीत सकता। ये सब वीर शूर, अस्त्रनिपुण, बली, स्वर्गलाभ की इच्छा से लड़नेवाले, धर्मज्ञ और युद्ध-विशारद हैं और युद्ध में देवताओं को भी मार सकते हैं। ये सब वीर पाण्डवों को मारने और कौरवेन्द्र को विजय दिलाने के लिए कवच पहन करके युद्धभूमि में स्थित हैं। तथापि मेरी राय यह है कि बहुत बलवान् योद्धाओं के लिए भी विजय की प्राप्ति दैव के अधीन है। इसी से, देखो, महात्मा महाबाहु अपराजित भीष्म पितामह शरशय्या पर पड़े हुए हैं और महाबल-

शाली देवताओं से भी न हारनेवाले महावीर विकर्ण, चित्रसेन, वाह्लीक, जयद्रथ, भूरिश्रवा, जय, जलसन्ध, सुदक्षिण, श्रेष्ठ रथी शल, पराक्रमी भगदत्त तथा और अनेक योद्धा राजा लोग पाण्डवों के हाथ से मारे गये हैं। हे पुरुषाधम! इसे दैव की प्रतिकूलता के सिवा और क्या मानते हो? हे द्विज! दुर्योधन के शत्रु जिन पाण्डवों की तुम इतनी स्तुति कर रहे हो उनकी ओर के भी तो सैकड़ों-हज़ारों शूर मारे गये हैं और कौरवों के साथ ही उनकी सेना भी दिन-दिन कम होती जा रही है। मुझे तो इसमें पाण्डवों का कुछ प्रभाव नहीं देख पड़ता जिसके कारण, हे द्विजाधम! तुम उनको नित्य हम लोगों से बहुत बली समझते हो। मैं दुर्योधन के हित के लिए यथाशक्ति पाण्डवों से युद्ध करने का यत्न करता हूँ, किन्तु जय की प्राप्ति दैव के हाथ है। ७०

एक सौ उनसठ अध्याय

अश्वत्थामा का कर्ण पर बिगड़ना, दुर्योधन और कृपाचार्य का उन्हें समझाना। कर्ण का हारना

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! कर्ण को मामा कृपाचार्य से कठोर बातें करते देखकर महावीर अश्वत्थामा क्रोध से प्रज्वलित हो उठे। सिंह जैसे मस्त हाथी पर झपटे वैसे ही वे खड्ग खींचकर, दुर्योधन के सामने ही, वेग से कर्ण की ओर चले। अश्वत्थामा ने कर्ण से कहा—अरे नराधम! महात्मा कृपाचार्य अर्जुन के यथार्थ पराक्रम और गुणों का वर्णन करते हैं, पर तू दुर्मति और द्वेष के कारण शूर-श्रेष्ठ कृपाचार्य को कुवाक्य कह रहा है। हे मूढ़! गर्व के मारे तू अपने मुँह आप बड़ाई कर रहा है और युद्धभूमि में वर्तमान वीरों में से किसी को अपने बराबर नहीं समझता। त्रिभुवन में श्रेष्ठ धनुर्द्धर मामा कृपाचार्य से तू ऐसे कठोर वचन कह रहा है! जब अर्जुन ने तुझे जीतकर तेरे सामने ही जयद्रथ को मार डाला तब तेरा पराक्रम और तेरे अस्त्र

कहाँ चले गये थे? अरे सूत! अरे अधम! तू केवल मनोरथ करके वृथा ही उन अर्जुन को

जीतना चाहता है, जिन्होंने साक्षात् महादेवजी से युद्ध किया और उन्हें अपने असाधारण पराक्रम से सन्तुष्ट कर दिया। श्रीकृष्ण सहित जिनको इन्द्र समेत सब देवता और दानव भी नहीं जीत सकते, उन त्रिभुवन के श्रेष्ठ वीर अजेय योद्धा अर्जुन को तू इन राजाओं के साथ जीतना चाहता है, यह तेरी निरी दुर्बुद्धि है! रे दुर्मति कर्ण! रे नराधम! देख ठहर जा, मैं अभी तेरा सिर धड़ से अलग किये देता हूँ।

सञ्जय कहते हैं कि महावीर अश्वत्थामा अब वेग से कर्ण की ओर बढ़े। तब स्वयं कृपा-
१० चार्य और राजा दुर्योधन ने उनको पकड़ लिया। महाराज! निर्भय भाव से स्थित कर्ण ने दुर्योधन से कहा—कुरुश्रेष्ठ! तुम इसे छोड़ दो। यह शूर और युद्धप्रिय होने पर भी दुर्मति और अधम ब्राह्मण है। इसे आक्रमण करके मेरे बाहुबल का पराक्रम देखने दो। कर्ण के वचन सुनकर अश्वत्थामा ने कहा—अरे दुर्मति सूतपुत्र! तेरी इन बातों को मैं क्षमा करता हूँ। वीर अर्जुन रण में तेरे इस गर्व को मिटावेंगे। अब दुर्योधन ने कहा—हे अश्वत्थामा! प्रसन्न होओ, क्षमा करो। कर्ण के ऊपर तुन्हें कोप न करना चाहिए। हे द्विजश्रेष्ठ! तुम, कर्ण, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, शल्य और शकुनि, यही मेरे सहायक हैं और इन्हीं के ऊपर मेरे भारी कार्य को सम्पन्न करने का भार है। ब्रह्मन्! वह देखो, कर्ण से युद्ध करने के लिए गरजते और ललकारते हुए पाण्डवगण और उनकी सेना चारों ओर से हमारे सामने आ रही है।

सञ्जय कहते हैं—हे कुरुकुलश्रेष्ठ! आपके पुत्र दुर्योधन ने महामनस्वी अश्वत्थामा को इस तरह अनुनय-विनय करके प्रसन्न किया, जिससे उनका क्रोध शान्त हो गया। तब शान्त-प्रकृति कृपाचार्य ने भी कोमल भाव धारण करके कहा—हे दुर्बुद्धि कर्ण! हम तो तुम्हारा सब अपराध क्षमा करते हैं, किन्तु वीर अर्जुन रणभूमि में तुम्हारे इस घोर दर्प को चूर्ण कर देंगे।

सञ्जय कहते हैं—राजन्! इसके उपरान्त यशस्वी पाञ्चाल और पाण्डवगण एकत्र होकर चारों ओर से गर्जन-तर्जन करते हुए कर्ण के सामने आये। यह देखकर वीर्यशाली महातेजस्वी कर्ण भी, देवगण सहित इन्द्र की तरह, कौरवों के साथ अपने बाहुबल के भरोसे उनका
२१ सामना करने के लिए तैयार हुए। दोनों ओर से घोर सिंहनाद करते हुए योद्धा भिड़ गये। कर्ण के साथ पाण्डवों का भयानक युद्ध होने लगा। महायशस्वी पाञ्चाल और पाण्डवगण कर्ण को सामने देखकर ऊँचे स्वर से चिल्लाने और कहने लगे कि "यह कर्ण है, कहाँ कर्ण है, ठहर जा कर्ण, महारण में हम लोगों के साथ युद्ध कर; अरे दुरात्मा, अरे पुरुषाधम कर्ण, ठहर जा!" कुछ लोग कर्ण को देखकर लाल-लाल आँखें निकालकर कहने लगे—इस गर्वित दुर्मति सूतपुत्र कर्ण को सब लोग मिलकर मार डालो। इस दुष्ट के जीवित रहने का कुछ प्रयोजन नहीं। यह पाण्डवों का जानी दुश्मन है। यही पापी सब अनर्थों की जड़ है। यह दुर्योधन का हितैषी और उसके कहे पर चलनेवाला है। इसलिए सब लोग मिलकर इसे शीघ्र मार डालो!

महाराज! युधिष्ठिर के भेजे हुए सब महारथी क्षत्रिय इस तरह कहते हुए चले और कर्ण को मारने के लिए घोर बाण बरसा ने लगे। उन महारथियों को वेग से अपनी ओर आते और बाण-प्रहार करते देखकर भी कर्ण न तो डरे और न घबराये। संग्रामे में न हारनेवाले फ़ुरतीले महाबली कर्ण आपके पुत्रों का भला करने के लिए अकेले ही, सागर के समान उमड़ती आ रही, उस असंख्य सेना को बाणों से रोकने लगे। पाण्डव-पक्ष के सैकड़ों-हज़ारों योद्धा बड़े-बड़े धनुषों को हिलाते और बाणों की वर्षा करते हुए बढ़ने लगे और इन्द्र से जैसे दैत्य युद्ध करें वैसे ही पराक्रमी कर्ण से युद्ध करने लगे। महावीर कर्ण ने बहुत से बाण छोड़कर उन राजाओं के असंख्य बाणों को काट-काटकर गिरा दिया। एक पक्ष जो कार्य करता था, उसके जवाब में वैसा ही या उससे बढ़कर काम दूसरा पक्ष करता था। देवासुर-संग्राम में इन्द्र और दानवों का जैसा दारुण युद्ध हुआ था वैसा ही युद्ध उस समय होने लगा। महाराज! उस समय हमें कर्ण की अद्भुत फुर्ती देख पड़ी। सब लोग यत्न करके भी कर्ण पर प्रहार नहीं कर पाते थे। ३०

महापराक्रमी कर्ण इस तरह महारथी राजाओं के बाणों को व्यर्थ करके उनके रथों के युग, ईषादण्ड, छत्र, ध्वजा, घोड़े आदि के ऊपर अपने नाम के अक्षरों से अङ्कित तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। अब कर्ण के बाणों से पीड़ित राजा लोग, शीतकाल में जाड़े से पीड़ित गाय आदि की तरह, व्याकुल होकर काँपते हुए इधर-उधर भागने लगे। शत्रुपक्ष के असंख्य मनुष्यों, हाथियों और घोड़ों के झुण्ड के झुण्ड, कर्ण के बाणों से पीड़ित होकर, मरने और गिरने लगे। समर से न हटनेवाले शूरों के सिर और हाथ कट-कटकर चारों ओर जमा होने लगे। मरे, मारे जा रहे और आर्तनाद कर रहे योद्धाओं से परिपूर्ण रणक्षेत्र उस समय यमपुरी के समान भयानक हो उठा। महाराज! कर्ण के विकट पराक्रम को देखकर राजा दुर्योधन अश्वत्थामा के पास जाकर कहने लगे—हे आचार्य-पुत्र! देखो, कवच पहने हुए वीर कर्ण सब राजाओं से युद्ध कर रहे हैं। कार्त्तिकेय के पराक्रम से पीड़ित असुर-सेना के समान यह पाण्डवों की सेना कर्ण के बाणों की चोट न सह सकने के कारण भागी जा रही है। इस सेना को कर्ण से हारकर भागते देख वे अर्जुन कर्ण को मारने आ रहे हैं। हम लोगों को इस समय वही उपाय करना चाहिए जिसमें हम लोगों के सामने ही अर्जुन महारथी सूत-पुत्र को मार न डालें। महाराज! तब अश्वत्थामा, कृपाचार्य, शल्य और महारथी कृतवर्मा, दैत्य-सेना को नष्ट करने के लिए उद्यत इन्द्र के समान, अर्जुन को आते देखकर कर्ण की सहायता करने के लिए चले। उधर पाञ्चालों सहित महाबाहु अर्जुन भी, वृत्रासुर के प्रति इन्द्र की तरह, कर्ण पर आक्रमण करने चले। ४०

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! वैकर्तन कर्ण नित्य अर्जुन के साथ लाग-डाँट रखते और उन्हें जीतने का उत्साह दिखाया करते थे। उस समय नित्य के अत्यन्त वैरी यम-तुल्य अर्जुन को कुपित होकर आते देख कर्ण ने क्या किया? ५०

सञ्जय ने कहा—महाराज ! जैसे मस्त हाथी दूसरे हाथी पर झपटता है वैसे ही महावीर कर्ण भी अर्जुन को आते देखकर उनकी ओर चले। महावीर अर्जुन ने बड़े वेग से आ रहे कर्ण को सीधे जानेवाले तीक्ष्ण बाणों से ढक दिया। यह देखकर महाबाहु कर्ण क्रोध से विह्वल हो उठे। उन्होंने चटपट तीन बाण अर्जुन को मारे। महावीर अर्जुन से कर्ण की वह फुर्ती देखी नहीं गई। उन्होंने तीक्ष्ण तीन सौ बाण मारकर बड़े क्रोध से हँसते-हँसते एक भयानक नाराच बाण छोड़ा, जो कर्ण के बाँयें हाथ के अगले भाग में जाकर लगा। अर्जुन के भरपूर ज़ोर से चलाये गये उग्र नाराच की चोट से कर्ण के हाथ से धनुष गिर पड़ा। पराक्रमी कर्ण ने फ़ौरन धनुष उठाकर फुर्ती दिखलाते हुए दम भर में अर्जुन को बाणों से छिपा दिया। यह देखकर महावीर अर्जुन बाण बरसाने लगे। उन्होंने देखते ही देखते कर्ण के सब बाणों को काटकर व्यर्थ कर दिया। इस तरह एक दूसरे से बढ़कर कार्य कर दिखाने का यत्न कर रहे महाधनुर्द्धर वीर एक दूसरे को बाणों से पीड़ित करने लगे। एक हथिनी के लिए लड़ रहे दो जङ्गली मस्त हाथियों की तरह क्रुद्ध होकर कर्ण और अर्जुन अद्भुत संग्राम करने लगे।
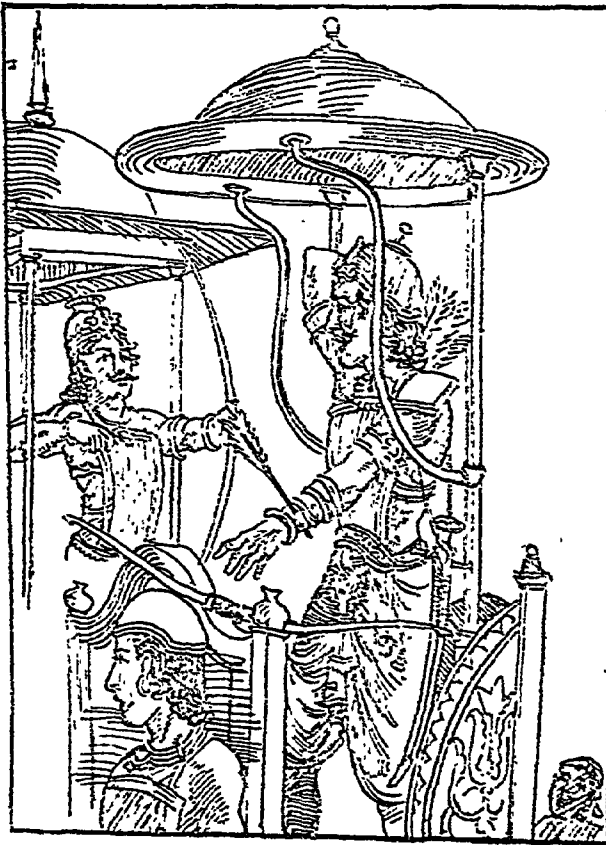
६१ महाधनुर्द्धर अर्जुन ने कर्ण का पराक्रम देखकर फुर्ती के साथ उनके धनुष की मूठ काट डाली। फिर भल्ल बाणों से उनके चारों घोड़ों को मारकर एक बाण से सारथी का सिर भी काट गिराया। इस तरह धनुष, सारथी और घोड़ों के न रहने पर कर्ण लाचार हो गये। अर्जुन ने मौक़ा पाकर कर्ण को चार विकट बाण मारे। तब पुरुषश्रेष्ठ कर्ण, अर्जुन के बाणों से विह्वल होकर, बिना घोड़ों के रथ से कूद पड़े और कृपाचार्य के रथ पर चढ़ गये। अर्जुन के बाण शरीर में लगने से काँटेदार "स्याही" नाम के पशु के समान जान पड़ रहे कर्ण, प्राण बचाने के लिए, जब कृपाचार्य के रथ पर चले गये तब कर्ण को परास्त देखकर आपके पक्ष के सैनिक लोग अर्जुन के बाणों से पीड़ित होकर चारों ओर भागने लगे। अपने सैनिकों को भागते देखकर राजा दुर्यो-

धन उन्हें लौटाने के लिए कहने लगे—हे शूर क्षत्रियो, भागो मत। लौटो, खड़े रहो। अर्जुन को मारने के लिए मैं ख़ुद जाता हूँ। मैं सब पाण्डवों, पाञ्चालों और सोमकों को मारूँगा। प्रलय के समय काल की तरह आज मैं अर्जुन से युद्ध करूँगा और सब पाण्डव मेरा अद्भुत पराक्रम देखेंगे। आज समर में योद्धा लोग मेरे छोड़े हुए हज़ारों बाणों को आकाश में टीड़ीदल ७० की तरह जाते देखेंगे। आज युद्ध में सैनिक लोग देखेंगे कि मेरे धनुष से, वर्षा काल में जलधारा की तरह, बाणों की वर्षा होगी हे शूरो! ठहरो, अर्जुन से डरो मत। मैं अपने तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन को परास्त करूँगा। जैसे जलजन्तुओं का निवासस्थान महासागर तटभूमि को लाँघकर नहीं जा सकता, वैसे ही आज अर्जुन मेरे पराक्रम और बाहुबल को नहीं सह सकेंगे।

क्रोध से लाल आँखें किये हुए राजा दुर्योधन अब बहुत सी सेना साथ लेकर अर्जुन से लड़ने को चले। महाबाहु दुर्योधन को अर्जुन के सामने जाते देख, अश्वत्थामा के पास जाकर, कृपाचार्य ने कहा—देखो अश्वत्थामा! ये राजा दुर्योधन कुपित होकर अर्जुन से युद्ध करने जा रहे हैं। पतङ्ग जैसे आग पर जलने के लिए ही झपटता है वैसे इनका अर्जुन पर आक्रमण करना है। ये अर्जुन से भिड़कर कहीं अपने प्राण न गँवा दें और हम देखते ही रह जायँ। इसलिए तुम झटपट जाकर दुर्योधन को रोको। अर्जुन के बाणों के सामने पहुँचने से पहले ही राजा को लौटा लाओ। अर्जुन के छोड़े हुए सर्प-सदृश घोर बाणों से राजा भस्म हो जायँगे; इसलिए तुम उनको लौटा लाओ। भैया! हम सबके रहते राजा का, यों असहाय आदमी की तरह, स्वयं युद्ध ८० करने जाना मुझे अनुचित जान पड़ता है। सिंह से हाथी की तरह अर्जुन से दुर्योधन के लड़ने पर मुझे दुर्योधन का जीवन दुर्लभ जान पड़ता है।

राजन्! अपने मामा के वचन सुनकर श्रेष्ठ अस्त्रज्ञ अश्वत्थामा जल्दी से दुर्योधन के पास जाकर कहने लगे—राजन्! मेरे जीते-जी मेरी उपेक्षा करके तुम स्वयं युद्ध करने जा रहे

हो, यह कदापि उचित नहीं। तुम बख़ूबी जानते हो कि मैं सदा तुम्हारा हितचिन्तक हूँ। अर्जुन की विजय देखकर तुम घबराओ नहीं। तनिक ठहर जाओ, मैं ख़ुद अर्जुन से लड़ने जाता हूँ। तुम निश्चिन्त रहो, मैं अर्जुन को रोकता हूँ।

अश्वत्थामा के वचन सुनकर दुर्योधन ने कहा—ब्रह्मन्! आचार्य तो पाण्डवों को पुत्र की तरह मानते हैं और सब तरह उन्हें बचाते हैं। और तुम भी सदा उनके प्रति उपेक्षा करते हो, जी लगाकर उन्हें परास्त करने का यत्न नहीं करते। मेरे दुर्भाग्य से हो या युधिष्ठिर और द्रौपदी का प्रिय करने के लिए हो, मालूम नहीं किस कारण से, युद्ध के समय तुम्हारा पराक्रम धीमा पड़ जाता है। मुझ लोभी को धिक्कार है, जिसके कारण मेरे सुख के योग्य सब भाई-बन्धु घोर दुःख पा रहे हैं। ब्रह्मन्! तुम्हारे सिवा और कौन ऐसा होगा जो महेश्वर के समान पराक्रमी और श्रेष्ठ योद्धा तथा समर्थ होकर भी शत्रुओं का संहार न करे? हे अश्वत्थामा! मुझ पर प्रसन्न होकर मेरे शत्रुओं का नाश करो। तुम्हारे अस्त्र-शस्त्रों के सामने देवता और ९० दानव कोई भी नहीं ठहर सकता। तुम अनुचरों सहित पाञ्चाल और सोमक वीरों को मारो। तुम्हारे बल से सुरक्षित होकर हम लोग शेष शत्रुओं को नष्ट कर देंगे। हे विप्र! ये यशस्वी पाञ्चालगण अत्यन्त क्रुद्ध होकर, दावानल की तरह, भस्म करते हुए मेरी सेना में विचर रहे हैं। हे महाबाहो! हे पुरुषश्रेष्ठ! इन्हें और केकय देश के वीरों को तुम रोको और मारो। ये लोग अर्जुन के बाहुबल से सुरक्षित होकर हम लोगों के सामने ही हमारी सेना को चौपट किये डालते हैं। हे अश्वत्थामा! जल्दी इन शत्रुओं का संहार करो। पहले हो या पीछे, यह तुम्हारा ही काम है। हे महाबाहो! तुम पाञ्चालों का वध करने के लिए ही उत्पन्न हुए हो। मैंने सिद्ध पुरुषों के मुँह से सुना है कि तुम कुपित होकर इस पृथ्वी को पाञ्चालों से ख़ाली कर दोगे। ब्रह्मन्! ऐसा ही होगा; क्योंकि सिद्धों के वचन मिथ्या नहीं हो सकते। हे पुरुषसिंह! इसलिए तुम झटपट अनुचरों सहित पाञ्चालों का संहार करो। मैं यह सत्य कहता हूँ कि पाञ्चालों सहित पाण्डवों की कौन कहे, इन्द्र सहित देवता भी तुम्हारे अस्त्रों के सामने नहीं ठहर सकते। हे वीर! मैं सत्य कहता हूँ, पाण्डव और सोमकगण बलपूर्वक तुमसे युद्ध नहीं कर सकते। हे महाबाहो! जाओ-जाओ, देर न करो। यह देखो, हमारी सेना अर्जुन के बाणों से पीड़ित होकर भाग रही है। हे वीर! तुम अपने तेज और पराक्रम के प्रभाव से १०० पाञ्चालों सहित पाण्डवों को परास्त कर सकते हो।

एक सौ साठ अध्याय

अश्वत्थामा और धृष्टद्युम्न का युद्ध

सञ्जय कहते हैं कि महाराज ! राजा दुर्योधन ने जब रणदुर्द्धर्ष वीर अश्वत्थामा से यों कहा तब इन्द्र जैसे दैत्यों को मारने का यत्न करें वैसे ही अश्वत्थामा शत्रुओं को मारने का यत्न करने लगे। उन्होंने दुर्योधन से कहा—राजन् ! इसमें सन्देह नहीं कि पाण्डवगण मुझे और मेरे पिता को अत्यन्त प्रिय हैं और हम पिता-पुत्र दोनों ही पाण्डवों को बहुत ही प्यारे हैं। किन्तु युद्ध के समय उस प्रीति का कोई ख़याल नहीं करता। मैं, कर्ण, शल्य, कृपाचार्य और कृतवर्मा, ये मिलकर पल भर में पाण्डवों की सारी सेना को चौपट कर सकते हैं। इसी तरह, अगर हम लोग युद्ध में तुम्हारी ओर न हों तो, पाण्डव भी पल भर में सारी कौरवसेना का नाश कर सकते हैं। हे कुरुश्रेष्ठ ! हम लोग अपनी शक्ति भर पाण्डवों से युद्ध करते हैं और वे लोग भी अपने बल के अनुसार हमसे लड़ते हैं। इस तरह एक ओर का तेज दूसरी ओर के तेज से टकराकर शान्त हो जाता है। मैं सच कहता हूँ, पाण्डवों के जीते जी सहसा सहज में उनकी सेना नहीं जीती जा सकती। सर्वथा समर्थ पाण्डव अपने अधिकार के लिए जी-जान से लड़ रहे हैं, फिर वे तुम्हारी सेना का संहार क्यों न करेंगे ? हे कौरव ! तुम अत्यन्त लोभी, शठ (दग़ाबाज़), सबसे खटका खानेवाले, अभिमानी और पापप्रकृति हो। इसी से सर्वदा हम पर शत्रुओं के पक्षपाती होने का सन्देह किया करते हो। मैं समझता हूँ कि तुम क्षुद्र, कुत्सित विचारवाले, पापी हो; तुम्हारे मन में सदा पाप की भावना बनी रहती है। इसी से तुम हम अनन्य हितचिन्तक अनुगतों को सन्देह की दृष्टि से देखते हो। यह तुम्हारा सरासर अन्याय है। मैं तो तुम्हें अपना जीवन सौंप चुका हूँ। लो, अब तुम्हारे लिए युद्ध करने जाता हूँ। हे कुरुनन्दन ! मैं प्राणों का मोह छोड़कर शत्रुओं से युद्ध करूँगा और चुने हुए श्रेष्ठ-श्रेष्ठ योद्धाओं को मारूँगा। तुम्हारा प्रिय करने के लिए संग्राम में पाञ्चाल, सोमक, केकय और पाण्डव आदि सबसे मैं घोर युद्ध करूँगा। आज मेरे बाणों से मारे जा रहे पाञ्चाल और सोमकगण, सिंह के आक्रमण करने पर भागती हुई गायों की तरह, चारों ओर भागेंगे। आज राजा युधिष्ठिर मेरा पराक्रम और पाञ्चाल-सोमक आदि का युद्ध में विनाश देखकर खिन्न होंगे। हे भरतकुलश्रेष्ठ ! योद्धाओं में से जो लोग सामने आकर मुझसे लड़ेंगे उनमें से कोई भी जीता नहीं बचेगा। १०

महाराज ! आपके पुत्र से यों कहकर, उनका प्रिय करने के लिए, महाबाहु अश्वत्थामा युद्ध करने चले। उनका रूप और क्रोध देखकर सब योद्धा डर गये। अब वीरवर अश्वत्थामा ने समरभूमि के बीच में पहुँचकर सब केकयों और पाञ्चालों से कहा—हे महारथी योद्धाओ ! तुम लोग पहले मेरे ऊपर प्रहार कर लो। स्थिर होकर अपनी फ़ुर्ती, अस्त्रविद्या

और पराक्रम दिखाते हुए युद्ध करो। वीरवर अश्वत्थामा के ये वचन सुनकर पाञ्चाल आदि शत्रुपक्ष के सब योद्धा उसी तरह उनके ऊपर शस्त्रों की वर्षा करने लगे, जिस तरह वर्षाकाल के
२० मेघ जल बरसाते हैं। अश्वत्थामा ने उन शस्त्रों और बाणों को व्यर्थ करके, धृष्टद्युम्न और पाण्डवों के आगे ही, उनमें के दस श्रेष्ठ वीरों को मार डाला। अश्वत्थामा के बाणों से मारे जा रहे पाञ्चाल और सोमकगण उन्हें छोड़कर चारों ओर भागने लगे। पाञ्चालों और सोमकों को भागते देखकर महारथी धृष्टद्युम्न क्रोध से प्रज्वलित हो उठे और अश्वत्थामा से युद्ध करने के लिए उनकी ओर चले। धृष्टद्युम्न के साथ सुवर्णमण्डित और जल-भरे बादल के गरजने के समान शब्द करनेवाले बड़े-बड़े रथों पर सवार, युद्ध से विमुख न होनेवाले, एक सौ चुने हुए योद्धा भी चले। अश्वत्थामा के पास पहुँचकर धृष्टद्युम्न ने कहा—हे आचार्यपुत्र! इन साधारण योद्धाओं को मारने से क्या लाभ है? अगर शूर होने का दावा रखते हो तो आओ मुझसे युद्ध करो। तनिक मेरे आगे ठहरो; मैं अभी तुमको मारकर यमपुर भेज दूँगा।

महाप्रतापी धृष्टद्युम्न अब अश्वत्थामा के ऊपर मर्मभेदी तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। मधुलोभी भौंरे जैसे क़तार बाँधकर फूले हुए पेड़ पर गिरते हैं वैसे ही धृष्टद्युम्न के छोड़े हुए सुवर्णपुङ्खयुक्त, चमकीली धारवाले, सबके शरीर को फाड़ने की शक्ति रखनेवाले तीक्ष्ण बाण लगातार अश्वत्थामा के शरीर में घुसने लगे। लात मारने से क्रुद्ध साँप की तरह उस प्रहार से क्रोधान्ध
३० अश्वत्थामा, हाथ में बाण लेकर, अविचलित भाव से कहने लगे—हे धृष्टद्युम्न! अब तुम स्थिर होकर दम भर मेरे आगे खड़े रहो; मैं अभी तीक्ष्ण बाणों से तुम्हें यमपुर भेजे देता हूँ।

शत्रुदमन अश्वत्थामा फुर्ती के साथ चारों ओर से तीक्ष्ण बाण बरसाकर धृष्टद्युम्न को पीड़ित करने लगे। युद्धदुर्मद पाञ्चालराजकुमार धृष्टद्युम्न इस तरह पीड़ित होने पर, उग्र वचन कहकर, अश्वत्थामा के प्रति गर्जन-तर्जन कर कहने लगे—हे आचार्य के पुत्र! तुमको मेरी प्रतिज्ञा और उत्पत्ति का हाल शायद मालूम नहीं। हे दुर्मति विप्र! मैं पहले द्रोण को मारकर फिर तुमको भी मारूँगा। इसी प्रतिज्ञा के कारण द्रोण के जीते-जी मैं तुमको नहीं मारता। सवेरा नहीं होने पावेगा, इसी रात में तुम्हारे पिता को पहले मारकर फिर तुमको भी मारूँगा। देखो, तुममें पाण्डवों के प्रति जितना द्वेषभाव और कौरवों के ऊपर भक्ति है, सो सब स्थिर होकर दिखलाओ। निश्चय जानो, मैं तुम्हें जीता न छोड़ूँगा। ब्राह्मण के कर्मों को छोड़कर जो ब्राह्मण क्षत्रिय-धर्म करने लगता है वह अधम है। उसका वध करने में किसी को दोष नहीं हो सकता। हे पुरुषाधम! तुम वैसे ही अपना धर्म छोड़कर क्षत्रियवृत्ति ग्रहण करनेवाले ब्राह्मण हो और इसी लिए मैं तुम दोनों बाप-बेटों को मारूँगा।

महाराज! धृष्टद्युम्न के यों कठोर वचन कहने पर ब्राह्मणश्रेष्ठ अश्वत्थामा क्रोध से विह्वल हो उठे। वे मानों भस्म कर देंगे, इस तरह धृष्टद्युम्न की ओर देखकर साँप की तरह साँसें

लेने लगे और "ठहर जा, ठहर जा" कहकर धृष्टद्युम्न के ऊपर घोर बाणों की वर्षा करने लगे। ४१
पाञ्चाल-सेना सहित धृष्टद्युम्न, अश्वत्थामा के बाणों से पीड़ित होकर भी, विचलित नहीं हुए; बल्कि अपने बाहुबल के सहारे धैर्य धारण करके वे अश्वत्थामा की बाण-वर्षा का उत्तर अपने बाणों से देने लगे। राजन्! इस प्रकार क्रोधान्ध महाधनुर्द्धर वे दोनों वीर प्राणपण से एक दूसरे के बाणों को व्यर्थ करके चारों ओर बाण बरसाने लगे। सिद्ध-चारण आदि आकाशचारी लोग धृष्टद्युम्न और अश्वत्थामा का भयानक युद्ध देखकर उनकी बहुत-बहुत प्रशंसा करने लगे। तब एक दूसरे को मारने के लिए उद्यत वे विकट वेशधारी दोनों वीर, बाणों से दसों दिशाओं को व्याप्त करते हुए, इस तरह घोर युद्ध करने लगे कि उनके बाणों से सर्वत्र अँधेरा छा गया, किसी को वे नहीं देख पड़ते थे। उनके धनुष मण्डलाकार घूम रहे थे और वे नृत्य सा कर रहे थे। वे दोनों वीर फुर्ती और खूबसूरती के साथ विचित्र युद्ध कर रहे थे, जिसे देखकर हज़ारों योद्धा उनकी बड़ाई करने लगे। वन में जङ्गली मस्त दो हाथी जैसे भिड़ते हैं वैसे ही उन दोनों को लड़ते देखकर दोनों पक्ष के सैकड़ों-हज़ारों सैनिक प्रसन्न होकर सिंहनाद करने, शङ्ख बजाने और अनेक विचित्र बाजे बजाने लगे। कायरों के लिए भय को बढ़ानेवाले उस दारुण ५० संग्राम में दो घड़ी तक दोनों ने समान रूप से युद्ध किया।

इसके बाद महावीर अश्वत्थामा ने फुर्ती के साथ धृष्टद्युम्न का धनुष, ध्वजा और छत्र काटकर पार्श्वरक्षकों, सारथी और चारों घोड़ों को मार डाला। फिर पराक्रमी अश्वत्थामा उनकी ओर वेग से बढ़े और उन्होंने तीक्ष्ण बाणों से हज़ारों पाञ्चालों को मारकर उनकी सेना को भगा दिया। इन्द्र के समान महारथी अश्वत्थामा का यह अद्भुत कर्म देखकर पाण्डवों की सेना बहुत ही व्याकुल हुई। कुपित अश्वत्थामा ने धृष्टद्युम्न के साथी सौ महारथी पाञ्चालों को सौ बाणों से मार डाला और फिर तीन बाणों से अन्य तीन महारथियों को यमपुर भेज दिया। धृष्टद्युम्न और अर्जुन के सामने ही अश्वत्थामा ने असंख्य पाञ्चालसेना का संहार कर डाला। उस महासंग्राम में मारे जा रहे पाञ्चाल और सृञ्जयगण अश्वत्थामा को छोड़कर भाग खड़े हुए। उनके रथ और ध्वजा आदि अस्त-व्यस्त हो गये और वे सब प्राण लेकर भाग खड़े हुए।

राजन्! महावीर अश्वत्थामा समर में शत्रुओं को जीतकर वर्षा ऋतु के मेघ की तरह गरजने लगे। प्रलयकाल में असंख्य प्राणियों को भस्म करके आग जैसे प्रचण्ड होती है वैसे ही समर में बहुत से शूर शत्रुओं को मारकर अश्वत्थामा शोभायमान हुए। हज़ारों शत्रुओं के दल को जीतकर प्रतापी अश्वत्थामा वैसे ही शोभायमान हुए जैसे असुरों को मारने पर इन्द्र की शोभा होती है। सब कौरव लोग अश्वत्थामा की प्रशंसा करने लगे। ६०

एक सौ इकसठ अध्याय

सङ्कुल युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज ! तब धर्मराज युधिष्ठिर और भीमसेन ने चारों ओर से अश्वत्थामा को घेरकर उन पर आक्रमण किया। यह देखकर राजा दुर्योधन भी, द्रोणाचार्य को साथ लेकर, पाण्डवों की सेना को रोकने चले। फिर घमासान युद्ध होने लगा। राजा युधिष्ठिर ने क्रुद्ध होकर अम्बष्ठ, मालव, वङ्ग, शिवि और त्रिगर्त देश की सेना को मारना शुरू किया। उधर कुपित भीमसेन ने भी अभीषाह, शूरसेन आदि देशों के युद्धदुर्मद क्षत्रियों को मार-काटकर पृथ्वी में रक्त की कीच कर दी। राजन् ! पराक्रमी अर्जुन ने भी यौधेय, पहाड़ी, मद्रक और मालव देश के वीरों की सेनाओं को तीक्ष्ण बाणों से छिन्न-भिन्न कर डाला। मज्जा तक गहरे घुसनेवाले नाराच बाणों की चोटें खाकर, दो शिखरवाले पर्वतों के समान, बड़े-बड़े हाथी मरकर पृथ्वी पर गिरने लगे। हाथियों की कटी हुई सूँड़ें इधर-उधर तड़पती हुई दिखाई पड़ती थीं, जिनसे जान पड़ता था कि समरभूमि में हज़ारों साँप रेंग रहे हैं। राजाओं के सुवर्णचित्रित सफ़ेद छत्र कट-कटकर चारों ओर गिरने लगे, जिनके कारण वह रणभूमि प्रलयकाल में सूर्य, चन्द्र और ग्रहों से शोभित आकाशमण्डल के समान जान पड़ रही थी।

उस समय द्रोणाचार्य के रथ के सामने "मार डालो, प्रहार करो, बेधड़क बेध डालो, काट डालो" यही बातें सुन पड़ती थीं। महावीर द्रोण ने क्रोध से रौद्र रूप धारण करके, आँधी जैसे मेघों को छिन्न-भिन्न कर दे वैसे ही, वायव्य अस्त्र का प्रयोग करके पाञ्चालसेना को मारना शुरू किया। भीमसेन और अर्जुन के सामने ही द्रोणाचार्य के दारुण अस्त्र से मारे जा रहे पाञ्चालगण डरकर भाग खड़े हुए। महावीर भीमसेन और अर्जुन यह देखकर, असंख्य रथसेना साथ लेकर, शीघ्र ही उस जगह पहुँचे। अर्जुन द्रोणाचार्य की दाहिनी ओर से और भीमसेन द्रोणाचार्य की बाईं ओर से उनके ऊपर लगातार बाण बरसाने लगे। तब पाञ्चाल, सृञ्जय, मत्स्य और सोमकगण भी भीमसेन और अर्जुन के साथ आगे बढ़कर कौरवसेना के ऊपर आक्रमण करने लगे। यह देखकर राजा दुर्योधन के पक्ष के महारथी योद्धा लोग, असंख्य सेना लेकर, आचार्य की सहायता के लिए उनके पास आ गये। उस समय दिशाओं में घना अँधेरा छाया हुआ था और अधिक रात बीतने के कारण सैनिकों की आँखें भी नींद से बन्द सी हुई जाती थीं। महावीर अर्जुन इसी अवसर में कौरवसेना को फिर तीक्ष्ण बाणों से विदीर्ण करने लगे। अर्जुन के बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर सैनिक लोग चारों ओर भागने लगे। कोई-कोई राजा अपने-अपने वाहन छोड़कर, अर्जुन के डर से विह्वल होने के कारण, पैदल ही प्राण लेकर भागने लगे। तब महावीर द्रोणाचार्य, राजा दुर्योधन और कौरवदल के अन्यान्य योद्धा लाख यत्न करके भी भागती हुई सेना को नहीं रोक सके।

एक सौ बासठ अध्याय

सोमदत्त का मारा जाना। द्रोणाचार्य और राजा युधिष्ठिर का युद्ध

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! इसी समय महावीर सात्यकि ने सोमदत्त को भारी धनुष बजाते देखकर, कुपित होकर, सारथी से कहा—हे सूत! मुझे झटपट सोमदत्त के पास ले चलो। मैं सच कहता हूँ, रण में महाबली शत्रु सोमदत्त को मारे बिना नहीं लौटूँगा। तब सारथी ने सात्यकि की आज्ञा से सिन्धु देश के, मन के समान शीघ्रगामी, सफ़ेद रङ्ग के और किसी तरह के शब्द से न भड़कनेवाले बढ़िया घोड़ों को हाँक दिया। असुर-वध के लिए उद्यत इन्द्र को उनके घोड़े जिस तरह ले चले थे उसी तरह वेग से जानेवाले घोड़े सात्यकि को ले चले। महाबाहु सोमदत्त ने सात्यकि को युद्ध करने के लिए वेग से आते देखकर वैसे ही उन्हें बाणों से ढक दिया जैसे वर्षा ऋतु का मेघ सूर्य को छिपा लेता है। सात्यकि ने भी अविचलित रहकर कुरुश्रेष्ठ सोमदत्त के चारों ओर बाणों का जाल सा बना दिया। तब महावीर सोमदत्त ने सात्यकि की छाती में साठ तीक्ष्ण बाण मारे। महाबली सात्यकि ने भी उन्हें असंख्य तीक्ष्ण बाणों से घायल करना शुरू किया। महाराज! इस तरह एक दूसरे के बाणों से घायल होने के कारण वे दोनों वीर वसन्तकाल में फूले हुए ढाक के पेड़ों के समान शोभायमान होने लगे। कुरुवंश और यदुवंश के यश को बढ़ानेवाले उन दोनों वीरों के सब अङ्ग रक्त से तर हो रहे थे और वे इस तरह एक दूसरे को क्रोध की दृष्टि से देख रहे थे कि मानों भस्म कर देंगे। शत्रुमर्दन दोनों वीर मण्डलाकार रथ घुमाकर युद्ध कर रहे थे। उस समय उनका रूप घोर हो रहा था। ऐसा जान

१०

पड़ता था, मानों दो मेघ गरज-गरजकर बरस रहे हैं। सब अङ्गों में बाण विंध जाने के कारण वे शल्की 'स्याही' के समान दिखाई पड़ रहे थे। सुवर्णपुङ्खयुक्त बाणों से शरीर छिद जाने के कारण

वे ऐसे जान पड़ते थे जैसे वर्षाकाल में जुगनुओं से शोभित दो बड़े वृक्ष हों। बाणों से सब अङ्ग प्रदीप्त होने के कारण वे उल्काओं से शोभित दो गजराजों के समान शोभायमान हो रहे थे।

राजन्! तब महारथी सोमदत्त ने एक अर्धचन्द्र बाण से सात्यकि के बड़े भारी धनुष को काट डाला और फिर फुर्ती के साथ पहले पचीस और फिर दस बाण उनको मारे। सात्यकि ने उसी दम दूसरा दृढ़ धनुष लेकर फुर्ती से सोमदत्त को पाँच बाण मारे और हँसते-हँसते एक भल्ल बाण से उनके रथ की सुवर्णशोभित ध्वजा काटकर गिरा दी। सोमदत्त ने अपने रथ की ध्वजा कटते देखकर, कुछ भी विचलित न हो, सात्यकि को तीक्ष्ण पचीस बाण मारे। तब सात्यकि ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर तीक्ष्ण क्षुरप्र बाण से सोमदत्त के सुदृढ़ धनुष को काट डाला २० और उनको सुवर्णपुङ्खयुक्त सौ बाण मारे। महाबली महारथी सोमदत्त ने चटपट दूसरा धनुष लेकर सात्यकि को बाणों से पीड़ित करना शुरू किया। महावीर सात्यकि भी क्रोध से विह्वल होकर सोमदत्त को बाणवर्षा से पीड़ित करने लगे और महारथी सोमदत्त भी उनके बाणों का उत्तर बाणों से देने लगे। इसी बीच में सात्यकि की सहायता करने के लिए भीमसेन ने सोमदत्त को दस बाण मारे। सोमदत्त ने तनिक भी विचलित न होकर भीमसेन को तीक्ष्ण बाण मारे। सात्यकि की सहायता कर रहे भीमसेन ने क्रुद्ध होकर, सोमदत्त की छाती ताककर, एक लोहे का भारी परिघ (बेलन) फेंका। कुरुकुल की कीर्ति बढ़ानेवाले वीरवर सोमदत्त ने उस भयानक परिघ को वेग से आते देखकर हँसते-हँसते फुर्ती के साथ बाणों से दो टुकड़े करके गिरा दिया। महाराज! वह लोहे का बेलन सोमदत्त के बाणों से दो टुकड़े होकर, वज्राघात से फटे हुए पहाड़ के शिखर की तरह, पृथ्वी पर गिर पड़ा।

अब महाप्रतापी सात्यकि ने हँसते-हँसते एक भल्ल बाण से सोमदत्त का धनुष और पाँच बाणों से हस्तावाप (दस्ताना) काटकर चार बाणों से घोड़ों को और एक भल्ल बाण से सारथी को मार डाला। फिर सोमदत्त को ताककर, शिला पर रगड़कर पैना

किया गया, सुवर्णपुंखयुक्त, प्रज्वलित अग्नि के समान भयानक एक उग्र बाण धनुष पर चढ़ाकर छोड़ा। महाराज ! सात्यकि के छोड़े हुए उस बाण ने वेग से जाकर सोमदत्त के हृदय को चीर दिया। श्रेष्ठ रथी महाबाहु सोमदत्त उस भयानक बाण की चोट से विह्वल होकर पृथ्वी पर गिर पड़े और उसी दम मर गये। कौरव-सेना के योद्धा लोग महारथी सोमदत्त की मृत्यु से अत्यन्त कुपित होकर, बहुत सी रथसेना साथ लेकर, सात्यकि पर आक्रमण करने चले। ३१

इधर पाण्डव लोग, सम्पूर्ण प्रभद्रकगण को और बहुत सी सेना को साथ लेकर, द्रोणाचार्य की सेना का नाश करने के लिए चले। धर्मपुत्र युधिष्ठिर क्रोध के वश होकर, द्रोणाचार्य के सामने ही, उनकी सेना को मारकर भगाने लगे। यह देखकर तेजस्वी द्रोणाचार्य क्रोध से लाल आँखें करके वेग से उनके सामने आये। उन्होंने तीक्ष्ण सात बाण युधिष्ठिर को मारे। युधिष्ठिर ने भी क्रुद्ध होकर आचार्य को पाँच बाण मारे। द्विजश्रेष्ठ द्रोणाचार्य युधिष्ठिर के बाणों की चोट से विह्वल हो उठे। क्रोध से ओठ चाटते हुए आचार्य ने फुर्ती के साथ युधिष्ठिर की ध्वजा और धनुष काट डाला। राजेन्द्र युधिष्ठिर ने तुरन्त दूसरा दृढ़ धनुष लेकर घोड़े, सारथी, ध्वजा, रथ और द्रोणाचार्य को एक हज़ार बाण ४० मारे। उनकी यह फुर्ती देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। युधिष्ठिर के बाणों की गहरी चोट से महारथी द्रोणाचार्य ऐसे व्याकुल हो उठे कि दम भर किंकर्तव्यविमूढ़ होकर रथ पर ध्वजा के सहारे बैठे रहे। थोड़ी देर बाद सचेत होकर वे क्रोध के मारे साँप की तरह साँसें लेने लगे। इसके बाद उन्होंने वायव्य अस्त्र का प्रयोग किया। प्रतापी युधिष्ठिर ने तनिक भी न घबराकर वायव्य अस्त्र से ही उस अस्त्र को व्यर्थ कर दिया और फुर्ती के साथ द्रोणाचार्य का बहुत बड़ा दृढ़ धनुष काट डाला। क्षत्रियों का मानमर्दन करनेवाले आचार्य ने फ़ौरन् दूसरा धनुष हाथ में लिया; किन्तु युधिष्ठिर ने तीक्ष्ण भल्ल बाणों से उसको भी काट डाला।
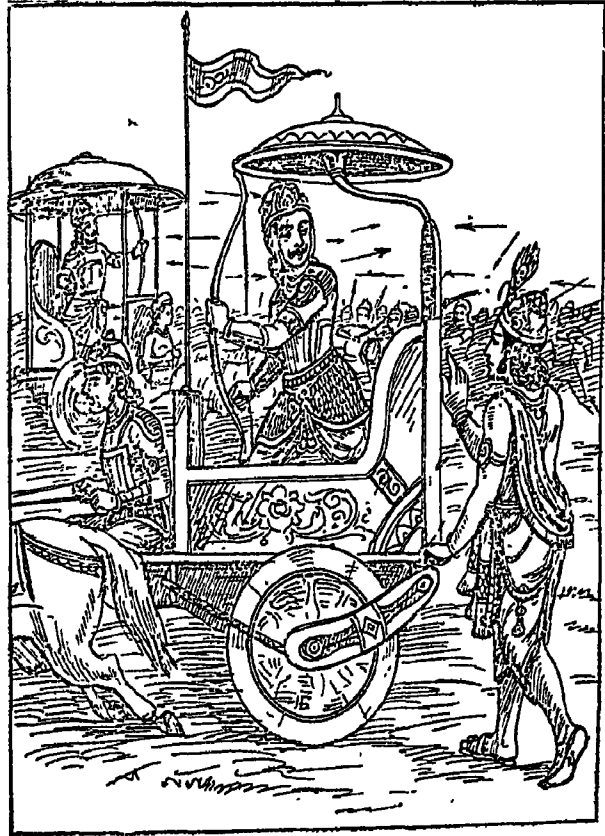
इसी समय श्रीकृष्ण ने द्रोणाचार्य को बहुत क्रोधित करना (धर्मराज के लिए) अच्छा न समझकर युधिष्ठिर से कहा—हे महाबाहु ! मैं जो कहता हूँ, उसे सुनिए। आप अब आचार्य

से युद्ध न कीजिए। द्रोणाचार्य सदा अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए आपको पकड़ने की धुन में रहते हैं। फिर इनके साथ आपका युद्ध मुझे ठीक नहीं जान पड़ता। इन्हें मारने के लिए जिनकी उत्पत्ति हुई है वे धृष्टद्युम्न ही इन्हें मारेंगे। इसलिए आप गुरु से लड़ना छोड़कर वहाँ जाइए, जहाँ राजा दुर्योधन हैं। राजा को राजा से ही लड़ना चाहिए। जो राजा नहीं है उससे राजा का युद्ध करना ठीक नहीं। जब तक इधर, मेरी सहायता से, वीर अर्जुन और भीमसेन कौरवों के साथ युद्ध करते हैं तब तक उधर आप हाथी, घोड़े, रथ आदि को साथ लेकर दुर्योधन से युद्ध कीजिए। ५१

महाराज! यह सुनकर युधिष्ठिर दम भर सोचकर, गुरु के सामने से, हट गये। मुँह फैलाये काल के समान घोर रूप धारण किये, शत्रुनाशन भीमसेन जहाँ पर आपके योद्धाओं का नाश कर रहे थे वहीं युधिष्ठिर भी वर्षाकाल के बादल के गरजने के समान रथ के शब्द से पृथ्वीतल को कँपाते और दसों दिशाओं को प्रतिध्वनित करते पहुँचे और भीमसेन की सहायता करने लगे। इधर द्रोणाचार्य भी उस रात्रि के युद्ध में पाण्डवों और पाञ्चालों की सेना को मारते और भगाते हुए चारों ओर विचरने लगे। ५५

एक सौ तिरसठ अध्याय

दोनों सेनाओं में दीपकों का जलना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! दोनों ओर से घमासान युद्ध होने लगने पर एक तो रात के अँधेरे और उस पर धूल उड़ने के कारण योद्धाओं को कुछ भी नहीं सूझ पड़ता था। पास ही खड़े हुए योद्धा तक एक दूसरे को नहीं देख पाते थे। केवल अनुमान से और योद्धाओं के अपने-अपने नाम के उच्चारण से शत्रु-मित्र को पहचानकर योद्धा लोग घोर युद्ध कर रहे थे। उस लोमहर्षण संग्राम में असंख्य हाथी, घोड़े और मनुष्य मर-मरकर, अधमरे हो-होकर, गिरने लगे। हे नृपश्रेष्ठ! आपके पक्ष से वीर द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण और पाण्डव पक्ष से भीमसेन, धृष्टद्युम्न, सात्यकि दोनों सेनाओं को मथ रहे थे। इन महारथियों के द्वारा चारों ओर से मारी जा रही सेनाएँ उस अँधेरे में इधर-उधर भागने और नष्ट होने लगीं। घबराये हुए अचेत सैनिक चारों ओर भागते समय शत्रुओं के प्रहार से मरने लगे। महाराज! आपके पुत्र की दुर्मति के कारण हज़ारों महारथी योद्धा और सब सैनिक उस अँधेरे में घबराकर आपस में ही मरने-मारने लगे।

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! पाण्डवों के पराक्रम से जब उत्साह नष्ट हो गया और अँधेरे के कारण घबराहट फैल गई तब उस हलचल में तुम लोगों के मन की क्या दशा हुई? उस अँधेरे में कौरवों और पाण्डवों की सेना कैसे एक दूसरे को देख या पहचान सकी?

सञ्जय ने कहा—महाराज ! द्रोणाचार्य ने सेनापतियों को आज्ञा देकर, मरने से बची हुई सब सेना इकट्ठी करके, फिर से व्यूह की रचना कराई । उसके अगले भाग में स्वयं द्रोणाचार्य, बीच में शल्य, अश्वत्थामा, कृतवर्मा और शकुनि स्थित हुए और राजा दुर्योधन ख़ुद उस रात्रि के समय सारी सेना की देखभाल करते तथा सैनिकों को उत्साहित करते हुए आगे बढ़े। राजा दुर्योधन ने धीरज बँधाकर सब पैदल सेना से कहा कि इस समय बड़ा अँधेरा है, इसलिए तुम लोग अस्त्र-शस्त्र रख दो और हाथों में जलते हुए दीपक (मशालें) ले लो। १०

महाराज ! यह आज्ञा मिलने से प्रसन्न होकर सब पैदल सिपाहियों ने जलते हुए दीपक हाथों में ले लिये। उस समय युद्ध देखने के लिए आकाश में जमा हुए देवता, ऋषि, गन्धर्व, देवर्षि, विद्याधर, अप्सरा, नाग, यक्ष, सर्प, किन्नर आदि ने भी प्रसन्न होकर हाथों में प्रज्वलित [रत्न-]दीप ले लिये। दिशाओं की अधिष्ठात्री देवियाँ सुगन्धित तैलयुक्त दीपक जलाकर अन्तरिक्ष से रणभूमि में उतरने लगीं। ख़ासकर नारद और पर्वत नाम के दोनों देवर्षियों ने कौरवों और पाण्डवों की सेना में उजेला करने के लिए दीपक जलाकर रणभूमि में पहुँचाये। वह दो भागों में बँटी हुई सेना रात्रि के समय दीपकों की प्रभा, बहुमूल्य दिव्य आभूषणों की चमक और चल रहे शस्त्रों की कान्ति से अत्यन्त शोभा को प्राप्त हुई।

महाराज ! आपकी सेना के हर एक रथ में पाँच, हर एक हाथी पर तीन और हर एक घोड़े पर एक, इस हिसाब से असंख्य दीपक जलाये गये। क्षण भर में वे सब दीपक जल उठे और आपकी सारी सेना में उजेला करने लगे। हाथ में मशालें और तेल लिये हुए पैदलों के झुण्डों से शोभित सेनादल अन्तरिक्ष में बिजलियों से शोभित घनघटा के समान दिखाई पड़ने लगे। इस तरह सेना में उजेला हो जाने पर अग्नि की तरह शत्रुओं को जला रहे सुवर्ण-कवचधारी वीर-श्रेष्ठ द्रोणाचार्य उस सेना के बीच में दोपहर के सूर्य के समान शोभा को प्राप्त हुए। हे कुरुकुलश्रेष्ठ ! उस समय सुनहरे गहने, निष्क, चमकीले धनुष, तरकस और विविध शस्त्रों पर उस प्रकाश की आभा पड़ने से चौगुनी चमक पैदा हो गई। वीरों के द्वारा घुमाई जा रही शैक्य, लोहे की गदा, स्वच्छ परिघ और रथशक्ति आदि पर वह प्रकाश पड़ने से ऐसा जान पड़ने लगा मानों उन अस्त्र-शस्त्रों के भीतर और भी असंख्य दीपक जल रहे हैं। छत्र, चमर, खड्ग, प्रज्वलित बड़ी-बड़ी उल्का और युद्ध कर रहे वीरों की हिलती हुई सुवर्ण की माला आदि पर उस प्रकाश के पड़ने से अपूर्व शोभा दिखाई पड़ने लगी। राजन् ! इस तरह शस्त्रों की चमक, दीपकों के प्रकाश और आभूषणों की कान्ति से आपकी सेना अत्यन्त प्रकाशित हो उठी। चमकीले, रक्त में सने, वीरों के हाथों से चलाये गये, शरीरों को काटनेवाले शस्त्र—वर्षा ऋतु के समय आकाशमण्डल में बिजली की तरह—चारों ओर उस प्रकाश में चमकने लगे। वेग से झपटकर शत्रु पर शस्त्रों का वार कर रहे वीरों के कम्पित मुखमण्डल आँधी में हिल रहे कमलों के समान बहुत २०

ही शोभित हो रहे थे। जिस तरह वृक्षों से परिपूर्ण वन में आग लगने से उसके सामने सूर्य की भी आभा फीकी पड़ जाती है, उसी तरह उस समय आपकी सेना प्रकाश से प्रज्वलित सी हो उठी। उस समय उस सेना का भयानक रूप देखनेवालों के मन में महाभय उत्पन्न कर रहा था।

पाण्डवों ने हमारी सेना में उजेले का प्रबन्ध देखकर तुरन्त अपनी सेना की टुकड़ियों में भी पैदल सेना को दीपक जलाने की आज्ञा दे दी। पैदल सेना के लोगों ने फुर्ती के साथ दीपक और मशालें जला लीं। पाण्डवों ने हर हाथी पर सात, हर रथ में दस और हर घोड़े के ऊपर दो दीपक जलाये। इसी तरह आसपास, ध्वजाओं पर और मध्यस्थल में भी असंख्य दीपक जला दिये गये। सेना के सब दलों में, आसपास, आगे, पीछे, बीच में, चारों ओर दीपक ही दीपक दिखाई पड़ रहे थे। असंख्य पैदल सिपाही हाथों में मशालें और दीपक लेकर सेना के सब भागों में उजेला पहुँचाने लगे। दोनों सेनाओं के बीच में जलती हुई मशालें लेकर लोग घूमने लगे। सेना के सब दलों में हाथी, रथ, घोड़े आदि के ऊपर और पैदलों के हाथों में प्रकाशित दीपकों और मशालों के प्रकाश से आपकी और पाण्डवों की सेनाएँ जगमगा उठीं। राजन्! पाण्डवों की प्रबल सेना के प्रकाश से आपकी सेना वैसे ही अधिकतर ३१ प्रकाशित हो उठी, जैसे सूर्य का प्रकाश पड़ने से अग्नि का तेज और अधिक बढ़ जाता है। दोनों सेनाओं के दीपकों का प्रकाश पृथ्वी, अन्तरिक्ष और सब दिशाओं में फैल गया। उस प्रकाश से आपकी और पाण्डवों की सेनाएँ स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ने लगीं। वह प्रकाश आकाश तक पहुँच गया। उसे देखकर देवताओं के गण, गन्धर्व, यक्ष, असुर, सिद्ध और अप्सरा आदि आकाशचारियों के दल युद्ध देखने के लिए आकर जमा होने लगे। उस समय वह रण का मैदान देवता, गन्धर्व, यक्ष, असुरेन्द्र, अप्सरा आदि के झुण्डों और मरकर स्वर्गारोहण कर रहे वीरों से परिपूर्ण होने के कारण देवलोक सा जान पड़ने लगा। दीपकों से प्रकाशित, क्रुद्ध योद्धाओं और तेज़ी से जा रहे घोड़ों से शोभित, रथ-हाथी-घोड़ों से क्षोभ को प्राप्त और चतुरङ्गिणी सेना की व्यूह-रचना से दर्शनीय दोनों सेनाएँ देवताओं और दैत्यों के व्यूहों के समान जान पड़ती थीं। उस रात्रि के समय रथों के जमघट से वर्षाकाल का दुर्दिन सा प्रतीत होने लगा। क्योंकि चल रही शक्तियों के समूह प्रचण्ड आँधी के समान, बड़े-बड़े रथ मेघमाला के समान, हाथियों घोड़ों और रथों का शब्द मेघगर्जन के समान, शस्त्रों की वर्षा जलवर्षा के समान और रक्त का प्रवाह जलप्रवाह के समान दिखाई पड़ रहा था। महाराज! उस महासमर में प्रचण्ड अग्नि के समान सबको भस्म कर रहे महात्मा द्रोणाचार्य बाणों से पाण्डवों की सेना को वैसे ही तपा रहे थे जैसे शरद ऋतु के आकाश में दोपहर के ३७ समय प्रचण्ड सूर्यदेव अपनी किरणों से सब लोकों को तपाते हैं।

एक सौ चौंसठ अध्याय

घमासान युद्ध का वर्णन

सञ्जय ने कहा—महाराज! अँधेरे और धूल से ढकी हुई उस रणभूमि में इस तरह उजेला होने पर परस्पर वध करने की इच्छा से योद्धा लोग आपस में भिड़ गये। प्रास, खड्ग आदि अनेक शस्त्र हाथों में लिये, एक दूसरे के अपराधी और द्वेषी योद्धा लोग क्रोध की दृष्टि से एक दूसरे को देखने लगे। रत्नजटित सुवर्ण की डण्डियों से शोभित और सुगन्धित तेल से भरे हुए हज़ारों दीपक और मशालें चारों ओर जलने से और देवता, गन्धर्व आदि के रत्नदीपकों से उस समय वह पृथ्वी ऐसी जान पड़ती थी जैसे ग्रह-तारागण आदि से परिपूर्ण आकाश-मण्डल हो। जलती हुई सैकड़ों मशालों और उल्काओं से ऐसा जान पड़ता था, मानों प्रलय-काल में पृथ्वीमण्डल जल रहा हो। उन दीपकों से सब दिशाएँ वैसी ही जान पड़ती थीं जैसे वर्षा ऋतु के सन्ध्याकाल में जुगनुओं से परिपूर्ण वृक्ष होते हैं। राजन्! तब सब वीर योद्धा लोग अलग-अलग भिड़कर युद्ध करने लगे। घुड़सवार घुड़सवार से, हाथी का योद्धा हाथी के योद्धा से, रथी रथी से प्रसन्नतापूर्वक भिड़ गया। उस घोर रात्रिकाल में आपके पुत्र की आज्ञा से लड़ रही चतुरङ्गिणी सेना, हज़ारों की संख्या में, नष्ट होने लगी। इसी समय वीर अर्जुन फुर्ती के साथ बड़े-बड़े राजाओं को मारते हुए कौरव-सेना को चौपट करने लगे।

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! दुर्द्धर्ष असहनशील शत्रुनाशन महावीर अर्जुन जब कुपित होकर मेरे पुत्र की सेना में घुसे तब तुम लोगों के मन का क्या हाल हुआ? [उत्साहित होकर लड़ने लगे या डरकर भाग खड़े हुए?] मेरी सेनाओं ने क्या किया? दुर्योधन ने उस समय क्या अपना कर्त्तव्य निश्चित किया? कौन-कौन शत्रुनाशन वीर योद्धा अर्जुन से लड़ने के लिए उनके आगे आये और किन योद्धाओं ने अर्जुन के आने पर द्रोणाचार्य की रक्षा की? द्रोणाचार्य के रथ के दाहने और बाँयें चक्रों की रक्षा किन लोगों ने की? वीरों का नाश कर रहे आचार्य के पृष्ठ-भाग की रक्षा करते हुए कौन लोग उनके साथ हुए? जब अपराजित महापराक्रमी आचार्य रथ के मार्गों में नाचते से बहुत बड़ा धनुष लेकर पाञ्चालों की सेना में घुसे तब उनके आगे शत्रुओं को मारते हुए कौन-कौन वीर चले? हे सञ्जय! जिन पुरुष-सिंह ने क्रोध से धूमकेतु की तरह प्रज्वलित होकर पाञ्चाल-सेना के रथियों के झुण्ड के झुण्ड नष्ट कर दिये, वे द्रोणाचार्य अन्त को कैसे मारे गये? तुम शत्रुओं को अव्यग्र, अपराजित, प्रसन्न और संग्राम में उत्साहित बतलाते हो और कहते हो कि मेरे पक्ष के रथी मारे गये, छिन्न-भिन्न होकर भागने लगे, शत्रुओं ने उनके रथ नष्ट कर दिये और उन्होंने युद्ध में उत्साह और तेज की कमी दिखलाई।

सञ्जय ने कहा—राजन् ! उस रात्रि में घमासान युद्ध करने के लिए उद्यत द्रोणाचार्य का इरादा जानकर दुर्योधन ने अपने अनुगत भाइयों से और कर्ण, वृषसेन, शल्य, दुर्धर्ष, दीर्घ-बाहु आदि महारथियों तथा उनके साथी योद्धाओं से कहा कि सब लोग यत्नपूर्वक पराक्रम प्रकट करते हुए पीछे रहकर द्रोणाचार्य की ही रक्षा करें। कृतवर्मा उनके दाहने पहिये की और शल्य बाँयें पहिये की रक्षा करें। और त्रिगर्त देश के जो महारथी मरने से बचे थे उन्हें, आचार्य के आगे रहकर, शत्रुओं से लड़ने की आज्ञा दी गई। दुर्योधन ने कहा—वीरवर आचार्य इस समय मन लगाकर शत्रुओं से लड़ेंगे और उन्हें मारेंगे और पाण्डव भी अपनी सेना सहित आचार्य को रोकने और मारने का यत्न कर रहे हैं। इसलिए तुम लोग द्रोणाचार्य की ही रक्षा और सहायता करो। द्रोणाचार्य बलवान्, युद्ध में फुर्ती से हाथ चलानेवाले और प्रतापी हैं। वे युद्ध में, पाञ्चालों सहित पाण्डवों की कौन गिनती है, देवताओं को भी जीत सकते हैं। तुम सब महारथी लोग मिलकर बड़ी सावधानी से महारथी धृष्टद्युम्न से द्रोणाचार्य की रक्षा करो। पाण्डवों की सेना में वीर धृष्टद्युम्न के सिवा और कोई ऐसा नहीं देख पड़ता, जो द्रोणाचार्य का सामना कर सके। इसलिए सब तरह द्रोणाचार्य की रक्षा करना ही हम लोगों का मुख्य काम है। सुरक्षित द्रोणाचार्य पाण्डव, सृञ्जय, सोमक आदि सब शत्रुओं को मार सकते हैं। युद्ध में सेना के अगले भाग में लड़नेवाले सब सृञ्जयगण जब मार डाले जायँगे तब वीर अश्वत्थामा धृष्टद्युम्न को और कर्ण महारथी अर्जुन को मार डालेंगे। फिर मैं भी महाबली भीमसेन को जीत लूँगा। रह गये अन्य पाण्डव, सो वे इन लोगों के मरने पर उत्साह और तेज से हीन हो जायँगे और उन्हें मेरी ओर के अन्य योद्धा सहज ही मार डालेंगे। अतएव इस तरह आज के युद्ध में सदा के लिए मेरी विजय स्पष्ट देख पड़ती है। इसलिए तुम लोग जाकर झटपट महारथी द्रोणाचार्य की ही रक्षा करो।

महाराज! राजा दुर्योधन ने उस अँधेरी रात के दारुण अँधेरे में इस तरह युद्ध करने के लिए सारी सेना को आज्ञा दे दी। अब दोनों सेनाओं में परस्पर विजय की इच्छा से घोर युद्ध होने लगा। अर्जुन कौरव-सेना को पीड़ित करने लगे और कौरव-सेना अर्जुन को पीड़ित करने लगी। इस तरह दोनों पक्ष अनेक अस्त्र-शस्त्रों से एक दूसरे को मारने लगे। अश्वत्थामा धृष्टद्युम्न के पिता पाञ्चालराज द्रुपद को और द्रोणाचार्य सृञ्जयगण को तीक्ष्ण बाणों से घायल करने लगे। आपस में प्रहार कर रहे पाण्डव-पाञ्चाल सैनिकों और कौरव सैनिकों का घोर कोलाहल और आर्तनाद सुनाई पड़ने लगा। राजन्! उस भयङ्कर रात्रि में जैसा घोर संग्राम हुआ वैसा संग्राम हमने या और लोगों ने कभी पहले नहीं देखा-सुना। ३७

एक सौ पैंसठ अध्याय

युधिष्ठिर का कृतवर्मा से हारना

सञ्जय कहते हैं—राजन्! इस तरह सब प्राणियों का नाश करनेवाला महाभयानक रात्रियुद्ध छिड़ने पर युधिष्ठिर ने भी पाण्डव-पाञ्चाल-सोमकगण की सम्मिलित सेना को आज्ञा दी कि तुम लोग दौड़ो, जाओ, द्रोणाचार्य को मारने के लिए उन्हीं पर हमला करो।

राजा की आज्ञा पाकर पाञ्चाल-सृञ्जयगण भयानक शब्द और सिंहनाद करते हुए द्रोणाचार्य की ओर चले। तब हम लोग भी उत्साह और हर्ष के साथ गरजते ललकारते हुए उनकी ओर चले और अपनी शक्ति उत्साह पराक्रम आदि के अनुसार उनसे लड़ने लगे। राजा युधिष्ठिर सेना का सञ्चालन करते हुए आचार्य पर आक्रमण करने आ रहे थे। यह देखकर, एक मस्त हाथी जैसे दूसरे मस्त हाथी से भिड़ने के लिए झपटता है वैसे ही, वीर कृतवर्मा उनसे युद्ध करने चले। चारों ओर संग्रामभूमि में बाण बरसा रहे सात्यकि से युद्ध करने के लिए, कुरुकुल में उत्पन्न, भूरि आगे बढ़े। द्रोण पर झपट रहे महारथी सहदेव को वैकर्तन कर्ण ने रोका। मुँह फैलाये काल के समान भयानक भीमसेन को आते देखकर, जीवन का मोह छोड़कर, राजा दुर्योधन ने उनका सामना किया। सब प्रकार के युद्धों में निपुण श्रेष्ठ योद्धा नकुल को शकुनि ने शीघ्र ही रोका। रथ पर सवार होकर आ रहे शिखण्डी को कृपाचार्य ने रोका। मोर के रङ्ग के घोड़ों से १० शोभित रथ पर आ रहे प्रतिविन्ध्य को दुःशासन ने रोका। सैकड़ों माया जाननेवाले घटोत्कच राक्षस को अस्त्रनिपुण अश्वत्थामा ने रोका। सेना और अनुचरों सहित आ रहे महारथी द्रुपद को वृषसेन ने, द्रोण पर आक्रमण करने से, रोका। आचार्य को मारने के लिए तेज़ी से आ रहे राजा विराट को कुपित शल्य ने रोका। नकुल के पुत्र शतानीक को चित्रसेन ने विचित्र बाणों से रोका। श्रेष्ठ योद्धा महारथी अर्जुन को आते देखकर राक्षसेन्द्र अलायुध ने रोका।

वैसे ही उधर शत्रुओं को रण में मार रहे महाधनुर्द्धर उत्साही महात्मा आचार्य को धृष्टद्युम्न ने रोका। महाराज! इस तरह पाण्डवपक्ष के आये हुए महारथियों को आपके पक्ष के योद्धा वेग से रोकने लगे। हाथियों के ऊपर से लड़नेवाले सैकड़ों-हज़ारों योद्धा गजारोही योद्धाओं से भिड़कर लड़ते दिखाई पड़ते थे। प्रास, शक्ति, ऋष्टि आदि शस्त्र हाथ में लिये हुए घुड़सवार घोड़े दौड़ाते घुड़सवारों से भिड़ गये और गरजने लगे। वेग से घोड़ों को दौड़ाने के २१ कारण वे लोग परदार पहाड़ों के समान जान पड़ते थे। बहुत से पैदल योद्धा गदा, मुशल आदि अनेक शस्त्रों से परस्पर प्रहार कर रहे थे।

राजन्! तटभूमि जैसे समुद्र के वेग को रोके, वैसे हृदीक के पुत्र कृतवर्मा ने क्रुद्ध होकर धर्मपुत्र युधिष्ठिर को रोका। युधिष्ठिर ने ठहर-ठहर कहकर कृतवर्मा को पहले पाँच और फिर बीस शीघ्रगामी बाण मारे। कृतवर्मा ने कुपित होकर भल्ल बाण से युधिष्ठिर का धनुष काट डाला और फिर सात बाण मारे। महारथी युधिष्ठिर ने दूसरा धनुष लेकर कृतवर्मा की छाती और हाथों में दस तीक्ष्ण बाण मारे। धर्मपुत्र के बाणों की चोट खाकर भी कृतवर्मा विचलित नहीं हुए। उन्होंने भी क्रोधपूर्वक युधिष्ठिर को सात बाण मारे। युधिष्ठिर ने उनका धनुष और हस्तावाप काटकर उनको तीक्ष्ण पाँच बाण मारे। वे बाण उनके सुवर्णचित्रित बहुमूल्य कवच को काटकर शरीर को फोड़कर, बिल में साँप की तरह, पृथ्वी में घुस गये। कृतवर्मा ने पल भर में दूसरा धनुष लेकर युधिष्ठिर को साठ और ३० उनके सारथी को नव बाण मारे। तब युधिष्ठिर ने धनुष रखकर विषैले साँप के समान भयङ्कर शक्ति कृतवर्मा के ऊपर चलाई। वह सुवर्ण-चित्रित भारी शक्ति कृतवर्मा के दाहने हाथ को भेदकर पृथ्वीतल में घुस गई। इसी बीच में युधिष्ठिर ने धनुष लेकर कृतवर्मा को तीक्ष्ण बाणों से ढक दिया। कृतवर्मा ने भी फुर्ती के साथ दम भर में युधिष्ठिर के रथ, सारथी और घोड़ों को नष्ट कर दिया। तब युधिष्ठिर ने ढाल और तलवार हाथ में ली; किन्तु

कृतवर्मा ने चटपट तीक्ष्ण बाणों से ढाल और तलवार को काट डाला। अब युधिष्ठिर ने सुवर्ण-दण्डयुक्त असह्य तोमर हाथ में लेकर वेग से कृतवर्मा के ऊपर फेंका। युधिष्ठिर के हाथ से छूटकर आ रहे उस तोमर के कृतवर्मा ने हँसते-हँसते फुर्ती के साथ दो टुकड़े कर दिये। इसके बाद धर्मराज को सौ बाण मारे। कृतवर्मा ने तीक्ष्ण बाणों से धर्मराज का कवच भी काट डाला। कृतवर्मा के बाणों की चोट से युधिष्ठिर का बहुमूल्य सुवर्णरत्नभूषित कवच, आकाश से तारात्रों की तरह, गिर पड़ा। धनुष, रथ और कवच न रहने पर युधिष्ठिर कृतवर्मा के बाणों से पीड़ित होकर उनके आगे से भाग गये। युधिष्ठिर को जीतकर महावीर कृतवर्मा फिर द्रोणाचार्य के रथ के पहियों की रक्षा करने लगे। ४१

एक सौ छाछठ अध्याय

भूरि का मारा जाना। घटोत्कच की हार और दुर्योधन का प्रसन्न होना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! हाथी की तरह वेग से आ रहे सात्यकि का भूरि ने सामना किया। सात्यकि ने क्रुद्ध होकर भूरि के हृदय में पाँच तीक्ष्ण बाण मारे, जिनके लगने से रक्त की धारा बह चली। तब कुरुकुलश्रेष्ठ भूरि ने भी रणनिपुण सात्यकि की छाती में दस बाण मारे। इस तरह क्रोधान्ध, काल-सदृश, दोनों महावीर क्रोध से लाल आँखें किये हुए बड़े-बड़े धनुष खींचकर बाण बरसाने और एक दूसरे को घायल करने लगे। कुछ देर तक दोनों भयानक युद्ध करते रहे। महापराक्रमी सात्यकि ने हँसते-हँसते महावीर भूरि के धनुष को काटकर दो टुकड़े कर दिया। फिर ठहर-ठहर कहकर उनकी छाती में नव तीक्ष्ण बाण मारकर वे गरजने लगे। शत्रु के बाणों से धनुष कटने और बहुत घायल होने पर भूरि को बड़ा क्रोध हो आया। उन्होंने दूसरा धनुष लेकर सात्यकि को तीन बाण मारे और हँसते-हँसते एक तीक्ष्ण

भल्ल बाण से उनका धनुष काट डाला। शत्रु ने जब धनुष काट डाला तब क्रोधान्ध सात्यकि ने, फुर्ती के साथ, भूरि की छाती ताककर एक भयानक शक्ति चलाई। उस शक्ति के १०

लगने से भूरि का शरीर विदीर्ण हो गया और वे आकाश से गिरे हुए प्रकाशमान मङ्गल ग्रह की तरह रथ से गिर पड़े।

राजन्! तब महावीर अश्वत्थामा बड़े वेग से सात्यकि के सामने पहुँचकर, "ठहर जा, ठहर जा" कहकर, गर्जन-तर्जन करते हुए वैसे ही उन पर बाण बरसाने लगे जैसे मेघ किसी पहाड़ पर जल बरसाते हैं। इसी समय महापराक्रमी घटोत्कच ने अश्वत्थामा को सात्यकि के रथ के सामने आते देखकर दारुण सिंहनाद किया और कहा—हे द्रोणाचार्य के पुत्र! तुम यहीं खड़े रहो, मेरे आगे से जीते-जी अन्यत्र नहीं जा सकोगे। कार्त्तिकेय ने जैसे महिषासुर को मारा था वैसे ही आज मैं तुमको मार डालूँगा। हे ब्राह्मण! मैं अभी तुम्हारा युद्ध का शौक़ मिटा दूँगा।

महाराज! क्रोध से लाल-लाल आँखें किये हुए शत्रुनाशन घटोत्कच यों कहकर, कुपित सिंह जैसे गजराज पर झपटता है वैसे ही, बड़े वेग से आक्रमण करने के लिए अश्वत्थामा के सामने पहुँचा और मेघ जैसे पृथ्वी पर पानी बरसाते हैं, वैसे ही अश्वत्थामा के ऊपर रथ के धुरे के बराबर बड़े-बड़े बाण बरसाने लगा। अश्वत्थामा ने भी विषैले साँप के समान बाणों से २० राक्षस के बाणों को व्यर्थ करके उसको मर्मभेदी तीक्ष्ण सौ बाण मारे। अश्वत्थामा के बाणों में घटोत्कच छिप सा गया। वह रणभूमि में काँटों से युक्त स्याही के समान जान पड़ने लगा। फिर कुपित होकर वह वज्र के समान, भयानक क्षुरप्र, अर्धचन्द्र, नाराच, वराहकर्ण, नालीक और विकर्ण आदि विविध बाणों की वर्षा अश्वत्थामा पर करने लगा। महापराक्रमी अश्वत्थामा भी धैर्यधारणपूर्वक दिव्य मन्त्रों से अभिमन्त्रित भयानक बाण बरसाकर राक्षस के चलाये हुए उन वज्रसदृश दुःसह बाणों को वैसे ही छिन्न-भिन्न करने लगे, जैसे हवा अपने वेग से मेघों को तितर-बितर कर देती है। उन दोनों वीरों के बाणों के परस्पर रगड़ खाने और टकराने से आग की चिनगारियाँ निकलने लगीं, जिन्हें देखकर जान पड़ता था कि आकाशमण्डल में सन्ध्या के समय हज़ारों जुगनू चमक रहे हैं। महाराज! अश्वत्थामा ने, आपके पुत्रों के हित के लिए, बाण-वर्षा से सब दिशाओं को व्याप्त कर दिया और बाणों से घटोत्कच को व्याकुल कर डाला।

उस घोर रात्रि के समय अश्वत्थामा और राक्षस घटोत्कच फिर इन्द्र और प्रह्लाद के समान दारुण युद्ध करने लगे। घटोत्कच ने क्रोधान्ध होकर अश्वत्थामा की छाती में कालाग्नि-सदृश दस ३० बाण मारे। गहरी चोट से व्यथित अश्वत्थामा आँधी से हिल रहे वृक्ष की तरह विचलित हो उठे और ध्वजा के डण्डे का सहारा लेकर मूर्च्छित-से हो गये। इस समय आपकी सेना के लोगों ने समझा कि अश्वत्थामा मर गये। इससे वे लोग शोक के मारे हाहाकार करने लगे। अश्वत्थामा की दशा देखकर पाञ्चाल और सृञ्जयगण, उल्लास के मारे, सिंहनाद करने लगे।

दम भर के बाद महावीर अश्वत्थामा ने सचेत होकर बाँयें हाथ में धनुष लेकर उसकी डोरी कान तक खींची और घटोत्कच को ताककर शीघ्र ही एक यमदण्ड-तुल्य भयानक बाण
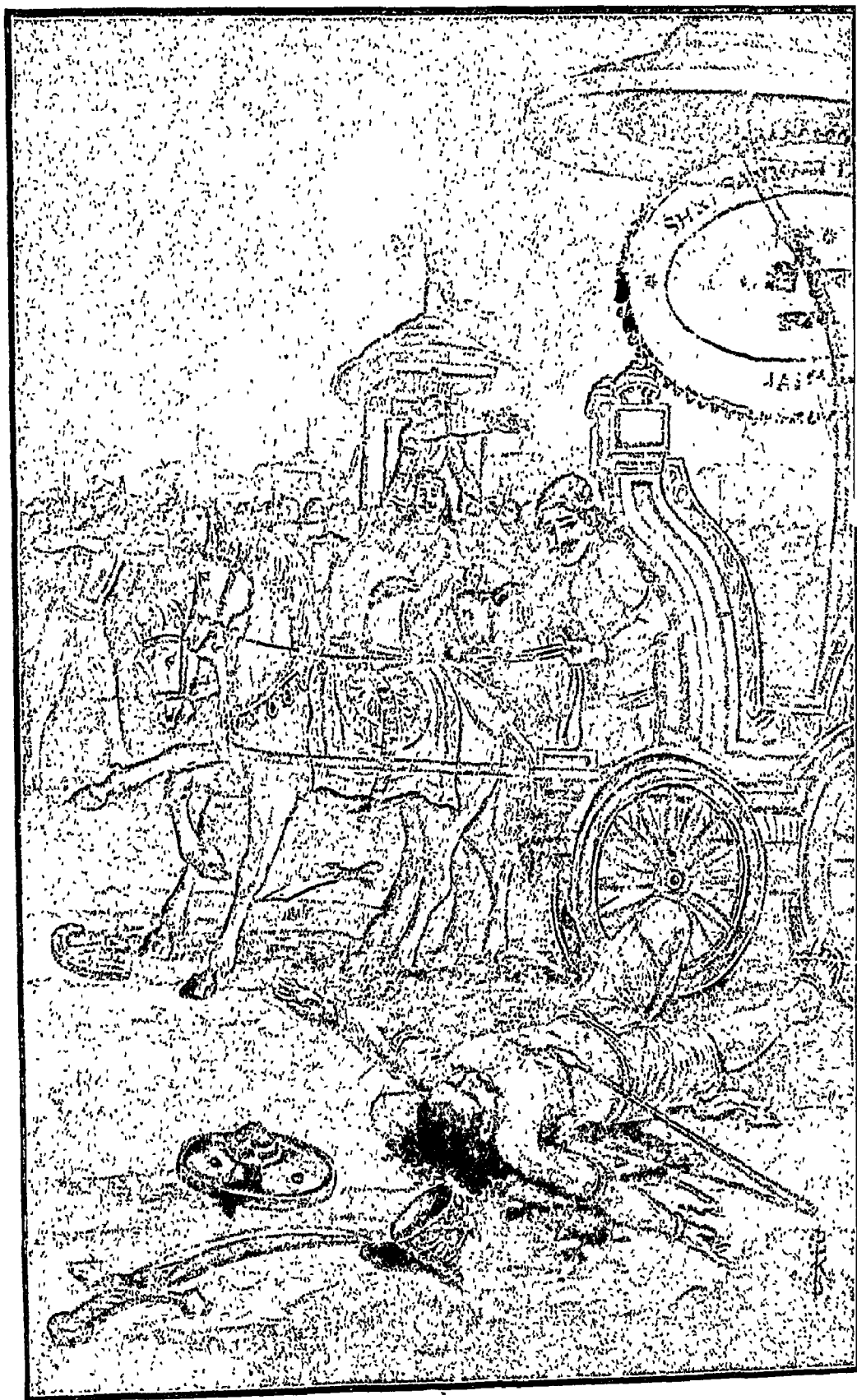
उस शक्ति के लगने से भूरि का शरीर विदीर्ण हो गया और वे......रथ से गिर पड़े।—२४८०

धनुष के सिरे से सहदेव को मारकर, कर्ण कहने लगे ।—पृ० २५८३

छोड़ा। वह सुन्दर पुङ्ख-युक्त वाण घटोत्कच के हृदय को फाड़कर धरती के भीतर घुस गया। अश्वत्थामा के वाण की गहरी चोट खाकर महाशूर घटोत्कच अचेत सा होकर रथ के ऊपर बैठ गया। उसे व्याकुल देखकर सारथी फुर्ती के साथ उसके रथ को अश्वत्थामा के सामने से हटा ले गया। महारथी अश्वत्थामा इस तरह राक्षस-राज घटोत्कच को जीतकर भयानक सिंहनाद करने लगे। दुर्योधन आदि आपके पुत्रों और योद्धाओं ने उनकी प्रशंसा की। उस समय वे मध्याह्न के सूर्य के समान अत्यन्त तेजस्वी और दुर्निरीक्ष्य होकर शत्रु-सेना में तपने लगे। ४०

उधर राजा दुर्योधन भी द्रोणाचार्य से संग्राम कर रहे भीमसेन को तीक्ष्ण वाण मारने लगे। भीमसेन ने दुर्योधन को दस वाण मारे। दुर्योधन ने भी भीमसेन को बीस विकट वाण मारे। वे दोनों वीर एक दूसरे के वाणों से इस तरह ढक गये कि आकाश में मेघों से छिपे हुए चन्द्र-सूर्य के समान जान पड़ने लगे। कुरुराज दुर्योधन भीमसेन को पाँच वाण मारकर "ठहर तो जा, ठहर तो जा!" कहकर गरजने लगे। तब महाबली भीमसेन ने दस वाणों से दुर्योधन के धनुष और ध्वजा के टुकड़े-टुकड़े कर डाले और फिर उनके मर्मस्थलों में अमोघ नव्वे वाण मारे। यह देखकर कुरुराज दुर्योधन अत्यन्त कुपित हो उठे। वे दूसरा दृढ़ धनुष लेकर, सब योद्धाओं के सामने ही, भीमसेन को तीक्ष्ण वाण मारने लगे। महाबली भीमसेन ने दुर्योधन के वाणों को काटकर उनको पचीस क्षुद्रक वाण मारे। तब दुर्योधन ने क्रोधान्ध होकर क्षुरप्र वाण से भीमसेन के धनुष के टुकड़े-टुकड़े कर डाले और उन्हें दस वाणों से घायल किया। वीर भीमसेन ने फ़ौरन् दूसरा धनुष लेकर दुर्योधन को सात वाण मारकर अपनी फुर्ती दिखलाई। राजा दुर्योधन ने चटपट फिर भीमसेन का धनुष काट डाला। ५० राजन्! आपके पुत्र विजयशाली

दुर्योधन ने इस तरह पाँच बार भीमसेन के धनुष काट डाले। बार-बार धनुष कटने के कारण पराक्रमी भीमसेन को बेहद क्रोध हो आया। उन्होंने लोहे की बनी हुई, भारी और भयानक,

शक्ति दुर्योधन के ऊपर चलाई। यमराज की बहन के समान प्राण ले लेनेवाली, अग्निपुञ्ज सी, आकाश-मण्डल में सिंदूर की रेखा सी शोभायमान वह शक्ति दुर्योधन की ओर वेग से चली। महारथी दुर्योधन ने सब योद्धाओं के सामने ही फुर्ती से उस शक्ति के तीन टुकड़े कर डाले। तब भीमसेन ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर, दुर्योधन के रथ को ताककर, बड़े वेग से एक प्रकाशमान भारी गदा चलाई। उस दारुण गदा की चोट से दुर्योधन का रथ, घोड़े और सारथी सब कुछ चूर-चूर हो गया। अब भीमसेन का पराक्रम देखकर दुर्योधन डर के मारे भाग खड़े हुए और वीर नन्दक के रथ पर सवार हो गये। रात के उस घने अँधेरे में रथ टूटने के साथ ही दुर्योधन को मरा हुआ जानकर वीर भीमसेन कौरवों को ललकारने, डराने और सिंह की तरह गरजने लगे। ६० आपके पक्ष के सैनिक भी, दुर्योधन को मृत जानकर, हाहाकार करने और भागने लगे।

इसी समय धर्मराज युधिष्ठिर कौरवपक्ष के योद्धाओं का आर्तनाद और भीमसेन का सिंहनाद सुनकर, दुर्योधन को मरा जानकर, तुरन्त भीमसेन के पास आ गये। तब पाञ्चाल, केकय, मत्स्य और सृञ्जयगण द्रोणाचार्य को मारने के लिए सुसज्जित होकर उनकी ओर जाने लगे। इसके बाद घने अँधेरे में परस्पर प्रहार करते हुए योद्धाओं के सामने ही ६४ शत्रुपक्ष के साथ द्रोणाचार्य का घोर संग्राम होने लगा।

एक सौ सड़सठ अध्याय

कर्ण से सहदेव का और शल्य से विराट का युद्ध

सञ्जय कहते हैं—राजन्! इसी समय महावीर कर्ण ने सहदेव को, आचार्य के पास बड़े वेग से आते देखकर, रोका। पराक्रमी सहदेव ने पहले कर्ण को नव बाण मारकर फिर दस बाणों से घायल किया। महावीर कर्ण ने भी उनको सन्नतपर्वयुक्त सौ बाण मारे और अपनी फुर्ती दिखाकर उनका धनुष और उसकी डोरी काट डाली। महावीर सहदेव ने फ़ौरन् कर्ण के मर्मस्थलों में बीस बाण मारे। यह देखकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ। इसके बाद पराक्रमी कर्ण ने कुपित होकर अनेक बाणों से सहदेव के सारथी और घोड़ों को मार डाला। रथ न रहने पर जब सहदेव ढाल-तलवार लेकर प्रहार करने को उद्यत हुए तब कर्ण ने हँसते-हँसते बाणों से तुरन्त ढाल और तलवार के कई टुकड़े कर डाले। सहदेव ने क्रुद्ध होकर कर्ण के रथ को ताककर एक सुवर्ण-मण्डित बहुत ही भारी भयानक गदा चलाई। प्रतापी कर्ण ने सहदेव की चलाई उस गदा को वेग से आते देखकर, लगातार बाण मारकर, धरती पर गिरा दिया। गदा को ख़ाली जाते देखकर सहदेव ने तुरन्त एक दारुण शक्ति कर्ण के ऊपर चलाई। उसे भी कर्ण ने बाणों से काट डाला।

तब महावीर सहदेव ने घबराकर, रथ से कूदकर, रथ का पहिया निकालकर कर्ण के ऊपर फेंका। कर्ण ने काल-चक्र के समान अकस्मात् अपनी ओर आ रहे उस चक्र को हज़ारों बाणों से तिल-तिल भर काट डाला। इस तरह उस पहिये के भी निष्फल होने पर पराक्रमी सहदेव ने ईषादण्ड, जोत, युग आदि रथ के अङ्ग, मरे हुए हाथियों के शरीर, घोड़ों और मनुष्यों की लाशें वग़ैरह जो कुछ मिला वही उठा-उठाकर कर्ण के ऊपर फेंकना शुरू किया। किन्तु वीर कर्ण ने बाणवर्षा करके उनके सब प्रहारों को व्यर्थ कर डाला। अपने को अस्त्र-शस्त्र से हीन और कर्ण के बाणों से पीड़ित देखकर सहदेव रण छोड़कर भाग खड़े हुए। यशस्वी कर्ण दम भर उनका पीछा करते रहे और हँसकर इस तरह कठोर वचन कहने लगे—हे कायर सहदेव! अपने बराबर के योद्धाओं से ही युद्ध करो, अपने से विशेषता रखनेवाले महारथियों से अब न भिड़ना। मेरी इस बात से डरो मत, मैं तुम्हारा वध न करूँगा। महाराज! यों कहकर, धनुष के सिरे से सहदेव को मारकर, कर्ण कहने लगे—हे सहदेव! वे अर्जुन कौरवों से युद्ध कर रहे हैं, वहीं जाकर अपनी रक्षा करो, या तुम्हारा जी चाहे तो घर को लौट जाओ। ११

महाराज! इस तरह सहदेव को बाणों और वाक्यों से विह्वल करके महारथी कर्ण पाञ्चालों और पाण्डवों की सेना को भस्म करते हुए आगे बढ़ गये। महायशस्वी सत्यप्रतिज्ञ कर्ण ने कुन्ती से वादा कर लिया था कि अर्जुन के सिवा अन्य किसी पाण्डव को नहीं मारूँगा, इसी कारण उन्होंने सहदेव को छोड़ दिया। उधर सहदेव कर्ण के बाणों से घायल और वाक्यों से अत्यन्त व्यथित हो उठे। उदासी के मारे उन्हें अपना जीवन भार सा मालूम पड़ने लगा। तब वे पाञ्चालदेशीय महारथी जनमेजय के रथ पर जल्दी से चढ़कर अन्यत्र युद्ध करने को चल दिये। राजन्! मत्स्य देश के राजा विराट अपनी सेना साथ लिये द्रोणाचार्य से युद्ध करने जा रहे थे। महावीर शल्य ने आगे बढ़कर उनको रोका। शल्य उनके २०

ऊपर लगातार बाण बरसाने लगे। पूर्व समय में इन्द्र के साथ जम्भ का जैसा संग्राम हुआ था वैसा ही घोर युद्ध ये दोनों वीर करने लगे। मद्रनरेश शल्य ने मत्स्याधिपति विराट को सौ तीक्ष्ण बाण शीघ्रता से मारे। राजा विराट ने भी शल्य को पहले नव, फिर तिहत्तर और फिर सौ तीक्ष्ण बाण मारे। तब महापराक्रमी शल्य ने तुरन्त राजा विराट के चारों घोड़े मार डाले और फिर दो बाणों से उनकी ध्वजा और छत्र भी काट गिराया। मत्स्याधिपति विराट बिना घोड़ों के अपने रथ से नीचे कूद पड़े और धनुष चढ़ाकर लगातार तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करने लगे। तब महावीर शतानीक अपने भाई विराट को बिना रथ के, पैदल ही, युद्ध करते देखकर सब योद्धाओं के सामने ही रथ पर बैठकर शूरश्रेष्ठ शल्य के सामने आये। महारथी शल्य ने शता-
३० नीक को आते देखकर कुछ देर तक उनसे युद्ध किया और अन्त को उन्हें मार गिराया।

राजन्! महावीर शतानीक के यों मारे जाने पर सेनापति विराट उनके रथ पर बैठकर क्रोध से लाल-लाल आँखें करके दूना पराक्रम प्रकट करने लगे। उन्होंने धनुष चढ़ाकर इतने बाण छोड़े कि उनसे शल्य का रथ छिप सा गया। तब पराक्रमी शल्य ने अत्यन्त कुपित होकर सेनापति विराट की छाती में बड़ा तीक्ष्ण बाण मारा। शल्य के बाण की गहरी चोट से पीड़ित और अचेत होकर महावीर विराट रथ पर गिर पड़े। उनकी वह दशा देखकर सारथी फ़ौरन् युद्धभूमि से उनका रथ हटा ले गया। उस समय पाण्डवों की सेना शल्य के बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर इधर-उधर भागने लगी। यह देखकर महा-वीर अर्जुन का रथ लेकर कृष्णचन्द्र शल्य के सामने आये। तब राक्षसराज अलम्बुष अर्जुन के सामने आया। उसके रथ में आठ पहिये थे और घुड़मुँहे भयङ्कर पिशाच उस रथ को खींच रहे थे। रक्त से भीगी लाल पताका और लाल मालाएँ उस लोहमय ऋक्षचर्म-मण्डित

रथ की शोभा बढ़ा रही थीं। ऊँचे डण्डे से युक्त ध्वजा पर पङ्ख फैलाये, आँखें निकाले, भयानक
४० शब्द कर रहा एक गिद्ध बैठा हुआ था। पर्वतराज जैसे प्रचण्ड आँधी को रोके वैसे ही उस

गहरे काले रङ्ग की अञ्जनराशि के समान काले अलम्बुप राक्षस ने अर्जुन को रोककर उन पर बहुत से बाण बरसाना शुरू किया। उस समय उसके साथ अर्जुन का ऐसा घोर संग्राम होने लगा कि गिद्ध, कौए, चील्ह, उल्लू, कङ्क, गीदड़ आदि मांसाहारी जीव बहुत ही आनन्दित हुए और देखनेवाले भी सन्तुष्ट हो गये। महावीर अर्जुन ने सौ बाणों से अलम्बुष को अत्यन्त पीड़ित करके तीक्ष्ण नव बाणों से उसकी ध्वजा के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। फिर तीन बाणों से उसके सारथी को मारकर तीन ही बाणों से रथ का त्रिवेणु काटकर एक बाण से धनुप काट डाला और चार बाणों से चारों घोड़े भी मार डाले। तब राक्षसराज अलम्बुप ने एक धनुष लेकर उस पर डोरी चढ़ाई। महावीर अर्जुन ने फुर्ती के साथ उसी दम वह धनुप काट डाला और उसके शरीर में तीक्ष्ण चार बाण मारे। रथ-विहीन अलम्बुष ने अब खङ्ग उठाया तो अर्जुन ने उसके भी दो टुकड़े कर दिये। फिर अर्जुन के चार बाण और लगने से विह्वल होकर अलम्बुप डर के मारे युद्ध छोड़कर भाग खड़ा हुआ।

महाराज! इस तरह पराक्रमी अर्जुन अलम्बुप को परास्त करके शत्रुपक्ष के घोड़े, हाथी, मनुष्य आदि पर बाण बरसाते हुए शीघ्रता के साथ आचार्य की ओर चले। आचार्य के सैनिक अर्जुन से भिड़कर आँधी के उखाड़े वृक्षों की तरह पृथ्वीतल पर गिरने लगे। यह देखकर कौरवपक्ष के सब योद्धा डर के मारे समरभूमि छोड़कर चारों ओर भागने लगे। ५०

एक सौ अड़सठ अध्याय

घमासान युद्ध का वर्णन

सञ्जय कहते हैं—महाराज! इधर आपके पुत्र चित्रसेन ने नकुल के पुत्र शतानीक को, तीक्ष्ण बाणों से कौरव-सेना का नाश करते देखकर, रोका। नकुल के पुत्र ने पाँच बाण मारकर चित्रसेन को पीड़ित किया। चित्रसेन ने भी उनको पहले तीक्ष्ण दस बाण मारकर फिर छाती में विकट नव बाण मारे। तब शतानीक ने सन्नतपर्वयुक्त बहुत से बाण मारकर चित्रसेन का कवच काट डाला। इससे सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। कवच न रहने पर महावीर चित्रसेन केंचुल छोड़नेवाले विषैले साँप के समान शोभायमान हुए। अब शतानीक ने तीक्ष्ण बाणों से उनकी ध्वजा और धनुप काट डाला। इस तरह कवच और धनुष न रहने पर चित्रसेन को बड़ा क्रोध चढ़ आया। उन्होंने शत्रुओं के शरीर को विदीर्ण करनेवाला अन्य धनुष लेकर नव बाणों से शतानीक को घायल किया। तब पराक्रमी शतानीक ने क्रुद्ध होकर चित्रसेन के सारथी और चारों घोड़ों को मार डाला। महाबली चित्रसेन ने उसी दम रथ से उतर-

१० कर शतानीक को पचीस बाण मारे। महावीर शतानीक ने चित्रसेन को बाणों की वर्षा करते देखकर एक अर्धचन्द्र बाण से उनका रत्नमण्डित धनुष काट डाला। इस तरह घोड़े, सारथी, रथ और धनुष न रहने पर वीर चित्रसेन वीर कृतवर्मा के रथ पर चले गये।

राजन्! उधर कर्ण के पुत्र वीर वृषसेन महाराज द्रुपद के ऊपर बाणों की वर्षा करने लगे। द्रुपद ने कर्ण-पुत्र के दोनों हाथों में और छाती में साठ बाण मारे। तब वृषसेन ने भी अत्यन्त कुपित होकर रथ पर सवार राजा द्रुपद की छाती में अतीव तीक्ष्ण बाणों का प्रहार करना शुरू कर दिया। वे दोनों वीर एक दूसरे के बाणों के लगने से कण्टक-रोम-युक्त शल्लकी (स्याही) की तरह शोभा को प्राप्त हुए। सुवर्णपुङ्ख-युक्त नतपर्व सीधे बाणों की चोट से दोनों के शरीर ख़ून से तर हो गये। अद्भुत दो कल्पवृक्षों अथवा फूले हुए ढाक के समान उन सुवर्ण-वर्ण वीरों के शरीर शोभायमान हुए। दोनों के कवच कटकर गिर पड़े।

अब महावीर वृषसेन ने राजा द्रुपद को पहले नव बाण, फिर सत्तर बाण और फिर तीन तीक्ष्ण बाण मारकर विह्वल कर दिया। वे हज़ारों बाण बरसाकर अद्भुत फुर्ती दिखाते हुए २० बरस रहे मेघ के समान दिखाई पड़ने लगे। महावीर द्रुपद ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर तीक्ष्ण भल्ल बाण से वृषसेन के धनुष के दो टुकड़े कर डाले। कर्ण के पुत्र ने उसी दम और एक सुवर्णमण्डित धनुष लेकर तरकस से एक भयानक भल्ल निकालकर उस पर चढ़ाया और सोमकों के हृदय में भय का सञ्चार करते हुए वह बाण राजा द्रुपद के ऊपर छोड़ा। वृषसेन का चलाया हुआ वह बाण राजा द्रुपद के हृदय को छेद करके पृथ्वी के भीतर घुस गया। उस भल्ल के प्रहार से महावीर द्रुपद मूच्छित हो गये। तब सारथी अपने कर्तव्य का ख़याल करके उन्हें लेकर रण से भाग गया।

महाराज! महारथी पाञ्चालराज के भाग जाने पर कौरवों की सेना उस भयङ्कर रात्रि के समय, बाणों से जिनके कवच कट गये हैं ऐसे, द्रुपद के सैनिकों पर आक्रमण करती हुई उनके पीछे दौड़ी। उस समय इधर-उधर दीप जलते रहने के कारण जान पड़ने लगा कि मेघहीन आकाश-मण्डल में ग्रह चमक रहे हैं। चारों ओर अङ्गद आदि के गिरने से वह रणभूमि वर्षा-काल में बिजलियों से शोभित मेघों के समान जान पड़ने लगी। तारकासुर-संग्राम में जैसे इन्द्र के डर से दानव भाग खड़े हुए थे वैसे ही वृषसेन के डर से सोमकगण भागने लगे। वृषसेन ३० के बाणों से पीड़ित होकर भाग रहे सोमकगण दीपकों के उजेले में दूर से भी दिखाई पड़ रहे थे। उन सबको परास्त करके कर्ण-पुत्र दोपहर के सूर्य के समान प्रचण्ड तेज से शोभायमान हुए। कौरव और पाण्डव पक्ष के हज़ारों राजाओं की मण्डली में प्रतापी वृषसेन का तेज ही सबसे अधिक प्रज्वलित हो रहा था। महाराज! वीर कर्ण-पुत्र इस तरह सोमकसेना को छिन्न-भिन्न करके युधिष्ठिर की ओर चले।

इसी समय युधिष्ठिर के पुत्र प्रतिविन्ध्य को कुपित होकर कौरव-सेना का नाश करते देखकर आपके पुत्र दुःशासन उन्हें रोकने के लिए चले। वे दोनों वीर युद्ध के लिए परस्पर भिड़कर आकाश-मण्डल में स्थित बुध और सूर्य के समान शोभायमान हुए। दुःशासन ने अद्भुत कर्म करनेवाले प्रतिविन्ध्य के मस्तक में तीन बाण मारे। दुःशासन के बाण लगने से प्रतिविन्ध्य शिखरोंवाले पर्वत से जान पड़ने लगे। उन्होंने दुःशासन को पहले नव और फिर सात तीक्ष्ण बाण मारे। तब दुःशासन ने तीक्ष्ण बाणों से प्रतिविन्ध्य के घोड़ों को गिराकर एक भल्ल बाण से सारथी को मार डाला। फिर ध्वजा काटकर धनुर्द्धर प्रतिविन्ध्य के रथ के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। क्रुद्ध दुःशासन ने सन्नत-पर्वयुक्त तीक्ष्ण बाणों से प्रतिविन्ध्य के रथ की पताका, तरकस, ४० जोत, रास आदि सब चीज़ों को काट डाला। रथ न रहने पर भी प्रतिविन्ध्य रण से भागे नहीं। वे पैदल ही धनुष हाथ में लेकर असंख्य बाण बरसाने और दुःशासन से युद्ध करने लगे। दुःशासन ने यह देखकर एक क्षुरप्र बाण से इनके उस धनुष के भी दो टुकड़े कर डाले और उनको ताककर दस बाण मारे। उस समय प्रतिविन्ध्य के भाइयों ने प्रतिविन्ध्य को रथहीन देखकर बहुत सी सेना के साथ उनके पास पहुँचकर उनकी सहायता की। प्रतिविन्ध्य श्रुतसोम के चमकीले बढ़िया रथ पर बैठकर अन्य धनुष लेकर दुःशासन को तीक्ष्ण बाणों से घायल करने लगे। यह देखकर कौरव पक्ष के वीरगण दुःशासन की सहायता के लिए बहुत सी सेना सहित आकर, उन्हें अपने बीच में करके, शत्रुपक्ष के साथ युद्ध करने लगे। महाराज! उस अत्यन्त घोर रात्रि में कौरव और पाण्डवगण यमराज के देश को बढ़ानेवाला दारुण युद्ध करने लगे। ४७

एक सौ उनहत्तर अध्याय

नकुल से शकुनि का और कृपाचार्य्य से शिखण्डी का दारुण युद्ध

सञ्जय कहते हैं—महाराज! महाबली शकुनि, नकुल को कौरव-सेना का संहार करते देखकर, सामने जाकर "ठहर जा, ठहर जा" कहकर गरजने लगे। उस समय पहले से वैर में बँधे हुए वे दोनों वीर एक दूसरे को मार डालने की इच्छा से सुदृढ़ विशाल धनुष कान तक खींचकर बाण बरसाने लगे। महावीर नकुल जिस तरह फुर्ती से बाण बरसाते थे, उसी तरह अपनी युद्धशिक्षा दिखाते हुए शकुनि भी बाणों की वर्षा करते थे। दोनों वीरों के शरीरों में इतने बाण लगे कि वे काँटेदार शल्लकी और शाल्मली के पेड़ों के समान जान पड़ने लगे। उनके कवच बाणों की चोट से छिन्न-भिन्न हो गये थे और वे रक्त से नहाये हुए थे। वे विचित्र कल्पवृक्षों अथवा फूले हुए ढाक के पेड़ों की तरह शोभा को प्राप्त हो रहे थे। लाल-लाल आँखें निकालकर वे दोनों वीर इस तरह क्रोध-कुटिल दृष्टि से परस्पर देखते थे मानों एक दूसरे को दृष्टि से ही भस्म कर डालेगा।

अब शकुनि ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर हँसते-हँसते नकुल के हृदय में एक विकट कर्णिक बाण मारा। शकुनि का वह बाण नकुल के हृदय में घुस गया और उसकी असह्य चोट से अचेत हो-
१० कर वे रथ पर बैठ गये। प्रबल शत्रु नकुल की यह दशा देखकर शकुनि वर्षा-काल के मेघ की तरह ज़ोर से गरजने लगे। दम भर के बाद नकुल को होश आ गया और वे मुख फैलाये हुए काल की तरह फिर शकुनि की ओर वेग से चले। उन्होंने अत्यन्त कुपित होकर शकुनि को साठ बाण मारे और फिर उनकी छाती में लगातार सौ बाण मारे। फिर शकुनि के बाणयुक्त धनुष की मूठ फुर्ती से काट डाली और ध्वजदण्ड को भी काट गिराया। इसके बाद नकुल ने एक विकट तीक्ष्ण धारवाला बाण मारा जिससे शकुनि की जाँघें चिर गईं और वे व्याध के बाण से घायल पङ्खदार श्येन पक्षी की तरह रथ पर लोट गये। नकुल के बाण से अत्यन्त पीड़ित शकुनि, जिस तरह नायक किसी स्त्री से लिपटे उसी तरह, ध्वजा के डण्डे से लिपटकर अचेत हो गये। तब उनके सारथी ने उन्हें अचेत होकर रथ पर गिरते देख-कर, रक्षा के लिए, वहाँ से रथ को हटा दिया। यह देखकर पाण्डव और उनके

साथी आनन्द से चिल्लाने और सिंहनाद करने लगे। महावीर नकुल इस तरह शकुनि को परास्त करके सारथी से कहने लगे—हे सूत! तुम अब मेरा रथ द्रोणाचार्य की सेना के सामने
२० ले चलो। आज्ञा पाते ही सारथी रथ को द्रोणाचार्य की तरफ़ ले चला।

इधर कृपाचार्य ने महारथी शिखण्डी को, द्रोणाचार्य के सामने आते देखकर, रोका। तब शिखण्डी ने हँसते-हँसते उनको नव भल्ल बाण मारे। आपके पुत्रों के हितैषी कृपाचार्य ने शिखण्डी को पहले पाँच और फिर बीस बाण मारे। पूर्व समय में इन्द्र और शम्बरासुर का जैसा घोर संग्राम हुआ था वैसा ही अत्यन्त भयङ्कर युद्ध वे दोनों महावीर करने लगे। वे वर्षाकाल के मेघों के समान बाणों की वर्षा से आकाश-मण्डल को पूर्ण करने लगे। उस समय वह संग्राम अत्यन्त भयानक हो उठा। महाराज! वह रात्रि योद्धाओं को कालरात्रि सी जान पड़ने लगी।

जब शिखण्डी ने एक अर्धचन्द्र बाण से कृपाचार्य का धनुष काट डाला तब कृपाचार्य ने क्रोधान्ध होकर शिखण्डी के ऊपर एक सुवर्णदण्ड-शोभित, सीधी नोकवाली, तीक्ष्ण, भयानक शक्ति चलाई। महावीर शिखण्डी ने फुर्ती से बहुत से बाण चलाकर उस शक्ति को काट डाला। वह महा प्रभाववाली शक्ति कटकर पृथ्वी पर गिरकर उस स्थान को प्रकाशित करने लगी। अब कृपाचार्य ने शीघ्र दूसरा धनुष लेकर असंख्य तीक्ष्ण बाणों की वर्षा से शिखण्डी को छिपा सा दिया। आचार्य के बाणों से पीड़ित शिखण्डी मूढ़ और विह्वल से होकर रथ पर बैठ गये, कुछ भी प्रतीकार न कर सके। शिखण्डी को इस तरह सुस्त देखकर, उन्हें मार डालने के लिए, कृपाचार्य लगातार बाण-वर्षा करने लगे। पाञ्चाल-सोमकगण शिखण्डी को अत्यन्त शिथिल और युद्धविमुख देखकर उनकी सहायता के लिए उनके पास पहुँचे। उन्होंने शिखण्डी को अपने बीच में कर लिया। तब आपके पुत्रगण भी बहुत सी सेना साथ लेकर कृपाचार्य की सहायता के लिए पहुँचे। उन्होंने आचार्य को अपने बीच में कर लिया। इसके बाद दोनों पक्ष घमासान युद्ध करने लगे। रथी योद्धा एक दूसरे के सामने उपस्थित होकर प्रहार करने लगे और दौड़ रहे रथों की घरघराहट मेघ-गर्जन सी प्रतीत होने लगी। घोड़ों और हाथियों के सवार एक दूसरे को मारने का उद्योग करने लगे। इस तरह वह समर-भूमि अत्यन्त भयानक हो उठी। दौड़ रहे पैदल सैनिकों के पैरों की धमक से, डरी हुई स्त्री की तरह, पृथ्वी काँप उठी। रथी लोग रथों पर बैठे हुए आगे बढ़कर वैसे ही शत्रुपक्ष पर आक्रमण करने लगे जैसे कौए टीड़ियों पर झपटते हैं। मदमत्त हाथी मदोन्मत्त हाथियों से भिड़कर लड़ने लगे। घोड़ों के सवार घोड़ों के सवारों से और पैदल पैदलों से भिड़कर एक दूसरे का संहार करने लगे। उस रात्रि के समय दौड़ते, भागते और फिर लौटते सैनिकों का घोर कोलाहल चारों ओर गूँज उठा। रथ, हाथी, घोड़े आदि पर जलते हुए दीपक आकाश से गिरी हुई उल्काओं के समान जान पड़ने लगे। हे भरतश्रेष्ठ! दीपकों और मशालों से प्रकाशित उस रात्रि में दिन के समान उजेला हो रहा था। जैसे सूर्य के उजेले से संसार का अँधेरा दूर हो जाता है वैसे ही इधर-उधर प्रकाशित दीपकों से युद्धभूमि का घोर अन्धकार दूर हो गया। पृथ्वी, अन्तरिक्ष, दिशा और उपदिशाएँ सब धूल तथा अन्धकार से व्याप्त हो गई थीं, किन्तु फिर दीपकों का प्रकाश सर्वत्र फैल गया। वीरों के कवच, मणि-आभूषण और अस्त्र आदि की प्रभाएँ उन दीपकों के प्रकाश में फीकी पड़ गईं। हे भारत! रात्रि के समय भयङ्कर युद्ध उपस्थित होने पर किसी को अपने-पराये का ज्ञान नहीं रहा। अनजाने में पिता पुत्र को, पुत्र पिता को, मित्र-मित्र को, मामा भानजे को, भानजा मामा को और आत्मीय लोग आत्मीय स्वजनों को मारने लगे। इस तरह वह दारुण समर मर्यादारहित और कायरों के लिए अतीव भयङ्कर हो उठा।

३८ ४० ५०

एक सौ सत्तर अध्याय

द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न आदि का द्वन्द्व युद्ध

सञ्जय कहते हैं—महाराज ! इस तरह अत्यन्त भीषण संग्राम छिड़ने पर महावीर धृष्टद्युम्न दृढ़ धनुष लेकर बारम्बार उसकी डोरी खींचते हुए आचार्य के सुवर्णभूषित रथ के सामने वेग से चले। द्रोणाचार्य-वध के लिए धृष्टद्युम्न को उद्यत देखकर, उनकी सहायता करने के लिए, पाञ्चाल और पाण्डवगण उनके साथ चले। यह देखकर आपके पुत्र पूरे यत्न से आचार्य की रक्षा करने लगे। इस तरह उस रात के समय दोनों पक्ष के वीरों के भिड़ने पर वे विशाल सेनाएँ क्षोभ को प्राप्त दो सागरों के समान जान पड़ने लगीं। तब महावीर धृष्टद्युम्न आचार्य की छाती में पाँच बाण मारकर सिंहनाद करने लगे। आचार्य ने भी पचीस बाणों से धृष्टद्युम्न को घायल करके एक भल्ल बाण से उनका धनुष काट डाला। आचार्य के बाणों की चोट खाकर प्रतापी धृष्टद्युम्न ने शीघ्र ही वह कटा हुआ धनुष फेंक दिया। उन्होंने ओंठ चबाते-चबाते और एक धनुष हाथ में लिया और आचार्य को मारने के लिए धनुष की डोरी खींचकर उनके ऊपर १० एक जीवन-नाशक भयानक बाण छोड़ा। उस विकट बाण ने सारी सेना को उदित सूर्य की तरह प्रकाशित कर दिया। धृष्टद्युम्न के छोड़े हुए उस बाण को देखकर देवता, गन्धर्व और मनुष्य कहने लगे कि द्रोणाचार्य का कल्याण हो। इसी समय महाबली कर्ण ने फुर्ती के साथ उस बाण के बारह टुकड़े कर डाले। कर्ण के बाणों से टुकड़े-टुकड़े होकर वह बाण विष-हीन साँप की तरह पृथ्वी पर गिर पड़ा। अब महावीर कर्ण ने धृष्टद्युम्न को दस बाण मारे। इसी समय महाबली धृष्टद्युम्न को अश्वत्थामा ने पाँच, द्रोणाचार्य ने सात, शल्य ने दस, दुःशासन ने तीन, राजा दुर्योधन ने बीस और शकुनि ने पाँच बाण मारे। आचार्य की रक्षा के लिए यत्न कर रहे सात महारथियों के बाणों से एक साथ इस तरह पीड़ित पराक्रमी धृष्टद्युम्न ने उनमें से हर एक को तीन-तीन बाण मारे। सब महारथी धृष्टद्युम्न के बाणों से बहुत ही पीड़ित होकर, एकत्र होकर, धृष्टद्युम्न को पाँच-पाँच बाणों से घायल करने लगे।

राजन् ! उस समय वीर द्रुमसेन अत्यन्त कुपित होकर ठहर-ठहर कहते हुए धृष्टद्युम्न के २० सामने आये। उन्होंने पहले एक और फिर अन्य तीन बाण मारे। तब महारथी धृष्टद्युम्न ने फुर्ती के साथ सुवर्णपुङ्ख-शोभित प्राणहारी पैने तीन तीक्ष्ण बाण मारकर एक भल्ल बाण से द्रुमसेन का, सुवर्णकुण्डलों की प्रभा से अलङ्कृत, सिर काटकर गिरा दिया। दाँतों से ओठ चबा रहे द्रुमसेन का सिर, आँधी से पके हुए ताल के फल की तरह, पृथ्वी पर गिर पड़ा। वीर धृष्टद्युम्न ने उन महारथियों को फिर तीक्ष्ण भल्ल बाणों से पीड़ित करके विचित्र युद्ध में निपुण कर्ण का धनुष काट डाला। जैसे महासिंह अपनी पूँछ का कटना नहीं सह सकता वैसे ही वीर कर्ण अपने धनुष

का कटना न सह सके। क्रोध से लाल आँखें किये, साँसें ले रहे, वीर कर्ण ने फ़ौरन् और धनुष हाथ में लिया और महावली धृष्टद्युम्न के ऊपर बाण बरसाना शुरू किया। कर्ण को कुपित देखकर शेष छः महारथियों ने फुर्ती के साथ धृष्टद्युम्न को मार डालने के लिए चारों ओर से घेर लिया। महाराज! आपके छः महारथियों से घिरे हुए धृष्टद्युम्न को देखकर हम लोगों ने जाना कि अब वे जीते नहीं बच सकते। इसी समय महावली सात्यकि, बाणों की वर्षा करते हुए, सहायता करने के लिए धृष्टद्युम्न के पास पहुँच गये। कर्ण ने रणदुर्मद सात्यकि को, आते देखकर, दस तीक्ष्ण बाण मारे। महावीर सात्यकि सब योद्धाओं के सामने ही कर्ण को दस बाण मारकर "भागना नहीं, यहीं ठहरो" कहकर गरजने लगे। अब राजा बलि और इन्द्र के समान पराक्रमी सात्यकि और कर्ण का घोर संग्राम होने लगा। क्षत्रियश्रेष्ठ सात्यकि रथ की घरघराहट से क्षत्रियों को विह्वल करते हुए कर्ण को बाणों से पीड़ित करने लगे। पराक्रमी कर्ण भी धनुष के शब्द से पृथ्वीमण्डल को कँपाते हुए संग्राम करने और विपाठ, कर्णिक, नाराच, वत्सदन्त, क्षुरप्र आदि अनेक प्रकार के बाणों से सात्यकि को व्यथा पहुँचाने लगे। यादवश्रेष्ठ ३०

सात्यकि भी कर्ण के ऊपर बाणों की वर्षा करने लगे। उस समय उन दोनों का युद्ध समभाव से चलने लगा। महावीर कर्ण को आगे करके आपके पुत्र चारों ओर से तीक्ष्ण बाण बरसाकर सात्यकि को घायल करने लगे। महावली सात्यकि अपनी अस्त्रविद्या और बाणों के प्रभाव से सब योद्धाओं सहित कर्ण के बाणों को व्यर्थ करके वृषसेन की छाती में विकट बाण मारने लगे। सात्यकि के अमोघ अनिवार्य बाणों से अत्यन्त पीड़ित और अचेत होकर पराक्रमी वृषसेन रथ पर गिर पड़े। उनके हाथ से धनुष छूटकर गिर गया। यह देखकर वीर कर्ण ने समझा कि वृषसेन मारे गये। वे पुत्रशोक से कातर और क्रोधान्ध होकर सात्यकि को पीड़ित करने लगे। महारथी सात्यकि भी कर्ण के बाणों से व्यथित होकर उन्हें बार-बार विविध बाणों से घायल करने लगे। [इसी बीच में वृषसेन को होश हो आया और वे फिर ४०

युद्ध करने लगे।] सात्यकि ने कर्ण को दस और वृषसेन को सात बाण मारकर दोनों के धनुष और हस्तावाप (दस्ताने) काट डाले। महाबली कर्ण और वृषसेन तुरन्त शत्रुओं के लिए भयङ्कर धनुषों पर डोरी चढ़ाकर चारों ओर से तीक्ष्ण बाणों से सात्यकि को घायल करने लगे।

महाराज! इस तरह वीर-संहारकारी संग्राम छिड़ने पर गाण्डीव धनुष का घोर गम्भीर शब्द लगातार सुनाई पड़ने लगा। कर्ण ने गाण्डीव का शब्द और अर्जुन के रथ के पहियों की घरघराहट सुनकर राजा दुर्योधन से कहा—महाराज! वीर अर्जुन प्रधान-प्रधान वीरों और कौरवों की सेना को मारकर गाण्डीव धनुष का शब्द कर रहे हैं। अर्जुन के मेघनिर्घोष-तुल्य रथ का शब्द सुनाई पड़ रहा है। इससे जान पड़ता है कि अर्जुन अपना कार्य सिद्ध कर रहे हैं। वह देखिए, कौरव-सेना अर्जुन के बाणों की चोट से छिन्न-भिन्न होकर चारों ओर भाग रही है। आपकी सेना के लोग किसी तरह एक स्थान पर ठहर नहीं सकते। हवा जैसे मेघों को तितर-बितर कर देती है वैसे ही अर्जुन अपने बाणों से उन्हें छिन्न-भिन्न कर रहे हैं। अधिक क्या, इस समय आपके सैनिक अर्जुन के सामने पहुँचकर, महासागर में पड़ी हुई छोटी नाव की तरह,

५०

नष्ट-भ्रष्ट हो रहे हैं। हे राजसिंह! देखिए, योद्धा लोग गाण्डीव से छूटे हुए बाणों की चोट से गिर रहे हैं, कोई इधर-उधर भाग रहे हैं। उनका कोलाहल, अर्जुन के रथ के पास—आकाश में मेघ के गरजने के समान—दुन्दुभि बजने का शब्द, आर्तनाद और हाहाकार लगातार सुनाई पड़ रहा है। देखिए, महावीर सात्यकि हम लोगों के बीच में घुस आये हैं और धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य से युद्ध करने में प्रवृत्त होकर भी आपके भाइयों के बीच में घिरे हुए हैं। इस समय जो हम सात्यकि और धृष्टद्युम्न को मार सकें तो अवश्य हमारी विजय होगी। इसलिए हे राजन्! हम सबने मिलकर जिस तरह अभिमन्यु को मारा था उसी तरह इन दोनों वीरों को भी मार डालें। इस समय हमारा यही कर्तव्य है। वह देखिए, धृष्टद्युम्न और सात्यकि को बहुत से कौरव वीरों के साथ संग्राम करते जानकर अर्जुन द्रोणाचार्य की सेना के

सामने आ रहे हैं। अतएव आप सात्यकि के पास बहुत से प्रधान-प्रधान रथी योद्धाओं को भेजिए। सात्यकि को बहुत से वीर रथी घेर लेंगे तो अर्जुन यह नहीं जान सकेंगे कि वे कहाँ पर हैं, इसलिए उनकी सहायता भी नहीं कर सकेंगे। इस समय हमारे पक्ष के सब वीर योद्धा सात्यकि-वध के लिए लगातार तीक्ष्ण बाण बरसावें। ६०

राजन् ! कर्ण के मन का भाव जानकर दुर्योधन शकुनि से कहने लगे—मामाजी ! तुम दस हज़ार रथों और इतने ही हाथियों को साथ लेकर अर्जुन के पास जाओ। दुःशासन, दुर्विषह, सुबाहु और दुःप्रधर्षण, ये असंख्य पैदल सेना लेकर तुम्हारे साथ जायँगे। तुम इस समय कृष्ण, अर्जुन, युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव और भीमसेन को मार डालो। देखो, देवताओं की विजय की आशा जैसे इन्द्र के ऊपर निर्भर है, वैसे ही मेरी जय की आशा तुम्हारे ही भरोसे पर है। अतएव पहले महावीर कार्त्तिकेय ने जैसे असुरों की सेना का नाश किया था, वैसे इस समय तुम पाण्डवों का नाश करो।

हे भरतश्रेष्ठ ! दुर्योधन की आज्ञा के अनुसार, उनका हित करने के लिए, असंख्य सेना सहित आपके पुत्रों को साथ लेकर शकुनि पाण्डवों का नाश करने के लिए रवाना हुए। महाराज ! इस तरह शकुनि ने जब पाण्डवों की सेना में प्रवेश किया तब दोनों ओर से महा-भयानक युद्ध होने लगा। उस समय महारथी कर्ण बहुत सी सेना साथ लेकर बाणों की वर्षा करते हुए सात्यकि की ओर चले। आपके पक्ष के अन्य वीर भी मिलकर सात्यकि को चारों ओर से घेरकर प्रहार करने लगे। अब महावीर द्रोणाचार्य भी धृष्टद्युम्न के सामने जमकर उनसे और पाञ्चालों से भयानक युद्ध करने लगे। ७०

एक सौ इकहत्तर अध्याय

वीरों का द्वन्द्व-युद्ध

सञ्जय कहते हैं—हे नरनाथ ! इसके उपरान्त कौरव पक्ष के युद्धप्रिय वीरगण क्रोध के वश होकर बड़े वेग से सात्यकि के सामने आये। उन्होंने सुवर्णरत्न-विभूषित रथ, घोड़े, हाथी आदि के घेरों से उन्हें घेर लिया। वे गरजते और सिंहनाद करते हुए सात्यकि को मार डालने के लिए असंख्य बाणों की वर्षा करने लगे। धनुर्द्धरश्रेष्ठ, युद्धदुर्मद, शत्रुपक्षविनाशन सात्यकि भी उन महारथियों को आते देखकर असंख्य तीक्ष्ण बाण बरसाने और सन्नतपर्वयुक्त उग्र बाणों से उनके सिर काटने लगे। उन्होंने क्षुरप्र बाणों से हाथियों की सूँड़ों, घोड़ों की गर्दनों और वीरों की आयुध सहित बाहुओं को, काट काटकर, ढेर लगा दिया। उस समय वह समरभूमि इधर-उधर गिरे हुए चँवर और सफ़ेद छत्र आदि से ऐसी जान पड़ती थी, जैसे नक्षत्रमण्डली से शोभित

आकाशमण्डल हो। महाराज! पराक्रमी सात्यकि जब सेना का संहार करने लगे तब ऐसा कोलाहल सुनाई पड़ने लगा मानों प्रेत रो रहे हों। उस शब्द से पृथ्वी परिपूर्ण हो उठी। वह
१० रात्रि भी निष्ठुर रूप धारण करके सब प्राणियों के लिए भयावह हो गई।

महाराज! उस रात्रिकाल में आपके पुत्र राजा दुर्योधन सात्यकि के बाणों से अपनी सेना का नाश होते देखकर और लोमहर्षण उग्र शब्द सुनकर सारथी से कहने लगे—हे सूत! जिस स्थान पर यह तुमुल कोलाहल हो रहा है वहाँ शीघ्र मेरा रथ ले चलो। सारथी आज्ञा पाते ही सात्यकि के सामने रथ ले चला। इस तरह समर में बहुत ही थके हुए, विचित्र युद्ध में निपुण, दृढ़धन्वा दुर्योधन सात्यकि की ओर वेग से चले। तब महाबली सात्यकि ने रक्त पीनेवाले तीक्ष्ण बारह बाण कान तक खींचकर दुर्योधन को मारे। राजा दुर्योधन पहले ही सात्यकि के बाणों की चोट से पीड़ित होकर अत्यन्त कुपित हो उठे। उन्होंने भी सात्यकि को दस बाण मारे। इस समय पाञ्चालों के साथ कौरवों का दारुण संग्राम होने लगा। महाबली सात्यकि ने कुपित होकर राजा दुर्योधन की छाती में अस्सी तीक्ष्ण बाण मारे। फिर असंख्य बाण बरसाकर उनके घोड़ों को मार डाला और सारथी को भी एक बाण मारकर नीचे गिरा दिया। राजा दुर्योधन ने बिना घोड़ों के रथ पर से ही सात्यकि के ऊपर सुतीक्ष्ण पचास बाण
२० चलाये। महावीर सात्यकि ने फुर्ती के साथ दुर्योधन के उन बाणों को काट डाला और एक भल्ल बाण से उनके धनुष की मूठ काट डाली। तब दुर्योधन, धनुष और रथ न रहने पर, शीघ्र ही कृतवर्मा के उज्ज्वल रथ पर चढ़ गये। हे प्रजा-वत्सल! इस तरह राजा दुर्योधन जब समर से भाग गये तब महावीर सात्यकि बाण बरसाने और हमारी सेना को छिन्न-भिन्न करने लगे।

उधर महाबली शकुनि ने हज़ारों हाथी, घोड़े, रथ साथ लेकर चारों ओर से अर्जुन को घेर लिया और वे उन पर लगातार विविध अस्त्र-शस्त्र बरसाने लगे। क्षत्रियगण काल के द्वारा प्रेरित होकर दिव्य अस्त्रों के द्वारा वीर

अर्जुन से युद्ध करने लगे। उस समय महारथी अर्जुन क्रोध के वश होकर [शकुनि को संमर से भगाने के लिए] उन हज़ारों रथों, घोड़ों और हाथियों को मारने लगे। शकुनि ने अर्जुन को सैकड़ों बाण मारकर उनके रथ को रोक दिया। अर्जुन ने शकुनि को बीस और अन्य महाधनुर्द्धरों को तीन-तीन बाण मारकर शत्रुपक्ष के सब बाणों को व्यर्थ कर दिया। महाराज! ३० इन्द्र जैसे असुरों को मारें वैसे वे वज्र के समान और वेग से जानेवाले बाणों से आपके पक्ष के योद्धाओं को मारने लगे। उस समय योद्धाओं के कटे हुए, हाथी की सूँड़ के समान, हज़ारों हाथों से परिपूर्ण रणभूमि ऐसी जान पड़ने लगी कि पाँच मुखवाले नागों से व्याप्त हो रही है। सुन्दर नासिका और कुण्डलों से शोभित, क्रोध के मारे आँखें निकाले और दाँतों से ओठ चबा रहे, निष्क-चूड़ामणि आदि से अलङ्कृत, क्षत्रियों के प्रिय वचन बोलनेवाले मुखमण्डल रणभूमि में कट-कटकर गिर रहे थे, जिनसे वह पृथ्वी खिले हुए कमलों से शोभित सी जान पड़ती थी।

पराक्रमी अर्जुन ने इस तरह भयानक हत्याकाण्ड करके शकुनि को सन्नतपर्वयुक्त पाँच बाणों से घायल किया और शकुनि के सामने ही सिंहनाद करके उनके पुत्र उलूक को तीन बाण मारे। उलूक ने भी क्रुद्ध होकर श्रीकृष्ण को कई बाण मारे और घोर सिंहनाद किया, जिससे पृथ्वीमण्डल मानों गूँज उठा। इसी बीच में अर्जुन ने शकुनि का धनुष काटकर चारों घोड़ों को भी मार डाला। तब शकुनि अपने रथ से कूदकर जल्दी से उलूक के रथ पर चढ़ गये। एक रथ पर बैठे हुए वे पिता और पुत्र उसी तरह अर्जुन के ऊपर बाण बरसाने लगे, जैसे पहाड़ पर मेघ पानी छोड़ते हैं। महाराज! अर्जुन ने उनको तीक्ष्ण बाणों से घायल करके आपकी सेना को बाण- ४० वर्षा से भगाना शुरू किया। हवा के झोंके लगने से मेघ जैसे तितर-बितर होते हैं वैसे ही अर्जुन के बाणों की चोट से आपके सैनिक भाग खड़े हुए। बाणों से

पीड़ित और भय से विह्वल वह सेना रात्रि के समय जान लेकर जिधर सूझ पड़ा उधर भागने लगी। उस दारुण अन्धकार में कुछ सैनिक वाहनों को छोड़कर पैदल ही भागे, कुछ वाहनों को

तेज़ी से हाँकते हुए भागे और कुछ घबराकर इधर-उधर चक्कर खाने लगे। हे भरतश्रेष्ठ ! इस तरह आपके योद्धाओं को जीतकर प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण और अर्जुन अपने-अपने शङ्ख बजाने लगे।

इसी समय धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य को तीन बाण मारकर फुर्ती के साथ एक तीक्ष्ण बाण से इनके धनुष की डोरी काट डाली। क्षत्रियों का मानमर्दन करनेवाले महावीर द्रोणाचार्य ने शीघ्र ही वह धनुष फेंककर एक और दृढ़ धनुष लेकर धृष्टद्युम्न को सात और उनके सारथी को पाँच तीक्ष्ण बाण मारे। तब महारथी धृष्टद्युम्न ने लगातार बाण बरसाकर दम भर में द्रोणाचार्य को युद्ध से भगा करके इन्द्र जैसे असुर-सेना का संहार करें, वैसे ही कौरव-सेना को मारना शुरू कर दिया। राजन् ! इस प्रकार आपके पुत्रों की सेना का जब संहार होने लगा तब दोनों पक्ष की सेनाओं के बीच में वैतरणी के समान भयानक रक्त की नदी बह चली। उसकी लहरों ५० और प्रवाह में सैकड़ों मनुष्यों, घोड़ों और हाथियों की लाशें बहने-उतराने लगीं।

महातेजस्वी धृष्टद्युम्न इस प्रकार कौरव-सेना को नष्ट-भ्रष्ट करके देवताओं के बीच इन्द्र के समान पाण्डवों और पाञ्चालों की सेना के बीच में शोभायमान होकर शङ्ख बजाने लगे। उस समय शिखण्डी, नकुल, सहदेव, सात्यकि और भीमसेन आदि पाण्डव पक्ष के वीरगण भी कौरव दल के हज़ारों राजाओं और क्षत्रियों को मारकर विजयलाभ करके राजा दुर्योधन, कर्ण, ५४ द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा आदि के सामने ही बारम्बार सिंहनाद और शङ्खध्वनि करने लगे।

एक सौ बहत्तर अध्याय

आचार्य द्रोण का सात्यकि से और कर्ण का वीर धृष्टद्युम्न से दारुण युद्ध

सञ्जय कहने लगे कि महाराज ! अब राजा दुर्योधन अपनी सेना को पाण्डवों के बाणों से मरते और भागते देखकर कर्ण और द्रोणाचार्य के पास घबराये हुए पहुँचे और अपनी वचन-चातुरी दिखाते हुए क्रोधपूर्ण स्वर में कहने लगे—हे श्रेष्ठ वीरो ! आप लोगों ने अर्जुन के हाथों जयद्रथ को मारे जाते देखकर, कुपित होकर, यह रात्रियुद्ध की आग जलाई है। किन्तु इस समय पाण्डवों की सेना के वीर मेरी सेना का संहार कर रहे हैं; और शत्रुओं का विनाश करने में समर्थ होकर भी आप लोग क्यों असमर्थ की तरह खड़े-खड़े तमाशा देख रहे हैं ? यदि मेरा साथ छोड़ देने की ही आप लोगों की इच्छा थी तो पहले आप लोगों को यह कहकर भरोसा नहीं देना था कि हम लोग पाण्डवों को परास्त कर देंगे। यदि मुझे पहले से मालूम हो जाता कि आप लोग पाण्डवों के पक्ष को परास्त नहीं करेंगे, तो मैं कभी पाण्डवों से वैर न करता और ऐसा लोकसंहारकारी घोर युद्ध न छेड़ता। ख़ैर, इस समय जो आप दोनों वीर मेरा साथ नहीं छोड़ना चाहते तो अपने योग्य पराक्रम के साथ पाण्डव-सेना से युद्ध करें।

महाराज ! महावीर आचार्य द्रोण और कर्ण राजा दुर्योधन के वचन सुनकर, लाठी की चोट खाये हुए विषैले नाग की तरह, अत्यन्त क्रुद्ध हो उठे। वे तर्जन-गर्जन करते हुए घोर युद्ध करने की इच्छा से पाण्डवपक्ष के सात्यकि आदि वीरों की ओर वेग से आगे बढ़े। तब पाण्डव भी अपने सेनादलों को साथ लेकर इन दोनों महारथियों के सामने आये। महाधनुर्द्धर, सब अस्त्रों के ज्ञाता, आचार्य द्रोण ने कुपित होकर शीघ्रता के साथ सात्यकि को दस बाण मारे। महावीर कर्ण ने दस, राजा दुर्योधन ने सात, वृषसेन ने दस और शकुनि ने सात तीक्ष्ण बाण सात्यकि को मारे। इसी समय सोमकगण आचार्य को पाण्डव-सेना का नाश करते देखकर चारों ओर से उन पर बाणों की वर्षा करने लगे। महातेजस्वी द्रोण क्रोध से अत्यन्त विचलित हो उठे। सूर्य जैसे अपनी किरणें फैलाकर अँधेरे को दूर करते हैं, वैसे ही वे भी बाण बरसा-कर क्षत्रियों के प्राण हरने लगे। द्रोणाचार्य के बाणों की चोट से पीड़ित होकर पाञ्चालगण घोर आर्तनाद करने लगे। कोई पुत्र को, कोई पिता को, कोई भाई को, कोई मामा को, कोई भानजे को, कोई मित्र को, कोई सम्बन्धी और बान्धव आदि को छोड़-छोड़कर जान बचाने के लिए भागने लगे। कोई-कोई बाण-प्रहार से मूढ़-से होकर द्रोणाचार्य के सामने ही दौड़कर जाने लगे। उस घोर संग्राम में पाण्डवपक्ष की असंख्य सेना मारी गई। जो सेना मरने से बची वह, द्रोणाचार्य के बाणों से अत्यन्त व्यथित होकर, पाण्डवों के, श्रीकृष्ण के और धृष्टद्युम्न के सामने ही भागने लगी। उस समय पाण्डवों की सेना ने दीपक और मशालें फेंक दीं, इस कारण चारों ओर घना अँधेरा छा गया। किसी को भी कुछ नहीं सूझता था। केवल कौरवपक्ष के दीपकों के उजेले में पाण्डवपक्ष के योद्धाओं का भागना भर नज़र आता था। इसी समय द्रोणाचार्य और कर्ण पाण्डवों की सेना को भागते देखकर बाण बरसाते हुए वेग के साथ उसका पीछा करने लगे।

राजन् ! पाञ्चालगण जब इस तरह भागने और नष्ट होने लगे तब श्रीकृष्ण ने बहुत ही खेद के साथ कहा—हे अर्जुन ! महावीर सात्यकि और धृष्टद्युम्न पाञ्चाल-सेना को साथ लिये हुए द्रोणाचार्य और कर्ण से युद्ध कर रहे हैं। इस समय हमारे पक्ष के महारथी और सेना सभी कर्ण तथा आचार्य के अचूक बाणों की चोट से छिन्न-भिन्न होकर भाग रहे हैं, किसी तरह युद्ध करने को नहीं लौटते हैं। इसलिए आओ, हम यत्नपूर्वक उन्हें लौटावें। अब महारथी अर्जुन और श्रीकृष्ण भाग रहे अपने सैनिकों को पुकारकर कहने लगे—हे श्रेष्ठ योद्धाओ ! क्षत्रियों ! तुम लोग भयविह्वल होकर भागो नहीं। डरो मत। यह देखो, हम सैन्य-संग्रह करके व्यूह बनाकर द्रोणाचार्य और कर्ण को रण से भगाये देते हैं।

महाराज ! इसी समय वीरवर भीमसेन भागती हुई सेना को लौटा लाये। उनको आते देखकर श्रीकृष्ण ने अर्जुन के हृदय में हर्ष सञ्चार करने के लिए फिर कहा—वह देखो,

समर में प्रशंसनीय अद्भुत कार्य करनेवाले महावीर भीमसेन क्रुद्ध होकर, सोमकगण और पाण्डवों की सेना साथ लेकर, द्रोणाचार्य और कर्ण से संग्राम करने को आ रहे हैं। इसलिए तुम भीमसेन के और अपने दल के पाञ्चालदेशीय महारथियों के साथ होकर शत्रुपक्ष की सेना का संहार करो। अब पराक्रमी अर्जुन और श्रीकृष्ण कर्ण और आचार्य द्रोण के सामने पहुँचे।

सञ्जय कहते हैं—तब पाण्डवपक्ष की सब सेना फिर लौटकर शत्रुओं का संहार करती हुई द्रोण और कर्ण के सामने उपस्थित हुई। उस समय पूर्ण चन्द्रमा के उदय से उमड़े हुए दो महासागरों के समान अत्यन्त उत्तेजित दोनों पक्ष की सेना उस रात्रिकाल में परस्पर भिड़कर घमासान युद्ध करने लगी। कौरवदल के सैनिक उन्मत्त की तरह दीपक छोड़कर धीर स्थिर भाव से पाण्डवों के साथ घमासान युद्ध करने लगे। उस समय धूलि और अँधेरा सब दिशाओं में छा गया। जय की इच्छा रखनेवाले वीर योद्धा लोग अपने-अपने नाम गोत्र सुना-सुनाकर युद्ध करने लगे। हे भरतश्रेष्ठ! स्वयंवर की सभा में जैसे राजा लोगों के नाम गोत्र आदि का विवरण सुन पड़ता है, वैसे ही उस रणभूमि में युद्ध कर रहे राजाओं के नाम गोत्र आदि का बखान सुनाई पड़ने लगा। महाराज! उस समय कुछ देर तक रणभूमि में सन्नाटा सा छा गया। किन्तु दम भर बाद जब सैनिक क्रोधान्ध होकर भिड़ गये तब हारने और जीतनेवाली दोनों सेनाओं में फिर दारुण कोलाहल कान फोड़ने लगा। उस समय जिस जिस जगह दीपक या मशाल का उजेला दिखाई पड़ता था, उसी-उसी जगह वीरगण पतिङ्गों की तरह जा टूटते थे। इस तरह पाण्डवों और कौरवों का तुमुल युद्ध होने पर रात भी धीरे-धीरे अत्यन्त भयानक रूप धारण करने लगी।

एक सौ तिहत्तर अध्याय

घटोत्कच के साथ कर्ण के युद्ध का आरम्भ

सञ्जय ने कहा—हे कुरुकुल-तिलक ! इसके बाद शत्रुदमन कर्ण ने रणभूमि में धृष्टद्युम्न को देखकर उनकी छाती में मर्मभेदी दस तीक्ष्ण बाण मारे। महारथी धृष्टद्युम्न ने ठहर जा, ठहर जा कहकर कर्ण को दस बाण मारे। इस तरह वे दोनों महावीर कान तक धनुष की डोरी खींचकर एक दूसरे को तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित और आच्छन्न करने लगे। महापराक्रमी कर्ण ने युद्धभूमि में पाञ्चालों के प्रधान धृष्टद्युम्न के सारथी और चारों घोड़ों को मारकर तीक्ष्ण बाणों से उनका धनुष काट डाला। इस तरह महारथी धृष्टद्युम्न घोड़े, सारथी और धनुष न रहने पर हाथ में परिघ लेकर रथ पर से कूद पड़े, और वेग से कर्ण के रथ के पास जाकर उन्होंने उनके चारों घोड़ों को मार डाला। कर्ण ने जब उन्हें ज़हरीले बाण मारे तब वे पैदल ही पाण्डवों की सेना में लौट आये। यहाँ वे सहदेव के रथ पर सवार होकर कर्ण से भिड़ने को तैयार हुए तो धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने रोककर कहा कि अब तुम कर्ण से युद्ध न करो। उधर महाप्रतापी कर्ण सिंहनाद, धनुष की टङ्कार और शङ्खनाद करने लगे।

राजन् ! तब महारथी पाञ्चाल और सोमकगण धृष्टद्युम्न को परास्त देखकर बहुत ही क्रुद्ध हो उठे। वे अस्त्र-शस्त्र लेकर, जीवन की आशा छोड़कर, वेग से कर्ण के सामने जाने लगे। इसी समय कर्ण का सारथी, सिन्धु देश के, शीघ्रगामी सफ़ेद घोड़ों को रथ में जोतकर कर्ण के पास ले आया। तब एकाग्र होकर महारथी कर्ण वैसे ही पाञ्चाल देश के महारथियों पर बाण बरसाने लगे जैसे मेघ पहाड़ पर जलधारा बरसाता है। पाञ्चाल-सेना के वीर कर्ण के बाणों से बहुत पीड़ित हो उठे। वे सिंह के मारे मृगों की तरह डरकर भागने लगे। अनेक योद्धा घोड़ों, हाथियों और रथों पर से पृथ्वी पर गिर पड़े। महाबाहु कर्ण वेग से रथ दौड़ाकर भाग रहे हाथियों के सवारों और पैदलों पर क्षुरप्र बाण बरसाने लगे। किसी के हाथ, किसी
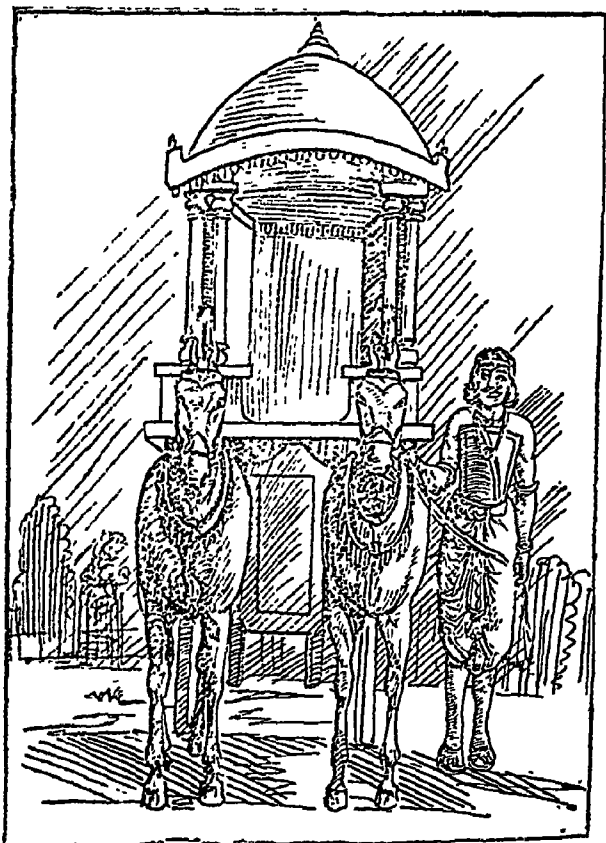
१०

की जाँघें और किसी के कुण्डल-शोभित मस्तक कट-कटकर पृथ्वी पर गिरने लगे। उस समय अन्यान्य महावीरगण युद्ध में ऐसे तन्मय हो गये कि उन्हें अपने छिन्न-भिन्न शरीरों और वाहनों का भी कुछ ख़याल नहीं रहा। पाञ्चाल और सृञ्जयगण इस तरह अत्यन्त पीड़ित और खिन्न होने लगे। उस समय तिनके के खड़कने पर भी उन्हें जान पड़ता था कि कर्ण आ गये। वे अपने पक्ष के योद्धाओं को भी कर्ण समझकर उनके पास से भागने लगे। पराक्रमी कर्ण चारों ओर बाण बरसाते हुए उनके पीछे दौड़े। कर्ण और द्रोणाचार्य के बाणों की मार से अचेत से होकर पाञ्चाल लोग चारों ओर देखते हुए भागने लगे। समरभूमि में कोई भी टिक न सका।

२८

राजन्! उस समय युधिष्ठिर ने अपनी सेना को भागते देख, ख़ुद भी जी छोड़कर भागने की इच्छा मन में रखकर, अर्जुन से कहा—भाई, वह देखो, महावीर कर्ण इस भयङ्कर रात के समय प्रचण्ड सूर्य की तरह तप रहे हैं। तुम्हारे योद्धा कर्ण के बाणों से अत्यन्त व्यथित होकर अनाथ की तरह आर्तनाद करते हुए भाग रहे हैं। कर्ण ऐसी फुर्ती दिखा रहे हैं कि वे कब बाण धनुष पर चढ़ाते हैं और कब छोड़ते हैं, यह नहीं देख पड़ता। इससे जान पड़ता है कि ये हमें जीता न छोड़ेंगे। हे अर्जुन! अब समयोचित कर्तव्य का निश्चय करके ऐसा करो, जिसमें शीघ्र कर्ण का वध हो।

महाराज! युधिष्ठिर के यों कहने पर अर्जुन ने कहा—हे श्रीकृष्ण! आज सूतपुत्र का पराक्रम देखकर धर्मराज बहुत डर गये हैं। देखो, कौरव-सेना बारम्बार हम लोगों पर आक्रमण कर रही है। इसलिए तुम झटपट समय के योग्य कार्य करो। आचार्य के बाणों से पीड़ित होकर हमारे सैनिक भाग रहे हैं। कोई भी समरभूमि में टिक नहीं सकता। महाबाहु कर्ण भी तीक्ष्ण बाणों की चोट से प्रधान-प्रधान योद्धाओं को भगाते हुए बेखटके समरभूमि में विचर रहे हैं। हे श्रीकृष्ण! साँप जैसे किसी के पैर का प्रहार नहीं सह सकता, वैसे ही युद्धभूमि में कर्ण का यह पराक्रम मेरे लिए असह्य है। हे कृष्णचन्द्र! तुम अभी कर्ण के पास मेरा रथ ले चलो। आज या तो मैं कर्ण को मारूँगा और या वही दुरात्मा मुझको मार डालेगा।

३१

श्रीकृष्ण ने कहा—हे अर्जुन! मैं अलौकिक पराक्रमी कर्ण को इन्द्र की तरह रणभूमि में विचरते देख रहा हूँ। तुम्हारे या घटोत्कच के सिवा और कोई इस समय कर्ण से युद्ध नहीं कर सकता; किन्तु इस समय कर्ण के पास तुम्हारा जाना मुझे ठीक नहीं जान पड़ता। कर्ण ने तुम्हारे नाश के लिए प्रकाशमान भारी उल्का के समान, इन्द्र की दी हुई, भयानक शक्ति बड़े यत्न से अपने पास रख छोड़ी है। उसी अमोघ शक्ति के बल पर वह इस तरह भयङ्कर युद्ध करता हुआ बेखटके विचर रहा है। इसलिए सदा तुम्हारा भक्त अनुगत घटोत्कच ही इस समय कर्ण का सामना करे। वह देवसदृश पराक्रमी राक्षस भीमसेन के वीर्य से उत्पन्न हुआ है।

अर्जुन का आह्वान सुनते ही विचित्र कवच पहने हुए खड्ग और धनुष-बाण आदि लेकर उनके पास आ पहुँचा।—पृ० २६०१

दिव्य, आसुर, राक्षसों और मनुष्यों के सब अस्त्र-शस्त्रों के प्रयोग में वह विशेष रूप से पारदर्शी है। इसलिए घटोत्कच ही कर्ण को मार सकता है। ४०

महाराज! श्रीकृष्ण के ये वचन सुनकर अर्जुन ने उसी समय घटोत्कच को अपने पास बुलाया। विचित्र कवच पहने हुए घटोत्कच अर्जुन का आह्वान सुनते ही खड्ग और धनुष-बाण आदि लेकर उनके पास आ पहुँचा। अर्जुन और श्रीकृष्ण को प्रणाम करके गर्व के साथ घटोत्कच ने कहा—महात्मन्! मैं उपस्थित हूँ। आज्ञा दीजिए, क्या करूँ? तब श्रीकृष्ण ने मुसकराकर उस उज्ज्वल वदनवाले काले मेघ के समान घटोत्कच से कहा—हे घटोत्कच! मेरी बात को ध्यान देकर सुनो। इस तुमुल संग्राम में तुम्हारे ही अनुपम पराक्रम के प्रकट करने की बारी है। तुम्हारे सिवा और कोई कर्ण के आगे युद्ध में अपूर्व पराक्रम नहीं प्रकट कर सकता। तुम राक्षसी मायाएँ और बहुत प्रकार के अद्भुत अमोघ अस्त्रों का प्रयोग जानते हो। इसलिए तुम इस समय समरसागर में डूब रहे पाण्डवों को नाव बनकर उबारो। वह देखो, पाण्डवों की सेना उस गायों के झुण्ड की तरह, जिसे चरानेवाले पीट रहे हों, कर्ण के बाणप्रहार से डरकर भाग रही है। महाप्रतापी कर्ण पाण्डव-सेना के मुख्य-मुख्य क्षत्रियों का संहार कर रहा है। पराक्रमी धनुर्द्धर योद्धा लोग असंख्य बाणों की वर्षा करके भी कर्ण के बाणों की मार से रणभूमि में नहीं ठहर सकते। इस घोर आधी रात के समय पाञ्चालगण कर्ण के तीक्ष्ण बाणों से बहुत ही पीड़ित हो रहे हैं, और सिंह के आक्रमण से डरे हुए मृगों की तरह भयाकुल होकर भाग रहे हैं। हे घटोत्कच! इस समय तुम्हारे सिवा कर्ण को और कोई नहीं रोक सकता। इसलिए तुम माता और पिता के कुल तथा अपने तेज, पराक्रम एवं अस्त्रबल के अनुरूप कार्य करो। हे घटोत्कच! मनुष्य यह कामना किया करते हैं कि पुत्र हमें और हमारे भाई-बन्धुओं को इस लोक में दुःख से बचावेगा और परलोक में उसके द्वारा श्रेष्ठ गति प्राप्त होगी। इसी के लिए लोग पुत्र की इच्छा करते हैं। अतएव इस समय तुम सङ्कट के सागर में पड़े हुए अपने पितृकुल और उसके भाई-बन्धुओं को उबारो। तुम सब तरह समर्थ हो। तुम जब युद्ध करते हो तब तुम्हारे अस्त्रों का प्रभाव अत्यन्त भयानक और मायाएँ दुस्तर हो उठती हैं। इसलिए तुम इस रात के समय कर्ण के बाणों से छिन्न-भिन्न पाण्डव-सेना का उद्धार करो। हे राक्षसेन्द्र! राक्षसगण रात्रि के समय अमित पराक्रमी, अत्यन्त दुर्द्धर्ष और रण-निपुण हो उठते हैं। रात्रि के समय उनका मायाबल बहुत बढ़ जाता है। इसलिए तुम इस घोर आधी रात में मायाबल से धनुर्द्धर कर्ण का वध करो। इधर पाण्डवगण धृष्टद्युम्न को अपना अगुआ बनाकर द्रोणाचार्य को मारेंगे। ५०

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! श्रीकृष्ण के यों कह चुकने पर अर्जुन ने भी घटोत्कच से कहा—वत्स! सारी पाण्डव-सेना में तुम, महारथी सात्यकि और महाबाहु भीमसेन, यही तीन

९० योद्धा मेरी राय में सबसे श्रेष्ठ हैं। अब तुम इस रात्रिकाल में कर्ण के साथ द्वैरथ युद्ध करो। पराक्रमी सात्यकि तुम्हारे पृष्ठरक्षक होंगे। पहले इन्द्र ने जैसे महावीर कार्त्तिकेय के साथ मिलकर, उन्हें सेनापति बनाकर, तारकासुर को मारा था वैसे ही तुम आज महारथी सात्यकि के साथ मिलकर कर्ण को मार गिराओ।
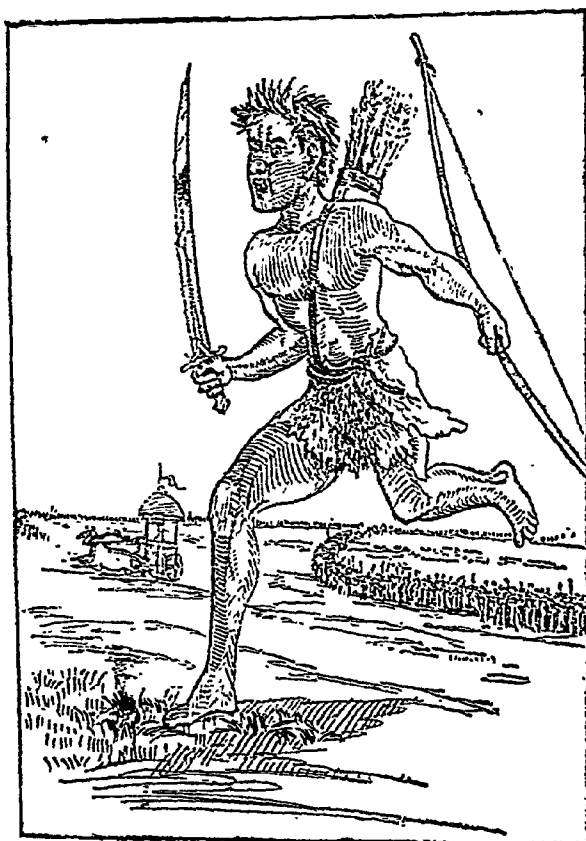
अर्जुन के ये वचन सुनकर राक्षसराज घटोत्कच बोला—महात्मन्! क्या कर्ण, क्या द्रोण और क्या अन्य सब अस्त्रविद्या के पारदर्शी श्रेष्ठ क्षत्रियगण, कोई भी हो, मैं संग्राम में सबको परास्त कर सकता हूँ। मैं आज कर्ण के साथ ऐसा युद्ध करूँगा कि जब तक यह पृथ्वी रहेगी, तब तक लोग उसकी चर्चा करेंगे। आज क्या शूर, क्या कायर, क्या भयविह्वल होकर हाथ जोड़नेवाला, शरणागत, भागनेवाला, कोई भी शत्रुपक्ष का मनुष्य मेरे हाथ से नहीं बचेगा। राक्षसधर्म के अनुसार मैं सबको मार डालूँगा। महाराज! शत्रुनाशन घटोत्कच यों कहकर आपके सैनिकों के हृदय में भय उत्पन्न करता हुआ कर्ण के साथ युद्ध करने को बड़े वेग से चला। महाधनुर्द्धर कर्ण ने उस प्रज्वलित मुखवाले विषैले नाग के समान क्रोध से आ रहे निशाचर को हँसते-हँसते रोका। हे राजसिंह! उस समय महाबाहु कर्ण
९८ और घटोत्कच दोनों ही इन्द्र और प्रह्लाद की तरह दारुण संग्राम करने लगे।

एक सौ चौहत्तर अध्याय

जटासुर के पुत्र अलम्बुष के साथ वीर घटोत्कच का भयानक युद्ध

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! राजा दुर्योधन ने घटोत्कच को कर्ण के मारने की इच्छा से वेग से आते देखकर दुःशासन से कहा—भाई! वह देखो, राक्षसश्रेष्ठ घटोत्कच कर्ण के वेग और पराक्रम को देखकर उनसे लड़ने को आ रहा है। इसलिए महाबली पराक्रमी कर्ण जहाँ पर घटोत्कच से युद्ध करने के लिए स्थित हैं, उस जगह पर तुम असंख्य सेना साथ लेकर जाओ

और यत्नपूर्वक उनकी रक्षा करो। यह भयङ्कर निशाचर असावधानता के कारण कहीं कर्ण का नाश न कर डाले। महाराज! राजा दुर्योधन दुःशासन को यों आज्ञा दे ही रहे थे कि महाबल-शाली जटासुर के पुत्र अलम्बुष* राक्षस ने दुर्योधन के पास आकर कहा—राजन्! आप आज्ञा कीजिए। मैं आपके शत्रु रणदुर्मद पाण्डवों को, उनके अनुचर राजाओं सहित, मार डालना चाहता हूँ। पूर्व समय में नीचप्रकृति पाण्डवों ने मेरे पिता राक्षसश्रेष्ठ जटासुर का वध किया है, इसलिए वे मेरे घोर वैरी हैं। मैं इस समय आपकी आज्ञा पाकर शत्रुओं के रक्त और मांस से पूर्वपुरुषों को तृप्त करना चाहता हूँ। मेरी उत्कट इच्छा है कि मैं इस तरह अपने पिता के ऋण से छुटकारा पाऊँ।

महाराज! अलम्बुष के वचन सुनकर कुरुपति दुर्योधन बहुत प्रसन्न हुए। वे बारम्बार अलम्बुष की प्रशंसा करके उसे उत्साहित करते हुए आह्लादपूर्वक कहने लगे—हे राक्षसेन्द्र! तुम द्रोण, कर्ण आदि श्रेष्ठ वीरों की सहायता से सहज ही पाण्डवों का नाश कर सकोगे। अब मैं तुमको अनुमति देता हूँ कि तुम झटपट इस क्रूरकर्मा मनुष्यपुत्र निशाचर घटोत्कच को पहले मारो। यह पाण्डवों का परम हितैषी दुरात्मा निशाचर आकाश-मार्ग में स्थित होकर मेरे रथ, घोड़े, हाथी, मनुष्य आदि को नष्ट कर रहा है। इसलिए शीघ्र ही इसे मार गिराओ। १०

अब भीषणमूर्ति जटासुर के पुत्र ने राजा दुर्योधन की बात मानकर घोर युद्ध ठान दिया। उसने घटोत्कच को ललकारकर उस पर बाण बरसाना शुरू किया। तब घटोत्कच ने भयानक पराक्रम प्रकट किया। प्रचण्ड आँधी जैसे मेघों को छिन्न-भिन्न कर डालती है, वैसे ही अकेले घटोत्कच ने अलम्बुष, कर्ण और दुस्तर कुरु-सेना को मथना शुरू किया। पराक्रमी अलम्बुष
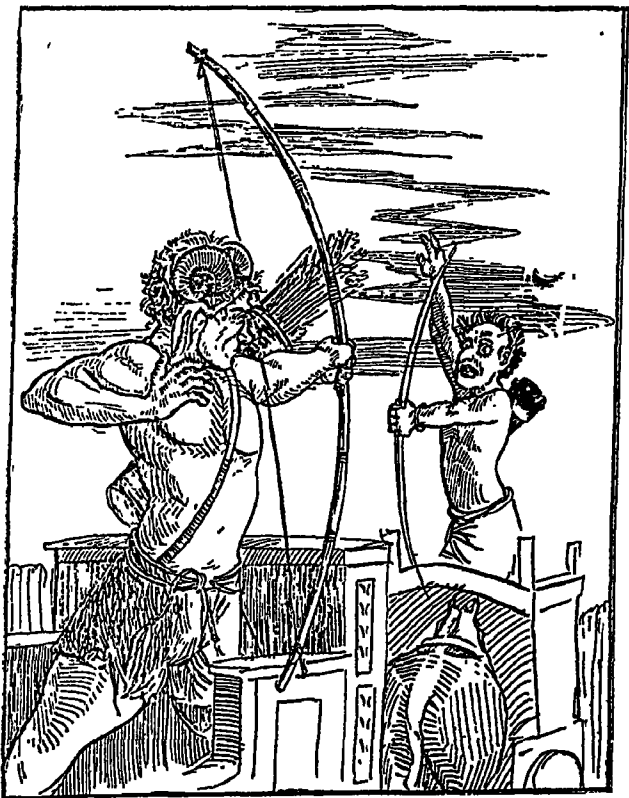
* इससे पहले अलम्बुष का तीन बार युद्ध हो चुका है। पृष्ठ २४०३ में, शालकटङ्कट नाम से प्रसिद्ध, राक्षस अलम्बुष को घटोत्कच ने मारा है। पृष्ठ २४६१ में सात्यकि ने राजा अलम्बुष को मारा है और पृष्ठ २५८५ में राक्षसराज अलम्बुष अर्जुन से परास्त होकर रणभूमि से भाग गया है।

ने घटोत्कच के मायाबल को देखकर उसे अनेक प्रकार के बाणों से पीड़ित करके पाण्डव-सेना को तहस-नहस कर डाला। पाण्डवों की सेना पवन-सञ्चालित मेघों की तरह छिन्न-भिन्न हो पड़ी। इधर आपकी सेना भी महावीर घटोत्कच के बाणों से घायल होकर, दीपक फेंक-फेंककर, उस अँधेरे में ही भागने लगी। तब महावीर अलम्बुष कुपित होकर, महावत जैसे हाथी को अङ्कुश मारे वैसे ही, घटोत्कच को तीक्ष्ण बाणों से व्याकुल करने लगा। पराक्रमी घटोत्कच यह देखकर बहुत ही कुपित हो उठा। उसने देखते ही देखते अलम्बुष के रथ, सारथी और सब अस्त्र-शस्त्र खण्ड-खण्ड करके नष्ट कर दिये। उसके बाद अट्टाट्टहास करके वह अलम्बुष, कर्ण २० और कौरवों के ऊपर—पर्वत पर मेघ जैसे वर्षा करें वैसे ही—बाण बरसाने लगा। राजन्! आपकी चतुरङ्गिणी सेना घटोत्कच के बाणों से पीड़ित और क्षोभ को प्राप्त होकर आपस में ही एक दूसरे को विनष्ट करने लगी। रथ और सारथी से हीन अलम्बुष यह देखकर बहुत ही कुपित हो उठा। उसने झपटकर घटोत्कच को एक सुदृढ़ मुक्का मारा। अलम्बुष के मुष्टिप्रहार की चोट से महावीर घटोत्कच वैसे ही काँप उठा जैसे भूकम्प के समय वृक्ष-तृण-गुल्म-लता-सहित बड़ा पर्वत काँपने लगता है। घटोत्कच ने भी शत्रुओं को मारने में समर्थ, लोहे के बेलन के समान, बाहु उठाकर अलम्बुष को एक घूँसा मारा। इसके बाद दोनों हाथों से अलम्बुष को खींचकर पृथ्वी पर गिरा दिया और ऊपर से रगड़ने लगा। कुछ देर बाद महाबली अलम्बुष घटोत्कच के हाथ से छुटकारा पाकर उठ खड़ा हुआ और फिर उस पर झपटा।

उसने भी घटोत्कच को उठाकर नीचे पटक दिया। वह भी घटोत्कच को नीचे दबाकर पीसने लगा। राजन्! इस प्रकार वे दोनों भारी डील-डौलवाले दानव भिड़कर लोमहर्षण युद्ध करने लगे।

फिर वे माया प्रकट करके इन्द्र और राजा बलि की तरह घोर युद्ध करने लगे और एक दूसरे से बढ़कर कार्य कर दिखाने की चेष्टा में प्रवृत्त हुए। वे दोनों महाबली वीर एक दूसरे को मार डालने के प्रयत्न में लगे हुए थे। वे पहले अग्नि और समुद्र के रूप में प्रकट हुए।

फिर गरुड़ और तक्षक बन गये। इसके बाद उन्होंने मेघ और घोर आँधी का रूप रख लिया। देखते ही देखते वे वज्र और महापर्वत, गजराज और शार्दूल, राहु और सूर्य आदि के विविध विचित्र रूप रखने और लड़ने लगे। अलम्बुप और घटोत्कच दोनों इस प्रकार सैकड़ों मायाएँ ३१ प्रकट करके बड़ी देर तक एक दूसरे पर परिघ, गदा, प्रास, मुद्गर, पट्टिश, मुशल, चट्टान आदि के प्रहार करते हुए विचित्र युद्ध करते रहे। कभी रथ पर, कभी घोड़ों पर, कभी हाथियों पर बैठकर और कभी पैदल ही दोनों महा मायावी राक्षस घोर युद्ध करते थे। इसी बीच में वीर घटोत्कच अलम्बुप को मारने के इरादे से, अत्यन्त क्रुद्ध होकर, अपने स्थान से उछला और बाज़ पक्षी की तरह झपटकर शत्रु के ऊपर पहुँच गया। मयासुर को जैसे विष्णु ने पकड़ लिया था वैसे ही घटोत्कच ने महाकाय राक्षसेन्द्र अलम्बुप को पकड़ लिया और ऊपर उठाकर पृथ्वी पर ज़ोर से दे मारा। इसके बाद उसने अद्भुतरूप तीक्ष्ण खड्ग खींचकर अलम्बुप का भयानक, विकृतदर्शन, सिर काट डाला। महाराज! छूटने के लिए छटपटा रहे, तड़प रहे, गरज रहे, शत्रु के सिर को पराक्रमी घटोत्कच ने फ़ुर्ती के साथ धड़ से अलग कर डाला। रक्त से तर उस सिर के केश पकड़े हुए घटोत्कच शीघ्रता के साथ दुर्योधन के रथ के पास पहुँचा। मुसका रहे महाबाहु राक्षस ने वह अलम्बुप का सिर दुर्योधन के रथ पर फेंक दिया। अब वह वर्षाऋतु के बादल की तरह ज़ोर से गरजने लगा। घटोत्कच ने सिंह की ४० तरह गरजकर दुर्योधन से कहा—देखो, इस तुम्हारे हितैषी को मैंने मार डाला। इसका पराक्रम तुमने देख लिया। अब कर्ण की और फिर अपनी भी यही दशा तुम देखोगे। [शास्त्र में लिखा है कि] जो व्यक्ति धर्म, अर्थ, काम तीनों की हानि न होने देना चाहता हो वह राजा, ब्राह्मण और स्त्री से ख़ाली हाथ न मिले। उसी के अनुसार यह शत्रु का सिर उपहार लेकर मैं तुम्हारे दर्शन करने आया हूँ। जब तक मैं कर्ण का वध नहीं करता तब तक तुम ख़ुशी मना लो।

सञ्जय कहते हैं—महाराज ! राक्षसश्रेष्ठ घटोत्कच इतना कहकर कर्ण की ओर चला। वह क्रुपित होकर कर्ण के ऊपर असंख्य तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करने लगा। उस समय मनुष्य
४३ और राक्षस का भयानक, आश्चर्यजनक, दारुण संग्राम होने लगा।

एक सौ पचहत्तर अध्याय

कर्ण और घटोत्कच का युद्ध

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! उस घोर आधी रात के समय कर्ण के साथ राक्षस घटोत्कच का कैसा युद्ध हुआ ? संग्राम में कर्ण को जीतनेवाले घटोत्कच का रूप उस युद्ध के समय कैसा था ? उसका रथ कैसा था ? उसकी माया कैसी थी ? उसके शस्त्र कैसे थे ? उसके घोड़े, रथ की ध्वजा और धनुष आदि कैसे और कितने बड़े थे ? उसका कवच और शिरस्त्राण कैसा था ? हे सञ्जय ! तुम वर्णन करने में निपुण हो। मेरे प्रश्नों का उत्तर दो।

सञ्जय ने कहा—राजन् ! सुनिए। घटोत्कच की आँखें लाल-लाल, डील-डौल लम्बा-चौड़ा, भुजाएँ लम्बी, सिर बड़ा, कान कील से नुकीले, पेट गढ़ा सा गहरा, रङ्ग नीला और आकार विकृत था। रोएँ खड़े हुए, मुख ताम्रवर्ण, दाढ़ी-मूछ के बाल भूरे, ठोढ़ी चौड़ी और बड़ी, मुँह कानों तक फटा हुआ, दाढ़ें तीक्ष्ण, चार दाँत बड़े-बड़े, जीभ और ओठ लम्बे और लाल, भौंहें लम्बी, नासिका स्थूल, गर्दन लाल और शरीर पहाड़ के समान था। कमर चौड़ी, नाभि गूढ़ और मस्तक पर बालों का जूड़ा था। वह महामायावी राक्षस हाथों में कटक, अङ्गद आदि गहने पहने था। किसी बड़े पहाड़ पर आग के समान उसके हृदय में सोने के पदक शोभायमान थे। उसके मस्तक पर सुवर्णमय, विचित्र, कामदार, तोरणसदृश किरीट मुकुट शोभा बढ़ा रहा था। बालसूर्य के समान कुण्डल, सुवर्ण की माला और महाप्रभा-सम्पन्न काँसे
१० का कवच वह पहने था। उसका रथ भी विचित्र था। उसमें सैकड़ों किङ्किणियाँ लगी थीं, जो चलने से बजती थीं। लाल रङ्ग की ध्वजा-पताका उसमें लगी हुई थी। रीछ का चमड़ा उसमें मढ़ा था। अनेक प्रकार के शस्त्रों से युक्त, ध्वजा-माला आदि से शोभित, आठ पहियोंवाला, मेघ के समान शब्द करनेवाला वह महारथ चार सौ हाथ के घेरे का था। मस्त हाथी के समान, लाल आँखोंवाले, भयानक, काले रङ्ग के, बलवान्, ऊँचे, मेहनती, अनेक प्रकार के मुख और आकारवाले सौ गरजते हुए बढ़िया घोड़े घटोत्कच के उस रथ को ले चलते थे। उन घोड़ों की गरदन के बाल बड़े-बड़े थे। वे बार-बार हिनहिनाते थे। उज्ज्वल कुण्डलों से शोभित मुख-वाला उसका सारथी विरूपाक्ष घोड़ों की रास हाथ में लिये घोड़ों को हाँक रहा था। सूर्य जैसे अपने सारथी अरुण के साथ शोभायमान होते हैं वैसे ही, किसी पहाड़ पर मेघ के समान,

राक्षस घटोत्कच रथ पर बैठा शोभा को प्राप्त हो रहा था। उसके रथ में बहुत ऊँची ध्वजा थी, जिस पर लाल मुख का मांसाहारी अत्यन्त भयानक एक गिद्ध बैठा हुआ था।

महाराज! राक्षसराज घटोत्कच बारह हाथ ऊँचे, हाथ भर चौड़े, दृढ़ डोरीवाले और इन्द्र के वज्र के समान शब्द करनेवाले धनुष को लिये रथ के पहिये के समान मोटे बाण बरसाकर सब दिशाओं को व्याप्त कर रहा था। उस वीरों का नाश करनेवाली रात्रि के समय इस तरह घटोत्कच कर्ण से लड़ने के लिए कौरव-सेना में पहुँचा। उसके धनुष का दारुण शब्द सैनिकों को वज्रपात के समान भयानक सुनाई पड़ा और वे डर के मारे ऐसे काँपने लगे जैसे समुद्र में हलचल मचने से लहरें उठती हैं। महावीर कर्ण ने उस विरूपाक्ष भीषणमूर्ति निशाचर को, आते देखकर, गर्व के साथ फुर्ती से रोकने की चेष्टा की। हाथी जैसे अपने प्रतिद्वन्द्वी हाथी से भिड़ने को झपटे, अथवा साँड़ जैसे साँड़ की ओर बढ़े, वैसे ही कर्ण भी बाण बरसाते हुए घटोत्कच की ओर अग्रसर हुए। हे प्रजावत्सल! उस समय इन्द्र और शम्बरासुर के समान कर्ण और घटोत्कच घोर युद्ध करने लगे। दोनों वीर भयानक शब्द करनेवाले श्रेष्ठ धनुष हाथ में लिये बाणों से एक दूसरे को घायल करने लगे। कान तक खींचकर छोड़े गये बाणों की चोट से दोनों के काँसे के कवच छिन्न-भिन्न हो गये और दोनों के बाण दोनों के शरीरों में घुसने लगे। जैसे दो सिंह नखों से या दो हाथी दाँतों से परस्पर प्रहार करें, वैसे ही वे दोनों योद्धा रथशक्ति और बाण आदि शस्त्रों से एक दूसरे के शरीर को काटने लगे। वे एक दूसरे के अङ्गों को छिन्न-भिन्न करते, धनुष पर बाण चढ़ाते और उल्कासदृश बाणों से परस्पर जलाते हुए दुर्निरीक्ष्य हो उठे। उनकी ओर आँख उठाकर देखना असम्भव हो गया। उस समय बाणों से सब अङ्ग कट-फट जाने से उन दोनों के शरीर रक्त से नहा गये। जान पड़ता था, मानों गेरू के पहाड़ों से झरने झर रहे हैं। महातेजस्वी दोनों वीर यत्नपूर्वक तीक्ष्ण बाणों से परस्पर व्यथित कर रहे थे, एक दूसरे के शरीर को छिन्न-भिन्न कर रहे थे, तथापि तनिक भी विचलित नहीं होते थे। महाराज, इस तरह उस रात्रि के समय दोनों वीर जीवन की आशा छोड़कर घोर युद्ध कर रहे थे। बहुत देर तक दोनों में समान रूप से युद्ध हुआ, कोई भी कम नहीं पड़ा। घटोत्कच तीक्ष्ण बाणों को धनुष पर चढ़ाकर फुर्ती के साथ लगातार छोड़ रहा था। उसके धनुष का शब्द सुनकर अपने और पराये पक्ष के सैनिक समान रूप से डर गये। राजन्! जब अस्त्र जाननेवालों में श्रेष्ठ कर्ण किसी तरह उस राक्षस को नहीं दबा सके तब उन्होंने दिव्य अस्त्र प्रकट किया। घटोत्कच ने जब कर्ण को दिव्य अस्त्र का प्रयोग करते देखा तब उसने भी राक्षसी माया प्रकट की। शूल, मुद्गर, पहाड़ और वृक्ष हाथों में लिये घोररूप राक्षसों की भारी सेना घटोत्कच के पास देख पड़ी। भारी धनुष हाथ में लिये, उग्र कालदण्डधारी मृत्यु के समान, प्राणियों का संहार करने को आ रहे राक्षस को देखकर सब लोग डर

२०

३०

गये। घटोत्कच ने घोर सिंहनाद किया, जिससे डर के मारे हाथियों ने मल-मूत्र कर दिया और सब मनुष्य व्यथित हो उठे। इसके बाद चारों ओर से अत्यन्त उग्र शिलाओं की वर्षा होने लगी। आधी रात के समय अधिक बलवान् हो जानेवाले राक्षसों की सेना लोहे के चक्र, भुशुण्डी, शक्ति, तोमर, शूल, शतघ्नी, पट्टिश आदि बहुत से अस्त्रों की वर्षा करने लगी। महाराज! आपके पुत्र और योद्धा लोग वह भयानक संग्राम देखकर अत्यन्त व्यथित होकर चारों ओर भागने लगे। अपने बल का अभिमान रखनेवाले अकेले प्रतापी कर्ण उस समय तनिक भी विचलित न हुए। वे अपने बाणों से घटोत्कच की माया को मिटाने लगे। यह देखकर घटोत्कच क्रोध के मारे अधीर हो उठा। वह कर्ण के नाश के लिए असंख्य बाण छोड़ने लगा। राक्षस के चलाये हुए बाण कर्ण के शरीर को भेदकर रक्त में भीगकर कुपित साँप के समान पृथ्वी में घुसने लगे। तब महाप्रतापी कर्ण ने क्रुद्ध होकर

४०

घटोत्कच से अधिक बल-विक्रम प्रकट करते हुए उसको तीक्ष्ण दस बाण मारे। कर्ण के बाण मर्मस्थल में लगने से घटोत्कच व्यथित हो उठा। उसने कर्ण को मार डालने के लिए हज़ार आरों से युक्त, सूर्य-सदृश प्रभासम्पन्न, मणिरत्न-विभूषित, क्षुरधार एक दिव्य चक्र लेकर फेंका। महावीर कर्ण ने राक्षस के फेंके उस चक्र के बाणों से टुकड़े-टुकड़े कर डाले। तब वह अभागे मनुष्य के मनोरथ के समान व्यर्थ होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। यह देख क्रोधान्ध होकर, राहु जैसे सूर्य को ढक ले वैसे ही, घटोत्कच कर्ण को बाणों से ढकने लगा। रुद्र, इन्द्र और उपेन्द्र के समान पराक्रमी कर्ण ने, बिना किसी प्रकार की घबराहट के, शीघ्र ही अपने बाणों से घटोत्कच के रथ को अदृश्य सा कर दिया। तब घटोत्कच ने कर्ण को ताककर एक सुवर्णपट्टभूषित लोहे की भारी गदा घुमाकर फेंकी। महाबली कर्ण ने उसे अपने असंख्य बाणों से रोककर घुमाकर पृथ्वी पर गिरा दिया। तब महाकाय काला घटोत्कच उछलकर अन्तरिक्ष में पहुँच गया और काली घनघटा की तरह गरजकर आकाश से वृक्षों की वर्षा करने लगा।

५०

सूर्य की किरणें जैसे मेघों को वेधती हैं वैसे ही कर्ण ने आकाश में स्थित मायानिपुण घटोत्कच को बाणों से घायल किया। इसके बाद उसके रथ के घोड़ों को मार डाला, रथ के सैकड़ों टुकड़े कर डाले और जलधारा बरसानेवाले मेघ के समान वे उस पर बाणों की वर्षा करने लगे। उन्होंने इतने बाण मारे कि घटोत्कच के शरीर में दो अंगुल भी ऐसी जगह नहीं रही, जिसमें बाण का घाव न हो। वीर घटोत्कच काँटों से ढकी शल्लकी की तरह जान पड़ने लगा। महाराज! कर्ण के बाणों से वह राक्षस इस तरह ढक गया कि उसका शरीर, रथ या ध्वजा कुछ भी नहीं देख पड़ता था। तब माया में निपुण घटोत्कच ने अपने अस्त्र के प्रभाव से कर्ण के दिव्य अस्त्र को शान्त कर दिया। फिर वह कर्ण के साथ मायायुद्ध करने लगा। आकाश से असंख्य बाण कर्ण और उनकी सेना पर गिरने लगे; पर मालूम नहीं पड़ता था कि कौन किधर से उन बाणों को बरसा रहा है। राक्षस घटोत्कच ने माया के बल से अपना आकार और भी विकृत और भयङ्कर कर लिया। वह कौरव-सेना को पीड़ित और भयविह्वल करता हुआ विचरने लगा। उसने पहले विकटाकार मुँह फैलाकर कर्ण के सब दिव्य अस्त्रों को ग्रस लिया। उसके बाद ही कौरव-सेना ने देखा कि घटोत्कच मरकर गिर पड़ा है, उसका शरीर सैकड़ों जगह से छिन्न-भिन्न हो गया है और वह न हिलता है, न डुलता है। यह देख उसे मरा हुआ जानकर कौरव लोग सिंहनाद करने लगे। [किन्तु असल में राक्षस मरा नहीं था, यह सब तो उसकी माया थी।] महावीर घटोत्कच शीघ्र ही दिव्य शरीर धारण करके प्रकट हुआ और चारों ओर युद्धभूमि में विचरने लगा। वह कभी मैनाक पहाड़ की तरह ऊँचा होकर सैकड़ों सिर और सैकड़ों पेटवाला देख पड़ता था। कभी अंगुल भर का छोटा रूप रख लेता था। कभी उमड़े हुए समुद्र की लहरों के समान टेढ़ा होकर ऊपर आकाश में देख पड़ता था और कभी पृथ्वी को फ़ाड़कर जल में समा जाता था। दम भर में दूसरी जगह जल में ऊपर निकलता था। ६१

महाराज! इस प्रकार तरह-तरह की माया दिखाकर घटोत्कच सुन्दर रथ पर बैठा हुआ देख पड़ा। उसके कानों में सुवर्ण के कुण्डल और शरीर में सुदृढ़ कवच शोभायमान हो रहा था। मायाबल से आकाश, पृथ्वी और सब दिशाओं में फिरने के उपरान्त सुवर्णभूषित रथ पर बैठा हुआ घटोत्कच कर्ण के पास पहुँचा। उसने निर्भय भाव से कहा—हे कर्ण! ठहर जाओ, अब तुम मेरे हाथ से बचकर कहाँ जाओगे? मैं अभी रणभूमि में तुम्हारी युद्ध की श्रद्धा दूर किये देता हूँ।

राजन्! उग्र-पराक्रमी घटोत्कच क्रोध से लाल-लाल आँखें करके इस तरह कहता हुआ आकाश में चला गया और ज़ोर से अट्टाट्टहास करने लगा। सिंह जैसे हाथी पर चोट करे, वैसे ही वह कर्ण को बाण मारने लगा। घटोत्कच जब कर्ण के ऊपर जलधारा की तरह बड़े-बड़े बाण बरसाने लगा तब महावीर कर्ण ने वह फ़ुर्ती दिखलाई कि वे बाण पास भी न आने ७०

पाते थे और कर्ण उनके टुकड़े कर डालते थे। भीमकर्मा घटोत्कच अपनी माया को निष्फल होते देखकर फिर मायाबल से शूल, प्रास, खड्ग, मुशल आदि शस्त्र बरसानेवाला, अत्यन्त ऊँचे शिखरों से युक्त और वृक्षों की पंक्तियों से शोभित ऊँचा पहाड़ बन गया। वीर कर्ण उस अञ्जनराशितुल्य, उग्र शस्त्र बरसानेवाले राक्षस को देखकर तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने दिव्य अस्त्र का प्रयोग करके दम भर में उस पर्वत को नष्ट कर दिया। तब राक्षस घटोत्कच आकाश में चला गया। उसने इन्द्रधनुष से शोभित नीले मेघ का रूप रखकर कर्ण के ऊपर पत्थरों की वर्षा की। तब अस्त्र जाननेवालों में श्रेष्ठ कर्ण ने वायव्य अस्त्र का प्रयोग करके उस काले मेघ का रूप रखनेवाले राक्षस को छिन्न-भिन्न कर दिया। कर्ण ने बाणों से दसों दिशाओं को व्याप्त करके राक्षस के सब अस्त्र-शस्त्रों को नष्ट कर दिया। महाबली घटोत्कच हँसकर फिर महारथी कर्ण के आगे माया फैलाने लगा। कर्ण ने देखा कि रथ पर महारथी घटोत्कच अविचलित भाव से बैठा हुआ उनकी ओर आ रहा है। उसके साथ हाथी, घोड़े, रथ आदि पर सवार असंख्य क्रूर राक्षस हैं। सिंह शार्दूल के समान, मस्त हाथी के समान पराक्रमी वे राक्षस विविध कवच और अनेक प्रकार के शस्त्र धारण किये हैं। देवता जैसे इन्द्र के आसपास हों, वैसे ही वे राक्षस घटोत्कच को चारों ओर से घेरे हुए थे। वीर कर्ण फिर धैर्य के साथ उस राक्षस से संग्राम करने लगे।

८१

घटोत्कच ने कर्ण को पाँच बाण मारे और सब राजाओं को भयाकुल करनेवाला भयानक सिंहनाद किया। उसने फिर फुर्ती के साथ कर्ण के बहुत से बाणों को छिन्न-भिन्न करके एक उग्र अञ्जलिक बाण से उनके हाथ का धनुष काट डाला। कर्ण ने दूसरा सुदृढ़ धनुष, जो कि इन्द्र-धनुष के समान ऊँचा और बड़ा था, लेकर बलपूर्वक खींचा। महाराज! महारथी कर्ण उसके बाद आकाशचारी राक्षसों के ऊपर सुवर्णपुङ्ख और शत्रुओं का संहार करनेवाले बाण बरसाने लगे। सिंह जैसे हाथियों के झुण्ड को पीड़ित करे वैसे ही वीर कर्ण ने उन चौड़ी छातीवाले राक्षसों को पीड़ित कर दिया। अग्निदेव जैसे प्रलयकाल में सब प्राणियों को भस्म करते हैं वैसे ही कर्ण ने घोड़े, हाथी और सारथी आदि सहित उन राक्षसों को दम भर में बाणों से नष्ट कर दिया। पूर्व-समय में शूलपाणि रुद्र जैसे त्रिपुरासुर को भस्म करके शोभा को प्राप्त हुए थे वैसे ही कर्ण भी राक्षसी सेना का संहार करके शोभायमान हुए। पाण्डव पक्ष के हज़ारों राजाओं में भीम-पराक्रमी कुपित अन्तक के समान घटोत्कच के सिवा और कोई कर्ण की ओर आँख उठाकर देख भी नहीं सकता था। जैसे दो बड़ी उल्काओं से तेल की बूँदें गिरें वैसे ही क्रुद्ध घटोत्कच की आँखों से आग की चिनगारियाँ निकलने लगीं। वह ताल ठोंकता और ओठ चबाता हुआ, हाथियों के समान ऊँचे, पिशाच के समान मुँहवाले गधे जिसमें जुते थे ऐसे माया-रचित रथ पर सवार होकर सारथी से कहने लगा—हे सारथी, तू जल्द मुझे कर्ण के रथ के पास ले चल।

९१

राजन्! घटोत्कच इस तरह भयावने रथ पर बैठकर फिर कर्ण के साथ द्वन्द्व युद्ध करने लगा। उसने कर्ण के ऊपर शिवनिर्मित, आठ चक्रों से युक्त, एक भयानक वज्र चलाया। यह वज्र लोहे का था। यह आठ कोस ऊँचा और चार कोस लम्बा था। इस पर शूल ही शूल लगे हुए थे। यह देख कर्ण ने रथ पर धनुष रखकर फुर्ती के साथ उछलकर, पास आने पर, उस वज्र को हाथ से पकड़ लिया। फिर उन्होंने वह वज्र उस राक्षस के ही ऊपर चला दिया। घटोत्कच फ़ौरन् रथ से पृथ्वी पर कूद पड़ा। उस तेजोमय वज्र ने घटोत्कच के घोड़े, सारथी, ध्वजा आदि सामग्री सहित रथ को भस्म कर दिया। वह वज्र पृथ्वीतल को चीर करके पाताल में चला गया। यह देखकर देवगण बहुत ही विस्मित हुए। महाबली कर्ण ने उस देव-निर्मित वज्र को हाथ से पकड़ लिया, इसके लिए सभी लोग उनकी प्रशंसा करने लगे। १००

राजन्! महावीर कर्ण यह दुष्कर काम करके फिर अपने रथ पर सवार हो बाणों की वर्षा करने लगे। उस भयानक समर में देवतुल्य कर्ण ने जैसे अद्भुत काम किये वैसे काम और कोई मनुष्य नहीं कर सकता। तब राक्षसराज घटोत्कच कर्ण के बाणों से व्याप्त होकर जलधाराओं से आवृत पर्वत के समान प्रतीत होने लगा। उसके बाद वह फिर अन्तर्द्धान हो गया और माया तथा फुर्ती के प्रभाव से कर्ण के सब दिव्य अस्त्रों को व्यर्थ करने लगा। कर्ण फिर उससे युद्ध करने लगे। महाराज! महाबली घटोत्कच क्रुद्ध होकर, अनेक रूप रखकर, महारथी योद्धाओं को भयाकुल करने लगा। चारों ओर से सिंह, व्याघ्र, चीते, आग उगलते हुए विषैले नाग और लोहमुख पक्षी समरभूमि में आने लगे। हिमालय के समान ऊँचा निशाचर कर्ण के धनुष से छूटे हुए बाणों से व्याप्त और व्याकुल होकर उसी जगह अन्तर्द्धान हो गया। अब असंख्य राक्षस, पिशाच, कुत्ते और विकृत मुखवाले भेड़िये कर्ण को खा जाने के लिए दौड़ते आते दिखाई पड़े। वे भयानक शब्द से कर्ण को डरवाने लगे। कर्ण ने रक्त से नहाये हुए विविध शस्त्रों के द्वारा उनमें से हर एक को घायल किया। फिर दिव्य अस्त्र से राक्षसी माया का नाश करके सन्नतपर्व बाणों से घटोत्कच के घोड़ों को चोट पहुँचाई। उसके घोड़े कर्ण के बाणों से घायल और भग्नपृष्ठ हो उसके सामने ही पृथ्वी पर गिर पड़े। महाराज! इस तरह अपनी माया को निष्फल होते देखकर "देख, मैं अभी तुझे मारे डालता हूँ" यों कर्ण से कहकर राक्षसराज अन्तर्द्धान हो गया। ११४

एक सौ छिहत्तर अध्याय

अलायुध राक्षस का घटोत्कच से लड़ने के लिए जाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! वीर कर्ण और घटोत्कच का घोर युद्ध हो ही रहा था कि राक्षसेन्द्र अलायुध पाण्डवों के साथ अपने पुराने वैर को स्मरण करके, विकट रूपवाले असंख्य राक्षसों को साथ लेकर, राजा दुर्योधन के पास आया। पहले महावीर भीमसेन ने उसके

सजातीय, महापराक्रमी, ब्राह्मणभक्षी, महातेजस्वी बकासुर, किर्मीर और उसके परम मित्र हिडिम्ब को मार डाला था। भीमसेन का यह शत्रुता का आचरण अलायुध के अन्तःकरण में अब तक खटका करता था। इस समय कौरवों-पाण्डव के रात्रियुद्ध का हाल मालूम होने पर, भीमसेन को मारने की इच्छा से, युद्ध करने के लिए वह रणभूमि में आया। मस्त हाथी और कुपित साँप की तरह साँसें ले रहा वह असुर राजा दुर्योधन के पास आकर कहने लगा—महाराज! आप जानते हैं कि भीमसेन ने मेरे परम मित्र हिडिम्ब, बक और किर्मीर तथा अन्यान्य राक्षसों को मारकर हिडिम्बा के साथ बलात्कार किया था। अतएव आज मैं, कृष्ण जिनके सहायक हैं उन, पाण्डवों को और अपने सजातीय हिडिम्बा के पुत्र घटोत्कच को हाथी, घोड़े, रथ, पैदल आदि सेना सहित मारकर खा जाऊँगा। इसी के लिए मैं यहाँ आया हूँ। अब आप अपनी सेना को
१० युद्ध करने से रोक दीजिए। मैं अपनी सेना को साथ लेकर पाण्डवों से युद्ध करूँगा।

महाराज! भाइयों सहित राजा दुर्योधन, अलायुध के वाक्य सुनकर, बहुत सन्तुष्ट हुए और कहने लगे—हे राक्षसश्रेष्ठ! मेरे सैनिक लोग उत्साह के साथ शत्रुओं से लड़ने को और वैर का बदला चुकाने को उत्सुक हो रहे हैं। ये कभी ठहर नहीं सकते। इसलिए हम लोग तुमको और तुम्हारी सेना को आगे करके शत्रुओं से युद्ध करेंगे।

राजन्! राक्षसेन्द्र अलायुध दुर्योधन की बात मानकर, घटोत्कच के रथ के समान प्रकाशमान रथ पर बैठकर, अपनी राक्षसी सेना साथ ले बड़े वेग से घटोत्कच की ओर चला। उसका रथ भी घटोत्कच के रथ के समान ही चार सौ हाथ के घेरे का, बहुत से तोरणों से युक्त, रीछ के चमड़े से मढ़ा हुआ और विचित्र था। उस रथ में रक्त-मांस खानेवाले, बड़े-बड़े हाथी से ऊँचे, कर्कश शब्द करनेवाले, वेग से जानेवाले सौ घोड़े लगे हुए थे। उसके रथ का शब्द भी मेघ के गरजने के समान था। उसका भी धनुष सुवर्ण-मण्डित, सुदृढ़ प्रत्यञ्चा से शोभित और बहुत बड़ा था। उसके भी बाण रथ के धुरे के समान मोटे और बड़े, सुवर्णपुंख-युक्त, सिल्ली पर घिसकर तीक्ष्ण किये गये और अमोघ थे। वह सब तरह सब बातों में वीर घटोत्कच के तुल्य था। उसके रथ की ध्वजा भी सूर्य और अग्नि के समान प्रकाशमान और गीदड़ आदि मांसहारी जीवों से सुरक्षित थी। उसका रूप घटोत्कच के समान ही था। राक्षसराज अलायुध उज्ज्वल अंगद, मुकुट, माला, पगड़ी, खड्ग, ढाल, तरकस, गदा, भुशुंडी, मुशल, हल, धनुष आदि धारण किये था। वह
२० हाथी के चमड़े के समान स्थूल कवच पहने हुए था। अग्नि के तुल्य तेजोमय रथ पर बैठकर पाण्डवों की सेना को भगाता हुआ वह राक्षस युद्धभूमि में उसी तरह विचरने लगा, जिस तरह आकाश में बिजली सहित मेघ शोभायमान हो। पाण्डव पक्ष के महाबली श्रेष्ठ योद्धा राजा लोग
२२ भी कवच पहने हुए उत्साहपूर्वक चारों ओर से उस राक्षस को घेरकर उससे युद्ध करने लगे।

महाभारत के स्थायी ग्राहक बनने के नियम

(१) जो सज्जन हमारे यहाँ महाभारत के स्थायी ग्राहकों में अपना नाम और पता लिखा देते हैं उन्हें महाभारत के अङ्कों पर २०) सैकड़ा कमीशन काट दिया जाता है। अर्थात् १।) प्रति अङ्क के बजाय स्थायी ग्राहकों को १) में प्रति अङ्क दिया जाता है। ध्यान रहे कि डाकख़र्च स्थायी और फुटकर सभी तरह के ग्राहकों को अलग देना पड़ेगा।

(२) साल भर या छः मास का मूल्य १२) या ६), दो आना प्रति अङ्क के हिसाब से रजिस्ट्री ख़र्च सहित १३॥) या ६॥) जो सज्जन पेशगी मनीआर्डर-द्वारा भेज देंगे, केवल उन्हीं सज्जनों को डाकख़र्च नहीं देना पड़ेगा। महाभारत की प्रतियाँ राह में गुम न हो जायँ और ग्राहकों की सेवा में वे सुरक्षित रूप में पहुँच जायँ, इसी लिए रजिस्ट्री द्वारा भेजने का प्रबन्ध किया गया है।

(३) इसके प्रत्येक खंड के लिए अलग से बहुत सुन्दर जिल्दें भी सुनहले नाम के साथ तैयार कराई जाती हैं। प्रत्येक जिल्द का मूल्य ।॥) रहता है परन्तु स्थायी ग्राहकों को वे ॥) ही में मिलती हैं। जिल्दों का मूल्य महाभारत के मूल्य से बिलकुल अलग रहता है।

(४) स्थायी ग्राहकों के पास प्रतिमास प्रत्येक अङ्क प्रकाशित होते ही बिना विलम्ब वी० पी० द्वारा भेजा जाता है। बिना कारण वी० पी० लौटाने से उनका नाम ग्राहक-सूची से अलग कर दिया जायगा।

(५) ग्राहकों को चाहिए कि जब किसी प्रकार का पत्र-व्यवहार करें तो कृपा कर अपना ग्राहक-नम्बर जो कि पता की स्लिप के साथ छपा रहता है और पूरा पता अवश्य लिख दिया करें। बिना ग्राहक-नम्बर के लिखे हज़ारों ग्राहकों में से किसी एक का नाम ढूँढ निकालने में बड़ी कठिनाई पड़ती है और पत्र की कार्रवाई होने में देरी होती है। क्योंकि एक ही नाम के कई-कई ग्राहक हैं। इसलिए सब प्रकार का पत्र-व्यवहार करते तथा रुपया भेजते समय अपना ग्राहक-नम्बर अवश्य लिखना चाहिए।

(६) जिन ग्राहकों को अपना पता सदा अथवा अधिक काल के लिए बदलवाना हो, अथवा पते में कुछ भूल हो, उन्हें कार्यालय को पता बदलवाने की चिट्ठी लिखते समय अपना पुराना और नया दोनों पते और ग्राहक-नम्बर भी लिखना चाहिए। जिससे उचित संशोधन करने में कोई दिक़्क़त न हुआ करे। यदि किसी ग्राहक को केवल एक दो मास के लिए ही पता बदलवाना हो, तो उन्हें अपने हलके के डाकख़ाने से उसका प्रबन्ध कर लेना चाहिए।

(७) ग्राहकों से सविनय निवेदन है कि नया आर्डर या किसी प्रकार का पत्र लिखने के समय यह ध्यान रक्खें कि लिखावट साफ़ साफ़ हो। अपना नाम, गाँव, पोस्ट और ज़िला साफ़ साफ़ हिन्दी या अँगरेज़ी में लिखना चाहिए ताकि अङ्क या उत्तर भेजने में दुबारा पूछ-ताछ करने की ज़रूरत न हो। "हम परिचित ग्राहक हैं" यह सोच कर किसी को अपना पूरा पता लिखने में लापरवाही न करनी चाहिए।

(८) यदि कोई महाशय मनी-आर्डर से रुपया भेजें, तो 'कूपन' पर अपना पता-ठिकाना और रुपया भेजने का अभिप्राय स्पष्ट लिख दिया करें, क्योंकि मनीआर्डरफ़ार्म का यही अंश हमको मिलता है।

सब प्रकार के पत्रव्यवहार का पता—

मैनेजर महाभारत विभाग, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

आवश्यक सूचनायें

(१) हमने प्रथम खण्ड की समाप्ति पर उसके साथ एक महाभारत-कालीन भारतवर्ष का प्रामाणिक सुन्दर मानचित्र भी देने की सूचना दी थी। इस सम्बन्ध में हम ग्राहकों को सूचित करते हैं कि पूरा महाभारत समाप्त हो जाने पर हम प्रत्येक ग्राहक को एक परिशिष्ट अध्याय बिना मूल्य भेजेंगे जिसमें महाभारत-सम्बन्धी महत्त्व-पूर्ण खोज, साहित्यिक आलोचना, चरित्र-चित्रण तथा विश्लेषण आदि रहेगा। उसी परिशिष्ट के साथ ही मानचित्र भी लगा रहेगा जिसमें पाठकों को मानचित्र देख कर उपरोक्त बातें पढ़ने और समझने आदि में पूरी सुविधा रहे।

(२) महाभारत के प्रेमी ग्राहकों को यह शुभ समाचार सुन कर बड़ी प्रसन्नता होगी कि हमने कानपुर, उन्नाव, काशी (रामनगर), कलकत्ता, ग़ाज़ीपुर, बरेली, मथुरा (वृन्दावन), जोधपुर, बुलन्दशहर, प्रयाग और लाहौर आदि में ग्राहकों के घर पर ही महाभारत के अङ्क पहुँचाने का प्रबन्ध किया है। अब तक ग्राहकों के पास यहीं से सीधे डाक-द्वारा प्रतिमास अङ्क भेजे जाते थे जिसमें प्रति अङ्क तीन चार आना खर्च होता था पर अब हमारा नियुक्त किया हुआ एजेंट ग्राहकों के पास घर पर जाकर अङ्क पहुँचाया करेगा और अङ्क का मूल्य भी ग्राहकों से वसूल कर ठीक समय पर हमारे यहाँ भेजता रहेगा। इस अवस्था पर ग्राहकों को ठीक समय पर प्रत्येक अङ्क सुरक्षित रूप में मिल जाया करेगा और वे डाक, रजिस्टरी तथा मनीआर्डर इत्यादि के व्यय से बच जायँगे। इस प्रकार उन्हें प्रत्येक अङ्क केवल एक रुपया मासिक देने पर ही घर बैठे मिल जाया करेगा। यथेष्ट ग्राहक मिलने पर अन्य नगरों में भी शीघ्र ही इसी प्रकार का प्रबन्ध किया जायगा। आशा है जिन स्थानों में इस प्रकार का प्रबन्ध नहीं है, वहाँ के महाभारतप्रेमी सज्जन शीघ्र ही अधिक संख्या में ग्राहक बन कर इस अवसर से लाभ उठावेंगे। और जहाँ इस प्रकार की व्यवस्था हो चुकी है वहाँ के ग्राहकों के पास जब एजेंट अङ्क लेकर पहुँचे तो ग्राहकों को रुपया देकर अङ्क ठीक समय पर ले लेना चाहिए जिसमें उन्हें ग्राहकों के पास बार बार आने जाने का कष्ट न उठाना पड़े। यदि किसी कारण उस समय ग्राहक मूल्य देने में असमर्थ हों तो अपनी सुविधानुसार एजेंट के पास से जाकर अङ्क ले आने की कृपा किया करें।

(३) हम हिन्दी-भाषा-भाषी सज्जनों से एक सहायता की प्रार्थना करते हैं। वह यही कि हम जिस विराट् आयोजन में संलग्न हुए हैं आप लोग भी कृपया इस पुण्य-पर्व में सम्मिलित होकर पुण्य-सञ्चय कीजिए, अपनी राष्ट्र-भाषा हिन्दी का साहित्य-भाण्डार पूर्ण करने में सहायक हूजिए और इस प्रकार सर्वसाधारण का हित-साधन करने का उद्योग कीजिए। सिर्फ़ इतना ही करें कि अपने दस-पाँच हिन्दी-प्रेमी इष्ट-मित्रों में से कम से कम दो स्थायी ग्राहक इस वेद-तुल्य सर्वाङ्गसुन्दर महाभारत के और बना देने की कृपा करें। जिन पुस्तकालयों में हिन्दी की पहुँच हो वहाँ इसे ज़रूर मँगवावें। एक भी समर्थ व्यक्ति ऐसा न रह जाय जिसके घर यह पवित्र ग्रन्थ न पहुँचे। आप सब लोगों के इस प्रकार साहाय्य करने से ही यह कार्य्य अग्रसर होकर समाज का हितसाधन करने में समर्थ होगा।

—प्रकाशक

विषय-सूची

रङ्गीन चित्रों की सूची

एक सौ सतहत्तर अध्याय

भीमसेन और अलायुध का युद्ध

सञ्जय कहते हैं—राजन् ! जैसे नाव के विना चिन्तित लोग समुद्र के पार जाने के लिए अचानक नाव पाकर प्रसन्न होते हैं, वैसे ही सब कौरव और दुर्योधन आदि आपके पुत्र उस भीम-कर्मा राक्षस को आया हुआ देखकर अत्यन्त आनन्दित हुए। कौरव पक्ष के राजाओं ने समझा कि उनका फिर से नया जन्म हुआ। वे लोग राक्षस अलायुध का स्वागत करने लगे।

राजन् ! उस समय रात को कर्ण के साथ घटोत्कच का अत्यन्त भयानक युद्ध आरम्भ होने पर सब पाञ्चाल और अन्य राजा लोग विस्मय के साथ दोनों का पराक्रम देखने लगे। आपके पक्ष के योद्धा भी भ्रान्त से हो गये। द्रोण, कृपाचार्य और अश्वत्थामा आदि वीर योद्धा रणभूमि में घटोत्कच के घोर अद्‌भुत कर्म तथा मायावल को देख चिल्लाकर कहने लगे कि "अब कौरव दल नष्ट होने से नहीं बच सकता"। आपकी सब सेना कर्ण के जीवन से निराश होकर बहुत ही भय-विह्वल और उद्विग्न होकर हाहाकार करने लगी। दुर्योधन ने कर्ण को अत्यन्त पीड़ित देख अलायुध से कहा—हे राक्षसेन्द्र ! कर्ण घटोत्कच से युद्ध करते हुए अपने बल-वीर्य के अनु-रूप कार्य कर रहे हैं। तथापि मायावी घटोत्कच महावीर राजाओं को उसी तरह विविध अस्त्रों से पीड़ित कर रहा है जिस तरह कोई हाथी बड़े-बड़े वृक्षों को पीड़ित करे और तोड़े। इसलिए इस समय तुम पराक्रम प्रकट करके घटोत्कच को शीघ्र मारो। ऐसा न हो कि पापी घटोत्कच मायाबल का सहारा लेकर कर्ण को मार डाले। पराक्रमी अलायुध, दुर्योधन के वचन सुनकर, घटोत्कच की ओर वेग से चला। तब घटोत्कच कर्ण को छोड़कर शत्रु अलायुध को बाण मारने लगा। महाराज ! वन में हथिनी के लिए जैसे दो मस्त हाथी लड़ें, वैसे ही दोनों राक्षस क्रुद्ध होकर घोर युद्ध करने लगे। महारथी कर्ण भी इस

१०

अवसर में राक्षस से छुटकारा पाकर, सूर्य-सदृश प्रकाशमान रथ दौड़ाकर, भीमसेन के सामने पहुँचे। भीमसेन ने आते हुए कर्ण का कुछ ख़याल न करके अलायुध के रथ की ओर अपना रथ बढ़ाया। उन्होंने देखा कि सिंह जैसे किसी साँड़ पर आक्रमण करे वैसे ही अलायुध घटोत्कच पर विकट आक्रमण कर रहा है, इसलिए वे पुत्र की सहायता करने को अलायुध के ऊपर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। उसने भीमसेन को आते देखकर घटोत्कच को छोड़कर उन्हें युद्ध के लिए ललकारा। राक्षसों का नाश करनेवाले भीमसेन सहसा अलायुध के सामने जाकर उस पर २० और उसके साथियों पर विकट बाणों की वर्षा करने लगे। अलायुध भी भीमसेन के ऊपर, सिल्ली पर रगड़कर तीक्ष्ण किये गये, सीधे जानेवाले बाणों की वर्षा करने लगा। उसके साथ के भयानक राक्षस भी अनेक प्रकार के शस्त्र लेकर भीमसेन की ओर दौड़े। वे आपके पुत्रों की विजय चाहते थे। इस तरह पराक्रमी भीमसेन पर बहुत से राक्षस प्रहार करने लगे; किन्तु इसकी परवा न करके भीमसेन ने उनमें से हर एक को पाँच-पाँच तीक्ष्ण बाण मारे। भीमसेन के बाणों से मारे जा रहे वे क्रूरमति राक्षस बुरी तरह चिल्लाते हुए चारों ओर भागने लगे। राक्षसों को डर से उद्विग्न देखकर महाबली अलायुध वेग से भीमसेन की ओर दौड़ा और उन पर तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करने लगा। भीमसेन भी उसे तीक्ष्ण धारवाले बाणों से पीड़ित करने लगे। अलायुध ने भीमसेन के कुछ बाणों को फुर्ती से काट डाला और कुछ को पास आने पर हाथ से पकड़कर बेकाम कर दिया। पराक्रमी भीमसेन ने राक्षस को ताककर वज्रपात के समान एक भयानक गदा उसके ऊपर फेंकी। उस ज्वालापूर्ण गदा को आते देखकर राक्षस ने अपनी गदा से उस पर ऐसी चोट मारी कि वह लौटकर भीमसेन की ओर चली गई। भीमसेन ने राक्षस के ऊपर असंख्य बाण छोड़े; परन्तु उसने तीक्ष्ण बाणों से उन बाणों को भी व्यर्थ कर ३० दिया। रात्रि के समय भयानक रूपवाले सब राक्षस भी अलायुध की आज्ञा से शत्रुपक्ष के रथों, हाथियों आदि को मारने लगे। राक्षसों के प्रहार से अत्यन्त पीड़ित पाञ्चाल, सृञ्जयगण और उनके हाथी-घोड़े आदि वाहन बहुत ही व्याकुल हो उठे।

राजन् ! इस प्रकार युद्ध की भीषणता देखकर श्रीकृष्ण ने कहा—हे अर्जुन ! वह देखो, महाबाहु भीमसेन अलायुध के वश में हो गये हैं। इस समय तुम कुछ विचार न करके भीमसेन की सहायता करो। धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, युधामन्यु, उत्तमौजा और द्रौपदी के पाँचों पुत्र मिलकर महारथी कर्ण से युद्ध करने को जायँ। बलवीर्यशाली नकुल, सहदेव और पराक्रमी सात्यकि तुम्हारी आज्ञा से अन्य राक्षसों को मारें। हे महाबाहो ! द्रोणाचार्य के द्वारा सुरक्षित इस शत्रुसेना का संहार तुम करो; क्योंकि हम लोगों के लिए यह बहुत ही भयङ्कर समय उपस्थित है। श्रीकृष्ण के यों कहने पर सब महारथी, उनकी आज्ञा के अनुसार, कर्ण और अलायुध आदि राक्षसों से युद्ध करने के लिए चल दिये।

क्रोध में भरे हुए दोनों बली वीर रथ के पहिये, युग, जुआ, अधिष्ठान, उपस्कर आदि जो कुछ सामग्री पास पड़ी पाते थे उसी से एक दूसरे पर प्रहार करते थे।—पृष्ठ २६१९

इधर प्रवल प्रतापी अलायुध ने विषैले सर्प-सदृश बाणों से भीमसेन का धनुष काट डाला और तीक्ष्ण बाणों से उनके सारथी तथा रथ के घोड़ों को नष्ट कर डाला। घोड़ों और सारथी से हीन रथ पर से भीमसेन उतर पड़े। उन्होंने बड़े ज़ोर से गरजकर एक भयानक गदा चलाई। राक्षस ने अपनी गदा के प्रहार से भीमसेन की चलाई हुई, भयानक शब्द करनेवाली, उस भारी गदा को चूर-चूर कर दिया। वह ज़ोर से सिंहनाद करने लगा। अलायुध का वह भयानक कार्य देखकर भीमसेन तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने हर्षपूर्वक दूसरी गदा हाथ में ली। उस समय वे, मनुष्य और राक्षस, दोनों परस्पर भिड़कर दारुण गदायुद्ध करने लगे। गदाओं की चोट के शब्द से पृथ्वी काँपने लगी। दम भर बाद दोनों ही गदाएँ छोड़कर परस्पर भिड़कर वज्र-तुल्य घूसों से युद्ध करने लगे। क्रोध में भरे हुए दोनों बली वीर रथ के पहिये, युग, जुआ, अधिष्ठान, उपस्कर आदि जो कुछ सामग्री पास पड़ी पाते थे उसी से एक दूसरे पर प्रहार करते थे। दोनों के शरीर से रक्त बह रहा था। मस्त महागजराज के समान दोनों वीर परस्पर भिड़कर एक दूसरे को खींचने लगे। पाण्डवों के हितकारी श्रीकृष्ण ने दोनों की दशा देखकर भीमसेन की रक्षा के लिए घटोत्कच को भेजा। ४८

एक सौ अठहत्तर अध्याय

घटोत्कच का अलायुध राक्षस को मार डालना

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! महात्मा श्रीकृष्ण ने भीमसेन को राक्षस से दबते देखकर घटोत्कच से कहा—हे महाबाहो! देखो, राक्षस अलायुध तुम्हारे और सब सैनिकों के सामने भीमसेन को दबाना चाहता है। इसलिए तुम शीघ्र कर्ण को छोड़कर अलायुध के पास जाओ। पहले उसे मारकर फिर कर्ण को मारना।

तब महावीर घटोत्कच कर्ण को छोड़कर बकासुर के भाई राक्षसराज अलायुध के साथ संग्राम करने लगा। रात्रि के समय घटोत्कच और अलायुध का बड़ा घमासान युद्ध होने लगा। धनुष हाथ में लिये भीमदर्शन अलायुध के साथी योद्धा राक्षसों को, वेग से आते देखकर, अत्यन्त क्रुद्ध महारथी सात्यकि, नकुल और सहदेव तीक्ष्ण बाणों से छिन्न-भिन्न करने लगे। उधर क्षत्रियश्रेष्ठ वीर अर्जुन चारों ओर बाण बरसाकर सब श्रेष्ठ राजाओं को युद्ध से विमुख करने लगे। इधर वीर कर्ण भी धृष्टद्युम्न, शिखण्डी आदि पाञ्चालों के महारथियों को बाणप्रहार से भगाने लगे। धृष्टद्युम्न आदि पाञ्चालों को मारे जाते देखकर पराक्रमी भीमसेन बाण बरसाते हुए शीघ्रता के साथ कर्ण के पास पहुँचे और बाण मारने लगे। इसी बीच में राक्षसों को १०

मारकर नकुल, सहदेव और महारथी सात्यकि भी कर्ण के पास पहुँच गये। वे सब मिलकर कर्ण से युद्ध करने लगे। उधर सब पाञ्चाल योद्धा मिलकर द्रोणाचार्य के साथ युद्ध करने लगे।

राजन्! राक्षसश्रेष्ठ अलायुध ने क्रुद्ध होकर शत्रुनाशन घटोत्कच के मस्तक पर एक बहुत बड़ा लोहे का परिघ (बेलन) मारा। उस प्रहार से महाबली घटोत्कच को बेहोशी सी आ गई, पर उसने दम भर निश्चेष्ट रहकर अपने को सँभाल लिया। उसके बाद घटोत्कच ने प्रज्वलित अग्नि के समान शतघण्टायुक्त सुवर्णभूषित गदा अलायुध के ऊपर फेंकी। राक्षस के हाथ से वेग से छूटी हुई उस गदा ने अलायुध के रथ, सारथी और घोड़ों को नष्ट कर डाला। घोर शब्द से युक्त गदा के प्रहार से घोड़े, पहिये, जुआ, ध्वजा, कूबर आदि के टूटने पर राक्षस अलायुध राक्षसी माया का आश्रय लेकर रथ से कूद पड़ा और आकाश में जाकर रक्त की वर्षा करने लगा। आकाश में एकाएक घटाएँ घिर आईं, बिजली चमकने लगी, वज्रपात के साथ लगातार कड़कड़ाहट और चटचटा शब्द होने लगा। अलायुध की वह माया देखकर घटोत्कच भी आकाश में चला गया। उसने माया के द्वारा उस माया को नष्ट कर दिया। मायावी अलायुध ने माया के बल से अपनी माया का

२० नाश देखकर घटोत्कच के ऊपर घोर पत्थरों की वर्षा करना शुरू कर दिया। भीमसेन के पुत्र ने अपने बाणों से उस शिलावृष्टि को व्यर्थ कर दिया। यह उसने एक अद्भुत काम किया। इसके बाद दोनों राक्षस एक दूसरे पर तरह-तरह के शस्त्र और वृक्ष बरसाने लगे। दोनों दोनों पर लोहमय परिघ, शूल, गदा, मुशल, मुद्गर, पिनाक, करवाल, तोमर, प्रास, कम्पन, नाराच, तीक्ष्ण भल्ल, बाण, चक्र, परश्वध, अयोगुड़, भिन्दिपाल, गोशीर्ष और उलूखल आदि विविध शस्त्र बरसाते रहे। फिर शस्त्र चुक जाने पर शमी, पीलू, कदम्ब, चम्पक, इंगुद, बदरी, फूले हुए कोविदार, पलाश, अरिमेद, प्लक्ष, न्यग्रोध, पीपल आदि बड़ी-बड़ी डालोंवाले महावृक्षों को उखाड़कर एक दूसरे पर बरसाने लगे। इसके बाद अनेक धातुओं से

घटोत्कच ने बलपूर्वक अलायुध को पकड़ कर उठा लिया और घुमाकर पटक देने के बाद शत्रु का कुण्डलों से सुशोभित सिर खड्ग से काट डाला और घोर सिंहनाद किया। पृष्ठ—२६१७

तब महाबाहु भीमसेन को क्रोध चढ़ आया। वे अर्जुन को फटकारते हुए कहने लगे।—२६७७

परिपूर्ण पर्वतों के बड़े-बड़े शिखर उखाड़कर एक दूसरे पर फेंकने लगे, जिससे पहाड़ों के विदीर्ण होने का सा घोर शब्द होने लगा।

महाराज! पूर्व समय में वानरराज वालि और सुग्रीव का जैसा दारुण युद्ध हुआ था वैसा ही युद्ध दोनों राक्षस करने लगे। तरह-तरह के घोर शस्त्रों और बाणों से युद्ध करने के उपरान्त दोनों राक्षस तीक्ष्ण खड्ग लेकर एक दूसरे से भिड़ गये। दोनों महाबली राक्षसों ने दौड़कर एक दूसरे के केश पकड़ लिये। फिर बड़े डील-डौलवाले महाबली दोनों राक्षस हाथ से हाथ पकड़कर मल्लयुद्ध करने लगे। बहुत बरस चुके बादलों की तरह उन दोनों के शरीरों से पसीना और रक्त बह चला। इसी बीच में घटोत्कच ने बलपूर्वक अलायुध को पकड़-कर ऊपर उठा लिया और घुमाकर पटक देने के बाद शत्रु का कुण्डलों से शोभित सिर खड्ग से काट डाला और घोर सिंहनाद किया। बकासुर के भाई महाकाय राक्षस अलायुध की मृत्यु देखकर पाञ्चाल और पाण्डवगण सिंह-नाद करने लगे। युद्ध में राक्षस के मरने पर परम प्रसन्न पाण्डव दल के लोग हज़ारों नगाड़े और शङ्ख बजाने लगे। वह दीपमाला से उजियाली रात पाण्डवों के लिए अत्यन्त विजयदायिनी हो उठी। महाबली घटोत्कच ने अलायुध का कटा हुआ सिर दुर्योधन के सामने फेंक दिया। राक्षसराज अलायुध की मृत्यु देखकर राजा दुर्योधन अपनी सेना सहित बहुत ही उदास हो उठे। महावीर अलायुध ने पहले का वैर स्मरण करके दुर्योधन के पास आकर भीमसेन को मारने की प्रतिज्ञा की थी। उसकी प्रतिज्ञा सुन-कर दुर्योधन ने समझ लिया था कि अब भीमसेन मारे गये और उनके भाई, भीम-सेन के हाथ से छुटकारा पाकर, बहुत दिनों तक जियेंगे। किन्तु इस समय घटोत्कच के हाथ से अलायुध की मृत्यु देखकर उन्हें निश्चय हो गया कि भीमसेन ने उनके भाइयों को मारने की जो प्रतिज्ञा की है उसे वे अवश्य पूरा करेंगे। ३० ४०

एक सौ उन्नासी अध्याय

कर्ण के हाथ से घटोत्कच का मारा जाना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! इस तरह अलायुध को मारकर प्रसन्नतापूर्वक राक्षसेन्द्र घटोत्कच आपकी सेना के सामने तरह-तरह के भयानक शब्द और सिंहनाद करने लगा। हृदय को हिला देनेवाला उस राक्षस का गरजना सुनकर आपकी सेना के लोग बहुत ही डर गये। अलायुध से घटोत्कच को भिड़ते देखकर महावीर कर्ण पाञ्चाल-सेना की ओर चले गये थे। वहाँ उन्होंने कान तक खींचकर दस-दस बाण धृष्टद्युम्न और शिखण्डी को मारे। फिर उग्र नाराच बाण मारकर युधामन्यु, उत्तमौजा और महारथी सात्यकि को कँपा दिया। पाञ्चाल-वीर भी दाहिनी और बाईं ओर से बराबर कर्ण पर बाण बरसा रहे थे और उनके धनुष मण्डलाकार घूमते ही देख पड़ते थे। वर्षा ऋतु में मेघों के गरजने के समान उन वीरों के धनुष की डोरी की ध्वनि और रथ के पहियों की घरघराहट सुनाई पड़ रही थी। उस समय रण-भूमि मेघमण्डल के समान जान पड़ रही थी। धनुष की डोरी और रथ के पहियों का शब्द मेघगर्जन के समान, धनुष बिजली के समान, ध्वजाएँ शिखर के समान और बाण आदि शस्त्रों की वर्षा जल की बूँदों के समान प्रतीत होती थी। शत्रुओं का मर्दन करनेवाले, पर्वत के समान अविचल, वीरश्रेष्ठ कर्ण उस अद्भुत शस्त्रवर्षा को नष्ट करने लगे। आपके पुत्रों का हित करने-वाले कर्ण वज्र-सदृश सुवर्णपुङ्खयुक्त तीक्ष्ण बाणों से शत्रुओं का संहार कर रहे थे। कर्ण ने फुर्ती के साथ बाणों से किसी की ध्वजा के टुकड़े कर दिये, किसी के शरीर को छिन्न-भिन्न कर डाला, किसी के सारथी और किसी के घोड़े मार डाले। युद्ध में किसी तरह चैन न पाकर, कर्ण के भयानक बाणों से घायल होकर, योद्धा लोग धर्मराज युधिष्ठिर की सेना में प्रवेश करने लगे। १०

महावीर घटोत्कच अपने योद्धाओं को छिन्न-भिन्न और रण से विमुख देखकर क्रोध से अत्यन्त अधीर हो उठा। वह सिंहनाद करके, सुवर्णरत्नशोभित रथ पर बैठकर, कर्ण के सामने पहुँचा और उन पर वज्र-तुल्य बाण छोड़ने लगा। दोनों वीर उस समय कर्णी, नाराच, शिलीमुख, नालीक, दण्ड, अशनि, वत्सदन्त, वराहकर्ण, विपाठ, शृङ्ग, क्षुरप्र आदि बाण बरसाकर आकाश को व्याप्त करने लगे। वे तिरछे जा रहे बाण अन्तरिक्ष में व्याप्त होने से, उनके सुवर्णमय पुङ्खों की प्रभा से, अन्तरिक्ष विचित्र पुष्पमालाओं से शोभित सा प्रतीत होने लगा। दोनों अप्रतिम प्रभावशाली वीर एकाग्रतापूर्वक उत्तम अस्त्रों से परस्पर प्रहार करने लगे। उस समय समर में उन दोनों वीरों के पराक्रम में किसी को कुछ विशेषता नहीं देख पड़ती थी, दोनों का समान पराक्रम और युद्धकौशल देख पड़ता था। आकाश में राहु और सूर्य के युद्ध के समान कर्ण और घटोत्कच का वह विचित्र, अपनी उपमा न रखनेवाला, शस्त्रपात से घोर और तुमुल युद्ध

होता रहा। सञ्जय कहते हैं—महाराज! जब अस्त्र जाननेवालों में श्रेष्ठ कर्ण किसी तरह घटो-त्कच से अधिक पराक्रम नहीं प्रकट कर सके तब उन्होंने एक उग्र अस्त्र का प्रयोग किया। उसी अस्त्र से कर्ण ने घटोत्कच के सारथी, रथ और घोड़ों को नष्ट कर दिया। रथ न रहने पर घटोत्कच फुर्ती के साथ ग़ायब हो गया।

धृतराष्ट्र ने पूछा कि हे सञ्जय! कूटयुद्ध में निपुण निशाचर के अन्तर्द्धान होने पर मेरे पक्ष के वीरों ने क्या सोचा और क्या किया? सञ्जय ने कहा—राजन्! राक्षसेन्द्र घटोत्कच को ग़ायब होते देखकर कौरव पक्ष के सब लोग ज़ोर से चिल्लाने लगे कि यह कूटयुद्ध करनेवाला राक्षस युद्ध में अदृश्य रहकर अवश्य कर्ण को मार डालेगा। महाराज! कौरवों के ये वचन सुनकर फुरतीले और अस्त्रों के द्वारा विचित्र युद्ध करनेवाले कर्ण ने बाण-वर्षा से सब दिशाओं को रूँध सा दिया। बाणों से अन्तरिक्ष में अँधेरा सा छा गया। इतने पास-पास बाण छा गये कि कोई भी प्राणी उनके बीच से होकर नीचे नहीं आ सकता था। अन्तरिक्ष को बाणों से परिपूर्ण कर रहे कर्ण ऐसी फुर्ती दिखा रहे थे कि नहीं मालूम होता था, कब वे तरकस में हाथ लगाते हैं, कब बाण निकालते हैं, कब धनुष पर चढ़ाते हैं और कब छोड़ते हैं। इसी बीच में राक्षसराज घटोत्कच ने अन्तरिक्ष में राक्षसी माया प्रकट की। उस दारुण माया के कारण अन्तरिक्ष में लाल रङ्ग के भयानक बादल प्रकट हो गये। ऐसा जान पड़ा कि उग्र अग्निशिखा आकाश में जल रही है। हे कौरवेन्द्र! उसके बाद उसमें बिजलियाँ चमकने लगीं और उल्काएँ प्रज्वलित हो उठीं। हज़ारों नगाड़ों के बजने का सा घोर शब्द प्रकट होकर लोगों के मन में त्रास उत्पन्न करने लगा। फिर चारों ओर से सुवर्णपुङ्ख बाण, शक्ति, ऋष्टि, प्रास, मुशल, परश्वध, तेल से साफ़ किये गये खड्ग, उज्ज्वल तोमर, पट्टिश, लोहे के परिघ, तीक्ष्ण शूल, सुवर्णपट्टभूषित विचित्र भारी गदा, शतघ्नी आदि शस्त्र, भारी शिलाएँ, हज़ारों अशनि, वज्र, सैकड़ों छुरेवाले चक्र, कौरव-सेना और कर्ण के ऊपर बरसने लगे। उस शक्ति, शिला, परश्वध, प्रास, खड्ग, वज्र, अशनि, मुद्गर आदि की भारी वृष्टि को कर्ण अपने बाणों से व्यर्थ नहीं कर सके। बाणों से घायल होकर गिर रहे घोड़ों का, वज्रों से घायल होकर गिर रहे हाथियों का और शिलाओं से टूटे-फूटे महारथों का घोर शब्द होने लगा। अनेक प्रकार के भयानक शस्त्रों को बरसाकर घटोत्कच ने चारों ओर से दुर्योधन की सेना को बहुत ही व्याकुल कर दिया। साधारण सैनिक पुरुष हाहाकार करते हुए चारों ओर भागने, भटकने और विषाद से विह्वल होकर छिपने लगे। आर्य क्षत्रियों के धर्म का ख़याल करके मुख्य वीर योद्धा लोग रण-भूमि में डटे रहे, युद्ध छोड़कर भागे नहीं। राक्षसी माया से उत्पन्न उन शस्त्रों की घोर वर्षा को आते और उससे अपनी असंख्य सेना को मरते देखकर आपके पुत्र बहुत ही भयविह्वल हो उठे। आग उगलने के कारण प्रज्वलित जिह्वावाली गिदड़ियों को भयानक शब्द करते और

२०

३०

राक्षसों को गरजते देखकर योद्धा लोग बहुत ही व्यथित हो उठे। पर्वत के समान शरीरवाले, प्रज्वलित जिह्वा से आग उगल रहे, तीक्ष्ण दाढ़ों और दाँतों से भयानक, हाथों में शक्ति लिये हुए राक्षसों के समूह आकाश में पहुँचकर मेघों के समान कौरवदल पर शस्त्रों की उग्र वर्षा करने लगे। राक्षसों के बरसाये हुए बाण, शक्ति, शूल, गदा, उग्र प्रज्वलित परिघ, वज्र, पिनाक, अशनि, चक्र, शतघ्नी आदि शस्त्रों के प्रहार से विमथित योद्धा मर-मरकर पृथ्वी पर गिरने लगे। महाराज ! मायावी राक्षस लोग आपके पुत्र की सेना पर लगातार शूल, भुशुण्डी, पत्थर, लगुड़, शतघ्नी, लोहे के खण्डों से भूषित स्थूणा आदि बरसाने लगे। उस समय आपके पक्ष के लोगों में डर के मारे खलबली मच गई। शूरों के सिर फट गये थे, अङ्ग कट गये थे, आँतें निकलकर ढेर हो गई थीं और वे रणभूमि में पड़े हुए थे। हाथियों और घोड़ों की लाशें छिन्न-भिन्न हो गई थीं और वे पृथ्वी पर पड़ी हुई थीं। पत्थरों से तोड़े गये रथ पड़े थे। जो लोग डर के मारे जीवन-दान माँग रहे थे उन्हें भी दुष्ट राक्षस नहीं छोड़ते थे। घटोत्कच की माया से उत्पन्न वे घोर राक्षस बराबर शस्त्रों की वर्षा करते जा रहे थे। इस तरह कालकृत क्षत्रियों का नाश उपस्थित होने पर कौरव पक्ष के हज़ारों वीर मारे जाने लगे। सब

४०

कौरवदल के लोग सहसा साहस छोड़कर भाग खड़े हुए और चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे—हे कौरवो ! भागो भागो ! अब किसी तरह यह सेना बच नहीं सकती। पाण्डवों का पक्ष लेकर इन्द्र सहित सब देवता हमें मार रहे हैं। हे कुरुकुलश्रेष्ठ ! इस तरह समर-सङ्कट-सागर में डूब रहे लोगों के लिए कर्ण द्वीप के समान आश्रयस्थल हुए। घमासान लड़ाई मचने पर, कौरव-सेना के भागने और छिपने पर, सेनादलों के विभाग में प्रकाश न रहने पर, नहीं जान पड़ता था कि कौन पाण्डव दल के लोग हैं और कौन कौरव दल के लोग हैं। उस मर्यादाहीन युद्ध के अवसर पर घोर रूप से पीड़ित लोग चारों ओर भागने लगे। उन लोगों को सभी दिशाएँ शून्य देख पड़ने लगीं। उस समय रणभूमि में अकेले कर्ण ही उस शस्त्रवर्षा को छाती पर रोकते

दिखाई पड़ रहे थे। महाराज! कर्ण ने अपने बाणों से अन्तरिक्ष को व्याप्त कर दिया। वे राक्षस की दिव्य माया का सामना करते हुए उससे युद्ध कर रहे थे। दुष्कर कर्म करके आर्य-धर्म का पालन करते हुए कर्ण उस युद्ध में किसी तरह मोह को नहीं प्राप्त हुए। तब सिन्धु देश और वाह्लीक देश के सब लोग भयाकुल होकर कर्ण की ओर देखने लगे। वे राक्षस की विजय देखकर भी कर्ण के मोहित न होने की प्रशंसा करने लगे।

इसी अवसर में घटोत्कच ने एक चक्रयुक्त शतघ्नी फेंकी। उसके प्रहार से कर्ण के चारों घोड़े घुटनों के बल गिरकर मर गये। उनके दाँत गिर पड़े और उनकी जीभें और आँखें बाहर निकल आईं। तब कर्ण उस रथ से उतरकर कौरवों को भागते देख सोचने लगे कि इस समय क्या करना चाहिए। अपने दिव्य अस्त्र को राक्षस की माया से निष्फल होते देखकर भी कर्ण को मोह नहीं हुआ और वे उस समय के योग्य कर्तव्य सोचने लगे। तब राक्षस की उग्र माया देखकर कर्ण की ओर देखते हुए सब कौरव कहने लगे—हे कर्ण! अब चटपट अपनी अमोघ शक्ति से इस राक्षस को मारो। देखो, ये सब धृतराष्ट्र के पुत्र और कौरव नष्ट हुए जा रहे हैं। भीमसेन और अर्जुन हमारा क्या कर लेंगे? आधी रात के समय हमें पीड़ित और नष्ट कर रहे इस पापी राक्षस को तुम मार डालो। हममें से जो कोई इस दारुण युद्ध से जीता बचेगा, वही तो सेना सहित पाण्डवों से युद्ध करेगा। इसलिए तुम इन्द्र की दी हुई अमोघ शक्ति से शीघ्र इस घोर राक्षस को मार डालो। हे कर्ण! ऐसा करो, जिसमें इन्द्र-तुल्य पराक्रमी सब कौरव इस रात्रि-युद्ध में अपने योद्धाओं सहित जीवन न खो बैठें।

राजन्! महावीर कर्ण ने उस रात्रियुद्ध में अपने को पीड़ित और सब सेना को भय-विह्वल देखकर और कौरवों का कोलाहल तथा आर्तनाद सुनकर राक्षस के ऊपर वह अमोघ शक्ति चलाने का पक्का इरादा कर लिया। इन्द्र ने कर्ण से कुण्डल लेकर उन्हें वह अमोघ असह्य वैजयन्ती शक्ति दी थी। बहुत वर्षों से कर्ण ने, अर्जुन को मारने के लिए, वह शक्ति अपने पास

५०

रख छोड़ी थी। सिंह के समान क्रुद्ध कर्ण ने रण में राक्षस से अपना पराभव न सह सकने के कारण उसे मारने के लिए वह श्रेष्ठ शक्ति अपने हाथ में ली। वह उत्तम शक्ति मृत्यु की जिह्वा के समान लपलपा रही, पाशयुक्त, मृत्यु की वहन सी, प्रज्वलित उल्का के समान और शत्रु के शरीर को विदीर्ण करनेवाली थी। कर्ण के हाथ में वह प्रज्वलित शक्ति देखकर राक्षस डर गया और विन्ध्याचल के समान शरीर धारण करके भागा। कर्ण के हाथ में वह शक्ति देखकर आकाशमण्डल में स्थित प्राणी दारुण शब्द करने लगे। घोर आँधी चलने लगी। दारुण शब्द के साथ पृथ्वी पर वज्रपात हुआ। एक पुरुष को मारकर इन्द्र के पास चली जानेवाली वह भयङ्कर शक्ति कर्ण के हाथ से जो छूटी, तो उसने तत्काल राक्षस की सारी माया को भस्म कर दिया और वेग से उस राक्षस के हृदय को फाड़कर वह बिजली की तरह चमकती हुई ऊपर चली गई और नक्षत्रमण्डल के बीच में घुसकर अदृश्य हो गई।

राजन्! दिव्य और नागों, मनुष्यों तथा राक्षसों के विविध अस्त्रों से पहले ही घटोत्कच का शरीर छिन्न-भिन्न हो गया था। अब वह भयानक शब्द करता हुआ पृथ्वी पर गिर पड़ा। इन्द्र की शक्ति ने उसके प्राणों को उसके शरीर से जुदा कर दिया। महाराज! पहले अनेक अद्भुत कर्म करने के सिवा उस राक्षस ने मरते समय भी शत्रुक्षय के लिए यह अद्भुत काम किया कि शक्ति से मर्मस्थल विदीर्ण होने पर मेघ और पर्वत के समान भारी शरीर धारण कर लिया। इसके उपरान्त वह भिन्नशरीर राक्षसेन्द्र मरकर अन्तरिक्ष से पृथ्वी पर गिर पड़ा। उसका सिर नीचे था, शरीर चेष्टा-रहित था और जीभ बाहर निकल आई थी। उसका शरीर बहुत बड़ा हो गया था। भीमकर्मा घटोत्कच ने भयानक रूप से गिरकर मरते समय भी अपने बढ़ रहे शरीर से, पाण्डवों का प्रिय करने के लिए, आपकी एक अक्षौहिणी सेना को कुचलकर मार डाला। मायावी राक्षस को मरते और उसकी माया को नष्ट होते देखकर कौरव-पक्ष के लोग बहुत प्रसन्न हुए। वे सिंहनाद और शङ्खनाद करते हुए भेरी, मुरज, नगाड़े आदि तरह-

तरह के बाजे बजाने लगे। वृत्रासुर के मारे जाने पर पहले देवताओं ने जैसे इन्द्र की पूजा की थी वैसे ही कौरवगण कर्ण की प्रशंसा करने लगे। प्रसन्नचित्त कर्ण ने भी आपके पुत्र दुर्योधन के रथ पर बैठकर अपनी सेना के भीतर प्रवेश किया। ६४

एक सौ अस्सी अध्याय

अर्जुन और श्रीकृष्ण का संवाद

सञ्जय कहते हैं—महाराज! घटोत्कच को मरकर पर्वत की तरह गिरते देख पाण्डवगण बहुत ही दुःखित हुए। शोक के मारे उनकी आँखों में आँसू भर आये; किन्तु कृष्णचन्द्र अत्यन्त प्रसन्न होकर सिंहनाद करने लगे। [उनके इस आचरण से पाण्डव बहुत व्यथित हुए।] श्रीकृष्ण ने घोड़ों की रास रोककर अर्जुन को गले लगा लिया। वे आँधी से हिल रहे वृक्ष की तरह रथ के ऊपर नाचने लगे। अर्जुन को फिर गले से लगाकर श्रीकृष्ण बारम्बार तालियाँ पीटकर, ताल ठोककर और सिंहनाद करके हर्ष प्रकट करने लगे।

वासुदेव को इस तरह आनन्दित देख उदास होकर महाबली अर्जुन ने उत्सुकता के साथ कहा—हे मधुसूदन! हमारे सैनिक और हम लोग घटोत्कच की मृत्यु देखकर शोक से अत्यन्त व्याकुल हो रहे हैं। किन्तु आप इस समय जो इस तरह हर्ष प्रकट कर रहे हैं, उसका क्या कारण है? हर्ष का स्थान न होने पर भी आपका यह अत्यन्त हर्ष देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा है। घटोत्कच की मृत्यु देखकर हमारी सेना रण से भाग रही है और हम लोग अत्यन्त उद्विग्न हो रहे हैं। भगवन्! आपके इस हर्ष का कोई विशेष कारण होना चाहिए। अपने इस आनन्द का कारण, यदि छिपाने योग्य न हो तो, शीघ्र बताइए। आप जैसे गम्भीर पुरुष के धैर्य का छूटना, मेरी समझ में, समुद्र के सूखने और सुमेरु के चलने के समान है। १०

अर्जुन के वचन सुनकर श्रीकृष्ण कहने लगे--हे अर्जुन! जिस कारण मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है, वह मैं कहता हूँ, सुनो। कर्ण ने इन्द्र की दी हुई अमोघ शक्ति घटोत्कच के ऊपर चला दी है, इससे अब समझ लो कि कर्ण को मारना बहुत सहज हो गया है। अब तुम कर्ण को मरा हुआ ही समझो। कार्त्तिकेय के समान हाथ में शक्ति लिये हुए कर्ण के सामने इस संसार का कोई वीर पुरुष नहीं ठहर सकता था। इन्द्र पहले ही कर्ण के कवच और कुण्डलों को माँगकर ले गये थे और वह अमोघ शक्ति, जो कर्ण ने इन्द्र से माँग ली थी, आज घटोत्कच पर चलाने के कारण कर्ण के हाथ से निकल गई। यह हमारे लिए बड़े भाग्य की बात है। यदि इस महाबली कर्ण के पास कवच और कुण्डल रहते तो यह वीर पुरुष देवगण-सहित तीनों लोकों को परास्त कर सकता था। इन्द्र, कुबेर, वरुण, यमराज आदि लोकपाल भी समर में कर्ण का सामना नहीं कर सकते थे। अधिक क्या, यदि तुम गाण्डीव धनुष और मैं सुदर्शन चक्र लेकर दोनों जने कर्ण को हराना चाहते तो नहीं हरा सकते थे। हे अर्जुन! इन्द्र ने तुम्हारा हित करने के लिए पहले ही [मायामय ब्राह्मण-रूप से] कर्ण के पास आकर उससे कवच और कुण्डल माँग लिये थे। प्रतापी कर्ण ने शरीर के साथ ही उत्पन्न स्वाभाविक कवच और कुण्डल काटकर इन्द्र को दे दिये थे, इसी से कर्ण का नाम वैकर्तन भी पड़ गया। इस समय वह वैसा २० ही निस्तेज हो गया है, जैसे मन्त्र से बाँधा हुआ क्रुद्ध विषैला साँप या बुझी हुई आग हो। महारथी कर्ण ने जिस दिन कवच और कुण्डलों के बदले में इन्द्र से एकपुरुष-घातिनी अमोघ दिव्य शक्ति प्राप्त की थी उसी दिन से वह उस शक्ति को तुम्हारे प्राण लेने के लिए अपने पास सावधानी से रक्खे हुए था। उस शक्ति के द्वारा तुम्हारा वध करने का उसने दृढ़ विचार कर रक्खा था। इस समय वीर कर्ण के हाथ से वह शक्ति निकल गई है। अब कर्ण से तुमको कुछ भी खटका नहीं है। हे पुरुषसिंह! मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि यद्यपि इस समय कर्ण के पास वह शक्ति नहीं है, तो भी तुम्हारे सिवा और कोई योद्धा उसको मार नहीं सकता। कर्ण नित्य निरन्तर ब्राह्मणभक्त (ब्रह्मण्य), सत्यवादी, तपस्वी, दानी और शत्रुओं पर भी दया करता है; इसी से वह वृष (धर्मप्रधान) कहलाता है। महाबाहु कर्ण युद्ध से मुँह नहीं मोड़ता। वह सदा धनुष चढ़ाकर, वन में सिंह जैसे गरजकर गजराजों को विमर्दित करता है वैसे ही, रण के मैदान में सिंह-सदृश महारथी क्षत्रियों का मानमर्दन करता है। हे पुरुषसिंह! तुम्हारे पक्ष के श्रेष्ठ योद्धा लोग, दोपहर के सूर्य के समान तेजस्वी, प्रतापी कर्ण की ओर नज़र भरकर देख भी नहीं सकते। महावीर कर्ण, वर्षाऋतु में जलधारा बरसानेवाले मेघ के समान, जब दिव्य अस्त्रों और बाणों की वर्षा करने लगता है तब औरों की कौन कहे, सब देवता भी चारों ओर से बाणों की वर्षा करके उसको परास्त नहीं कर सकते। बल्कि कर्ण के बाणों के प्रहार से उन्हीं के शरीर से रक्त बहेगा और मांस कट-कटकर गिरेगा। हे अर्जुन! कवच-कुण्डल-हीन कर्ण इस

समय इन्द्र की दी हुई शक्ति निकल जाने से साधारण मनुष्य के समान हो गया है। किन्तु यह सब होने पर भी उसको मारने का एक ही उपाय है। युद्ध करते समय, शाप-वश, उसके रथ का पहिया पृथ्वी में धँस जायगा। उसी समय मेरा इशारा पाकर सावधानी के साथ तुम, पहिया निकालने में लगे हुए असावधान, कर्ण को मार डालना। अब भी त्रिलोकी में एकमात्र वीर इन्द्र भी वज्र लेकर शस्त्रधारी अजेय कर्ण को नहीं मार सकते। हे धनञ्जय! मैंने तुम्हारे हित के लिए अनेक प्रकार के उपाय निकालकर क्रमशः महाबली अद्वितीय वीर मगधराज जरासन्ध, चेदिराज शिशुपाल, निषादराज अद्वितीय धनुर्द्धर एकलव्य, हिडिम्ब, बक, किर्मीर, अलायुध और उग्रकर्मा घटोत्कच आदि मनुष्यों और राक्षसों का वध किया और कराया है। ३०–३३

एक सौ इक्यासी अध्याय

श्रीकृष्ण का उन उपायों का वर्णन करना, जिनसे जरासन्ध आदि मारे गये

अर्जुन ने पूछा—हे श्रीकृष्ण! आपने हमारे हित के लिए कैसे, किन-किन, उपायों को निकालकर जरासन्ध आदि राजाओं और राक्षसों का वध कराया है?

श्रीकृष्ण ने कहा—हे अर्जुन! मगधराज जरासन्ध, शिशुपाल और निषादराज एकलव्य यदि पहले ही न मार डाले गये होते तो इस समय वे तुम्हारे लिए अत्यन्त भय का कारण होते। ये महारथी जीते होते तो दुर्योधन अवश्य ही उन्हें अपनी ओर से रण का निमन्त्रण देता। वे सब देव-तुल्य अस्त्रविद्या में निपुण, रणदुर्मद, महावीर निरन्तर हमसे द्वेष रखते और शत्रुता का आचरण करते थे। इसलिए वे अवश्य ही कौरवों का पक्ष लेते और दुर्योधन की सहायता तथा रक्षा करते। अधिक क्या कहूँ, कर्ण, मगधराज जरासन्ध, चेदिराज शिशुपाल और निषादराज एकलव्य, ये चारों मिलकर अगर दुर्योधन का पक्ष लेते तो सारी पृथ्वी के वीरों को भी परास्त कर देते। हे धनञ्जय! मैंने ही उनका संहार कराया है। उनके वध में मैंने जिन उपायों से काम लिया है उनको एकाग्र होकर सुनो। देखो, बिना तरकीब के इन लोगों को देवता भी नहीं मार सकते थे। हे पार्थ! इनमें से एक एक वीर ऐसा था जो अकेला ही, लोकपालों के द्वारा सुरक्षित, सम्पूर्ण शत्रु-सेना से युद्ध कर सकता था। पहले बलदेवजी ने जरासन्ध को जीते ही पकड़ लिया था। उस अपमान से कुपित होकर उसने हमारे मारने के लिए अग्नि के समान प्रभापूर्ण, सबका संहार करने में समर्थ, वज्र-सदृश एक सर्वघातिनी गदा फेंकी थी। जरासन्ध की चलाई हुई, आकाश में सीमन्त रेखा (स्त्रियों की माँग की सिंदूर की रेखा) सी, इन्द्र के चलाये हुए वज्र के समान वेग से वह गदा हम लोगों की ओर आ रही थी। यह देखकर महावीर

१० बलभद्रजी ने उस गदा को व्यर्थ करने के लिए स्थूणाकर्ण नाम का अस्त्र छोड़ा। अस्त्र के वेग से टकराकर वह गदा पृथ्वी पर गिर पड़ी। उसकी धमक से पृथ्वी फट गई और पहाड़ हिल उठे।

हे अर्जुन! महाबली जरासन्ध दो माताओं के पेट से पैदा हुआ था, अर्थात् उसके शरीर का आधा-आधा हिस्सा अलग-अलग गर्भ से उत्पन्न हुआ था। जरा नाम की एक प्रभावशालिनी राक्षसी ने उन हिस्सों को एक में जोड़कर जिला दिया, इसी से उसका नाम जरासन्ध पड़ा। वह राक्षसी भी पुत्र-बान्धव आदि के साथ उस गदा और स्थूणाकर्ण अस्त्र के प्रभाव से मरकर पृथ्वी पर गिर पड़ी। हे पार्थ! प्रतापी जरासन्ध के पास वह भयानक गदा न रहने से ही महावीर भीमसेन तुम्हारे सामने उस तरह जरासन्ध को मार सके। यदि महाप्रतापी जरासन्ध के हाथ में वह गदा होती तो इन्द्र आदि देवता भी उसे नहीं मार सकते थे। हे अर्जुन! महावीर द्रोणाचार्य ने तुम्हारा हित करने के लिए ही वन में जाकर, अपने को गुरु बताकर, गुरुदक्षिणा में सत्यविक्रमा निषादराज एकलव्य से दाहने हाथ का अँगूठा कटवा लिया था। महापराक्रमी एकलव्य उँगलियों में अंगुलित्राण पहने दूसरे परशुराम के समान वन में विचरता था। वह महा अभिमानी वनचारी निषाद बड़ा भारी धनुर्द्धर योद्धा था; पर अँगूठा न रहने से निकम्मा हो गया। अँगूठा रहने पर युद्ध में देवता, दानव, राक्षस, नाग आदि सब मिलकर भी उसको नहीं जीत सकते थे। साधारण मनुष्य तो उसकी ओर देख भी नहीं सकते थे। वीर
२० एकलव्य दृढ़ मुष्टि से दिन-रात बाण चलाने का अभ्यास किया करता था। बाण-विद्या में वह सफलता भी प्राप्त कर चुका था। तुम्हारे हित के लिए ही मैंने संग्राम में उसको मार डाला।

हे पार्थ! तुम्हारे हित के लिए ही मैंने चेदि देश के राजा पराक्रमी शिशुपाल को, तुम्हारे सामने ही, मारा है। उसे संग्राम में सब देवता और दैत्य भी मिलकर नहीं जीत सकते थे। उसके तथा अन्य देव-द्रोही राजाओं और राक्षसों के वध के लिए ही मैं उत्पन्न हुआ हूँ। तुम्हारी सहायता और सब लोकों के हित के लिए ही मेरा जन्म हुआ है। हे अर्जुन! रावण के समान बली, ब्राह्मणों के यज्ञों को नष्ट करनेवाले अन्य हिडिम्ब, बकासुर, किर्मीर आदि राक्षसों को भीमसेन ने मारा है। मायावी अलायुध को घटोत्कच ने तुम्हारे सामने ही मारा है और मायावी घटोत्कच का वध भी मैंने उपाय से कर्ण के द्वारा, उस अमोघ शक्ति के प्रयोग से, कराया है। मैं सच कहता हूँ, अगर कर्ण इन्द्र की दी हुई शक्ति से आज घटोत्कच को न मारता तो फिर मुझे अवश्य उस राक्षस का वध करना पड़ता। मैंने तुम लोगों का प्रिय करने के ख़याल से ही अब तक घटोत्कच को नहीं मारा था। दुष्ट घटोत्कच ब्राह्मणों का द्रोही था और यज्ञ आदि पुण्य-कार्यों में विघ्न डालता था। वह पापी धर्म का लोप करनेवाला था, इसी से मैंने इस प्रकार इसको मरवा डाला। साथ ही इन्द्र की दी हुई अमोघ शक्ति भी कर्ण के पास से निकाल दी। हे अर्जुन! मैं सच कहता हूँ, जो लोग धर्म का लोप करनेवाले हैं वे मेरे वध्य

हैं, यह मेरी प्रतिज्ञा है। मैं सत्य की शपथ खाकर कहता हूँ कि जहाँ वेदपाठ या ब्राह्मणभक्ति, सत्य, दमन, शौच, ह्री (लोकलज्जा), श्री, धैर्य, क्षमा आदि सद्गुण हैं वहीं मैं नित्य रहता हूँ। हे अर्जुन! तुम वैकर्तन कर्ण को मारने की तनिक भी चिन्ता न करो। मैं तुमको उपाय बता ३० दूँगा, जिससे तुम कर्ण का सामना कर सकोगे और उसे मार सकोगे। दुर्योधन को भी रण में भीमसेन मारेंगे। उसके वध का उपाय भी मैं बता दूँगा। हे अर्जुन! शत्रुसेना में यह कोलाहल बढ़ता जा रहा है। तुम्हारी सेना के दल दसों दिशाओं में डर के मारे भाग रहे हैं। कौरव-दल के लोग इस समय उत्साह के साथ ताक-ताककर तुम्हारी सेना का संहार कर रहे हैं। श्रेष्ठ योद्धा द्रोणाचार्य, अग्नि के समान, हमारी सेना को भस्म कर रहे हैं। ३३

एक सौ बयासी अध्याय

धृतराष्ट्र का प्रश्न। सञ्जय का उत्तर

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! एक ही वीर को मारकर चली जानेवाली अमोघ शक्ति जो कर्ण के पास थी उसे कर्ण ने, सब वीरों को छोड़कर, अर्जुन के ऊपर अब तक क्यों नहीं चलाया था? एक अर्जुन की मृत्यु से ही सब पाण्डव और सृञ्जय मर जाते, या उन्हें मारना सहज हो जाता। फिर कर्ण ने अर्जुन को मारकर विजय प्राप्त करने का यत्न क्यों नहीं किया? अर्जुन की यह प्रतिज्ञा है कि अगर कोई युद्ध के लिए बुलावे तो वे कभी पीछे नहीं हटते। कर्ण को उचित था कि वे ख़ुद अर्जुन को खोजकर उनसे युद्ध करते। फिर उन्होंने अर्जुन को द्वैरथ युद्ध के लिए ललकारकर इन्द्र की दी हुई उस शक्ति से अब तक क्यों नहीं मार डाला? हे सञ्जय! तुम इसका कारण बतलाओ। दुर्योधन अवश्य ही बुद्धिहीन, असहाय और पापमति है। शत्रुओं ने धोखा देकर, कर्ण की शक्ति को व्यर्थ करके, इस समय उसे निरुपाय कर दिया है। फिर वह कैसे शत्रुओं को जीत सकता है? जो इन्द्र की दी हुई शक्ति उसके लिए परम आश्रय और एकमात्र विजय-प्राप्ति का उपाय थी उसे श्रीकृष्ण ने, युक्तिपूर्वक घटोत्कच के ऊपर चलवाकर, व्यर्थ कर दिया। हे सञ्जय! जैसे कुष्ठ आदि प्रबल रोग से पीड़ित व्यक्ति के हाथ से कोई बलवान् नीरोग पुरुष फल को छीन ले वैसे ही श्रीकृष्ण के यत्न से वह अमोघ शक्ति, घटोत्कच के ऊपर चलाये जाने से, कर्ण के हाथ से निकल गई। जैसे शूकर और कुत्ते के युद्ध में किसी की मृत्यु होने से चाण्डाल को लाभ ही होता है वैसे ही, मेरी समझ में, कर्ण और घटोत्कच के युद्ध में किसी की मृत्यु से वासुदेव ने पाण्डवों का लाभ सोच लिया था। यदि घटोत्कच कर्ण को मार डालता तो वह पाण्डवों के लिए बड़ा भारी लाभ था; और अगर घटोत्कच को कर्ण ने मार डाला तो भी शक्ति उनके हाथ से निकल जाने के कारण

लाभ पाण्डवों का ही हुआ। परम बुद्धिमान् वासुदेव ने यही सोचकर घटोत्कच को कर्ण से भिड़ा दिया था। इस प्रकार युद्ध में पाण्डवों का हित और प्रिय करने के विचार से पुरुषसिंह श्रीकृष्ण
१० ने कर्ण के द्वारा घटोत्कच को मरवा डाला।

सञ्जय ने कहा—महाराज! कर्ण ने उस शक्ति से अर्जुन को मारने का दृढ़ विचार कर रक्खा था। उनके इस विचार को जानकर ही महाचतुर श्रीकृष्ण ने उस अमोघ शक्ति को व्यर्थ करने के लिए राक्षस घटोत्कच को कर्ण से लड़ने को भेजा था। किन्तु महाराज! यह सब आपकी ही कुमन्त्रणा का फल है। हे कुरुकुलश्रेष्ठ! यदि श्रीकृष्ण महारथी कर्ण के सामने से टालकर अर्जुन की रक्षा न करते रहते, तो हम लोग पहले ही अर्जुन को मारकर विजयी हो जाते। हे महाराज! योगीश्वर श्रीकृष्ण अगर ऐसे कौशल न करते तो अब तक न जानें कब के अर्जुन मर चुके होते—घोड़े, ध्वजा, रथ आदि सहित अर्जुन का पता भी न होता। हे पार्थिव! श्रीकृष्ण सदा सर्वथा अनेक प्रकार के उपायों से अर्जुन की रक्षा करते रहते हैं और वे सम्मुख समर में सब शत्रुओं को जीतते और मारते जाते हैं। असाधारण शक्तिशाली श्रीकृष्ण अगर अब तक विशेष रूप से अर्जुन की रक्षा न करते तो अवश्य ही कर्ण की वह शक्ति, वज्रपात से भस्म हुए वृक्ष की तरह, अर्जुन को भस्म कर देती।

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! मेरा पुत्र दुर्योधन विरोधी (किसी की न माननेवाला) और अपने को सबसे अधिक बुद्धिमान् समझनेवाला है। उसके सलाहकार भी बुरे हैं। इसी कारण अर्जुन के वध और जयलाभ का यह उपाय हाथ से निकल गया। हे सूत! मुझे रह-रहकर आश्चर्य तो यह हो रहा है कि महाबुद्धिमान् और सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ कर्ण ने अर्जुन को सामने पाकर भी उन पर वह अमोघ शक्ति अब तक क्यों नहीं चलाई? हे सञ्जय! तुम, उस शक्ति का हाल जानकर भी, क्यों चूक गये? तुमने कर्ण को अर्जुन पर शक्ति चलाने की बात क्यों नहीं सुझाई?

सञ्जय ने कहा—महाराज! राजा दुर्योधन, शकुनि, दुःशासन और मैं, हम चारों आदमी
२० नित्य रात को यही सोचते थे और कर्ण से कहते थे कि हे कर्ण! सवेरे सबको छोड़कर तुम उस अमोघ शक्ति से अर्जुन को मार डालो। अर्जुन-वध के बाद हम लोग सब पाण्डवों और पाञ्चालों को अपने क़ाबू में कर लेंगे। अर्जुन के बिना लाचार हो सब लोग हमारे आज्ञाकारी हो जायँगे। अथवा अर्जुन के मारे जाने पर भी श्रीकृष्ण अन्य किसी पाण्डव को युद्ध करने के लिए खड़ा करेंगे, इसलिए अर्जुन को न मारकर उस शक्ति से श्रीकृष्ण को ही मार डालो। श्रीकृष्ण ही पाण्डवों की जड़ हैं, भीमसेन आदि वीर शाखा हैं और पाञ्चालगण पत्ते हैं। जैसे सब ज्योतिर्गणों का आधार चन्द्रमा है वैसे ही पाण्डवों का आश्रय, बल, स्वामी, सहायक, परमगति सब कुछ श्रीकृष्ण ही हैं। इस कारण पत्ते, शाखा, स्कन्ध आदि को छोड़कर पाण्डवों की जड़ श्रीकृष्ण को ही मार डालो जिसमें सब झगड़ा मिट जाय। कर्ण, अगर तुम श्रीकृष्ण को मार डालोगे तो

इसमें सन्देह नहीं कि सारी पृथ्वी तुम्हारे अधीन हो जायगी। यादवों और पाण्डवों को प्रसन्न करनेवाले महात्मा श्रीकृष्ण अगर शक्ति से मरकर रणभूमि में गिर जायँ तो हे नरेन्द्र, यह पर्वत-समुद्र-वन सहित सारी पृथ्वी तुम्हारी ही हो जायगी। राजन्! हर रात को इस तरह हम लोग श्रीकृष्ण या अर्जुन को मारने की सलाह करते थे, किन्तु जागने पर सवेरे युद्धभूमि में देव-देव अप्रमेय हृषीकेश श्रीकृष्ण के सामने आने पर वह मति पलट जाती थी—कर्ण को और हम लोगों को मोह सा हो जाता था। राजन्! श्रीकृष्ण सदा कर्ण से अर्जुन की रक्षा किया करते थे, वे कभी कर्ण के सामने अर्जुन का रथ नहीं ठहराते थे—अर्जुन को अन्य योद्धाओं से लड़वाते थे। श्रीकृष्ण सदा यही सोचा करते थे कि कर्ण की वह शक्ति किस तरह व्यर्थ की जाय। महाराज! ३० जो महात्मा श्रीकृष्ण अर्जुन को सदा इस तरह कर्ण से बचाते रहते हैं, वे पुरुषोत्तम क्या आत्म-रक्षा नहीं कर सकते? मैं तो सोच-विचारकर तीनों लोकों में किसी ऐसे वीर पुरुष को नहीं देख पाता, जो चक्रपाणि महात्मा श्रीकृष्ण को जीत सकता हो।

सञ्जय कहते हैं—हे कुरुराज! राक्षसश्रेष्ठ घटोत्कच की मृत्यु हो चुकने पर सत्यपराक्रमी सात्यकि ने भी श्रीकृष्ण से यही पूछा था कि हे वासुदेव! कर्ण ने जब यह दृढ़ विचार कर रक्खा था कि उस अमोघ शक्ति से अर्जुन को मारूँगा, तो फिर उसने आज तक अर्जुन को सामने पाकर भी उसका प्रयोग क्यों नहीं किया? इस प्रश्न के उत्तर में महात्मा वासुदेव ने कहा—हे शिनिवीर! दुःशासन, शकुनि, कर्ण और जयद्रथ आदि सब दुर्योधन के पास बैठकर नित्य रात्रि को सलाह करते थे। सभी कहते थे कि हे कर्ण! हे महाधनुर्द्धर! युद्ध में तुम्हारा पराक्रम अपार है। तुम युद्ध में अर्जुन के सिवा और किसी पर इस अमोघ शक्ति को न छोड़ना। देवताओं में इन्द्र के समान पाण्डवों में अर्जुन ही महातेजस्वी और यशस्वी हैं। उन्हें मार सकने पर सृञ्जय और पाण्डवगण अग्नि से हीन देवताओं के समान मृतप्राय हो जायँगे। हे सात्यकि! दुःशासन आदि कौरव पक्ष के वीरों के बार बार यों कहने पर कर्ण ने वैसा ही करने की प्रतिज्ञा कर ली थी और सदा उसके हृदय में यह ख़याल बना रहता था कि मैं शक्ति से अर्जुन को मार डालूँगा। किन्तु मैं युद्ध के समय कर्ण को मोहित कर रखता था, इसी से उसने आज तक अर्जुन को सामने पाकर भी उस शक्ति का प्रयोग नहीं किया। हे सात्यकि! अर्जुन का वध ४० करने में समर्थ वह शक्ति जब तक कर्ण के पास थी तब तक मैं सदा चिन्तित रहा। तब तक न मुझे नींद आती थी, न चित्त को हर्ष ही होता था। उस अमोघ शक्ति को, घटोत्कच के ऊपर चलाये जाने से, व्यर्थ होते देखकर आज मैं अर्जुन को मृत्यु के मुख से छूटा हुआ समझ रहा हूँ। देखो, पिता, माता, तुम लोग, भाई, बन्धु-बान्धव और प्राण भी मुझे अर्जुन से बढ़कर प्रिय नहीं हैं। युद्ध में अर्जुन की रक्षा करना ही मेरा सबसे प्रिय और प्रधान कार्य है। त्रैलोक्य के राज्य से भी अधिक दुर्लभ अगर कोई पदार्थ हो, तो उसे भी मैं अर्जुन के बिना नहीं प्राप्त करना चाहता।

हे यदुपुङ्गव ! इस समय अर्जुन का पुनर्जन्म सा हुआ देखकर मुझे बड़ा हर्ष हो रहा है। रात्रि के समय घटोत्कच के सिवा और कोई कर्ण को ऐसा पीड़ित नहीं कर सकता था कि वह शक्ति का प्रयोग करने के लिए विवश हो। इसी लिए मैंने घटोत्कच को कर्ण से लड़ने के लिए भेजा था।

सञ्जय कहते हैं—राजन्! अर्जुन के ऐहिक तथा पारलौकिक कल्याण में निरन्तर निरत महात्मा वासुदेव ने उस समय सात्यकि से जो कुछ कहा था, सो मैंने आपको सुना दिया। ४७

एक सौ तिरासी अध्याय

धृतराष्ट्र का शोक। युधिष्ठिर का दुःख करना और व्यासदेव का आना

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! कर्ण, दुर्योधन, शकुनि और तुम, इन चारों ने इस तरह जय की उपाय-स्वरूप शक्ति को गँवाकर बहुत ही अनुचित काम किया। जब तुम भली भाँति जानते थे कि वह अनिवार्य शक्ति इन्द्र आदि देवताओं के लिए भी असह्य है, और समर में एक पुरुष का विनाश अवश्य कर सकती है, तब कर्ण ने क्यों नहीं पहले युद्ध के अवसर पर अर्जुन या श्रीकृष्ण के ऊपर उसका प्रयोग किया ?

सञ्जय ने कहा—महाराज! कह तो चुका कि हम लोग नित्य समरभूमि से लौटकर रात को डेरे पर सलाह करके कर्ण से कहते थे कि हे कर्ण! तुम कल सबेरा होते ही युद्ध में श्रीकृष्ण या अर्जुन के ऊपर अपनी अमोघ शक्ति का प्रयोग करना; किन्तु प्रातःकाल होते ही कर्ण और अन्य सब योद्धाओं की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती थी। राजन्! कर्ण के हाथ में वैसी अमोघ शक्ति रहने पर भी श्रीकृष्ण या अर्जुन का विनाश नहीं हुआ, इससे मेरी समझ में दैव ही सबसे प्रबल है। कर्ण अवश्य ही दैव की प्रतिकूलता और देवताओं की माया से बुद्धि नष्ट होने के कारण मोहित हो जाते थे और श्रीकृष्ण अथवा अर्जुन के ऊपर उस शक्ति का प्रयोग नहीं करते थे।

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! तुम लोग अपनी-अपनी दुर्बुद्धि, श्रीकृष्ण के कौशल और दैव की प्रतिकूलता के कारण ही इस तरह विडम्बना को प्राप्त और विनष्ट हुए। इन्द्र की दी हुई अनिवार्य अमोघ शक्ति तुच्छ घटोत्कच को ही मारकर निष्फल हो गई ! इस दुर्नीति के कारण ही मुझे कर्ण, अपने पुत्र और अन्य सब राजा लोग यमपुर को गये हुए से जान पड़ते हैं। ख़ैर, अब बताओ, घटोत्कच के मरने पर कौरवों और पाण्डवों में फिर किस तरह कैसा युद्ध हुआ ? जो-जो पाञ्चाल और सृञ्जयगण द्रोणाचार्य पर आक्रमण करने को आगे बढ़े थे उन्होंने कैसा युद्ध किया ? द्रोणाचार्यजी भी भूरिश्रवा और जयद्रथ की मृत्यु के कारण क्रोध से अत्यन्त अधीर हो रहे थे। वे जम्हा रहे शार्दूल और मुँह फैलाये हुए काल के समान शत्रु पक्ष की सेना में प्रवेश करके जब प्राणपण से युद्ध और बाणों की वर्षा करने लगे, तब पाण्डव और सृञ्जयगण किस १०

तरह उनका सामना करने को आगे बढ़े? राजा दुर्योधन, अश्वत्थामा और कृपाचार्य आदि जो वीर लोग आचार्य की रक्षा कर रहे थे उन्होंने रणभूमि में क्या किया? हमारे पक्ष के महाबली योद्धाओं ने द्रोणाचार्य को मारने का यत्न कर रहे अर्जुन और भीमसेन पर किस तरह बाणों की वर्षा की? कौरवगण जयद्रथ के मारे जाने से और पाण्डवगण घटोत्कच के वध से बहुत ही कुपित हो रहे थे। दोनों दलों ने रात्रि के समय कैसा युद्ध किया?

सञ्जय ने कहा—महाराज! उस भयङ्कर रात्रि के समय महाबली घटोत्कच के मारे जाने पर कौरव पक्ष के वीर प्रसन्नतापूर्वक सिंहनाद करते हुए वेग से आक्रमण करके पाण्डवों की सेना का संहार करने लगे। तब धर्मराज युधिष्ठिर ने अत्यन्त दीनभाव से भीमसेन से कहा—भाई! २० तुम शीघ्र कौरव-सेना को रोकने का यत्न करो। मैं घटोत्कच की मृत्यु से घबरा रहा हूँ। भीमसेन से इतना कहकर राजा युधिष्ठिर, आँखों में आँसू भरकर, अपने रथ पर बैठे हुए कर्ण का बल-विक्रम देखकर, बारम्बार लम्बी साँसें लेते हुए मोह को प्राप्त हो गये।

युधिष्ठिर को अत्यन्त व्यथित देखकर श्रीकृष्ण कहने लगे—राजन्! साधारण पुरुषों की तरह शोक करना आपका काम नहीं है। आपको इस तरह मोहाभिभूत न होना चाहिए। आप शोक के वेग को रोककर उठिए और युद्ध-सञ्चालन का भार सँभालिए। आप इस तरह शोक से व्याकुल होंगे तो जय प्राप्त होने में संशय है।

हे कुरुराज! श्रीकृष्ण के वचन सुनकर धर्मराज युधिष्ठिर आँखें पोंछकर बोले—हे महाबाहो! मैं धर्मों की परम गति को जानता हूँ। जो मनुष्य किसी के किये उपकार का ख़याल नहीं रखता, उस कृतघ्न पुरुष को ब्रह्महत्या करने का पातक लगता है। देखो, अर्जुन जब अस्त्र-शिक्षा प्राप्त करने के लिए गये थे तब घटोत्कच ने बालक होकर भी हमारी बहुत सहायता की थी। यह महावीर काम्यक वन में मेरी सेवा करता था और जब तक अर्जुन लौटकर नहीं आये तब तक हम लोगों के साथ ही रहा। इस समर-विशारद वीर ने, गन्धमादन पर्वत पर जाने के समय, ३० हम लोगों को दुर्गम स्थानों से उबारा और थकी हुई द्रौपदी को पीठ पर लादकर यथेष्ट स्थान पर पहुँचाया। महावीर घटोत्कच ने इस तरह हम लोगों की सहायता के लिए बहुत से दुष्कर काम किये। हे वासुदेव! भाई सहदेव के ऊपर जैसा मुझे स्वाभाविक स्नेह है, उससे दूना स्नेह राक्षस घटोत्कच पर था। वह मेरा अत्यन्त भक्त और प्रीतिपात्र था। इसी कारण उसकी मृत्यु से मैं इतना शोकाकुल और मोहित हो रहा हूँ। हे यदुनन्दन! यह देखो, कौरव लोग मेरी सेना को मारकर भगा रहे हैं। महारथी द्रोणाचार्य और कर्ण जमकर युद्ध कर रहे हैं। मत्त हाथी जैसे नल-वन को रौंदते हैं वैसे ही ये दोनों वीर पाण्डव-सेना को नष्ट भ्रष्ट किये डालते हैं। भीमसेन के बाहुबल और अर्जुन के विविध अस्त्रों के प्रति अनादर का भाव दिखाकर कौरवगण पराक्रम प्रकट कर रहे हैं। यह देखो, द्रोण, कर्ण और दुर्योधन घटोत्कच की मृत्यु

होने के कारण अपार आनन्द मना रहे हैं। हे श्रीकृष्ण! हम लोगों के और तुम्हारे जीवित
४० रहते, सबके सामने ही, कर्ण कैसे महाबली पराक्रमी घटोत्कच को मार सका? जिस समय धृतराष्ट्र के दुरात्मा पुत्रों ने अभिमन्यु को मारा था उस समय तो भला अर्जुन समरभूमि में नहीं मौजूद थे। हम सबको भी जयद्रथ ने व्यूह के द्वार पर रोक रक्खा था। उस समय अश्वत्थामा और द्रोणाचार्य ही वास्तव में अभिमन्यु की मृत्यु का कारण हुए थे। उन्हीं ने अभिमन्यु के वध का उपाय बता दिया था। अश्वत्थामा ने अभिमन्यु की तलवार काटकर उसे निहत्था कर दिया था। नीच कृतवर्मा ने उस विपन्न बालक के पार्श्वरक्षक और सारथी को मार डाला था। अन्य धनुर्द्धरों ने मिलकर उसे शस्त्रहीन देख करके मार डाला था। हे कृष्णचन्द्र! सच पूछो तो अभिमन्यु के वध में जयद्रथ का साधारण ही अपराध था। उसी अपराध के कारण अर्जुन ने जयद्रथ को मार डाला और उनके इस कार्य से मुझे विशेष सन्तोष नहीं हुआ। अगर पाण्डवों के लिए शत्रुवध ही उचित है तो, मेरी समझ में, पहले कर्ण और द्रोणाचार्य का वध होना चाहिए। हे पुरुषश्रेष्ठ! यही दोनों हमारे दुःखों का मूल कारण हैं। इन्हीं दोनों की सहायता पाकर रण में दुर्योधन को ढाढ़स बँधा हुआ है। हे माधव! जिस युद्ध में द्रोण और कर्ण को अनुचरों सहित मारना चाहिए था, उस युद्ध में अर्जुन ने दूरवासी जयद्रथ को मारा। ख़ैर, अर्जुन भले ही यह कार्य न करें, किन्तु मुझे अवश्य कर्ण का वध करना चाहिए। इसलिए हे वीर! मैं खुद कर्ण
५० को मारने जाता हूँ। वह देखो, महाबाहु भीमसेन द्रोणाचार्य की सेना से युद्ध कर रहे हैं।

हे कुरुराज! राजा युधिष्ठिर यों कहकर भयानक धनुष चढ़ाकर शङ्ख बजाते हुए फुर्ती से कर्ण की ओर चले। इसी समय शिखण्डी असंख्य रथ, तीन सौ हाथी, पाँच सौ घोड़े और तीन हज़ार प्रभद्रक-सेना साथ लेकर धर्मराज युधिष्ठिर के पीछे चले। पाञ्चाल और पाण्डवगण भेरी और शङ्ख बजाने लगे। तब महाबाहु वासुदेव ने अर्जुन से कहा—हे पार्थ! यह देखो, धर्मराज क्रुद्ध होकर कर्ण को मारने के लिए जा रहे हैं। इसलिए उनको यों अकेले वीर कर्ण के सामने जाने देना हम लोगों के लिए उचित नहीं है। अब श्रीकृष्ण ने फुर्ती के साथ तेज़ी से घोड़ों को हाँक दिया और दूर पहुँचे हुए राजा युधिष्ठिर को रोकने के लिए वे आगे बढ़े।

महाराज! इसी समय शोकपीड़ित, सन्तप्तचित्त, क्रोध की आग से जल रहे-से और सहसा कर्ण को मारने के लिए जा रहे धर्मपुत्र युधिष्ठिर के सामने महर्षि वेदव्यास आ गये। उन्होंने युधिष्ठिर से कहा—महाराज! संग्राम में कर्ण के सामने उपस्थित रहकर भी जो अर्जुन अब तक जीवित हैं, इसे अपना बड़ा भाग्य समझिए। कर्ण ने अर्जुन को मारने के लिए ही वह अनिवार्य शक्ति जुगो रक्खी थी। यह बड़े भाग्य की बात है कि अब तक अर्जुन कर्ण से द्वन्द्वयुद्ध करने के लिए नहीं गये। ये दोनों वीर आपस में पूरी लाग-डाट रखते हैं और सामना होने पर अवश्य एक दूसरे के नाश के लिए दिव्य अस्त्रों का प्रयोग करते हैं। अस्त्रविद्या में अर्जुन बढ़े चढ़े

हैं, इसलिए जब कर्ण के सभी अस्त्र निष्फल हो जाते तब वे पीड़ित होकर, प्राणसङ्कट उपस्थित होने पर, इन्द्र की दी हुई अमोघ शक्ति का प्रयोग करते और तब तुमको दारुण सङ्कट का सामना करना पड़ता। भाग्यवश कर्ण ने आज तक वैसा नहीं किया और उस शक्ति से राक्षस घटोत्कच को मार डाला। सच तो यह है कि कर्ण की बुद्धि को दैव ने भ्रष्ट कर दिया और अब शक्ति पास न रहने के कारण कर्ण का काल निकट आ गया है। दैव तुम्हारे अनुकूल हैं; उस दैव की कृपा से ही उस शक्ति के द्वारा घटोत्कच का नाश हुआ है। इसलिए तुम क्रोध या शोक मत करो। हे युधिष्ठिर! संसार के हर एक प्राणी को एक दिन मरना है। हे भारत! अब तुम अपने सब भाइयों और शूर वीर राजाओं के साथ मिलकर कौरवों से युद्ध करो। हे तात! आज के पाँचवें दिन तुम्हें विजय प्राप्त होगी; यह सब पृथ्वी तुम्हारी हो जायगी। हे पुरुषसिंह! तुम नित्य धर्म का ध्यान धरो और प्रसन्नतापूर्वक उच्च विचार, दया, तप, दान, क्षमा और सत्य का पालन तथा अनुशीलन करते रहो। यह निश्चय है कि जहाँ धर्म है, वहीं जय है। हे कुरुश्रेष्ठ! महर्षि वेदव्यासजी युधिष्ठिर से यों कहकर वहीं पर अन्तर्द्धान हो गये। ६० ६७

द्रोणवधपर्व

एक सौ चौरासी अध्याय

अर्जुन की आज्ञा से नींद में चूर सैनिकों का सो रहना और चन्द्रमा का उदय होने पर युद्ध का आरम्भ

सञ्जय कहते हैं—हे भरतश्रेष्ठ! व्यासदेव के वचन सुनकर धर्मराज युधिष्ठिर ने स्वयं कर्ण को मारने का विचार छोड़ दिया। उस रात्रि में कर्ण के हाथों घटोत्कच की मृत्यु होने से दुःख और क्रोध के मारे व्याकुल युधिष्ठिर ने भीमसेन को अकेले आपकी विशाल सेना का सामना करते देखकर धृष्टद्युम्न से कहा—हे वीर! तुम द्रोणाचार्य को रोको। तुम तो द्रोणाचार्य को मारने के लिए ही खड्ग, कवच, धनुष और बाण धारण किये हुए अग्निकुण्ड से उत्पन्न हुए हो। तुम उत्साह और हर्ष के साथ युद्ध करने जाओ, तुम्हें द्रोण से कुछ भय नहीं है। जनमेजय, शिखण्डी, यशोधर, दुर्मुख के पुत्र, नकुल, सहदेव, पुत्रों और भाइयों सहित महाराज द्रुपद और विराट, महाबली सात्यकि, अर्जुन, प्रभद्रकगण, केकयगण और द्रौपदी के पाँचों पुत्र, ये सब मिलकर द्रोणाचार्य को मारने के लिए वेग से आ रहे हैं। सब रथी, हाथियों तथा घोड़ों के सवार और सब पैदल सेना मिलकर अकेले महारथी द्रोण को मारकर रथ से गिराने का पूरा उद्योग करें।

राजन्! तब पूर्वोक्त सब योद्धा, राजा युधिष्ठिर की आज्ञा के अनुसार, द्रोण को जीतने के लिए वेग से आगे बढ़े। शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य ने संग्राममूमि में पूरे उद्योग से

१० लड़ने के लिए सहसा आये हुए सब योद्धाओं से स्थिर भाव से सामना किया। यह देख-कर राजा दुर्योधन ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर अपनी सेना को द्रोणाचार्य की रक्षा करने के लिए आज्ञा दी। वे ख़ुद सारी सेना साथ लेकर सुसज्जित हो पूर्ण उद्योग से आचार्य के प्राणों की रक्षा करने के लिए पाण्डवों की सेना की ओर बढ़े। पाण्डव दल और कौरव दल के योद्धा, सारी सेना और सम्पूर्ण वाहन थक गये थे तथापि वे परस्पर तर्जन-गर्जन करते हुए दारुण संग्राम करने लगे। महाराज! उस समय महारथी लोग नींद के मारे अन्धे से हो रहे थे और बेहद थक चुके थे। इसलिए वे निश्चेष्ट-से हो रहे थे। वह प्राणियों के प्राण हरनेवाली तीन पहर की घोर रात्रि उन लोगों को हज़ार पहर की दारुण कालरात्रि सी जान पड़ने लगी। उस आधी रात के समय नींद में चूर और थकी हुई सेना छिन्न-भिन्न होने, कटने और मरने लगी। दोनों पक्ष के क्षत्रिय दीनचित्त, उत्साह-रहित और अस्त्र-शस्त्र-हीन होने पर भी लोकलज्जा और अपने आर्य-क्षत्रिय-धर्म के ख़याल से रण से नहीं हटते थे; अपनी सेना में डटे हुए खड़े थे। नींद के मारे सैनिकों के हाथों से अस्त्र-शस्त्र गिरते जाते थे। वे किसी तरह की चेष्टा नहीं कर सकते थे। वे सब हाथियों तथा घोड़ों की पीठों पर और रथों पर, जहाँ के तहाँ, सोने लगे। अन्य योद्धा लोग, जो कुछ सचेत थे, अनायास ही उन्हें मारकर गिराने लगे। बहुत लोग पड़े-पड़े स्वप्न देखने लगे और स्वप्न में ही शत्रुओं को देखकर तरह-तरह के वाक्य कहते हुए शस्त्र चला बैठते थे, जिनसे कहीं शत्रु मरते थे और

२१ कहीं वे अपने ही पक्षवालों को साफ़ कर देते थे। महाराज! हमारी सेना के और शत्रुदल के सभी लोग नींद से अन्धे से हो रहे थे। नींद में ही तरह-तरह की बातें बक रहे थे। नींद के मारे उनकी आँखें लाल हो रही थीं, तथापि युद्ध करना अपना कर्तव्य और धर्म समझकर वे डटे हुए थे। उस दारुण अँधेरे के बीच रणभूमि में कुछ नींद में चूर वीर पुरुष, उसी दशा में, इधर-उधर जाकर एक दूसरे का वध कर रहे थे। शूर लोग शूरों को इस तरह मार रहे

थे। बहुत लोग नींद में ऐसे चूर हो रहे थे कि उन्हें इसकी कुछ भी ख़बर नहीं होती थी कि उन्हें कोई शत्रु मारने आ रहा है, या मार रहा है।

राजन्! महावीर अर्जुन सब सैनिकों की यह हालत देखकर ज़ोर से कहने लगे—हे सैनिक योद्धाओ! तुम लोग और तुम्हारे वाहन थक गये हैं। सब लोग नींद के मारे अन्धे से हो रहे हो। चारों ओर धूल छाई है और रात का भी घोर अँधेरा फैला हुआ है। इसलिए तुम लोग चाहो तो कुछ देर तक इसी तरह यहीं रणभूमि में युद्ध बन्द करके सो जाओ। थोड़ी देर में चन्द्रमा का उदय होने पर, निद्रा और थकन दूर होने पर, फिर स्वर्ग पाने की इच्छा से सब कौरव और पाण्डव युद्ध करेंगे। हे प्रजानाथ! सब धर्मों के ज्ञाता योद्धा लोग और सब सैनिक जन धार्मिक अर्जुन के ये उदार वचन सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। अर्जुन की यह सलाह सबको पसन्द आ गई। कौरव पक्ष के सब लोग इस पर राज़ी होकर कहने लगे—हे कर्ण! हे महाराज दुर्योधन! पाण्डवों की सेना ने युद्ध बन्द कर दिया है, अब तुम भी युद्ध बन्द कर दो! ३०

महाराज! तब अर्जुन के कहने के अनुसार कौरव और पाण्डव पक्ष के लोगों ने युद्ध बन्द कर दिया। सब सैनिक, देवता और ऋषि परम प्रसन्न होकर अर्जुन के उदार धर्मानुकूल वचनों की प्रशंसा करने लगे। थके और नींद से चूर सैनिकगण अर्जुन के दया-पूर्ण वचनों की बड़ाई करके दम भर के लिए विश्राम करने लगे। राजन्! आपके सैनिक विश्राम-सुख का अवकाश पाकर अर्जुन की यों प्रशंसा करने लगे—हे निष्पाप! तुम में वेद, सब अस्त्र, बुद्धि, पराक्रम, धर्म और प्राणियों के प्रति दया निरन्तर वर्त्तमान है। इसी से हे अर्जुन! हम लोगों को विश्राम और दिलासा मिला है। इसलिए हम तुम्हारा कल्याण चाहते हैं। हे वीर! तुम शीघ्र अपने मनोरथ पाओ।

राजन्! महारथी लोग अर्जुन की इस तरह प्रशंसा करके नींद के मारे चुप होकर आराम करने लगे। कोई घोड़े की पीठ पर, कोई हाथी के हौदे पर, कोई रथ के ऊपर जहाँ के तहाँ सोने और विश्राम करने

लगे। अनेक शस्त्र, गदा, खड्ग, परश्वध, प्रास आदि धारण किये, कवच पहने सब योद्धा अलग-अलग सोने लगे। नींद से अन्धे हो रहे हाथी सर्प-सदृश सूँड़ों से पृथ्वी की धूल उड़ाते, और
४० पृथ्वी को अपने निःश्वास से शीतल करते हुए, जहाँ-तहाँ सो रहे थे। वे साँसें ले रहे थे और फुफकार रहे महासर्पों से युक्त पर्वतों के समान शोभायमान थे। सुनहरी लगामों से युक्त घोड़े गर्दन के बालों से लगे हुए रथों के युग धारण किये थे और बारम्बार टापें पटककर, खोदकर, बराबर पृथ्वी को ऊबड़-खाबड़ बना रहे थे। इस तरह घोड़े भी जहाँ के तहाँ विश्राम कर रहे थे। थके हुए घोड़े, हाथी और योद्धा लोग युद्ध बन्द करके विश्राम करने लगे। उस समय सारी सेना ऐसी जान पड़ने लगी कि किसी चितेरे ने चित्रपट में चित्र बना दिये हैं। महाराज! परस्पर के बाणों से जिनके अङ्ग छिन्न-भिन्न हो गये हैं ऐसे कुण्डलों से अलङ्कृत क्षत्रिय, हाथियों के मस्तकों पर पड़े हुए, सो रहे थे। ऐसा जान पड़ता था, मानों वे कामिनियों के कुचकलशों से लिपटे हुए सो रहे हैं।

महाराज! कुछ देर बाद कामिनियों के कपोल के समान सफ़ेद, नयनों को आनन्द देनेवाले, चन्द्रमा का उदय हुआ। वे उदयाचल के सिंह के समान पूर्व दिशारूप कन्दरा से निकलकर किरण रूप केसरों से (सिंह की गर्दन के केशों से) सब दिशाओं को प्रकाशित और अन्धकाररूप हाथियों के झुण्ड को विदीर्ण करते हुए उदय हुए। शिव के वाहन नन्दी के समान, कामदेव के पुष्पमय धनुष के समान, नई दुलहिन के हास्य के समान सफ़ेद अतीव मनोहर भगवान् कुमुदिनी-नायक चन्द्रमा धीरे-धीरे अपनी कान्ति फैलाने लगे। उनकी सुनहरी किरणें चारों ओर फैलने लगीं। पहले चन्द्र की अरुण आभा प्रकट हुई। उस आभा के
५० पीछे धीरे-धीरे सुनहरी किरणें निकलने लगीं। इसके बाद प्रभा से अन्धकार को दूर करती हुई चन्द्रमा की किरणें धीरे-धीरे सब दिशाओं को, आकाश को और पृथ्वी को प्रकाशित करने लगीं। इसके बाद दम भर में सारा जगत् प्रकाशमान हो उठा। संपूर्ण भुवन प्रकाशित होने पर वह रात्रि दिन के समान जान पड़ने लगी। उस समय रात्रि में विचरनेवाले जीव विचरने लगे और कुछ जीव जहाँ के तहाँ पड़े रहे। चन्द्रमा की किरणों के पड़ने से सारी सेना वैसे ही जाग उठी जैसे सूर्य की किरणों के स्पर्श से कमल खिल जाते हैं। चन्द्रमा के उदय से जैसे सागर उमड़ पड़ता है वैसे ही चन्द्रोदय होने पर सारा सैन्यसागर खलबला उठा। राजन्! उसके बाद लोकसंहारकारी युद्ध फिर शुरू हो गया। श्रेष्ठ गति पाने के लिए योद्धा
५६ लोग प्राणों का मोह छोड़कर लड़ने लगे।

कामिनियों के कपोल के समान सफ़ेद, नयनों को आनन्द देनेवाले, चन्द्रमा का उदय हुआ। पृष्ठ—२६३६

एक सौ पचासी अध्याय

दुर्योधन के उलाहने से कुपित द्रोण का, मरने-मारने का दृढ़ निश्चय करके, युद्ध के लिए आगे बढ़ना

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! इसी समय क्रोधान्ध हो रहे दुर्योधन ने द्रोणाचार्य के पास जाकर उन्हें उत्तेजित करने के लिए यों कहा—हे आचार्य! दीन, थके हुए, विश्राम कर रहे, ग्लानि को प्राप्त शत्रुओं के प्रति उपेक्षा दिखलाना वीर के लिए उचित नहीं है। ख़ासकर लब्ध-लक्ष अथवा सामने उपस्थित प्रबल शत्रु को छोड़ देना बड़ी भारी भूल है। हम लोगों ने आपका प्रिय करने के ख़याल से ही ऐसी दशा में पाण्डवों की सेना को नहीं मारा। इस समय पाण्डव लोग विश्राम करके बहुत ही प्रबल हो गये हैं और हम लोग तेज तथा बल से हीन हो रहे हैं। असल बात यह है कि आप तरह देते जाते हैं, इसी से पाण्डव लोग बारम्बार ज़ोर पकड़ते जा रहे हैं। ब्रह्मन्! जितने ब्रह्मास्त्र आदि दिव्य अस्त्र हैं, वे सब विशेष रूप से आपको मालूम हैं। मैं सच कहता हूँ, आप जब जी लगाकर युद्ध कर रहे हों तब क्या पाण्डव, क्या हम लोग और क्या संसार के अन्य धनुर्द्धर वीर पुरुष, कोई भी आपकी बराबरी नहीं कर सकता। हे द्विजश्रेष्ठ! आप सब अस्त्रों को जानते हैं, इसलिए दिव्य अस्त्रों से देवता, दैत्य, गन्धर्व आदि सहित इन लोकों को नष्ट कर सकते हैं। पाण्डव-गण आपके पराक्रम से डरते रहते हैं। किन्तु आप अपने तुल्य समझकर, या शिष्य होने का ख़याल करके, अथवा मेरे अभाग्य के कारण, पाण्डवों के प्रति उपेक्षा दिखाते हैं, उनको नहीं मारते।

सञ्जय कहते हैं कि महाराज! इस तरह दुर्योधन के कहने पर उनके वचनों से कुपित और उत्तेजित होकर, क्रोध करके, आचार्य कहने लगे—हे दुर्योधन! मैं वृद्ध होने पर भी यथाशक्ति युद्ध कर रहा हूँ। मैं अस्त्रों को जानता हूँ, किन्तु ये सब शत्रु पक्ष के सैनिक उन अस्त्रों को नहीं जानते। यद्यपि अस्त्र न जाननेवालों को अस्त्रों से नष्ट करना आर्यों का धर्म नहीं है, तो भी अब

मैं तुम्हारी जीत के लिए वही तुच्छ कार्य करूँगा। हे कौरव्य! तुम्हारी इच्छा यही है। वह
११ इच्छा शुभ हो या अशुभ, न्याय्य हो या अन्याय्य, किन्तु तुम्हारे कहने से उसे मैं पूर्ण करूँगा।
राजन्! मैं शस्त्र छूकर सत्य की शपथ खाकर कहता हूँ, अब युद्ध में पराक्रम प्रकट करके जब
सब पाञ्चालों को मार लूँगा, तभी कवच खोलूँगा। महाराज! तुम जो अर्जुन को इतनी देर
लड़ने के कारण थका हुआ समझते हो, सो तुम्हारी भूल है। मैं उनके पराक्रम का ठीक-ठीक
वर्णन करता हूँ, सुनो। कुपित होकर युद्ध कर रहे अर्जुन को देवता, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस आदि
कोई नहीं जीत सकता। तुम जानते हो कि खाण्डव वन के लिए होनेवाले युद्ध में वीर अर्जुन
ने साक्षात् इन्द्र का सामना किया और बाणों की वर्षा से उन्हें हटा दिया। बल का गर्व रखने-
वाले यक्ष, नाग और दैत्य आदि अनेकों वीरों को अर्जुन ने मारा है, यह भी तुमसे छिपा नहीं
है। महावीर अर्जुन ने घोषयात्रा के अवसर पर तुम्हें जीतकर पकड़ ले जानेवाले चित्रसेन आदि
गन्धर्वों को जीतकर तुम्हें छुड़ाया था। प्रतापी अर्जुन ने देवताओं से भी न जीते जा सकनेवाले
निवात-कवच और हिरण्यपुर-निवासी दानवों को मारा है। देव-शत्रु दानवों को परास्त करनेवाले
अर्जुन को भला साधारण मनुष्य कैसे जीत सकते हैं? राजन्! तुम्हारे सामने ही हम लोगों
२० के लाख प्रयत्न करने पर भी उन्होंने तुम्हारी सेना का संहार कर डाला है।

सञ्जय कहते हैं कि राजन्! इस तरह आचार्य के मुँह से अर्जुन की प्रशंसा सुनकर
अत्यन्त कुपित हो दुर्योधन ने फिर कहा—मैं, दुःशासन, कर्ण, मामा शकुनि, ये लोग कौरव-सेना
के दो हिस्से करके आज अर्जुन पर आक्रमण करेंगे और उन्हें मार डालेंगे। आप यहीं ठहरिए।
आपको शिष्य अर्जुन अत्यन्त प्रिय है। दुर्योधन की बात सुनकर द्रोणाचार्य हँसकर उनके इस
विचार का अनुमोदन करके बोले—अच्छी बात है, जाओ, तुम्हारा कल्याण हो। किन्तु मैं
फिर यह कहे देता हूँ कि अर्जुन को मारना हँसी खेल नहीं है। क्षत्रियश्रेष्ठ गाण्डीव धनुष
धारण करनेवाले तेजस्वी अजेय अर्जुन को कौन क्षत्रिय इस संसार में मार सकता है? मुझे
तो अर्जुन को जीतनेवाला कोई नहीं देख पड़ता। शस्त्रधारी अर्जुन को कुवेर, इन्द्र, यमराज,
वरुण आदि लोकपाल और असुर, नाग, राक्षस आदि भी जब नहीं मार सकते तब मनुष्य की
तो बिसात ही क्या है। हे भारत! तुम जो अर्जुन को मारने की बात कह रहे हो, यह मूढ़
जनों का प्रलाप है। युद्ध में अर्जुन के सामने जाकर कौन आदमी जीता-जागता घर को लौट
सकता है? तुम सब पर सन्देह रखते हो, निष्ठुर और पापी हो। इसी से जो लोग तुम्हारा भला
चाहते हैं, तुम्हारे हित में तत्पर हैं, उन्हें तुम कटु वचन कहते हो, उन पर अविश्वास करते हो।
अच्छी बात है, अपनी जीत के लिए अर्जुन के सामने जाओ, देर न करो। जाकर अर्जुन को
मारने का विचार पूरा करो। तुम अगर अर्जुन से लड़ने की हिम्मत करते हो तो क्या हुआ?
आख़िर तुम भी तो क्षत्रिय हो और श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न हुए हो। मैं यही कहता हूँ कि इन

निरपराध क्षत्रियों का नाश क्यों करा रहे हो? तुम्हीं इस वैर की जड़ हो, इसलिए खुद अर्जुन के सामने जाकर लड़ो और अपना हौसला पूरा कर लो। हे दुर्योधन! कपट का जुआ खेलनेवाले ये तुम्हारे मामा शकुनि हैं। ये भी समझदार और पराक्रमी हैं। सो ये भी क्षत्रिय-धर्म का पालन करने को अर्जुन से लड़ने जायँ। ये पाँसों के खेल में निपुण, कपटी, कुटिल, शठ और धोखा देने में अद्वितीय हैं। ये अवश्य युद्ध में पाण्डवों को जीत लेंगे। तुमने अपने ३१ पिता धृतराष्ट्र को सुनाकर, कर्ण के साथ हर्षपूर्वक बारम्बार मोहवश, गर्व करके कहा है कि हे तात! मैं, कर्ण और मेरा भाई दुःशासन, ये तीनों मिलकर समर में पाण्डवों को मार डालेंगे। हर सभा में इस तरह के तुम्हारे व्यर्थ प्रलाप मैं सुन चुका हूँ। सो अब अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो और कर्ण तथा दुःशासन के साथ अपने कथन को सच कर दिखाओ। यह देखो, तुम्हारे शत्रु पाण्डव अर्जुन निःशङ्क होकर आगे ही खड़े हैं। अब जाकर क्षत्रिय-धर्म के अनुसार उनसे युद्ध करो। मेरी समझ में विजय पाने की अपेक्षा अर्जुन से सामने लड़कर उनके हाथ से मरना भी तुम्हारे लिए प्रशंसा की बात होगी। तुम जी भरकर दान कर चुके, भोग कर चुके, विद्या पढ़ चुके और इच्छानुसार ऐश्वर्य प्राप्त कर चुके। अब देवताओं, पितरों और ऋषियों के ऋण से मुक्त और कृतकृत्य हो। इसलिए मृत्यु का डर छोड़कर अर्जुन से युद्ध करो।

महाराज! कुपित द्रोणाचार्य दुर्योधन से यों कहकर युद्ध करने के लिए शत्रुओं की ओर बढ़े। उस समय कौरव दल के दो भाग हो गये। एक भाग आचार्य के साथ और एक भाग दुर्योधन के साथ रहकर पाण्डवों की सेना से घोर युद्ध करने लगा। ३७

एक सौ छियासी अध्याय

द्रोणाचार्य के हाथ से द्रुपद, विराट आदि का मारा जाना

सञ्जय कहते हैं—हे नर-नाथ! तीन हिस्से रात बीत चुकी थी, एक हिस्से बाक़ी थी, इसी समय उत्साह-पूर्ण कौरवों और पाण्डवों का घोर युद्ध फिर होने लगा। ठीक समय पर चन्द्रमा की कान्ति को मिटाते और आकाश को अरुण आभा से रँगते हुए सूर्य के सारथी अरुण प्रकट हुए। उनकी अरुण आभा से परिपूर्ण सूर्यदेव का मण्डल भी सुवर्ण-निर्मित चक्र के समान पूर्व दिशा में विराजमान हुआ। उस समय कौरव और पाण्डव पक्ष के योद्धा लोग रथ, घोड़े, हाथी, पालकी आदि वाहनों को छोड़कर सूर्यमण्डल के अभिमुख खड़े हो, हाथ जोड़कर, सन्ध्योपासन और गायत्री का जप करने लगे।

राजन्! इसके बाद कौरव पक्ष की सेना के दो दल हो गये। वीर द्रोणाचार्य दुर्योधन के दल को आगे करके सोमकों, पाञ्चालों और पाण्डवों की ओर वेग से बढ़े। यह देखकर

कृष्णचन्द्र ने कहा—हे अर्जुन ! तुम द्रोण को दाहनी ओर और अपने शत्रु इन कौरवों को बाईं ओर रखकर युद्ध करो। अर्जुन ने उसी तरह रथ ले चलने के लिए श्रीकृष्ण से कहा और द्रोणाचार्य कर्ण के बाईं ओर जाकर युद्ध करने लगे। तब श्रीकृष्ण के अभिप्राय को जानकर शत्रु-दमन भीमसेन ने युद्धभूमि के अग्रभाग में स्थित अर्जुन से कहा—हे वीर ! मेरी बात सुनो। क्षत्राणी जिस लिए पुत्र उत्पन्न करती है वही कार्य कर दिखाने का यह अवसर है। इस आये हुए सुअवसर में अगर तुम अपने बल-वीर्य के अनुरूप काम करके कल्याण न प्राप्त करोगे, तो लोग तुम्हारी निन्दा करेंगे और तुम्हारा वह कार्य अत्यन्त नृशंस और नीच होगा। १० अपने पराक्रम के द्वारा सत्य, श्री, धर्म और यश के ऋण से मुक्त होओ, दक्षिण ओर से शत्रु-सेना को छिन्न-भिन्न करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो।
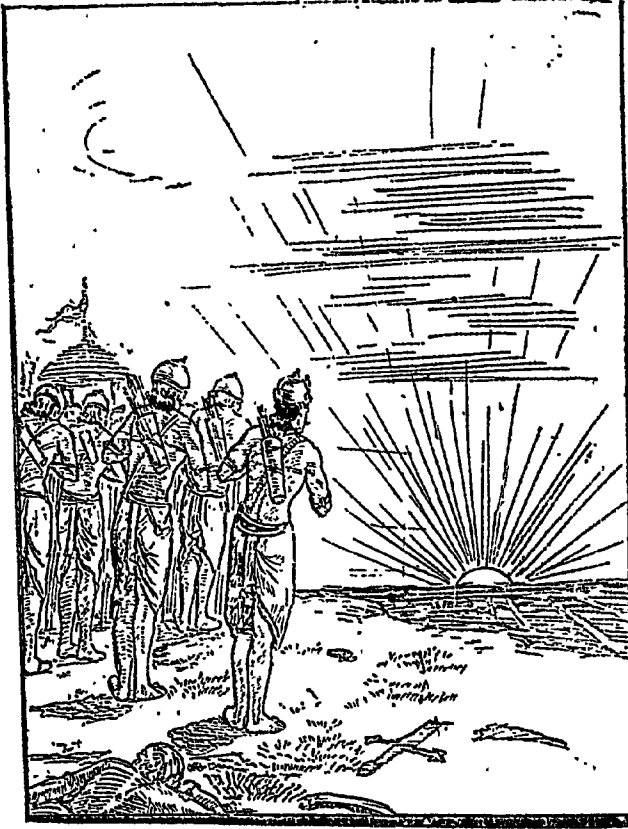
सञ्जय कहते हैं—महाराज ! इस तरह श्रीकृष्ण और भीमसेन के प्रेरणा करने पर अर्जुन, कर्ण और द्रोण को पीछे छोड़कर, चारों ओर से शत्रुसेना का संहार करने लगे। युद्धभूमि के अगले भाग में स्थित होकर, श्रेष्ठ क्षत्रियों को मारकर, पराक्रम प्रकट कर रहे अर्जुन को कोई भी क्षत्रिय अपने पराक्रम से नहीं रोक सका। बढ़ती हुई आग के समान प्रचण्ड रूप से प्रज्वलित हो रहे अर्जुन को चारों ओर से घेरकर भी कोई उनका कुछ नहीं कर सका; बल्कि उनके बाणों की आग में चारों ओर की सेना शीघ्रता के साथ भस्म होने लगी। तब दुर्योधन, कर्ण और शकुनि ये तीनों मिलकर अर्जुन के ऊपर लगातार बाण बरसाने लगे। उत्तम अस्त्रों के ज्ञाता अर्जुन ने अपने श्रेष्ठ अस्त्रों से उन सबके अस्त्रों और बाणों को व्यर्थ कर दिया और उन पर भी वैसी ही फुर्ती से असंख्य बाण बरसाये। फुर्तीले अर्जुन ने बाणों से बाणों को व्यर्थ करके सबको दस-दस तीक्ष्ण बाण मारे। उस समय सेना के इधर-उधर दौड़ने और भागने से धूल ही धूल उड़ने लगी। बाण भी लगातार बरस रहे थे। चारों ओर घना अँधेरा सा छा गया और बड़ा कोलाहल सुनाई पड़ने लगा। उस समय धूल की अधिकता से आकाश, पृथ्वी या दिशाएँ कुछ भी नहीं सूझता था। आँखों में धूल गिरने से सब योद्धा और वाहन मूढ़ और अन्धे से

हो गये। कौरव या पाण्डव दल के लोगों में से कोई किसी को न पहचान सकता था। केवल नाम और शब्द सुनकर अनुमान से सब लोग परस्पर युद्ध कर रहे थे। रथ नष्ट हो जाने पर रथी लोग आपस में भिड़ गये। एक दूसरे के केश पकड़कर, हाथ लपेटकर, कवच पकड़कर परस्पर प्रहार करने लगे। डरे हुए रथी योद्धा घोड़ों और सारथियों के मरने पर रथ पर बैठे थे और, वहीं शत्रु के प्रहार से मर जाने पर भी, जीवित से जान पड़ते थे। बहुत से घोड़ों और हाथियों के सवार पर्वत-तुल्य हाथियों और घोड़ों की पीठ से लिपट गये थे और शत्रु के प्रहार से मरकर वैसे ही लिपटे हुए देख पड़ते थे। २०

इधर महारथी वीर द्रोणाचार्य रणभूमि के मध्य भाग से शत्रुओं का संहार करते हुए उत्तर ओर जाकर बिना धुएँ की प्रज्वलित अग्नि के समान शोभायमान हुए। पाण्डव पक्ष के सैनिक अपने तेज से प्रज्वलित द्रोणाचार्य को रणक्षेत्र के मध्य भाग से आते देख भय-विह्वल होकर काँपने लगे। दानवगण जैसे इन्द्र को हराने की हिम्मत नहीं कर सकते वैसे ही मस्त हाथी के समान शत्रु-सेना को युद्ध के लिए ललकार रहे द्रोणाचार्य के सामने ठहरने का या उनको जीतने का साहस कोई नहीं कर सकता था। कुछ योद्धा सुस्त हो गये, कुछ शूर वीर साहसी योद्धा क्रुद्ध हो उठे और कुछ लोग द्रोणाचार्य के रूप और पराक्रम को देखकर दङ्ग हो गये। कोई नरेश क्रोध के मारे हाथ से हाथ मलने लगा, कोई दाँतों से ओठ चबाने लगा, कोई योद्धा शस्त्र उठाने और उछालने लगा, कोई वीर अपने डण्ड मलने लगा, और कुछ लोग प्राणों का मोह छोड़कर द्रोणाचार्य पर आक्रमण करने लगे। पाञ्चालगण विशेष रूप से द्रोणाचार्य के बाणों से पीड़ित और व्यथित होकर भागने लगे। ३०

तब महाराज द्रुपद और राजा विराट, दोनों, उस तरह संग्राम में संहार करते हुए घूम रहे अत्यन्त दुर्जय द्रोणाचार्य से लड़ने को आगे बढ़े। द्रुपद के तीन पोते, और महाधनुर्द्धर चेदि देश के योद्धा द्रोणाचार्य पर आक्रमण करने चले। द्रोणाचार्य ने तीन तीक्ष्ण बाण मारकर

द्रुपद के तीनों पोतों को मार डाला। वे मरकर पृथ्वी पर गिर पड़े। इसके बाद महारथी द्रोण ने युद्ध में चेदि, केकय, सृञ्जय, मत्स्य आदि देशों के महारथियों को देखते ही देखते जीत लिया। यह देखकर कुपित होकर राजा द्रुपद और विराट दोनों द्रोणाचार्य के ऊपर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। क्षत्रिय-मद-मर्दन द्रोणाचार्य ने दम भर में उनके बाणों को व्यर्थ करके उन दोनों पर इतने बाण बरसाये कि वे छिप गये। द्रोणाचार्य के बाण-प्रहार से और भी क्रुद्ध होकर दोनों नरेश अधिकता के साथ बाण मारने लगे। तब द्रोणाचार्य ने बहुत ही क्रुद्ध होकर दो अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों से दोनों नरेशों के धनुष काट डाले। विराट ने कुपित होकर, द्रोणाचार्य को मारने की इच्छा से, उनपर दस तोमर और दस बाण चलाये। कुपित द्रुपद नरेश ने भी सुवर्ण-भूषित

४० लोहे की, सर्प-तुल्य, एक घोर शक्ति हाथ में लेकर द्रोणाचार्य के रथ पर फेंकी। द्रोणाचार्य ने फुर्ती के साथ तीक्ष्ण भल्ल बाणों से दसों तोमर काट डाले और साथ ही अन्य बाणों से सुवर्ण-वैदूर्य-भूषित उस शक्ति के भी टुकड़े कर डाले। इसके बाद विष के बुझे तीक्ष्ण दो भल्ल बाण मारकर उन्होंने द्रुपद और विराट दोनों को मार डाला।

मनस्वी धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य के अस्त्र-बल से द्रुपद, विराट और अपने तीन भतीजों की मृत्यु और केकय, चेदि, पाञ्चाल, मत्स्य देश की सेना और वीरों का विनाश होते देखकर कोप और दुःख के मारे व्याकुल होकर सब महारथियों के बीच में शपथ खाकर कहा—आज अगर द्रोणाचार्य को मैं न मार डालूँ, अथवा द्रोणाचार्य मुझे परास्त कर दें, तो मेरे यज्ञ हवन आदि पुण्यकर्म, कुआ तालाब बाग़ आदि के स्थापित करने का पुण्य, क्षत्रियत्व और ब्राह्मणत्व (धृष्टद्युम्न की उत्पत्ति याज-उपयाज नाम के ब्राह्मणों के तपोबल से हुई थी इसलिए, अथवा ब्राह्मण रूप अग्नि से जन्म लेने के कारण उनमें ब्राह्मणत्व का होना सङ्गत हुआ) नष्ट हो जाय। राजन्! सब योद्धाओं के बीच में इस तरह प्रतिज्ञा करके शत्रुदमन वीर धृष्टद्युम्न अपनी सेना साथ लिये वेग से द्रोणाचार्य पर आक्रमण करने चले। उस समय सब पाञ्चाल और पाण्डव मिलकर द्रोणाचार्य के ऊपर प्रहार करने लगे। राजा दुर्योधन, कर्ण, शकुनि और दुर्योधन के सब भाई मिलकर आचार्य की रक्षा करने लगे। पाञ्चालगण सब उपाय करके भी, उन महारथियों के द्वारा सुरक्षित, महाधनुर्द्धर द्रोणाचार्य की ओर देखने में भी असमर्थ ही रहे। तब पुरुषश्रेष्ठ भीमसेन

५० बहुत ही क्रुद्ध हो उठे और वे इस तरह कठोर वचन कहकर धृष्टद्युम्न को उत्तेजित करने लगे—हे धृष्टद्युम्न! द्रुपद के वंश में उत्पन्न और सब श्रेष्ठ अस्त्रों को जाननेवाला होकर भी कौन क्षत्रिय इस तरह सामने शत्रु को देखता रहेगा और उसे न मारेगा? कौन पुरुष अपने पिता और पुत्र का वध देखकर भी कुछ न कर सकेगा और फिर मर्दानगी की डींग मारेगा? ख़ासकर तुम जब राजाओं के सामने शत्रु को मारने की प्रतिज्ञा कर चुके हो तब फिर उसे पूर्ण करने की चेष्टा न करना कैसी लज्जा की बात है! ये अग्नि के समान अपने तेज से प्रज्वलित द्रोणाचार्य धनुष-बाण

का ईंधन पाकर अस्त्रमय अग्नि से तुम्हारे सामने ही क्षत्रियों को भस्म कर रहे हैं। हमारे सामने ही द्रोणाचार्य पाण्डवों की सारी सेना को नष्ट किये डालते हैं। तुम लोग खड़े रहो, मेरा अद्भुत पराक्रम देखो, मैं द्रोणाचार्य से युद्ध करने जा रहा हूँ।

महावीर कुपित भीमसेन अब द्रोणाचार्य की सेना में घुस पड़े और कानों तक खींचकर छोड़े गये बाणों की चोट से कौरवों की सेना को भगाने लगे। महारथी धृष्टद्युम्न भी उत्तेजित होकर द्रोणाचार्य की विशाल सेना में प्रवेश करके उनपर प्रहार करने लगे। उस समय दोनों ओर से घमासान युद्ध होने लगा। राजन्! सूर्योदय के समय वह ऐसा जनसंहारक युद्ध हुआ कि हम लोगों ने पहले कभी वैसा युद्ध देखा या सुना नहीं। रथी योद्धाओं के रथ चारों ओर परस्पर भिड़े हुए देख पड़ते थे और वे निर्दय भाव से एक दूसरे पर प्रहार कर रहे थे। बहुत से मनुष्यों के शरीर छिन्न-भिन्न होकर इधर-उधर पड़े हुए थे। कुछ लोग कहीं भाग रहे थे। राह में और लोग उनका पीछा करते थे। कुछ रथ से भागते थे तो पीछे से, आस पास से, उन पर शत्रुओं के प्रहार होते थे। इसी तरह भिड़कर अत्यन्त दारुण संग्राम होते-होते रात बीत गई और दिन निकल आया। ६०

एक सौ सत्तासी अध्याय

नकुल और दुर्योधन का युद्ध

सञ्जय कहते हैं—महाराज! युद्धभूमि में वैसे ही कवच आदि पहने हुए सब योद्धा सन्ध्यावन्दन और सूर्यदेव की उपासना करने लगे। तपे हुए सुवर्ण के समान प्रकाशमान सूर्य-देव ने उदय होकर सारे जगत् को प्रकाशित कर दिया। अब फिर वैसे ही युद्ध होने लगा। सूर्योदय के पहले जो योद्धा जिस योद्धा से युद्ध कर रहा था, वह फिर उसी योद्धा से भिड़ गया। रथी वीरों से घुड़सवार, घुड़सवारों से हाथी के सवार, पैदलों से हाथी के सवार, घुड़सवारों से घुड़सवार, पैदलों से पैदल, रथी लोगों से रथी और हाथी के सवारों से हाथी के सवार भिड़-कर और कुछ फटककर युद्ध करने लगे। योद्धा लोग मर-मरकर अपने वाहनों से पृथ्वी पर गिरने लगे। रात भर लड़े थे, इस समय सूर्य की कड़ी धूप और भूख-प्यास से व्याकुल हो उठे, इस कारण बहुत से योद्धा बेहोश हो-होकर युद्ध करने में असमर्थ हो गये। शङ्ख, भेरी, मृदङ्ग आदि के बजने से, हाथियों के चिङ्घारने से, धनुषों की डोरी खींचने से, पैदलों के भागने से, शस्त्रों के प्रहार से, घोड़ों की हिनहिनाहट से, रथों के चलने से, वीरों के सिंहनाद आर्त-नाद और कोलाहल से एक बहुत बड़ा शब्द उत्पन्न हुआ, जो आकाश तक गूँज उठा। अनेक शस्त्रों के प्रहार से घायल होकर तड़प रहे लोगों के कराहने का घोर शब्द पृथ्वी पर सुनाई

१० पड़ता था। वह बहुत ही करुण दृश्य था। हाथी, घोड़े, रथी, पैदल योद्धा आदि जो गिर गये थे और जो गिर रहे थे, उनका शब्द भी दूर-दूर तक फैल रहा था। इस तरह दोनों दलों के परस्पर भिड़ जाने पर कहीं कौरवदल पाण्डवदल को और कहीं पाण्डवदल कौरवदल को मार रहा था और कौरवदल तथा पाण्डवदल के लोग अपने ही आदमियों को मार रहे थे। जैसे धोबी लोग धोते समय कपड़ों को उठाते और पटरे पर पटकते हैं वैसे ही वीर पुरुषों के हाथों में चमक रही उठी हुई तलवारें योद्धाओं और हाथियों के ऊपर गिरती दिखाई पड़ती थीं। तानकर चलाई गई तलवारों के गिरने से कपड़ों के पटककर धोने का सा ही शब्द उत्पन्न हो रहा था। इस तरह एक धारवाली और दो धारवाली तलवारों, तोमरों और परश्वधों से बहुत ही दारुण युद्ध होने लगा। इस प्रकार घोर युद्ध करके वीर पुरुषों ने परलोकगामिनी रक्त की भयङ्कर नदी बहा दी। वह नदी हाथी, घोड़े आदि के शरीरों से उत्पन्न होकर मनुष्यों के शरीरों को बहाये लिये जा रही थी। सब तरह के शस्त्र उसमें मछलियों की जगह देख पड़ते थे। मांस और रक्त की कीचड़ हो रही थी। घायलों का आर्तनाद उसका शब्द जान पड़ता था और पताका तथा शस्त्र आदि फेनपुञ्ज से प्रतीत हो रहे थे। रात के युद्ध में थके और बाण-शक्ति आदि के प्रहार से पीड़ित घोड़े, हाथी आदि वाहन निश्चेष्ट और संकुचित हो रहे थे। उनकी तेज़ी मिट गई थी और तनिक भी दम नहीं रह गया था। वीर लोग थकन के मारे सुस्त हो गये थे और सुन्दर कुण्डल तथा कवच आदि अन्य युद्ध की सामग्रियों से उनके शरीर शोभायमान हो रहे थे। रणभूमि में सब तरफ़ मांसाहारी जीव भरे पड़े थे, मरे-अधमरे मनुष्यों और वाहनों के शरीरों का ढेर लगा हुआ था। सारी रणभूमि का यही २० हाल था। रथ जाने-आने की राह किसी ओर नहीं मिलती थी। रथों के पहिये धँस-धँस जाते थे और हाथियों के समान ऊँचे, अच्छी नस्ल के, दमदार घोड़े, थके होने पर भी, बाणों के प्रहार से पीड़ित होने पर भी, भूख-प्यास के मारे काँपते रहने पर भी, किसी तरह ज़ोर मारकर पहियों को निकालते और आगे बढ़ते थे।

राजन्! कहाँ तक कहें, द्रोणाचार्य और अर्जुन के सिवा सम्पूर्ण सेना उस समय विह्वल, आतुर, उद्भ्रान्त और भयातुर हो रही थी। ये ही दोनों वीर अपनी-अपनी सेना को आश्रय देते और उनके डर को दूर करते थे। शत्रुपक्ष के लोग इन्हीं वीरों के सामने पहुँचकर यमलोक को जा रहे थे। उस समय युद्ध कर रहे कौरवों और पाञ्चालों की सेनाएँ घबरा उठीं। ऐसी धूल छाई हुई थी कि कहीं कुछ भी नहीं सूझ पड़ता था। राजवंश के पुरुषों का बहुत नाश हो रहा था। रणभूमि कायरों के मन में भय बढ़ानेवाली और मृत्यु की क्रीड़ाभूमि सी हो रही थी। धूल उड़ने के कारण ऐसा ज़बर्दस्त अँधेरा हो आया कि हमें वहाँ कर्ण, द्रोण, अर्जुन, युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्न, सात्यकि, दुःशासन, अश्वत्थामा, दुर्योधन, शकुनि,

कृपाचार्य, शल्य, कृतवर्मा आदि पराये या अपने कोई भी योद्धा नहीं देख पड़ते थे। आँखों में धूल भर जाने के कारण, पृथ्वी और दिशाओं की कौन कहे, अपना शरीर भी नहीं सूझ पड़ता था। इस तरह भ्रान्तिजनक घोर धूल का बादल छा जाने पर ऐसा जान पड़ा कि फिर रात आ गई। नहीं जान पड़ता था कि कौरव, पाञ्चाल या पाण्डव कौन और कहाँ हैं। पृथ्वी, आकाश, ३० सब दिशाएँ, समतल और ऊबड़-खाबड़ सब अदृश्य सा हो गया। विजय चाहनेवाले वीरगण, अपने या पराये, जिस आदमी को हाथ से छू पाते थे उसी को मार गिराते थे। थोड़ी देर में प्रचण्ड आँधी चलने से धूल ऊपर चली गई और जो बची वह रक्तप्रवाह से बैठ गई। उस समय खून से तर हाथी, घोड़े, रथी और पैदल योद्धा सब कल्पवृक्षों की कतार से शोभायमान हुए।

तब दुर्योधन, कर्ण, द्रोणाचार्य और दुःशासन, ये चारों महारथी चारों पाण्डवों से युद्ध करने लगे। दुर्योधन नकुल से, दुःशासन सहदेव से, कर्ण भीमसेन से और द्रोणाचार्य से अर्जुन भिड़ गये। उन उग्र श्रेष्ठ रथी योद्धाओं का देवासुर-युद्ध के समान अद्भुत, घोर और अलौकिक युद्ध देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। अन्य रथी योद्धा लोग युद्ध बन्द करके उन विचित्र युद्ध करनेवालों का विचित्र युद्ध और रथों की विचित्र गतियाँ देखने लगे। परस्पर जय की इच्छा रखनेवाले पराक्रमी वे महारथी यत्नपूर्वक वैसे ही अपने प्रतिद्वन्द्वी पर बाण बरसाने लगे जैसे वर्षाकाल में मेघ जलधारा छोड़ते हैं। सूर्य की तरह चमकीले रथों पर बैठे हुए वे वीर योद्धा चञ्चल बिजलियों से शोभित शरद ऋतु के मेघ से जान पड़ रहे थे। महाराज! वे असहनशील, परस्पर स्पर्द्धा रखनेवाले, महाधनुर्द्धर योद्धा लोग क्रुद्ध होकर मस्त हाथियों या साँड़ों की तरह परस्पर भिड़कर युद्ध कर रहे थे। हे कुरुकुल-श्रेष्ठ! काल के आये बिना कोई ४१ नहीं मरता—यह कहावत सच है। अगर ऐसा न होता तो अवश्य ही वे महारथी परस्पर के प्रहारों से छिन्न-भिन्न हो एक साथ ही मर जाते। कोई किसी को मार डालने में कुछ भी कसर नहीं रखता था। उस समय योद्धाओं के कटे हुए हाथ, पैर, कुण्डल-शोभित सिर, धनुष, बाण, प्रास, खड्ग, परशु, पट्टिश, नालीक, क्षुद्र नाराच, नखर, शक्ति, तोमर, अन्य विविध आकार के—तेल से साफ़ किये गये—श्रेष्ठ शस्त्र, विचित्र और अनेक आकार के कवच तथा विचित्र टूटे हुए रथ आदि इधर-उधर बिखरे रहने से वह समरभूमि नक्षत्रों से जगमगा रहे आकाश की तरह शोभित हुई; हाथियों और घोड़ों की लाशें, ध्वजा और योद्धा से हीन—बिना सवार के—डरे हुए घोड़ों के द्वारा इधर-उधर खींचे जा रहे पर्वताकार रथ, हवा के समान वेग से जानेवाले अलङ्कृत और वीर सवारों के मारे जाने के कारण ख़ाली पीठ घोड़े, चमर, छत्र, कङ्कण, गिरी हुई ध्वजाएँ, गहने, कपड़े, माला, सुगन्धित पदार्थ, हार, किरीट, मुकुट, पगड़ी, किङ्किणियाँ, वीरों की छातियों पर चमक रही मणियाँ, पदक, चूड़ामणि आदि चीज़ें इधर-उधर बिखरने के कारण वह रणभूमि तारागणों से परिपूर्ण आकाशमण्डल के समान शोभायमान हो उठी।

५० इधर कुपित राजा दुर्योधन से क्रुद्ध नकुल का युद्ध होने लगा। नकुल राजा दुर्योधन के रथ को बाईं ओर छोड़कर दाहनी ओर से निकल गये। इसी अवसर में उन्होंने दुर्योधन को बहुत से बाण मारे। प्रसन्नचित्त नकुल के इस कार्य को देखकर पाण्डव-सेना में आनन्द कोलाहल होने लगा। नकुल की इस फुर्ती को राजा दुर्योधन नहीं सह सके। वे भी तेज़ी और फुर्ती दिखाने के लिए वैसे ही नकुल की दाहनी ओर जाने की चेष्टा करने लगे; किन्तु रथ की विचित्र गतियों को जाननेवाले तेजस्वी नकुल ने उन्हें वैसा नहीं करने दिया। चारों ओर से बाणों की वर्षा करके नकुल ने उन्हें ऐसा पीड़ित किया कि वे नकुल के दक्षिण भाग में अपना रथ नहीं ले जा सके। सब सैनिक लोग इसके लिए नकुल की खूब प्रशंसा करने लगे। इस तरह दुर्योधन को विमुख करके आपकी कुमं-

५५ त्रणा के कारण मिलनेवाले अपने दुःखों को स्मरण कर रहे नकुल ने उनसे "ठहरो-ठहरो" कहा।

एक सौ अट्ठासी अध्याय

द्रोणाचार्य और अर्जुन आदि का द्वन्द्व युद्ध

सञ्जय ने कहा—राजन्! इधर दुःशासन क्रुद्ध होकर रथ के वेग से पृथ्वी को कँपाते हुए सहदेव की ओर दौड़े। पराक्रमी सहदेव ने उन्हें आते देखकर एक भल्ल बाण से फुर्ती के साथ उनके सारथी का शिरस्त्राण-शोभित सिर काट डाला। उन्होंने इतनी जल्दी यह कार्य कर डाला कि दुःशासन तथा अन्य सैनिकों को उसकी कुछ खबर ही नहीं हुई। सारथी के न रहने से दुःशासन के घोड़े इधर-उधर भटकने लगे। यह देखकर दुःशासन को मालूम हुआ कि उनका सारथी मर गया। तब वे निःशङ्क चित्त से अपनी फुर्ती दिखाते हुए घोड़ों की रास पकड़कर उन्हें हाँकने और युद्ध भी करने लगे। यह अद्भुत कार्य देखकर कौरव और पाण्डव दल के सब लोग उनकी प्रशंसा करने लगे। यह देखकर सहदेव बहुत ही कुपित हो उठे और दुःशासन के

घोड़ों को अत्यन्त तीक्ष्ण बाण मारने लगे। सहदेव के बाणों से पीड़ित घोड़े इधर-उधर भागने लगे। दुःशासन कभी घोड़ों की रास पकड़कर उन्हें सँभालते थे और कभी धनुष-बाण लेकर युद्ध करते थे। जब वे युद्ध करते थे तब सहदेव घोड़ों को बाण मारकर विचलित करते थे और जब वे घोड़ों को सँभालते थे तब सहदेव उनको तीक्ष्ण बाणों के प्रहार से पीड़ित करते थे।

यह देखकर कर्ण दुःशासन की सहायता करने को उनके पास आये। पराक्रमी भीमसेन ने यह देखकर यत्नपूर्वक कानों तक खींचकर कर्ण की छाती और दोनों हाथों में तीन भल्ल बाण मारे। तब महावीर कर्ण चोट खाये हुए साँप की तरह घूमकर बाणों की वर्षा से भीमसेन को पीड़ित करने लगे। महाराज! इस तरह महावीर कर्ण और भीमसेन परस्पर तुमुल युद्ध करने लगे। दोनों ही क्रोधान्ध होकर, लाल-लाल आँखें निकालकर, दो साँड़ों की तरह गरज-गरजकर एक दूसरे पर हमला करने लगे। उस समय उन युद्ध-निपुण दोनों वीरों के रथ इस तरह आकर परस्पर भिड़ गये कि बाण का प्रहार करना असम्भव हो गया। तब दोनों महारथी योद्धा गदायुद्ध करने लगे। महावीर भीमसेन ने गदा के प्रहार से कर्ण के रथ के कूबर के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। उनका यह अद्भुत कर्म देखकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ। महावीर कर्ण ने भी भीमसेन के रथ पर गदा का प्रहार करके उनकी गदा को तोड़ डाला। भीमसेन ने दूसरी भारी गदा लेकर कर्ण के ऊपर चलाई। कर्ण ने फुर्ती के साथ वेग से जानेवाले सुवर्ण-पुङ्खशोभित बाणों से उस गदा को भीमसेन की ओर लौटा दिया। वह भारी गदा मन्त्र से बाँधी गई नागिन की तरह कर्ण के बाणों से पीछे लौटकर भीमसेन के ही रथ पर गिरी। उस गदा के गिरने से भीमसेन की ध्वजा टूट गई और चोट खाकर सारथी अचेत हो गया। महाबली भीमसेन क्रोध से विह्वल हो उठे। उन्होंने तनिक भी विचलित न होकर आठ बाण कर्ण के ऊपर चलाकर उनके धनुष, तरकस और ध्वजा को काट डाला। महावीर कर्ण ने भी शीघ्र दूसरा सुवर्ण से मढ़ी हुई पीठवाला सुदृढ़ धनुष लेकर बाणों से भीमसेन के, रीछ के रङ्ग के, घोड़ों को और चक्ररक्षक तथा सारथी को मार डाला। इस तरह रथ के नष्ट होने पर सिंह जैसे पर्वत के शिखर पर चढ़ जाता है, वैसे ही शत्रुदमन भीमसेन उछलकर नकुल के रथ पर चढ़ गये।

राजन्! उधर उसी समय महारथी गुरु और शिष्य—द्रोणाचार्य और अर्जुन—विचित्र युद्ध करते हुए एक दूसरे के काम का जवाब दे रहे थे। फुर्ती के साथ बाण चढ़ाकर छोड़कर—बाण चलाने का अभ्यास दिखाकर—रथों के चलने-फिरने की चातुरी और युद्ध का कौशल दिखाकर वे दर्शकों के मन और नेत्रों को मोहित कर रहे थे। उस समय कौरव और पाण्डवपक्ष के सब योद्धा युद्ध बन्द करके गुरु और शिष्य का वह अद्भुत युद्ध देखने लगे। सेनाओं के बीच विचित्र रथों की गतियाँ दिखाकर दोनों वीर एक दूसरे के वाम भाग में जाने की चेष्टा कर रहे थे। सब योद्धा लोग आश्चर्य के साथ उनका पराक्रम देख रहे थे। महा-

राज ! आकाश में मांस के टुकड़े के लिए जैसे दो वाज़ युद्ध करें, वैसे ही द्रोण और अर्जुन लड़ रहे थे। अर्जुन को जीतने के लिए द्रोणाचार्य जो-जो रण-कौशल दिखाते थे उस-उस कौशल को हँसते हुए अर्जुन व्यर्थ कर देते थे। जब द्रोणाचार्य किसी तरह अर्जुन से विशेष पराक्रम न
३० दिखा सके, उन्हें परास्त न कर सके, तब अस्त्रविद्या में निपुण आचार्य ने अस्त्र-युद्ध शुरू कर दिया। ऐन्द्र, पाशुपत, त्वाष्ट्र, वायव्य, वारुण आदि जिस-जिस अस्त्र को धनुष पर चढ़ाकर द्रोण छोड़ते थे, उस-उस अस्त्र को अर्जुन अस्त्रबल से व्यर्थ कर देते थे। इस तरह जब अर्जुन ने विधिपूर्वक अस्त्रों से ही अस्त्रों को निष्फल कर दिया तब द्रोणाचार्य ने अर्जुन पर परम दिव्य अस्त्रों का प्रयोग किया। जीतने की इच्छा से आचार्य जो-जो दिव्य अस्त्र छोड़ते थे, उस-उस अस्त्र को अर्जुन अस्त्रबल से शान्त कर देते थे। इस तरह अर्जुन ने दिव्य अस्त्रों को भी जब व्यर्थ कर दिया तब द्रोणाचार्य मन ही मन प्रसन्न होकर उनकी प्रशंसा करने लगे। अर्जुन सा अपना शिष्य होने के कारण उन्होंने अपने को पृथ्वी पर सब अस्त्र जाननेवालों से श्रेष्ठ समझा। महारथी वीर पुरुषों के बीच इस तरह अर्जुन से दबने में भी उन्हें परम प्रसन्नता हुई। उस समय युद्ध देखने के लिए आये हुए हज़ारों देवता, ऋषि, गन्धर्व, अप्सरा, यक्ष, राक्षस आदि के विमानों से आकाशमण्डल परिपूर्ण हो गया; जान पड़ने लगा कि आकाश में बादल घिर आये हैं। उस समय आकाश में स्थित देवता आदि के मुख से निकली हुई अर्जुन और द्रोण की प्रशंसा से पूर्ण वाणियाँ सुनाई पड़ने लगीं। अस्त्रों के प्रयोग से दसों दिशाएँ प्रकाश से परिपूर्ण
४० हो उठीं। जो सिद्ध और मुनिगण आये थे वे कहने लगे—यह युद्ध न तो मनुष्यों का है, न असुरों का है, न राक्षसों का है, न देवताओं का है और न गन्धर्वों का है। यह निःसन्देह ब्राह्म (ब्राह्मण का) युद्ध है। ऐसा आश्चर्यजनक युद्ध न हमने कभी देखा है और न सुना है। इन दोनों में कोई कम नहीं है। अर्जुन द्रोणाचार्य से बढ़कर हैं और द्रोणाचार्य अर्जुन से बढ़-कर हैं। अगर स्वयं रुद्रदेव दो रूप रखकर युद्ध करें, तभी उस युद्ध से इस युद्ध की उपमा दी जा सकती है। अन्य कोई इसकी जोड़ का युद्ध न हुआ है और न होगा। आचार्य धनुर्विद्या के ज्ञान और शूरता के आधार हैं। किन्तु अर्जुन युवा होने के कारण बल और योग में अधिक हैं—अर्थात् अर्जुन के सारथी श्रीकृष्ण हैं, गाण्डीव सा श्रेष्ठ धनुष है, रथ और ध्वजा दिव्य हैं, स्वयं बुद्धिमान् और जवान होने के कारण उनकी सूझ-बूझ भी बहुत बड़ी है। युद्ध में शत्रुगण इन दोनों महारथियों को नहीं मार सकते। किन्तु ये चाहें तो देवगणसहित सम्पूर्ण जगत् का संहार कर डालें। महाराज ! वह युद्ध देखकर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सब प्राणी इस तरह कहने और गुरु-शिष्य के बल-वीर्य की बड़ाई करने लगे।

इसी समय द्रोणाचार्य ने दिव्य ब्रह्मास्त्र प्रकट किया। वह अस्त्र अर्जुन को और अ-प्रत्यक्ष देवयोनियों को सन्तप्त करने लगा। पर्वत-वन-वृक्ष-सहित सम्पूर्ण पृथ्वी काँप उठी, विषम

आँधी चलने लगी, समुद्र क्षोभ को प्राप्त हो गये। महात्मा द्रोण ने जब ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया तब इन उत्पातों को और अस्त्र के तेज को देखकर दोनों पक्ष के योद्धा और सब प्राणी भय से विह्वल हो उठे। किन्तु पराक्रमी अर्जुन तनिक भी नहीं घबराये। उन्होंने ब्रह्मास्त्र का ही प्रयोग करके आचार्य के ब्रह्मास्त्र को शान्त कर दिया। तुरन्त ही सब उत्पात मिट गये और सर्वत्र शान्ति छा गई। जब द्रोणाचार्य और अर्जुन में से कोई किसी को परास्त न कर सका, तब फिर पहले की तरह सङ्कुल युद्ध होने लगा। द्रोणाचार्य पाण्डव-सेना को और अर्जुन कौरव-सेना को फिर मारने लगे। फिर सब सैनिक उनके प्रहार से व्याकुल हो उठे। फिर धूल उड़ने लगी और आकाश में मेघों के समान बाण छा गये। उस तुमुल युद्ध में ऐसा घोर अँधेरा छा गया कि किसी को कुछ नहीं सूझता था। असंख्य बाण बरसने के कारण आकाश में कोई आकाशचारी पक्षी भी उड़ता नहीं दिखाई पड़ता था। ५०—५४

एक सौ नवासी अध्याय

सात्यकि और दुर्योधन आदि का द्वन्द्व युद्ध

सञ्जय ने कहा—हे नर-नाथ! इस तरह असंख्य मनुष्य, हाथी, घोड़े मरने लगे। उस समय महाबली दुःशासन धृष्टद्युम्न से युद्ध करने लगे। सुनहरे रथ पर बैठे हुए वीर धृष्टद्युम्न दुःशासन के बाणों की चोट खाकर अत्यन्त क्रुद्ध हो उठे। वे दुःशासन के घोड़ों पर तीक्ष्ण बाण छोड़ने लगे। दम भर में धृष्टद्युम्न ने इतने बाण बरसाये कि उनसे दुःशासन का सारथी, रथ और रथ की ध्वजा तक अदृश्य हो गई। महाबली दुःशासन धृष्टद्युम्न के बाणों की चोट से अत्यन्त व्यथित हो उठे और उनके सामने ठहर सकने की हिम्मत न कर सके।

महाबली धृष्टद्युम्न इस तरह दुःशासन को रण से भगा करके बाण बरसाते हुए द्रोणाचार्य की ओर चले। यह देखकर वीर कृतवर्मा और उनके तीन भाई धृष्टद्युम्न को परास्त

करने की चेष्टा करने लगे। महावीर नकुल और सहदेव प्रज्वलित अग्नि के समान तेजस्वी धृष्टद्युम्न को द्रोण के सामने जाते, और कृतवर्मा को मय अपने भाइयों के उन पर आक्रमण करते, देखकर धृष्टद्युम्न की सहायता करने के लिए उनके पीछे चले। सत्त्वशाली, विशुद्धात्मा, विशुद्धचरित्र और परस्पर विजय की इच्छा रखनेवाले ये सब महारथी योद्धा क्रुद्ध होकर, मरने का डर छोड़कर, स्वर्ग पाने की इच्छा से आर्यजनोचित धर्मयुद्ध और परस्पर प्रहार करने लगे। ये योद्धा उत्तम कुल में उत्पन्न और स्वयं उत्तम कर्म करनेवाले बुद्धिमान् थे। इसी से उत्तम गति
१० की कामना करके परस्पर धर्मयुद्ध कर रहे थे। अधर्मपूर्ण या निन्दित युद्ध कोई नहीं करता था। सभी वीर स्वर्ग और कीर्ति प्राप्त करने के लिए सरल और विशुद्ध अस्त्र-शस्त्रों का ही प्रयोग कर रहे थे। कर्णी (निकालते समय इस वाण के दो उलटे काँटे आँतों को खींच लेते हैं), नालीक (यह वाण छोटा होने के कारण बहुत मुशकिल से निकाला जा सकता है), विषलिप्त, वस्तिक (इस वाण का अग्रभाग शिथिल रूप से दण्ड में लगा रहता है, निकालते समय लोहे की गाँसी वस्ति में रह जाती है, दण्ड भर बाहर निकलता है), सूची (बहुत सी सुइयों या काँटों से परिपूर्ण), कपिश (गाय या हाथी की हड्डी का बना), संश्लिष्ट (दो घाव कर देनेवाला), पूति (मलिन शल्यवाला) और जिह्मग (एक को निशाना बना दूसरे पर चला देना) इत्यादि निषिद्ध वाणों का प्रयोग किसी ओर से नहीं होता था।

महाराज! इस तरह पाण्डवपक्ष के तीन योद्धाओं के साथ कौरवपक्ष के चार योद्धाओं का तुमुल संग्राम होने लगा। उस समय महावीर धृष्टद्युम्न ने नकुल और सहदेव को उन कौरवपक्ष के चारों योद्धाओं का सामना करते देखकर ख़ुद द्रोणाचार्य के सामने अपना रथ बढ़ाया। कौरवपक्ष के चारों वीर नकुल और सहदेव के द्वारा रोके जाने पर क्रुद्ध होकर उन पर आक्रमण करने लगे। इस तरह नकुल और सहदेव शत्रुपक्ष के दो-दो योद्धाओं से वैसे ही युद्ध करने लगे जैसे आँधी दो पर्वतों पर आक्रमण करे। महावीर धृष्टद्युम्न को द्रोणाचार्य की ओर बढ़ते और कृतवर्मा आदि चारों वीरों को नकुल-सहदेव से लड़ते देखकर राजा दुर्योधन ख़ुद धृष्टद्युम्न की ओर बढ़े और उन पर मर्मभेदी वाण बरसाने लगे। महावीर सात्यकि यह देखकर शीघ्रता के साथ दुर्योधन के सामने आ गये। वे पुरुषसिंह कौरव और यादव दोनों एक दूसरे के सामने आकर, प्रसन्नतापूर्वक लड़कपन के वृत्तान्त स्मरण करके, हँसते हुए
२१ निर्भय भाव से युद्ध करने के लिए उद्यत हुए।

राजा दुर्योधन ने प्रिय सखा सात्यकि को देखकर अपने चरित्र की निन्दा करते हुए कहा—हे मित्र! क्षत्रियों के क्रोध, लोभ, मोह, पराक्रम, असहनशीलता, बल और आचार को धिक्कार है, जिनके कारण आज हम दोनों मित्र परस्पर लड़ने को तैयार हैं। तुम मुझे प्राणों से प्यारे थे और मैं भी तुम्हें अत्यन्त प्रिय था, तथापि आज क्षत्रियधर्म के कारण ही तुम मुझे

और मैं तुम्हें मारने को तैयार हूँ। मुझे इस समय वे अपने और तुम्हारे लड़कपन के वृत्तान्त स्मरण आते हैं; किन्तु रणभूमि में वह पहले का स्नेह जाता रहा है। इस युद्ध का कारण क्रोध और लोभ के सिवा और कुछ नहीं है। क्रोध और लोभ से बढ़कर अनिष्ट करनेवाला और कुछ नहीं है। इन्हीं के कारण आज मुझे तुमसे युद्ध करना पड़ा।

ये वचन सुनकर, तीक्ष्ण बाणों को हाथ में लेकर, श्रेष्ठ अस्त्रों के जाननेवाले सात्यकि हँसकर दुर्योधन से कहने लगे—हे राजपुत्र! यह न तो राजसभा है और न आचार्य का आश्रम है, जहाँ हम दोनों ने एकत्र रहकर सदा क्रीड़ा और मनोरञ्जन किया है। यह तो रणभूमि है।

दुर्योधन ने फिर कहा—काल की महिमा बड़ी प्रबल है! हे यादवश्रेष्ठ! वह हमारा बचपन का खेल कहाँ चला गया? इस समय हम एक दूसरे के शत्रु होकर घोर संग्राम करने को उपस्थित हैं। हम लोग धन के लोभ से ही परस्पर युद्ध कर रहे हैं। किन्तु ऐसे धन और धन के लोभ से क्या लाभ होगा, यह समझ में नहीं आता।

सञ्जय कहते हैं कि महारथी सात्यकि ने कहा—हे दुर्योधन! क्षत्रियों का यही धर्म है ३० कि वे ज़रूरत पड़ने पर गुरु से भी लड़ने में नहीं हिचकते। राजन्! यदि तुम मुझे अपना प्यारा सखा समझते हो तो शीघ्र ही मुझे मार डालो। हे भरतश्रेष्ठ! तुम्हारी कृपा से सम्मुख युद्ध में मरकर मैं सुकृत से मिलनेवाले श्रेष्ठ लोक को जाऊँगा। इसलिए तुममें जितनी शक्ति और बल हो, सो सब शीघ्र मुझसे युद्ध करने में दिखाओ, कोई बात उठा न रक्खो। मैं जीवित रहकर अपने आत्मीय मित्रों के महादुःख और कष्ट को नहीं देख सकता।

महावीर सात्यकि इतना कहकर, निर्भय भाव से स्थिर होकर, शीघ्रता के साथ दुर्योधन से लड़ने को बढ़े और प्राणों की ममता छोड़कर लड़ने लगे। महाबाहु सात्यकि को युद्ध के लिए बढ़ते देखकर दुर्योधन ने उन पर बाणों की वर्षा कर दी। उस समय सिंह और गजराज के समान वे दोनों वीर घमासान युद्ध करने लगे। महारथी क्रुद्ध दुर्योधन ने कानों तक खींचकर छोड़े गये दस बाणों से सात्यकि को घायल किया। तब सात्यकि ने भी उनको क्रम से पचास, तीस और दस तीक्ष्ण बाण मारे। राजन्! आपके पुत्र ने हँसकर, धनुष तानकर, कान तक खींचकर तीस बाण सात्यकि को मारे। फिर एक क्षुरप्र बाण से उनका धनुष भी काट डाला। वीर सात्यकि ने तत्काल दूसरा दृढ़ धनुष लेकर दुर्योधन के वध के लिए फुर्ती के साथ असंख्य बाण बरसाना शुरू कर दिया। राजा दुर्योधन भी अनायास अपने बाणों से सात्यकि के बाणों ४० को काट-काटकर व्यर्थ करने लगे। यह देखकर सैनिकगण कोलाहल करने लगे। राजा दुर्योधन ने वेग से धनुष खींचकर सुवर्णपुङ्खशोभित तीक्ष्ण तिहत्तर बाण सात्यकि को मारे। तब सात्यकि ने दुर्योधन के बाण-सहित धनुष को काट डाला। सात्यकि ने असंख्य बाणों से राजा दुर्योधन को ढक दिया। कुरुराज दुर्योधन सात्यकि के बाणों की गहरी चोट खाकर अत्यन्त

व्यथित हो उठे और उनके सामने से हटकर अन्य रथी योद्धा के सामने चले गये। वहाँ कुछ देर विश्राम करके वे फिर सात्यकि के सामने आये और उनके रथ पर बाणों की वर्षा करने लगे। सात्यकि भी दुर्योधन के रथ पर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। चारों ओर बाणों के गिरने से वैसा ही शब्द हो रहा था, जैसा शब्द वन में आग लगने पर वृक्षों के जलने और गिरने से होता है। उन दोनों वीरों के बाणों से पृथ्वीतल परिपूर्ण और आकाशमार्ग दुर्गम हो उठा।

सात्यकि को दुर्योधन से अधिक पराक्रम प्रकट करते देखकर उनकी रक्षा करने के लिए कर्ण शीघ्रता से सात्यकि की ओर चले। यह देखकर महाबली भीमसेन से नहीं रहा गया। ५० वे शीघ्रता के साथ कर्ण के सामने जाकर उन पर लगातार तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। वीर कर्ण ने भीमसेन के सब बाणों को अनायास काट डाला और फिर कई बाणों से उनके धनुप-बाण को काटकर सारथी को भी मार गिराया। यह देखकर वीर भीमसेन क्रोध से विह्वल हो उठे। उन्होंने भारी गदा लेकर उसके प्रहार से कर्ण के धनुष, ध्वजा और सारथी को चूर्ण करके उनके रथ का एक पहिया भी तोड़ डाला।

पहिया टूट जाने पर भी कर्ण पर्वतराज की तरह अटल होकर उसी रथ पर बैठे रहे। सूर्य के एक पहियेवाले रथ को जैसे सात घोड़े आकाशमार्ग में ले चलते हैं, वैसे ही कर्ण के एक पहिये के रथ को बहुत देर तक घोड़े घुमाते रहे। भीमसेन के उस काम को कर्ण न सह सके और बहुत देर तक तरह-तरह के बाण और शस्त्र छोड़कर उनसे युद्ध करते रहे। भीमसेन भी क्रुद्ध हो रहे थे। वे बहुत देर तक कर्ण का सामना करते रहे।

राजन्! इस तरह भीम और कर्ण का युद्ध होते देखकर धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने कुपित होकर पाञ्चाल और मत्स्य देश के महारथी योद्धाओं से कहा—हे श्रेष्ठ वीरो! हमारे प्राण और शिरोमणि स्वरूप जो महारथी श्रेष्ठ योद्धा हैं, वे इस समय दुर्योधन आदि शत्रुओं के साथ युद्ध कर रहे हैं। फिर तुम लोग मूढ़ अचेत की तरह खड़े हुए तमाशा क्या देख रहे हो? जहाँ पर ये हमारे पक्ष के महारथी योद्धा शत्रुओं से लड़ रहे हैं वहीं

तुम भी जाओ और क्षत्रिय-धर्म के अनुसार निर्भय होकर युद्ध करो। देखो, धर्मयुद्ध करके जीतने में और मरने में भी सर्वथा लाभ ही है। मरोगे तो श्रेष्ठ लोकों में जाकर उत्तम भोग प्राप्त करोगे और अगर विजय प्राप्त करोगे तो यहाँ भारी दक्षिणावाले यज्ञ करोगे, सुख भोगोगे और साथ ही कीर्ति भी संसार में फैलेगी। यदि मर जाओगे, तो भी क्या चिन्ता है, देव-शरीर पाकर स्वर्ग के श्रेष्ठ सुख भोगोगे। ६०

राजन्! महावीर योद्धा लोग राजा युधिष्ठिर के ये वचन सुनकर, सेना के चार भाग करके, द्रोणाचार्य पर आक्रमण करने चले। एक ओर से धृष्टद्युम्न प्रमुख पाञ्चालगण द्रोणाचार्य पर तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। एक ओर से भीमसेन के साथ की सेना और वीरगण आचार्य पर आक्रमण करने चले और एक ओर से नकुल तथा सहदेव ने आक्रमण किया। पाण्डवपक्ष के तीन महारथी भीमसेन, नकुल और सहदेव चिल्लाकर कहने लगे—हे अर्जुन! तुम शीघ्र आक्रमण करके, आचार्य की रक्षा कर रहे, कौरवों को द्रोणाचार्य से दूर भगा दो। तब रक्षक-हीन असहाय आचार्य को ये वीर पाञ्चाल शीघ्र मार डालेंगे। महाराज! महाप्रतापी तेजस्वी अर्जुन, भाइयों के कथनानुसार, फुर्ती के साथ कौरवों पर आक्रमण करने लगे। इधर द्रोणाचार्य भी धृष्टद्युम्न आदि पाञ्चालों पर आक्रमण करने के लिए उनकी ओर बढ़ने लगे। इस तरह द्रोणाचार्य के सेनापतित्व में होनेवाले पाँचवें दिन के युद्ध में वीरगण एक दूसरे को मारने लगे। ६६

एक सौ नब्बे अध्याय

श्रीकृष्ण आदि के कहने से युधिष्ठिर का द्रोणाचार्य के आगे
'अश्वत्थामा मारे गये' यह मिथ्या वाक्य कहना

सञ्जय ने कहा—महाराज! पहले इन्द्र ने जैसे क्रोध करके समर में दानवों का संहार किया था वैसे ही महावीर द्रोणाचार्य पाञ्चाल लोगों का संहार करने लगे। पाण्डवपक्ष के महाबली महारथी लोग द्रोणाचार्य के प्रहार से अत्यन्त पीड़ित होने पर भी डरे नहीं। महारथी पाञ्चाल और सृञ्जयगण निर्भय होकर द्रोणाचार्य के सामने चले। चारों ओर से द्रोणाचार्य को घेर रहे और उनके बाणों की वर्षा से मर रहे पाञ्चालों का भयानक कोलाहल और आर्तनाद रणभूमि में गूँज उठा। द्रोणाचार्य के अस्त्र-बल को प्रचण्ड रूप धारण करते और उसके द्वारा पाञ्चालों का दारुण संहार होते देखकर पाण्डव बहुत ही डर गये। असंख्य योद्धा, हाथी और घोड़े आदि का नाश होते देखकर पाण्डवों को ऐसा जान पड़ा कि अब युद्ध में उनको विजय प्राप्त नहीं हो सकती। वे घबराकर कहने लगे—श्रेष्ठ अस्त्रों के जाननेवाले द्रोणाचार्य कहीं हमारी सारी सेना को न मार डालें। वसन्तकाल में लगी हुई आग जैसे प्रचण्ड

होकर घास-फूस को भस्म कर डालती है वैसे ही द्रोणाचार्य इस समय हमारी सेना का संहार कर रहे हैं। इस समय कोई योद्धा इन्हें आँख से देख भी नहीं सकता। रहे अर्जुन, सो वे धर्मज्ञ हैं और इन गुरु से युद्ध नहीं करेंगे।

राजन् ! पाण्डवों के हितैषी अलौकिक बुद्धिमान् श्रीकृष्ण ने द्रोणाचार्य के बाण-प्रहार से पीड़ित और डरे हुए पाण्डवों की दशा देखकर अर्जुन से कहा—हे पार्थ ! श्रेष्ठ धनुर्द्धर द्रोणाचार्य

१० के हाथ में जब तक धनुष है तब तक इन्द्र सहित सब देवता भी इन्हें नहीं मार सकते। हाँ, अगर किसी तरह ये शस्त्र रख दें तो मनुष्य भी इनका वध कर सकते हैं। इसलिए मेरी सलाह तो यह है कि धर्म-अधर्म का विचार छोड़कर इन्हें जीतने का—शस्त्र त्याग कराने का—कोई उपाय तुम लोगों को करना चाहिए। वही उपाय करना चाहिए जिससे ये मारे जा सकें और इनके अस्त्र-बल से हमारी सारी सेना का संहार न होने पावे। अगर धर्म का ख़याल करोगे, कोई ऐसा उपाय न करोगे जिससे ये शस्त्र रख दें, तो ये बहुत शीघ्र तुम्हारी सारी सेना को मार डालेंगे। मैं समझता हूँ, किसी तरह इन्हें अश्वत्थामा के मरने का निश्चय हो जाय तो ये फिर युद्ध नहीं करेंगे। कोई आदमी इनके पास जाकर कह दे कि युद्ध में अश्वत्थामा मारे गये।

हे प्रजा-नाथ ! और सबने तो यह सलाह पसन्द की, परन्तु अर्जुन राज़ी नहीं हुए। धर्मपुत्र युधिष्ठिर भी बहुत कहने-सुनने पर इस पर राज़ी हुए। तब भीमसेन ने जाकर मालव देश के राजा इन्द्रवर्मा के हाथी को, जिसका नाम अश्वत्थामा था, गदा के प्रहार से मार डाला। वह शत्रु-सेना को नष्ट करनेवाला हाथी पाण्डवों की सेना में ही घुसा हुआ था। इसके बाद द्रोणाचार्य के पास जाकर, कुछ लज्जित भाव से, भीमसेन ने ज़ोर से कहा—अश्वत्थामा मारा गया। भीमसेन ने मन में अश्वत्थामा हाथी के मरने की बात कहकर द्रोणाचार्य को धोखा देने के लिए केवल अश्वत्थामा मारा गया यह अस्पष्ट वाक्य कहा, जो कि वास्तव में मिथ्या था। भीमसेन को बारम्बार चिल्लाकर यों कहते देखकर और उक्त महान् अप्रिय वचन सुनकर आचार्य का मन विषाद और शोक से व्याकुल हो उठा; उनके हाथ-पैर आदि सब अङ्ग वैसे ही रह गये जैसे जल में बालू बैठ जाती है। दम भर के बाद आचार्य का यह भाव जाता रहा; क्योंकि वे अपने पुत्र के बल और पराक्रम को जानते थे कि उसे कोई शस्त्रधारी नहीं मार सकता। उन्हें सन्देह हो गया कि भीमसेन का यह कहना मिथ्या है। इसी लिए भीमसेन के मुँह से अश्वत्थामा के मरने की ख़बर सुनकर वे धैर्य से विचलित नहीं हुए। अपने पुत्र को शत्रुओं के लिए

२० अजेय जानकर, दम भर में सचेत होकर, द्रोणाचार्य अपने लिए मृत्यु स्वरूप धृष्टद्युम्न की ओर वेग से चले और उनके ऊपर कङ्कपत्रयुक्त तीक्ष्ण हज़ारों बाण बरसाने लगे। संग्राम में मृत्यु की तरह विचर रहे द्रोणाचार्य को पाञ्चाल देश के बीस हज़ार श्रेष्ठ योद्धाओं ने घेर लिया। वे चारों ओर से उन पर बाण बरसाने लगे। वर्षा ऋतु में बादलों से छिपे हुए सूर्य की तरह महारथी

सूक्ष्म शरीरधारी ऋषि आकर............बोले...............अब तुम्हारे परलोक-गमन का समय उपस्थित है। हम लोग तुम्हें ले जाने को आये हैं। पृष्ठ—२६५५

द्रोणाचार्य उनके बाणों की वर्षा में छिप गये। हम लोगों को उनका रथ भी नहीं देख पड़ता था। महारथी द्रोणाचार्य ने दम भर में पाञ्चाल योद्धाओं के उन बाणों को छिन्न-भिन्न कर दिया। कुपित द्रोणाचार्य ने उन शूर पाञ्चालों को मारने के लिए ब्रह्मास्त्र प्रकट किया। उस समय सब सैनिकों का संहार कर रहे द्रोणाचार्य बहुत ही शोभा को प्राप्त हुए। उन्होंने पाञ्चालों के सिरों और सुवर्णभूषणयुक्त बेलन से हाथों को काट-काटकर ढेर लगा दिया। समर में द्रोण के अस्त्र से मारे गये राजा लोग आँधी से उखड़े और टूटे हुए वृक्षों की तरह पृथ्वी पर गिरने लगे। मर-मरकर गिर रहे असंख्य हाथियों और घोड़ों के मांस और रुधिर की कीच से रणभूमि अगम्य हो उठी। राजन्! इस तरह महावीर द्रोणाचार्य ने पाञ्चाल देश के बीस हज़ार रथी योद्धाओं को मार डाला। उस समय वे अपने प्रचण्ड तेज से धूम-हीन अग्नि के समान रथ पर शोभायमान हो रहे थे। फिर उन्होंने क्रुद्ध होकर एक भल्ल बाण से वसुदान का सिर काट डाला। इसके बाद पाँच सौ मत्स्यदेश के और छः हज़ार सृञ्जयसेना के वीर ३० मारकर दस हज़ार हाथी और इतने ही घोड़े मार गिराये।

महाराज! इसी समय अग्निहोत्री विश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, गौतम, वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि आदि ऋषिगण द्रोणाचार्य को ब्रह्मलोक ले जाने के लिए आकाश में आ गये। इसके सिवा सिकत, पृश्नि, गर्ग, वालखिल्य, मरीचिप, भृगु, अङ्गिरा और अन्य सूक्ष्म शरीरधारी ऋषि आकर—द्रोणाचार्य को क्षत्रियवंश का बिलकुल ही नाश करने के लिए उद्यत देखकर—बोले कि हे आचार्य! तुम इस समय अस्त्र न जाननेवाले शत्रुओं को अस्त्र से मारकर अधर्म युद्ध कर रहे हो। अब यह तुम्हारे परलोक-गमन का समय उपस्थित है। हम लोग तुम्हें ले जाने को आये हैं। अब तुम शस्त्र रखकर हमारी ओर देखो, हमारा कहा मानो। यह अत्यन्त क्रूर हत्याकाण्ड करना तुम्हें उचित नहीं। तुम सब वेदों और वेदाङ्गों के ज्ञाता, सत्य-धर्म-निरत, ख़ासकर ब्राह्मण हो। इसलिए यह क्रूर कर्म किसी तरह तुम्हारे योग्य नहीं है।

हे अमोघ बाण चलानेवाले आचार्य! अब तुम शाश्वत धर्म के मार्ग को ग्रहण करके ईश्वर में मन लगाओ। मनुष्यलोक में तुम्हारे रहने का समय पूरा हो गया। हे विप्र! तुमने अस्त्र न जाननेवाले साधारण सैनिकों पर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करके उन्हें भस्म किया है। यह कर्म तुमने अच्छा नहीं किया। अब शस्त्र-त्याग करके इस क्रूर कर्म को बन्द कर दो। विलम्ब न करो।
४० अब ऐसा क्रूर कर्म फिर करने का विचार छोड़ दो।

राजन्! भीमसेन के मुँह से अश्वत्थामा की मृत्यु का समाचार सुनकर द्रोणाचार्य पहले शोकाकुल हो चुके थे। अब ऋषियों के ये वचन सुनकर, भीमसेन के वचन स्मरण करके, और धृष्टद्युम्न को सामने उपस्थित देखकर वे बहुत ही खिन्न, व्यथित और उदास हो उठे। भीमसेन की बात पर पूरा विश्वास न करके आचार्य ने राजा युधिष्ठिर से पूछा कि अश्वत्थामा मारे गये या जीते हैं। आचार्य को दृढ़ निश्चय था कि युधिष्ठिर त्रिभुवन के राज्य के लिए भी झूठ नहीं बोलेंगे। युधिष्ठिर के बाल्यकाल से ही वे उन्हें सत्यवादी जानते थे। इसी से द्विज-श्रेष्ठ द्रोण ने और सबको छोड़कर उन्हीं से इस बारे में पूछा।

इसी समय महारथी द्रोणाचार्य को पृथ्वी को पाण्डव-हीन करने के लिए उद्यत जानकर श्रीकृष्ण ने, व्यथित होकर, युधिष्ठिर से कहा—हे धर्मराज! अगर आचार्य आधे दिन और इसी तरह क्रुद्ध होकर युद्ध करेंगे तो आपकी सारी सेना में एक आदमी भी जीता नहीं बचेगा। इसलिए आप मिथ्या बोलकर अपनी सेना की रक्षा कीजिए। ऐसे अवसर पर सत्य बोलने की अपेक्षा झूठ बोलना ही अच्छा है। जीवन बचाने के लिए मिथ्या बोलने से मिथ्यावादी होने का पातक नहीं होता*।

श्रीकृष्ण युधिष्ठिर से यों कह ही रहे थे कि भीमसेन ने भी कहा—राजन्! मैंने द्रोणाचार्य के वध का उपाय सुनकर आपकी सेना को नष्ट करनेवाले मालव-नरेश इन्द्रवर्मा के ऐरावत-सदृश अश्वत्थामा नाम के हाथी को गदा के प्रहार से मार डाला, और फिर द्रोणाचार्य से जाकर
५० कहा—ब्रह्मन्! अश्वत्थामा मारे गये, अब युद्ध करना छोड़ो। किन्तु पुरुषश्रेष्ठ द्रोणाचार्य ने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया। इसलिए आप हमारे हितैषी श्रीकृष्ण का कहा मानकर द्रोणाचार्य से कह दीजिए कि अश्वत्थामा मारे गये। आप अगर कह देंगे तो द्रोणाचार्य को विश्वास हो जायगा और वे हथियार रख देंगे। क्योंकि आप संसार में सर्वत्र सत्यवादी कहलाते हैं।

महाराज! श्रीकृष्ण की प्रेरणा से, भीमसेन के कहने से और भवितव्यतावश, राजा युधिष्ठिर ने झूठ बोलना स्वीकार कर लिया। एक ओर मिथ्या बोलने के पातक का भय था और दूसरी ओर विजय की अभिलाषा थी। पर होनी को कौन टाल सकता है? राजा युधि-

* शास्त्र में लिखा है कि स्त्रियों के निकट, दिल्लगी में, विवाह के बारे में, वृत्ति के लिए, प्राण-सङ्कट के अवसर पर तथा गाय और ब्राह्मण की जान बचाने के लिए मिथ्या बोलना निन्दित नहीं है।

ष्ठिर ने डरते-डरते आचार्य को सुनाकर कहा—अश्वत्थामा मारा गया। साथ ही धीरे से कहा—अश्वत्थामा हाथी मारा गया। राजन्! इससे पहले युधिष्ठिर का रथ पृथ्वी से चार अंगुल ऊँचा रहता था; किन्तु उस समय इस तरह धोखा देने के लिए मिथ्या बोलने से उनके रथ के घोड़े पृथ्वी पर चलने लगे। युधिष्ठिर के वचन सुनकर महारथी द्रोणाचार्य असह्य पुत्र-शोक से पीड़ित हो उठे। उन्होंने जीवन की ममता छोड़ दी। ऋषियों के पूर्वोक्त वाक्य स्मरण करके वे अपने को पाण्डवों का अपराधी सा समझने लगे। पुत्र की मृत्यु सुनकर वे घबरा उठे। सामने धृष्टद्युम्न को युद्ध के लिए खड़े देखकर भी, शोकविह्वल होने के कारण, पहले की तरह वे युद्ध न कर सके। ५६

एक सौ इक्यानवे अध्याय

सात्यकि का द्रोणाचार्य के हाथ से धृष्टद्युम्न को बचाना

सञ्जय कहते हैं—हे भरतश्रेष्ठ! इसी समय पाञ्चालराज द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य को पुत्रशोक से अत्यन्त शिथिल और अचेत देखकर, सुअवसर जानकर, वेग से उन पर आक्रमण करने को चले। राजा द्रुपद ने द्रोण को मारने के लिए ही महायज्ञ किया था, और उसी यज्ञ में अग्निकुण्ड से धृष्टद्युम्न की उत्पत्ति हुई थी। महापराक्रमी धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य को मारने के लिए सुदृढ़ डोरीवाले, मेघगर्जन के समान शब्द करनेवाले, विजय दिलानेवाले, जीर्ण न होनेवाले, घोर धनुष पर विषैले साँप के समान बाण चढ़ाया। द्रोणाचार्य को मारने के लिए धृष्टद्युम्न ने जो बाण धनुष पर चढ़ाया वह ज्वालाओं से परिपूर्ण अग्नि के समान था। धनुष की डोरी के मण्डल के बीच में वह उग्र बाण मेघ के बीच घेरे से युक्त सूर्यमण्डल के समान प्रतीत होने लगा। धृष्टद्युम्न के हाथ में वह प्रज्वलित धनुष देखकर सब सैनिकों को ऐसा जान पड़ा कि अब प्रलय होने में कुछ देर नहीं है। आचार्य भी उस बाण को धृष्टद्युम्न के धनुष पर चढ़ते देखकर समझ गये कि उनके शरीर छोड़ने का समय आ गया है। आचार्य ने उस बाण को व्यर्थ करने का बहुत यत्न किया; परन्तु उनके सब दिव्य अस्त्र पहले की तरह प्रकट नहीं हुए। चार दिन और एक रात उन्होंने लगातार बाणों की वर्षा की; किन्तु बाण वैसे ही अक्षय बने रहे। परन्तु आज दिन का तिहाई भाग भी नहीं बीतने पाया कि सब बाण चुक गये। पुत्र-शोक से विह्वल द्रोणाचार्य अपने बाणों को चुकते और विविध दिव्य अस्त्रों को पहले की तरह काम न देते देखकर युद्ध से उदास हो गये। ऋषियों के वचनों को स्मरण करके उन्होंने शस्त्र १० रख देने का इरादा कर लिया। उनका तेज भी घट गया। वे पहले की तरह उग्रभाव से

युद्ध करने में असमर्थ हो गये। दम भर बाद आचार्य ने फिर अङ्गिरा का दिया हुआ दिव्य धनुष और ब्रह्मदण्ड के समान उग्र बाण हाथ में लिये। अब वे धृष्टद्युम्न से युद्ध करने लगे। आचार्य ने धृष्टद्युम्न के ऊपर घोर बाण-वर्षा करके उनको छिन्न-भिन्न कर डाला। द्रोण ने बाणों से धृष्टद्युम्न के सब बाणों के सैकड़ों टुकड़े कर डाले और उनके धनुष, ध्वजा और सारथी को काट गिराया। महावीर धृष्टद्युम्न ने हँसकर दूसरा धनुष लेकर आचार्य की छाती में एक अत्यन्त तीक्ष्ण बाण मारा। उस बाण की गहरी चोट खाकर भी आचार्य विचलित नहीं हुए और उन्होंने तीक्ष्ण धारवाले भल्ल बाण से फिर धृष्टद्युम्न का धनुष काट डाला। धनुर्द्धरों में श्रेष्ठ आचार्य ने धृष्टद्युम्न के खड्ग और गदा के सिवा सब अस्त्र-शस्त्र, बाण और धनुष आदि के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। इसके बाद शत्रुदमन द्रोण ने सिल्ली पर रगड़कर तीक्ष्ण किये गये और जीवन का संहार करनेवाले नव तीक्ष्ण बाण धृष्टद्युम्न को मारे।

तब धृष्टद्युम्न ने क्रुद्ध होकर अपने रथ के घोड़ों को आचार्य के रथ के घोड़ों से भिड़ाकर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। वायु के समान वेग से जानेवाले श्रेष्ठ, लाल और कबूतर के रङ्गवाले, २० घोड़े एक में भिड़ जाने से बहुत ही शोभायमान हुए। रणभूमि में भिड़े हुए वे घोड़े वैसे ही शोभायमान हुए जैसे वर्षा ऋतु में गरज रहे बिजली सहित मेघ शोभित होते हैं। आचार्य ने धृष्टद्युम्न के रथ के ईषा, चक्र और रथ के बन्धन को काट डाला। धनुष, ध्वजा, सारथी और रथ कुछ भी न रहने पर घोर विपत्ति में पड़कर वीर धृष्टद्युम्न ने अपने बचाव के लिए हाथ में भारी गदा ली। कुपित द्रोणाचार्य ने प्रहार करने के पहले ही बाणों से उस गदा के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। गदा को इस तरह व्यर्थ होते देखकर धृष्टद्युम्न ने उज्ज्वल तीक्ष्ण शतचन्द्र-शोभित खड्ग हाथ में लिया। धृष्टद्युम्न ने निःसंशय होकर द्रोण-वध के लिए वही उचित समय समझा। तब वे शतचन्द्रयुक्त तलवार तानकर अपने रथ से द्रोणाचार्य के रथ पर चले गये और उन्होंने चाहा कि उसी खड्ग से आचार्य के हृदय को फाड़ डालें। वे कभी युग के मध्य भाग में, कभी युग के सन्नहन स्थान में और कभी द्रोण के घोड़ों की पीठ पर चले जाते थे, और इस तरह अपने को बचाकर आचार्य पर वार करने का मौक़ा ढूँढ़ रहे थे। उनकी यह फुर्ती और हिम्मत देखकर सब सैनिक बड़ाई करने लगे। युग-मध्य में और घोड़ों की पीठ पर विचर रहे धृष्टद्युम्न पर वार करने का मौक़ा आचार्य को भी नहीं मिलता था। यह भी एक अद्भुत बात ३० देख पड़ी। जैसे मांस के लिए दो गिद्ध घोर युद्ध करें वैसे ही फुर्ती के साथ द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न दोनों ही वार करने का अवसर देख रहे थे।

अब महारथी आचार्य ने कुपित होकर अपने लाल घोड़ों को बचाकर धृष्टद्युम्न के चितकबरे घोड़ों को, एक-एक करके, शक्ति के प्रहार से मार डाला। इस तरह धृष्टद्युम्न के घोड़े मरकर जब गिर पड़े तब द्रोणाचार्य के घोड़े रथ के फँसाव से छूट गये। महारथी धृष्टद्युम्न

द्रोण के प्रहार से अपने घोड़ों का मरना किसी तरह न सह सके। महारथी धृष्टद्युम्न रथ-हीन होने पर कुपित हो खड्ग लेकर, साँप पर गरुड़ की तरह, आचार्य पर प्रहार करने के इरादे से झपटे। द्रोण को मारने के लिए उद्यत धृष्टद्युम्न का रूप उस समय वैसा ही देख पड़ा जैसा कि हिरण्यकशिपु राक्षस को मारने के लिए प्रकट हुए नृसिंहावतार विष्णु का भयानक रूप था। हे भरतकुल-श्रेष्ठ! उस समय ढाल-तलवार हाथों में लिये हुए वीर धृष्टद्युम्न भ्रान्त, उद्भ्रान्त, आविद्ध, आप्लुत, प्रसृत, सृत, परिवृत्त, निवृत्त, सम्पात, समुदीर्ण, भारत, कौशिक, सात्वत आदि इक्कोस तरह के पैंतरे दिखाकर अपने खड्ग-युद्ध के अभ्यास और शिक्षा का परिचय देने लगे। ढाल-तलवार लेकर इस तरह पैंतरे बदल रहे धृष्टद्युम्न के युद्ध-कौशल को देखकर सब योद्धा और देवगण बहुत ही विस्मित हुए। इसी समय द्रोणाचार्य ने हज़ारों बाण मारकर धृष्टद्युम्न के हाथ की ढाल और शतचन्द्र खड्ग के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। आचार्य ने उस समय निकट के युद्ध में जिन बाणों का प्रयोग किया, वे वैतस्तिक (बित्ते भर के) थे। निकट के युद्ध में वे ही बाण काम में आ सकते हैं। वैसे बाण द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, अर्जुन, कर्ण, प्रद्युम्न, सात्यकि और अभिमन्यु के सिवा अन्य योद्धाओं के पास नहीं थे। ४१

महाराज! आचार्य ने क्रुद्ध होकर पुत्र-तुल्य शिष्य धृष्टद्युम्न को मार डालने के लिए एक विकट बाण धनुष पर चढ़ाकर छोड़ा। यह देखकर यादव-श्रेष्ठ सात्यकि ने दूर से ही दस बाण चलाकर उसे काट डाला और इस तरह आपके पुत्र दुर्योधन, कर्ण आदि के सामने ही आचार्य के वश में आ गये धृष्टद्युम्न को उन्होंने बचा लिया। सात्यकि को द्रोण, कर्ण तथा कृपाचार्य के बीच में विचरते और रथ की विविध विचित्र गतियाँ दिखाते देखकर श्रीकृष्ण और अर्जुन बहुत प्रसन्न हुए और सात्यकि को युद्ध में अस्त्र-बल से दिव्य अस्त्रों को व्यर्थ करते देखकर साधुवाद देने लगे। अर्जुन ने कृष्णचन्द्र से कहा—हे केशव! देखो, आचार्य और अन्य श्रेष्ठ महारथियों के बीच निर्भय भाव से क्रीड़ा सी कर रहे और अपनी श्रेष्ठ अस्त्र-शिक्षा का परिचय दे रहे शत्रु-दल-दलन सात्यकि मुझे, भीमसेन को, महाराज युधिष्ठिर को और नकुल-सहदेव को बहुत ही आनन्दित और सन्तुष्ट कर रहे हैं। सब युद्ध देखनेवाले सिद्धगण और सैनिकगण समर में शत्रुओं से न जीते जा सकनेवाले और यादवों की कीर्त्ति को बढ़ानेवाले सात्यकि के निर्भय भाव, रणकौशल, शिक्षा और अभ्यास को देखकर वाह-वाह कर रहे हैं। हे कुरुकुल-श्रेष्ठ महाराज धृतराष्ट्र! दोनों दलों के योद्धा लोग सात्यकि के अद्भुत कर्मों को देखकर उनकी प्रशंसा करने लगे। ५० ५३

एक सौ बानवे अध्याय

द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्न का युद्ध। योग-बल से आचार्य का शरीर त्यागना और धृष्टद्युम्न का आकर मृत आचार्य का सिर काट डालना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! तब दुर्योधन आदि महारथी सात्यकि के वैसे अद्भुत कार्य को देखकर क्रोधान्ध हो उन्हें यत्नपूर्वक जीतने और मारने की चेष्टा करने लगे। कृपाचार्य, कर्ण और आपके पुत्रगण युद्ध में उपस्थित होकर सात्यकि को अत्यन्त तीक्ष्ण बाण मारने लगे। उस समय राजा युधिष्ठिर, महाबली भीमसेन, नकुल और सहदेव ने सात्यकि को अपने बीच में कर लिया। उधर से महारथी कर्ण, कृपाचार्य और दुर्योधन आदि वीरगण चारों ओर से आक्रमण करके उनके ऊपर असंख्य तीक्ष्ण बाण बरसाने लगे। महारथी सात्यकि उस समय उन सब महारथियों से युद्ध करने लगे। महाराज! सात्यकि ने उनकी भयानक बाण-वर्षा को बाण-वर्षा से और दिव्य अस्त्रों को दिव्य अस्त्रों से व्यर्थ कर दिया। पूर्व समय में पशु-विनाश कर रहे पशुपति रुद्र के समान वीरवर सात्यकि जब राजमण्डली से क्रूरता-पूर्ण युद्ध करने लगे तब युद्धभूमि का रूप बहुत ही भयानक हो उठा। रणभूमि में जहाँ-तहाँ कटे हुए सिरों, हाथों, धनुषों, छत्रों और चामरों के ढेर पड़े हुए दिखाई देने लगे। जिनके पहिये टूट गये हैं ऐसे रथों, गिरी हुई बड़ी-बड़ी ध्वजाओं और मारे गये शूर घुड़सवारों से युद्धभूमि भयानक और अगम्य हो उठी। बाणों की चोट से जिनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग कट गये हैं ऐसे योद्धा लोग पृथ्वी पर गिरकर तरह-तरह से तड़पते और कराहते थे।

११ इस तरह देवासुर-संग्राम के समान भयानक युद्ध छिड़ जाने पर धर्मराज युधिष्ठिर ने वीर क्षत्रियों से कहा—हे वीरो! तुम लोग पूरे वेग से जाकर द्रोणाचार्य पर आक्रमण और उन्हें मारने की पूरी चेष्टा करो। ये वीर धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य से लड़ रहे हैं और यथाशक्ति उन्हें मारने की चेष्टा कर रहे हैं। इस समय धृष्टद्युम्न के रूप और चेष्टा को देखकर जान पड़ता है कि आज वे क्रुद्ध होकर रण में अवश्य द्रोणाचार्य को मार डालेंगे। इसलिए तुम लोग मिलकर द्रोणाचार्य से दारुण युद्ध करो।

राजा युधिष्ठिर की आज्ञा पाकर पाञ्चाल-सृञ्जय-सेना के महारथी लोग द्रोणाचार्य को मारने के लिए चल पड़े। महारथी द्रोण भी मरने का दृढ़ निश्चय करके उन सब महारथियों के सामने पहुँचे। महाराज! सत्यसन्ध आचार्य जब कोप करके आक्रमण करने चले तब धरती काँप उठी, सैनिकों के अन्तःकरण में भय उत्पन्न करती हुई प्रबल आँधी चलने लगी। सूर्यमण्डल से एक भारी उल्का-पिण्ड निकलकर दोनों सेनाओं को प्रकाशित करता और महा-भय की सूचना देता हुआ बड़े वेग से पृथ्वी पर गिरा। आचार्य के सब अस्त्र प्रज्वलित हो उठे।

रथ से भयानक शब्द निकलने लगा और घोड़ों की आँखों से आँसू बहने लगे। महारथी द्रोणाचार्य का ओज-बल और पराक्रम नष्ट सा हो गया। उनकी बाईं आँख और बाईं भुजा फड़कने लगी। वे धृष्टद्युम्न को आगे खड़े देखकर उदास हो गये। ब्रह्मवादी ऋषियों के पूर्वोक्त वचन स्मरण करके उन्होंने धर्मयुद्ध से प्राण-त्याग करने की इच्छा की। उस समय पाञ्चाल-सेना में घुसकर क्षत्रियों को बाणों की आग से भस्म करते हुए वे समर-भूमि में चारों ओर विचरने लगे। आचार्य द्रोण ने तीक्ष्ण बाण बरसाकर पहले बीस हज़ार क्षत्रियों को मारकर एक लाख हाथियों को तीक्ष्ण बाणों से मार गिराया। क्षत्रियों के संहार के लिए ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करके वे समरभूमि में बिना धुएँ की आग के समान प्रज्वलित हो उठे। २०

तब महावीर भीमसेन ने घबराये हुए धृष्टद्युम्न के पास रथ [और कोई शस्त्र] न देखकर पास जाकर उन्हें अपने रथ पर बिठा लिया। द्रोणाचार्य पास ही थे और बाणों की वर्षा कर रहे थे। यह देखकर भीमसेन ने कहा—हे पाञ्चाल-राजकुमार! इस समय तुम्हारे सिवा और कोई द्रोणाचार्य से युद्ध नहीं कर सकता। तुम्हारे ऊपर ही आचार्य को मारने का भार है। इसलिए तुम आचार्य को मारने के लिए जल्दी करो।

यह सुनकर धृष्टद्युम्न ने भीमसेन के पास से एक उत्तम बोझ सहनेवाला दृढ़ धनुष लेकर रण में न जीते जा सकनेवाले आचार्य को मारने के लिए उन पर बाणों की वर्षा करना शुरू कर दिया। रण में शोभायमान क्रुद्ध दोनों वीर परस्पर विजय की इच्छा से ब्रह्मास्त्र आदि अनेक दिव्य अस्त्रों का प्रयोग करने लगे। महारथी धृष्टद्युम्न ने आचार्य के सब दिव्य अस्त्र व्यर्थ कर दिये और उन्हें अपने श्रेष्ठ अस्त्रों से पीड़ित करना शुरू किया। धृष्टद्युम्न ने द्रोण की रक्षा करने में तत्पर शिवि, वसाति, बाह्लीक और कौरव आदि वीरों को मार-मारकर भगा दिया। किरणों को फैला रहे सूर्य की जैसी शोभा होती है, वैसी ही शोभा उस समय धृष्टद्युम्न की हुई; क्योंकि वे भी चारों ओर चमकीले तीक्ष्ण बाण बरसा रहे थे। इसके बाद महाधनुर्द्धर आचार्य ने बाणों से धृष्टद्युम्न का धनुष काट डाला; और उनके छाती आदि मर्मस्थलों में करारी चोट पहुँचाई। बाणों की कड़ी चोट से धृष्टद्युम्न व्यथित हो उठे। ३०

तब क्रोध से विह्वल भीमसेन ने द्रोणाचार्य का रथ पकड़कर धीरे से द्रोणाचार्य से कहा—ब्रह्मन्! अगर अपने ब्राह्मणोचित कर्मों से सन्तुष्ट न होकर अस्त्रशिक्षा प्राप्त करनेवाले, और इसी लिए अधम, ब्राह्मणगण युद्ध न करें तो क्षत्रियों का क्षय कभी न हो। पण्डितों ने अहिंसा को ही सबसे श्रेष्ठ धर्म कहा है। उस अहिंसाधर्म की जड़ ब्राह्मण ही हैं। आप ब्रह्मज्ञ ब्राह्मणों में श्रेष्ठ होकर भी उस धर्म का पालन न करके चण्डाल की तरह म्लेच्छों और अन्य क्षत्रियों की हत्या कर रहे हैं। आपने अज्ञानवश पुत्र-स्त्री आदि के भरण-पोषण के लिए, धन की आकांक्षा से, दुर्योधन का पक्ष लेकर अनुचित काम किया है। एक पुत्र के लिए बहुत लोगों को मारकर भी

आपको लज्जा क्यों नहीं आती? जो क्षत्रिय लोग अपने धर्म का पालन कर रहे हैं
४० उन्हें आपने, अपने धर्म के प्रतिकूल, अधर्म युद्ध करके मारा है। आप जिस पुत्र के लिए अब तक शस्त्र धारण करके जी रहे हैं, वह अश्वत्थामा पीछे की ओर मरे पड़े हैं। आपको ख़बर ही नहीं! धर्मराज युधिष्ठिर ने भी [पूछने पर] कह दिया है कि अश्वत्थामा मारा गया। इतने पर भी क्या आपको सन्देह बना है?

हे भरतश्रेष्ठ! भीमसेन के यों कहने पर आचार्य ने धनुष रख दिया और सब अस्त्र-शस्त्रों का त्याग करते हुए वे कहने लगे—हे महाधनुर्द्धर कर्ण! हे कृपाचार्य! हे दुर्योधन! मैं बार-बार कहता हूँ कि मन लगाकर संग्राम करो। पाण्डवों से तुम्हारा कल्याण हो। मैं अब हथियार रखता हूँ।

राजन्! महात्मा द्रोणाचार्य इतना कहकर ज़ोर से अश्वत्थामा को पुकारने लगे। रणभूमि में हथियार छोड़कर, रथ के आसन पर बैठकर, परमात्मा से आत्मा का योग करके, समाधिस्थ हो आचार्य ने सब प्राणियों को अभय कर दिया। इसी समय वीर धृष्टद्युम्न मौक़ा पाकर, वह भयानक धनुष और बाण रथ पर रखकर, तलवार हाथ में लेकर द्रोणाचार्य की ओर दौड़े। द्रोणाचार्य को इस तरह धृष्टद्युम्न के हस्तगत देखकर समरभूमि में मनुष्य और देवगण आदि हाहाकार, धिक्कार शब्द और घोर कोलाहल करने लगे। इधर ज्योतिःस्वरूप महातपस्वी द्रोणाचार्य अस्त्र-शस्त्र त्यागकर, शान्त भाव धारण कर, योगस्थ होकर, अनादिपुरुष विष्णु भगवान् का ध्यान
५० करने लगे। वे पद्मासन से बैठे थे; मुख कुछ ऊँचा, वक्षःस्थल सीधा और नेत्र बन्द थे। सब विषय-वासना-ममता-मोह छोड़कर, सात्विक भाव धारण कर, एकाक्षर वेदमन्त्र प्रणव (ओंकार) का उच्चारण और परमपुरुष देवाधिदेव का स्मरण करते हुए द्रोणाचार्य ने शरीर-त्याग कर दिया और वे सुकृती सज्जनों के लिए भी दुर्लभ स्वर्गलोक को चल दिये। उस समय आकाश में उनके ज्योतिर्मय स्वरूप का ऐसा तेज फैल गया कि हमें जान पड़ा मानों जगत् में दो सूर्य निकल आये हैं। आकाश-मण्डल तेजोराशि से परिपूर्ण हो गया, ऐसा जान पड़ा कि आकाश भर में ज्योति फैली हुई है। आचार्य की मृत्यु होने पर उल्का के समान आकाश में तेजोराशि दिखाई पड़ी और वह ज्योति पल भर में ही अन्तर्द्धान हो गई। उस समय द्रोणाचार्य को ब्रह्मलोक जाते देखकर प्रसन्न हो रहे देवगण किलकारियाँ मारने लगे। धृष्टद्युम्न भी ऐसे मोहित हो गये [कि जीवित अवस्था में द्रोणाचार्य के शरीर को नहीं छू सके]।

महाराज! उस समय मनुष्यों में केवल मैं, अर्जुन, अश्वत्थामा*, श्रीकृष्ण और महाराज युधिष्ठिर, ये पाँच पुरुष ही योगस्थ महात्मा आचार्य का परलोक-गमन देख सके। और कोई भी

* कुछ प्रतियों में अश्वत्थामा के स्थान पर कृपाचार्य का नाम है जो कि ठीक जान पड़ता है; क्योंकि अगले अध्याय में अश्वत्थामा ने कौरवों की सेना में भगदड़ मचने का कारण पूछा है।

क्रोध और आमर्ष के वश में हो रहे धृष्टद्युम्न ने खड्ग खींच कर रथ पर जाकर द्रोणाचार्य के केश पकड़ लिये और सबके सामने ही उस मृत शरीर से सिर काट लिया।—पृष्ठ २६६३

महात्मा द्रोण के योग-बल की महिमा नहीं देख सका। द्रोणाचार्य उस दिव्य ब्रह्मलोक में गये जिसे परम गति कहते हैं। आचार्य के शरीर के सब अङ्ग बाणों से कट-फट गये थे, रक्त बह रहा था; शस्त्र-त्याग तो वे कर ही चुके थे। क्रोध और अमर्ष के वश में हो रहे धृष्ट- ६१ द्युम्न ने खड्ग खींचकर रथ पर जाकर द्रोणाचार्य के केश पकड़ लिये और सबके सामने ही उस मृत शरीर से सिर काट लिया। वे तो मर ही चुके थे, इससे कुछ बोले भी नहीं। धृष्टद्युम्न ने जीवित समझकर मृत आचार्य का सिर काट डाला। वे आनन्द के मारे तलवार घुमाते हुए घोर सिंहनाद करने लगे। उस समय सब दर्शक धृष्टद्युम्न को धिक्कार देने लगे। राजन्! केवल आपकी कुमन्त्रणा के कारण यह घटना हुई। कानों तक जिनके बाल पक गये थे उन साँवले, चार सौ वर्ष के बूढ़े, द्रोणाचार्य ने आपके लिए ही निर्भय भाव से सोलह वर्ष के नौजवान की तरह रणभूमि में विचरकर युद्ध किया और पराक्रम दिखाकर सबको चकित कर दिया।

महाराज! जब धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य को मारने के लिए दौड़े तब अर्जुन ने चिल्लाकर कहा—हे द्रुपदनन्दन! आचार्य को मत मारना, उन्हें जीता ही ले आना। सब राजा लोग, सैनिक और अर्जुन चिल्लाते ही रहे कि "आचार्य को न मारना, न मारना", लेकिन धृष्टद्युम्न ने किसी का कहा नहीं सुना और रथ पर जाकर आचार्य का सिर काट ही डाला। रुधिर से भीगे हुए आचार्य के शरीर को धृष्टद्युम्न ने रथ से नीचे गिरा दिया। उस समय आचार्य के रक्त से नहाये हुए धृष्टद्युम्न का शरीर लाल सूर्य के समान हो गया। उनका रूप बहुत ही भयानक देख पड़ा। वे बहुत ही दुर्द्धर्ष जान पड़े। सब सैनिकों और राजाओं ने इस तरह आचार्य की मृत्यु देखी। धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य का कटा हुआ सिर हाथ में लेकर आपके दल के योद्धाओं के सामने फेंक दिया। आपके योद्धा और सैनिकगण द्रोणाचार्य का कटा हुआ ७० सिर देखकर ऐसे डर गये कि दसों दिशाओं में भागने लगे। उधर द्रोणाचार्य स्वर्गलोक में, नक्षत्र-मार्ग होकर, चले गये। सत्यवती के पुत्र व्यासदेव की कृपा से मैंने द्रोणाचार्य का परलोक-गमन देख लिया। मैंने देखा कि बिना धुएँ की उल्का सी स्वर्गलोक को जा रही है। वही महातेजस्वी महात्मा द्रोणाचार्य थे।

द्रोणाचार्य की मृत्यु होने पर निरुत्साह होकर कौरव, पाण्डव, सृञ्जयगण, सभी महावेग से भाग खड़े हुए। उनके साथ सब सेना भी भाग खड़ी हुई। चारों ओर विश्रृङ्खला छा गई। संग्राम में तीक्ष्ण बाणों से घायल आपके पक्ष के लोग, जिनकी सेना का भी अधिक भाग नष्ट हो चुका था, द्रोणाचार्य के निहत होने पर मुर्दे के समान हो गये। यहाँ आज पराजय हुई, और अधर्म-अन्याय करने के कारण परलोक में भी नरक का महाभय आँखों के आगे नाचने लगा। इस तरह इस लोक और परलोक दोनों के नष्ट होने पर आपके दल के लोग अपनी बुद्धि की निन्दा करने लगे। राजा लोग उस असंख्य कबन्धों से परिपूर्ण रण के मैदान में आचार्य के

धड़ को बारम्बार खोजने लगे, पर कहीं उसका पता नहीं लगा। इधर पाण्डवगण जय पाकर, आगे चलकर पूर्ण विजय और कीर्ति पाने की सम्भावना से, अत्यन्त आनन्दित हो उठे। वे धनुष-बाण बजाने, शङ्खनाद और सिंहनाद करने लगे। उस समय भीमसेन ने सब सैनिकों के बीच धृष्टद्युम्न को गले से लगाकर कहा—हे द्रुपद-नन्दन! दुरात्मा सूत-पुत्र कर्ण और दुष्ट दुर्योधन के मरने पर मैं फिर इसी तरह समर में विजय प्राप्त करनेवाले तुमको गले से लगाऊँगा और आनन्दपूर्वक तुम्हारा अभिनन्दन करूँगा। यों कहकर भीमसेन ताल ठोककर पृथ्वी को कम्पायमान करने लगे। उधर कौरव दल के सब सैनिक उस शब्द से डरकर, विह्वल होकर, क्षत्रिय-धर्म का ख़याल न करके भाग खड़े हुए। पाण्डव लोग भी विजय पाकर आनन्दपूर्वक शत्रु-विनाश के सुख का अनुभव करने लगे। ८४

नारायणास्त्र-मोक्षपर्व

एक सौ तिरानबे अध्याय

अश्वत्थामा को कृपाचार्य से पिता के मरने की ख़बर मिलना और उनका कुपित होना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! श्रेष्ठ-श्रेष्ठ वीरों के साथ ही द्रोणाचार्य के भी मारे जाने पर शत्रुओं के शस्त्रों से पीड़ित, शोक से व्याकुल, विध्वंस को प्राप्त कौरवगण बहुत ही डर गये। शत्रुओं को विजय पाकर उत्साहित और हर्षयुक्त देखकर आँखों में आँसू भरे हुए कौरवगण उत्साहहीन, शिथिल और अचेत से हो गये। सङ्कट और मोह के कारण उनका तेज और पराक्रम भी नष्ट हो गया। पहले समय में दानवश्रेष्ठ हिरण्याक्ष के मारे जाने पर दैत्य जैसे दुःखित हो उठे थे वैसे

कबन्धों से परिपूर्ण रण के मैदान में आचार्य के धड़ को बारम्बार खोजने लगे, पर कहीं उसका पता नहीं लगा। पृष्ठ—२६६४
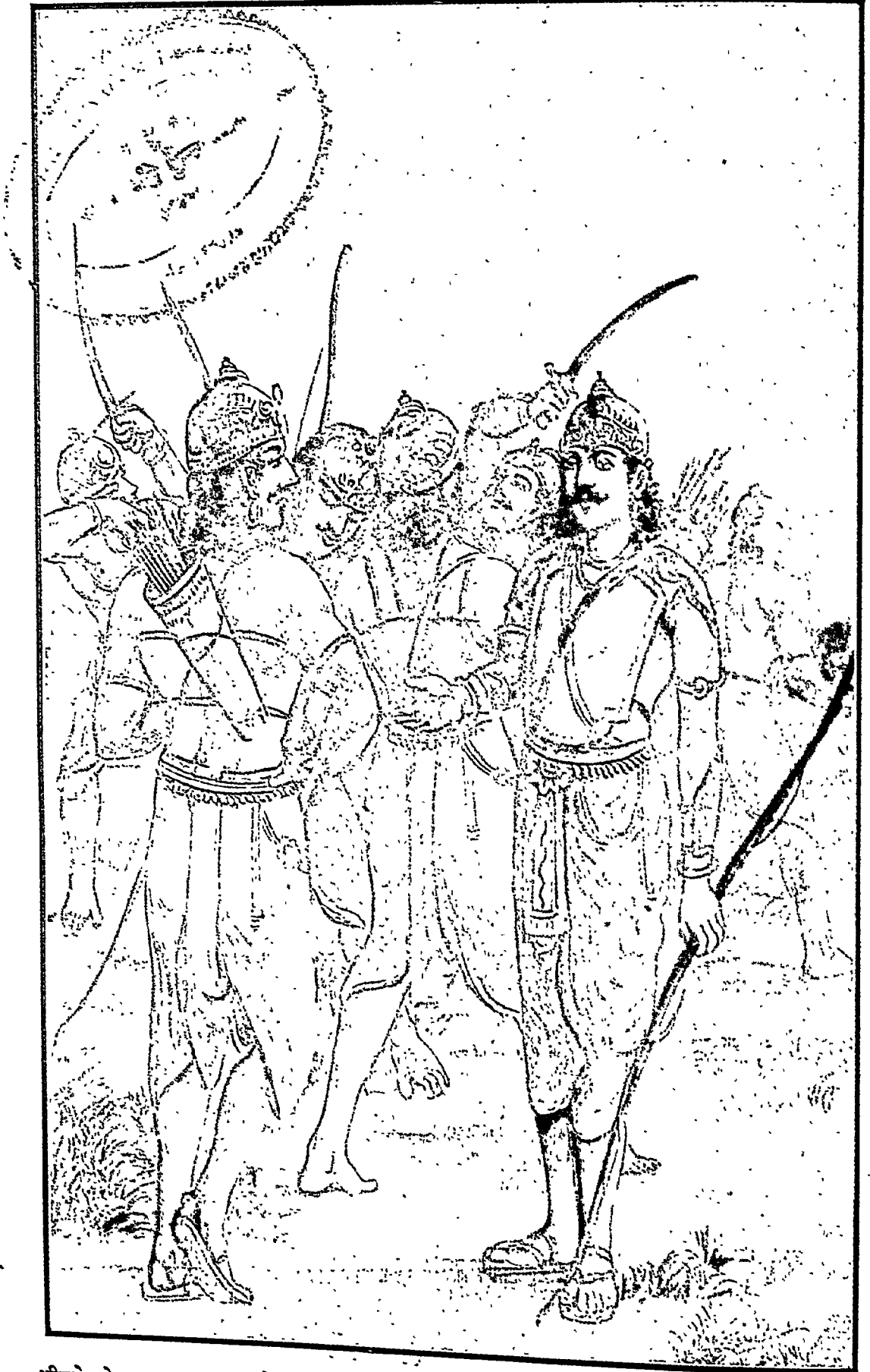
भीमसेन ने कहा—राजन् ! मैंने..................अश्वत्थामा नाम के हाथी को गदा के प्रहार से मार डाला और फिर द्रोणाचार्य से जाकर कहा—ब्रह्मन्, अश्वत्थामा मारे गये, अब युद्ध करना छोड़ो। पृष्ठ—२६५६

ही सब कौरव उस समय खिन्न, त्रस्त और अस्त-व्यस्त होकर शून्य दृष्टि से चारों ओर देखने लगे। आँखों में आँसू भरे हुए दीन कौरव दुर्योधन के चारों ओर जाकर जमा हो गये। डरे हुए क्षुद्र मृगों के समान घबराये हुए उन कौरवों को देखकर राजा दुर्योधन रणभूमि में नहीं ठहर सके। वे रण छोड़कर उन सबके साथ शिविर की ओर भाग खड़े हुए। भूख-प्यास से पीड़ित और सूर्य के प्रचण्ड तेज से मुरझाये हुए आपके योद्धा लोग अत्यन्त उदास हो उठे। सूर्य का पृथ्वी पर गिर पड़ना, समुद्र का सूख जाना, सुमेरु का पूर्व से पश्चिम में चला जाना और इन्द्र का हार जाना जैसा असम्भव है वैसा ही युद्ध में द्रोणाचार्य का मारा जाना समझा जाता था। इस समय उसी असम्भव बात को सम्भव होते, प्रत्यक्ष द्रोणाचार्य का वध होते, देखकर डरे हुए कौरव भाग खड़े हुए। द्रोण की मृत्यु का समाचार सुनते ही भयभीत गान्धारराज शकुनि अत्यन्त भय-विह्वल अपने योद्धाओं के साथ भाग खड़े हुए। कर्ण भी वेग से भागती हुई अपनी विशाल सेना को लेकर डर के मारे रणभूमि से चल दिये। मद्रराज शल्य अपनी विशाल चतुरङ्गिणी सेना १० के साथ डर के मारे घूम-घूमकर पीछे देखते हुए भागे। कृपाचार्य भी "हाय, कैसे कष्ट की बात है! हाय, कैसे कष्ट की बात है!" कहते हुए भाग खड़े हुए। उनके साथ ध्वजा-पताका से शोभित सेना थी, जिसके बहुत से श्रेष्ठ वीर योद्धा मारे जा चुके थे। कृतवर्मा वेगगामी घोड़ों को तेज़ी से हाँकते हुए भागे। उनके साथ नष्ट होने से बची हुई कलिङ्ग, अरट्ट, वाह्लीक और भोजवंशी यादवों की सेना भी भाग खड़ी हुई। वीर उलूक भी द्रोण का वध देखकर डर के मारे बहुत सी पैदल सेना के साथ वेग से भाग खड़े हुए। महावीर, दर्शनीय, युवा दुःशासन भी घबरा-कर गज-सेना के साथ भागे। कर्ण के पुत्र वृषसेन ने जब द्रोण की मृत्यु देखी तब वे दस हज़ार रथ और तीन हज़ार हाथी लेकर रणभूमि से भागे। महाराज! हाथी, घोड़े, रथ, पैदल आदि के साथ आपके पुत्र राजा दुर्योधन को भी उस समय डर के मारे भागना ही सूझ पड़ा। संशप्तक सेना के स्वामी त्रिगर्तनरेश सुशर्मा अर्जुन के मारने से बची हुई सेना लेकर भाग खड़े हुए।

राजन्! द्रोणाचार्य को निहत देखकर सब ओर भगदड़ पड़ गई। लोग तेज़ी से हाथियों, रथों और घोड़ों को हाँकते हुए और कुछ लोग जल्दी के मारे घोड़े आदि वाहनों को छोड़कर पैदल ही भागने लगे। कौरव-सेना में पिता, भाई, मामा, पुत्र, मित्र, भानजे और अन्य सम्ब-न्धियों तथा सैनिकों को भागने के लिए पुकारते हुए सब लोग भागने लगे। उनके बाल खुले २१ हुए थे, कपड़े और गहने उलटे-पलटे हो रहे थे, तेज और उत्साह का नाम नहीं रह गया था। वे यहाँ तक घबराये हुए थे कि एक दूसरे की अपेक्षा नहीं करता था। उन्हें निश्चय सा हो गया था कि अब यह कौरव-सेना बच नहीं सकती। हे भरतश्रेष्ठ! आपके पक्ष के लोग ऐसे घबरा गये थे कि कवच फेंककर भागे और कोई-कोई आपस में एक दूसरे को पुकारते और भागने के लिए कहते जाते थे। कुछ योद्धा दूसरों से ठहरने के लिए कहते जाते थे, लेकिन

आप नहीं ठहरते थे। कुछ लोगों ने सारथी-हीन रथ के आगे से घोड़े खोल लिये और वे उनकी पीठ पर बैठकर, उन्हें एँड़ लगाकर, हाँकते हुए भागे।

इस तरह सारी सेना उत्साह और ओज से हीन तथा भय से विह्वल होकर भाग रही थी; लेकिन प्रतापी अश्वत्थामा शत्रुओं पर आक्रमण करने के लिए उन्हीं की ओर चले, जैसे कोई बड़ा ग्राह जल-प्रवाह के प्रतिकूल जा रहा हो। वीर अश्वत्थामा ने शिखण्डी के साथ की—प्रभद्रक, पाञ्चाल, चेदि, केकय आदि वीरों की—सेना से लड़कर उन सबको मारा था। मस्त हाथी के समान पराक्रमी अश्वत्थामा ने पाण्डव पक्ष की सेना के अनेक दलों का संहार करके किसी तरह अपने को सङ्कट से छुड़ाया। [उक्त सेनादल के बीच में फँसे रहने के कारण अश्वत्थामा को अपने पिता की मृत्यु का समाचार नहीं मालूम हो सका था।] वे जब शत्रु-सेना का संहार करके लौटे तब उन्हें देख पड़ा कि कौरवों की सेना के पैर उखड़ गये हैं—जिसे देखो वही भागा जा रहा है। तब आश्चर्य के साथ दुर्योधन के पास पहुँचकर अश्वत्थामा ने पूछा—राजन्! यह क्या बात है? आपकी सेना इस तरह घबराई हुई सी क्यों भाग रही है? हे राजेन्द्र! आप इन सबको धैर्य देकर रोकते क्यों नहीं? आप भी मुझे पहले की तरह सावधान नहीं देख पड़ते; घबराये हुए और शोक पीड़ित से प्रतीत होते हैं। कर्ण आदि ये श्रेष्ठ
१० महारथी योद्धा भी रण छोड़कर भागते दिखाई पड़ रहे हैं। इसका क्या कारण है? और भी अनेक बार महाभयानक युद्ध हुए हैं, किन्तु उनमें आपकी सेना इस तरह जी छोड़कर नहीं भागी। हे महाबाहु! शीघ्र बताइए आपकी सेना की कुशल तो है? हे कौरव! किस वीर की मृत्यु होने से आपकी, और सेना की, यह दशा हो गई है?

अश्वत्थामा का प्रश्न सुनकर राजा दुर्योधन वह घोर अप्रिय समाचार उनसे न कह सके। शोक के महासागर में टूटी नाव के समान डूब रहे, आँखों में आँसू भरे हुए आपके पुत्र ने अश्वत्थामा को सामने देखकर लज्जा के साथ कृपाचार्य से कहा—ब्रह्मन्! आपका भला हो। आप ही इस सेना के भागने का कारण गुरु-पुत्र से कहिए। तब बारम्बार घोर कष्ट का अनुभव करते हुए महात्मा कृपाचार्य ने अश्वत्थामा के आगे आर्त स्वर से द्रोणाचार्य के मारे जाने का सब वृत्तान्त इस तरह कहा—हे आचार्य के पुत्र! हम लोग अद्वितीय महारथी द्रोणाचार्य को आगे करके केवल पाञ्चालों के साथ घोर युद्ध कर रहे थे। उस समय कौरव और पाञ्चालगण परस्पर भिड़कर गरजने और शस्त्र प्रहार करके मरने और मारने लगे। इस तरह युद्ध हो रहा था और दोनों पक्ष के योद्धा युद्ध में मर रहे थे। तुम्हारे पिता ने युद्ध में कौरव दल को विशेष रूप से नष्ट होते देखकर, क्रुद्ध होकर, ब्रह्मास्त्र प्रकट किया। उन्होंने
४० भल्ल बाणों से सैकड़ों-हज़ारों शत्रुओं को मारना शुरू कर दिया। पाण्डव दल के केकय, मत्स्य, चेदि आदि देशों के वीर, ख़ासकर पाञ्चाल लोग, युद्ध में काल के वश होकर द्रोणाचार्य के रथ

के पास पहुँचकर विनष्ट होने लगे। आचार्य ने ब्रह्मास्त्र के द्वारा एक हज़ार श्रेष्ठ योद्धाओं और दो हज़ार हाथियों को दम भर में मार डाला। कानों तक जिनके बाल पक गये थे ऐसे साँवले, चार सौ वर्ष के बूढ़े, आचार्य युद्ध में सोलह वर्ष के युवा पुरुष के समान पराक्रम प्रकट करते हुए विचर रहे थे। इस तरह जब सब सेना पीड़ित हुई और राजा लोग मरने लगे, तब अत्यन्त क्रुद्ध होने पर भी कुछ पाञ्चालगण समर से भाग गये। उस समय शत्रु-विजयी आचार्य दिव्य अस्त्र का प्रयोग करके उदय हुए सूर्य के समान शोभायमान हुए। पाण्डव-सेना के बीच तुम्हारे पिता प्रतापी आचार्य दोपहर के सूर्य के समान दुर्निरीक्ष्य हो उठे। बाण ही उनकी किरणें जान पड़ती थीं। सूर्य के समान विराजमान आचार्य के पराक्रम और तेज से पाञ्चालों का पराक्रम भस्म सा हो गया। वे उत्साहहीन और अचेत से हो उठे।

पाण्डवों को जय दिलाने के लिए यत्न करनेवाले श्रीकृष्ण ने द्रोण के बाणों से पाञ्चालों को पीड़ित देखकर कहा—अनेक महारथियों की रक्षा करने में समर्थ, शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ इन आचार्य-श्रेष्ठ को युद्ध में, मनुष्यों की कौन कहे, साक्षात् इन्द्र भी नहीं जीत सकते। इसलिए हे पाण्डवो! धर्म का ख़याल छोड़कर विजय प्राप्त करने की चेष्टा करो। वह उपाय करो, जिसमें आचार्य तुम्हारी सारी सेना को न मार डालें। मेरा ख़याल है कि अश्वत्थामा के मरने पर ये फिर युद्ध नहीं करेंगे। इसलिए कोई जाकर झूठ ही इनसे कह दे कि युद्ध में अश्वत्थामा की मृत्यु हो गई। हे आचार्य-नन्दन! अर्जुन को यह सलाह नहीं पसन्द आई। और सब लोग इस पर राज़ी हो गये। युधिष्ठिर भी बड़ी मुश्किल से अन्त को राज़ी हुए। तब भीमसेन ने तुम्हारे पिता के पास जाकर कुछ झेंप के साथ कहा कि युद्ध में अश्वत्थामा की मृत्यु हो गई; पर तुम्हारे पिता को विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने भीम की बात के मिथ्या होने का सन्देह करके युधिष्ठिर से पूछा कि अश्वत्थामा की मृत्यु हुई या नहीं। मिथ्या बोलने के पाप का भय होने पर भी जय के लोभ में पड़कर उन्होंने मिथ्या वाक्य का प्रयोग कर दिया। बात यह थी कि मालव- ५०

नरेश इन्द्रवर्मा के हाथी का नाम भी अश्वत्थामा था। वह हाथी पाण्डव-सेना में घुसकर उस सेना का संहार कर रहा था। भीमसेन ने गदा के प्रहार से उसी हाथी को मार डाला था। इसी बात को लक्ष्य करके युधिष्ठिर ने आचार्य के पास जाकर ऊँचे स्वर से कहा—हे आचार्य! जिनके लिए तुम शस्त्र को लेकर लड़ रहे हो, जिन्हें देखकर जीते हो, वह तुम्हारे पुत्र अश्वत्थामा मारकर पृथ्वी पर गिरा दिये गये हैं, जैसे वन में कोई सिंह का बच्चा मरा पड़ा हो। हे अश्वत्थामा! झूठ बोलने के पाप और दोष को जानकर भी युधिष्ठिर ने यों स्पष्ट रूप से मिथ्या वाक्य कहे। साथ ही अस्पष्ट स्वर से अश्वत्थामा शब्द के साथ 'हाथी' शब्द का प्रयोग भी उन्होंने कर दिया। तब तुम्हारे पुत्र-वत्सल पिता शोक से व्याकुल और शिथिल हो गये। उन्होंने दिव्य अस्त्रों का प्रयोग बन्द कर ६० दिया। पहले की तरह घोर युद्ध करना छोड़कर जब वे ढीले पड़ गये तब क्रूर कर्म करनेवाला नीच धृष्टद्युम्न उनको उद्विग्न, शोक-विह्वल, अचेत पाकर मारने के लिए दौड़ा। संसार की गति को अच्छी तरह जाननेवाले, अर्थात् एक दिन सबको मरना है यह ज्ञान रखनेवाले, आचार्य ने यह सोचकर कि धृष्टद्युम्न के हाथ से ही उनकी मृत्यु होनी है, सब दिव्य अस्त्र-शस्त्र त्यागकर रणभूमि में रथ के ऊपर ही प्रायोपवेशन कर दिया। [वे संसार से मन हटाकर, ईश्वर में चित्त लगाकर, योगासन से आँखें मूँदकर बैठ गये।] इसी अवसर में धृष्टद्युम्न ने पास जाकर बायें हाथ से उनके केश पकड़ लिये और तलवार के वार से धड़ से सिर काट लिया; सब वीर चिल्लाते ही रहे कि आचार्य को मारना नहीं, मारना नहीं; पर धृष्टद्युम्न ने किसी की बात नहीं सुनी। धर्मज्ञ अर्जुन भी रथ से उतरकर हाथ उठाकर बारम्बार यह कहते हुए दौड़े कि आचार्य को जीते ही ले आओ, मारना नहीं। इस तरह सब कौरवों ने और अर्जुन ने लाख रोका और मना किया; किन्तु नृशंस धृष्टद्युम्न ने तुम्हारे पिता को मार ही डाला। हे निष्पाप! इस तरह तुम्हारे पिता की मृत्यु होने पर सब सैनिक डर के मारे भाग खड़े हुए और हम लोग भी निरुत्साह होकर रण से विमुख हो गये।

सञ्जय कहते हैं—महाराज! महाबली अश्वत्थामा इस तरह युद्ध में पिता की अपमृत्यु का समाचार सुनकर, चोट खाये हुए साँप की तरह और ईंधन पाकर प्रचण्ड हुए अग्नि की तरह, क्रोध से प्रज्वलित हो उठे। उनकी आँखें लाल हो गईं। वे कुपित सर्प की तरह वार-बार साँसें लेने लगे। वे हाथ मलने और ओठ चबाने लगे।

एक सौ चौरानबे अध्याय

धृतराष्ट्र का सञ्जय से यह पूछना कि अश्वत्थामा ने पिता की मृत्यु का हाल सुनकर क्या कहा और क्या किया

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय! अपने पिता, वृद्ध, ब्राह्मण द्रोणाचार्य की मृत्यु धृष्टद्युम्न के हाथ से हुई सुनकर अश्वत्थामा ने क्या कहा? मनुष्यों के और वरुण, अग्नि, ब्रह्म, इन्द्र, नारायण आदि देवताओं के दिव्य अस्त्र जिनके पास सदा विद्यमान रहते थे, उन आचार्य को धृष्टद्युम्न ने अधर्म से मारा, यह समाचार पाकर अश्वत्थामा ने क्या कहा? आचार्य द्रोण ने महात्मा परशुराम से सम्पूर्ण धनुर्वेद की शिक्षा पाई थी। उन्होंने पुत्र को, श्रेष्ठ योद्धा बनाने के लिए, सब दिव्य अस्त्र अवश्य बतला दिये होंगे। मनुष्यों का यह नियम होता है कि वे एक मात्र पुत्र को ही अपने से अधिक गुणी बनाना और देखना चाहते हैं, और किसी को नहीं। जो महात्मा आचार्य होते हैं वे गूढ़ से गूढ़ बातें अपने पुत्र को या अनुगत प्रिय शिष्य को बतला देते हैं। हे सञ्जय! गौतमी के बेटे शूर अश्वत्थामा द्रोणाचार्य के पुत्र और प्रिय शिष्य भी थे। उन्हें द्रोणाचार्य ने विशेष रूप से दिव्य अस्त्रों की शिक्षा दी होगी। मेरी समझ में द्रोणाचार्य के बाद अगर कोई योद्धा है तो वीर अश्वत्थामा ही हैं। शस्त्र-विद्या में परशुराम के समान, युद्धकला में इन्द्र के समान, बल-वीर्य में कार्तवीर्य सहस्रबाहु अर्जुन के समान, बुद्धि में बृहस्पति के समान, धैर्य में अटल पर्वत के समान, तेज में अग्नि के समान, गम्भीरता में समुद्र के समान, क्रोध में विषैले नाग के समान, युवा, पृथ्वी भर में श्रेष्ठ रथी योद्धा, दृढ़ धनुर्द्धर, कभी न थकनेवाले, वायु के समान वेग से रण में विचरनेवाले, कुपित मृत्यु के समान १० उन अश्वत्थामा ने पिता के मरने का हाल सुनकर क्या कहा? अश्वत्थामा जब संग्राम में बाण बरसाने लगते हैं तब पृथ्वी भय से काँप उठती है। वे सत्यपराक्रमी वीर युद्धभूमि में कभी विचलित नहीं होते। उन्होंने यह सुनकर कि धृष्टद्युम्न ने अधर्मपूर्वक उनके धर्मिष्ठ पिता को मार डाला क्या कहा? वीर अश्वत्थामा वेदपाठी, ब्रह्मचारी, धनुर्वेद के पूरे पण्डित, दशरथ के पुत्र रामचन्द्र और समुद्र के समान कभी क्षोभ को न प्राप्त होनेवाले वीर धीर गम्भीर हैं। उन्होंने धृष्टद्युम्न का अन्याय सुनकर क्या कहा? मुझे मालूम है कि जैसे धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य

को मारने के लिए उत्पन्न हुए थे, वैसे ही धृष्टद्युम्न को मारने के लिए अश्वत्थामा का जन्म हुआ है। पापरूप, नृशंस, क्रूर, अदूरदर्शी धृष्टद्युम्न के हाथ से आचार्य की मृत्यु का होना १५ सुनकर अश्वत्थामा ने क्या कहा?

एक सौ पञ्चानवे अध्याय

अश्वत्थामा का क्रोध और पाण्डव-वध की प्रतिज्ञा करना

सञ्जय ने कहा—महाराज! धोखा देकर द्रोणाचार्य के मारे जाने का समाचार सुनकर क्रोध के मारे अश्वत्थामा की आँखों से आँसू निकलने लगे। कुपित अश्वत्थामा का शरीर क्रोध से प्रज्वलित हो उठा। उस समय वे प्रलय के समय संहार करने को उद्यत काल के समान जान पड़ने लगे। बारम्बार आँसू पोंछकर क्रोध से साँसें ले रहे अश्वत्थामा ने दुर्योधन से यों कहा—राजन्! जिस तरह शस्त्रत्याग करके मेरे योगस्थ महात्मा पिता को मारकर नीच पाञ्चाल धृष्टद्युम्न ने क्षुद्र कर्म किया, और धर्मात्मा होने का ढोंग रचनेवाले युधिष्ठिर ने मेरे पिता की मृत्यु के लिए मिथ्या बोलकर जो अनार्य-जनोचित पाप किया, सो सब मुझे विदित हुआ। राजन्! युद्ध करनेवाले या तो जीतते हैं या हारते हैं। इन दोनों में सामने युद्ध करते-करते मरना ही वीर पुरुष के लिए प्रशंसा की

बात है। संग्राम में युद्ध करता हुआ मनुष्य अगर न्याय-युद्ध करते-करते मारा जाय तो उसकी मृत्यु के लिए दुःख या शोक करना उचित नहीं। मेरे पिता न्याय-युद्ध करते-करते शरीर त्यागकर वीर जनों के योग्य श्रेष्ठ लोक को गये हैं। हे पुरुषसिंह! उनकी मृत्यु शोचनीय नहीं है। लेकिन धर्मयुद्ध में प्रवृत्त मेरे पिता को सब सैनिकों के सामने केश पकड़े जाने का जो दुःख और अपमान सहना पड़ा, वही मेरे मर्मस्थलों को कड़ी चोट पहुँचा रहा है।

इसी का ख़याल करके मेरा हृदय फटा जा रहा है। मेरे जीते-जी मेरे पिता की ऐसी दुर्दशा हुई तो फिर लोग संसार में पुत्र की इच्छा क्यों करेंगे? लोग काम, क्रोध, अज्ञान, हर्ष, चञ्चलता आदि के कारण ही धर्म के विरुद्ध कार्य और अत्याचार करते हैं। दुरात्मा नीच धृष्टद्युम्न ने मेरा अनादर करके यह महा अधर्म किया है। उसको अवश्य ही इस घोर कर्म का दारुण फल भोगना पड़ेगा। मिथ्यावादी युधिष्ठिर ने भी बड़ा बुरा काम किया है। जिन धर्मराज ने धोखा देकर मेरे पिता से शस्त्र त्याग कराया है उनके रक्त को शीघ्र ही यह पृथ्वी पियेगी। हे कौरवराज! मैं सत्य, यज्ञ और कूप-वापी आदि की स्थापना के पुण्य प्रभृति की शपथ खाकर कहता हूँ कि सब पाञ्चालों को न मार सकूँगा तो कदापि जीता न रहूँगा। या तो उनको मारकर प्रतिज्ञा पूरी करूँगा या ख़ुद मर जाऊँगा। चाहे जिस उपाय से हो, मैं पाञ्चालों को मारने का यत्न करूँगा। रण में पाप करनेवाले पापी धृष्टद्युम्न को मैं अवश्य मारूँगा। कोमल या उग्र कर्म करके, धर्म से या अधर्म से, किसी तरह पाञ्चालों को मारने से ही मुझे शान्ति मिलेगी। हे पुरुषसिंह! मनुष्य जिस लिए पुत्र होने की लालसा रखते हैं, वह यही है कि इस लोक और परलोक में पुत्र ही महाभय से रक्षा करता है। परन्तु बड़े शोक की बात है कि पर्वताकार मुझ पुत्र और शिष्य के जीते रहते ही अनाथ की तरह मेरे पिता को वही दुर्दशा भोगनी पड़ी। मेरे दिव्य अस्त्रों को, इन शक्तिपूर्ण बाहुओं को और पराक्रम को धिक्कार है! मैं ऐसा कपूत निकला कि पिता के केश शत्रु ने पकड़े और मैं उस समय उन्हें बचा नहीं सका! हे भरतश्रेष्ठ! मैं इस समय वही काम करूँगा, जिससे परलोकगत पिता को सन्तोष हो और मैं उनसे उऋण हो जाऊँ। महाराज! आर्य पुरुषों का यह नियम है कि वे कभी अपने मुँह अपनी बड़ाई नहीं करते। किन्तु पिता के वध को न सह सकने के कारण मैं इस समय आपके आगे अपने पौरुष का वर्णन करता हूँ। पाण्डवगण और जनार्दन आज मेरा पराक्रम देखेंगे कि मैं प्रलयकाल के समान हत्याकाण्ड मचा दूँगा और उनकी सेना को दल-मल डालूँगा। आज मैं जब रथ पर बैठकर रणभूमि में घमासान युद्ध करूँगा तब मनुष्यश्रेष्ठ योद्धाओं की कौन कहे, देवता, गन्धर्व, असुर, राक्षस आदि भी मुझे परास्त नहीं कर सकेंगे। इस पृथ्वी पर मैं या अर्जुन, दो ही सबसे श्रेष्ठ अस्त्रविद्या के ज्ञाता हैं। मैं सेना में घुसकर, प्रज्वलित किरणमण्डल के बीच विराजमान सूर्यदेव की तरह, देवताओं के निर्मित दिव्य अमोघ अस्त्रों का प्रयोग करूँगा। आज बारम्बार लगातार मेरे धनुष से निकले हुए असंख्य बाण महायुद्ध में मेरा पराक्रम प्रकट करते हुए पाण्डवों का संहार करेंगे। आज मेरे सब सैनिक देखेंगे कि सब दिशाएँ, वर्षा की बूँदों के समान, बरस रहे तीक्ष्ण बाणों से व्याप्त हो रही हैं। घोर आँधी जैसे वृक्षों को उखाड़कर गिरा देती है वैसे ही भयानक शब्द कर रहे बाण चारों ओर बरसाकर मैं शत्रु-दल को पृथ्वी पर गिराऊँगा। अर्जुन, कृष्ण, भीमसेन, नकुल, सहदेव, राजा युधिष्ठिर, दुरात्मा धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, सात्यकि

३० आदि कोई भी उस अस्त्र को प्रयोग और उपसंहार सहित नहीं जानता; उसे तो मैं ही जानता हूँ। राजन्! एक समय मेरे पिता ने विधिपूर्वक प्रणाम करके भगवान् नारायण की पूजा की और उपहार-स्वरूप वेद-मन्त्रों से उनकी स्तुति की। उस उपहार और पूजा को स्वीकार करके नारायण ने उनसे वर माँगने को कहा। तब मेरे पिता ने उनसे दिव्य नारायणास्त्र माँगा। भगवान् नारायण ने वह अस्त्र देकर कहा—ब्रह्मन्! युद्ध में तुम्हारी बराबरी कोई मनुष्य नहीं कर सकेगा किन्तु इतना ख़याल रखना कि सहसा इस अस्त्र का प्रयोग न कर बैठना। यह अस्त्र शत्रु को मारे बिना निवृत्त या शान्त नहीं होता। यह अस्त्र सब को मार सकता है। इसे कोई व्यर्थ नहीं कर सकता; यह अवध्य का भी वध कर सकता है। इसी लिए सहसा यह अस्त्र नहीं छोड़ना चाहिए। समरभूमि में रथ से उतर पड़ना, अस्त्र-शस्त्र रख देना, प्रार्थना करना और शत्रु की शरण में जाना, यही चार उपाय ऐसे हैं जिनका आश्रय लेने से मनुष्य इस अस्त्र के भय से

छुटकारा पा जाता है। अस्त्रविद्या से अनभिज्ञ अवध्य व्यक्तियों को अन्य शस्त्रों से मारे, मगर इस अस्त्र का प्रयोग उन पर न करे। हे कुरुश्रेष्ठ! मेरे पिता ने वह नारायणास्त्र नारायण भगवान् से ले लिया और फिर यथासमय मुझे बता दिया। देते समय पिता ने मुझसे कहा कि हे पुत्र! इस अस्त्र के प्रभाव से तुम्हारा तेज युद्ध में प्रज्वलित हो उठेगा और तुम सब प्रकार के दिव्य अस्त्रों को व्यर्थ कर दोगे। मेरे पिता से यही बात कहकर नारायण अन्तर्द्धान हो गये थे। मैंने अपने पिता के द्वारा जो दिव्य नारायणास्त्र पाया है उसी से पाण्डव, पाञ्चाल,
४० मत्स्य, केकय आदि वीरों को मारूँगा और इन्द्र जैसे असुरों को मार भगावें वैसे ही सबको रण में भगाऊँगा। हे भारत! शत्रुगण चाहे जितना यत्न करें और पराक्रम दिखावें पर वे मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। मैं जैसी इच्छा करूँगा वैसे ही बाण धनुष से निकलकर शत्रुओं को मारेंगे। मैं चाहूँगा तो रण में पत्थरों की वर्षा करूँगा। मेरे बाण लोहे के मुखवाले पक्षियों

का रूप रखकर बड़े-बड़े महारथियों को भगावेंगे। इसमें संशय नहीं कि मैं शत्रुसेना पर तीक्ष्ण असह्य परश्वध नाम के शस्त्र बरसाऊँगा। मैं सच कहता हूँ कि पाण्डवों की तनिक भी परवा न करके नारायणास्त्र के प्रभाव से शत्रुओं का नाश करूँगा। मित्र के, ब्राह्मण के और गुरु के द्रोही, मूर्ख, निन्दित, पाञ्चाल-कुल-कलङ्क, नीच धृष्टद्युम्न को मैं ज़िन्दा नहीं छोड़ूँगा।

महाराज! अश्वत्थामा के ये वचन सुनकर आपकी सब सेना लौट पड़ी। वीर योद्धा लोग उत्साहित होकर शङ्ख, नगाड़े और हज़ारों डिमडिम आदि बाजे बजाने लगे। घोड़ों की टापों की चोट और पहियों के चलने से पृथ्वी शब्दायमान हो उठी। वह तुमुल शब्द आकाश, अन्तरिक्ष और पृथ्वी पर गूँज उठा। मेघ-गर्जन के समान उस शब्द को एकाएक सुनकर पाण्डव पक्ष के सब योद्धा [विस्मित हो उठे। वे] एकत्र होकर आपस में सलाह करने लगे। इधर प्रतापी अश्वत्थामा ने आचमन करके वह दिव्य और अनिवार्य नारायणास्त्र प्रकट किया। ५०

एक सौ छानवे अध्याय

युधिष्ठिर और अर्जुन की बातचीत

सञ्जय कहते हैं—हे राजेन्द्र! इस तरह अश्वत्थामा ने जब नारायणास्त्र प्रकट किया तब बिना मेघ के वज्रपात सहित वर्षा होने लगी और प्रबल वेग से दारुण आँधी चलने लगी। पृथ्वी-तल काँप उठा, समुद्र उमड़ चला, नदियों का प्रवाह उलटा बह चला, पर्वतों के शिखर फटकर गिरने लगे, दिशाओं में अँधेरा छा गया, सूर्य की आभा धुँधली पड़ गई, मांसाहारी जीव आनन्दित हो उठे, देवता-दानव-गन्धर्वगण भय से विह्वल हो गये और मृगों के झुण्ड पाण्डवों की सेना की दाहनी ओर घूमने लगे। सभी लोग व्याकुल होकर परस्पर ऐसे उत्पात प्रकट होने का कारण पूछने लगे। राजन्! अश्वत्थामा के भयानक अस्त्र का प्रभाव देखकर सब राजा लोग व्यथित और भय से व्याकुल हो उठे।

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! शोकाकुल महावीर अश्वत्थामा ने पिता का वध न सह सकने के कारण क्रोधान्ध होकर जब युद्ध के लिए सैनिकों को लौटाया तब कौरव-सेना को लौटते देखकर पाण्डवों ने धृष्टद्युम्न की रक्षा करने के लिए क्या सलाह की? यह वृत्तान्त मुझसे कहो।

सञ्जय ने कहा कि महाराज! राजा युधिष्ठिर ने पहले आपके पुत्र आदि को रण से भागते देखा था, किन्तु अब फिर उन्हीं को उत्साहपूर्वक युद्ध के लिए पलटते सुनकर उन्होंने कहा—हे अर्जुन! वज्रपाणि इन्द्र ने जैसे वृत्रासुर को मारा था वैसे ही धृष्टद्युम्न ने जब द्रोणाचार्य को मार डाला तब जय की आशा छोड़कर, दीनभाव को प्राप्त, कौरव अपने प्राण बचाने के लिए डर के मारे भाग खड़े हुए थे। शत्रु पक्ष के लोगों की बड़ी दुर्दशा हो गई थी। पार्श्व- १०

रक्षक और सारथी मर जाने पर पताका-ध्वजा-छत्र आदि से शून्य और कूबर, बैठक आदि अङ्गों से रहित रथों पर बैठे हुए कुछ लोग व्याकुल घोड़ों को हाँकते और उनके शीघ्र न चल सकने पर लात मार-मारकर उन्हें चलाते भाग खड़े हुए थे। वे अचेत और घबराये हुए थे। कुछ लोग टूटे रथों को छोड़कर साबित रथों पर बैठकर खुद घोड़ों को हाँकते हुए भागे थे। जिनके अक्ष, युग, पहिये आदि टूट गये हैं ऐसे रथों को उनके घबराये हुए घोड़े इधर-उधर घसीटते फिरते थे। कुछ लोग टूटे रथ छोड़कर पैदल ही भागने लगे थे। घोड़ों पर बैठे हुए कुछ योद्धा उन्हें तेज़ी से हाँकने में ऐसे घबराये थे कि आधे आसन से उनका शरीर हट गया था। हाथियों पर सवार योद्धा नाराच बाण की चोट से छिदकर हाथी के शरीर से नथ गये थे और कुछ आसन स्थान—हौदे—से भ्रष्ट हो गये थे। बाणों की चोट से पीड़ित हाथी कुछ को लिये इधर-उधर भाग रहे थे। कुछ के शस्त्र और कवच छिन्न-भिन्न हो गये थे और वे घबराहट के मारे वाहनों की पीठ पर से पृथ्वी पर गिर पड़े थे। कुछ लोग रथों के पहियों से कट गये थे और कुछ के शरीर हाथियों और घोड़ों के पैरों से रौंदे जा चुके थे। कुछ लोग डर के मारे पिता पुत्र आदि को पुकारते हुए भाग रहे थे। सब लोग ऐसे मूढ़-से हो रहे थे कि कोई किसी को मानों पहचानता ही न था। कुछ लोग पुत्र, पिता, सखा, भाई आदि को कड़ी चोट से पीड़ित और घायल देखकर, उन्हें उठाकर, कवच खोलकर उनके घावों को पानी से तर कर रहे थे। हे अर्जुन! द्रोणाचार्य के मारे जाने पर कौरव दल की ऐसी दारुण दुर्दशा हो गई थी और भगदड़ मच गई थी। अब फिर किस वीर पुरुष का आश्रय पाकर कौरवों की सेना लौट रही है? किसने उन्हें धैर्य दिया है? तुमको मालूम हो तो मुझे बताओ। कौरव-सेना में घोड़े हिनहिना रहे हैं, हाथी गरज रहे हैं, वीर लोग गरज रहे हैं और रथों के चलने की घरघराहट बढ़ रही है। कुरु-सेना-सागर में ये तीव्र शब्द एकत्र होकर बारम्बार उठ रहे हैं, जिन्हें सुनकर मेरे योद्धाओं के हृदय

काँप उठे हैं। यह उत्साहसूचक लोमहर्षण शब्द सूचित कर रहा है कि इस बार कौरवों की सेना इन्द्र सहित तीनों लोकों को ग्रस लेगी। मुझे तो इन्द्र का भयानक गर्जन शब्द प्रतीत होता है। द्रोणाचार्य के मरने पर शायद इन्द्र खुद कौरवों की ओर से लड़ने आ रहे हैं। हे धनञ्जय! इस भयङ्कर शब्द को सुनते ही हमारे रोंगटे खड़े हो गये हैं। हमारे रथी, घोड़े, हाथी आदि घबरा उठे हैं। भागी हुई कौरव-सेना को लौटाकर यह कौन महारथी इन्द्र की तरह युद्ध करने आ रहा है?

अर्जुन ने कहा—राजन्! कौरवगण जिनके बल-वीर्य का आश्रय पाकर, धैर्य धरकर, उग्र युद्ध करने को तैयार हैं और शङ्ख बजा रहे हैं उनका हाल मैं कहता हूँ; और आप यह सोच-कर, कि शस्त्रत्याग के उपरान्त द्रोणाचार्य की मृत्यु होने पर भी कौन व्यक्ति दुर्योधन का सहायक होकर भयानक सिंहनाद कर रहा है, मन ही मन जिनसे शङ्कित और उद्विग्न हो रहे हैं, उन श्रीमान्, महाबाहु, मस्त हाथी के समान पराक्रमी, उग्रकर्मा, कौरवों को अभय देनेवाले वीर का हाल मैं आपसे कहता हूँ। जिस वीर के जन्म लेने पर द्रोणाचार्य ने सुपात्र ब्राह्मणों को एक हज़ार गोदान किये थे वही अश्वत्थामा गरज रहे हैं। जिसने जन्म लेते ही अश्वश्रेष्ठ उच्चैःश्रवा की तरह गरजकर सम्पूर्ण पृथ्वी और तीनों लोकों को कँपा दिया था, और वह शब्द सुनकर आकाशवाणी हुई थी कि इस बालक का नाम अश्वत्थामा (घोड़े का सा शब्द करनेवाला) होगा, वही शूरशिरोमणि अश्वत्थामा गरज रहे हैं। धृष्टद्युम्न ने जिनके केशों को पकड़कर, जैसे कोई किसी अनाथ को मार डाले वैसे ही, सिर काट लेने का अत्यन्त निन्दनीय कार्य किया, उन महात्मा द्रोणाचार्य के नाथ उनके पुत्र महारथी अश्वत्थामा ये सामने उपस्थित हैं। मेरे गुरुवर के केशों को पकड़-कर धृष्टद्युम्न ने जो उनका अपमान किया है उसे, अपने पौरुष को जाननेवाले, अश्वत्थामा कभी क्षमा न करेंगे। महाराज! आप धर्म के जाननेवाले और सत्यवादी हैं। आपने राज्य के लोभ से मिथ्या बोलकर गुरु को धोखा दिया और उनकी मृत्यु का कारण हुए। यह आपने बड़ा अधर्म किया है। आड़ से बालि वानर को मारने के कारण जैसे रामचन्द्र के निर्मल चरित्र में धब्बा लग गया है, वैसे ही द्रोणवध से होनेवाली आपकी यह अकीर्ति भी त्रैलोक्य में चिरकाल तक बनी रहेगी। महात्मा द्रोणाचार्य ने आपको सत्यवादी, धर्मात्मा, शिष्य जानकर आप पर विश्वास किया कि ये कदापि झूठ नहीं बोलेंगे। किन्तु आपने पहले स्पष्ट रूप से "अश्वत्थामा मारा गया" कहकर पीछे धीरे से 'हाथी' शब्द कहकर सत्य से छिपे हुए मिथ्या वाक्य का प्रयोग किया—जान-बूझकर आचार्य को धोखा दिया। तभी शस्त्र रखकर पुत्रशोक से विह्वल आचार्य ने प्राणों का मोह छोड़ दिया। आपने अपनी आँखों से उनकी वह दशा देखी है। शोक से व्याकुल, रण से विमुख, पुत्रवत्सल आचार्य को शिष्य ने सनातन धर्म का त्याग करके मरवा डाला! अधर्मपूर्वक गुरु से शस्त्रत्याग कराकर और उसी दशा में उनका वध कराकर अब घब-राने से क्या होगा? अगर आपमें शक्ति हो तो अपने अनुचरों के साथ धृष्टद्युम्न को अश्व-

त्थामा के कोप से बचाइए। पिता के वध से क्रोधान्ध अश्वत्थामा के आक्रमण से आज हम सब लोग मिलकर भी धृष्टद्युम्न को नहीं बचा सकेंगे। जो अलौकिक प्रेम से सम्पन्न पुरुषश्रेष्ठ सब प्राणियों से बराबर विशुद्ध स्नेह का व्यवहार करते हैं, वे अश्वत्थामा आज अवश्य अपने पिता के केश पकड़ने का अपमान सुनकर रण में हम लोगों को भस्म कर देंगे। मैंने आचार्य के प्राणों की रक्षा के लिए बारम्बार चिल्लाकर धृष्टद्युम्न को मना किया, मगर उन्होंने स्वयं उनके शिष्य होकर भी धर्म से विमुख हो आचार्य को मार डाला। जब हम लोगों की अधिकांश अवस्था बीत चुकी है और बहुत थोड़ी आयु बाक़ी रह गई है, तब हमें राज्यलोभ से ऐसा अधर्म कभी न करना चाहिए था। [सच तो यह है कि हमने यह महाअधर्म करके अपने अवशिष्ट स्वल्प जीवन को कलङ्कित कर डाला है।] जो गुरु धर्म के पिता थे, और सदा पिता के समान ही स्नेह का भाव रखते थे, उन्हें तुच्छ राज्य के लोभ में पड़कर हमने मरवा डाला और हम गुरुहत्या के पाप के भागी हुए। देखिए, धृतराष्ट्र ने और उनके पुत्रों ने भीष्म और द्रोण को अपने पक्ष में रखने के लिए एक प्रकार से सब पृथ्वी ही अर्पण कर दी थी। हमारे शत्रु-पक्ष से वैसी वृत्ति और अनुपम सत्कार पाकर भी गुरु ने सदा धृतराष्ट्र और उनके पुत्रों के आगे मुझको ही सबसे श्रेष्ठ धनुर्द्धर कहा। शस्त्र-त्याग करके आचार्य ने जो आप अपनी मृत्यु स्वीकार कर ली, सो केवल आप पर और मुझ पर विश्वास करके। नहीं तो, वे शस्त्र हाथ में लेकर लड़ते रहते तो साक्षात् इन्द्र भी उन्हें नहीं मार सकते थे। उन वृद्ध, नित्य उपकार करनेवाले, गुरु से हम लोगों ने नीच की तरह राज्य के लोभ में पड़कर द्रोह किया है। अहो! यह महादारुण पाप हम लोगों ने किया, जो राज्यसुख के लोभ में पड़कर साधुस्वभाव गुरु की हत्या करवा डाली। ५० मेरे गुरु को निश्चय था कि अर्जुन मुझ पर ऐसा प्रेम और श्रद्धा रखता है कि मेरे लिए पुत्र, भाई, पिता, स्त्री और जीवन तक का त्याग कर सकता है। सो हे प्रभो! मैंने भी राज्य के लोभ में पड़कर मारे जा रहे गुरु की रक्षा नहीं की। इस उपेक्षा के कारण मुझको बहुत समय तक, उलटे लटककर, नरक की यन्त्रणा भोगनी पड़ेगी। ब्राह्मण, वृद्ध, आचार्य, निहत्थे, मौनी महात्मा को राज्य के लिए मरवाकर हमारे जीवित रहने को धिक्कार है। ५३ मुझे तो इसका सबसे बढ़कर प्रायश्चित्त प्राण दे देना ही जान पड़ता है।

एक सौ सत्तानबे अध्याय

भीमसेन का क्रोध। धृष्टद्युम्न का कुपित होकर अपने काम को धर्मानुमोदित प्रमाणित करने की चेष्टा करना

सञ्जय ने कहा कि महाराज! अर्जुन के वचन सुनकर सब महारथी चुप हो रहे। किसी ने भला या बुरा, प्रिय या अप्रिय, कुछ नहीं कहा। तब महाबाहु भीमसेन को क्रोध

चढ़ आया। वे अर्जुन को फटकारते हुए कहने लगे—हे अर्जुन! वन में रहनेवाले संसार-त्यागी मुनिगण अथवा जितेन्द्रिय क्रोधत्यागी ब्रह्मचारी ब्राह्मण जैसे धर्म का उपदेश करते हैं, वैसे ही इस समय तुम भी बातें कर रहे हो। क्षत (दुःख) से औरों की रक्षा करने से ही क्षत्रिय क्षत्रिय कहलाता है; किन्तु उसकी जीविका भी क्षत्र (शस्त्र-प्रयोग और युद्ध) ही है। [आवश्यकता के अनुसार] स्त्री, साधु, ब्राह्मण, गुरु आदि को भी मारनेवाला क्षत्रिय ही पृथ्वी का राज्य और उसके द्वारा शीघ्र ही धर्म, यश और लक्ष्मी पा सकता है। इस समय नासमझ की सी बातें करने से तुम्हारी शोभा नहीं है—ऐसी कायरों या ब्राह्मणों की सी बातें तुम्हें नहीं सोहतीं। अर्जुन! तुम्हारा पराक्रम इन्द्र के समान है। महासागर जैसे तटभूमि को नहीं लाँघता, वैसे ही तुम इस समय भी

धर्म की मर्यादा का उल्लङ्घन करना नहीं चाहते। तेरह वर्ष के दुःख और क्रोध का ख़याल छोड़कर अब तक तुम धर्म की ही धुन में हो, इसके लिए कौन तुम्हारी बड़ाई न करेगा? बड़ी बात, जो तुम्हारा चित्त इस समय भी धर्म का ही अनुगामी बना है। बड़ी बात, जो तुम्हारी बुद्धि लगातार निष्ठुर कार्य से भागती ही रहती है। शत्रुओं ने धर्म का पालन कर रहे धर्मराज का राज्य अधर्म से छीन लिया, द्रौपदी को सभा में लाकर केश पकड़कर उनका अपमान किया और हम लोगों को वल्कल-मृगछाला पहनाकर वन को भेज दिया। हम लोग जिन कष्टों के योग्य न थे, वे ही कष्ट हमें शत्रुओं की बदौलत तेरह वर्ष तक भोगने पड़े। हे निष्पाप! १० ये सब बातें क्षत्रिय के लिए सर्वथा असह्य थीं; किन्तु तुमने शायद क्षत्रियधर्म का ख़याल करके ही तब तरह दे दी थी। परन्तु मैं अब किसी तरह तरह नहीं दे सकता। मैं तुम्हारे साथ मिलकर, शत्रुओं के उन अधर्म-पूर्ण कार्यों का स्मरण करके, अवश्य ही अपना राज्य हरनेवाले क्षुद्र शत्रुओं को उनके मन्त्रियों और सहायकों सहित मारूँगा। तुमने पहले कहा था कि हम लोग युद्ध छेड़कर यथाशक्ति विजय पाने की चेष्टा करेंगे। सो अब जब हम अपनी शक्ति भर उसके लिए

कोशिश करते हैं तब तुम हमारी निन्दा करते हो। तुम अपने क्षत्रिय-धर्म को नहीं जानना चाहते। तुम्हारा यह सब कथन वृथा है। हम लोग शत्रुओं का उत्साह देखकर घबरा रहे हैं, उस पर तुम ऐसे वचन कहकर हमारे मर्मस्थल को चोट पहुँचाते हो। हे शत्रुनाशन! तुम घाव में नमक सा छिड़क रहे हो। तुम्हारे बाण-सदृश वचन मेरे हृदय को विदीर्ण किये देते हैं। तुम धर्मात्मा होकर भी अपने इस अधर्म को नहीं समझ पाते कि हम लोग और स्वयं तुम प्रशंसा के योग्य हो, पर तुम हमारे पराक्रम की प्रशंसा न करके शत्रुपक्ष की प्रशंसा कर रहे हो। वासुदेव के सामने तुम अश्वत्थामा की तारीफ़ कर रहे हो। मैं सच कहता हूँ, अश्वत्थामा किसी बात में तुम्हारी सोलहवीं कला के समान नहीं है। तुम अपने मुँह से अपने दोषों का बखान कर रहे हो, इसके लिए क्या तुम्हें लज्जा नहीं आती? मेरी भुजाओं में दस हज़ार हाथियों का बल है। मैं क्रोध करके गदा की चोट से इस पृथ्वी को विदीर्ण कर सकता हूँ, बड़े-बड़े पहाड़ों को उठाकर इधर-उधर फेंक सकता हूँ, प्रचण्ड आँधी की तरह पर्वत-से ऊँचे महावृक्षों को उखाड़ और तोड़ सकता हूँ। मैं बाण बरसाकर सब देवताओं सहित इन्द्र, राक्षसों, १० नागों और मनुष्यों को भगा दे सकता हूँ। हे अर्जुन! मुझ अपने भाई के ऐसे अद्भुत पराक्रम को जानकर भी तुम अश्वत्थामा से क्यों डरते हो? अथवा हे अर्जुन! तुम सब भाई यहीं ठहरो, मैं अकेला गदा हाथ में लेकर महारण में अश्वत्थामा को मारने जाता हूँ।

भीमसेन के यों कह चुकने पर नृसिंहावतार की तरह क्रोध से दहाड़नेवाले अर्जुन से हिरण्यकशिपु के समान धृष्टद्युम्न ने यों कहा—हे वीरवर अर्जुन! बुद्धिमानों ने पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, कराना, और दान लेना, देना, ये छः कर्म ब्राह्मणों के कहे हैं। द्रोणाचार्य इनमें से कौन कार्य करते थे? मैंने ब्राह्मणधर्म से रहित द्रोण को मार डाला तो उसके लिए तुम मेरी निन्दा क्यों कर रहे हो? द्रोणाचार्य अपना धर्म छोड़कर, क्षत्रिय के धर्म को ग्रहण कर, इस समय अधर्म युद्ध कर रहे थे; अस्त्र न जाननेवालों को अस्त्र से मारकर क्षुद्र कर्म कर रहे थे, इसी से मैंने उन्हें मार डाला। यदि कोई ब्राह्मणाधम अजेय हो और मायामय अस्त्र-युद्ध कर रहा हो तो उसे छल-कौशल से मार डालना क्या अनुचित है? मैंने द्रोणाचार्य को मारा है, यह जानकर अगर अश्वत्थामा क्रोध के मारे गरज रहे हैं, तो उससे मेरी क्या हानि है? अश्वत्थामा का यों गरजना मुझे अद्भुत नहीं जान पड़ता। वे कौरवों को भिड़ाकर उनका नाश करवा डालेंगे, क्योंकि खुद उनकी रक्षा नहीं कर सकेंगे। हे पार्थ! तुम धर्मात्मा होकर मुझको गुरु का हत्यारा कहते हो। तुम्हें मालूम होगा कि द्रोण-वध के लिए ही मैं पिता के २० यज्ञ में अग्निकुण्ड से उत्पन्न हुआ हूँ। जो मनुष्य युद्ध करते समय कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य को समान समझे, उसे तुम ब्राह्मण अथवा क्षत्रिय कैसे कह सकते हो? जिन्होंने क्रोधान्ध होकर ब्रह्मास्त्र के द्वारा अस्त्र न जाननेवाले लोगों का संहार करना अपना कर्त्तव्य समझ लिया था,

उन्हें चाहे जिस उपाय से मार डालना क्या अनुचित है ? [ख़ासकर द्रोण ने मेरे पिता को मारा था, फिर मैं उन्हें क्यों न मारता ?] हे धर्मज्ञ अर्जुन ! धर्मात्मा लोगों ने अपना धर्म छोड़ देनेवाले को विष की तरह बतलाया है। फिर सब धर्मों के ज्ञाता होकर भी तुम द्रोण-वध के लिए क्यों मेरी निन्दा कर रहे हो ? मैंने आक्रमण करके नृशंस आचार्य को मार डाला तो इसके लिए मैं निन्दा का पात्र नहीं हूँ। तुम्हें तो मेरा अभिनन्दन करना चाहिए था। हे पार्थ ! मैंने कालानलतुल्य, अग्नि सूर्य और विष के समान भयानक द्रोणाचार्य का सिर काट डाला, तो इसके लिए तुम मेरी प्रशंसा क्यों नहीं करते ? युद्ध में मेरे सगे भाई-बन्धुओं को द्रोण ने मारा है। इस कारण उनका सिर काट लेने पर भी मुझे शान्ति नहीं मिली। रह-रहकर इस बेवक़ूफ़ी के लिए मेरा हृदय व्यथित हो रहा है कि मैंने जयद्रथ के सिर की तरह द्रोणाचार्य का सिर भी निषादों या चण्डालों की बस्ती में क्यों नहीं फेंका ! हे अर्जुन, सुना जाता है कि अपने शत्रुओं को न मारना अधर्म है। क्षत्रिय का तो यही धर्म है कि अपने शत्रु को मार डाले, या ख़ुद उसके हाथ से मारा जाय। मैंने अपने शत्रु को मारकर धर्म ही किया है। जैसे तुमने अपने पिता के सखा शूर महाराज भगदत्त को युद्ध में मारा है, वैसे ही मैंने भी अपने शत्रु को मारा है। अपने सगे पितामह भीष्म को रण में मारकर अगर तुम अपने को धर्मात्मा समझते हो, तो फिर मैंने जो पापाचारी अपने शत्रु को मारा सो क्या अधर्म किया ? मेरे इस काम को क्यों नहीं धर्मसङ्गत मानते ? हे पार्थ ! मैं सम्बन्ध के कारण ही तुम्हारे इन वचनों को सह लेता हूँ। जैसे बैठा हुआ हाथी अपने शरीर की ही सीढ़ी से लाचार होकर लोगों की लातें सह लेता है वैसे ही मैं तुम्हारे बहनोई होने के कारण केवल द्रौपदी और उनके पुत्रों का ख़याल करके तुम्हारे इन कटु वचनों को क्षमा करता हूँ। अब तुम मुझे कुछ भला-बुरा न कहना। द्रोणाचार्य के साथ मेरा पुराना वैर था और उसे केवल तुम लोग ही नहीं, ये सब राजा लोग भी जानते हैं। हे अर्जुन ! महाराज युधिष्ठिर झूठे नहीं हैं और मैं भी अधर्मी नहीं हूँ। आचार्य पापप्रकृति और शिष्यद्रोही थे, इसी से मैंने उन्हें मार डाला। अब तुम जी लगाकर युद्ध करो, तुम्हें विजय अवश्य प्राप्त होगी। ४०

४४

एक सौ अट्ठानबे अध्याय

सात्यकि और धृष्टद्युम्न का कुपित होकर परस्पर कुवाक्य कहना। भीमसेन का प्रहार करने के लिए उद्यत सात्यकि को पकड़ लेना। फिर से सबका युद्ध के लिए उद्योग

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! अङ्गों सहित वेदों का अध्ययन करनेवाले, धनुर्विद्या के पारदर्शी द्रोणाचार्य ऐसे प्रतापी थे कि उनकी कृपा से उनके शिष्यगण पुरुषश्रेष्ठ कहलाते हैं और संग्राम

में वैसे अलौकिक कर्म करते हैं, जैसे देवताओं से भी सहज में नहीं हो सकते। अश्वत्थामा के मरने की झूठी खबर सुनकर, पुत्र का नाम लेकर, द्रोणाचार्य चिल्लाने और रोने लगे और उसी समय सबके सामने क्षुद्र गुरुघाती धृष्टद्युम्न ने उन्हें मारकर अत्यन्त नीच कर्म किया; किन्तु किसी क्षत्रिय ने उस नीच कर्म के लिए रोष या असन्तोष नहीं किया! कैसे आश्चर्य की बात है! क्षत्रियत्व को और क्षत्रियों के अमर्ष को धिक्कार है! पृथ्वी के सब धनुर्द्धर योद्धा, राजा लोग और पाण्डवगण धृष्टद्युम्न के वचन सुनकर क्या कहने लगे? यह वृत्तान्त मुझसे कहो।

सञ्जय ने कहा—राजन्! क्रूरकर्मा धृष्टद्युम्न के यों कहने पर सब राजा चुप रहे। अर्जुन ने भी क्रोधपूर्ण कुटिल दृष्टि से केवल एक बार दुष्टप्रकृति धृष्टद्युम्न की ओर देखकर कहा—"धिक्कार है! धिक्कार है!" अर्जुन की आँखों में आँसू भरे हुए थे और वे लम्बी साँसें छोड़ रहे थे। युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल, सहदेव, कृष्णचन्द्र और अन्य वीर योद्धा तथा राजा लज्जित हो उठे। अर्जुन के प्रिय शिष्य शूर-शिरोमणि सात्यकि से चुप नहीं रहा गया। उन्होंने अत्यन्त कुपित होकर कहा—यहाँ क्या कोई ऐसा पुरुष नहीं है, जो कठोर वचन कहनेवाले इस पापमूर्ति कुलाङ्गार नराधम को शीघ्र ही मार डाले! अरे धृष्टद्युम्न! ब्राह्मण जैसे चण्डाल की निन्दा करते हैं वैसे ही ये पाण्डव प्रमुख सज्जन तेरे पापकर्म को देखकर घृणा के मारे तेरी निन्दा कर रहे हैं। तू यह महा-पाप करके लज्जित क्यों नहीं होता? लज्जित होने की जगह तू ऐसी बातें कहकर अपने पक्ष का समर्थन कर रहा है! तू गुरु की निन्दा कर रहा है, इस अधर्म के कारण

११ तेरी जीभ के सौ टुकड़े क्यों नहीं हो जाते? तेरा मस्तक क्यों नहीं खण्ड-खण्ड हो जाता? ऐसा अधर्म करने के कारण तू अधःपतित क्यों नहीं होता? अरे क्षुद्र पाञ्चाल! तू पाप करके समाज के बीच इस तरह अपनी बड़ाई कर रहा है, इस कारण सब अन्धक-वृष्णि-वंश के यादव और पाण्डव तेरी निन्दा कर रहे हैं। तू पहले गुरुवधरूप पाप करके फिर गुरु की निन्दा कर रहा है, इसलिए तुझे मार डालना ही ठीक है। तेरे जीवित रहने का कुछ प्रयोजन नहीं। अरे

नराधम ! धर्मात्मा सज्जन गुरु के केश पकड़कर उनको मारने का महापाप करने का विचार भी तेरे सिवा और कोई नहीं कर सकता। तूने अपनी पहले की सात और आगे होनेवाली सात पीढ़ियों को नरक में ढकेल दिया है। तुझ कुलाङ्गार के कारण पाञ्चाल-कुल की चौदह पीढ़ियाँ यश से हीन हो गईं। तू वीर अर्जुन को भीष्म पितामह का मारनेवाला कहकर उन्हें अधर्म करनेवाला प्रमाणित करना चाहता है। किन्तु उसमें अर्जुन का कुछ दोष नहीं है, क्योंकि भीष्म पितामह ने स्वयं उस तरह अपनी मृत्यु बता दी थी। इसके सिवा भीष्म की मृत्यु का कारण भी पापकर्मा तेरा भाई शिखण्डी ही है। असल में पाञ्चालराज के पुत्रों से बढ़कर पृथ्वी पर और कोई पापी नहीं है। तेरे पिता ने भीष्म की मृत्यु के लिए शिखण्डी को उत्पन्न किया था।

महात्मा भीष्म को मारने के लिए ही राजा द्रुपद ने शिखण्डी को सुरक्षित रक्खा था। तू और तेरा भाई शिखण्डी, दोनों ऐसे हो कि सब साधुजन तुम्हें धिक्कार देते हैं। तुम दोनों के कारण ही पाञ्चालगण धर्म से भ्रष्ट होकर मित्र तथा गुरु के द्रोही और क्षुद्र कहे जायँगे। याद रख, अगर फिर मेरे आगे इस तरह के कटु वचन कहकर गुरु का अपमान करेगा तो मैं इस वज्र-तुल्य गदा से तेरे सिर के टुकड़े कर डालूँगा। तूने ब्राह्मण को मार डाला है, तुझे २० ब्रह्महत्या लगी है। तुझ हत्यारे का मुँह देखकर लोग प्रायश्चित्त के लिए सूर्य के दर्शन करते हैं। दुश्चरित्र नीच पाञ्चाल ! मेरे ही आगे मेरे गुरु और गुरु के गुरु का तिरस्कार करते तुझे लज्जा नहीं आती ? अगर कुछ शक्ति है तो ठहर जा, मेरी गदा की एक ही चोट को सह ले। मैं तेरे अनेक गदा-प्रहार सहने को तैयार हूँ।

महाराज ! इस तरह कठोर वाक्य कहकर कुपित सात्यकि ने जब धृष्टद्युम्न का तिरस्कार किया तब वे क्रोध की हँसी हँसकर कहने लगे—हे सात्यकि ! ये सब कठोर बातें सुनकर भी मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया। अनार्य पुरुष सदा सज्जनों की निन्दा किया करता है। जो

नीच हैं, वे आप बुरे कर्म करते हैं और लज्जित न होकर सज्जनों को बुरा कहते हैं। यद्यपि लोग क्षमा की प्रशंसा करते हैं तथापि पापी पुरुष के प्रति कभी क्षमा का प्रयोग न करना चाहिए—वह क्षमा का पात्र ही नहीं। पापी समझता है कि क्षमा करनेवाला मुझसे डर गया। सात्यकि! तुम खुद क्षुद्रप्रकृति, नीच विचार और पाप-निश्चय से दूषित हो। नख से शिख तक सब तरह निन्दा के योग्य होकर भी तुम मुझे निन्दित ठहराना चाहते हो। हे सात्यकि! वीर भूरिश्रवा का हाथ पहले ही काटकर अर्जुन ने उन्हें बेकार कर दिया था। इससे वे शस्त्र रखकर, रण से विमुख होकर, प्राणत्याग करने के लिए तैयार थे। ऐसी अवस्था में, सबके मना करने पर भी, तुमने उन्हें मार डाला। इससे अधिक पाप और क्या हो सकता है? हे क्रूर-प्रकृति यादव! युद्धभूमि में द्रोणाचार्य तो पहले मुझ पर दिव्य अस्त्र का प्रयोग कर रहे थे, बाद को उन्होंने शस्त्र रख दिये और उसी अवस्था में मैंने उनको मारा है तो इसमें पाप या अधर्म क्या हुआ? जो आदमी शस्त्र त्यागकर मुनियों की तरह मौन होकर योग से ३० शरीर छोड़ना चाहता हो, जिसका हाथ कट गया हो और जो युद्ध न करता हो, उसे मार डालनेवाला पापी पुरुष दूसरे की निन्दा कैसे कर सकता है? जिस समय पराक्रमी भूरिश्रवा ने तुमको पृथ्वी पर पटक दिया था, लात मारी थी, ज़मीन पर घसीटा था, तभी तुमने क्यों न उन्हें मारा? अगर तुम में कुछ बल और वीरता का घमण्ड था तो उसी समय उनको मारते। उस दशा में अवश्य तुम्हारी प्रशंसा होती और तुम पुरुषश्रेष्ठ कहलाते। किन्तु जब अर्जुन ने प्रतापी भूरिश्रवा का हाथ काटकर उन्हें निकम्मा कर दिया तब तुमने अपने अनार्य होने का परिचय दिया; मरे को मारने में अपनी बहादुरी दिखाई। और मैं तो वहीं-वहीं जाकर द्रोणाचार्य का सामना करता था जहाँ-जहाँ वे बाण बरसाकर पाण्डवों की सेना को भगाते थे। हे सात्यकि! स्वयं चण्डाल की तरह भूरिश्रवा-वधरूप निन्दित कर्म करके भी क्यों मेरी निन्दा कर रहे हो? ऐसे कठोर वचन क्यों कह रहे हो? हे वृष्णि-कुल-कलङ्क! तुम्हीं पापी और पापों का निवासस्थान हो, मैं नहीं। इसलिए अब फिर ऐसे वचन कहकर मुझे कुपित न करना। चुप रहो, अब कटु वचन न कहना। अगर मूर्खता के कारण फिर इस तरह के कठोर वचन कहोगे तो मैं तुमको जीता न छोड़ूँगा। हे मूर्ख! केवल धर्म से ही समर में विजय नहीं मिलती। पाण्डव और कौरव दोनों ने ही समय-समय पर, कार्य-साधन के लिए, अधर्म किया है। सबसे पहले तो कौरवों ने ही अधर्म से राजा युधिष्ठिर को छला है और द्रौपदी ४० को क्लेश पहुँचाये हैं। द्रौपदी सहित सब पाण्डवों को अधर्म से ही वन भेजा है और उनका सर्वस्व हर लिया है। शल्य पाण्डवों की ओर से लड़ने आ रहे थे, उन्हें कौरवों ने अधर्मपूर्वक अपने पक्ष में कर लिया। सबसे बढ़कर अधर्म यह किया कि बालक वीर अभिमन्यु को कई महारथियों ने निहत्था करके मार डाला। फिर इधर पाण्डवों ने भी अधर्म का आश्रय लेकर

शत्रुदमन भीष्म पितामह को युद्धभूमि में गिराया। तुमने धर्म को जानते हुए भी अधर्म से भूरिश्रवा को मारा। इस तरह हे यादव! धर्म को जानते रहने पर भी विजय की इच्छा से वीर कौरवों और पाण्डवों ने अधर्म का आश्रय लिया है। क्या धर्म है और क्या अधर्म, इसका तत्त्व बहुत ही गूढ़ और दुर्ज्ञेय है। इसलिए मैं फिर भी तुमको समझाता हूँ कि पहले की तरह कौरवों से युद्ध करो। मेरे मुँह लगकर मरने की तैयारी न करो।

सञ्जय कहते हैं—महाराज! धृष्टद्युम्न के ऐसे क्रूर और कठोर वाक्य सुनकर वीर प्रतापी सात्यकि क्रोध से काँपने लगे। उनकी आँखें लाल हो गईं। साँप की तरह फुफकारते हुए सात्यकि ने रथ पर धनुष-बाण रखकर गदा हाथ में ले ली। वे झपटकर धृष्टद्युम्न की ओर चले और कहने लगे—अरे दुरात्मा धृष्टद्युम्न! मैं तुझे कटु वचन नहीं कहूँगा, बल्कि मार ही डालूँगा; क्योंकि तू इसी योग्य है।

महाबली सात्यकि को इस प्रकार, मृत्यु की तरह, कुपित होकर धृष्टद्युम्न पर काल के तुल्य आक्रमण करने के लिए जाते देख श्रीकृष्ण ने सोचा कि यह तो बड़ा अनर्थ हुआ जाता है। उन्होंने शीघ्रता के साथ भीमसेन को इशारा किया। महाबली भीमसेन तुरन्त रथ से उतर पड़े। उन्होंने दौड़कर क्रोध से झपटे जा रहे और काँप रहे सात्यकि को बलपूर्वक दोनों हाथों से पकड़ लिया। महाबली भीमसेन के रोकने पर भी सात्यकि छः पग आगे बढ़ ही गये। परन्तु वहाँ ज़ोर से पैर जमाकर भीमसेन ने उन्हें रोक ही लिया। इसी समय नीतिज्ञ सहदेव ने रथ से उतरकर मधुर वाणी से समझाते हुए सात्यकि से कहा—हे पुरुषसिंह! अन्धक-वृष्णि-वंश के यादव और पाञ्चालगण, दोनों ही हमारे सर्वश्रेष्ठ सहायक हैं। यादवों में भी विशेष रूप से श्रीकृष्ण हमारे हितैषी हैं। हे सात्यकि! श्रीकृष्ण जैसे हमारे

मित्र हैं वैसे ही हम भी उनके अनुगत मित्र हैं। पाञ्चालगण भी पृथ्वीमण्डल में खोजकर पाण्डवों और यादवों से बढ़कर अपना मित्र नहीं पावेंगे। इस प्रकार, हमारे सम्बन्ध से,

पाञ्चालगण भी यादवों के मित्र हैं और यादव भी पाञ्चालों के मित्र हैं। सब धर्मों के जानने-वाले हे वीर-वर! तुम मित्र-धर्म का स्मरण करके धृष्टद्युम्न के ऊपर उत्पन्न क्रोध को शान्त करो। तुम धृष्टद्युम्न की बातों को क्षमा करो और धृष्टद्युम्न तुम्हारी बातों को भूल जावें। हम लोग भी क्षमा करते हैं और क्षमा करने के लिए तुम दोनों मित्रों से अनुरोध करते हैं। क्षमा और शान्ति में ही हम सबका कल्याण है। शान्ति से बढ़कर और कुछ नहीं है।

महाराज! इस तरह सहदेव जब सात्यकि को शान्त करने लगे तब धृष्टद्युम्न ने हँसकर ६० कहा—हे भीमसेन! सात्यकि को छोड़ दो, छोड़ दो। इन्हें युद्ध का नशा चढ़ा हुआ है। पर्वत से जैसे आँधी टकराती है वैसे ही ये मेरे पास आवें तो। मैं तीक्ष्ण बाणों से इनके घमण्ड और युद्ध के शौक़ को अभी मिटाये देता हूँ। इनका जीवन मैं अभी नष्ट कर दूँगा। पाण्डवों का जो कार्य मेरे करने लायक़ हो सो बताओ, मैं उसे अभी कर दूँगा। यह देखो, कौरवों की सेना पास आ पहुँची है। अथवा वीर अर्जुन इन सब शत्रुओं का संहार करेंगे, तब तक मैं सात्यकि का सिर धड़ से अलग करता हूँ। ये मुझे भी भूरिश्रवा समझते हैं, जिनका हाथ अर्जुन ने काट डाला था। इन्हें छोड़ दो, या तो युद्ध में ये मुझे मारेंगे या मैं इन्हें मारूँगा।

राजन्! धृष्टद्युम्न के वचन सुनकर सात्यकि साँप की तरह साँसें ले रहे थे। भीमसेन की दोनों भुजाओं के बीच में रहने के कारण वे छूटने के लिए बारम्बार यत्न कर रहे थे। वे बली महाबाहु दोनों वीर दो साँड़ों की तरह गरज रहे थे। इसी बीच में श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर दोनों ने जल्दी से जाकर, बड़ी मुश्किल से, समझा-बुझाकर दोनों को शान्त कर दिया। इस तरह क्रोध से लाल आँखें करके लड़ने के लिए तैयार दोनों महारथियों के शान्त होने पर पाण्डव ६८ पक्ष के क्षत्रियश्रेष्ठ वीर, युद्ध के लिए आ रहे, शत्रुओं की ओर बड़े वेग से बढ़े।

एक सौ निन्नानवे अध्याय

नारायणास्त्र के तेज से बचने के लिए, श्रीकृष्ण की सलाह से, भीमसेन के सिवा सब योद्धाओं का शस्त्र रख देना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! इधर अश्वत्थामा प्रलयकाल में काल-प्रेरित मृत्यु की तरह शत्रु-सेना का संहार करने लगे। उनके भल्ल बाणों से असंख्य शत्रु मरने लगे और उनकी लाशों का एक पहाड़ सा बन गया। ध्वजाएँ उस पहाड़ के वृक्ष, शस्त्र उसके शिखर, मरे हुए हाथी उसकी बड़ी-बड़ी शिलाएँ, घोड़े पर्वत पर विचरनेवाले घुड़मुँहें किम्पुरुष, धनुष उस पर की लताएँ, राक्षस और मांसाहारी जीव उस पर शब्द करनेवाले पक्षी और भूतगण उस पर विहार करने-वाले यक्ष जान पड़ते थे। महावीर अश्वत्थामा ने भयानक सिंहनाद करने के बाद चिल्लाकर

दुर्योधन को अपनी प्रतिज्ञा सुनाकर कहा—राजन्! मैं सच कहता हूँ कि युधिष्ठिर ने जो धोखा देकर, सत्य-सदृश मिथ्या वचन कहकर, धर्मयुद्ध कर रहे मेरे पिता से शस्त्र रखवा दिये हैं, उसका फल इस समय उन्हें अवश्य भोगना पड़ेगा। मैं उनके सामने ही पाण्डवों की सारी सेना का संहार करके दुरात्मा नीच धृष्टद्युम्न को मारूँगा। अगर पाण्डव पक्ष के वीर समर से विमुख न हुए, मुझसे युद्ध करते रहे, तो मैं उन सबको जीता न छोड़ूँगा। आप अपनी सेना को युद्ध करने के लिए लौटाइए।

राजन्! दुर्योधन ने गुरु-पुत्र के ये वाक्य सुनकर, सिंह की तरह गरजकर, अपनी सेना को निर्भय किया। सब कौरव-सेना उत्साहित होकर युद्ध करने को लौट पड़ी। भरे हुए दो सागरों के समान फिर कौरवों और पाण्डवों की सेनाएँ परस्पर भिड़ गईं। अश्वत्थामा की प्रतिज्ञा सुनकर कौरव क्रुद्ध होकर स्थिर भाव से युद्ध करने को तैयार हुए। उन्हें उत्तेजित देखकर पाञ्चाल और पाण्डवगण भी उत्साहित हो उठे। पाञ्चाल तथा पाण्डव लोग द्रोणाचार्य के वध से पहले ही प्रसन्न हो रहे थे और उन्हें अपनी ही जीत दिखाई पड़ रही थी। इस समय क्रोध करके वे बड़े वेग से शत्रुसेना पर आक्रमण करने लगे। जैसे दो पहाड़ या दो समुद्र परस्पर टक्कर लें वैसे ही कौरवों और पाण्डवों की सेनाओं का हाल हुआ। दोनों पक्ष के सैनिक परम प्रसन्न होकर हज़ारों की संख्या में शङ्ख, भेरी आदि बाजे बजाने लगे। जैसे सागर के मथे जाने पर भयानक शब्द हुआ था वैसा ही, दोनों सेनाओं का शब्द पृथ्वी और आकाश में गूँज उठा। ११

राजन्! तब वीर अश्वत्थामा ने पाण्डवों और पाञ्चालों की सेना को लक्ष्य करके नारायणास्त्र प्रकट किया। उस अस्त्र के प्रभाव से अश्वत्थामा के धनुष से प्रज्वलित मुखवाले सर्पों के समान असंख्य प्रदीप्त बाण निकलने और पाण्डवों को व्याकुल करने लगे। दम भर में उन बाणों ने सूर्य की किरणों की तरह सम्पूर्ण आकाश, दसों दिशाओं और सारी सेना को ढक लिया। आकाश में लोहमय वज्रमुष्टियाँ प्रकट होकर ज्योतिर्मय पदार्थों या उल्काओं के समान इधर-उधर गिरने लगीं। चार चक्रों और दो चक्रोंवाली विचित्र शतघ्नियाँ, गदाएँ, सूर्यमण्डलाकार पैने चक्र और अन्य विविध शस्त्रों के आकार के पदार्थ चारों ओर प्रकाशमान हो उठे। पाण्डव, पाञ्चाल और सृञ्जयगण आकाशमण्डल को प्रज्वलित अस्त्र-शस्त्रों से परिपूर्ण देखकर बहुत ही घबरा उठे। हे नर-नाथ! जैसे-जैसे पाण्डवों के महारथी योद्धा युद्ध करते थे वैसे ही वैसे उस अस्त्र का तेज और प्रभाव बढ़ता जाता था। उस अग्निसदृश नारायणास्त्र के तेज से सब सैनिक मरने और भस्म तथा पीड़ित होने लगे। शीत के बाद ग्रीष्म में अग्नि जैसे सूखी घास के ढेर को जलावे वैसे ही नारायणास्त्र पाण्डव-सेना को भस्म करने लगा। २०

महाराज! धर्मराज युधिष्ठिर ने अश्वत्थामा के नारायणास्त्र के प्रभाव से अपनी सेना के कुछ आदमियों को मरते, कुछ को अचेत, कुछ को भागते और अर्जुन को युद्ध से उदासीन

देखकर भय से व्याकुल होकर कहा—हे धृष्टद्युम्न ! तुम पाञ्चालों की सेना लेकर शीघ्र भागो। हे सात्यकि ! तुम भी वृष्णि-अन्धक आदि यादव वीरों को लेकर प्रस्थान करो। धर्मात्मा श्रीकृष्ण स्वयं अपनी रक्षा का उपाय निकाल लेंगे; क्योंकि वे जब औरों को उनके कल्याण का उपदेश करते हैं तब अपने लिए क्यों न बचत का उपाय सोचेंगे। हे सैनिको ! मैं तुमसे कहता हूँ कि अब युद्ध न करो। मैं अपने भाइयों के साथ जलती हुई आग में कूदकर प्राणत्याग करूँगा। हाय ! भीष्म और द्रोणरूप महासागर के पार होकर मैं इस समय गाय के पैर के गढ़े के समान अश्वत्थामा के पराक्रम में बन्धु-बान्धवों सहित डूब रहा हूँ। अर्जुन मुझ पर इसलिए कुपित हैं कि मैंने मिथ्या बोलकर महात्मा आचार्य का वध कराया है। सो मैं प्राणत्याग करके अर्जुन की ३० इच्छा पूरी करूँगा। समर-निपुण, निष्ठुर कर्म करनेवाले महारथियों ने जब युद्ध-कला में कच्चे, अकेले बालक अभिमन्यु को निहत्था करके मारा था, तब आचार्य ने उसकी रक्षा नहीं की। पति-परायणा द्रौपदी ने कौरव-सभा में दीन दशा को प्राप्त होकर दासी-भाव से बचने के लिए जब प्रश्न किया था तब पुत्र सहित द्रोणाचार्य ने भी उपेक्षा दिखलाई थी, धर्मानुकूल उत्तर नहीं दिया था। अन्य सैनिकों के थक जाने पर जब दुर्योधन ने अर्जुन-वध के लिए उत्सुकता प्रकट की तब द्रोणाचार्य ने उसको अभेद्य कवच बाँध दिया था और उसे अर्जुन के मारने और जयद्रथ की रक्षा के लिए भेजा था। मेरे विजय-लाभ के लिए यत्न कर रहे, पुत्र-बन्धु-बान्धव सहित सत्यजित आदि, पाञ्चालों को द्रोणाचार्य ने ब्रह्मास्त्र के बल से मार डाला। कौरवों ने अधर्म के सहारे जब हम लोगों को देश से निकालकर वन को भेज दिया था तब द्रोणाचार्य ने ही हमें युद्ध नहीं करने दिया था। इस तरह सदा हम पर अत्यन्त स्नेह दिखलानेवाले हितचिन्तक द्रोणाचार्य जब मारे गये तब मुझे भी भाइयों सहित मर जाना ही चाहिए।

सञ्जय कहते हैं कि राजन् ! युधिष्ठिर इस तरह कुपित होकर व्यंग्य वचन कह रहे थे कि इसी समय श्रीकृष्ण ने हाँथ के इशारे से पाण्डव पक्ष के सैनिकों को युद्ध से रोकते हुए कहा—हे वीरो ! तुम लोग फ़ौरन् अस्त्र-शस्त्र रखकर अपने-अपने वाहनों से नीचे उतर आओ। तुम लोग शस्त्र त्यागकर जब पृथ्वी पर पड़ जाओगे तभी इस अमोघ नारायणास्त्र के तेज से बच सकोगे। इस अस्त्र से बचने का यही एक उपाय है। रथ, घोड़े, हाथी आदि की पीठों पर से उतरकर, शस्त्र रखकर, पृथ्वी पर पड़ रहनेवालों को यह अस्त्र नहीं नष्ट करता। हमारे योद्धा लोग जैसे-जैसे इस अस्त्र को व्यर्थ करने के लिए युद्ध करेंगे वैसे ही वैसे इस अस्त्र के प्रभाव से ४० कौरव प्रबल होते जायँगे। मैं सच कहता हूँ और तुम लोगों को समझाता हूँ कि जो लोग वाहनों से उतर जाते हैं, शस्त्र फेंक देते हैं, हाथ जोड़ते और दीन भाव से प्रणाम करते हैं, उन मनुष्यों को यह अस्त्र नहीं मारता। इसके विरुद्ध जो लोग मन में भी युद्ध करने की इच्छा रक्खेंगे वे, चाहे पाताल में चले जायँ पर, इस अस्त्र से नहीं बच सकते।

हे भरतश्रेष्ठ ! श्रीकृष्ण के वचन सुनकर सब योद्धाओं ने वही किया। अस्त्र-शस्त्र रख दिये और युद्ध का विचार ही मन से दूर कर दिया। उन सबको अस्त्र-शस्त्र रखकर युद्ध बन्द करते देख क्रोधी भीमसेन उन लोगों के मन में युद्ध के लिए उत्साह उत्पन्न करते हुए कहने लगे—हे वीरो ! तुममें से कोई कदापि शस्त्र-त्याग न करे। मैं खुद बाण-वर्षा करके अश्वत्थामा के अस्त्र को व्यर्थ किये देता हूँ। मैं इस सुवर्ण-भूषित भारी गदा को तानकर, अश्वत्थामा के चलाये नारायणास्त्र को चूर्ण करके, काल की तरह शत्रुओं पर प्रहार करूँगा। जैसे सूर्य के समान कोई प्रकाशमय पदार्थ नहीं है वैसे ही पृथ्वी पर मेरे तुल्य बली कोई पुरुष नहीं है। ऐरावत हाथी की सूँड़ के समान सुदृढ़ मेरे इन हाथों को देखो, ये हिमालय पहाड़ को भी उखाड़कर फेंक सकते हैं। मुझमें दस हज़ार हाथियों का बल है। देवलोक में जैसे इन्द्र की समता करनेवाला कोई नहीं है वैसे ही मैं मनुष्यलोक में हूँ। आज मेरी मोटे कन्धोंवाली भुजाओं का बल और पराक्रम तुम लोग देखो। अश्वत्थामा के इस प्रज्वलित अस्त्र को मैं अभी रोकता हूँ। ५० अगर इस नारायणास्त्र का सामना करनेवाला कोई दूसरा पृथ्वी पर नहीं है, तो मैं उस प्रवाद को मिथ्या कर दिखाऊँगा। कौरव और पाण्डव देखेंगे कि भीमसेन अपने बाहुबल से उस अस्त्र का सामना कर रहा है। हे अर्जुन ! तुम गाण्डीव धनुष को कभी हाथ से न रखना। अगर ऐसा करोगे तो चन्द्र के कलङ्क की तरह यह बात तुम्हारे निर्मल यश में धब्बा लगा देगी।

अर्जुन ने कहा—हे भीमसेन ! मेरी यह सदा के लिए प्रतिज्ञा है कि गाय, ब्राह्मण और नारायणास्त्र के विरुद्ध मैं गाण्डीव धनुष नहीं धारण करता। अर्जुन के ये वचन सुनकर, उनसे और कुछ न कहकर, क्रोध से भरे हुए भीमसेन सूर्य के समान प्रकाशमान और मेघगर्जन-तुल्य गम्भीर शब्द कर रहे श्रेष्ठ रथ को हँकवाकर वेग से अश्वत्थामा की ओर चले। हाथ की फुर्ती दिखाते हुए भीमसेन ने दम भर में असंख्य बाणों से अश्वत्थामा के रथ को छिपा दिया। तब महारथी अश्वत्थामा ने हँसकर वेग से आ रहे भीमसेन से ठहरो-ठहरो कहकर उनके ऊपर अस्त्र से अभिमन्त्रित, प्रज्वलित, तीक्ष्ण असंख्य बाणों की वर्षा कर दी। प्रज्वलित मुखवाले विषैले नाग के आकार के वे बाण मुख से आग उगल रहे थे। उन बाणों से घिरे हुए भीमसेन सुवर्णमय चिनगारियों से व्याप्त-से प्रतीत होने लगे। उस समय भीमसेन का शरीर सायङ्काल को जुगनुओं से परिपूर्ण पर्वत के समान देख पड़ने लगा। अश्वत्थामा का वह भयानक अस्त्र, युद्ध करने के लिए उद्यत, भीमसेन के ऊपर पहुँचकर हवा के वेग से बढ़ी हुई आग के समान प्रचण्ड हो उठा। उस समय भीमसेन के सिवा और सब पाण्डव-सेना मारे डर के शस्त्र-अस्त्र रखकर रथ, घोड़े, हाथी आदि से पृथ्वी पर उतरने लगी। योद्धा लोग जब शस्त्र रखकर ६१ वाहनों से उतर पड़े तब वह भयानक अस्त्र उन सबको छोड़कर केवल भीमसेन के मस्तक पर पहुँचकर प्रचण्ड रूप प्रकट करने लगा; क्योंकि एक वही किसी तरह समर से नहीं हटे थे।

सब प्राणी, और विशेषकर पाण्डव लोग, भीमसेन को अस्त्र के तेज से घिरा हुआ देखकर, उनके
६३ लिए प्राण-सङ्कट उपस्थित देख, हाहाकार करने लगे।

दो सौ अध्याय

भीमसेन के हाथ से बलपूर्वक शस्त्र छीन लेने पर अस्त्र का शान्त हो जाना।
फिर संकुल युद्ध आरम्भ होना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! भीमसेन को अस्त्र के तेज से घिरा हुआ देखकर अर्जुन ने उसके तेज से बचाने के लिए भीमसेन के शरीर को वारुणास्त्र से ढक दिया। अस्त्र के तेज की चकाचौंध और अर्जुन की फुर्ती के कारण और कोई यह न देख सका कि भीमसेन वारुणास्त्र से सुरक्षित हैं। घोड़े, रथ, सारथी सहित भीमसेन नारायणास्त्र के तेज के घेरे में वैसे ही प्रतीत होने लगे जैसे ज्वालामालायुक्त दुर्निरीक्ष्य अग्नि अग्नि के भीतर देख पड़े। सायङ्काल के समय सब ज्योतिर्मय ग्रह आदि जैसे अस्ताचल पर जाते हैं वैसे ही अश्वत्थामा के बाण भीमसेन के रथ पर गिरने लगे। रथ, सारथी और घोड़ों सहित भीमसेन अश्वत्थामा के अस्त्र से घिरकर अग्निपुञ्ज के भीतर हो गये। जिस तरह प्रलयकाल में चराचर जगत् को जलाकर अग्नि भगवान् सङ्कर्षण के मुख में चला जाता है उसी तरह अस्त्र के अग्निमय तेज ने भीमसेन को घेर लिया। जैसे सूर्यमण्डल में अग्नि अथवा अग्नि के भीतर सूर्य प्रविष्ट हों, वैसे ही अस्त्र-तेज से घिरे हुए तेजस्वी भीमसेन को भी कोई नहीं देख पाता था।

तब महावीर अर्जुन और श्रीकृष्ण उस भयानक अस्त्र को भीमसेन के रथ पर प्रज्वलित, अश्वत्थामा को प्रतिद्वन्द्वी योद्धा के न होने से विजयी, पाण्डव-सेना को शस्त्र-हीन अचेत और युधिष्ठिर आदि महारथियों को रण से विमुख तथा भय से विह्वल देखकर जल्दी से रथ से उतर
१० पड़े और भीमसेन की ओर दौड़े। वे दोनों ही योग के बल से अश्वत्थामा के अस्त्र के तेज के भीतर घुस गये। उन्होंने शस्त्र रख दिये थे, इस कारण भी उस अस्त्र की आग ने उन्हें भस्म नहीं किया। वारुणास्त्र के प्रयोग और नर-नारायण-रूप अर्जुन तथा श्रीकृष्ण के प्रभाव से भीमसेन भी भस्म होने से बचे हुए थे। तब नर-नारायण-रूप अर्जुन और श्रीकृष्ण, नारायणास्त्र की शान्ति के लिए, बलपूर्वक भीमसेन के हाथ से शस्त्र छीनकर उन्हें रथ से खींचने लगे। भीमसेन उस समय भी घोर सिंहनाद करते जाते थे और वह अश्वत्थामा का दुर्जय अस्त्र भी प्रचण्ड होता जाता था। श्रीकृष्ण ने कहा—हे भीमसेन, यह तुम क्या अनर्थ कर रहे हो? मना करने पर भी युद्ध बन्द नहीं करते! अगर इस समय ये कौरव युद्ध करके जीते जा सकते तो हम लोग भी युद्ध करते और ये वीर योद्धा भी युद्ध से विमुख न

होते। देखो, तुम्हारे पक्ष के सभी वीर रथों और वाहनों से उतर पड़े हैं। इसलिए तुम भी चटपट रथ से उतर पड़ो। अब श्रीकृष्ण ने भीमसेन को रथ से उतार लिया। क्रोध से लाल आँखें करके साँप की तरह फुफकार रहे भीमसेन ने लाचारी से शस्त्रत्याग किया। बस, नारायणास्त्र का तेज भी शान्त हो गया।

सञ्जय कहते हैं—महाराज! इस उपाय से नारायणास्त्र का दुःसह तेज शान्त हो जाने पर सब दिशा और उपदिशाएँ प्रकाशपूर्ण हो उठीं। अनुकूल कोमल हवा चलने लगी। मृग, पक्षी आदि ने शान्त भाव धारण कर लिया। योद्धा और वाहन प्रसन्नचित्त हो उठे। उस घोर तेज के शान्त होने पर पराक्रमी भीमसेन प्रातःकाल उदय हुए सूर्य के समान अत्यन्त शोभा को प्राप्त हुए। मरने से बची हुई पाण्डवों की सेना अस्त्र के शान्त होने पर, प्रसन्न होकर, आपके पुत्रों को मारने के लिए फिर युद्ध का उद्योग करने लगी। राजा दुर्योधन ने, यह देखकर कि वह अमोघ अस्त्र शान्त हो गया और शत्रु-सेना फिर युद्ध करने को तैयार है, खिन्न होकर अश्वत्थामा से कहा—हे आचार्यपुत्र! विजय की इच्छा से ये पाञ्चालगण फिर युद्ध करने को तैयार हैं। इसलिए तुम फिर उसी अस्त्र का प्रयोग करो। आपके पुत्र के वचन सुनकर अश्वत्थामा ने दीन भाव से साँस लेकर कहा—राजन्! न तो यह अस्त्र फिर लौटाया जा सकता है और न दुबारा इसका प्रयोग ही किया जा सकता है। अगर कोई दुबारा इसका प्रयोग करे तो इसमें सन्देह नहीं कि यह अस्त्र प्रयोग करनेवाले को ही मार डालता है। श्रीकृष्ण ने ही शत्रुओं को उपाय बताकर इस अस्त्र के तेज से बचा लिया है। ख़ैर, हारना और मरना दोनों ही समान हैं; बल्कि इस तरह हारकर रण से हटने की अपेक्षा मरना ही श्रेष्ठ है। शत्रुगण शस्त्र त्यागकर मृततुल्य हो गये थे और सबको हमने जीत लिया था। तब दुर्योधन ने फिर कहा—हे आचार्यपुत्र! यदि अब वह अस्त्र फिर नहीं छोड़ा जा सकता तो अन्य अस्त्रों के बल से गुरुहत्या करनेवाले पाञ्चालों और पाण्डवों का संहार करो। तुमसे बढ़कर अस्त्रविद्या जाननेवाला तो

कोई है ही नहीं। जैसे महापराक्रमी देव-देव के पास सब श्रेष्ठ अस्त्र हैं वैसे ही तुम भी सब दिव्य अस्त्रों को जानते हो। तुम चाहो तो क्रुद्ध इन्द्र के भी दाँत खट्टे कर सकते हो।

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! नारायणास्त्र के प्रतिहत होने पर, दुर्योधन के ये वचन सुनकर, अश्वत्थामा ने क्या कहा? उन्होंने युद्ध के लिए उद्यत पाण्डवों को देखकर फिर क्या किया?

सञ्जय ने कहा—महाराज! सिंहपुच्छ की ध्वजा से शोभित रथवाले महावीर अश्वत्थामा ने पिता की मृत्यु से कुपित होकर निर्भय भाव से धृष्टद्युम्न पर आक्रमण करने का उद्योग किया। उन्होंने बड़े वेग से पचीस क्षुद्रक बाण धृष्टद्युम्न को मारकर व्याकुल कर दिया। तब महापराक्रमी धृष्टद्युम्न ने कुपित होकर प्रज्वलित अग्नि के समान अश्वत्थामा को तिरसठ बाण, उनके सारथी को सुवर्णपुङ्ख-युक्त अति तीक्ष्ण बीस बाण और उनके चारों घोड़ों को चार बाण मारकर ऐसा सिंहनाद किया कि पृथ्वी काँप उठी। इसके बाद वे बारम्बार बाण मारकर अश्वत्थामा को पीड़ित करने लगे। उस समय ऐसा जान पड़ा कि प्रलयकाल उपस्थित है और कोई जीवित नहीं बचेगा। फिर अस्त्र-विद्या में निपुण पराक्रमी धृष्टद्युम्न ने प्राणों की ममता
४० छोड़कर अश्वत्थामा के पास पहुँचकर उनके मस्तक के ऊपर लगातार बाण बरसाये।

महावीर अश्वत्थामा भी पिता के वध को याद करके क्रोधान्ध हो उठे। उन्होंने पहले धृष्टद्युम्न को बाणों के प्रहार से पीड़ित करके फिर बहुत ही उग्र दस बाण मारे। दो क्षुरप्र बाणों से उनका ध्वजा सहित धनुष काट डाला। इसके बाद उन्हें अनेक बाणों के प्रहार से विह्वल करके उनके रथ, सारथी और घोड़ों को नष्ट कर दिया। धृष्टद्युम्न के सहायक साथी भी अश्वत्थामा के बाणों की चोट से विह्वल हो उठे। उस समय पाञ्चाल-सेना के वीरगण अत्यन्त पीड़ित हो युद्ध छोड़कर भागने लगे।

महाराज! पाञ्चाल वीरों को रण से विमुख और धृष्टद्युम्न को अत्यन्त पीड़ित देखकर वीर सात्यकि, अपना रथ हँकवाकर, शीघ्र ही अश्वत्थामा के सामने पहुँचे। उन्होंने पहले आठ और फिर बीस बाण मारकर अश्वत्थामा और उनके सारथी को घायल कर दिया। फिर चार बाणों से चारों घोड़ों को व्यथित करके फुर्ती के साथ अश्वत्थामा की ध्वजा और धनुष काट डाला। अश्वत्थामा के सुवर्ण-मण्डित, बढ़िया घोड़ों से शोभित, रथ को चूर्ण करके उनकी छाती में ताककर तीस विकट बाण मारे। इस तरह बाणों से पीड़ित होकर महापराक्रमी अश्वत्थामा यह न सोच सके कि अब क्या करें।

राजन्! महाराज दुर्योधन, अश्वत्थामा की यह दशा देखकर, कृपाचार्य और कर्ण आदि
५० वीरों के साथ आगे बढ़कर सात्यकि के ऊपर बाणों की वर्षा करने लगे। दुर्योधन ने बीस, कृपाचार्य ने तीन, कृतवर्मा ने दस, कर्ण ने पचास, दुःशासन ने सौ और वृषसेन ने सात बाण एक साथ सात्यकि को मारे। इस तरह उन महारथियों के आक्रमण करने पर सात्यकि क्रोध
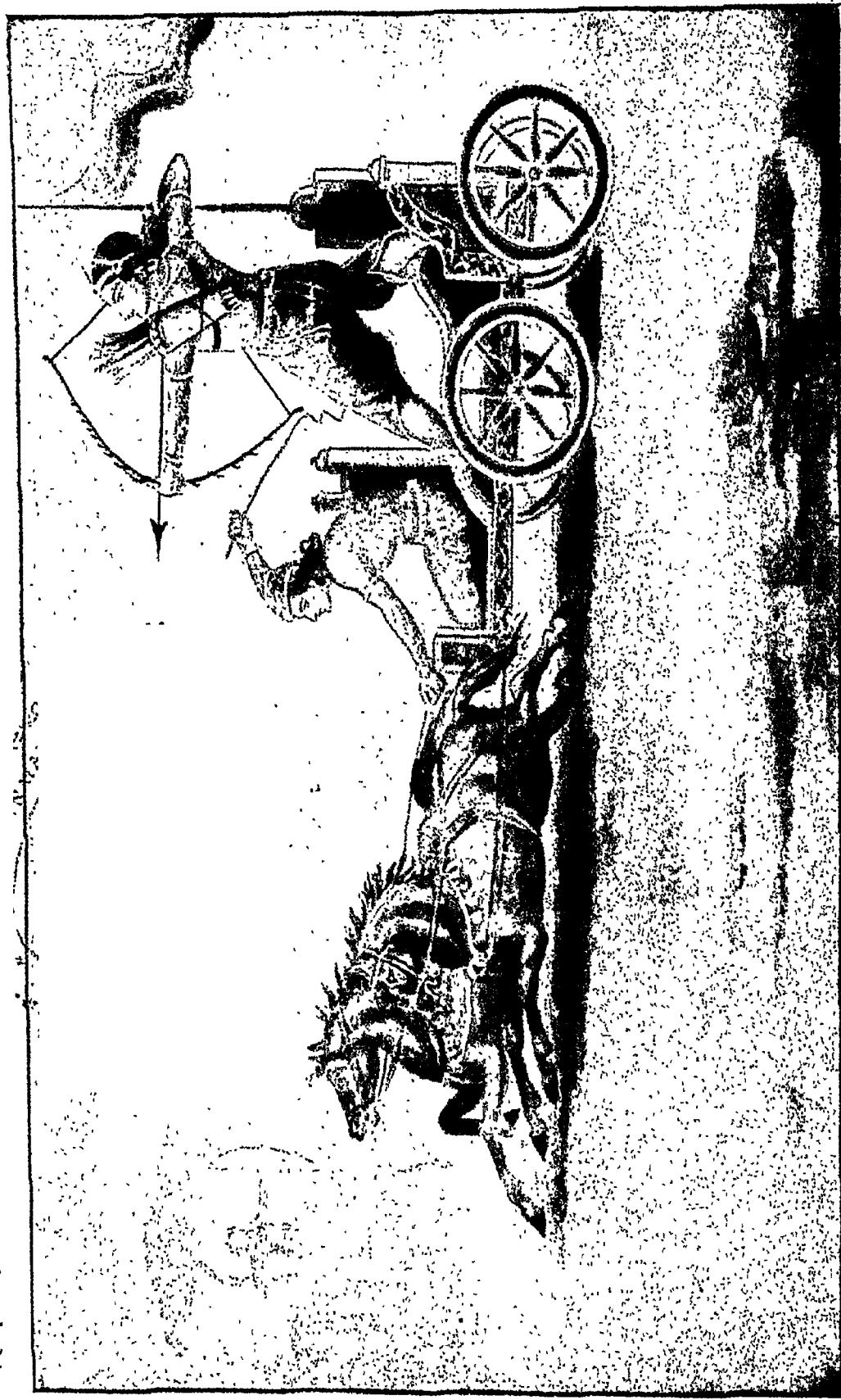
महावीर अश्वत्थामा कुपित होकर, दूसरे रथ पर बैठ कर, सात्यकि को मार डालने का इरादा करके उनकी ओर वेग से चले।—२६४१

से विह्वल हो उठे। उन्होंने देखते ही देखते सब महारथियों को रथ-हीन करके रण से विमुख कर दिया। इसी अवसर में अश्वत्थामा को होश आ गया। वे बारम्बार साँस लेने और चिन्तित होकर सोचने लगे। फिर वे दूसरे दृढ़ रथ पर बैठकर सात्यकि के ऊपर बाण बरसाने और उन्हें विमुख करने की कोशिश करने लगे। महावीर सात्यकि ने अश्वत्थामा को फिर सामने युद्ध के लिए उपस्थित देखकर उन्हें रथ-हीन कर दिया। सत्यविक्रमी सात्यकि की फुर्ती और पराक्रम देखकर पाण्डव लोग प्रसन्न होकर सिंहनाद और शङ्खनाद करने लगे। सात्यकि ने इस तरह अश्वत्थामा को रथ-रहित करके वृषसेन के अनुगामी तीन हज़ार महारथियों को, कृपाचार्य के साथ के पन्द्रह हज़ार हाथियों को और शकुनि के अधीन पचास हज़ार घोड़ों को उनके योद्धाओं सहित नष्ट कर दिया।

अब महावीर अश्वत्थामा कुपित होकर, दूसरे रथ पर बैठकर, सात्यकि को मार डालने का इरादा करके उनकी ओर वेग से चले। शत्रु-दल-दलन सात्यकि ने फिर अश्वत्थामा को आते ६० देखकर बारम्बार तीक्ष्ण बाण मारकर उनको घायल कर दिया। इस तरह अत्यन्त घायल होने के कारण क्रुद्ध अश्वत्थामा ने तिरस्कार की हँसी हँसते हुए सात्यकि से कहा—हे यदुपुङ्गव! मैं जानता हूँ कि आचार्य की हत्या करनेवाले दुरात्मा धृष्टद्युम्न के प्रति तुम्हारा पक्षपात का भाव है। किन्तु याद रक्खो, तुम कभी दुष्ट धृष्टद्युम्न को या अपने को मेरे हाथ से बचा नहीं सकोगे। मैं सत्य और तप की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि सब पाञ्चालों को मारे बिना मुझे चैन नहीं मिलेगा। तुम सारी पाण्डव-सेना, यादव-सेना और पाञ्चाल-सेना को एकत्र करके भी अगर उनकी रक्षा करोगे तो भी मैं उनमें से किसी को जीता नहीं छोड़ूँगा।

महाराज! पराक्रमी अश्वत्थामा ने यों कहकर अद्भुत पराक्रम दिखाया। इन्द्र ने जैसे वृत्रासुर को वज्र मारा था वैसे ही अश्वत्थामा ने एक सूर्य-किरण-सदृश प्रज्वलित तीक्ष्ण विकट बाण धनुष पर चढ़ाकर सात्यकि के ऊपर वेग से छोड़ा। फुफकारता हुआ विषैला नाग जैसे बिल में घुसता है वैसे ही वह बाण अश्वत्थामा के धनुष से छूटकर सात्यकि के कवच को तोड़-कर शरीर को फोड़कर पृथ्वी में घुस गया। राजन्! पराक्रमी सात्यकि उस बाण की गहरी चोट खाकर अंकुश-पीड़ित गजराज की तरह काँप उठे और व्यथा के मारे अचेत हो गये। उनका शरीर खून से तर हो गया, हाथ से धनुष-बाण छूट पड़ा और वे रथ पर गिरकर निश्चेष्ट हो गये। उनकी यह दशा देखकर सारथी उनके रथ को अश्वत्थामा के आगे से हटा ले गया। इसी समय अश्वत्थामा ने धृष्टद्युम्न की भौंहों के बीच में एक सुवर्णपुङ्ख-युक्त आड़ी डण्डी का विकट बाण ताककर मारा। वे पहले ही बहुत घायल हो चुके थे, अब फिर वह बाण मर्मस्थल ७० में लगने से ध्वजा के डण्डे को पकड़कर रथ पर बैठ गये। सिंह-पीड़ित गजराज की तरह जब धृष्टद्युम्न यों अश्वत्थामा के बाणों की चोट से व्याकुल हो गये तब पाण्डवों की ओर से

महाबली अर्जुन, भीमसेन, पुरुवंशी वृद्धक्षत्र, चेदि देश के युवराज और अवन्ति देश के राजा सुदर्शन, ये पाँच शूर महारथी वेग से अश्वत्थामा पर आक्रमण करने के लिए चले। चारों ओर हाहाकार मच गया। हाथ में धनुष लेकर इन वीरों ने वीर अश्वत्थामा को चारों ओर से घेर लिया। इन लोगों ने बीस पग के फ़ासले पर ठहरकर यत्न-पूर्वक कुपित अश्वत्थामा को एक साथ पाँच-पाँच बाण मारे। महाबली अश्वत्थामा ने विषैले नाग ऐसे पचीस बाणों से एक साथ सबके पचीसों बाणों को काट डाला। फिर वृद्धक्षत्र को सात, सुदर्शन को तीन, अर्जुन को एक और भीमसेन को छः बाण मारे। अश्वत्थामा के बाणों से पीड़ित पाँचों महारथी कभी एक साथ और कभी अलग-अलग सुवर्णपुङ्ख तीक्ष्ण बाण मारकर उन्हें घायल करने लगे। फिर चेदि देश के युवराज ने बीस, अर्जुन ने

आठ और अन्य तीनों ने तीन-तीन बाण अश्वत्थामा को मारे। उन्होंने भी क्रुद्ध होकर अर्जुन को छः, श्रीकृष्ण को दस, भीमसेन को पाँच, चेदि-युवराज को चार, वृद्धक्षत्र और सुदर्शन को दो-दो बाण मारकर भीमसेन के सारथी को छः उग्र बाण मारे। और दो बाणों से उनका धनुष और ध्वजा काट डाली। फिर अर्जुन पर घोर बाण-वर्षा करके वे सिंह की तरह गरजने लगे। इन्द्र-तुल्य महाबली तेजस्वी उग्र अश्वत्थामा अपने आगे, पीछे, आसपास, सब ओर तीक्ष्ण बाण बरसा रहे थे। उनके घोररूप बाण पृथ्वी, आकाश, अन्तरिक्ष, दिशा, उपदिशा आदि सब स्थानों में छा गये। अश्वत्थामा ने अपने रथ के पास पहुँच गये सुदर्शन का सिर और इन्द्रकेतु के समान दोनों हाथ, एक साथ ही, तीन बाणों से काट डाले। फिर शक्ति के प्रहार से पौरव वृद्धक्षत्र को घायल करके बाणों से उनके रथ के टुकड़े-टुकड़े कर डाले और चन्दनचर्चित दोनों हाथ काटकर एक भल्ल बाण से उनका सिर भी काट डाला। नीलकमल-वर्ण, युवा, चेदि देश के युवराज को परास्त करके उन्होंने फुर्ती के साथ प्रज्वलित अग्नि के समान बाणों से उन्हें घायल कर दिया और फिर उन्हें, उनके सारथी और घोड़ों समेत, मार डाला।

८०

अपने पक्ष के तीन महारथियों को अश्वत्थामा के बाणों से निहत देखकर प्रतापी भीमसेन क्रोध से विह्वल हो उठे। उनकी आँखें लाल हो आईं। वे कुपित साँप के समान भयानक बाण बरसाकर अश्वत्थामा को पीड़ित करने लगे। तेजस्वी अश्वत्थामा भी भीमसेन के बाणों को व्यर्थ करके उन्हें तीक्ष्ण बाणों से घायल करने लगे। तब अमितपराक्रमी भीमसेन ने एक क्षुरप्र बाण से अश्वत्थामा का धनुष काट डाला और इसी अवसर में बाण मारकर उनके अङ्गों को छिन्न-भिन्न कर दिया। महामनस्वी द्रोणपुत्र ने वह कटा हुआ धनुष फेंककर दूसरा दृढ़ धनुष हाथ में लिया ९० और फिर पहले की तरह वे भीमसेन को असंख्य बाण मारने लगे। इस तरह पराक्रमी अश्वत्थामा और बली भीमसेन दोनों जल बरसा रहे बादलों की तरह एक दूसरे पर बाण-वर्षा कर रहे थे। सूर्य जैसे मेघों में छिप जाते हैं वैसे ही अश्वत्थामा भी भीमसेन के नाम-चिह्नित सुवर्णपुङ्ख तीक्ष्ण बाणों में छिप गये। उधर भीमसेन का भी यही हाल था। उन्हें भी अश्वत्थामा के छोड़े हुए सन्नतपर्वयुक्त भयानक बाणों ने अदृश्य कर दिया। राजन्! उस समय भीमसेन को अश्वत्थामा के असंख्य बाणों की चोट खाकर भी विचलित न होते देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर महाबली भीमसेन ने यमदण्ड-तुल्य भयानक, लोहे के, सुवर्णभूषित दस नाराच बाण अश्वत्थामा को मारे। साँप जैसे बिल में घुसते हैं वैसे ही वे नाराच अश्वत्थामा की हसली के हाड़ों को चोट पहुँचाते हुए शरीर के भीतर घुस गये। यह गहरी चोट लगने के कारण अश्वत्थामा अत्यन्त विह्वल हो उठे। वे ध्वजा का डण्डा पकड़कर, आँखें मूँदकर, अचेत हो गये; किन्तु दम भर में ही वे सँभल गये। शरीर खून से तर था, आँखें लाल हो रही थीं। क्रोध से भीमसेन के रथ की ओर झपटकर, कानों तक खींचकर, उन्होंने विषैले साँप-सदृश सौ बाण मारे। रणप्रिय भीमसेन अश्वत्थामा के बल की याद करके उन पर भयानक बाण- १०० वर्षा करने लगे। अश्वत्थामा ने तीक्ष्ण बाणों से भीमसेन का धनुष काटकर उनके हृदय में बाण मारे। भीम ने फुर्ती से दूसरा धनुष लेकर उनको पाँच विकट बाण मारे। इस तरह क्रोध से आँखें लाल किये हुए दोनों वीर, वर्षा ऋतु के बरसनेवाले बादलों की तरह, परस्पर बाण बरसाने लगे। तलशब्द से वे एक दूसरे को डरा रहे थे। दोनों ही एक दूसरे के कार्य का जवाब वैसे ही कार्य से देना चाहते थे। शरद ऋतु के स्वच्छ आकाश में प्रकाशमान दोपहर के प्रचण्ड सूर्य के समान प्रतीत होनेवाले तेजस्वी अश्वत्थामा ने सुवर्ण-भूषित भारी धनुष चढ़ाकर पास ही से बाण बरसानेवाले भीमसेन की ओर क्रोध से देखा। उस समय अश्वत्थामा ऐसी फुर्ती कर रहे थे कि उन्हें बाण निकालते, धनुष पर चढ़ाते, डोरी खींचते और बाण छोड़ते कोई नहीं लख पाता था। केवल अलातचक्र (जलती हुई लकड़ी को तेज़ी से घुमाने में जो घेरा सा देख पड़ता है) के समान उनके धनुष का मण्डल ही सबको दिखाई पड़ रहा था। उनके धनुष से छूटे हुए सैकड़ों-हज़ारों बाण आकाश में टीड़ियों की कतार सी देख पड़ते थे। अश्वत्थामा १०

के सुवर्णभूषित घोर बाण लगातार भीमसेन के रथ पर गिर रहे थे। उस समय हमने भीमसेन का बल, पराक्रम, प्रभाव और दृढ़ निश्चय देखा कि अश्वत्थामा की उस दारुण बाण-वर्षा को वे, वर्षा के बादलों की जलवर्षा के समान, अनायास सह रहे थे। अश्वत्थामा को मारने के लिए यत्न कर रहे भीमसेन भी वर्षा ऋतु के मेघ की तरह लगातार बाण बरसा रहे थे। ज़ोर से बारम्बार खींचा जा रहा भीमसेन का धनुष, जिसकी पीठ सोने से मढ़ी हुई थी, दूसरा इन्द्रधनुष सा जान पड़ रहा था। उनके धनुष से लगातार सैकड़ों-हज़ारों बाण निकलकर अश्वत्थामा को चारों ओर से ढक देते थे। वे दोनों योद्धा इस तरह लगातार बाण छोड़ रहे थे कि बीच में शायद हवा भी नहीं जा सकती थी।

महाराज! इसी बीच में अश्वत्थामा ने भीमसेन को मारने के लिए सुवर्णपुङ्ख-शोभित, तेल से साफ़ किये गये, पैने बाण छोड़े। भीमसेन ने फ़ुर्ती से बाण चलाकर राह में ही एक-एक बाण के तीन-तीन टुकड़े कर डाले। इस तरह अश्वत्थामा से बढ़कर पराक्रम दिखाने को उद्यत भीमसेन "ठहरो, ठहरो" कहकर गरजने लगे। बलवान् कुपित भीमसेन, अश्वत्थामा को मारने के लिए, फिर उग्र बाण उन पर बरसाने लगे। तब श्रेष्ठ अस्त्रों के ज्ञाता अश्वत्थामा ने अस्त्र-बल से शीघ्र ही उस बाण-वर्षा को व्यर्थ करके भीमसेन का धनुष काट डाला और फिर अनेक बाण मारकर उनके शरीर को छिन्न-भिन्न कर दिया। धनुष कट जाने पर बलवान् भीमसेन ने क्रोध करके दारुण रथशक्ति हाथ में ली और उसको तानकर अश्वत्थामा के रथ पर फेंका। भारी उल्का के समान एकाएक आनेवाली उस शक्ति को फ़ुर्ती से अश्वत्थामा ने बीच में ही बाणों से काट डाला। तब भीमसेन ने हँसते-हँसते दूसरा दृढ़ धनुष लेकर अश्वत्थामा को कई उग्र बाण मारे। इसी समय अश्वत्थामा ने एक तीक्ष्ण बाण भीमसेन के

१२०

सारथी को मारा; जिससे उसका मस्तक फट गया। बलवान् अश्वत्थामा के बाण की गहरी चोट खाकर सारथी मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। उसके हाथ से घोड़ों की रास छूट गई। सारथी

के अचेत हो जाने पर घोड़े भीमसेन और अन्य योद्धाओं के सामने ही रथ को लेकर भाग खड़े हुए। अपराजित अश्वत्थामा ने देखा कि भीमसेन को उनके घोड़े अन्यत्र लिये जा रहे हैं। तब उन्होंने आनन्दपूर्वक अपना शङ्ख बजाया। इस तरह रण से भीमसेन के भाग जाने पर पाञ्चाल-गण भी डर के मारे धृष्टद्युम्न को अकेले छोड़कर भाग खड़े हुए। वीर अश्वत्थामा भागती हुई पाण्डव-सेना को बाणवर्षा से पीड़ित करते हुए वेग से उसका पीछा करने लगे। पाण्डव पक्ष के अन्य सब क्षत्रिय भी अश्वत्थामा के बाणों से अत्यन्त व्याकुल होकर इधर-उधर भागने लगे। १३१

दो सौ एक अध्याय

अग्न्यस्त्र का प्रयोग। दोनों सेनाओं का युद्ध बन्द कर डेरे को लौटना

सञ्जय कहते हैं—महाराज! उस समय सब सेना को छिन्न-भिन्न होते देखकर महावीर अर्जुन अश्वत्थामा को जीतने के लिए सेना को लौटाने लगे। श्रीकृष्ण और अर्जुन ने यत्नपूर्वक सबको ढाढ़स बँधाया और लौटाया। सब सैनिक लौटकर युद्ध करने को उद्यत हो गये। उस समय अर्जुन सैन्य-सामन्त सहित सोमकगण, मत्स्य देश के और अन्य अनेक योद्धाओं को साथ लेकर कौरवों से युद्ध करने को उद्यत हुए। उन्होंने शीघ्र ही सिंहपुच्छ चिह्न-युक्त ध्वजा से शोभित अश्वत्थामा के पास जाकर कहा—हे गुरु-पुत्र! तुममें जितनी शक्ति, अस्त्रज्ञान, युद्ध-कौशल, वीर्य, पौरुष, कौरवों से प्रीति, हम लोगों के प्रति द्वेष का भाव और तेज है, वह सब मुझ पर आज़मा लो। आचार्य को मारनेवाले धृष्टद्युम्न ही इस समय तुम्हारे अभिमान को चूर्ण करेंगे। कालाग्नि-सदृश तेजस्वी और

शत्रुओं के लिए मृत्युस्वरूप धृष्टद्युम्न, मैं और श्रीकृष्ण तुम्हारे सामने मौजूद हैं। हम लोगों से युद्ध करके जी भरकर पराक्रम दिखा लो। तुम बहुत ही उच्छृङ्खल और इसी से शास्त्र-विरुद्ध कार्य करते हो। मैं तुम्हारे घमण्ड को अभी मिटाये देता हूँ।

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! अश्वत्थामा महापराक्रमी और गुरु-पुत्र होने के कारण अर्जुन के माननीय हैं। अर्जुन को उनसे और उन्हें अर्जुन से बड़ा प्रेम था, दोनों ही दोनों के प्रिय सखा थे। अर्जुन ने प्रिय सखा अश्वत्थामा से पहले कभी ऐसे कठोर वचन नहीं कहे। फिर एकाएक उस समय ऐसे रूखे वचन क्यों कहे?

सञ्जय ने कहा—महाराज! चेदि देश के युवराज, राजा वृद्धक्षत्र और बाण-विद्या तथा
१० अस्त्र-विद्या में निपुण सुदर्शन को अश्वत्थामा ने मार डाला था। धृष्टद्युम्न, सात्यकि और भीमसेन को भी हराकर रण से हटा दिया था। युधिष्ठिर ने भी निराश होकर अर्जुन के प्रति ऐसे अप्रिय वचनों का प्रयोग किया था, जिनसे उनके मर्मस्थल को चोट पहुँची थी। पहले कौरवों के कारण मिले हुए दुःखों की याद आ जाने से उनका हृदय विदीर्ण सा हो गया था। इन्हीं कारणों से दुःख की प्रबलता के कारण अर्जुन के मन में प्रचण्ड क्रोध की आग जल उठी। उन्होंने क्रोधान्ध होकर अपमान के अयोग्य मान्य आचार्य-पुत्र को ऐसे रूखे अप्रिय वचन कह डाले। मर्मस्थल में चोट पहुँचानेवाले कठोर वचन अर्जुन के मुँह से सुनकर अश्वत्थामा क्रोध से साँप की तरह फुफकारने लगे। वे अर्जुन पर, विशेषकर श्रीकृष्ण के ऊपर, क्रुद्ध होकर उनके नाश का यत्न करने लगे। पराक्रमी अश्वत्थामा ने रथ पर ही आचमन करके देवताओं के लिए भी असह्य अजेय अमोघ आग्नेय अस्त्र छोड़ना चाहा। आचार्य-पुत्र ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर दृश्य और अदृश्य शत्रुओं के मारने को प्रज्वलित अग्नि के समान एक श्रेष्ठ बाण, उक्त अस्त्र से अभिमन्त्रित करके, धनुष पर चढ़ाया और अर्जुन को लक्ष्य करके छोड़ दिया। उस समय अस्त्र के प्रभाव से आकाश से तुमुल बाण-वर्षा होने

लगी और अग्निशिखाओं से परिपूर्ण वह अस्त्रयुक्त बाण अर्जुन की ओर वेग से चला। उस समय आकाश से उल्काएँ गिरने लगीं और एकाएक रौद्ररूप महा अन्धकार पाण्डवों की सेना में फैल गया। असंख्य राक्षस और पिशाच जमा होकर गरजने लगे। अमङ्गलसूचक कठोर

आँधी चलने लगी। सूर्य का प्रकाश धुँधला पड़ गया और उनकी गर्मी जाती रही। कौए २० मँडलाते हुए भयानक कर्कश शब्द करने लगे। मेघ घिर आये, उनसे जल की जगह रक्त बरसने लगा और कड़कड़ाहट पैदा होकर जगत् को विह्वल करने लगी। पशु-पक्षी, गाय आदि आर्तनाद करने लगे। योगियों की भी समाधि टूट गई, वे अशान्त हो उठे। ऐसा जान पड़ा मानों सारा ब्रह्माण्ड चक्कर खा रहा है। सब देवता आदि श्रेष्ठ प्राणी भी घबरा गये। तीनों लोक ज्वर-पीड़ित के समान सन्तप्त हो उठे। बड़े-बड़े हाथी अस्त्र के तेज से पीड़ित होकर, उससे बचने के लिए, पृथ्वी पर गिरने और साँसें लेते हुए बेचैनी से उठने-बैठने लगे। अस्त्र के तेज से सब जलाशय तप उठे और उनके भीतर रहनेवाले जीव-जन्तु उस तेज से जलने लगे। दिशाओं से, आकाशमण्डल और पृथ्वीमण्डल से—गरुड़ और वायु के समान—वेगशाली नाना प्रकार के बाण प्रकट होने लगे। शत्रुसेना के लोग महाबली अश्वत्थामा के वज्रतुल्य बाणों की चोट खाकर, अस्त्र के तेज से भस्म होकर, दावानल से जले हुए वृक्षों की तरह, पृथ्वी पर गिरने लगे। बाणों की आग से जलकर ऊँचे-ऊँचे हाथी बादलों की तरह गरजते—आर्तनाद करते—धरातल पर गिरने लगे। कुछ हाथी, जैसे वन में दावानल के बीच घिरे हों इस तरह, अस्त्र के तेज से पीड़ित होकर चिल्लाने और भागने लगे। घोड़े और रथ वन में दावानल से जले हुए वृक्षों की तरह दिखाई पड़ रहे थे। असंख्य ३० रथों के भस्म हो जाने पर रणभूमि में उनका ढेर लग गया। यों प्रज्वलित अस्त्र की प्रचण्ड आग प्रलयकाल के अग्नि की तरह पाण्डव-सेना को भस्म करने लगी।

महाराज! आपके पक्ष के वीर-गण इस तरह अश्वत्थामा के अस्त्र-युक्त बाणों से पाण्डव-सेना को जलते देखकर प्रसन्नता से सिंहनाद करने और शङ्ख-नगाड़े आदि बजाने लगे। उस समय चारों ओर अँधेरा छा जाने के कारण न तो अर्जुन ही देख पड़ते थे और न उनकी समग्र सेना ही देख पड़ती थी। अश्वत्थामा ने क्रोध करके उस समय जैसे अस्त्र का प्रयोग किया था वैसा घोर अस्त्र हम लोगों ने पहले कभी देखा या सुना नहीं था।

राजन् ! अश्वत्थामा के अस्त्र और बाणों के प्रभाव से सेना को अत्यन्त पीड़ित देखकर अर्जुन ने उसे शान्त करने के लिए ब्रह्मास्त्र छोड़ा। ब्रह्मास्त्र ने उस अस्त्र का तेज शान्त कर दिया। तब पल भर में ही वह गहरा अँधेरा मिट गया और दिशाएँ निर्मल हो गईं। ठण्डी हवा चलने लगी। उस समय हम लोगों ने देखा कि पाण्डवों की एक अक्षौहिणी सेना उस अस्त्र के प्रभाव से ऐसी नष्ट हुई कि उसके नाश की किसी को पहले खबर भी नहीं हुई। महाबली अर्जुन और श्रीकृष्ण उस घोर अँधेरे से मुक्त हो गये। उनके शरीर में कहीं कोई घाव ४० नहीं लगा था। उनका रथ, ध्वजा-पताका, घोड़े, अनुकर्ष और शस्त्र आदि सब सामग्री जैसी की तैसी बनी हुई थी। आकाश में चन्द्रमा और सूर्य के समान दोनों वीर शोभा को प्राप्त हो रहे थे। उनको इस तरह अछूते देखकर आपके पक्षवालों को बड़ा डर लगा। पाण्डवगण परम प्रसन्न होकर बड़ा कोलाहल और सिंहनाद करने लगे। उनकी सेना में शङ्ख-नगाड़े आदि असंख्य बाजे बजने लगे। पाण्डवों को अस्त्र से बचे हुए और हर्षयुक्त देखकर कौरव लोग बहुत ही व्यथित हुए। दोनों सेनाओं के लोग श्रीकृष्ण और अर्जुन की मृत्यु का निश्चय किये बैठे थे; किन्तु उन्हें शङ्ख बजाते देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। उनकी देह में घाव तक नहीं लगा था।

श्रीकृष्ण और अर्जुन को अस्त्र के तेज से बचा हुआ देखकर महावीर अश्वत्थामा बहुत ही दुःखित हुए। पल भर सोचकर, शोक और खेद से लम्बी और गर्म साँस लेकर, धनुष फेंककर वे रथ से उतर पड़े और "अहो धिक्कार है! यह सब मिथ्या है!" कहते हुए वे रणभूमि से चल दिये। इसी समय उन्हें मेघों की तरह साँवले, वेदों के आश्रयस्थल, निष्पाप, सरस्वती के कृपापात्र, महात्मा वेदव्यास के दर्शन हुए। अश्वत्थामा ने कुरुकुल के प्रवर्तक महर्षि को दीनभाव से प्रणाम किया और भर्राई हुई खेद-पूर्ण वाणी से कहा—भगवन्! मेरे अस्त्र के निष्फल होने का कारण क्या है? क्या किसी माया के कारण मेरा अस्त्र व्यर्थ हो गया है या अस्त्र की शक्ति का सब पर एक सा प्रभाव नहीं पड़ता?

अथवा प्रयोग करने में मुझसे कुछ भूल-चूक हुई जिससे कि अस्त्र निष्फल हो गया? कुछ मेरी समझ में नहीं आता। या दैव ही हम लोगों के विरुद्ध है? मैं तो समझता हूँ कि काल बड़ा बली और अनिवार्य है। इसके सिवा कृष्ण और अर्जुन के बच जाने का और क्या कारण हो सकता है? असुर, गन्धर्व, पिशाच, राक्षस, साँप, यक्ष, गरुड़ आदि पक्षी और मनुष्य, कोई भी मेरे इस अस्त्र को व्यर्थ नहीं कर सकता। किन्तु वह प्रज्वलित सर्वघाती अस्त्र केवल एक अक्षौहिणी सेना को भस्म करके ही शान्त हो गया। कृपा कर आप यह बताइए कि मनुष्य-शरीरधारी कृष्ण और अर्जुन को इस अस्त्र ने क्यों छोड़ दिया? हे मुनिवर! मैं इसका कारण आपसे सुनना चाहता हूँ, क्योंकि आप सब कुछ जानते हैं और त्रिकालदर्शी हैं। ५०

महाराज! अश्वत्थामा के यों प्रार्थना करने पर महात्मा वेदव्यास ने कहा—हे द्रोणाचार्य के पुत्र! तुम विस्मित होकर मुझसे जो गूढ़ गुरुतर बात पूछते हो उसके विषय में मैं विस्तार के साथ कहता हूँ, एकाग्र होकर सुनो। पूर्वकाल में पूर्वजों के भी पूर्वज, विश्व के रचनेवाले, भगवान् नारायण ने देव-कार्य के लिए धर्म के पुत्ररूप से अवतार लिया। उन सूर्य और अग्नि के समान तेजस्वी कमललोचन महात्मा नारायण ने पहले हिमालय पर्वत पर साठ लाख साठ हज़ार वर्ष तक ऊर्ध्ववाहु होकर, केवल वायुभक्षण करके, कठोर तपस्या की। इस तरह उन्होंने अपने शरीर को सुखाया। इसके बाद उससे भी दूने समय तक अन्य प्रकार से तप करने के कारण उनका तेज पृथ्वी और आकाश के मध्यस्थल में व्याप्त हो गया। अन्त को उस दुष्कर तपस्या के प्रभाव से ब्रह्मरूप निर्लिप्त निर्विकार हो जाने पर उन्हें विश्वेश्वर, विश्वयोनि, जगत्पति, अत्यन्त दुर्लभ-दर्शन, दुर्द्धर्ष, देवादिदेव शङ्कर के दर्शन प्राप्त हुए। भगवान् पशुपति की स्तुति सब देवता करते हैं। वे त्रिपुर-दहन महात्मा त्रिलोचन सब देवताओं के प्रभु हैं। सूक्ष्म पदार्थों से भी सूक्ष्म और बृहत् पदार्थों से भी बृहत् रुद्रदेव ब्रह्मा आदि देवताओं से भी श्रेष्ठ और उनके प्रभु हैं। उन्हें लोग हर, शम्भु, कपर्दी, चैतन्यस्वरूप, चराचर जगत् को उत्पन्न करनेवाले, अनिवार्य, अत्यन्त दुर्द्धर्ष, दुर्निरीक्ष्य, दुरासद, दुष्टों के लिए महाक्रोधी, महात्मा, संहारकर्ता, प्रजापति आदि कहते हैं। वे अनन्तवीर्य देवदेव दिव्य धनुष, बाण, सुवर्णमय कवच, पिनाक, वज्र, प्रज्वलित त्रिशूल, परश्वध, गदा, खड्ग, परिघ, दण्ड, व्याघ्राम्बर आदि धारण किये हुए हैं। उनके मस्तक पर जटाजूट और चन्द्रमा है। शरीर में यज्ञोपवीत की जगह विषैला नाग और भुजाओं में अङ्गद आदि हैं। संसार के सब जीव और भूतगण सदा उनकी सेवा करते रहते हैं। सब प्रकार की तपस्याओं के एकमात्र आधार उन शङ्कर को बड़े-बड़े ऋषि-मुनि सुन्दर स्तुतियों से प्रसन्न किया करते हैं। वे जल, दिशा, आकाश, पृथ्वी, चन्द्र, सूर्य, अग्नि और वायु इन आठ रूपों से जगत् को धारण किये हुए हैं। ब्रह्मद्रोहियों का विनाश करनेवाले उन अमृतयोनि महादेव के दर्शन चरित्रहीन और अधर्मियों को नहीं मिलते। सच्चरित्र ६० ७०

ब्राह्मण लोग पाप क्षीण और शोक दूर होने पर उनके दुर्लभ दर्शन पाते हैं। महापुरुष नारायण ने उन्हीं में मन लगाकर तप और भक्ति के द्वारा विश्वरूप धर्मस्वरूप पूजनीय इष्टदेव के दर्शन पाये।

उनके दर्शन पाने से वासुदेव नारायण के मन, वाणी, बुद्धि, आत्मा और शरीर में हर्ष का प्रवाह बहने लगा। अक्षमालाधारी ज्योतिर्मय तेजोमय विश्वकर्ता रुद्र को देखकर नारायण ने भक्तिपूर्वक प्रणाम किया। वरदान देनेवाले, पार्वती से क्रीड़ा कर रहे, भूतगणपरिवृत, प्रभु, महात्मा, अज, ईशान, विरूपाक्ष, अव्यक्तस्वरूप, कारणात्मा, अच्युत, अन्धकासुर को मारनेवाले ७१ रुद्र को प्रणाम करने के बाद कमलनयन नारायण इस तरह भक्तिपूर्वक स्तुति करने लगे—हे वरेण्य, हे आदिदेव! इस भुवन की रक्षा करनेवाले प्रजापति आपसे ही उत्पन्न हुए हैं, जिन्होंने इस पृथ्वी को बसाकर आपकी प्राचीन सृष्टि का पालन किया है। देवता, दानव, नाग, राक्षस, पिशाच, मनुष्य, गरुड़, गन्धर्व, यक्ष, तरह-तरह के सब प्राणी और लोक आपसे ही उत्पन्न हुए हैं, यही हम जानते हैं। आपकी ही शक्ति से इन्द्र, यम, वरुण, कुवेर, पितृगण, त्वष्टा, चन्द्रमा आदि सब लोकपाल अपना-अपना काम करते हैं। रूप, ज्योति, शब्द, आकाश, वायु, स्पर्श, रस, जल, गन्ध, पृथ्वी, काल, ब्रह्मा, ब्रह्म, ब्राह्मण और यह सब चराचर जगत् आपके ही शरीर से उत्पन्न है। जैसे समुद्र से छोटे-छोटे जलाशय अलग रहते हैं और प्रलयकाल में सब मिलकर एकाकार सागर हो जाता है, वैसे ही विद्वान् लोग आपसे ही सब जीवों की उत्पत्ति और आपमें ही लय होना जानते हैं और अन्त को उसी ज्ञान से उन्हें सायुज्य मुक्ति प्राप्त होती है। आपने ही स्वयंप्रकाशमान सत्यस्वरूप मनोगम्य जीवात्मा और परमात्मा रूप दो पक्षियों को, [नीचे की ओर शाखाओंवाले] पिप्पलवृक्ष को, पञ्चमहाभूत और मन तथा बुद्धि इन सात शरीररक्षक तत्त्वों को और दस इन्द्रियों को उत्पन्न किया है। भूत, वर्तमान और अज्ञेय भविष्य का विधान करनेवाले आप ही हैं। यह विश्व और सब लोक आपके ही रचे हैं। हे लोकपितामह, हे ईश! मैं आपको भजनेवाला भक्त हूँ। काम आदि बाधाओं से आप मुझे बचाइए। जो कोई आपको आत्मा का आत्मा अर्थात् परमात्मा जानता है और ज्ञानमय मानता है, वही विद्वान् शुद्धस्वरूप ब्रह्म को प्राप्त होता है। हे देवश्रेष्ठ! आप प्रकाशस्वरूप हैं। लोग आपके तत्त्व को जानकर ही महत्त्व पाते हैं। हे देवदेव! मैं लोक में पूजा के योग्य देवता की खोज कर रहा था। आपके सम्मान और पूजा के लिए ही मैंने आपकी स्तुति की है। स्तुति से प्रसन्न होकर आप मुझे दुर्लभ इष्ट वर दीजिए और ऐसा कीजिए कि आपकी माया मेरा कुछ अनिष्ट न कर सके।

व्यासजी कहते हैं कि हे अश्वत्थामा! अचिन्त्यस्वरूप पिनाकपाणि देवदेव महादेव ने ऋषिश्रेष्ठ देवश्रेष्ठ विष्णु अर्थात् नारायण की स्तुति से सन्तुष्ट होकर उन्हें इस प्रकार श्रेष्ठ वर दिये—हे नारायण! मैं तुम पर प्रसन्न होकर कहता हूँ कि मनुष्य, देवता, गन्धर्व आदि में कोई ८० भी तुम्हारे समान बली न होगा। मेरे प्रसाद से तुम्हारा बल अप्रमेय होगा। देवता, दैत्य,

महानाग, पिशाच, गन्धर्व, राक्षस, यक्ष, सुपर्ण, साँप, सिंह-व्याघ्र आदि किसी से तुम्हें भय न होगा—विश्व भर में कोई तुम्हारा सामना न कर सकेगा। समर में कोई देवता भी तुमको नहीं जीत सकेगा। मेरी कृपा से कोई भी व्यक्ति शस्त्र, वज्र, अग्नि, वायु, गीले वा सूखे पदार्थ, चर या अचर पदार्थ, हाथ, पैर, काठ, पत्थर आदि किसी के प्रहार से किसी प्रकार का कष्ट तुम्हें नहीं पहुँचा सकेगा। संग्राम में तुम मुझसे भी अधिक पराक्रमी हो जाओगे।

हे अश्वत्थामा! पूर्व समय में जिन नारायण ने शङ्कर से ऐसे वरदान पाये थे वही देवदेव इस समय वासुदेव-रूप से पृथ्वी पर प्रकट हुए हैं और माया से सब जगत् को मोहित कर रहे हैं। उन्हीं के तप (अंश) से महर्षि नर की उत्पत्ति हुई है, और अर्जुन वही नर हैं, जो सब बातों में नारायण के तुल्य हैं। ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र इन तीनों के बीच विष्णु-स्वरूप नर-नारायण ऋषि अत्यन्त तपस्वी हैं। दानवों को मारकर धर्म की स्थापना और लोक-रक्षा करने के लिए हर युग में इनका अवतार होता है। हे महामते! तुम भी तेजस्वी, क्रोधी और उन्हीं रुद्रदेव के अंश से उत्पन्न हुए हो। तुम भी भारी तप, श्रेष्ठ कर्म, तेज और विद्या से सम्पन्न रुद्र के अंश हो। तुम भी देवदेव नारायण की तरह पूर्व जन्म में विज्ञ पुरुष थे। तुमने भी सब जगत् को रुद्रमय जानकर उन्हें सन्तुष्ट करने के लिए घोर तप करके अपने शरीर को सुखाया था और पवित्र मन्त्र के जप, हवन, उपहार (पूजा) आदि से देवादिदेव शङ्कर की आराधना की थी। रुद्रदेव ने तुम्हारी पूजा और आराधना से सन्तुष्ट होकर तुमको, तुम्हारी इच्छा के अनु- ८० सार, श्रेष्ठ वर दिये थे। श्रीकृष्ण और अर्जुन जन्म, कर्म, तप और योग आदि में जैसे श्रेष्ठ हैं वैसे ही तुम भी हो। श्रीकृष्ण और अर्जुन ने हर युग में अजेय अचिन्त्यस्वरूप रुद्र की पूजा शिव-लिङ्ग में की है। जो पुरुष शिव को सर्वरूप सर्वव्यापक जानकर लिङ्ग-रूप में उनकी पूजा करता है, उस रुद्र-भक्त में सदा शाश्वत आत्मयोग और शास्त्रयोग रहते हैं। देवता, सिद्ध और महर्षि लोग परलोक में श्रेष्ठ गति पाने के लिए शङ्कर की ही उपासना करते हैं। निश्चय जानो, केशव रुद्र से ही उत्पन्न और उन्हीं के भक्त हैं। नारायणावतार भगवान् वासुदेव सदा शिवलिङ्ग की पूजा करते हैं और शिव को ही सब प्राणियों की उत्पत्ति का कारण जानते हैं। शिवजी भी कृष्णचन्द्र से अत्यन्त प्रीति रखते हैं। इसी लिए कल्याण की इच्छा रखनेवाले को विविध यज्ञों से वासुदेव की पूजा करनी चाहिए।

सञ्जय कहते हैं—हे कुरु-कुल-श्रेष्ठ! महारथी जितेन्द्रिय अश्वत्थामा का सन्देह, वेदव्यास की बातें सुनने से, दूर हो गया। उन्होंने रुद्रदेव को प्रणाम किया और समझ लिया कि कृष्ण-चन्द्र साधारण मनुष्य नहीं, साक्षात् नारायण हैं। उनके शरीर में रोमाञ्च हो आया। महर्षि वेदव्यास को प्रणाम करके वे कौरव दल में लौट आये। उन्होंने युद्ध बन्द करा दिया। कौरवों की सेना को युद्ध बन्द करते देखकर पाण्डवों ने भी युद्ध बन्द कर दिया। द्रोणाचार्य की मृत्यु

से दीन भाव को प्राप्त कौरवगण अपने डेरों को लौट चले। महाराज ! वेदपाठी महारथी ब्राह्मण द्रोणाचार्य इस तरह पाँच दिन तक घोर युद्ध और शत्रुसेना का संहार करके अन्त को १०० ब्रह्मलोकगामी हुए। उनके मरने से कौरवों के दुःख-शोक की सीमा नहीं रही।

दो सौ दो अध्याय

अर्जुन और वेदव्यास का संवाद

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! अतिरथी योद्धाओं में पहले गिने जानेवाले द्रोणाचार्य जब धृष्टद्युम्न के हाथ से रणभूमि में मारे गये तब पाण्डवों और कौरवों ने क्या किया ? वह सब वृत्तान्त तुम मेरे आगे कहो।

सञ्जय ने कहा कि राजन् ! द्रोणाचार्य के मरने और कौरवों के समर से हट जाने पर अर्जुन ने वह विजय देनेवाला बहुत ही अद्भुत दृश्य देखकर अपनी इच्छा से आये हुए भगवान् वेदव्यास से पूछा—भगवन् ! मैं जिस समय तीक्ष्ण बाण बरसाकर शत्रुओं को मारने का यत्न कर रहा था उस समय मुझे देख पड़ता था कि कोई अग्नि के समान तेजस्वी पुरुष मेरे आगे-आगे शत्रुओं का संहार करता जा रहा था। कृपा कर बतलाइए, वह पुरुष कौन था। वे पुरुषोत्तम शूल तानकर जिधर-जिधर जाते थे उधर-उधर के शत्रु मरते जाते थे। जिधर वे जाते थे उधर शत्रु-सेना काई सी फट जाती थी। उनके प्रभाव से शत्रु भागते थे और लोग समझते थे कि मेरे प्रहार से शत्रु भाग रहे और मर रहे हैं। उनकी भगाई और मारी हुई सेना को भगाता और मारता हुआ मैं पीछे-पीछे जाता था। भगवन् ! वे महापुरुष कौन थे ? वे सूर्य के समान तेजस्वी थे। न तो उनके पैर ज़मीन में लगते थे और न वे हाथ से त्रिशूल छोड़ते थे। उनके तेज के प्रभाव से उस एक ही शूल से हज़ारों शूल निकलकर शत्रुओं का संहार कर रहे थे।

व्यासदेव ने कहा—अर्जुन ! तुमने जिन महापुरुष के दर्शन किये हैं वे प्रभु तेजोमय पुरुष प्रजापतियों के पूर्वज (अर्थात् सबसे पहले प्रजापति), भुवनव्यापी, भूर्भुवः-स्वः-स्वरूप, १० प्रकाशस्वरूप, तेजोमय, ईशान, वर देनेवाले, देवदेव, त्रिभुवन के स्वामी महादेव हैं। महात्मा, ईश, जटाधारी, विभु, शङ्कर, त्रिलोचन, महाबाहु, रुद्र, शिखाधारी, चीरवासा, महादेव, हर, स्थाणु, वरद, भुवनेश्वर, जगत् में श्रेष्ठ, अपराजित, जगत् को आनन्द देनेवाले, परमेश्वर, जगत् के माता-पिता-स्वरूप, जययुक्त, जगत् की गति, विश्व की आत्मा, विश्व की सृष्टि करनेवाले, विश्वमूर्ति और यशस्वी कहकर लोग उनकी स्तुति करते हैं। हे पार्थ ! तुम उनकी शरण में जाओ, उन्हें प्रणाम करो। वे विश्वेश्वर, विश्व के सञ्चालक या नेता, कर्मों का फल देनेवाले, प्रभु, शम्भु, स्वयम्भू, भूतेश, भूत-भविष्य और वर्तमान के नियामक, योगस्वरूप, योगियों के ईश्वर,

सर्व, सब लोकों के ईश्वर जो इन्द्र आदि हैं उनके भी ईश्वर, सबसे श्रेष्ठ, जगत् भर में श्रेष्ठ, वरिष्ठ, परमेष्ठी, तीनों लोकों के विधाता, अद्वितीय, त्रिभुवन के आश्रय-स्वरूप, शुद्धरूप, भव, भीम, शशांकशेखर, शाश्वत, भूधर, देव, सब विद्वानों के ईश्वर, अत्यन्त दुर्जय अर्थात् जो अधिकारी नहीं हैं उनके लिए अत्यन्त दुर्लभ, जगन्नाथ, जन्महीन, अजर, अमर, ज्ञानरूप, ज्ञान-गम्य, ज्ञान में श्रेष्ठ, कठिनता से ज्ञेय और प्रसन्न होकर भक्तों की कामना के अनुसार वर देनेवाले हैं। उनके पारिषद दिव्य और अनेक रूप हैं। वे लोग बौने, जटाधारी, मुंडे, छोटी गर्दन के, बड़े पेट के, महाकाय और महाउत्साह से परिपूर्ण हैं। किसी-किसी के कान बहुत बड़े हैं। हे पार्थ! उनके मुँह, पैर और वेष विकृत हैं। ऐसे भूतगण उन महादेव की सेवा करते हैं। वही तेजस्वी शिव, तुम पर प्रसन्न होने के कारण, तुम्हारे आगे-आगे शत्रुओं को मारते जाते हैं। यह महाभारत युद्ध बड़ा लोमहर्षण है। हे पार्थ! अश्वत्थामा, कर्ण, कृपाचार्य आदि महारथी कौरवों की सेना के रक्षक हैं। ऐसे योद्धाओं से रक्षित सेना पर आक्रमण करने की बात भी कोई मनुष्य अपने मन में नहीं ला सकता। महाधनुर्द्धर बहुरूप महेश्वर के सिवा और कोई उस सेना का नाश नहीं कर सकता। आगे-आगे शत्रुओं को मार रहे महादेव के आगे कोई ठहर ही नहीं सकता। युद्ध में कुपित शङ्कर की गन्ध से भी शत्रुगण अचेत और अधिकांश नष्ट हो जाते हैं, काँपते हैं और गिर पड़ते हैं। देवगण स्वर्ग में उन्हें प्रणाम करते हैं। अन्य स्वर्गवासी सुकृती जन और मनुष्य भी उनकी आराधना करते हैं। जो भक्त पुरुष अनन्य भाव से सदा सब के ईश्वर, वरदानी, देवदेव, शिव, रुद्र, उमापति की उपासना करते हैं वे इस लोक में सुख पाकर परलोक में परम गति के अधिकारी होते हैं। हे अर्जुन! तुम उन्हीं सदा शान्त-स्वरूप को प्रणाम करो। रुद्र, शितिकण्ठ, कनिष्ठ, सुवर्चा, कपर्दी, कराल, हर्यक्ष, वरदानी, याम्य, अव्यक्त-केश, सद्वृत्त, शङ्कर, काम्य, हरिनेत्र, स्थाणु, पुरुष, हरिकेश, मुण्ड, कृश, उत्तारण, भास्कर, सुतीर्थ, देवदेव, वेगशाली, बहुरूप, सर्व, प्रिय, प्रियवासा, उष्णीषधारी, सुमुख, सहस्राक्ष, मीढुष, गिरिश, प्रशान्त, यति, दिगम्बर, चीरवासा, हिरण्यबाहु, उग्र, दिक्पाल, पर्जन्यपति, भूतपति, वृक्षों के पति, पशुपति, वृक्षों से आवृत शरीर, सेनानी, मध्यम, स्रुवहस्त देव, धनुर्द्धर, भार्गव, विश्वपति, मुञ्जवासा, सहस्रशीर्षा, सहस्रनयन, सहस्रचरण, सहस्रबाहु, सहस्रमुख भगवान् की शरण में जाओ और उन्हें बारम्बार प्रणाम करो। वरदानी, विश्वनाथ, उमापति, विरूपाक्ष, दक्ष के यज्ञ को विध्वंस करनेवाले, प्रजापति, भूतपति, अव्यग्र, अव्यय, कपर्दी, वृषावर्त, वृषनाभ, वृषध्वज, वृषदर्प, वृषपति, वृषशृङ्ग, वृषश्रेष्ठ, वृषांक, वृषभोदार, वृषभ, वृषभेक्षण, वृषायुध, वृष-बाण, वृषभूत, वृषेश्वर, महोदर, महाकाय, व्याघ्रचर्माम्बर, लोकेश्वर, वरद, पुण्यरूप, ब्रह्मण्य, ब्राह्मणप्रिय, त्रिशूलपाणि, वरद, खड्ग-चर्म-धर, प्रभु, पिनाकी, खड्गधर, लोकपति, ईश्वर, शरण्य, दिगम्बर देव के मैं शरणागत हूँ। सुवासा, सुव्रत, सुधन्वा, धनुर्द्धर, प्रियधन्वा, धन्वी, धन्व-

(margin verse numbers: २०, ३०, ४०)

न्तर, धनु और धन्वाचार्य को प्रणाम है। उग्रायुध, देव, सुरवर, बहुरूप और बहुधन्वा को प्रणाम है। स्थाणु, तपस्वी, त्रिपुर-दहन, भग-हन्ता को प्रणाम है। वनस्पति-पति, मनुष्यपति, मातृपति, गणपति, गोपति, यज्ञपति, सलिलपति और सुरपति को प्रणाम है। पूषा के दाँत तोड़नेवाले, त्रिलोचन, वरदानी, नीलकण्ठ, पिङ्ग और स्वर्णकेश को प्रणाम है।

हे पार्थ! जहाँ तक मैं जानता हूँ और मैंने सुन रक्खा है, उसके अनुसार अब मैं उनके ५० दिव्य कर्मों का वर्णन करता हूँ, सुनो। महादेव के कुपित होने पर, यदि पाताल में चले जायँ तो वहाँ भी देवता, असुर, गन्धर्व, राक्षस आदि कोई सुख से नहीं रह सकता। पूर्व समय में यजमान दक्ष प्रजापति ने विधिपूर्वक यज्ञ किया था; किन्तु महादेव ने कुपित और निर्दय होकर उनका यज्ञ नष्ट करने के लिए धनुष से बाण छोड़कर भयानक शब्द किया, जिससे यज्ञ-विध्वंस हो गया। एकाएक यज्ञ-पुरुष के भागने और महादेव के कुपित होने से सब देवता व्याकुल हो उठे। उन्हें किसी तरह कल्याण और शान्ति नहीं मिलती थी। शिव की प्रत्यञ्चा के दारुण शब्द से सब लोक व्याकुल हो उठे। सब देवता और दानव वशवर्ती होकर, शरण में आकर, रुद्र के चरणों पर गिर पड़े। शिव के क्रुद्ध होने पर सागर क्षोभ को प्राप्त हुआ, धरती हिलने लगी, पर्वतों के शिखर फट-फटकर गिरने लगे, दिशाओं में अँधेरा हो गया, दिग्गज मूढ़ और अचेत से हो गये। सब लोकों में घना अँधेरा छा गया, कुछ भी नहीं सूझता था। रुद्र ने सूर्य सहित सब ज्योतिर्मय पदार्थों की प्रभा नष्ट कर दी। ऋषिगण भय और क्षोभ से व्याकुल होकर सब प्राणियों के और अपने कल्याण के लिए शान्ति करने लगे। शङ्कर हँसते हुए पूषा देवता के पीछे दौड़े। वे पुरोडाश खा रहे थे। शङ्कर ने उनके दाँत तोड़ दिये। तब सब देव-गण भय से विह्वल होकर काँपते हुए यज्ञशाला से निकल भागे। रुद्र ने फिर देवताओं को लक्ष्य करके धनुष पर प्रज्वलित, धुएँ और चिनगारियों से युक्त, बिजली और मेघ के समान ६१ तीक्ष्ण बाण चढ़ाये। यह देखकर सब देवता महेश्वर के शरणागत हो चरणों पर गिर पड़े। उन्होंने रुद्र के लिए यज्ञ का बचा हुआ विशेष भाग कल्पित कर दिया। भयपीड़ित देवताओं के शरणागत होने पर अति क्रोधी रुद्र ने उस अधूरे यज्ञ को पूर्ण कर दिया। तभी से देवगण रुद्र से डरते हैं; उनका वह भय अब तक दूर नहीं हुआ।

महादेव का और चरित्र सुनो। पूर्व समय में पराक्रमी असुरों के तीन पुर थे—एक सोने का, दूसरा चाँदी का और तीसरा लोहे का। कमलाक्ष दानव सोने के पुर का, तारकाक्ष दानव चाँदी के पुर का और विद्युन्माली दानव लोहे के पुर का स्वामी था। इन्द्र अपने वज्र आदि सब अस्त्र-शस्त्र चलाकर हार गये, वे पुर नष्ट नहीं हो सके। इसके बाद सब देवता, इन्द्र को आगे करके, महेश्वर की शरण में जाकर कहने लगे—हे प्रभु! ये त्रिपुरनिवासी तीनों असुर, ब्रह्मा के वरदान से, अत्यन्त गर्वित होकर सब लोकों को सता रहे हैं। हे देवदेवेश! आपके

सिवा और कोई इन असुरों का संहार नहीं कर सकता। इसलिए आप खुद इनका संहार कीजिए। हे ईश्वर! सब कर्मों में रुद्र रूप धारण करनेवाले पशुओं और इन असुरों को आप मारेंगे।

हे अर्जुन! देवताओं के यों कहने पर भगवान् शङ्कर ने उनके हित के लिए प्रार्थना स्वीकार कर ली। उस त्रिपुर को नष्ट करने के लिए उन्होंने एक दिव्य रथ की कल्पना की। गन्धमादन और विन्ध्याचल उस रथ की आसपास की दो ध्वजा बने। समुद्र-वन सहित पृथ्वी को ही रथ बनाया। नागराज शेष को उसके अक्ष, चन्द्र-सूर्य को दोनों पहिये, ऐलपत्र और पुष्पदन्त नाग को अक्षकीलक, मलयाचल को युग, तक्षक नाग को अवनाह (त्रिवेणु और युग के बाँधने की रस्सी), सरीसृप पर्वत आदि को जोत और रास आदि सब अङ्ग, चारों वेदों को चार घोड़े, चारों उपवेदों (आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्व, पश्चिमाम्नाय) को घोड़ों की लगामों की कड़ी, सावित्री और गायत्री को प्रग्रह (लगाम), ओंकार को प्रतोद, ब्रह्मा को सारथी, मन्दराचल को धनुष, वासुकि को उसकी डोरी, विष्णु को श्रेष्ठ बाण, अग्नि को बाण की गाँसी, वायु को बाण के पङ्ख, यमराज को बाण-पुङ्ख, बिजली को बाण की तीक्ष्ण धार और सुमेरु को ध्वजा बनाकर उस दिव्य देवमय रथ पर शिव सवार हुए। महायोद्धा असुरनाशन अतुलपराक्रमी श्रीमान् रुद्र ने त्रिपुर नष्ट करने के लिए ऐसा उद्योग किया। सब देवता और ऋषि उनकी स्तुति करने लगे। महेश्वर दिव्य अप्रतिम माहेश्वर व्यूह से स्थाणु होकर सहस्र वर्ष तक अचल की तरह स्थित रहे। अन्तरिक्ष में जब तीनों पुर एकत्र एक सीध में आये तब उनको उन्होंने, तीन पर्वों (विष्णु, वायु, वैवस्वत) और तीन शल्यों (गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, आहवनीय रूप अग्नि) वाला बाण चलाकर, एक साथ ही नष्ट कर दिया। पुरों के स्वामी दानवगण उस बाण या शिव की ओर आँख उठाकर देख भी नहीं सके। उस समय कालाग्नि, विष्णु और सोम से युक्त उस बाण को त्रिपुर भस्म करते देखने के लिए देवी पार्वती वहाँ आईं। पञ्चशिख बालक का रूप रक्खे हुए महादेव देवी की गोद में विराजमान थे। उमा ने देवताओं के मन का भाव जानने के लिए उनसे पूछा, यह बालक कौन है? इन्द्र ने दुर्दैववश ईर्ष्या करके बालरूप रुद्र पर वज्रप्रहार करना चाहा। भगवान् भूतपति यह देखकर कुछ हँसे और उन्होंने कुपित इन्द्र के वज्र सहित हाथ को जहाँ का तहाँ रोक दिया। बालरूप महादेव के प्रभाव से बाहु बँध जाने पर इन्द्रदेव सब देवताओं को साथ लेकर ब्रह्मा के पास पहुँचे। देवताओं ने ब्रह्मा को प्रणाम करके हाथ जोड़कर कहा—ब्रह्मन्! हम लोगों ने पार्वती देवी की गोद में एक अद्भुत बालक को देखकर प्रणाम नहीं किया। हमारे उस अपराध से क्रुद्ध होकर उस बालक ने, युद्ध न करके भी, अनायास इन्द्र सहित हमको परास्त कर दिया।

ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ ब्रह्माजी ने देवताओं के वचन सुनकर योग-बल से जान लिया कि वह महातेजस्वी बालक और कोई नहीं, साक्षात् महेश्वर हैं। तब उन्होंने इन्द्र आदि देवताओं से कहा—हे देवगण! उक्त बालक चराचर जगत् के प्रभु भगवान् महेश्वर हैं। उनसे बढ़कर और कोई

७०

८०

९०

नहीं है। तुमने पार्वती की गोद में जिनको देखा है वे पार्वती के लिए बालक का रूप धारण किये हुए महादेव हैं। मेरे साथ चलकर तुम लोग उनकी शरण में जाओ। वे प्रभु सब लोकों के ईश्वर भुवनेश्वर हैं। बालसूर्य के समान तेजस्वी उन शङ्कर को, बालरूप देखकर तुम और प्रजापतिगण, कोई नहीं पहचान सका।

इसके उपरान्त ब्रह्माजी वहाँ गये जहाँ बालरूप शङ्कर थे। उन्हें सर्वश्रेष्ठ जानकर पितामह ब्रह्मा ने प्रणाम किया। वे इस तरह स्तुति करने लगे—हे देव! तुम इस भुवन के यज्ञ (पूजनीय), पालक, आश्रयस्थान, भव (उत्पत्ति के कारण), महादेव, तेजोरूप, परम पद और चराचर विश्व में व्याप्त हो। भगवन्, भूत-भविष्य वर्तमान के ईश्वर, हे लोकनाथ, हे जगत्पति! अपने क्रोध से पीड़ित इन्द्र को क्षमा करो और उन्हें कृपादृष्टि से देखो।

व्यासजी कहते हैं—हे पार्थ! ब्रह्मा की स्तुति से प्रसन्न होकर भगवान् महेश्वर अट्टहास करने लगे। उस समय देवता लोग भगवती पार्वती और रुद्रदेव को मनाने लगे। शिव १०० की कृपा से इन्द्र का हाथ फिर पहले की तरह बन्धनमुक्त हो गया। देवताओं में श्रेष्ठ, दक्षयज्ञ के विध्वंस करनेवाले, वृषध्वज शङ्कर और पार्वती दोनों ही देवताओं पर प्रसन्न हो गये। हे अर्जुन! वे रुद्र हैं, शिव हैं, अग्नि हैं, सर्व हैं, सर्वज्ञ हैं। वही इन्द्र, वायु, अश्विनीकुमार, बिजली, भव, पर्जन्य, महादेव, सनातन पुरुष, चन्द्रमा, ईशान, सूर्य, वरुण, काल, अन्तक, मृत्यु, यमराज, रात्रि-दिन, मास-पक्ष, ऋतु, सन्ध्याकाल, संवत्सर, धाता, विधाता, विश्वात्मा, विश्व के सब कर्मों को पूर्ण करनेवाले और शरीरहीन होकर भी सब देवताओं का शरीर रखनेवाले हैं। सब देवता उनकी स्तुति करते हैं। वे एकरूप और बहुरूप हैं। उनके सैकड़ों, हज़ारों, लाखों रूप भी हैं। वेदज्ञ ब्राह्मणों का कहना है कि उनकी घोर और कल्याणरूपिणी दो मूर्तियाँ हैं। उन मूर्तियों के भी फिर बहुत से भेद हैं। घोर मूर्ति यातुधान की है—वही अग्नि, विष्णु और सूर्य है। सौम्य मूर्ति इन्हीं की है—वही जल, ज्योतिर्गण और चन्द्रमा है। वेद, वेदाङ्ग, उपनिषद्, पुराण, अध्यात्म-सिद्धान्त और जो कुछ परम गुह्य विषय हैं, सो सब महेश्वर देव ही हैं। वे बहुमूर्ति और अजन्मा हैं। देवदेव महादेव ऐसे हैं। उनके असंख्य गुणों का पूरा वर्णन मैं लगातार १० हज़ार वर्ष में भी नहीं कर सकता। शरणागतवत्सल शङ्कर सब तरह की ग्रह-बाधा और सङ्कट से पीड़ित महापातकी लोगों को भी, शरण में आने से प्रसन्न होकर, दुःख कष्ट से बचा देते हैं। वे प्रसन्न होकर मनुष्यों को अपरिमित आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य, धन और विविध भोग देते हैं और वही रुष्ट होने पर सब हर लेते हैं। इन्द्र आदि सबका ऐश्वर्य उन्हीं का ऐश्वर्य है। वे मनुष्यों के शुभ अशुभ कर्मों को जानते हैं। इच्छाओं के ऐश्वर्य से ही उनको ईश्वर कहते हैं। बड़े से बड़े प्राणी के ईश्वर होने के कारण वे महेश्वर हैं। वे अनेक प्रकार के रूपों से विश्व को व्याप्त किये हुए हैं। उनका मुख समुद्र में स्थित होकर जलमय हवि को पान करता है और

उसे बड़वामुख कहते हैं। वे नित्य मसानों में रहते हैं। उसी वीर-स्थान में मनुष्य .उ
पूजा करते हैं। लोक में लोग कहते हैं कि उनके प्रदीप्त घोर बहुत से रूप हैं, जिनकी पूजा
जाती है। उनके कर्मों के महत्त्व और विभुत्व के कारण अनेक सार्थक नाम संसार में .
जाते हैं। वेद में उनका शतरुद्रिय स्तव कहा गया है। अनन्त रुद्र कहकर लोग उन हा.
की आराधना करते हैं। वे देवताओं और मनुष्यों की सब इच्छाएँ पूरी करते हैं। वे
देव विभु, प्रभु और विश्वव्यापी हैं। ब्राह्मण और मुनि लोग उन्हें सबसे प्रथम प्रकट कहते .
सब देवताओं के वे पूर्वज हैं। उनके मुख से ही अग्नि की उत्पत्ति हुई है। वे पशुओं का ।
करते हैं, उनके साथ रमते हैं और उनके अधिपति हैं, इसी से पशुपति कहलाते हैं। दिव्य
से उनका शरीर स्थित है। वे सब लोकों को आनन्दित करते हैं, इसी से महेश्वर हैं। अ।
देवता, गन्धर्व, अप्सरा आदि सब उनके उन्नत लिंग-शरीर की पूजा करते हैं। उसकी
करने से महेश्वर प्रसन्न, सुखी और प्रहृष्ट होते हैं। वे भूत-भविष्य-वर्तमान में विविध च च
रूप से विराजमान हैं। वे एकाक्ष अथवा सब ओर सर्वत्र नेत्रयुक्त और प्रज्वलित-रूप हैं
क्रोध के मारे सब लोकों में प्रवेश करने के कारण उन्हें सर्व कहते हैं। वे धूम्र-रूप हैं, इसी
धूर्जटि कहलाते हैं। विश्वेदेवा उनमें स्थित हैं, इससे वे विश्वरूप हैं। वे सब कार्यों में
अर्थों की वृद्धि करने और मनुष्यों का कल्याण चाहने के कारण शिव हैं। भुवनेश्वर शङ्कर स्व
जल और पृथ्वी, इन तीनों देवियों को स्पर्श करने के कारण त्र्यम्बक नाम से प्रसिद्ध हैं। वे सहस्र
नेत्र, अयुतनेत्र, अथवा असंख्यनेत्र हैं और महत् विश्व की रक्षा करते हैं, इसी से महादेव हैं
वे प्राण की उत्पत्ति और स्थिति का कारण हैं और समाधि के द्वारा साक्षी-स्वरूप होकर भी अवि
कृत हैं, इसी से स्थाणु कहे जाते हैं। चन्द्रमा और सूर्य की आकाश में व्याप्त किरणें उन
केश हैं, इसी से वे व्योमकेश हैं। भूत-भविष्य-वर्तमान सब जगत् वही हैं, इसी से वे
कहे जाते हैं। कपि शब्द का अर्थ श्रेष्ठ और वृष शब्द का अर्थ धर्म है—इसी से वे वृषा-
कपि हैं। वे ब्रह्मा, इन्द्र, वरुण, यम और कुबेर के निग्रहकर्ता और संहार करनेवाले
हैं, इसी से हर कहलाते हैं। महेश्वर ने दोनों बन्द आँखों से बलपूर्वक ललाट में तीसरे
नेत्र की सृष्टि की है; इस कारण वे त्रिलोचन कहलाते हैं। वे पापी या पुण्यात्मा
सब प्राणियों के शरीर में समभाव से प्राण, अपान आदि पाँच वायुओं के रूप से विराजमान
हैं। जो महादेव की मूर्ति और लिङ्ग की नित्य पूजा करता है उसे अपरिमित लक्ष्मी तथा
ऐश्वर्य प्राप्त होता है। उनका एक चरण अग्निमय और दूसरा चरण सोममय है। कुछ लोग
उनके आधे शरीर को अग्निमय और आधे शरीर को सोममय कहते हैं। उनकी शिवरूपिणी
तेजोमयी महती मूर्ति देवताओं में और घोर अग्निरूपिणी प्रकाशमान अग्निमयी मूर्ति मनुष्यों में
है। अर्थात् वे आकाश में सोमरूप से और पृथ्वी पर अग्निरूप से स्थित हैं। वे अपनी

सौम्यमूर्ति से ब्रह्मचर्य का अनुष्ठान करते हैं और अत्यन्त घोर मूर्ति से सबका संहार करते हैं वे जलाते हैं, तीक्ष्ण हैं, उग्र हैं, प्रतापी हैं और मांस-रुधिर-मज्जा को भस्म कर देते हैं, इसी रुद्र कहलाते हैं। हे पार्थ ! तुमने संग्राम के समय जिन पिनाकपाणि देवदेव महादेव को आगे चलकर शत्रुओं का संहार करते देखा है, उनके गुणों का कीर्तन मैं तुम्हारे आगे कर चुका। तुमने जब सिन्धुराज जयद्रथ को मारने की दृढ़ प्रतिज्ञा की थी तब कृष्णचन्द्र ने में तुम्हें उन्हीं के दर्शन कराये थे। वही भगवान् युद्ध में तुम्हारे आगे-आगे जा रहे थे। तुमने जिनके दिये अस्त्रों के प्रभाव से दानवों को मारा है उन्हीं की महिमा का वर्णन, यह वेदोक्त शतरुद्रिय स्तव, मैंने तुम्हारे आगे किया है। यह स्तव धन्य, यश देनेवाला, आयु बढ़ानेवाला, परम पवित्र और दुर्लभ है। जो आदमी लगातार इस सर्वार्थसाधक, सब पापों को मिटानेवाले, भय-दुःख दूर करनेवाले महापवित्र चतुर्विध स्तोत्र को सुनता है, वह यहाँ सब १५० शत्रुओं को परास्त करके शिवलोक को जाता है। जो मनुष्य नित्य मन लगाकर भगवान् महादेव के मङ्गलदायक युद्ध-सम्बन्धी दिव्य चरित्र और शतरुद्रिय स्तव पढ़ या सुनकर विश्वेश्वर में अपनी भक्ति दिखाता है उस पर देवदेव त्रिलोचन प्रसन्न होते हैं और उसे यथेष्ट वर देते हैं। हे अर्जुन ! अब तुम जाकर युद्ध का उद्योग करो। महात्मा श्रीकृष्ण जिसके निकटवर्ती और मन्त्री हैं, वह कभी हार ही नहीं सकता।

सञ्जय कहते हैं—महाराज ! पराशर के पुत्र वेदव्यासजी युद्धभूमि में अर्जुन से यों कहकर चले गये। हे कुरुकुलश्रेष्ठ ! महावली द्रोणाचार्य पाँच दिन दारुण युद्ध करने के बाद इस तरह शरीर त्यागकर ब्रह्मलोक को गये। वेद पढ़ने का जो फल है, वही फल इस द्रोणपर्व के पाठ से भी मिलता है। इस पर्व में निर्भयचित्त शूर-शिरोमणि क्षत्रियों के यश का वर्णन किया गया है और अर्जुन तथा जनार्दन की जय का कीर्तन भी है। इस पर्व को नित्य पढ़ने या सुनने से महापाप में लिप्त पुरुष भी पातकों से छुटकारा पाकर मङ्गल प्राप्त कर सकता है। इसके पढ़ने-सुनने से ब्राह्मण को यज्ञ करने का फल मिलता है, क्षत्रिय युद्ध में विजय पाता है १५८ और वैश्य तथा शूद्र को धन-पुत्र-पौत्र आदि यथेष्ट भोग प्राप्त होते हैं।

महाभारत के स्थायी ग्राहक बनने के नियम

(१) जो सज्जन हमारे यहाँ महाभारत के स्थायी ग्राहकों में अपना नाम और पता लिखा देते हैं उन्हें महाभारत के अङ्कों पर २०) सैकड़ा कमीशन काट दिया जाता है। अर्थात् १।) प्रति अङ्क के बजाय स्थायी ग्राहकों को १) में प्रति अङ्क दिया जाता है। ध्यान रहे कि डाकखर्च स्थायी और फुटकर सभी तरह के ग्राहकों को अलग देना पड़ेगा।

(२) साल भर या छः मास का मूल्य १२) या ६), दो आना प्रति अङ्क के हिसाब से रजिस्ट्री खर्च सहित १३॥) या ६॥।) जो सज्जन पेशगी मनीआर्डर-द्वारा भेज देंगे, केवल उन्हीं सज्जनों को डाकखर्च नहीं देना पड़ेगा। महाभारत की प्रतियाँ राह में गुम न हो जायँ और ग्राहकों की सेवा में वे सुरक्षित रूप में पहुँच जायँ, इसी लिए रजिस्ट्री द्वारा भेजने का प्रबन्ध किया गया है।

(३) उसके प्रत्येक खंड के लिए अलग से बहुत सुन्दर जिल्दें भी सुनहले नाम के साथ तैयार कराई जाती हैं। *प्रत्येक जिल्द का मूल्य ।॥) रहता है परन्तु स्थायी ग्राहकों को वे ॥) ही में* मिलती हैं। जिल्दों का मूल्य महाभारत के मूल्य से बिलकुल अलग रहता है।

(४) स्थायी ग्राहकों के पास प्रतिमास प्रत्येक अङ्क प्रकाशित होते ही बिना विलम्ब वी० पी० द्वारा भेजा जाता है। बिना कारण वी० पी० लौटाने से उनका नाम ग्राहक-सूची से अलग कर दिया जायगा।

(५) ग्राहकों को चाहिए कि जब किसी प्रकार का पत्र-व्यवहार करें तो कृपा कर अपना ग्राहक-नम्बर जो कि पता की स्लिप के साथ छपा रहता है और पूरा पता अवश्य लिख दिया करें। बिना ग्राहक-नम्बर के लिखे हज़ारों ग्राहकों में से किसी एक का नाम ढूँढ निकालने में बड़ी कठिनाई पड़ती है और पत्र की कार्रवाई होने में देरी होती है। क्योंकि एक ही नाम के कई-कई ग्राहक हैं। इसलिए सब प्रकार का पत्र-व्यवहार करते तथा रुपया भेजते समय अपना ग्राहक-नम्बर अवश्य लिखना चाहिए।

(६) जिन ग्राहकों को अपना पता सदा अथवा अधिक काल के लिए बदलवाना हो, अथवा पते में कुछ भूल हो, उन्हें कार्यालय को पता बदलवाने की चिट्ठी लिखते समय अपना पुराना और नया दोनों पते और ग्राहक-नम्बर भी लिखना चाहिए। जिससे उचित संशोधन करने में कोई दिक़्क़त न हुआ करे। यदि किसी ग्राहक को केवल एक दो मास के लिए ही पता बदलवाना हो, तो उन्हें अपने हलके के डाकख़ाने से उसका प्रबन्ध कर लेना चाहिए।

(७) ग्राहकों से सविनय निवेदन है कि नया आर्डर या किसी प्रकार का पत्र लिखने के समय यह ध्यान रक्खें कि लिखावट साफ़ साफ़ हो। अपना नाम, गाँव, पोस्ट और ज़िला साफ़ साफ़ हिन्दी या अँगरेज़ी में लिखना चाहिए ताकि अङ्क या उत्तर भेजने में दुबारा पूछ-ताछ करने की ज़रूरत न हो। "हम परिचित ग्राहक हैं" यह सोच कर किसी को अपना पूरा पता लिखने में लापरवाही न करनी चाहिए।

(८) यदि कोई महाशय मनी-आर्डर से रुपया भेजें, तो 'कूपन' पर अपना पता-ठिकाना और रुपया भेजने का अभिप्राय स्पष्ट लिख दिया करें, क्योंकि मनीआर्डरफ़ार्म का यही अंश हमको मिलता है।

सब प्रकार के पत्रव्यवहार का पता—

मैनेजर महाभारत विभाग, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।